"The first and greatest of English detective novels."
— T. S. Eliot

THE MOONSTONE

The Modern Library

Classics

Wilkie COLLINS

Introduction by

CAROLYN G. HEILBRUN

मूनस्टोन

------विकि कॉलिन्स

विल्की कॉलिन्स द्वारा रचित 'द मूनस्टोन'

विल्की कॉलिन्स द्वारा लिखित 'द मूनस्टोन' की प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग ईबुक। यह ईबुक किसी भी व्यक्ति द्वारा कहीं भी, बिना किसी शुल्क और लगभग बिना किसी प्रतिबंध के उपयोग के लिए उपलब्ध है। आप इसे कॉपी कर सकते हैं, दूसरों को दे सकते हैं या इस ईबुक के साथ संलग्न या www.gutenberg.org पर ऑनलाइन उपलब्ध प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लाइसेंस की शर्तों के तहत इसका पुनः उपयोग कर सकते हैं।

शीर्षक: मूनस्टोन
लेखक: विल्की कॉलिन्स
प्रकाशन तिथि: 12 जनवरी, 2006 [ईबुक #155]
भाषा अंग्रेजी
वर्ण सेट एन्कोडिंग: ASCII

*** इस परियोजना की शुरुआत गुटेनबर्ग की ईबुक 'द मूनस्टोन' से होती है ***

जॉन हैम और डेविड विजर द्वारा निर्मित

मूनस्टोन
एक रोमांस
विल्की कॉलिन्स द्वारा

प्रस्तावना
श्रीरंगपट्टनम का तूफान (1799)
पारिवारिक दस्तावेज़ से उद्धृत
भारत में लिखी गई ये पंक्तियाँ मैं इंग्लैंड में रहने वाले अपने रिश्तेदारों को संबोधित कर रहा हूँ।

मेरा उद्देश्य उस कारण को स्पष्ट करना है जिसके चलते मैंने अपने चचेरे भाई जॉन हर्नकैसल को मित्रता का हाथ देने से इनकार कर दिया। इस मामले में मैंने अब तक जो चुप्पी साध रखी थी, उसे मेरे परिवार के सदस्यों ने गलत समझा है, जिनकी सद्भावना को मैं खोना नहीं चाहता। मैं उनसे अनुरोध करता हूं कि वे मेरी बात पढ़ने तक अपना निर्णय स्थगित कर दें। और मैं अपने वचन पर शपथ लेता हूं कि मैं जो कुछ भी लिखने जा रहा हूं, वह अक्षरशः सत्य है।

मेरे चचेरे भाई और मेरे बीच का निजी मतभेद एक बड़ी सार्वजनिक घटना में पनपा, जिसमें हम दोनों शामिल थे - 4 मई, 1799 को जनरल बेयर्ड के नेतृत्व में सेरिंगापट्टम पर हमला।

परिस्थितियों को स्पष्ट रूप से समझने के लिए, मुझे एक क्षण के लिए हमले से पहले की अवधि और हमारे शिविर में प्रचलित उन कहानियों की ओर लौटना होगा, जिनमें सेरिंगापट्टम के महल में गहनों और सोने के खजाने को जमा करने की बात कही गई थी।

द्वितीय

इन कहानियों में से एक सबसे विचित्र कहानी पीले हीरे से संबंधित है - जो भारत के स्थानीय इतिहास में एक प्रसिद्ध रत्न है।

सबसे प्राचीन ज्ञात परंपराओं के अनुसार, इस पत्थर को चंद्रमा के प्रतीक माने जाने वाले चार हाथों वाले भारतीय देवता के माथे पर जड़ा गया था। आंशिक रूप से इसके अनोखे रंग के कारण, और आंशिक रूप से इस अंधविश्वास के कारण कि यह उस देवता के प्रभाव को महसूस करता है जिसे यह सुशोभित करता है, और चंद्रमा के घटने-बढ़ने के साथ इसकी चमक घटती-बढ़ती रहती है, इसे वह नाम मिला जिससे यह आज भी भारत में जाना जाता है - चंद्रपत्थर। मैंने सुना है कि प्राचीन ग्रीस और रोम में भी ऐसा ही अंधविश्वास प्रचलित था; हालाँकि, यह (भारत की तरह) किसी देवता की सेवा में समर्पित हीरे पर लागू नहीं होता था, बल्कि निम्न श्रेणी के अर्ध-पारदर्शी रत्न पर लागू होता था, जिस पर चंद्र प्रभाव माना जाता था - इस मामले में भी चंद्रमा ही वह नाम है जिससे यह पत्थर आज भी संग्राहकों के बीच जाना जाता है।

पीले हीरे के कारनामों की शुरुआत ईसाई युग की ग्यारहवीं शताब्दी से होती है।

उस समय, मुस्लिम विजेता महमूद ग़िज़नी ने भारत पार किया; पवित्र नगर सोमनाथ पर कब्जा कर लिया; और उसके खजाने से उस प्रसिद्ध मंदिर को लूट लिया, जो सदियों से खड़ा था - हिंदू तीर्थस्थल और पूर्वी दुनिया का आश्चर्य।

मंदिर में पूजे जाने वाले सभी देवताओं में से केवल चंद्र देवता ही विजयी मुसलमानों के अत्याचार से बच पाए। तीन ब्राह्मणों द्वारा संरक्षित, माथे पर पीले हीरे से सुशोभित इस अक्षुण्ण देवता को रात में निकालकर भारत के दूसरे सबसे पवित्र शहर - बनारस ले जाया गया।

यहां, एक नए मंदिर में—कीमती पत्थरों से जड़े एक हॉल में, सोने के खंभों पर टिकी छत के नीचे—चंद्रमा देवता की स्थापना की गई और उनकी पूजा की गई। यहीं, जिस रात मंदिर का निर्माण पूरा हुआ, उसी रात तीनों ब्राह्मणों को सपने में संरक्षक विष्णु दर्शन हुए।

देवता ने अपने प्राणों की आहुति देते हुए देवता के माथे पर स्थित हीरा धारण किया। ब्राह्मण घुटने टेककर अपने चेहरे वस्त्रों में छिपा लिए। देवता ने आदेश दिया कि उस हीरा की रक्षा तीन पुरोहित बारी-बारी से, दिन-रात, पीढ़ियों तक करते रहें। ब्राह्मणों ने यह आज्ञा मानकर उनके सामने सिर झुकाया। देवता ने भविष्यवाणी की कि जो भी अहंकारी मनुष्य उस पवित्र रत्न को छुएगा, और उसके बाद उसके परिवार और नाम के सभी लोग जो उसे ग्रहण करेंगे, उन पर विपत्ति आएगी। ब्राह्मणों ने उस भविष्यवाणी को मंदिर के द्वार पर सुनहरे अक्षरों में लिखवाया।

एक युग के बाद दूसरा युग आया—और पीढ़ी दर पीढ़ी, तीनों ब्राह्मणों के वंशज दिन-रात अपने अनमोल चंद्र रत्न की रक्षा करते रहे। एक युग के बाद दूसरा युग आता रहा, जब तक कि अठारहवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में मुगल सम्राट औरंगजेब का शासन नहीं आ गया। उसके आदेश पर ब्रह्मा के मंदिरों में एक बार फिर तबाही और लूटपाट मच गई। चार भुजाओं वाले देवता के मंदिर को पवित्र पशुओं के वध से अपवित्र कर दिया गया; देवताओं की मूर्तियों को तोड़ दिया गया; और चंद्र रत्न को औरंगजेब की सेना के एक उच्च पदस्थ अधिकारी ने छीन लिया।

बलपूर्वक अपना खोया हुआ खजाना वापस पाने में असमर्थ, तीनों संरक्षक पुरोहित छुपकर उसका पीछा करते रहे और उस पर नज़र रखते रहे। पीढ़ियाँ बीतती गईं; अपवित्रता करने वाला योद्धा बुरी तरह मारा गया; चंद्र रत्न (अपने अभिशाप के साथ) एक अधर्मी मुसलमान के हाथ से दूसरे मुसलमान के हाथ में जाता रहा; और फिर भी, तमाम उतार-चढ़ावों के बावजूद, तीनों संरक्षक पुरोहितों के उत्तराधिकारी उस दिन की प्रतीक्षा करते रहे जब भगवान विष्णु की इच्छा से उन्हें उनका पवित्र रत्न वापस मिल जाएगा। अठारहवीं शताब्दी के पहले से लेकर अंतिम वर्ष तक समय बीतता रहा। हीरा सेरिंगापट्टम के सुल्तान टीपू के अधिकार में आ गया, जिसने उसे एक कटार के हैंडल

में आभूषण के रूप में लगवाया और उसे अपने शस्त्रागार के सबसे उत्तम खजानों में रखने का आदेश दिया। तब भी—सुल्तान के महल में—तीनों संरक्षक पुरोहित गुप्त रूप से उस पर नज़र रखते रहे। टीपू के घर में तीन अधिकारी थे, जो बाकी लोगों से अजनबी थे, जिन्होंने मुसलमान धर्म का पालन करके, या पालन करने का दिखावा करके अपने स्वामी का विश्वास जीत लिया था; और इन तीनों लोगों को ही भेस बदले हुए तीन पुजारियों के रूप में जाना जाता था।

तृतीय

तो, जैसा कि हमारे शिविर में बताया जाता था, मूनस्टोन की यह मनगढ़ंत कहानी प्रचलित थी। मेरे चचेरे भाई को छोड़कर हममें से किसी पर भी इसका कोई खास असर नहीं हुआ—अद्भुत चीजों के प्रति उसके प्रेम ने उसे इस पर विश्वास करने के लिए प्रेरित किया। सेरिंगापट्टम पर हमले से एक रात पहले, वह मुझसे और दूसरों से इस पूरी बात को एक कहानी समझने के लिए बेवजह नाराज़ था। एक मूर्खतापूर्ण बहस हुई; और हर्नकैसल का बदकिस्मत स्वभाव उस पर हावी हो गया। उसने अपने घमंड भरे लहजे में घोषणा की कि अगर अंग्रेज़ सेना सेरिंगापट्टम पर कब्ज़ा कर लेती है, तो हम उसकी उंगली पर हीरा देखेंगे। इस बात पर सब ज़ोर से हँसे, और उस रात हम सबने यही सोचा कि बात यहीं खत्म हो गई।

चलिए अब मैं आपको आक्रमण के दिन की कहानी सुनाता हूँ। शुरुआत में ही मैं और मेरा चचेरा भाई अलग हो गए थे। नदी पार करते समय, पहली खाई में अंग्रेज़ों का झंडा फहराते समय, खाई के पार जाते समय और हर इंच लड़ते हुए कस्बे में प्रवेश करते समय मैंने उसे नहीं देखा। शाम ढलते ही, जब वह जगह हमारी हो गई थी और जनरल बेयर्ड ने स्वयं मारे गए लोगों के ढेर के नीचे टीपू का शव पाया था, तब हर्नकैसल और मैं मिले।

हम सभी को सेनापति के आदेशानुसार उन टुकड़ियों में शामिल किया गया था जिन्हें हमारी विजय के बाद होने वाली लूटपाट और अराजकता को रोकने के लिए भेजा गया था। शिविर के अनुयायियों ने घोर अत्याचार किए; और इससे भी बुरा यह हुआ कि सैनिकों ने एक सुरक्षित द्वार से महल के खजाने में प्रवेश कर लिया और सोने-जवाहरात से लदे पड़े। खजाने के बाहर प्रांगण में ही मेरे चचेरे भाई और मैं अपने सैनिकों पर अनुशासन के नियम लागू करने के लिए मिले। जैसा कि मैं स्पष्ट रूप से देख सकता था, हर्नकैसल का उग्र स्वभाव उस भयानक नरसंहार से विक्षिप्त हो गया

था जिससे हम गुजरे थे। मेरी राय में, वह उस कर्तव्य को निभाने के लिए बिल्कुल अयोग्य था जो उसे सौंपा गया था।
खजाने में दंगा और अफरा-तफरी का माहौल था, लेकिन मेरी नज़र में कोई हिंसा नहीं हुई। लोग (अगर मैं ऐसा शब्द इस्तेमाल करूँ तो) मज़ाक में ही अपनी बेइज्जती कर रहे थे। उनके बीच तरह-तरह के भद्दे मज़ाक और नारे चल रहे थे; और हीरे की कहानी अचानक एक शरारती मज़ाक के रूप में फिर सामने आ गई। "मूनस्टोन किसके पास है?" यह नारा हर बार लूटपाट को भड़का देता था, जैसे ही एक जगह लूटपाट रुकती, दूसरी जगह शुरू हो जाती थी। जब मैं व्यवस्था कायम करने की व्यर्थ कोशिश कर रहा था, तभी मुझे आंगन के दूसरी तरफ से ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी, और मैं तुरंत उस तरफ भागा, इस डर से कि कहीं उस दिशा में फिर से लूटपाट न शुरू हो जाए।
मैं एक खुले दरवाजे पर पहुंचा और देखा कि दो भारतीयों के शव (उनके कपड़ों से, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया, महल के अधिकारी थे) प्रवेश द्वार पर मृत पड़े थे।
अंदर से आई चीख सुनकर मैं जल्दी से एक कमरे में गया, जो किसी शस्त्रागार जैसा लग रहा था। एक तीसरा भारतीय, बुरी तरह घायल, एक ऐसे आदमी के पैरों के पास गिर रहा था जिसकी पीठ मेरी तरफ थी। जैसे ही मैं अंदर आया, वह आदमी तुरंत मुड़ा और मैंने जॉन हर्नकैसल को एक हाथ में मशाल और दूसरे हाथ में खून से लथपथ खंजर लिए देखा। खंजर के हैंडल के सिरे पर लगा एक पत्थर, जो मूठ की तरह जड़ा था, मशाल की रोशनी में आग की लपट की तरह चमक उठा, जैसे ही वह मेरी तरफ मुड़ा। मरता हुआ भारतीय घुटनों के बल गिर पड़ा, हर्नकैसल के हाथ में मौजूद खंजर की ओर इशारा किया और अपनी मातृभाषा में कहा—"मूनस्टोन तुम पर और तुम्हारे लोगों पर अपना बदला जरूर लेगा!" ये शब्द कहते ही वह ज़मीन पर गिर पड़ा और उसकी मौत हो गई।
इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, आंगन पार करके मेरा पीछा करने वाले लोग अंदर आ गए। मेरा चचेरा भाई पागलों की तरह उनसे भिड़ने दौड़ा। उसने चिल्लाकर मुझसे कहा, "कमरा खाली करो और दरवाजे पर पहरा लगाओ!" जैसे ही उसने मशाल और कटार लेकर उन पर हमला किया, वे पीछे हट गए। मैंने अपने साथियों में से दो पहरेदारों को, जिन पर मैं भरोसा कर सकता था, दरवाजे पर तैनात कर दिया। बाकी रात भर मुझे अपने चचेरे भाई का कोई अता-पता नहीं हुआ।

सुबह तड़के, जब लूटपाट अभी भी जारी थी, जनरल बेयर्ड ने ढोल बजाकर सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि इस दौरान पकड़े गए किसी भी चोर को, चाहे वह कोई भी हो, फांसी दी जाएगी। जनरल की बात को सच साबित करने के लिए प्रोवोस्ट-मार्शल भी उपस्थित थे; और घोषणा के बाद उमड़ी भीड़ में, हर्नकैसल और मैं फिर मिले।
उन्होंने हमेशा की तरह अपना हाथ आगे बढ़ाया और कहा, "सुप्रभात।"
मैंने बदले में उसे अपना हाथ देने से पहले थोड़ा इंतजार किया।
मैंने कहा, "पहले मुझे यह बताओ कि शस्त्रागार में मौजूद उस भारतीय की मृत्यु कैसे हुई और तुम्हारे हाथ में मौजूद खंजर की ओर इशारा करते हुए उसके आखिरी शब्दों का क्या अर्थ था।"
"मेरी राय में उस भारतीय की मौत किसी घातक घाव से हुई," हर्नकैसल ने कहा। "उसके आखिरी शब्दों का क्या मतलब था, यह मैं आपसे ज्यादा नहीं जानता।"
मैंने उसे गौर से देखा। कल का उसका उन्माद पूरी तरह शांत हो चुका था। मैंने उसे एक और मौका देने का निश्चय किया।
"क्या आपको बस इतना ही बताना है?" मैंने पूछा।
उन्होंने उत्तर दिया, "बस इतना ही।"
मैंने उससे मुंह मोड़ लिया; और तब से हमारी कोई बात नहीं हुई है।

चतुर्थ

मैं यह समझना चाहता हूँ कि मैं अपने चचेरे भाई के बारे में जो कुछ भी यहाँ लिख रहा हूँ (जब तक कि इसे सार्वजनिक करने की कोई आवश्यकता न हो), वह केवल परिवार की जानकारी के लिए है। हर्नकैसल ने ऐसा कुछ नहीं कहा है जिससे मुझे हमारे कमांडिंग ऑफिसर से बात करने का औचित्य मिले। हमले से पहले उनके गुस्से भरे outburst को याद करने वालों ने उन्हें डायमंड के बारे में कई बार ताना मारा है; लेकिन, जैसा कि आसानी से समझा जा सकता है, शस्त्रागार में मैंने उन्हें जिस परिस्थिति में अचानक घेर लिया था, उसकी उनकी याद ने उन्हें चुप रहने के लिए पर्याप्त बना दिया है। ऐसी खबरें हैं कि वह किसी दूसरे रेजिमेंट में तबादला करने का इरादा रखते हैं, जिसका स्पष्ट उद्देश्य खुद को मेरे से अलग करना है।
यह सच हो या झूठ, मैं उसका अभियोक्ता बनने के लिए खुद को तैयार नहीं कर सकता—और मुझे लगता है कि इसके पीछे ठोस कारण हैं। अगर मैंने इस मामले को सार्वजनिक किया, तो मेरे पास नैतिक साक्ष्य के अलावा कोई सबूत नहीं होगा। मेरे पास न केवल इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि उसने दरवाजे पर खड़े दो आदमियों

की हत्या की; मैं यह भी दावा नहीं कर सकता कि उसने अंदर तीसरे आदमी की हत्या की—क्योंकि मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने अपनी आँखों से यह घटना घटते हुए देखी। यह सच है कि मैंने मरते हुए भारतीय के शब्द सुने; लेकिन अगर वे शब्द प्रलाप के कारण बड़बड़ाहट थे, तो मैं अपने ज्ञान के आधार पर इस बात का खंडन कैसे कर सकता हूँ? दोनों पक्षों के हमारे रिश्तेदार मेरे द्वारा लिखी गई बातों पर अपनी राय बना लें और खुद तय करें कि इस आदमी के प्रति मेरे मन में जो घृणा है वह उचित है या अनुचित।

हालांकि मैं इस रत्न से जुड़ी अविश्वसनीय भारतीय कथा पर ज़रा भी विश्वास नहीं करता, फिर भी निष्कर्ष निकालने से पहले मुझे यह स्वीकार करना होगा कि इस मामले में मेरा अपना एक अंधविश्वास है। मेरा दृढ़ विश्वास है, या मेरा भ्रम, चाहे जो भी हो, कि अपराध अपने साथ मृत्यु लेकर आता है। मैं न केवल हर्नकैसल के अपराध के प्रति आश्वस्त हूँ, बल्कि मैं इतना कल्पनाशील भी हूँ कि अगर वह हीरा अपने पास रखता है तो उसे इसका पछतावा होगा; और अगर वह हीरा किसी को दे देता है तो दूसरों को उससे हीरा छीनने का पछतावा होगा।

कहानी

पहला पीरियड

हीरे का खो जाना (1848)

जूलिया, लेडी वेरेंडर की सेवा में कार्यरत गृह प्रबंधक गेब्रियल बेटरएज द्वारा वर्णित घटनाएँ।

अध्याय 1

रॉबिन्सन क्रूसो के पहले भाग में, पृष्ठ एक सौ उनतीस पर, आपको यह इस प्रकार लिखा हुआ मिलेगा:

"अब मुझे समझ में आ गया है, हालांकि बहुत देर हो चुकी है, कि किसी काम को शुरू करने से पहले उसकी लागत का आकलन करना और उसे पूरा करने की अपनी क्षमता का सही आकलन करना कितनी बड़ी मूर्खता है।"

कल ही मैंने उस जगह पर अपनी रॉबिन्सन क्रूसो किताब खोली थी। आज सुबह ही (21 मई, 1850) मेरी पत्नी के भतीजे, श्री फ्रैंकलिन ब्लेक आए और उन्होंने मुझसे संक्षिप्त बातचीत की, जो इस प्रकार है:--

श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "बेटरएज, मैं कुछ पारिवारिक मामलों के सिलसिले में वकील के पास गया था; और अन्य बातों के अलावा, हम दो साल पहले यॉर्कशायर में मेरी चाची

के घर में भारतीय हीरे के गुम होने के बारे में बात कर रहे थे। श्री ब्रफ भी मेरी ही तरह सोचते हैं कि सच्चाई के हित में, पूरी कहानी लिखित रूप में दर्ज की जानी चाहिए - और जितनी जल्दी हो उतना अच्छा।"

मुझे अभी तक उनकी बात समझ नहीं आई थी, और शांति और सुकून के लिए वकील का पक्ष लेना हमेशा बेहतर होता है, इसलिए मैंने कहा कि मुझे भी ऐसा ही लगता है। श्री फ्रैंकलिन बोलते रहे।

उन्होंने कहा, "हीरे के इस मामले में, जैसा कि आप जानते हैं, निर्दोष लोगों की प्रतिष्ठा पहले ही संदेह के घेरे में आ चुकी है। भविष्य में निर्दोष लोगों की यादों को भी नुकसान पहुँच सकता है, क्योंकि हमारे बाद आने वाली पीढ़ियों के पास तथ्यों का कोई रिकॉर्ड नहीं होगा। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारे परिवार की यह अनोखी कहानी बताई जानी चाहिए। और मुझे लगता है कि बेटरएज, श्री ब्रुफ और मैंने मिलकर इसे बताने का सही तरीका खोज लिया है।"

उन दोनों के लिए यह बहुत संतोषजनक रहा, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन मुझे अभी तक यह समझ नहीं आया कि इसमें मेरी क्या भूमिका है।

श्री फ्रैंकलिन ने आगे कहा, “हमें कुछ घटनाओं का वर्णन करना है; और उन घटनाओं से जुड़े कुछ व्यक्ति हैं जो उनका वर्णन करने में सक्षम हैं। इन तथ्यों से शुरू करते हुए, हमारा विचार है कि हम सभी बारी-बारी से मूनस्टोन की कहानी लिखें—जितना हमारा व्यक्तिगत अनुभव है, उससे आगे नहीं। हमें यह बताकर शुरुआत करनी होगी कि पचास साल पहले जब मेरे चाचा हर्नकैसल भारत में सेवा कर रहे थे, तब यह हीरा सबसे पहले उनके हाथ कैसे लगा। यह प्रारंभिक विवरण मेरे पास एक पुराने पारिवारिक दस्तावेज़ के रूप में है, जिसमें एक प्रत्यक्षदर्शी के हवाले से आवश्यक विवरण दिए गए हैं। इसके बाद हमें यह बताना है कि दो साल पहले यह हीरा यॉर्कशायर में मेरी चाची के घर कैसे पहुँचा और उसके बारह घंटे से कुछ अधिक समय बाद कैसे खो गया। बेटरएज, उस समय घर में क्या हुआ था, इसके बारे में आपसे बेहतर कोई नहीं जानता। इसलिए आपको कलम उठानी होगी और कहानी शुरू करनी होगी।”

मुझे इन शब्दों में हीरे के मामले में मेरी व्यक्तिगत चिंता के बारे में बताया गया था। यदि आप यह जानने के लिए उत्सुक हैं कि मैंने उस परिस्थिति में क्या कदम उठाया, तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि मैंने वही किया जो आप मेरी जगह होते तो शायद करते। मैंने विनम्रतापूर्वक स्वीकार किया कि मैं मुझ पर सौंपे गए कार्य के लिए बिल्कुल

अयोग्य हूँ—और मैं मन ही मन हमेशा यह महसूस करता रहा कि यदि मैं अपनी क्षमताओं को उचित मौका देता, तो मैं इसे पूरा करने के लिए काफी चतुर था। मुझे लगता है कि श्री फ्रैंकलिन ने मेरे चेहरे पर मेरी निजी भावनाओं को भांप लिया होगा। उन्होंने मेरी विनम्रता पर विश्वास करने से इनकार कर दिया; और उन्होंने मेरी क्षमताओं को उचित मौका देने पर जोर दिया।

श्री फ्रैंकलिन के जाने के बाद से दो घंटे बीत चुके हैं। जैसे ही उन्होंने पीठ फेरी, मैं कहानी लिखना शुरू करने के लिए अपनी लेखन मेज पर चला गया। तब से मैं वहीं असहाय बैठा हूँ (अपनी क्षमताओं के बावजूद); वही देख रहा हूँ जो रॉबिन्सन क्रूसो ने ऊपर उद्धृत किया है—अर्थात्, किसी काम को शुरू करने से पहले उसकी लागत का आकलन न करना और उसे पूरा करने की अपनी क्षमता का सही आकलन न करना मूर्खता है। कृपया याद रखें, मैंने गलती से उस जगह पर किताब खोली थी, ठीक उस दिन से एक दिन पहले जब मैंने जल्दबाजी में यह काम हाथ में लिया था; और मुझे पूछने दीजिए—अगर यह भविष्यवाणी नहीं है, तो क्या है?

मैं अंधविश्वासी नहीं हूँ; मैंने अपने जीवनकाल में बहुत सी किताबें पढ़ी हैं; मैं अपने तरीके से विद्वान हूँ। सत्तर वर्ष का होने के बावजूद, मेरी याददाश्त बहुत अच्छी है और मेरे पैर भी उतने ही चुस्त हैं। कृपया इसे किसी अज्ञानी व्यक्ति का कथन न समझें, जब मैं यह कहता हूँ कि रॉबिन्सन क्रूसो जैसी कोई किताब न कभी लिखी गई और न कभी दोबारा लिखी जाएगी। मैंने वर्षों तक उस किताब को आजमाया है—आमतौर पर तंबाकू के साथ—और मैंने पाया है कि यह इस नश्वर जीवन की हर जरूरत में मेरी सबसे अच्छी साथी है। जब मेरा मन उदास होता है—रॉबिन्सन क्रूसो। जब मुझे सलाह चाहिए होती है—रॉबिन्सन क्रूसो। अतीत में जब मेरी पत्नी मुझे परेशान करती थी; वर्तमान में जब मैं कुछ ज्यादा पी लेता हूँ—रॉबिन्सन क्रूसो। मैंने अपनी सेवा में कड़ी मेहनत करते हुए छह मजबूत रॉबिन्सन क्रूसो घिस दिए हैं। मेरी पत्नी के पिछले जन्मदिन पर उन्होंने मुझे सातवां उपहार दिया। मैंने इसके भरोसे कुछ ज़्यादा ही पी लिया था; और रॉबिन्सन क्रूसो ने मुझे फिर से सही रास्ते पर ला दिया। कीमत चार शिलिंग और छह पेंस, नीले रंग की जिल्द में, साथ में एक चित्र भी।

फिर भी, ये तो हीरे की कहानी की शुरुआत जैसा नहीं लग रहा—है ना? लगता है मैं कहीं भटक गया हूँ, पता नहीं किस चीज़ की तलाश में। कृपया हम एक नया पन्ना लें और फिर से शुरू करें। आपको मेरी शुभकामनाएँ।

अध्याय II

मैंने कुछ पंक्तियाँ पहले अपनी पत्नी के बारे में बात की थी। वह हीरा हमारे घर में, जहाँ वह खो गया, कभी नहीं आ सकता था, अगर उसे मेरी पत्नी की बेटी को उपहार में न दिया गया होता; और मेरी पत्नी की बेटी का जन्म ही नहीं होता, अगर मेरी पत्नी ने (कठिनाई और कष्ट सहकर) उसे जन्म न दिया होता। इसलिए, अगर हम मेरी पत्नी से शुरू करें, तो हम निश्चित रूप से बहुत पीछे से शुरू कर रहे हैं। और यह, मैं आपको बता दूँ, जब आपके हाथ में मेरे जैसा काम हो, तो शुरुआत में यह एक बहुत बड़ी राहत होती है।

यदि आप फैशन जगत के बारे में कुछ भी जानते हैं, तो आपने तीन खूबसूरत मिस हर्नकास्टल्स के बारे में ज़रूर सुना होगा। मिस एडिलेड; मिस कैरोलिन; और मिस जूलिया—मेरी राय में, इनमें से आखिरी बहन सबसे छोटी और सबसे अच्छी थी; और जैसा कि आप अभी देखेंगे, मुझे इसका आकलन करने का अवसर मिला था। मैं उनके पिता, बूढ़े लॉर्ड की सेवा में गया (भगवान का शुक्र है, हीरे के इस कारोबार में हमारा उनसे कोई लेना-देना नहीं है; उनकी ज़बान सबसे लंबी और गुस्सा सबसे जल्दी आता था, चाहे वो ऊंचे पद के हों या निचले पद के, जितने भी लोगों से मैं मिला हूँ उनमें सबसे ज़्यादा गुस्से वाले थे)—मैं कह रहा हूँ, मैं पंद्रह साल की उम्र में बूढ़े लॉर्ड की सेवा में, तीनों सम्मानित युवतियों के सेवक के रूप में गया था। मैं वहाँ तब तक रहा जब तक मिस जूलिया ने स्वर्गीय सर जॉन वेरेंडर से शादी नहीं कर ली। एक बेहतरीन इंसान, जिन्हें बस किसी ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत थी जो उनका प्रबंधन कर सके; और हम सबने मिलकर एक ऐसा व्यक्ति ढूंढ लिया जो यह काम कर सके; और तो और, वह इसी पर फला-फूला, इसी पर मोटा हुआ, इसी पर सुखी जीवन जिया और इसी पर शांति से उसकी मृत्यु हुई, उस दिन से जब मेरी पत्नी उसे शादी के लिए चर्च ले गई थी, उस दिन तक जब उसने उसकी अंतिम सांस ली और हमेशा के लिए उसकी आंखें बंद कर दीं।

मैं यह बताना भूल गया था कि मैं दुल्हन के साथ उसके पति के घर और ज़मीन पर गया था। "सर जॉन," वह कहती है, "मैं गैब्रियल बेटरएज के बिना नहीं रह सकती।" "मेरी लेडी," सर जॉन कहते हैं, "मैं भी उनके बिना नहीं रह सकता।" उनका उसके साथ यही व्यवहार था - और इसी तरह मैं उनकी सेवा में लग गया। मेरे लिए सब एक जैसा था, जब तक मैं और मेरी प्रेमिका साथ थे।

मेरी पत्नी को बाहरी कामों, खेतों और ऐसे ही कामों में रुचि देखकर, मैंने भी उनमें रुचि लेना शुरू कर दिया—खासकर इसलिए क्योंकि मैं खुद एक छोटे किसान का सातवाँ

बेटा था। मेरी पत्नी ने मुझे ज़मींदार के अधीन रखवा दिया, और मैंने पूरी लगन से काम किया, उन्हें संतुष्ट किया और उसी के अनुसार पदोन्नति पाई। कुछ साल बाद, सोमवार के दिन, मेरी पत्नी ने कहा, "सर जॉन, आपका ज़मींदार एक मूर्ख बूढ़ा आदमी है। उसे उदारतापूर्वक पेंशन दीजिए और गैब्रियल बेटरएज को उसकी जगह दे दीजिए।" मंगलवार को, सर जॉन ने कहा, "मेरी पत्नी, ज़मींदार को उदारतापूर्वक पेंशन दी जा चुकी है; और गैब्रियल बेटरएज को उसकी जगह मिल गई है।" आपने अक्सर विवाहित लोगों के दुखी जीवन के बारे में सुना होगा। यहाँ इसका एक विपरीत उदाहरण है। यह आप में से कुछ के लिए एक चेतावनी और दूसरों के लिए एक प्रोत्साहन हो सकता है। इस बीच, मैं अपनी कहानी जारी रखूंगा।

आप कहेंगे, मैं तो मानो मजे में था। मुझे भरोसे और सम्मान का पद मिला हुआ था, रहने के लिए मेरा अपना एक छोटा सा घर था, सुबह जागीर के चक्कर लगाने को मिलते थे, दोपहर में हिसाब-किताब करना होता था, और शाम को मेरी पाइप और रॉबिन्सन क्रूसो का उपन्यास—मुझे खुश करने के लिए और क्या चाहिए था? याद कीजिए, आदम ने जब अकेले अदन के बगीचे में समय बिताया था, तब वह क्या चाहता था; और अगर आप इसके लिए आदम को दोषी नहीं ठहरा सकते, तो मुझे भी मत ठहराइए।

जिस महिला पर मेरी नज़र टिकी थी, वह मेरी कुटिया में मेरी देखभाल करने वाली महिला थी। उसका नाम सेलिना गोबी था। मैं स्वर्गीय विलियम कोबेट की पत्नी चुनने के बारे में कही गई बात से सहमत हूँ। यह देख लो कि वह खाना अच्छे से चबाती है और चलते समय अपने पैर ज़मीन पर मज़बूती से रखती है, बस सब ठीक है। सेलिना गोबी इन दोनों मामलों में बिल्कुल सही थी, और यही एक कारण था उससे शादी करने का। मेरा एक और कारण भी था, जो मैंने खुद खोजा था। सेलिना अविवाहित होने के कारण मुझसे अपने भोजन और सेवाओं के लिए प्रति सप्ताह कुछ पैसे लेती थी। मेरी पत्नी होने के नाते, वह अपने भोजन का शुल्क नहीं ले सकती थी, और उसे मुझे अपनी सेवाएँ निःशुल्क देनी पड़तीं। मैंने इसे इसी नज़रिए से देखा। मितव्ययिता - थोड़ा सा प्यार। मैंने यह बात अपनी प्रेमिका से कर्तव्यवश कही, ठीक वैसे ही जैसे मैंने खुद से कही थी।

मैंने कहा, "मैं सेलिना गोबी के बारे में सोच रहा था और मुझे लगता है, मेरी महिला, उसे अपने पास रखने की तुलना में उससे शादी करना सस्ता होगा।"

मेरी पत्नी ज़ोर से हंस पड़ी और बोली कि उसे समझ नहीं आ रहा कि उसे किस बात पर ज़्यादा हैरानी हुई—मेरी भाषा पर या मेरे सिद्धांतों पर। शायद उसे कोई चुटकुला पसंद आया होगा, ऐसा चुटकुला जिसे सिर्फ़ सभ्य व्यक्ति ही समझ सकता है। मुझे खुद तो कुछ समझ नहीं आया, बस इतना पता था कि मैं उसे सेलिना के पास रख सकता हूँ, तो मैंने जाकर उसे रख दिया। और सेलिना ने क्या कहा? हे भगवान! अगर तुम यह सवाल पूछते हो, तो तुम्हें औरतों के बारे में कितना कम पता होगा। ज़ाहिर है, उसने हाँ कहा।

जैसे-जैसे मेरा समय नज़दीक आता गया और समारोह के लिए मेरे नए कोट की चर्चा होने लगी, मेरा मन चिंतित होने लगा। मैंने अन्य पुरुषों से इस बारे में बात की कि जब वे मेरी जैसी स्थिति में थे तो उन्हें कैसा महसूस हुआ; और उन सभी ने स्वीकार किया कि घटना से लगभग एक सप्ताह पहले, वे मन ही मन इससे बाहर निकलना चाहते थे। मैं तो उससे भी आगे बढ़ गया; मैंने सचमुच उठकर इससे बचने की कोशिश की। व्यर्थ नहीं! मैं इतना न्यायप्रिय व्यक्ति था कि उससे यह उम्मीद नहीं कर सकता था कि वह मुझे मुफ्त में छोड़ देगी। जब पुरुष किसी स्थिति से बाहर निकलता है तो स्त्री को मुआवज़ा मिलना इंग्लैंड के कानूनों में से एक है। कानूनों का पालन करते हुए, और इस पर अच्छी तरह विचार करने के बाद, मैंने सेलिना गोबी को एक पंखों वाला बिस्तर और पचास शिलिंग देने की पेशकश की ताकि वह इस सौदे से मुक्त हो जाए। आपको शायद विश्वास न हो, लेकिन यह सच है - वह इतनी मूर्ख थी कि उसने मना कर दिया।

उसके बाद तो सब कुछ खत्म ही हो गया, ज़ाहिर है। मैंने नया कोट जितना सस्ता हो सकता था, उतना सस्ता खरीदा, और बाकी सब कुछ भी जितना सस्ता हो सकता था, उतना सस्ता ही इस्तेमाल किया। हम न तो खुशहाल थे, न ही दुखी। हम दोनों बिल्कुल एक जैसे थे। ये कैसे होता था, ये मेरी समझ से परे है, लेकिन हम हमेशा, चाहे अच्छे इरादे से ही सही, एक-दूसरे के रास्ते में आ जाते थे। जब मुझे ऊपर जाना होता, तो मेरी पत्नी नीचे आ रही होती; या जब मेरी पत्नी नीचे जाना चाहती, तो मैं ऊपर आ रहा होता। मेरे अनुभव के अनुसार, यही वैवाहिक जीवन है।

सीढ़ियों पर पाँच साल तक चली गलतफहमियों के बाद, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हम दोनों को अलग करने का फैसला किया और मेरी पत्नी को अपने पास बुला लिया। मैं अपनी छोटी बेटी पेनेलोप के साथ अकेला रह गया, और मेरे पास कोई और संतान नहीं थी। कुछ समय बाद सर जॉन का भी निधन हो गया, और मेरी पत्नी अपनी छोटी बेटी मिस राहेल के साथ अकेली रह गईं, और उनके पास कोई और संतान नहीं थी।

मैंने अपनी पत्नी को बहुत ही कम उद्देश्य से लिखा है, अगर आपको यह जानना ही है कि मेरी छोटी पेनेलोप की देखभाल मेरी मालकिन की देखरेख में हुई, उसे स्कूल भेजा गया, पढ़ाया गया, उसे एक होशियार लड़की बनाया गया, और जब वह बड़ी हुई तो उसे मिस राहेल की नौकरानी बना दिया गया।

मैं, साल दर साल, क्रिसमस 1847 तक बेलीफ के रूप में अपना काम करता रहा, फिर मेरे जीवन में एक बदलाव आया। उस दिन, मेरी पत्नी ने अकेले मेरे साथ मेरी कुटिया में चाय पीने का न्योता दिया। उन्होंने कहा कि जब मैंने पुराने मालिक के समय में पेज-बॉय के रूप में काम शुरू किया था, तब से लेकर अब तक मैं पचास साल से अधिक समय से उनकी सेवा में हूँ, और उन्होंने मुझे अपने हाथों से बुनी हुई ऊन की एक सुंदर जैकेट दी, ताकि मैं कड़ाके की ठंड में गर्म रह सकूँ।

मुझे यह शानदार उपहार मिला और मैं अपनी मालकिन को उनके द्वारा दिए गए सम्मान के लिए धन्यवाद देने के लिए शब्द नहीं ढूंढ पा रहा था। लेकिन मुझे यह जानकर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह जैकेट सम्मान नहीं, बल्कि रिश्वत थी। मेरी मालकिन को मुझसे पहले ही पता चल गया था कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ, और वह मेरी कुटिया में मुझे मनाने आई थीं (अगर मैं ऐसा शब्द इस्तेमाल करूँ तो) कि मैं बाहर का कठिन काम, यानी ज़मींदार का काम छोड़ दूँ और बाकी जीवन घर के प्रबंधक के रूप में आराम से बिताऊँ। मैंने आराम करने के अपमान का जितना हो सके विरोध किया। लेकिन मेरी मालकिन मेरी कमजोरी जानती थीं; उन्होंने इसे अपने लिए एक एहसान समझा। उसके बाद, हमारे बीच का विवाद इस बात पर समाप्त हुआ कि मैंने एक बूढ़े मूर्ख की तरह अपनी नई ऊनी जैकेट से अपनी आँखें पोंछीं और कहा कि मैं इस बारे में सोचूँगा।

मेरी पत्नी के चले जाने के बाद, इस बारे में सोचते-सोचते मेरे मन में बहुत बेचैनी मच गई थी। इसलिए मैंने वह उपाय आजमाया जो संदेह और आपात स्थिति में हमेशा कारगर साबित हुआ है। मैंने पाइप पिया और रॉबिन्सन क्रूसो की किताब पढ़ने लगा। उस अद्भुत किताब को पढ़ते हुए पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि मुझे एक सुकून देने वाला अंश (पृष्ठ एक सौ अट्ठावन) मिला, जो इस प्रकार था: "आज हम जिसे प्यार करते हैं, कल उससे नफरत करते हैं।" मुझे तुरंत अपना रास्ता साफ दिख गया। आज तो मैं फार्म-बेलीफ बने रहने के पक्ष में था; लेकिन रॉबिन्सन क्रूसो के अनुसार, कल मुझे बिल्कुल उलट सोचना होगा। कल के मूड में रहते हुए खुद को कल के लिए तैयार करना था, और काम हो गया। इस तरह मन को शांति मिलने पर, मैं उस रात लेडी

वेरेंडर के फार्म बेलीफ के रूप में सो गया और अगली सुबह लेडी वेरेंडर के हाउस-स्टूवर्ड के रूप में उठा। सब कुछ काफी आरामदायक था, और यह सब रॉबिन्सन क्रूसो के दौरान हुआ!

मेरी बेटी पेनेलोप ने अभी-अभी मेरे कंधे के ऊपर से झाँककर देखा कि मैंने अब तक क्या लिखा है। वह कहती है कि यह बहुत सुंदर लिखा गया है, और इसका हर शब्द सच है। लेकिन वह एक आपत्ति उठाती है। वह कहती है कि मैंने अब तक जो लिखा है, वह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा मुझे लिखना था। मुझे हीरे की कहानी सुनाने के लिए कहा गया था, और इसके बजाय मैं अपनी ही कहानी सुना रहा हूँ। अजीब बात है, और मेरी समझ से परे है। मैं सोचता हूँ कि क्या वे सज्जन जो किताबें लिखकर अपना व्यवसाय और जीविका कमाते हैं, कभी-कभी खुद को अपने विषय के आड़े पाते हैं, मेरी तरह? अगर ऐसा होता है, तो मैं उनके लिए सहानुभूति महसूस कर सकता हूँ। इस बीच, एक और असफल शुरुआत हो गई, और अच्छे लेखन कागज की और बर्बादी हो गई। अब क्या किया जाए? मुझे नहीं लगता कि कुछ किया जा सकता है, सिवाय इसके कि आप अपना आपा न खोएँ, और मैं तीसरी बार फिर से शुरू करूँ।

अध्याय III

कहानी की शुरुआत सही तरीके से कैसे की जाए, इस सवाल को सुलझाने के लिए मैंने दो तरीके आजमाए। पहला, खूब सोच-विचार किया, जिससे कुछ भी समझ नहीं आया। दूसरा, अपनी बेटी पेनेलोप से सलाह ली, जिससे मुझे एक बिल्कुल नया विचार मिला।

पेनेलोप का सुझाव है कि मैं हर दिन जो कुछ हुआ, उसे लिखूँ, उस दिन से शुरू करते हुए जब हमें खबर मिली कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक घर आने वाले हैं। जब आप इस तरह से अपनी याददाश्त को तारीखों से जोड़ते हैं, तो यह आश्चर्यजनक है कि आपकी याददाश्त उस मजबूरी में कितना कुछ याद कर लेती है। एकमात्र मुश्किल तो तारीखों को याद करना ही है। पेनेलोप ने इसके लिए अपनी डायरी में देखने की पेशकश की, जिसे उसने स्कूल में लिखना सीखा था और तब से लिखती आ रही है। इस सुझाव में मैंने एक सुधार किया, यानी कि वह अपनी डायरी से कहानी सुनाए, न कि मैं। इस पर पेनेलोप ने गुस्से भरी नज़रों और लाल चेहरे के साथ कहा कि उसकी डायरी सिर्फ़ उसकी निजी जानकारी के लिए है, और उसके अलावा कोई भी जीवित प्राणी यह नहीं जान सकता कि उसमें क्या लिखा है। जब मैंने पूछा कि इसका क्या मतलब है, तो पेनेलोप ने कहा, "बकवास!" मैंने कहा, प्यारे।

पेनेलोप की योजना से शुरू करते हुए, मैं यह उल्लेख करना चाहूंगा कि मुझे विशेष रूप से एक बुधवार की सुबह मेरी मालकिन के बैठक कक्ष में बुलाया गया था, तारीख चौबीस मई, अठारह सौ अड़तालीस थी।
"गैब्रियल," मेरी पत्नी ने कहा, "एक ऐसी खबर है जो आपको चौंका देगी। फ्रैंकलिन ब्लेक विदेश से लौट आए हैं। वे लंदन में अपने पिता के साथ रह रहे थे, और वे कल हमारे पास आ रहे हैं और अगले महीने तक यहीं रहेंगे, साथ ही राहेल का जन्मदिन भी मनाएंगे।"
अगर मेरे हाथ में टोपी होती, तो सम्मान के अलावा और कोई चीज़ मुझे उसे छत पर फेंकने से नहीं रोकती। मैंने श्री फ्रैंकलिन को तब से नहीं देखा था जब वह एक लड़का था और हमारे साथ इसी घर में रहता था। मेरी याद में, वह सबसे प्यारा लड़का था जिसने कभी लट्टू घुमाया हो या खिड़की तोड़ी हो। मिस राहेल, जो वहाँ मौजूद थीं और जिनसे मैंने यह बात कही, ने जवाब में कहा कि उन्हें वह सबसे क्रूर अत्याचारी के रूप में याद है जिसने कभी गुड़िया को सताया हो, और एक थकी हुई छोटी बच्ची को रस्सी के हार्नेस में जकड़कर सबसे कठोर तरीके से काम करवाया हो। मिस राहेल ने अपनी बात को इस तरह संक्षेप में कहा, "जब मैं फ्रैंकलिन ब्लेक के बारे में सोचती हूँ, तो मैं गुस्से से जल उठती हूँ और थकान से कराह उठती हूँ।"
अब जो मैं आपको बता रहा हूँ, उसे सुनकर आप स्वाभाविक रूप से पूछेंगे कि श्री फ्रैंकलिन ने अपने बचपन से लेकर वयस्क होने तक के सारे वर्ष अपने देश से बाहर क्यों बिताए? मेरा उत्तर है, क्योंकि उनके पिता दुर्भाग्यवश एक डची के अगले उत्तराधिकारी थे, लेकिन वे इसे साबित नहीं कर पाए।
संक्षेप में कहें तो, घटना इस प्रकार घटी:
मेरी पत्नी की सबसे बड़ी बहन का विवाह प्रसिद्ध श्री ब्लेक से हुआ था—जो अपनी अपार दौलत और मुकद्दमेबाजी के लिए समान रूप से प्रसिद्ध थे। उन्होंने अपने देश की अदालतों को ड्यूक को सत्ता से बेदखल करने और खुद ड्यूक की जगह लेने के लिए कितने वर्षों तक परेशान किया—कितने वकीलों की जेबें उन्होंने भरीं और कितने निर्दोष लोगों को अपने पक्ष या विपक्ष में बहस करने के लिए मजबूर किया—यह गिनती करना मेरे बस की बात नहीं है। उनकी पत्नी और तीन बच्चों में से दो की मृत्यु अदालतों द्वारा उन्हें सत्ता से बेदखल करने और उनकी संपत्ति पर कब्जा करने का फैसला करने से पहले ही हो गई। जब सब कुछ समाप्त हो गया और ड्यूक सत्ता में बना रहा, तो श्री ब्लेक को एहसास हुआ कि उनके साथ हुए दुर्व्यवहार का बदला लेने

का एकमात्र तरीका यही था कि वे अपने बेटे को शिक्षित करने का सम्मान अपने देश को न दें। उन्होंने कहा, "जिस तरह से मेरी अपनी संस्थाओं ने मेरे साथ व्यवहार किया है, उसके बाद मैं उन पर कैसे भरोसा कर सकता हूँ?" इसके अलावा, श्री ब्लेक सभी लड़कों को नापसंद करते थे, यहाँ तक कि अपने बेटे को भी, और आप मानेंगे कि इसका अंत एक ही तरह से होना था। मास्टर फ्रैंकलिन को इंग्लैंड में हमसे अलग कर दिया गया और उन्हें उन संस्थानों में भेज दिया गया जिन पर उनके पिता भरोसा कर सकते थे, उस श्रेष्ठ देश जर्मनी में; आप देखेंगे कि श्री ब्लेक स्वयं इंग्लैंड में आराम से रहे, संसद भवन में अपने देशवासियों को शिक्षित करने के लिए और ड्यूक के कब्जे के विषय पर एक बयान प्रकाशित करने के लिए, जो उस दिन से आज तक अधूरा ही रहा है।

लीजिए! शुक्र है, ये बात तो पता चल गई! अब न तो आपको और न ही मुझे मिस्टर ब्लेक सीनियर के बारे में और सोचने की ज़रूरत है। उन्हें ड्यूकडम के हवाले छोड़ दीजिए; और हम दोनों डायमंड पर ध्यान दीजिए।

यह हीरा हमें मिस्टर फ्रैंकलिन के पास वापस ले जाता है, जो उस मनहूस रत्न को घर में लाने का एक निर्दोष माध्यम थे।

हमारा प्यारा बेटा विदेश जाने के बाद भी हमें नहीं भूला। वह कभी-कभार पत्र लिखता था; कभी मेरी पत्नी को, कभी मिस राहेल को, और कभी मुझे। उसके जाने से पहले हमारा एक लेन-देन हुआ था, जिसमें उसने मुझसे एक धागे का गोला, एक चार धार वाला चाकू और सात शिलिंग और छह पेंस उधार लिए थे—जिनका रंग मैंने फिर कभी नहीं देखा और न ही कभी देखने की उम्मीद है। उसके पत्रों में ज़्यादातर और उधार लेने की बातें होती थीं। हालाँकि, मैंने अपनी पत्नी से सुना कि जैसे-जैसे उसकी उम्र और कद बढ़ता गया, विदेश में उसका कैसा हाल रहा। जर्मनी की शिक्षाओं से जो कुछ वह सीख सकता था, सीखने के बाद उसने फ्रांसीसियों से मिलने का फैसला किया, और उसके बाद इटालियनों से। जहाँ तक मैं समझ पाई, उन्होंने उसे अपने बीच एक तरह का सर्वगुण संपन्न व्यक्ति बना दिया। वह थोड़ा-बहुत लिखता था; थोड़ा-बहुत चित्रकारी करता था; थोड़ा-बहुत गाता, बजाता और संगीत बनाता था—मुझे लगता है कि इन सभी मामलों में उसने मुझसे उधार लेने की तरह ही दूसरों से भी उधार लिया था। जब वह बालिग हुआ, तो उसकी माँ की सारी संपत्ति (साल में सात सौ पाउंड) उसे मिली, और वह उसे ऐसे निचोड़ ले गई जैसे छलनी से छानी जाती है। उसके पास जितना पैसा होता, उसकी लालसा उतनी ही बढ़ती जाती; श्री फ्रैंकलिन की जेब में एक ऐसा छेद था

जिसे कोई भर नहीं सकता था। वह जहाँ भी जाता, उसका जीवंत और सहज स्वभाव सबका दिल जीत लेता। वह यहाँ-वहाँ, हर जगह रहता था; उसका पता (जैसा कि वह खुद बताया करता था) "पोस्ट ऑफिस, यूरोप - जब तक बुलाया न जाए तब तक यहीं रहूँगा।" उसने दो बार इंग्लैंड वापस आकर हमसे मिलने का मन बनाया; और दोनों बार (आपकी मौजूदगी को छोड़कर), कोई न कोई अवर्णनीय महिला उसके रास्ते में खड़ी हो गई और उसे रोक दिया। उसका तीसरा प्रयास सफल रहा, जैसा कि आप मेरी पत्नी द्वारा बताई गई बातों से पहले ही जान चुके हैं। गुरुवार, पच्चीस मई को, हम पहली बार देखने वाले थे कि हमारा प्यारा लड़का एक आदमी के रूप में कैसा बन गया है। वह अच्छे खानदान से था; उसमें बहुत साहस था; और हमारी गणना के अनुसार उसकी उम्र पच्चीस वर्ष थी। अब आप श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के बारे में उतना ही जानते हैं जितना मैं उनके हमारे घर आने से पहले जानता था।

गुरुवार का दिन गर्मियों के दिनों की तरह ही सुहावना था: और मेरी पत्नी और मिस राहेल (मिस्टर फ्रैंकलिन के रात के खाने के समय तक आने की उम्मीद न करते हुए) पड़ोस में कुछ दोस्तों के साथ दोपहर के भोजन के लिए निकल गईं।

उनके जाने के बाद, मैं अपने मेहमान के लिए तैयार किए गए शयनकक्ष को देखने गया और पाया कि सब कुछ ठीक-ठाक था। फिर, अपनी मालकिन के घर में बटलर और साथ ही प्रबंधक होने के नाते (मेरी अपनी विशेष इच्छा पर, और इसलिए भी क्योंकि मुझे स्वर्गीय सर जॉन के तहखाने की चाबी अपने अलावा किसी और के पास देखना अच्छा नहीं लगता था) - मैंने अपनी मशहूर लैटूर क्लारेट वाइन मंगाई और उसे खाने से पहले ठंड दूर करने के लिए गर्म हवा में रख दिया। फिर मैंने खुद को भी गर्म हवा में रखने का फैसला किया - यह सोचकर कि जो पुरानी क्लारेट के लिए अच्छा है, वही बुढ़ापे के लिए भी अच्छा है - और अपनी मधुमक्खी के छत्ते जैसी कुर्सी लेकर पीछे के आंगन में जाने लगा, तभी मुझे अपनी मालकिन के घर के सामने की छत पर ढोल की हल्की थाप जैसी आवाज सुनाई दी और मैं रुक गया।

छत पर जाकर मैंने देखा कि तीन सांवले रंग के भारतीय, सफेद लिनेन की फ्रॉक और पतलून पहने हुए, घर की ओर देख रहे थे।

जब मैंने गौर से देखा, तो मुझे पता चला कि भारतीयों के आगे छोटे-छोटे ढोल लटके हुए थे। उनके पीछे एक छोटा, नाजुक सा दिखने वाला, हल्के बालों वाला अंग्रेज लड़का एक थैला लिए खड़ा था। मैंने अनुमान लगाया कि वे लोग घूमते-फिरते जादूगर हैं और थैला लिए हुए लड़का उनके काम के औजार लिए हुए है। उन तीनों में से एक, जो

अंग्रेजी बोलता था और जिसके तौर-तरीके, मैं मानता हूँ, बेहद शालीन थे, ने मुझे बताया कि मेरा अनुमान सही था। उसने घर की मालकिन के सामने अपने करतब दिखाने की अनुमति मांगी।

मैं कोई चिड़चिड़ा बूढ़ा आदमी नहीं हूँ। मैं आमतौर पर मनोरंजन का शौकीन हूँ, और दुनिया का आखिरी इंसान हूँ जो किसी दूसरे पर इसलिए अविश्वास करे क्योंकि वह मुझसे थोड़ा सांवला है। लेकिन हम सब में कुछ न कुछ कमज़ोरियाँ होती हैं—और मेरी कमज़ोरी यह है कि जब मुझे पता चलता है कि रसोई की मेज़ पर परिवार की थाली रखी है, तो मुझे तुरंत उस टोकरी की याद आ जाती है जब कोई अजनबी टहलते हुए आता है जिसके तौर-तरीके मुझसे कहीं बेहतर होते हैं। इसलिए मैंने उस भारतीय को बताया कि घर की मालकिन बाहर गई हुई हैं; और मैंने उसे और उसके साथियों को घर से बाहर जाने की चेतावनी दी। उसने बदले में मुझे सुंदर ढंग से प्रणाम किया; और वह और उसके साथी घर से चले गए। मैं अपनी मधुमक्खी के छत्ते जैसी कुर्सी पर वापस आ गया, और आँगन के धूप वाले हिस्से में बैठ गया, और (सच कहूँ तो) पूरी तरह से सो तो नहीं गया, लेकिन नींद के लगभग बराबर ही कुछ हो गया।

मेरी बेटी पेनेलोप दौड़कर मेरे पास आई, मानो घर में आग लग गई हो, तभी मेरी नींद खुली। आपको क्या लगता है, वह क्या चाहती थी? वह चाहती थी कि उन तीनों भारतीय बाज़ीगरों को तुरंत पकड़ लिया जाए; क्योंकि उन्हें पता था कि लंदन से कौन हमसे मिलने आ रहा है, और वे श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को कुछ नुकसान पहुँचाना चाहते थे।

श्री फ्रैंकलिन का नाम सुनकर मैं चौंक गया। मैंने अपनी आँखें खोलीं और अपनी बेटी से स्पष्टीकरण मांगा।

ऐसा प्रतीत हुआ कि पेनेलोप अभी-अभी हमारे लॉज से आई थी, जहाँ वह लॉज-कीपर की बेटी के साथ गपशप कर रही थी। दोनों लड़कियों ने देखा कि मेरे द्वारा चेतावनी दिए जाने के बाद भी भारतीय अपने छोटे बच्चे के साथ बाहर निकल रहे थे। उन्हें लगा कि विदेशी उस बच्चे के साथ दुर्व्यवहार कर रहे हैं—जिसका कारण मुझे समझ नहीं आया, सिवाय इसके कि वह बच्चा सुंदर और नाज़ुक दिखता था—दोनों लड़कियाँ हमारे और सड़क के बीच की बाड़ के भीतरी हिस्से से चुपके से निकल गईं और बाहर की ओर विदेशी लोगों की गतिविधियों को देखने लगीं। उन गतिविधियों के परिणामस्वरूप निम्नलिखित असाधारण करतब दिखाए गए।

पहले उन्होंने सड़क के आगे और पीछे देखा और यह सुनिश्चित किया कि वे अकेले हैं। फिर वे तीनों मुड़े और हमारे घर की दिशा में टकटकी लगाकर देखने लगे। फिर वे

अपनी भाषा में बड़बड़ाने और बहस करने लगे और एक-दूसरे को संदेह में डूबे आदमियों की तरह देखने लगे। फिर वे सब अपने छोटे अंग्रेज़ लड़के की ओर मुड़े, मानो उससे मदद की उम्मीद कर रहे हों। और फिर अंग्रेज़ बोलने वाले मुखिया भारतीय ने लड़के से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ाओ।"

उन भयानक शब्दों को सुनकर मेरी बेटी पेनेलोप ने कहा कि उसे नहीं पता कि किस चीज़ ने उसके दिल को फटने से रोका। मैंने मन ही मन सोचा कि शायद उसकी कमर की वजह से ऐसा हुआ होगा। लेकिन मैंने बस इतना ही कहा, "तुम्हारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।" (ध्यान दें: महिलाओं को इस तरह की छोटी-छोटी तारीफें पसंद आती हैं।)

जब उस भारतीय ने कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ाओ," तो लड़का पीछे हट गया, सिर हिलाया और कहा कि उसे यह पसंद नहीं है। तब भारतीय ने उससे (बिल्कुल भी निर्दयता से नहीं) पूछा कि क्या वह लंदन वापस जाना चाहेगा और वहीं छोड़ दिया जाना चाहेगा जहाँ उसे मिला था, एक बाज़ार में खाली टोकरी में सोते हुए—एक भूखा, फटेहाल और परित्यक्त छोटा लड़का। ऐसा लगता है कि इससे समस्या का समाधान हो गया। उस छोटे लड़के ने अनिच्छा से अपना हाथ आगे बढ़ाया। इस पर भारतीय ने अपनी छाती से एक बोतल निकाली और उसमें से स्याही जैसा कोई काला पदार्थ लड़के की हथेली पर उंडेल दिया। भारतीय ने पहले लड़के के सिर को छुआ और हवा में उसके ऊपर इशारे किए, फिर कहा, "देखो।" लड़का एकदम अकड़ गया और मूर्ति की तरह खड़ा हो गया, अपनी हथेली में भरी स्याही को देखता रहा।

(अब तक तो मुझे ऐसा लग रहा था कि यह एक तरह का बाजीगरी है, जिसमें स्याही की फिजूलखर्ची हो रही है। मुझे फिर से नींद आने लगी थी, तभी पेनेलोप के अगले शब्दों ने मुझे जगा दिया।)

भारतीयों ने एक बार फिर सड़क के ऊपर और नीचे देखा—और फिर भारतीय मुखिया ने लड़के से ये शब्द कहे; "देखो, यह अंग्रेज सज्जन विदेश से आए हैं।"

लड़के ने कहा, "मैं उसे देख रहा हूँ।"

भारतीय ने कहा, "क्या अंग्रेज सज्जन आज इसी घर की ओर जाने वाली सड़क पर यात्रा करेंगे, और किसी अन्य सड़क पर नहीं?"

लड़के ने कहा, "आज अंग्रेज सज्जन इसी घर की ओर जाने वाली सड़क पर यात्रा करेंगे, किसी और सड़क पर नहीं।" भारतीय ने थोड़ा इंतजार करने के बाद दूसरा प्रश्न पूछा। उसने कहा, "क्या अंग्रेज सज्जन के पास वह चीज़ है?"

लड़के ने भी थोड़ी देर इंतजार करने के बाद जवाब दिया, "हाँ।"

भारतीय ने तीसरा और अंतिम प्रश्न पूछा: "क्या अंग्रेज सज्जन यहाँ आएंगे, जैसा कि उन्होंने आने का वादा किया है, दिन ढलने पर?"
लड़के ने कहा, "मैं नहीं बता सकता।"
भारतीय ने पूछा क्यों?
लड़के ने कहा, "मैं थक गया हूँ। मेरे दिमाग में धुंध छा गई है और मुझे उलझन हो रही है। आज मैं और कुछ नहीं देख सकता।"
इसके साथ ही धार्मिक शिक्षा समाप्त हो गई। प्रधान भारतीय ने अपनी भाषा में अन्य दो लोगों से कुछ कहा, लड़के की ओर इशारा करते हुए और उस कस्बे की ओर इशारा करते हुए जहाँ (जैसा कि हमें बाद में पता चला) वे ठहरे हुए थे। फिर उसने लड़के के सिर पर कुछ और संकेत किए और उसके माथे पर फूँक मारी, जिससे वह चौंककर जाग गया। इसके बाद, वे सभी कस्बे की ओर चल पड़े और लड़कियों ने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।
उनकी कही हर बात में कोई न कोई सीख छिपी होती है, बस आपको उसे ढूंढना होता है। इस बात से क्या सीख मिली?
मेरी समझ से इसका सार यह था: पहला, कि मुख्य जादूगर ने बाहर नौकरों के बीच श्री फ्रैंकलिन के आने की चर्चा सुनी थी और इससे कुछ पैसे कमाने का रास्ता खोज लिया था। दूसरा, कि वह और उसके साथी और लड़का (पैसे कमाने के इरादे से) तब तक वहीं मंडराते रहे जब तक कि मेरी पत्नी घर नहीं आ गई, और फिर वापस आकर जादू से श्री फ्रैंकलिन के आने की भविष्यवाणी करने वाले थे। तीसरा, कि पेनेलोप ने उन्हें अपना जादू-टोना करते हुए सुना था, जैसे अभिनेता किसी नाटक का पूर्वाभ्यास कर रहे हों। चौथा, कि मुझे उस शाम थाली की टोकरी पर नज़र रखनी चाहिए। पाँचवाँ, कि पेनेलोप को शांत हो जाना चाहिए और मुझे, उसके पिता को, धूप में फिर से झपकी लेने देना चाहिए।
मुझे तो यही समझदारी भरा नज़रिया लगा। अगर आप युवतियों के तौर-तरीकों से वाकिफ हैं, तो आपको यह जानकर हैरानी नहीं होगी कि पेनेलोप ने इसे स्वीकार नहीं किया। मेरी बेटी के अनुसार, इस मामले का नैतिक पहलू गंभीर था। उसने मुझे खास तौर पर भारतीय के तीसरे सवाल की याद दिलाई, "क्या उस अंग्रेज सज्जन में कुछ खास बात है?" "ओह, पिताजी!" पेनेलोप ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "इस बारे में मज़ाक मत कीजिए। 'यह' का क्या मतलब है?"

“हम श्री फ्रैंकलिन से पूछेंगे, मेरी प्यारी,” मैंने कहा, “अगर तुम श्री फ्रैंकलिन के आने तक इंतज़ार कर सकती हो।” मैंने आँख मारी, यह जताने के लिए कि मेरा मतलब मज़ाक था। पेनेलोप ने इसे गंभीरता से ले लिया। मेरी बेटी की गंभीरता ने मुझे गुदगुदाया। “श्री फ्रैंकलिन को इसके बारे में क्या पता होगा?” मैंने पूछा। “उनसे पूछो,” पेनेलोप बोली। “और देखो कि क्या उन्हें भी यह मज़ाक लगता है।” इतना कहकर मेरी बेटी चली गई।

जब वह चली गई, तो मैंने मन ही मन ठान लिया कि मैं श्री फ्रैंकलिन से ज़रूर पूछूंगा—खासकर पेनेलोप को तसल्ली देने के लिए। उसी दिन बाद में जब मैंने उनसे पूछा, तो हमारे बीच जो बातचीत हुई, वह आपको यहाँ विस्तार से मिलेगी। लेकिन चूंकि मैं आपकी उम्मीदें बढ़ाकर उन्हें निराश नहीं करना चाहता, इसलिए आगे बढ़ने से पहले ही मैं आपको यह चेतावनी देना चाहता हूं कि बाज़ीगरों के विषय पर हमारी बातचीत में आपको ज़रा भी मज़ाक नहीं मिलेगा। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि श्री फ्रैंकलिन ने भी पेनेलोप की तरह इस बात को गंभीरता से लिया। कितनी गंभीरता से, यह आप तब समझ पाएंगे जब मैं आपको बताऊंगा कि उनके अनुसार, "यह" का मतलब मूनस्टोन था।

अध्याय IV

मुझे खेद है कि मैं आपको अपने और अपनी मधुमक्खी के छत्ते जैसी कुर्सी के कारण रोक रहा हूँ। मुझे भली-भांति पता है कि धूप से भरे पिछवाड़े में बैठा एक ऊंघता हुआ बूढ़ा व्यक्ति कोई रोचक विषय नहीं है। लेकिन चीजों को उनके वास्तविक स्वरूप में ही रखना चाहिए—और कृपया मेरे साथ थोड़ी देर और चलें, क्योंकि आज बाद में श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के आने की उम्मीद है।

मेरी बेटी पेनेलोप के जाने के बाद, मुझे दोबारा नींद आने से पहले ही, नौकरों के हॉल में प्लेटों और बर्तनों की खड़खड़ाहट से मेरी नींद टूट गई, जिसका मतलब था कि खाना तैयार था। अपने बैठक कक्ष में खाना खाते हुए, मुझे नौकरों के खाने से कोई लेना-देना नहीं था, सिवाय इसके कि मैंने उन सभी को अच्छे भोजन की शुभकामना दी और फिर अपनी कुर्सी पर आराम से बैठ गई। मैं अभी अपने पैर फैला ही रही थी कि तभी एक और महिला मेरे सामने आ गिरी। मेरी बेटी नहीं; इस बार तो रसोई की नौकरानी नैन्सी थी। मैं सीधे उसके जाने के रास्ते में खड़ी हो गई; और जब उसने मुझे जाने देने के लिए कहा, तो मैंने देखा कि उसका चेहरा रूठा हुआ था - एक ऐसी बात जिसे नौकरों के मुखिया के रूप में मैं सिद्धांत के तौर पर कभी भी बिना पूछे नहीं जाने देती।

मैंने पूछा, "तुम अपने खाने से मुंह क्यों मोड़ रही हो? नैन्सी, अब क्या हुआ?"
नैन्सी बिना कुछ जवाब दिए आगे बढ़ने की कोशिश कर रही थी; इस पर मैं उठा और उसका कान पकड़ लिया। वह एक प्यारी, गोल-मटोल युवती है, और किसी लड़की को पसंद करने पर उसे इस तरह से स्वीकार करना मेरी आदत है।
"अब क्या गड़बड़ है?" मैंने एक बार फिर कहा।
"रोसन्ना फिर से रात के खाने के लिए देर से आई है," नैन्सी कहती है। "और मुझे उसे लाने के लिए भेजा गया है। इस घर में सारा काम मेरे कंधों पर आ जाता है। मुझे अकेला छोड़ दो, मिस्टर बेटरएज!"
यहां जिस महिला का जिक्र रोसन्ना के रूप में किया गया है, वह हमारी दूसरी नौकरानी थी। मुझे हमारी दूसरी नौकरानी पर दया आ रही थी (क्यों, यह आपको अभी पता चलेगा), और नैन्सी के चेहरे पर यह देखकर कि वह अपनी साथी नौकरानी को जरूरत से ज्यादा कठोर शब्दों में डांटेगी, मुझे लगा कि मेरे पास करने के लिए कुछ खास नहीं है, और मैं खुद ही रोसन्ना को बुला लूं; उसे भविष्य में समय का पाबंद रहने का संकेत देते हुए, जिसे वह मेरी तरफ से सहर्ष स्वीकार करेगी।
मैंने पूछा, "रोसन्ना कहाँ है?"
"बेशक, रेत पर!" नैन्सी ने सिर हिलाते हुए कहा। "आज सुबह उसे फिर बेहोशी का दौरा पड़ा और उसने बाहर जाकर ताज़ी हवा लेने की ज़िद की। मुझे उससे ज़रा भी सब्र नहीं है!"
मैंने कहा, "जाओ, अपना खाना खाओ, मेरी बच्ची। मुझे उसके साथ सब्र है, और मैं उसे अंदर बुला लाऊंगा।"
नैन्सी (जिसे भूख बहुत लगती है) खुश दिख रही थी। जब वह खुश दिखती है, तो अच्छी लगती है। जब वह अच्छी दिखती है, तो मैं उसकी ठुड्डी के नीचे हल्के से गुदगुदी कर देता हूँ। यह अनैतिकता नहीं है—यह तो बस आदत है।
खैर, मैंने अपनी छड़ी ली और रेत की ओर चल पड़ा।
नहीं! अभी निकलना ठीक नहीं होगा। आपको रोकने के लिए मुझे फिर से खेद है; लेकिन आपको रेत की कहानी और रोसन्ना की कहानी ज़रूर सुननी चाहिए—क्योंकि हीरे का मामला इन दोनों से काफ़ी हद तक जुड़ा हुआ है। मैं बिना रुके अपनी बात पूरी करने की कितनी कोशिश कर रहा हूँ, और कितनी बुरी तरह नाकाम हो रहा हूँ! लेकिन, कोई बात नहीं!—लोग और चीज़ें इस जीवन में बड़े झंझटों के साथ सामने आते हैं, और किसी न किसी तरह ध्यान आकर्षित करने पर अड़े रहते हैं। चलिए आराम से

और संक्षेप में बात करते हैं; मैं आपसे वादा करता हूँ, हम जल्द ही रहस्य की तह तक पहुँच जाएँगे!

रोसन्ना (व्यक्ति का उल्लेख वस्तु से पहले करना सामान्य शिष्टाचार है) हमारे घर की इकलौती नई नौकरानी थी। जिस समय के बारे में मैं लिख रहा हूँ, उससे लगभग चार महीने पहले, मेरी मालकिन लंदन में थीं और एक सुधारगृह में गई थीं, जिसका उद्देश्य जेल से रिहा होने के बाद बेसहारा महिलाओं को फिर से बुरे रास्ते पर जाने से रोकना था। जब वहाँ की महिला ने देखा कि मेरी मालकिन को उस जगह में दिलचस्पी है, तो उन्होंने उन्हें रोसन्ना स्पीयरमैन नाम की एक लड़की की ओर इशारा किया और उन्हें एक बहुत ही दुखद कहानी सुनाई, जिसे मैं यहाँ दोहराना नहीं चाहता; क्योंकि मैं और आप भी नहीं, बेवजह दुखी होना नहीं चाहते। कहानी यह थी कि रोसन्ना स्पीयरमैन एक चोर थी, और शहर में गिरोह बनाकर हजारों लोगों से चोरी करने वाली नहीं, बल्कि सिर्फ एक से चोरी करने वाली थी, इसलिए कानून ने उसे पकड़ लिया और जेल और सुधारगृह ने कानून का अनुसरण किया। नौकरानी की राय में (उसने जो कुछ भी किया था उसके बावजूद) रोसन्ना हज़ारों में एक थी, और वह बस एक मौका चाहती थी ताकि वह किसी भी ईसाई महिला का ध्यान आकर्षित करने के योग्य साबित हो सके। मेरी मालकिन (जो खुद एक ईसाई महिला थीं) ने नौकरानी से कहा, "रोसन्ना स्पीयरमैन को यह मौका मेरी सेवा में मिलेगा।" इसके एक हफ्ते बाद, रोसन्ना स्पीयरमैन हमारी दूसरी नौकरानी के रूप में इस प्रतिष्ठान में शामिल हो गईं।

मिस राहेल और मेरे अलावा किसी को भी उस लड़की की कहानी नहीं बताई गई थी। मेरी पत्नी, जो अधिकांश मामलों में मुझसे सलाह लेने का सम्मान करती हैं, उन्होंने रोसन्ना के बारे में भी मुझसे सलाह ली। हाल ही में मैं स्वर्गीय सर जॉन की तरह ही अपनी पत्नी की बात से सहमत हो गया था, इसलिए रोसन्ना स्पीयरमैन के बारे में मैं उनसे पूरी तरह सहमत था।

हमारी इस बेचारी लड़की को जो मौका मिला, उससे बेहतर मौका शायद ही किसी और लड़की को मिल पाता। कोई भी नौकरानी उसके बीते जीवन के बारे में उसे ताना नहीं मार सकती थी, क्योंकि किसी को भी उसके अतीत के बारे में पता नहीं था। उसे भी बाकी नौकरानियों की तरह तनख्वाह और सुविधाएं मिलती थीं; और कभी-कभी मेरी मालकिन अकेले में उससे प्यार से बात करके उसका हौसला बढ़ाती थीं। बदले में, मैं यह कहना चाहूंगी कि उसने अपने प्रति दिखाए गए इस अच्छे व्यवहार को बखूबी निभाया। हालांकि वह शारीरिक रूप से कमजोर थी और कभी-कभी बेहोशी के दौरे से

परेशान रहती थी, फिर भी वह विनम्रता और बिना शिकायत किए अपना काम लगन से, ध्यान से और अच्छे से करती थी। लेकिन किसी तरह वह दूसरी नौकरानियों में दोस्त नहीं बना पाई, सिवाय मेरी बेटी पेनेलोप के, जो हमेशा रोसन्ना के प्रति दयालु थी, हालांकि कभी उससे घनिष्ठ संबंध नहीं रखा।

मुझे ठीक से पता नहीं कि उस लड़की ने ऐसा क्या किया था जिससे वे नाराज़ हो गए थे। उसमें ऐसी कोई सुंदरता नहीं थी जिससे बाकी लोग ईर्ष्या करें; वह घर की सबसे सादी महिला थी, और ऊपर से उसका एक कंधा दूसरे से थोड़ा बड़ा था। मुझे लगता है कि नौकरानियों को सबसे ज़्यादा उसकी खामोशी और अकेले रहने की आदत से चिढ़ थी। जब बाकी लोग गपशप करते थे, तब वह खाली समय में पढ़ती या काम करती थी। और जब बाहर जाने की उसकी बारी आती, तो दस में से नौ बार वह चुपचाप अपनी टोपी पहन लेती और अकेले ही अपना समय बिताती। वह कभी झगड़ा नहीं करती थी, कभी नाराज़ नहीं होती थी; वह बस बाकी नौकरानियों से एक निश्चित दूरी बनाए रखती थी, हठपूर्वक और शालीनता से। इसके अलावा, सादी दिखने के बावजूद, उसमें कुछ ऐसा था जो उसे नौकरानी जैसा नहीं बनाता था, बल्कि एक सभ्य महिला जैसा बनाता था। शायद यह उसकी आवाज़ में था, या शायद उसके चेहरे पर। मैं बस इतना ही कह सकती हूं कि घर में आते ही दूसरी महिलाओं ने उस पर बिजली की तरह झपट्टा मारा और कहा (जो कि सरासर अन्याय था) कि रोसन्ना स्पीयरमैन घमंड करती है।

अब जब मैंने रोसन्ना की कहानी सुना दी है, तो मुझे इस विचित्र लड़की के कई विचित्र तरीकों में से एक पर ध्यान देना है ताकि मैं रेत की कहानी को आगे बढ़ा सकूं।

हमारा घर यॉर्कशायर तट पर काफी ऊंचाई पर, समुद्र के बिल्कुल पास स्थित है। हमारे चारों ओर हर दिशा में सुंदर पैदल रास्ते हैं, सिवाय एक दिशा के। वह एक रास्ता वाकई बेहद खराब है। यह रास्ता लगभग एक चौथाई मील तक देवदार के पेड़ों के एक सुनसान बागान से होकर गुजरता है और अंत में आपको नीची चट्टानों के बीच, हमारे पूरे तट की सबसे सुनसान और बदसूरत छोटी खाड़ी में ले जाता है।

यहां रेत के टीले समुद्र तक फैले हुए हैं और एक-दूसरे के सामने निकली हुई चट्टानों की दो पट्टियों में जाकर खत्म होते हैं, जो पानी में ओझल हो जाती हैं। एक को उत्तरी पट्टी और दूसरी को दक्षिणी पट्टी कहते हैं। इन दोनों के बीच, साल के कुछ मौसमों में आगे-पीछे खिसकती हुई, यॉर्कशायर के तटों पर सबसे भयानक दलदली रेत मौजूद है। ज्वार के बदलते ही, नीचे की अज्ञात गहराइयों में कुछ ऐसा होता है, जिससे दलदली रेत की पूरी सतह एक अनोखे ढंग से कांपने और थरथराने लगती है, और इसी

वजह से हमारे इलाके के लोगों ने इसे 'कांपती रेत' नाम दिया है। खाड़ी के मुहाने के पास, आधा मील दूर एक विशाल टीला, दूर से आ रही मुख्य समुद्री लहरों के बल को रोक देता है। सर्दी और गर्मी, जब ज्वार दलदली रेत पर बहता है, तो ऐसा लगता है मानो समुद्र अपनी लहरों को टीले पर ही छोड़ गया हो, और अपने पानी को एक झटके के साथ धीरे से अंदर की ओर ले जाता है, और चुपचाप रेत को ढक लेता है। एक सुनसान और भयानक जगह, मैं आपको बता सकता हूँ! इस खाड़ी में कोई नाव कभी नहीं आती। हमारे मछली पकड़ने वाले गाँव, जिसे कोब्स होल कहते हैं, के बच्चे यहाँ खेलने कभी नहीं आते। मुझे तो ऐसा लगता है कि हवा में उड़ने वाले पक्षी भी कांपती रेत से दूर रहते हैं। यह बात अविश्वसनीय है कि एक युवती, जिसके पास घूमने के लिए दर्जनों सुंदर रास्ते हों और साथ चलने के लिए साथी भी हों, अगर वह बस "आओ!" कह दे, तो भी इस जगह को चुने और अपनी बारी आने पर यहाँ अकेले बैठकर काम करे या पढ़े। फिर भी, यह सच है, चाहे आप इसका जो भी कारण समझें, कि यह रोसन्ना स्पीयरमैन का पसंदीदा घूमने का स्थान था, सिवाय उन एक-दो बार के जब वह कोब्स होल गई थी, अपने पड़ोस में रहने वाली इकलौती दोस्त से मिलने के लिए, जिसके बारे में आगे बात करेंगे। यह भी सच है कि मैं अब इसी जगह के लिए निकल रहा था, उस लड़की को रात के खाने पर लाने के लिए, जो हमें खुशी-खुशी हमारे पहले मुद्दे पर ले आता है और हमें फिर से रेत की ओर ले जाता है।

मुझे बागान में उस लड़की का कोई निशान नहीं दिखा। जब मैं रेत के टीलों से होते हुए समुद्र तट पर पहुँचा, तो वह वहीं थी, अपनी छोटी सी भूसे की टोपी और उस सादे भूरे लबादे में जिसे वह हमेशा अपने विकृत कंधे को यथासंभव छिपाने के लिए पहनती थी —वह वहीं थी, बिल्कुल अकेली, दलदल और समुद्र को निहार रही थी।

जब मैं उसके पास पहुँचा तो वह चौंक गई और मुझसे मुँह फेर लिया। मेरी ओर न देखना मेरी उन आदतों में से एक थी, जिसे नौकरों का मुखिया होने के नाते मैं सिद्धांततः बिना पूछे नहीं रहने देता। मैंने उसे अपनी ओर मोड़ा और देखा कि वह रो रही थी। मेरी रुमाल, जो मेरी मालकिन ने मुझे दी थी, मेरी जेब में ही थी। मैंने उसे निकाला और रोसन्ना से कहा, "आओ, मेरी प्यारी, मेरे साथ समुद्र तट की ढलान पर बैठ जाओ। मैं पहले तुम्हारे आँसू पोंछ दूँगा, और फिर हिम्मत करके पूछूँगा कि तुम क्यों रो रही हो।"

जब तुम मेरी उम्र के हो जाओगे, तो तुम्हें समुद्र तट की ढलान पर बैठना अभी जितना लगता है, उससे कहीं ज़्यादा लंबा काम लगेगा। जब तक मैं वहाँ पहुँचा, रोज़ाना ने

अपने आँसू मुझसे कहीं घटिया रुमाल से पोंछे थे—सस्ते कपड़े के कैम्ब्रिक से। वह बहुत शांत और दुखी लग रही थी; लेकिन जब मैंने उससे कहा, "किसी स्त्री को सबसे आसान तरीके से दिलासा देने के लिए, उसे अपनी गोद में बिठा लो," तो वह एक अच्छी बच्ची की तरह मेरे पास बैठ गई। मैंने इस सुनहरे नियम के बारे में सोचा। लेकिन अरे! रोज़ाना नैन्सी नहीं थी, और यही सच है!

मैंने कहा, "अब बताओ, मेरी प्यारी, तुम किस बात पर रो रही हो?"

"बीते हुए वर्षों के बारे में, श्रीमान बेटरएज," रोसन्ना ने धीमी आवाज़ में कहा। "मेरा पिछला जीवन कभी-कभी मुझे याद आ जाता है।"

मैंने कहा, "आओ, आओ, मेरी बच्ची, तुम्हारा पिछला जीवन पूरी तरह से मिट चुका है। तुम उसे क्यों नहीं भूल सकती?"

उसने मेरे कोट के एक पट्ट से मुझे पकड़ लिया। मैं एक लापरवाह बूढ़ा आदमी हूँ, और मेरा काफी खाना-पीना मेरे कपड़ों पर गिर जाता है। कभी कोई औरत, कभी कोई दूसरी, मेरे कपड़ों से चिकनाई साफ करती है। एक दिन पहले, रोसन्ना ने मेरे कोट के पट्ट पर एक जगह साफ की थी, एक नए मिश्रण से, जो हर तरह की चिकनाई हटाने की गारंटी देता था। चिकनाई तो साफ हो गई थी, लेकिन कपड़े पर एक छोटा सा धब्बा रह गया था जहाँ चिकनाई लगी थी। लड़की ने उस जगह की ओर इशारा किया और अपना सिर हिलाया।

"दाग तो हट गया है," उसने कहा। "लेकिन जगह का निशान अभी भी दिखता है, मिस्टर बेटरएज—जगह का निशान अभी भी दिखता है!"

एक ऐसी टिप्पणी जो किसी व्यक्ति को उसके अपने कोट के ज़रिए चौंका दे, उसका जवाब देना आसान नहीं होता। उस लड़की में भी कुछ ऐसा था जिसने मुझे उस समय उसके लिए विशेष रूप से दुखी कर दिया। उसकी भूरी आँखें सुंदर थीं, हालाँकि वह बाकी मामलों में सादी थी—और वह मुझे मेरी खुशहाल वृद्धावस्था और अच्छे चरित्र के प्रति एक तरह के सम्मान से देख रही थी, मानो ये चीज़ें हमेशा उसकी पहुँच से बाहर हों, जिससे मुझे हमारी दूसरी नौकरानी के लिए भारीपन महसूस हुआ। उसे सांत्वना देने में असमर्थ होने के कारण, मेरे पास केवल एक ही उपाय बचा था। वह उपाय था—उसे रात के खाने पर अंदर ले जाना।

मैंने कहा, "मुझे उठने में मदद करो। रोसन्ना, तुम रात के खाने के लिए देर हो रही हो और मैं तुम्हें अंदर लेने आया हूँ।"

"आप, मिस्टर बेटरएज!" वह कहती है।

मैंने कहा, "उन्होंने नैन्सी को तुम्हें लाने के लिए कहा था। लेकिन मुझे लगा कि मेरी प्यारी, अगर डांट तुम मुझसे सुनो तो तुम्हें ज़्यादा अच्छा लगेगा।"
मुझे उठाने के बजाय, उस बेचारी ने अपना हाथ मेरे हाथ में डाल दिया और उसे हल्के से दबाया। उसने दोबारा रोने से बचने की बहुत कोशिश की और सफल भी हुई—जिसके लिए मैं उसका सम्मान करता हूँ। "आप बहुत दयालु हैं, श्रीमान बेटरएज," उसने कहा। "मुझे आज खाना नहीं चाहिए—मुझे थोड़ी देर और यहीं रहने दीजिए।"
मैंने पूछा, "आपको यहाँ रहना क्यों अच्छा लगता है? ऐसी क्या बात है जो आपको हमेशा के लिए इस दयनीय जगह पर खींच लाती है?"
"कोई चीज़ मुझे इसकी ओर खींचती है," लड़की रेत पर उंगली से आकृतियाँ बनाते हुए कहती है। "मैं इससे दूर रहने की कोशिश करती हूँ, पर रह नहीं पाती। कभी-कभी," वह धीमी आवाज़ में कहती है, मानो अपने ही ख्याल से डर गई हो, "कभी-कभी, श्री बेटरएज, मुझे लगता है कि मेरी कब्र यहीं मेरा इंतज़ार कर रही है।"
"तुम्हारे लिए भुना हुआ मटन और सुअर की चर्बी का हलवा तैयार है!" मैंने कहा। "सीधे खाने पर जाओ। रोज़ाना, खाली पेट सोचने का यही नतीजा होता है!" मैंने सख्ती से कहा, क्योंकि (अपनी उम्र के हिसाब से) पच्चीस साल की एक युवती को अपने जीवन के अंतिम पड़ाव के बारे में बात करते सुनकर मुझे स्वाभाविक रूप से गुस्सा आ रहा था!
ऐसा लगा जैसे उसने मेरी बात सुनी ही नहीं: उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा और मुझे वहीं अपने पास बैठाए रखा।
“मुझे लगता है इस जगह ने मुझ पर जादू कर दिया है,” उसने कहा। “मैं रात-रात भर इसके सपने देखती हूँ; जब मैं सिलाई का काम करती हूँ तब भी इसके बारे में सोचती हूँ। आप जानते हैं कि मैं आपकी आभारी हूँ, श्री बेटरएज—आप जानते हैं कि मैं आपकी दयालुता और मेरी मालकिन के मुझ पर भरोसे के लायक बनने की कोशिश करती हूँ। लेकिन कभी-कभी मुझे आश्चर्य होता है कि क्या यहाँ का जीवन मेरे जैसी महिला के लिए बहुत शांत और बहुत अच्छा है, खासकर मेरे जीवन में आए सभी कष्टों के बाद, श्री बेटरएज—मेरे जीवन में आए सभी कष्टों के बाद। मुझे अन्य नौकरानियों के बीच रहना यहाँ रहने से ज़्यादा अकेलापन लगता है, यह जानते हुए कि मैं उनके जैसी नहीं हूँ। मेरी मालकिन नहीं जानतीं, सुधारगृह की मैट्रन नहीं जानतीं, कि ईमानदार लोग मुझ जैसी महिला के लिए कितने बड़े कलंक हैं। मुझे डाँटिए मत, आप एक भले आदमी हैं। मैं अपना काम करती हूँ, है ना? कृपया मेरी मालकिन को यह न बताएँ कि

मैं असंतुष्ट हूँ—मैं असंतुष्ट नहीं हूँ। मेरा मन कभी-कभी अशांत हो जाता है, बस इतना ही।” उसने अपना हाथ मेरे कंधे से झटक लिया और अचानक दलदल की ओर इशारा करते हुए बोली, "देखो! यह कितना अद्भुत है! कितना भयानक है! मैंने इसे दर्जनों बार देखा है, और यह हर बार मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने इसे पहले कभी देखा ही न हो!"

मैंने उसकी ओर इशारा किया। ज्वार पलट रहा था, और भयानक रेत कांपने लगी। उसका चौड़ा भूरा चेहरा धीरे-धीरे ऊपर उठा, और फिर पूरी तरह से गड्ढों वाला और कांपने लगा। "क्या तुम जानते हो कि यह मुझे कैसा दिखता है?" रोसन्ना ने मुझे फिर से कंधे से पकड़ते हुए कहा। "ऐसा लगता है जैसे इसके नीचे सैकड़ों लोग दम घुट रहे हों - सभी सतह पर आने के लिए संघर्ष कर रहे हों, और सभी उस भयानक गहराई में नीचे और नीचे डूबते जा रहे हों! एक पत्थर फेंको, मिस्टर बेटरएज! एक पत्थर फेंको, और देखते हैं कि रेत उसे कैसे नीचे खींच लेती है!"

यहाँ तो अस्वास्थ्यकर बातें हो रही थीं! यहाँ तो एक खाली पेट एक अशांत मन को खा रहा था! मेरा जवाब—जो उस बेचारी लड़की के भले के लिए था, मैं वादा करता हूँ!—मेरी ज़बान पर था ही, कि अचानक रेत के टीलों के बीच से एक आवाज़ ने मेरा नाम पुकारते हुए उसे रोक दिया। "बेटरएज!" आवाज़ ने पुकारा, "तुम कहाँ हो?" "यहाँ!" मैंने जवाब में चिल्लाकर कहा, मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वो कौन है। रोज़ाना उठ खड़ी हुई और आवाज़ की तरफ देखने लगी। मैं भी उठने ही वाला था कि तभी लड़की के चेहरे में अचानक आए बदलाव ने मुझे चौंका दिया।

उसका चेहरा एक खूबसूरत लाल रंग से भर गया, जो मैंने उसमें पहले कभी नहीं देखा था; वह एक तरह के अवाक और सांस रोक देने वाले आश्चर्य से चमक उठी। "कौन है?" मैंने पूछा। रोसन्ना ने मुझे मेरा ही सवाल वापस कर दिया। "ओह! कौन है?" उसने धीरे से कहा, मुझसे ज़्यादा खुद से। मैं रेत पर घूमकर पीछे मुड़ा। वहाँ, पहाड़ियों के बीच से, एक चमकीली आँखों वाला युवक हमारी ओर आ रहा था, जिसने सुंदर हल्के भूरे रंग का सूट पहना हुआ था, साथ में मैचिंग दस्ताने और टोपी भी, बटनहोल में एक गुलाब लगा हुआ था, और उसके चेहरे पर ऐसी मुस्कान थी मानो कांपती हुई रेत भी उसे देखकर मुस्कुरा रही हो। इससे पहले कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हो पाता, वह मेरे बगल में रेत पर बैठ गया, अजीब तरीके से अपना हाथ मेरी गर्दन के चारों ओर डाला, और मुझे इस तरह गले लगाया कि मानो मेरी सांस ही रुक गई हो। "प्यारे बेटरएज!"

उसने कहा। "मुझे तुम्हें सात शिलिंग और छह पेंस देने हैं। अब तुम्हें पता चला कि मैं कौन हूँ?"
हे प्रभु, हम पर कृपा करें और हमारी रक्षा करें! श्री फ्रैंकलिन ब्लेक हमारे यहाँ आ गए —हमारे अनुमान से पूरे चार घंटे पहले!
इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, मैंने देखा कि मिस्टर फ्रैंकलिन, जो देखने में थोड़े हैरान लग रहे थे, मेरी तरफ से नज़रें उठाकर रोज़ाना की तरफ देखने लगे। उनके पीछे-पीछे मैंने भी उस लड़की की तरफ देखा। उसका चेहरा पहले से भी ज़्यादा लाल हो गया था, मानो मिस्टर फ्रैंकलिन की नज़र उस पर पड़ गई हो; और वह अचानक मुड़कर चली गई, मेरी समझ से परे उलझन में, न तो उसने उस सज्जन को प्रणाम किया और न ही मुझसे कुछ कहा। यह उसके सामान्य स्वभाव से बिल्कुल अलग था: आमतौर पर इतनी सभ्य और अच्छे व्यवहार वाली नौकरानी तो आपने कभी नहीं देखी होगी।
"वह एक अजीब लड़की है," श्री फ्रैंकलिन कहते हैं। "मुझे आश्चर्य है कि वह मुझमें ऐसा क्या देखती है जो उसे आश्चर्यचकित कर देता है?"
"मुझे लगता है, महोदय," मैंने हमारे युवा सज्जन की महाद्वीपीय शिक्षा पर व्यंग्य करते हुए उत्तर दिया, "यह विदेशी देशों से लाया गया वार्निश है।"
मैंने यहाँ श्री फ्रैंकलिन के लापरवाह प्रश्न और अपने मूर्खतापूर्ण उत्तर को सभी मूर्ख लोगों के लिए सांत्वना और प्रोत्साहन के रूप में लिखा है—जैसा कि मैंने कहा है, हमारे जैसे कमतर लोगों को यह जानकर बड़ी संतुष्टि मिलती है कि कभी-कभी उनसे बेहतर लोग भी उनसे कम बुद्धिमान होते हैं। न तो श्री फ्रैंकलिन, अपनी अद्भुत विदेशी शिक्षा के साथ, और न ही मैं, अपनी उम्र, अनुभव और स्वाभाविक बुद्धि के साथ, रोसन्ना स्पीयरमैन के अजीब व्यवहार का असली मतलब समझ पाए। बेचारी, वह हमारे विचारों से तब तक निकल चुकी थी जब तक हमने रेत के टीलों के बीच उसके छोटे से भूरे लबादे की आखिरी फड़फड़ाहट नहीं देखी थी। और फिर क्या हुआ? आप स्वाभाविक रूप से पूछेंगे। पढ़ते रहिए, मेरे प्रिय मित्र, जितना धैर्य रख सकते हैं, और शायद आपको भी रोसन्ना स्पीयरमैन के लिए उतना ही दुख होगा जितना मुझे सच्चाई जानने पर हुआ था।

अध्याय V

जब हम दोनों अकेले रह गए, तो सबसे पहले मैंने रेत पर अपनी सीट से उठने की तीसरी कोशिश की। श्री फ्रैंकलिन ने मुझे रोक दिया।

उन्होंने कहा, "इस भयानक जगह का एक ही फायदा है; यह पूरी जगह हमारे लिए ही है। बेटरएज, तुम यहीं रहो; मुझे तुमसे कुछ कहना है।"
जब वह बोल रहा था, मैं उसे देख रहा था और अपने सामने खड़े उस आदमी में उस लड़के की झलक ढूंढने की कोशिश कर रहा था जिसे मैं याद करता था। उस आदमी ने मुझे पूरी तरह से भ्रमित कर दिया। लाख कोशिश करने पर भी मुझे उसके बचपन के गुलाबी गालों की झलक नहीं दिखी, न ही उसकी चुस्त-दुरुस्त जैकेट की। उसका रंग पीला पड़ गया था: उसके चेहरे का निचला हिस्सा, मेरी हैरानी और निराशा के लिए, घुंघराली भूरी दाढ़ी और मूंछों से ढका हुआ था। उसका व्यवहार चंचल और थोड़ा बेपरवाह था, बहुत ही सुखद और आकर्षक, मैं मानता हूँ; लेकिन उसके पुराने सहज और बेफिक्र स्वभाव से बिल्कुल अलग। बात और भी बुरी यह थी कि उसने लंबा होने का वादा किया था, और अपना वादा नहीं निभाया था। वह साफ-सुथरा, पतला और सुगठित था; लेकिन उसकी लंबाई औसत से एक-दो इंच कम थी। संक्षेप में, उसने मुझे पूरी तरह से उलझन में डाल दिया। बीते वर्षों ने उसके पुराने रूप का कुछ भी नहीं छोड़ा था, सिवाय उसकी आँखों की चमक और सीधेपन के। वहीं मुझे वह प्यारा लड़का फिर से मिला, और वहीं मैंने अपनी खोज रोक दी।
"श्रीमान, पुराने स्थान पर आपका फिर से स्वागत है," मैंने कहा। "महोदय, आपका और भी अधिक स्वागत है कि आप हमारी अपेक्षा से कुछ घंटे पहले आ गए हैं।"
श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "आपके अनुमान से पहले आने का मेरे पास एक कारण है। मुझे संदेह है, बेटरएज, कि पिछले तीन-चार दिनों से लंदन में मेरा पीछा किया जा रहा है और मुझ पर नज़र रखी जा रही है; और मैंने दोपहर की ट्रेन के बजाय सुबह की ट्रेन से यात्रा की है, क्योंकि मैं एक सांवले रंग के अजनबी से बच निकलना चाहता था।"
उन शब्दों ने मुझे आश्चर्यचकित करने से कहीं अधिक किया। उन्होंने मुझे पल भर में उन तीन बाज़ीगरों और पेनेलोप के इस विचार की याद दिला दी कि वे मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक के साथ कुछ शरारत करने की योजना बना रहे थे।
"आपको कौन देख रहा है, महोदय, और क्यों?" मैंने पूछा।
"आज आपके घर आए तीन भारतीयों के बारे में मुझे बताइए," श्री फ्रैंकलिन ने मेरे प्रश्न पर ध्यान दिए बिना कहा। "बेटरएज, यह संभव है कि मेरा अजनबी और आपके तीनों बाज़ीगर एक ही पहेली के टुकड़े हों।"
"महाराज, आपको बाज़ीगरों के बारे में कैसे पता चला?" मैंने एक के बाद एक सवाल पूछते हुए कहा, जो मेरी गलती थी। लेकिन इंसान के स्वभाव से ज़्यादा उम्मीद नहीं की

जा सकती, इसलिए मुझसे भी ज़्यादा उम्मीद मत रखिए।
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "मैंने पेनेलोप को घर पर देखा था; और पेनेलोप ने मुझे बताया। बेटरएज, आपकी बेटी ने सुंदर लड़की बनने का वादा किया था, और उसने अपना वादा निभाया है। पेनेलोप का कान और पैर छोटे हैं। क्या स्वर्गीय श्रीमती बेटरएज के पास ये अनमोल गुण थे?"
“श्रीमान, स्वर्गीय श्रीमती बेटरएज में कई कमियां थीं, महोदय,” मैंने कहा। “उनमें से एक (यदि आप मुझे इसका उल्लेख करने की अनुमति दें) यह थी कि वह कभी भी एक काम पर टिकी नहीं रहती थीं। वह एक महिला की बजाय मक्खी की तरह थीं: वह किसी भी बात पर स्थिर नहीं हो पाती थीं।”
"वह मेरे लिए एकदम सही रहती," श्री फ्रैंकलिन कहते हैं। "मैं भी कभी किसी बात पर समझौता नहीं करता। बेटरएज, आपकी कला पहले से भी कहीं बेहतर है। आपकी बेटी ने भी यही कहा था, जब मैंने बाज़ीगरों के बारे में जानकारी मांगी थी। 'पिताजी आपको बताएंगे, महोदय। वह अपनी उम्र के हिसाब से बहुत ही अद्भुत व्यक्ति हैं; और वह बहुत ही खूबसूरती से अपनी बात कहते हैं।' पेनेलोप के अपने शब्द—वह बेहद शर्म से लाल हो रही थी। आपके प्रति मेरे सम्मान ने भी मुझे नहीं रोका—छोड़ो; मैं उसे बचपन से जानता हूं, और वह इससे बिल्कुल भी प्रभावित नहीं हुई है। चलिए, गंभीर हो जाते हैं। बाज़ीगरों ने क्या किया?"
मैं अपनी बेटी से कुछ नाराज़ थी—इसलिए नहीं कि उसने मिस्टर फ्रैंकलिन को उसे चूमने दिया; मिस्टर फ्रैंकलिन को ऐसा करने की पूरी छूट थी—बल्कि इसलिए कि उसने मुझे उसकी बेवकूफी भरी कहानी किसी और से सुनने के लिए मजबूर किया। हालांकि, अब हालात बताने के अलावा कोई चारा नहीं था। जैसे-जैसे मैं बोलती गई, मिस्टर फ्रैंकलिन की सारी हंसी गायब हो गई। वह अपनी भौंहें सिकोड़ते और दाढ़ी मरोड़ते बैठे रहे। जब मैंने बोलना समाप्त किया, तो उन्होंने मेरे पीछे-पीछे वे दो सवाल दोहराए जो मुख्य बाज़ीगर ने लड़के से पूछे थे—शायद इसलिए ताकि वे सवाल उसके दिमाग में अच्छी तरह बैठ जाएं।
"'क्या अंग्रेज सज्जन आज सिर्फ इसी घर के रास्ते से यात्रा करेंगे, किसी और रास्ते से नहीं?' 'क्या अंग्रेज सज्जन के पास वह चीज़ है?' मुझे शक है," श्री फ्रैंकलिन ने अपनी जेब से एक छोटा सीलबंद कागज़ का पार्सल निकालते हुए कहा, "कि 'वह' का मतलब 'यह' है। और 'यह', बेटरएज, मेरे चाचा हर्नकैसल के प्रसिद्ध हीरे को दर्शाता है।"
"हे भगवान!" मैं चौंक उठा, "आप दुष्ट कर्नल के डायमंड के प्रभारी कैसे बन गए?"

श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "दुष्ट कर्नल की वसीयत में हीरा मेरी चचेरी बहन राहेल को जन्मदिन के उपहार के रूप में दिया गया है। और मेरे पिता ने, दुष्ट कर्नल के वसीयतकर्ता के रूप में, इसे यहाँ लाने का जिम्मा मुझे सौंपा है।"
यदि कांपती हुई रेत पर सुचारू रूप से रिसता हुआ समुद्र मेरी आंखों के सामने सूखी भूमि में परिवर्तित हो जाता, तो मुझे संदेह है कि मैं श्री फ्रैंकलिन के उन शब्दों को सुनकर जितना आश्चर्यचकित हुआ था, उससे अधिक आश्चर्यचकित हो पाता।
"कर्नल का हीरा मिस राहेल को मिला है!" मैंने कहा। "और आपके पिता, महोदय, कर्नल के वसीयतकर्ता! अरे, श्रीमान फ्रैंकलिन, मैं शर्त लगा सकता हूँ कि आपके पिता कर्नल को कभी छूते भी नहीं!"
"बैटर्डेज, तुमने बहुत कड़े शब्दों का प्रयोग किया! कर्नल के खिलाफ क्या बात थी? वो तुम्हारे ज़माने के थे, मेरे ज़माने के नहीं। मुझे बताओ कि तुम उनके बारे में क्या जानते हो, और मैं तुम्हें बताऊँगा कि मेरे पिता उनके वसीयतकर्ता कैसे बने, और भी बहुत कुछ। मैंने लंदन में अपने चाचा हर्नकैसल और उनके हीरे के बारे में कुछ ऐसी बातें पता लगाई हैं जो मुझे कुछ संदिग्ध लगती हैं; और मैं चाहता हूँ कि तुम उनकी पुष्टि करो। तुमने अभी उन्हें 'दुष्ट कर्नल' कहा। मेरे पुराने दोस्त, अपनी याददाश्त खंगालो और मुझे बताओ कि तुमने ऐसा क्यों कहा।"
मैंने देखा कि वह गंभीर था, और मैंने उसे बता दिया।
मैंने जो कहा उसका सार यहाँ दिया गया है, जो पूरी तरह से आपके लाभ के लिए लिखा गया है। इस पर ध्यान दें, अन्यथा कहानी में आगे बढ़ने पर आप पूरी तरह से खो जाएंगे। बच्चों, खाने, नई टोपी या अन्य किसी भी चीज़ के बारे में सोचना बंद कर दें। कोशिश करें कि आप राजनीति, घोड़ों, शहर में कीमतों और क्लब में होने वाली शिकायतों को भूल सकें। मुझे उम्मीद है कि आप मेरी इस स्वतंत्रता को गलत नहीं समझेंगे; यह तो बस एक तरीका है जिससे मैं सज्जन पाठक से अपील कर सकता हूँ। हे भगवान! क्या मैंने आपको महान लेखकों की किताबें पढ़ते हुए नहीं देखा है, और क्या मैं नहीं जानता कि जब कोई किताब आपका ध्यान खींचती है, न कि कोई व्यक्ति, तो आपका ध्यान कितनी जल्दी भटक जाता है?
मैंने कुछ देर पहले अपनी प्रेमिका के पिता, उस बूढ़े लॉर्ड के बारे में बात की थी, जो गुस्सैल स्वभाव और ज़ुबान के धनी थे। उनके कुल पाँच बच्चे थे। पहले दो बेटे; फिर, काफी समय बाद, उनकी पत्नी ने दोबारा गर्भधारण किया, और तीन युवतियाँ एक के बाद एक तेज़ी से पैदा हुईं, जितनी जल्दी प्रकृति ने अनुमति दी; जैसा कि पहले बताया

गया है, मेरी प्रेमिका तीनों में सबसे छोटी और सबसे अच्छी थीं। दो बेटों में से, सबसे बड़े, आर्थर को उपाधि और जागीरें विरासत में मिलीं। दूसरे, माननीय जॉन को एक रिश्तेदार से अच्छी खासी संपत्ति विरासत में मिली, और वे सेना में भर्ती हो गए।

कहते हैं ना, जो पक्षी अपने घोंसले को गंदा करता है, वह मर जाता है। मैं हर्नकास्टल परिवार को अपना घोंसला मानता हूँ; और अगर मुझसे माननीय जॉन के बारे में विस्तार से न पूछा जाए तो मैं इसे अपना सौभाग्य समझूँगा। मेरा मानना है कि वह अब तक के सबसे बड़े बदमाशों में से एक थे। मैं उनके बारे में इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकता। उन्होंने सेना में प्रवेश किया और गार्ड्स से शुरुआत की। उन्हें 22 वर्ष की आयु से पहले ही गार्ड्स छोड़ना पड़ा—कारण चाहे जो भी हो। सेना में नियम बहुत सख्त होते हैं, और माननीय जॉन के लिए तो वे हद से ज़्यादा सख्त थे। वे यह देखने के लिए भारत गए कि क्या वहाँ भी नियम उतने ही सख्त हैं, और कुछ सक्रिय सेवा का अनुभव करने के लिए। वीरता के मामले में (उनकी बहादुरी की तारीफ़ में), वे एक खूंखार कुत्ते और लड़ाकू मुर्गे का मिश्रण थे, जिनमें जंगलीपन का भी अंश था। वे सेरिंगापट्टम पर कब्ज़ा करने के समय मौजूद थे। इसके कुछ समय बाद ही उन्होंने एक रेजिमेंट में पदभार संभाला, और समय के साथ-साथ तीसरी रेजिमेंट में भी चले गए। तीसरे कार्यकाल में उन्हें लेफ्टिनेंट-कर्नल के रूप में अपना अंतिम पद मिला, और यह पद मिलने के साथ ही उन्हें लू लग गई, और वे इंग्लैंड वापस लौट आए।

वह एक ऐसे चरित्र के साथ लौटा जिसने उसके पूरे परिवार के दरवाजे उसके लिए बंद कर दिए, मेरी पत्नी (जो उस समय नवविवाहित थी) ने पहल करते हुए (सर जॉन की सहमति से) घोषणा कर दी कि उसका भाई कभी भी उसके घर में प्रवेश न करे। कर्नल पर एक से अधिक ऐसे कलंक थे जिनसे लोग उससे कतराते थे; लेकिन डायमंड का दाग ही यहाँ पर्याप्त है।

कहा जाता है कि उसने अपना भारतीय रत्न ऐसे तरीकों से हासिल किया था, जिन्हें वह अपनी बहादुरी के बावजूद कभी स्वीकार नहीं करता था। उसने इसे कभी बेचने की कोशिश नहीं की—क्योंकि उसे पैसों की ज़रूरत नहीं थी, और (उसे फिर से उसकी बात माननी चाहिए) उसने कभी पैसे को अपना मकसद नहीं बनाया। उसने इसे कभी किसी को दिया नहीं; उसने इसे कभी किसी को दिखाया भी नहीं। कुछ लोगों का कहना था कि उसे डर था कि इससे वह सैन्य अधिकारियों के साथ मुसीबत में पड़ जाएगा; जबकि अन्य (जो उस व्यक्ति के वास्तविक स्वभाव से पूरी तरह अनजान थे) कहते थे कि उसे डर था कि अगर उसने इसे दिखाया तो उसकी जान चली जाएगी।

इस आखिरी रिपोर्ट में शायद कुछ सच्चाई मिली हुई थी। यह कहना गलत था कि वह डरा हुआ था; लेकिन यह सच था कि भारत में उसकी जान को दो बार खतरा हुआ था; और यह पक्का माना जाता था कि इसके पीछे मूनस्टोन का हाथ था। जब वह इंग्लैंड लौटा और देखा कि हर कोई उससे बच रहा है, तो फिर से यही सोचा गया कि इसके पीछे भी मूनस्टोन का ही हाथ है। कर्नल के जीवन का रहस्य उसके रास्ते में आ गया और उसे, एक तरह से, उसके अपने लोगों के बीच भी बहिष्कृत कर दिया। लोग उसे अपने क्लबों में नहीं आने देते थे; जिन महिलाओं से वह शादी करना चाहता था, उनमें से एक से ज़्यादा ने उसे ठुकरा दिया; दोस्त और रिश्तेदार इतने कमज़ोर नज़र वाले हो गए कि सड़क पर उसे देख भी नहीं पाते थे।

इस संकट में फंसे कुछ लोग दुनिया से अपना हिसाब बराबर करने की कोशिश करते। लेकिन, अपनी गलती के बावजूद और पूरे समाज के विरोध के बावजूद, हार मान लेना माननीय जॉन का तरीका नहीं था। उन्होंने हत्या के खतरे की परवाह किए बिना हीरा भारत में रखा। उन्होंने जनमत की अवहेलना करते हुए हीरा इंग्लैंड में रखा। यहाँ आपके सामने उस व्यक्ति का चित्र स्पष्ट रूप से दिखाई देता है: एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने हर चुनौती का सामना किया; और एक ऐसा चेहरा, जो देखने में सुंदर तो था, लेकिन मानो शैतान के वश में हो।

समय-समय पर हमें उनके बारे में तरह-तरह की अफवाहें सुनने को मिलती थीं। कभी कहा जाता था कि वे अफीम का सेवन करते थे और पुरानी किताबें इकट्ठा करते थे; कभी खबर आती थी कि वे रसायन विज्ञान में अजीबोगरीब प्रयोग कर रहे हैं; कभी उन्हें लंदन की सबसे निचली झुग्गियों में सबसे निचले तबके के लोगों के बीच मौज-मस्ती करते देखा जाता था। खैर, कर्नल का जीवन एकांतप्रिय, दुष्ट और भूमिगत ही था। इंग्लैंड लौटने के बाद, केवल एक बार ही मैंने उन्हें आमने-सामने देखा था।

जिस समय के बारे में मैं अब लिख रही हूँ, उससे लगभग दो साल पहले और उनकी मृत्यु से लगभग डेढ़ साल पहले, कर्नल अचानक लंदन में मेरी पत्नी के घर आ गए। यह मिस राहेल के जन्मदिन की रात थी, यानी 21 जून की रात; और हमेशा की तरह उनके जन्मदिन पर एक पार्टी थी। मुझे नौकर से संदेश मिला कि एक सज्जन मुझसे मिलना चाहते हैं। जब मैं हॉल में गई, तो मैंने कर्नल को वहाँ पाया, दुबले-पतले, बूढ़े, मैले-कुचले और पहले की तरह ही उग्र और दुष्ट।

"मेरी बहन के पास जाओ," उसने कहा; "और उससे कहो कि मैं अपनी भतीजी को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देने आया हूं।"

उसने मेरी मालकिन से सुलह करने के लिए कई बार चिट्ठी-पत्री की थी, और मुझे पूरा यकीन है कि उसका मकसद सिर्फ उसे परेशान करना था। लेकिन यह पहली बार था जब वह सचमुच घर आया था। मैं यह कहने ही वाली थी कि मेरी मालकिन ने उस रात पार्टी रखी है। लेकिन उसकी शैतानी शक्ल देखकर मैं डर गई। मैं उसका संदेश लेकर ऊपर चली गई और उसे उसकी इच्छा के अनुसार हॉल में इंतज़ार करने के लिए छोड़ दिया। नौकर उसे दूर से घूर रहे थे, मानो वह बारूद और गोलियों से लदा हुआ तबाही का चलता-फिरता यंत्र हो, जो किसी भी पल उन पर हमला कर सकता हो।

मेरी पत्नी में परिवार के स्वभाव का थोड़ा-सा अंश था—बस इतना ही। जब मैंने उन्हें उनके भाई का संदेश दिया, तो उन्होंने कहा, "कर्नल हर्नकैसल को बता दीजिए कि मिस वेरेंडर की सगाई हो चुकी है और मैं उनसे मिलना नहीं चाहती।" मैंने कर्नल के स्वभाव को जानते हुए, जो आम तौर पर सज्जनों पर लागू होने वाले संयम से कहीं ऊपर थे, उनसे विनम्र जवाब पाने की कोशिश की। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ! परिवार का स्वभाव सीधे मुझ पर ही फूट पड़ा। मेरी पत्नी ने कहा, "जब मुझे आपकी सलाह चाहिए होती है, तो आप जानते हैं कि मैं हमेशा आपसे सलाह मांगती हूँ। लेकिन अभी नहीं मांग रही हूँ।" मैं संदेश लेकर नीचे गया, जिसमें मैंने अपनी तरफ से कुछ बदलाव करके उसे इस प्रकार प्रस्तुत किया: "मेरी पत्नी और मिस राहेल को खेद है कि उनकी सगाई हो चुकी है, कर्नल जी; और आपसे मिलने का सम्मान न मिलने की क्षमा चाहती हैं।"

मुझे उम्मीद थी कि इतनी विनम्रता से कहने पर भी वह भड़क उठेगा। लेकिन मुझे आश्चर्य हुआ कि उसने ऐसा कुछ नहीं किया; उसने इस बात को अस्वाभाविक शांति से सहकर मुझे चौंका दिया। उसकी चमकीली भूरी आँखें एक पल के लिए मुझ पर टिक गईं; और वह हँसा, दूसरों की तरह अचानक नहीं, बल्कि मन ही मन, एक कोमल, खिलखिलाती, बेहद शरारती हंसी। "धन्यवाद, बेटरएज," उसने कहा। "मैं अपनी भतीजी का जन्मदिन याद रखूंगा।" इतना कहकर वह मुड़ा और घर से बाहर चला गया।

अगला जन्मदिन आया, और हमें पता चला कि वे बीमार हैं और बिस्तर पर पड़े हैं। छह महीने बाद—यानी, जिस समय के बारे में मैं अब लिख रहा हूँ, उससे छह महीने पहले —मेरी पत्नी को एक अत्यंत सम्मानित पादरी का पत्र मिला। उसमें परिवार से जुड़ी दो अद्भुत खबरें थीं। पहली, कर्नल ने अपनी मृत्यु शैय्या पर अपनी बहन को क्षमा कर दिया था। दूसरी, उन्होंने बाकी सभी को भी क्षमा कर दिया था और एक अत्यंत

शिक्षाप्रद अंत किया था। मैं स्वयं (बिशपों और पादरियों के बावजूद) चर्च के प्रति सच्चा सम्मान रखता हूँ; लेकिन साथ ही साथ मुझे दृढ़ विश्वास है कि शैतान ने माननीय जॉन पर अपना कब्ज़ा बनाए रखा था, और उस घृणित व्यक्ति के जीवन का अंतिम घृणित कार्य (आपकी उपस्थिति को छोड़कर) उस पादरी को अपने घर में पनाह देना था!
यही वह सब कुछ था जो मुझे श्री फ्रैंकलिन को बताना था। मैंने गौर किया कि जैसे-जैसे मैं बोलता गया, उनकी सुनने की उत्सुकता बढ़ती गई। साथ ही, कर्नल को उनकी भतीजी के जन्मदिन पर उनकी बहन के घर से निकाले जाने की कहानी श्री फ्रैंकलिन को मानो सटीक निशाने पर लगी गोली की तरह लगी। हालांकि उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया, लेकिन मैंने उनके चेहरे पर साफ देखा कि मैंने उन्हें असहज कर दिया था।
"बेटरएज, तुमने अपनी बात कह दी है," उसने कहा। "अब मेरी बारी है। लेकिन इससे पहले कि मैं तुम्हें बताऊं कि मैंने लंदन में क्या-क्या खोजें की हैं और मैं हीरे के इस मामले में कैसे उलझ गया, मैं एक बात जानना चाहता हूं। मेरे पुराने दोस्त, ऐसा लगता है जैसे तुम हमारी इस चर्चा का उद्देश्य पूरी तरह से समझ नहीं पाए हो। क्या तुम्हारे हाव-भाव तुम्हारी बात को झुठला रहे हैं?"
"जी नहीं, महोदय," मैंने कहा। "कम से कम इस बार तो मेरी शक्ल ही सच बयां कर रही है।"
“तो फिर,” श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, “इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, मान लीजिए कि मैं आपको अपना दृष्टिकोण समझा दूं। कर्नल द्वारा मेरी चचेरी बहन राहेल को दिए गए जन्मदिन के उपहार में मुझे तीन बहुत गंभीर प्रश्न दिखाई देते हैं। ध्यान से मेरी बात सुनिए, बेटरएज; और अगर इससे आपको मदद मिले, तो अपनी उंगलियों पर गिन लीजिए,” श्री फ्रैंकलिन अपनी स्पष्टता का प्रदर्शन करते हुए एक विशेष आनंद के साथ कहते हैं, जिसने मुझे उनके बचपन के पुराने दिनों की याद दिला दी। “पहला प्रश्न: क्या कर्नल का हीरा भारत में किसी षड्यंत्र का लक्ष्य था? दूसरा प्रश्न: क्या वह षड्यंत्र कर्नल के हीरे के साथ इंग्लैंड तक पहुँच गया? तीसरा प्रश्न: क्या कर्नल को पता था कि षड्यंत्र हीरे के साथ चल रहा है; और क्या उसने जानबूझकर अपनी बहन के बच्चे के माध्यम से अपनी बहन के लिए मुसीबत और खतरे की विरासत छोड़ी है? यही मेरा मतलब है, बेटरएज। मुझे आपको डराने मत दीजिए।”
यह कहना तो ठीक था, लेकिन उसने मुझे सचमुच डरा दिया था।
अगर वह सही थे, तो हमारे शांत अंग्रेजी घर पर अचानक एक शैतानी भारतीय हीरे का कब्ज़ा हो गया था—जो अपने साथ जीवित बदमाशों की एक साजिश लेकर आया था,

जिन्हें एक मरे हुए आदमी के बदले की भावना से हम पर टूट पड़ा था। यही हमारी स्थिति थी, जैसा कि श्री फ्रैंकलिन के अंतिम शब्दों में मुझे पता चला! भला किसने कभी ऐसा सुना होगा—उन्नीसवीं सदी में, प्रगति के युग में, और एक ऐसे देश में जो ब्रिटिश संविधान के आशीर्वाद का आनंद लेता है? किसी ने कभी ऐसा नहीं सुना, और इसलिए, किसी से भी इस पर विश्वास करने की उम्मीद नहीं की जा सकती। फिर भी, मैं अपनी कहानी जारी रखूंगा।

जब आपको अचानक कोई घबराहट होती है, जैसा कि मुझे अभी हुई थी, तो दस में से नौ बार इसका असर आपके पेट में ही महसूस होता है। जब पेट में घबराहट महसूस होती है, तो आपका ध्यान भटकने लगता है और आप बेचैन होने लगते हैं। मैं रेत पर चुपचाप बैठा हुआ बेचैन था। श्री फ्रैंकलिन ने मुझे देखा, मैं बेचैन पेट या दिमाग से जूझ रहा था—आप जो चाहें कहें; दोनों का मतलब एक ही है—और अपनी कहानी शुरू करने से ठीक पहले खुद को रोकते हुए, उन्होंने मुझसे तीखे स्वर में कहा, "तुम्हें क्या चाहिए?"

मुझे क्या चाहिए था? मैंने उसे नहीं बताया; लेकिन मैं आपको भरोसे में बताऊँगा। मुझे अपनी पाइप की एक हल्की सी खुशबू चाहिए थी, और रॉबिन्सन क्रूसो की तरह खेलने का मौका चाहिए था।

अध्याय VI

अपनी निजी भावनाओं को मन में रखते हुए, मैंने श्री फ्रैंकलिन से विनम्रतापूर्वक आगे बोलने का अनुरोध किया। श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "बेचैनी मत करो, बेटरएज," और बोलना जारी रखा।

हमारे इस नौजवान के पहले शब्दों से मुझे पता चला कि दुष्ट कर्नल और हीरे के बारे में उनकी खोज की शुरुआत हैम्पस्टेड में पारिवारिक वकील से उनकी मुलाकात से हुई थी (हमारे पास आने से पहले)। एक दिन, खाने के बाद जब दोनों अकेले थे, श्री फ्रैंकलिन के मुंह से निकली एक बात से पता चला कि उनके पिता ने उन्हें मिस राहेल के लिए जन्मदिन का उपहार ले जाने का जिम्मा सौंपा था। बात आगे बढ़ी और अंत में वकील ने बताया कि उपहार वास्तव में क्या था और कैसे दिवंगत कर्नल और श्री ब्लेक सीनियर के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध की शुरुआत हुई थी। ये तथ्य इतने असाधारण हैं कि मुझे संदेह है कि मैं अपने शब्दों में उनका सही वर्णन कर पाऊंगा। मैं श्री फ्रैंकलिन की खोजों को यथासंभव उन्हीं के शब्दों में बताने का प्रयास करना पसंद करूंगा।

“तुम्हें वो समय याद है, बेटरएज,” उसने कहा, “जब मेरे पिता उस बदकिस्मत डची पर अपना अधिकार साबित करने की कोशिश कर रहे थे? खैर! वही समय था जब मेरे चाचा हर्नकैसल भारत से लौटे थे। मेरे पिता को पता चला कि उनके बहनोई के पास कुछ ऐसे कागजात थे जो उनके मुकदमे में उनके काम आ सकते थे। उन्होंने कर्नल से इंग्लैंड में उनका स्वागत करने के बहाने मुलाकात की। कर्नल इस तरह के धोखे में आने वाले नहीं थे। उन्होंने कहा, 'तुम्हें कुछ चाहिए, वरना तुम मुझसे मिलने आकर अपनी प्रतिष्ठा को कभी दांव पर नहीं लगाते।' मेरे पिता ने देखा कि उनके पास अपनी बात कहने का एकमात्र मौका था; उन्होंने तुरंत स्वीकार कर लिया कि उन्हें कागजात चाहिए। कर्नल ने उनके जवाब पर विचार करने के लिए एक दिन का समय मांगा। उनका जवाब एक बेहद असाधारण पत्र के रूप में आया, जो मेरे वकील मित्र ने मुझे दिखाया। कर्नल ने यह कहकर शुरुआत की कि उन्हें मेरे पिता से कुछ चाहिए, और उन्होंने उनके बीच मैत्रीपूर्ण सेवाओं के आदान-प्रदान का प्रस्ताव रखा। युद्ध के भाग्य (उन्होंने यही शब्द इस्तेमाल किया था) ने उन्हें दुनिया के सबसे बड़े हीरों में से एक का मालिक बना दिया था; और उन्हें यह मानने का कारण था कि न तो वे और न ही उनका कीमती हीरा दुनिया के किसी भी कोने में, किसी भी घर में सुरक्षित था, जहाँ वे साथ रहते थे। इन खतरनाक परिस्थितियों में, उन्होंने अपने हीरे को किसी अन्य व्यक्ति की देखरेख में रखने का फैसला किया था। उस व्यक्ति से किसी भी तरह का जोखिम उठाने की उम्मीद नहीं थी। वह कीमती पत्थर को किसी भी विशेष रूप से सुरक्षित और आरक्षित स्थान पर रख सकता था - जैसे किसी बैंकर या जौहरी का तिजोरी - जो कीमती वस्तुओं की सुरक्षित अभिरक्षा के लिए बनाया गया हो। इस मामले में उनकी मुख्य व्यक्तिगत जिम्मेदारी निष्क्रिय प्रकार की थी। उन्हें या तो स्वयं, या एक विश्वसनीय प्रतिनिधि के माध्यम से—प्रत्येक वर्ष कुछ पूर्वनिर्धारित दिनों पर, पूर्वनिर्धारित पते पर कर्नल का एक पत्र प्राप्त करना, जिसमें केवल यह लिखा हो कि वह उस तिथि को जीवित हैं। यदि निर्धारित तिथि बीत जाने तक पत्र प्राप्त न हो, तो कर्नल की चुप्पी को उनकी हत्या का पुख्ता प्रमाण माना जा सकता है। उस स्थिति में, और किसी अन्य स्थिति में नहीं, हीरे के निपटान से संबंधित कुछ सीलबंद निर्देश, जो हीरे के साथ जमा किए गए थे, खोले जाने थे और उनका अक्षरशः पालन किया जाना था। यदि मेरे पिता इस अजीबोगरीब जिम्मेदारी को स्वीकार करते, तो कर्नल के कागजात बदले में उनके लिए उपलब्ध थे। यही पत्र था।

"आपके पिता क्या करते थे, महोदय?" मैंने पूछा।

"करें?" श्री फ्रैंकलिन कहते हैं। मैं आपको बताता हूँ कि उसने क्या किया। उसने कर्नल के पत्र पर अपनी अमूल्य बुद्धि, जिसे सामान्य ज्ञान कहते हैं, का प्रयोग किया। उसने कहा कि यह सब बिल्कुल बेतुका था। भारत में भटकते हुए कर्नल को कहीं कोई टूटा-फूटा क्रिस्टल मिला था जिसे उसने हीरा समझ लिया था। जहाँ तक उसकी हत्या के खतरे और उसकी जान और उस क्रिस्टल को बचाने के लिए बरती गई सावधानियों की बात है, यह उन्नीसवीं सदी थी, और कोई भी समझदार व्यक्ति केवल पुलिस से संपर्क कर सकता था। कर्नल कई वर्षों से अफीम का कुख्यात सेवन करता था; और यदि उसके पास मौजूद मूल्यवान कागजात प्राप्त करने का एकमात्र तरीका अफीम के मामले को एक तथ्य के रूप में स्वीकार करना था, तो मेरे पिता उस पर थोपी गई हास्यास्पद जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार करने के लिए तैयार थे - खासकर इसलिए कि इसमें उन्हें कोई परेशानी नहीं थी। हीरा और सीलबंद निर्देश उसके बैंकर के तिजोरी में रख दिए गए, और कर्नल के पत्र, जिनमें समय-समय पर उसके जीवित होने की सूचना दी जाती थी, हमारे पारिवारिक वकील, श्री ब्रुफ द्वारा मेरे पिता के प्रतिनिधि के रूप में प्राप्त और खोले गए। ऐसी स्थिति में कोई भी समझदार व्यक्ति ऐसा नहीं करता। इस स्थिति में, मामले को किसी और तरीके से भी देखा जा सकता था। बेटरएज, इस दुनिया में कुछ भी तब तक संभव नहीं है जब तक वह हमारे अपने सतही अनुभवों से मेल न खाए; और हम किसी कहानी पर तभी विश्वास करते हैं जब उसे अखबार में देखते हैं।

इससे मुझे स्पष्ट हो गया कि श्री फ्रैंकलिन को कर्नल के बारे में अपने पिता की धारणा जल्दबाजी भरी और गलत लगी।

"इस मामले पर आपकी निजी राय क्या है, महोदय?" मैंने पूछा।

श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "चलिए पहले कर्नल की कहानी पूरी कर लेते हैं। बेटरएज, अंग्रेजों के दिमाग में व्यवस्था का अजीब अभाव है; और आपका सवाल, मेरे पुराने दोस्त, इसका एक उदाहरण है। जब हम मशीनरी बनाने में व्यस्त नहीं होते, तो हम (मानसिक रूप से) ब्रह्मांड के सबसे आलसी लोग होते हैं।"

मैंने मन ही मन सोचा, "विदेशी शिक्षा के लिए इतना सब कुछ! मुझे लगता है कि उसने हम पर हमला करने का यह तरीका फ्रांस में ही सीखा होगा।"

श्री फ्रैंकलिन ने बीच में छूटी हुई बात को आगे बढ़ाया और चर्चा जारी रखी।

उन्होंने कहा, "मेरे पिता को मनचाहे कागजात मिल गए, और उसके बाद उन्होंने अपने बहनोई को फिर कभी नहीं देखा। साल दर साल, तय दिनों पर, कर्नल का तय पत्र

आता था, जिसे श्री ब्रूफ खोलते थे। मैंने ढेर सारे पत्र देखे हैं, सभी एक ही संक्षिप्त, औपचारिक भाषा में लिखे हुए थे: 'महोदय,--यह प्रमाणित करने के लिए है कि मैं अभी भी जीवित हूँ। हीरा रहने दें। जॉन हर्नकैसल।' वह हमेशा बस इतना ही लिखते थे, और वह पत्र नियमित रूप से उसी दिन आता था; लगभग छह या आठ महीने पहले तक, जब पत्र का स्वरूप पहली बार बदला। अब वह इस प्रकार था: 'महोदय,--वे मुझे बता रहे हैं कि मैं मर रहा हूँ। मेरे पास आइए, और मेरी वसीयत बनाने में मेरी मदद कीजिए।'" श्री ब्रुफ़ गए और उन्हें उस छोटे से उपनगरीय विला में पाया, जो अपने निजी मैदानों से घिरा हुआ था और जिसमें वे भारत छोड़ने के बाद से अकेले रह रहे थे। उनके पास साथी के रूप में कुत्ते, बिल्लियाँ और पक्षी थे; लेकिन उनके पास कोई इंसान नहीं था, सिवाय उस व्यक्ति के जो रोज़ाना घर का काम करने आता था और बिस्तर के पास मौजूद डॉक्टर के। वसीयत बहुत ही सरल थी। कर्नल ने अपनी अधिकांश संपत्ति अपने रासायनिक शोधों में खर्च कर दी थी। उनकी वसीयत तीन खंडों में शुरू और समाप्त हुई, जो उन्होंने अपने बिस्तर से, पूरी तरह होश में रहते हुए, लिखवाई थी। पहले खंड में उनके जानवरों की सुरक्षित देखभाल और भरण-पोषण का प्रावधान था। दूसरे खंड में उत्तरी विश्वविद्यालय में प्रायोगिक रसायन विज्ञान के प्रोफेसर पद की स्थापना का प्रावधान था। तीसरे खंड में मूनस्टोन को अपनी भतीजी को जन्मदिन के उपहार के रूप में देने की बात कही गई थी, इस शर्त पर कि मेरे पिता वसीयत के निष्पादक के रूप में कार्य करेंगे। मेरे पिता ने पहले तो कार्य करने से इनकार कर दिया। हालाँकि, बाद में उन्होंने विचार किया और मान गए, आंशिक रूप से इसलिए कि उन्हें आश्वासन दिया गया था कि निष्पादक बनने से उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी; आंशिक रूप से इसलिए कि श्री ब्रुफ़ ने राहेल के हित में सुझाव दिया कि आखिरकार, हीरे की कुछ कीमत तो हो ही सकती है।"

मैंने पूछा, "क्या कर्नल ने कोई कारण बताया था, महोदय, कि उन्होंने हीरा मिस राहेल को क्यों सौंप दिया?"

श्री फ्रैंकलिन ने कहा, "उन्होंने न केवल कारण बताया, बल्कि उन्होंने कारण को अपनी वसीयत में लिखवाया भी था।" "मेरे पास एक अंश है, जिसे आप अभी देखेंगे। लापरवाह मत बनो, बेटरएज! एक बार में एक ही बात। आपने कर्नल की वसीयत के बारे में सुना है; अब आपको यह सुनना होगा कि कर्नल की मृत्यु के बाद क्या हुआ। वसीयत को प्रमाणित करने से पहले हीरे का मूल्यांकन कराना औपचारिक रूप से आवश्यक था। सभी जौहरियों से परामर्श करने पर, उन्होंने कर्नल के इस दावे की पुष्टि

की कि उनके पास दुनिया के सबसे बड़े हीरों में से एक है। इसका सटीक मूल्यांकन करना कुछ गंभीर चुनौतियों से भरा था। इसके आकार ने इसे हीरा बाजार में एक अनोखी वस्तु बना दिया था; इसके रंग ने इसे एक अलग श्रेणी में रखा था; और, अनिश्चितता के इन तत्वों को और बढ़ाते हुए, पत्थर के बिल्कुल मध्य में एक दोष था। इस अंतिम गंभीर कमी के बावजूद भी, दिए गए विभिन्न अनुमानों में सबसे कम बीस हजार पाउंड था। मेरे पिता के आश्चर्य की कल्पना कीजिए! वे वसीयत के निष्पादक बनने से इनकार करने और इस शानदार रत्न को परिवार से खोने देने के कगार पर थे। अब जब उन्होंने इस मामले को अपने हाथ में लिया, तो उन्होंने डायमंड के साथ जमा किए गए सीलबंद निर्देशों को खोलने के लिए उन्हें राजी कर लिया। श्री ब्रफ ने मुझे यह दस्तावेज़ अन्य कागजातों के साथ दिखाया; और यह (मेरे विचार से) उस षड्यंत्र की प्रकृति का सुराग देता है जिससे कर्नल के जीवन को खतरा था।

"तो फिर आप मानते हैं, महोदय," मैंने कहा, "कि कोई साजिश थी?"

श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "मेरे पिता की तरह मुझमें इतनी सूझबूझ नहीं है, इसलिए मेरा मानना है कि कर्नल की जान को ठीक उसी तरह खतरा था, जैसा कि कर्नल ने कहा था। मेरे विचार से, सीलबंद निर्देशों में यह बताया गया है कि उनकी मृत्यु शांतिपूर्वक उनके बिस्तर पर कैसे हुई। यदि उनकी मृत्यु हिंसा के कारण होती (अर्थात्, निर्धारित तिथि पर उनसे नियमित पत्र न मिलता), तो मेरे पिता को मूनस्टोन को गुप्त रूप से एम्स्टर्डम भेजने का निर्देश दिया गया था। इसे उस शहर में एक प्रसिद्ध हीरा तराशने वाले के पास जमा कराया जाना था, और इसे चार से छह अलग-अलग पत्थरों में काटा जाना था। फिर इन पत्थरों को उनकी कीमत पर बेचा जाना था, और प्राप्त धनराशि का उपयोग प्रायोगिक रसायन विज्ञान के उस प्रोफेसरशिप की स्थापना के लिए किया जाना था, जिसे कर्नल ने अपनी वसीयत के माध्यम से स्थापित किया है। अब, बेटरएज, अपनी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रयोग करो, और कर्नल के निर्देशों से निकलने वाले निष्कर्ष को समझो!"

मैंने तुरंत अपनी बुद्धि का इस्तेमाल किया। वे लापरवाह अंग्रेज़ किस्म के थे; और परिणामस्वरूप उन्होंने सब कुछ गड़बड़ कर दिया, जब तक कि मिस्टर फ्रैंकलिन ने उन्हें अपने हाथ में नहीं लिया और उन्हें वह नहीं बताया जो उन्हें देखना चाहिए था।

श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "ध्यान दें कि हीरे की अखंडता, एक संपूर्ण पत्थर के रूप में, यहाँ कर्नल के जीवन को हिंसा से बचाने पर चतुराई से निर्भर कर दी गई है। वह अपने भयभीत शत्रुओं से यह कहकर संतुष्ट नहीं होते कि 'मुझे मार डालो - और तुम हीरे के

उतने ही करीब पहुँच पाओगे जितना अभी हो; यह वहाँ है जहाँ तुम इसे नहीं पा सकते - एक बैंक के सुरक्षित तिजोरी में।' इसके बजाय वे कहते हैं, 'मुझे मार डालो - और हीरा, हीरा नहीं रहेगा; उसकी पहचान नष्ट हो जाएगी।' इसका क्या अर्थ है?"
यहाँ मुझे (जैसा कि मैंने सोचा था) अद्भुत विदेशी चमक की एक झलक मिली।
मैंने कहा, "मुझे पता है। इसका मतलब है पत्थर का मूल्य कम करना और इस तरह बदमाशों को धोखा देना!"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "ऐसा कुछ नहीं है। मैंने इस बारे में पूछताछ की है। दोषपूर्ण हीरा, अगर काटकर अलग किया जाए, तो वास्तव में अभी के हीरे से कहीं अधिक कीमत दिलाएगा; इसका सीधा सा कारण यह है कि इससे चार से छह उत्तम हीरे काटे जा सकते हैं, जिनकी कुल कीमत उस बड़े, लेकिन अपूर्ण हीरे से कहीं अधिक होगी। यदि लाभ के उद्देश्य से चोरी करना इस षड्यंत्र का मूल कारण था, तो कर्नल के निर्देशों ने हीरे की चोरी को और भी अधिक लाभदायक बना दिया। इससे अधिक धन प्राप्त किया जा सकता था, और हीरा बाजार में इसका निपटान कहीं अधिक आसान होता, यदि यह एम्स्टर्डम के कारीगरों के हाथों से होकर गुजरता।"
"हे भगवान, हम पर कृपा करें!" मैं अचानक बोल पड़ा। "तो फिर साजिश क्या थी?"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "यह गहना मूल रूप से जिन भारतीयों के पास था, उनके बीच रची गई एक साजिश थी—एक ऐसी साजिश जिसकी जड़ में कुछ पुरानी हिंदू मान्यताएं थीं। यह मेरी राय है, जिसकी पुष्टि एक पारिवारिक दस्तावेज़ से होती है जो इस समय मेरे पास है।"
अब मुझे समझ में आया कि हमारे घर पर तीन भारतीय बाज़ीगरों का आना श्री फ्रैंकलिन के लिए एक उल्लेखनीय परिस्थिति के आलोक में क्यों सामने आया था।
श्री फ्रैंकलिन ने आगे कहा, "मैं अपनी राय आप पर थोपना नहीं चाहता। किसी प्राचीन हिंदू अंधविश्वास के कुछ चुने हुए सेवकों का हर मुश्किल और खतरे के बावजूद अपने पवित्र रत्न को वापस पाने के अवसर की प्रतीक्षा में लगे रहना, मुझे पूर्वी जातियों के धैर्य और पूर्वी धर्मों के प्रभाव के बारे में जो कुछ भी पता है, उससे पूरी तरह मेल खाता प्रतीत होता है। लेकिन मैं एक कल्पनाशील व्यक्ति हूँ; और कसाई, बेकर और कर वसूलने वाला ही मेरी नज़र में एकमात्र विश्वसनीय वास्तविकताएँ नहीं हैं। इस मामले में मैंने जो भी अनुमान लगाया है, उसे नज़रअंदाज़ कर दें और आइए हम उस एकमात्र व्यावहारिक प्रश्न पर आते हैं जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है। क्या कर्नल की मृत्यु के बाद

भी मूनस्टोन के विरुद्ध षड्यंत्र जारी है? और क्या कर्नल को इस बात का पता था, जब उन्होंने अपनी भतीजी के लिए जन्मदिन का उपहार छोड़ा था?"
अब अंत में मुझे मेरी पत्नी और मिस राहेल दिखाई देने लगीं। उन्होंने जो कुछ भी कहा, एक शब्द भी मुझसे छिपा नहीं।
श्री फ्रैंकलिन ने कहा, "जब मुझे मूनस्टोन की कहानी पता चली, तो मैं इसे यहाँ लाने का ज़रिया बनने के लिए बहुत इच्छुक नहीं था। लेकिन श्री ब्रुफ़ ने मुझे याद दिलाया कि किसी को तो मेरे चचेरे भाई की विरासत उसके हाथों में सौंपनी ही होगी—और मैं भी यह काम किसी और की तरह ही कर सकता हूँ। बैंक से हीरा निकालने के बाद, मुझे लगा कि कोई फटेहाल, सांवले रंग का आदमी सड़कों पर मेरा पीछा कर रहा है। मैं अपना सामान लेने अपने पिता के घर गया और वहाँ मुझे एक पत्र मिला, जिसने मुझे अप्रत्याशित रूप से लंदन में रोक दिया। मैं हीरा लेकर वापस बैंक गया और मुझे लगा कि मैंने उस फटेहाल आदमी को फिर से देखा। आज सुबह एक बार फिर बैंक से हीरा निकालते समय, मैंने उस आदमी को तीसरी बार देखा, उसे चकमा दिया और (उसके मुझे पकड़ने से पहले) दोपहर की ट्रेन के बजाय सुबह की ट्रेन से निकल गया। मैं यहाँ हूँ, हीरा सुरक्षित है—और मुझे सबसे पहली खबर क्या मिली? मुझे पता चला कि तीन घूमते-फिरते भारतीय घर पर आए थे, और लंदन से मेरे आने और किसी ऐसी बात के बारे में जो..." मेरे आस-पास जो कुछ भी होना चाहिए, वह उनके लिए जांच का एक विशेष विषय है, खासकर जब वे खुद को अकेला समझते हैं। मैं इस बात पर समय और शब्द बर्बाद नहीं करता कि उन्होंने लड़के के हाथ में स्याही डाली और उसे उसमें दूर खड़े एक आदमी को और उस आदमी की जेब में कुछ ढूंढने के लिए कहा। यह सब (जो मैंने पूर्व में अक्सर होते देखा है) मेरी राय में 'जादू-टोना' है, जैसा कि आपकी राय में भी है। अब हमें यह तय करना है कि क्या मैं एक मामूली दुर्घटना को गलत अर्थ दे रहा हूँ? या क्या हमारे पास वास्तव में इस बात का सबूत है कि भारतीय मूनस्टोन की तलाश में थे, जैसे ही उसे बैंक की सुरक्षित हिरासत से निकाला गया?
न तो उसे और न ही मुझे पूछताछ के इस हिस्से से निपटने में कोई दिलचस्पी थी। हमने एक-दूसरे को देखा, और फिर कांपती रेत पर धीरे-धीरे ऊपर चढ़ती लहरों को देखा।
"तुम क्या सोच रहे हो?" श्री फ्रैंकलिन ने अचानक कहा।
मैंने उत्तर दिया, "मैं सोच रहा था, महोदय, कि मैं डायमंड को दलदल में धकेल कर इस प्रश्न का समाधान कर दूं।"

श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "यदि आपके पास पत्थर के बराबर मूल्य की राशि आपकी जेब में है, तो बेटरएज, ऐसा कहिए और वह अंदर चला जाएगा!"
यह देखना दिलचस्प है कि जब मन चिंतित होता है, तो एक छोटा सा मजाक भी कितना सुकून दे सकता है। उस समय हमें मिस राहेल की वैध संपत्ति हड़पने और श्री ब्लेक को, वसीयत के निष्पादक के रूप में, भयानक मुसीबत में डालने के विचार में खूब हंसी आई थी - हालांकि अब मुझे यह समझ नहीं आ रहा कि हंसी किस बात में थी।
श्री फ्रैंकलिन ने सबसे पहले बातचीत को उसके सही उद्देश्य की ओर वापस लाया। उन्होंने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला, उसे खोला और अंदर का कागज मुझे सौंप दिया।
"बेटरएज," उन्होंने कहा, "मुझे अपनी चाची के लिए कर्नल के अपनी भतीजी को यह विरासत सौंपने के पीछे के मकसद का सामना करना होगा। ध्यान रखें कि लेडी वेरेंडर ने अपने भाई के साथ इंग्लैंड लौटने से लेकर उस समय तक कैसा व्यवहार किया, जब उन्होंने आपसे कहा था कि उन्हें अपनी भतीजी का जन्मदिन याद रखना चाहिए। और इसे पढ़ें।"
उन्होंने मुझे कर्नल की वसीयत का अंश दिया। लिखते समय वह अंश मेरे पास है; और मैं इसे आपकी सुविधा के लिए नीचे प्रतिलिपि कर रहा हूँ:
"तीसरे और अंतिम रूप से, मैं अपनी भतीजी राहेल वेरिंदर, जो मेरी विधवा बहन जूलिया वेरिंदर की इकलौती पुत्री है, को अपना पीला हीरा देता/देती हूँ, बशर्ते उसकी माता जूलिया वेरिंदर मेरी मृत्यु के बाद राहेल के अगले जन्मदिन पर जीवित हों। यह हीरा पूर्व में 'मूनस्टोन' के नाम से जाना जाता है। शर्त यह है कि उसकी माता जूलिया वेरिंदर उस समय जीवित हों। मैं अपने वसीयतकर्ता से निवेदन करता/करती हूँ कि वह मेरे हीरे को, या तो स्वयं अपने हाथों से या किसी विश्वसनीय प्रतिनिधि के माध्यम से, जिसे वह नियुक्त करे, मेरी भतीजी राहेल को मेरी मृत्यु के बाद उसके अगले जन्मदिन पर, और संभव हो तो मेरी बहन जूलिया वेरिंदर की उपस्थिति में, सौंप दे। मैं यह भी निवेदन करता/करती हूँ कि मेरी बहन को मेरी वसीयत के इस तीसरे और अंतिम खंड की एक सही प्रति के माध्यम से सूचित किया जाए कि मैं यह हीरा उसकी पुत्री राहेल को दे रहा/रही हूँ, उसके आचरण से मेरी प्रतिष्ठा को हुए नुकसान के लिए क्षमा के प्रतीक के रूप में। मेरे जीवनकाल में; और विशेष रूप से इस बात के प्रमाण के रूप में कि मैं एक मरते हुए व्यक्ति के रूप में मुझे एक अधिकारी और एक सज्जन व्यक्ति

के रूप में दिए गए अपमान को क्षमा करता हूँ, जब उसकी नौकरानी ने उसके आदेश पर, उसकी बेटी के जन्मदिन के अवसर पर, उसके घर का दरवाजा मेरे लिए बंद कर दिया था।"

इन शब्दों के बाद आगे यह भी लिखा गया कि यदि वसीयतकर्ता की मृत्यु के समय मेरी पत्नी या मिस राहेल की मृत्यु हो चुकी हो, तो हीरे को मूल रूप से उसके साथ जमा किए गए सीलबंद निर्देशों के अनुसार हॉलैंड भेजा जाए। उस स्थिति में, बिक्री से प्राप्त राशि को उत्तरी विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर पद के लिए वसीयत में पहले से छोड़ी गई राशि में जोड़ दिया जाए।

मैंने वह कागज़ श्री फ्रैंकलिन को लौटा दिया, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि उनसे क्या कहूँ। उस क्षण तक मेरी राय यही थी (जैसा कि आप जानते हैं) कि कर्नल की मृत्यु भी उतनी ही क्रूरता से हुई थी जितना कि उनका जीवन। मैं यह नहीं कह रहा कि उनकी वसीयत की प्रति ने मेरी राय पूरी तरह बदल दी: मैं बस इतना कह रहा हूँ कि इसने मुझे स्तब्ध कर दिया।

"अच्छा," श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "अब जब आपने कर्नल का स्वयं का बयान पढ़ लिया है, तो आप क्या कहते हैं? मूनस्टोन को मेरी चाची के घर लाकर, क्या मैं आँख बंद करके उसके प्रतिशोध की पूर्ति कर रहा हूँ, या मैं एक पश्चात्तापी और ईसाई व्यक्ति के रूप में उसका बचाव कर रहा हूँ?"

मैंने उत्तर दिया, "यह कहना मुश्किल है, महोदय, कि उसकी मृत्यु हृदय में भयानक प्रतिशोध और होठों पर भयानक झूठ के साथ हुई। सत्य तो केवल ईश्वर ही जानता है। मुझसे मत पूछिए।"

श्री फ्रैंकलिन वसीयत के अंश को अपनी उंगलियों में घुमाते-घुमाते बैठे थे, मानो इस तरह से वे उसमें से सच्चाई निचोड़ निकालने की उम्मीद कर रहे हों। उसी समय उनमें भी उल्लेखनीय परिवर्तन आया। पहले वे फुर्तीले और हंसमुख थे, लेकिन अचानक ही वे एक धीमे, गंभीर और चिंतनशील युवक में बदल गए।

उन्होंने कहा, "इस प्रश्न के दो पहलू हैं। एक वस्तुनिष्ठ पहलू और एक व्यक्तिपरक पहलू। हमें कौन सा पहलू अपनाना चाहिए?"

उन्होंने जर्मन और फ्रेंच दोनों भाषाओं में शिक्षा प्राप्त की थी। (जैसा कि मैंने अनुमान लगाया) अब तक इन दोनों में से एक भाषा उन पर पूरी तरह हावी थी। और अब (जहां तक मैं समझ सका) दूसरी भाषा उसकी जगह ले रही थी। यह मेरे जीवन का एक नियम है कि मैं कभी भी उस चीज़ पर ध्यान नहीं देता जिसे मैं समझता नहीं। मैंने

वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक पहलुओं के बीच संतुलन बनाए रखा। सरल शब्दों में कहूँ तो, मैंने टकटकी लगाकर देखा और कुछ नहीं कहा।
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "आइए इसका आंतरिक अर्थ समझने की कोशिश करें। मेरे चाचा ने हीरा राहेल को क्यों दिया? उन्होंने इसे मेरी चाची को क्यों नहीं दिया?"
"यह अनुमान से परे नहीं है, महोदय, कम से कम," मैंने कहा। "कर्नल हर्नकैसल मेरी पत्नी को अच्छी तरह जानते थे और उन्हें पता था कि अगर उन्हें उनसे कोई विरासत मिलती तो वह उसे स्वीकार करने से इनकार कर देतीं।"
"उसे कैसे पता चला कि राहेल भी इसे स्वीकार करने से इनकार नहीं करेगी?"
"क्या ऐसी कोई युवती है, महोदय, जो 'द मूनस्टोन' जैसे जन्मदिन के उपहार को स्वीकार करने के प्रलोभन का विरोध कर सके?"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "यह व्यक्तिपरक दृष्टिकोण है। बेटरएज, इस व्यक्तिपरक दृष्टिकोण को अपनाने की आपकी क्षमता सराहनीय है। लेकिन कर्नल की विरासत के बारे में एक और रहस्य है जिसका अभी तक समाधान नहीं हुआ है। हम यह कैसे समझाएँ कि उन्होंने राहेल को जन्मदिन का उपहार केवल इस शर्त पर क्यों दिया कि उसकी माँ जीवित हो?"
"मैं किसी मृत व्यक्ति पर कलंक नहीं लगाना चाहता, महोदय," मैंने उत्तर दिया। "लेकिन अगर उसने जानबूझकर अपनी बहन के लिए, उसके बच्चे के माध्यम से, मुसीबत और खतरे की विरासत छोड़ी है, तो यह विरासत इस शर्त पर आधारित होनी चाहिए कि उसकी बहन जीवित रहे और इस कष्ट को महसूस कर सके।"
"ओह! यही है उसकी मंशा के बारे में आपकी व्याख्या? फिर वही व्यक्तिपरक व्याख्या! क्या आप कभी जर्मनी गए हैं, बेटरएज?"
"नहीं, महोदय। कृपया बताएं कि आपकी व्याख्या क्या है?"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "मुझे लगता है कि कर्नल का उद्देश्य संभवतः अपनी भतीजी को लाभ पहुँचाना नहीं था, जिसे उन्होंने कभी देखा भी नहीं था, बल्कि अपनी बहन को यह साबित करना था कि उन्होंने उसे क्षमा करते हुए अपनी जान गंवाई है, और यह साबित करने के लिए उन्होंने उसके बच्चे को एक उपहार दिया। बेटरएज, आपकी व्याख्या से एक बिल्कुल अलग व्याख्या भी है, जो व्यक्तिपरक-वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण पर आधारित है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, दोनों व्याख्याओं के सही होने की संभावना बराबर है।"
मामले को इस सुखद और संतोषजनक अंजाम तक पहुँचाने के बाद, श्री फ्रैंकलिन को लगा कि उन्होंने अपना सारा काम पूरा कर लिया है। वे रेत पर पीठ के बल लेट गए

और पूछा कि अब आगे क्या करना है।
विदेशी भाषा बोलने से पहले वह बहुत ही चतुर और स्पष्ट बुद्धि के थे, और अब तक व्यवसाय में पूरी तरह से नेतृत्व करते आ रहे थे, इसलिए उनके इस अचानक बदलाव के लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं था, जैसा कि उन्होंने अब मुझ पर असहाय होकर सहारा लेते हुए दिखाया। बाद में ही मुझे पता चला - मिस राहेल की सहायता से, जिन्होंने सबसे पहले इस बात का पता लगाया - कि श्री फ्रैंकलिन में आए ये पेचीदा बदलाव और परिवर्तन उनकी विदेशी शिक्षा के प्रभाव के कारण थे। जिस उम्र में हम सभी दूसरों के रंग-रूप से प्रभावित होते हैं, उसी उम्र में उन्हें विदेश भेज दिया गया था, और एक देश से दूसरे देश में भेजा गया था, इससे पहले कि किसी एक रंग का उन पर पूरी तरह से प्रभाव पड़ पाता। इसके परिणामस्वरूप, वह अपने चरित्र के इतने अलग-अलग पहलुओं के साथ वापस आए, जो कमोबेश एक-दूसरे से मेल नहीं खाते थे, कि ऐसा लगता था कि वह अपना पूरा जीवन अपने आप से निरंतर विरोधाभास की स्थिति में बिता रहे हैं। वह व्यस्त भी हो सकते थे और आलसी भी; उनका दिमाग कभी उलझा हुआ होता था तो कभी एकदम साफ; दृढ़ संकल्प की मिसाल भी और बेबसी का साक्षात उदाहरण भी। उनमें फ्रांसीसी पक्ष भी था, जर्मन पक्ष भी, और इतालवी पक्ष भी —उनकी मूल अंग्रेजी बुनियाद कभी-कभी झलकती थी, मानो कह रही हो, "देखो, मैं पूरी तरह बदल गया हूँ, लेकिन मेरे भीतर अभी भी कुछ अंश बाकी है।" मिस राहेल अक्सर कहती थीं कि जब वह अचानक मान जाते थे और अपने मीठे और विनम्र स्वभाव से आपसे अपनी जिम्मेदारियाँ संभालने को कहते थे, तो उनमें इतालवी पक्ष सबसे ऊपर होता था। मुझे लगता है कि अगर आप यह निष्कर्ष निकालें कि उनमें इतालवी पक्ष अभी भी सबसे ऊपर है, तो आप उनके साथ कोई अन्याय नहीं करेंगी।
मैंने पूछा, "क्या आगे क्या करना है, यह जानना आपका काम नहीं है, महोदय? निश्चित रूप से यह मेरा काम नहीं हो सकता?"
श्री फ्रैंकलिन को मेरे प्रश्न का महत्व समझ में नहीं आया—क्योंकि उस समय वे अपने सिर के ऊपर आकाश के अलावा कुछ भी देखने की स्थिति में नहीं थे।
"मैं अपनी चाची को बेवजह परेशान नहीं करना चाहता," उसने कहा। "और मैं उन्हें बिना किसी ज़रूरी चेतावनी के नहीं छोड़ना चाहता। बेटरएज, अगर तुम मेरी जगह होते, तो मुझे एक शब्द में बताओ, तुम क्या करते?"
मैंने उसे एक शब्द में कहा: "इंतजार करो।"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "पूरे दिल से। कब तक?"

मैंने अपनी बात समझाना शुरू किया।
“जैसा कि मुझे समझ में आया है, महोदय,” मैंने कहा, “कोई न कोई इस मनहूस हीरे को मिस राहेल के जन्मदिन पर उनके हाथों में ज़रूर देगा—और आप भी यह काम कर सकते हैं। ठीक है। आज 25 मई है और जन्मदिन 21 जून को है। हमारे पास लगभग चार सप्ताह का समय है। देखते हैं इस दौरान क्या होता है; और परिस्थितियों के अनुसार हम उन्हें सूचित करें या न करें।”
"बिल्कुल सही, बेटरएज!" श्री फ्रैंकलिन कहते हैं। "लेकिन इसके और जन्मदिन के बीच, डायमंड का क्या किया जाए?"
“ज़रूर, आपके पिता ने इसके साथ क्या किया होगा!” मैंने उत्तर दिया। “आपके पिता ने इसे लंदन के एक बैंक में सुरक्षित रखा था। आपने इसे फ्रिज़िंगहॉल के बैंक में सुरक्षित रखा है।” (फ्रिज़िंगहॉल हमारा सबसे नज़दीकी शहर था, और बैंक ऑफ इंग्लैंड वहाँ के बैंक से ज़्यादा सुरक्षित नहीं था।) “अगर मैं आपकी जगह होता,” मैंने आगे कहा, “तो महिलाओं के वापस आने से पहले ही मैं इसे लेकर सीधे फ्रिज़िंगहॉल चला जाता।”
कुछ करने की संभावना—और उससे भी बड़ी बात, घोड़े पर सवार होकर कुछ करने की संभावना—ने श्री फ्रैंकलिन को एकदम तड़का लगा दिया। वे झट से खड़े हो गए और बिना किसी औपचारिकता के मुझे भी अपने ऊपर खींच लिया। उन्होंने कहा, "बेटरएज, तुम सोने के बराबर हो। चलो, और सीधे अस्तबल के सबसे अच्छे घोड़े पर सवार हो जाओ।"
(ईश्वर की कृपा से!) आखिरकार, विदेशी दिखावे के बावजूद, उनमें मौजूद असली अंग्रेज़ी व्यक्तित्व झलक रहा था! ये वही मास्टर फ्रैंकलिन थे जिन्हें मैं याद करता था, सवारी की उम्मीद में अपने पुराने अंदाज़ में वापस आ रहे थे और मुझे पुराने अच्छे दिनों की याद दिला रहे थे! उनके लिए घोड़े पर काठी कसूँ? अगर वे सभी घोड़ों की सवारी कर पाते, तो मैं एक दर्जन घोड़ों पर काठी कस देता!
हम जल्दी से घर वापस गए; हमने अस्तबल के सबसे तेज़ घोड़े पर जल्दी से काठी कसी; और श्री फ्रैंकलिन जल्दी से निकल पड़े, उस मनहूस हीरे को एक बार फिर बैंक के तिजोरी में रखने के लिए। जब मैंने उसके घोड़े के खुरों की आखिरी आवाज सुनी और जब मैं आंगन में मुड़ा और पाया कि मैं फिर से अकेला हूँ, तो मेरा मन हुआ कि मैं खुद से पूछूँ कि क्या मैं किसी सपने से तो नहीं जागा हूँ।

जब मैं इस उलझन भरी मनःस्थिति में था और मुझे अकेले में कुछ शांत समय की सख्त ज़रूरत थी ताकि मैं खुद को संभाल सकूँ, तभी मेरी बेटी पेनेलोप मेरे रास्ते में आ गई (ठीक वैसे ही जैसे उसकी दिवंगत माँ सीढ़ियों पर मेरे रास्ते में आ जाती थीं), और उसने तुरंत मुझे बुलाकर श्री फ्रैंकलिन और मेरे बीच हुई बैठक की सारी बातें बताने को कहा। उस समय, पेनेलोप की जिज्ञासा को तुरंत शांत करना ही एकमात्र उपाय था। इसलिए मैंने जवाब दिया कि श्री फ्रैंकलिन और मैंने विदेश नीति पर तब तक बात की जब तक हम और बात नहीं कर सकते थे, और फिर धूप में हम दोनों सो गए। अगली बार जब आपकी पत्नी या बेटी किसी अजीब समय पर कोई अटपटा सवाल पूछकर आपको परेशान करें, तो इस तरह का जवाब देने की कोशिश करें, और महिलाओं की स्वाभाविक मधुरता पर भरोसा रखें कि वे अगली बार फिर से सुलह कर लेंगी।

दोपहर बीतती गई और मेरी पत्नी और मिस राहेल वापस आ गईं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि जब उन्होंने सुना कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक आ गए हैं और फिर घोड़े पर सवार होकर चले गए हैं, तो वे कितने आश्चर्यचकित हुए। यह भी कहने की आवश्यकता नहीं है कि उन्होंने सीधे-सीधे अटपटे सवाल पूछे और यह कि "विदेशी राजनीति" और "धूप में सो जाना" जैसी बातें उनके सामने दोबारा नहीं टिकेंगी। अपनी बात खत्म करते हुए, मैंने कहा कि श्री फ्रैंकलिन का सुबह की ट्रेन से आना पूरी तरह से उनकी एक सनक का नतीजा था। इस पर जब मुझसे पूछा गया कि क्या उनका घोड़े पर सवार होकर फिर से चले जाना भी उनकी एक सनक थी, तो मैंने कहा, "हाँ, थी;" और इस तरह बड़ी चतुराई से बात टाल दी।

महिलाओं के साथ मेरी मुश्किलें दूर हो जाने के बाद, जब मैं अपने कमरे में लौटा तो मुझे और भी मुश्किलें मिलीं। पेनेलोप—महिलाओं की स्वाभाविक मिठास के साथ—मुस्कुराकर सुलह करने आई; और—महिलाओं की स्वाभाविक जिज्ञासा के साथ—एक और सवाल पूछने आई। इस बार वह सिर्फ इतना जानना चाहती थी कि हमारी दूसरी नौकरानी, रोज़ाना स्पीयरमैन के साथ क्या चल रहा है।

शिवरिंग सैंड में मुझे और मिस्टर फ्रैंकलिन को छोड़ने के बाद, रोसन्ना घर लौटी तो ऐसा लग रहा था जैसे उसका मन बिल्कुल ही अजीब था। पेनेलोप की बात मानें तो, उसके सारे रंग बदल गए थे। वह बिना वजह खुश भी थी और बिना वजह उदास भी। एक पल में वह मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक के बारे में सैकड़ों सवाल पूछती, और दूसरे पल में पेनेलोप पर इस बात के लिए गुस्सा हो जाती कि उसने यह मान लिया कि एक अजनबी सज्जन को उसमें कोई दिलचस्पी हो सकती है। वह हैरान होकर मुस्कुराई

और अपने वर्कबॉक्स में मिस्टर फ्रैंकलिन का नाम लिख दिया। फिर वह हैरान होकर रोने लगी और शीशे में अपने विकृत कंधे को देखने लगी। क्या आज से पहले वह और मिस्टर फ्रैंकलिन एक-दूसरे को जानते थे? बिलकुल असंभव! क्या उन्होंने एक-दूसरे के बारे में कुछ सुना भी था? फिर से असंभव! जब मिस्टर फ्रैंकलिन ने देखा कि लड़की उन्हें कैसे घूर रही है, तो मैं उनकी हैरानी को स्वाभाविक कह सकता हूँ। पेनेलोप भी लड़की की जिज्ञासा को स्वाभाविक कह सकती है, जब उसने मिस्टर फ्रैंकलिन के बारे में सवाल पूछे। हमारे बीच इस तरह से आयोजित सम्मेलन काफी थकाऊ था, जब तक कि मेरी बेटी ने अचानक एक ऐसी बात कहकर इसे समाप्त नहीं कर दिया, जिसे मैंने अपने जीवन में अब तक की सबसे भयावह धारणा माना।

"पिताजी!" पेनेलोप ने बड़ी गंभीरता से कहा, "इसका केवल एक ही कारण हो सकता है। रोसन्ना को मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक से पहली नज़र में ही प्यार हो गया है!"

आपने सुंदर युवतियों के पहली नज़र में प्यार हो जाने के बारे में सुना होगा और इसे स्वाभाविक ही समझा होगा। लेकिन एक सुधारगृह से निकली नौकरानी, जिसका चेहरा सादा हो और कंधा विकृत हो, का अपनी मालकिन के घर आए एक सज्जन से पहली नज़र में प्यार हो जाना... ज़रा सोचिए, यह तो किसी भी कहानी की बेतुकी कहानी जैसा लगता है! मैं इतना हँसा कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। पेनेलोप को मेरी हँसी कुछ अजीब तरीके से बुरी लगी। उसने बहुत ही कोमल स्वर में कहा, "पिताजी, मैंने आपको पहले कभी इतना निर्दयी नहीं देखा था," और बाहर चली गई।

मेरी प्रेमिका के शब्द मुझ पर ठंडे पानी के छींटे की तरह पड़े। मैंने खुद को बहुत कोसा, क्योंकि उसके बोलते ही मैं बेचैन हो गया था—पर जो हुआ सो हुआ। अगर आप चाहें तो हम विषय बदल लेते हैं। मुझे खेद है कि मैं इस बारे में लिखने लगा; और इसका कारण भी है, जैसा कि आप थोड़ी देर और बात करने पर समझ जाएंगे।

शाम हो गई और मिस्टर फ्रैंकलिन के फ्रिज़िंगहॉल से लौटने से पहले ही खाने की घंटी बज उठी। मैं उनके कमरे में गर्म पानी खुद लेकर गया, इस उम्मीद में कि इतनी देर बाद कुछ तो हुआ होगा। मुझे बहुत निराशा हुई (और शायद आपको भी), कुछ नहीं हुआ था। जाते या लौटते समय उनकी मुलाकात किसी भारतीय से नहीं हुई थी। उन्होंने मूनस्टोन को बैंक में जमा करा दिया था—बस उसे एक अनमोल वस्तु बताया था—और उसकी रसीद भी उन्होंने अपनी जेब में सुरक्षित रख ली थी। मैं नीचे चला गया, यह सोचकर कि दिन में हीरे को लेकर जो उत्साह था, उसके बाद यह अंत कुछ फीका सा लगा।

मिस्टर फ्रैंकलिन और उनकी चाची और चचेरे भाई के बीच हुई मुलाकात कैसी रही, यह मैं आपको नहीं बता सकता।

उस दिन मेज पर सेवा करने के लिए मैं कुछ भी देने को तैयार था। लेकिन, घर में मेरी स्थिति ऐसी थी कि भोजन पर सेवा करना (पारिवारिक त्योहारों को छोड़कर) अन्य नौकरों की नज़र में मेरी गरिमा को ठेस पहुँचाना था—एक ऐसी बात जो मेरी मालकिन मुझे पहले से ही बिना किसी अवसर की तलाश किए करने में सक्षम मानती थीं। उस शाम ऊपरी कमरों से मुझे जो खबर मिली, वह पेनेलोप और नौकर से आई थी। पेनेलोप ने बताया कि उसने मिस राहेल को अपने बालों को संवारने के बारे में इतना सजग कभी नहीं देखा था, और उन्हें ड्राइंग रूम में मिस्टर फ्रैंकलिन से मिलने जाते समय जितना सुंदर और आकर्षक देखा था, उतना कभी नहीं देखा था। नौकर ने बताया कि अपने से बड़ों की उपस्थिति में सम्मानजनक व्यवहार बनाए रखना और भोजन पर मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक की सेवा करना, ये दो सबसे कठिन काम थे जिन्हें उसने अपने सेवा प्रशिक्षण में कभी आजमाया था। बाद में शाम को, हमने उन्हें युगल गीत गाते और बजाते सुना। श्री फ्रैंकलिन ऊँची आवाज़ में बांसुरी बजा रहे थे, मिस राहेल उससे भी ऊँची आवाज़ में, और मेरी पत्नी पियानो पर उनका पीछा कर रही थीं, मानो झाड़ियों और खाई को पार करते हुए, और उन्हें सुरक्षित पार करते हुए देख रही हों। रात में खुली खिड़कियों से, छत पर, यह सब सुनना बहुत ही अद्‌भुत और सुखद था। कुछ देर बाद, मैं सोडा वाटर और ब्रांडी लेकर धूम्रपान कक्ष में श्री फ्रैंकलिन के पास गया, और पाया कि मिस राहेल ने डायमंड के बारे में सोचना पूरी तरह से बंद कर दिया था। जब मैंने बातचीत को कुछ गंभीर विषयों की ओर मोड़ने की कोशिश की, तो उनसे बस इतना ही निकल पाया, "इंग्लैंड लौटने के बाद से मैंने जितनी भी लड़कियाँ देखी हैं, उनमें वह सबसे आकर्षक हैं!"

आधी रात के करीब, मैं हमेशा की तरह अपने सहायक (शैतान सैमुअल) के साथ घर के चारों ओर ताला लगाने गया। जब सभी दरवाजे बंद हो गए, सिवाय उस एक दरवाजे के जो छत पर खुलता था, तो मैंने सैमुअल को सोने भेज दिया और खुद भी सोने से पहले ताजी हवा लेने के लिए बाहर निकला।

रात एकदम शांत और घनी थी, और आसमान में पूरा चाँद चमक रहा था। बाहर इतनी खामोशी थी कि मुझे बीच-बीच में बहुत धीमी और हल्की लहरों की आवाज सुनाई दे रही थी, जैसे कि ज़मीन की लहरें हमारे छोटे से खाड़ी के मुहाने के पास रेत के टीले पर टकरा रही हों। घर की छत की तरफ अंधेरा था; लेकिन चौड़ी चाँदनी छत के बगल

वाली बजरी वाली पगडंडी पर चमक रही थी। आसमान की ओर देखने के बाद, इस तरफ देखते हुए, मैंने घर के कोने के पीछे से चाँदनी में एक व्यक्ति की परछाई आगे की ओर पड़ती देखी।

बूढ़ा और चालाक होने के कारण मैंने आवाज़ नहीं लगाई; लेकिन दुर्भाग्य से बूढ़ा और भारी होने के कारण बजरी पर मेरे पैर लड़खड़ा गए। इससे पहले कि मैं अचानक कोने से मुड़ पाता, जैसा मैंने सोचा था, मुझे अपने से हल्के कदमों की आहट सुनाई दी—और मुझे लगा कि एक से ज़्यादा लोगों के कदम थे—जो जल्दी से पीछे हट रहे थे। जब तक मैं कोने तक पहुँचा, घुसपैठिए, चाहे वे कोई भी हों, पगडंडी के दूसरी तरफ झाड़ियों में भाग गए थे और उस हिस्से के घने पेड़ों और झाड़ियों के बीच छिप गए थे। झाड़ियों से वे आसानी से हमारी बाड़ फांदकर सड़क पर जा सकते थे। अगर मैं चालीस साल छोटा होता, तो शायद उन्हें हमारे घर से निकलने से पहले पकड़ने का मौका मिल जाता। लेकिन ऐसा नहीं था, इसलिए मैं अपने से जवान किसी को साथ ले जाने के लिए वापस चला गया। किसी को परेशान किए बिना, सैमुअल और मैंने दो बंदूकें लीं और घर के चारों ओर और झाड़ियों के बीच से होते हुए गए। यह सुनिश्चित करने के बाद कि हमारे घर में कहीं भी कोई छिपा हुआ नहीं है, हम वापस मुड़ गए। जिस रास्ते पर मैंने परछाई देखी थी, उस पर चलते हुए, मैंने पहली बार साफ बजरी पर, चाँद की रोशनी में पड़ी एक छोटी सी चमकदार वस्तु देखी। उसे उठाकर देखने पर पता चला कि वह एक छोटी बोतल थी, जिसमें स्याही की तरह गाढ़ा, मीठी खुशबू वाला तरल पदार्थ भरा हुआ था।

मैंने सैमुअल से कुछ नहीं कहा। लेकिन, पेनेलोप ने मुझे बाज़ीगरों के बारे में जो बताया था और लड़के की हथेली पर स्याही की छोटी सी बूंद डालने की घटना याद करके, मुझे तुरंत शक हुआ कि मैंने घर के आसपास मंडरा रहे तीन भारतीयों को परेशान कर दिया है, जो अपने गैर-ईसाई तरीके से उस रात हीरे का पता लगाने पर तुले हुए हैं।

अध्याय आठ

यहां, मुझे एक क्षण के लिए रुकना आवश्यक लगता है।

अपनी यादों को ताज़ा करते हुए—और पेनेलोप की डायरी देखकर—मुझे पता चला कि हम श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के आगमन और मिस राहेल के जन्मदिन के बीच के समय को बड़ी तेज़ी से गुज़ार सकते हैं। उस समय का अधिकांश भाग बीतता गया, और उसमें कुछ भी ऐसा नहीं हुआ जिसे दर्ज किया जा सके। इसलिए, आपकी अनुमति से और पेनेलोप की मदद से, मैं यहाँ केवल कुछ खास तारीखों का ही ज़िक्र करूँगा; और

कहानी को दिन-प्रतिदिन फिर से तब सुनाऊँगा, जब हम उस समय पर पहुँचेंगे जब मूनस्टोन का मामला हमारे घर के सभी लोगों का मुख्य काम बन गया था।
अब हम आगे बढ़ सकते हैं—शुरुआत, ज़ाहिर है, उस मीठी खुशबू वाली स्याही की बोतल से, जो मुझे रात में बजरी वाली पगडंडी पर मिली थी।
अगली सुबह (छब्बीस तारीख की सुबह) मैंने श्री फ्रैंकलिन को यह जादू-टोना दिखाया और उन्हें वही बताया जो मैं आपको पहले ही बता चुका हूँ। उनका मत था कि भारतीय न केवल हीरे की तलाश में इधर-उधर घात लगाए बैठे थे, बल्कि वे इतने मूर्ख भी थे कि अपने ही जादू पर विश्वास करते थे—जिसका अर्थ था किसी लड़के के सिर पर निशान बनाना, उसके हाथ में स्याही डालना और फिर उससे ऐसी चीजों और व्यक्तियों को देखने की उम्मीद करना जो इंसानी दृष्टि की पहुँच से परे हैं। श्री फ्रैंकलिन ने मुझे बताया कि हमारे देश में, और साथ ही पूर्व में भी, ऐसे लोग हैं जो इस अजीबोगरीब जादू-टोने का अभ्यास करते हैं (हालांकि बिना स्याही के); और इसे एक फ्रांसीसी नाम से पुकारते हैं, जिसका अर्थ दृष्टि की चमक जैसा कुछ है। श्री फ्रैंकलिन ने कहा, "पक्का यकीन मानिए, भारतीयों ने मान लिया था कि हीरा यहीं रखा होगा; और वे अपने उस भविष्यवक्ता लड़के को साथ लाए थे ताकि अगर वे पिछली रात घर में घुसने में सफल हो गए तो वह उन्हें हीरे तक पहुँचने का रास्ता दिखाए।"
मैंने पूछा, "क्या आपको लगता है कि वे दोबारा कोशिश करेंगे, महोदय?"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "यह इस बात पर निर्भर करता है कि लड़का वास्तव में क्या कर सकता है। अगर वह फ्रिज़िंगहॉल स्थित बैंक की लोहे की तिजोरी के आर-पार हीरा देख सकता है, तो फिलहाल हमें भारतीयों के आने से कोई परेशानी नहीं होगी। अगर वह ऐसा नहीं कर पाता है, तो हमें कई और रातें बीतने से पहले झाड़ियों में उन्हें पकड़ने का एक और मौका मिलेगा।"
मैंने उस दूसरे मौके का काफी आत्मविश्वास से इंतजार किया; लेकिन, हैरानी की बात है कि वह कभी नहीं आया।
चाहे बाज़ीगरों ने कस्बे में सुना हो कि श्री फ्रैंकलिन को नदी किनारे देखा गया था और उसी के आधार पर निष्कर्ष निकाला हो; या चाहे लड़के ने सचमुच हीरा वहीं देखा हो जहाँ वह अब रखा हुआ है (जिस पर मुझे बिल्कुल भी विश्वास नहीं है); या चाहे यह महज़ एक संयोग ही क्यों न हो, सच्चाई यही है कि मिस राहेल के जन्मदिन से पहले बीते हफ्तों में किसी भी भारतीय का भूत घर के पास नहीं आया। बाज़ीगर कस्बे में और उसके आसपास अपना धंधा करते रहे; और श्री फ्रैंकलिन और मैं यह देखने के लिए

इंतज़ार करते रहे कि आगे क्या होता है, और हमने ठान लिया था कि हम उन बदमाशों को अपनी शंकाएँ जल्दी ज़ाहिर करके उन्हें सतर्क नहीं करेंगे। दोनों पक्षों की घटनाओं की इस रिपोर्ट के साथ ही, फिलहाल भारतीयों के बारे में मेरी बात यहीं समाप्त होती है।

महीने की उनतीस तारीख को, मिस राहेल और मिस्टर फ्रैंकलिन ने समय बिताने का एक नया तरीका खोज निकाला, जो अन्यथा उनके लिए बोझिल हो सकता था। उनके इस काम पर विशेष ध्यान देने के कुछ कारण हैं। आप जानेंगे कि इसका संबंध आगे आने वाली किसी घटना से है।

आम तौर पर सज्जनों के सामने जीवन में एक बड़ी चुनौती होती है - उनकी अपनी आलस्य की चुनौती। उनका अधिकांश जीवन कुछ न कुछ करने की तलाश में ही बीतता है, इसलिए यह देखना आश्चर्यजनक है - खासकर जब उनकी रुचियां बौद्धिक हों - कि वे कितनी बार अंधाधुंध किसी घिनौने काम में लग जाते हैं। दस में से नौ बार वे किसी न किसी चीज को सताने या बिगाड़ने में लग जाते हैं - और उन्हें दृढ़ विश्वास होता है कि वे अपने दिमाग को तेज कर रहे हैं, जबकि सच्चाई यह है कि वे केवल घर में गंदगी फैला रहे हैं। मैंने उन्हें (महिलाओं को, मुझे खेद है, पुरुषों के साथ-साथ) दिन-प्रतिदिन खाली दवाइयों के डिब्बे लेकर बाहर जाते देखा है, और वे न्यूट्स, भृंग, मकड़ियों और मेंढकों को पकड़ते हैं, और घर आकर उन बेचारे जीवों में पिन चुभोते हैं या बिना किसी पछतावे के उन्हें छोटे-छोटे टुकड़ों में काट देते हैं। आप मेरे नन्हे स्वामी या मेरी नन्ही स्वामिनी को किसी मकड़ी के अंदरूनी हिस्से को आवर्धक लेंस से ध्यान से देखते हुए पाते हैं; या आप उनके किसी मेंढक को बिना सिर के सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए देखते हैं—और जब आप सोचते हैं कि इस क्रूरता का क्या मतलब है, तो आपको बताया जाता है कि इसका मतलब है कि मेरे नन्हे स्वामी या मेरी नन्ही स्वामिनी को प्राकृतिक इतिहास में रुचि है। कभी-कभी, आप उन्हें घंटों तक नुकीले औजारों से एक सुंदर फूल को खराब करते हुए देखते हैं, सिर्फ यह जानने की मूर्खतापूर्ण जिज्ञासा में कि फूल किस चीज से बना है। क्या जब आपको पता चल जाएगा तो उसका रंग और सुंदर हो जाएगा, या उसकी सुगंध और मीठी हो जाएगी? लेकिन कोई बात नहीं! बेचारे, उन्हें समय तो गुजारना ही है, आप जानते हैं—उन्हें समय गुजारना ही है। आप बचपन में गंदी मिट्टी में खेलते थे और पाई बनाते थे; और बड़े होकर आप गंदे विज्ञान में रुचि रखते हैं, मकड़ियों का विच्छेदन करते हैं और फूलों को खराब करते हैं। दोनों ही मामलों में, इसका रहस्य यही है कि आपके खाली दिमाग में सोचने के लिए कुछ नहीं

है, और आपके बेकार हाथों से करने के लिए कुछ नहीं है। और इसलिए अंत में आप कैनवास को रंगों से खराब कर देते हैं, जिससे घर में बदबू फैल जाती है; या गंदे पानी से भरे कांच के डिब्बे में मेंढक के बच्चे पालते हैं, जिससे घर में सबकी जी मिचला जाती है; या पत्थर के टुकड़े इधर-उधर तोड़ते हैं, और घर के खाने में धूल-मिट्टी मिला देते हैं; या फोटोग्राफी के चक्कर में अपनी उंगलियां रंग लेते हैं, और घर में हर किसी के चेहरे पर बेरहमी से दाग लगाते हैं। यह अक्सर उन लोगों पर भारी पड़ता है जो सचमुच अपनी जीविका कमाने के लिए मजबूर हैं, और जिन्हें अपने कपड़ों, छत और भोजन के लिए काम करना पड़ता है। लेकिन अपने जीवन के सबसे कठिन दिन के काम की तुलना उस आलस्य से करें जो फूलों को फोड़ने और मकड़ियों के पेट में घुसने का जरिया बनता है, और अपने भाग्य को धन्यवाद दें कि आपके दिमाग में कुछ ऐसा है जिसके बारे में उसे सोचना ही चाहिए, और आपके हाथों में कुछ ऐसा है जिसे उन्हें करना ही चाहिए।

मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि श्री फ्रैंकलिन और मिस राहेल ने कुछ भी नहीं किया। उन्होंने बस गंदगी फैलाई; और सच कहें तो उन्होंने सिर्फ एक दरवाजे की पैनलिंग को ही खराब किया।

श्री फ्रैंकलिन की बहुमुखी प्रतिभा उन्हें हर क्षेत्र में रुचि रखने वाले व्यक्ति के रूप में जानी जाती थी, और उन्होंने जिसे "सजावटी चित्रकला" कहा, उसमें भी हाथ आजमाया। उन्होंने हमें बताया कि उन्होंने पेंट को नम करने के लिए एक नया मिश्रण बनाया था, जिसे उन्होंने "वाहन" बताया। यह किस चीज से बना था, मुझे नहीं पता। लेकिन इससे क्या होता था, यह मैं दो शब्दों में बता सकता हूँ - इसमें से बदबू आती थी। मिस राहेल इस नई प्रक्रिया को आजमाने के लिए बहुत उत्सुक थीं, इसलिए श्री फ्रैंकलिन ने लंदन से सामग्री मंगवाई; उन्हें मिलाया, और साथ ही ऐसी बदबू फैलाई जिससे कमरे में आते ही कुत्ते भी छींकने लगे; मिस राहेल के गाउन के ऊपर एक एप्रन और बिब पहनाया, और उन्हें अपने छोटे से बैठक कक्ष को सजाने के काम में लगा दिया - जिसे अंग्रेजी में नाम न होने के कारण उन्होंने "बेडरूम" कहा। उन्होंने दरवाजे के अंदर से शुरुआत की। श्री फ्रैंकलिन ने प्यूमिस पत्थर से सारी बढ़िया वार्निश खुरच कर हटा दी, और एक ऐसी सतह बनाई जिस पर वे काम कर सकें। मिस राहेल ने उनके निर्देशों और सहायता से, सतह को पैटर्न और आकृतियों से सजा दिया—ग्रिफिन, पक्षी, फूल, कामदेव, और इसी तरह के अन्य चित्र—जो एक प्रसिद्ध इतालवी चित्रकार की रचनाओं से लिए गए थे, जिनका नाम मुझे याद नहीं आ रहा है: मेरा

मतलब उस चित्रकार से है जिसने दुनिया को वर्जिन मैरी की मूर्तियों से भर दिया था, और बेकरी में उसका एक प्रेमी था। काम के तौर पर देखा जाए तो, यह सजावट धीमी और गंदी होती थी। लेकिन हमारे युवक-युवती इससे कभी नहीं थकते थे। जब वे घुड़सवारी नहीं कर रहे होते, या मेहमानों से नहीं मिल रहे होते, या खाना नहीं खा रहे होते, या अपने गीत नहीं गा रहे होते, तो वे सिर मिलाकर, मधुमक्खियों की तरह व्यस्त होकर, दरवाजे को सजाते रहते थे। वह कौन सा कवि था जिसने कहा था कि शैतान खाली हाथों के लिए भी कोई न कोई शरारत ढूंढ लेता है? अगर वह परिवार में मेरी जगह होता, और मिस राहेल को ब्रश चलाते हुए और मिस्टर फ्रैंकलिन को अपने वाहन के साथ देखता, तो वह उन दोनों के बारे में इससे अधिक सत्य कुछ नहीं लिख सकता था।

अगली महत्वपूर्ण तारीख रविवार, चार जून है।

उस शाम हमने नौकरों के हॉल में पहली बार एक घरेलू मुद्दे पर बहस की, जिसका, दरवाजे की सजावट की तरह, किसी ऐसी चीज से संबंध है जो अभी आने वाली है।

श्री फ्रैंकलिन और मिस राहेल को एक-दूसरे की संगति में आनंद लेते देख और व्यक्तिगत रूप से उनकी जोड़ी को देखकर, हमने स्वाभाविक रूप से यह अनुमान लगाया कि क्या वे दरवाजे को सजाने के अलावा किसी और उद्देश्य से भी शादी करने की सोच रहे होंगे। हममें से कुछ ने कहा कि गर्मी खत्म होने से पहले ही घर में शादी हो जाएगी। अन्य (जिनमें मैं भी शामिल था) ने माना कि मिस राहेल की शादी होने की काफी संभावना है; लेकिन हमें संदेह था (जिन कारणों का अभी खुलासा होगा) कि क्या उनके दूल्हे श्री फ्रैंकलिन ब्लेक ही होंगे।

श्री फ्रैंकलिन प्रेम में थे, इस बात में उन्हें देखने और सुनने वाले किसी को भी संदेह नहीं था। असली चुनौती मिस राहेल को समझना था। मैं आपको उनसे परिचित कराने का सौभाग्य प्राप्त करना चाहता हूँ; इसके बाद, मैं आपको उन्हें स्वयं समझने के लिए छोड़ देता हूँ—यदि आप समझ सकें।

मेरी प्रेमिका का अठारहवाँ जन्मदिन अब आने वाला था, 21 जून को। अगर आपको सांवली औरतें पसंद हैं (जिनके बारे में मुझे पता चला है कि आजकल समलैंगिकों की दुनिया में उनका चलन कम हो गया है), और अगर आपको कद-काठी को लेकर कोई खास पूर्वाग्रह नहीं है, तो मैं मिस राहेल के बारे में कह सकता हूँ कि वो अब तक देखी गई सबसे खूबसूरत लड़कियों में से एक थीं। वो छोटी और पतली थीं, लेकिन सिर से पैर तक उनका पूरा शरीर सुडौल था। उन्हें बैठते, उठते और खासकर चलते देखना

किसी भी समझदार आदमी को यह यकीन दिलाने के लिए काफी था कि उनकी खूबसूरती उनके शरीर में थी, कपड़ों में नहीं। उनके बाल मैंने अब तक देखे सबसे काले थे। उनकी आँखें भी उनके बालों से मिलती-जुलती थीं। मैं मानता हूँ कि उनकी नाक थोड़ी छोटी थी। उनके होंठ और ठुड्डी (श्री फ्रैंकलिन के शब्दों में) देवताओं के लिए भी निवाले के समान थे; और उनका रंग (उसी निर्विवाद प्रमाण के आधार पर) सूरज की तरह गर्म था, और सूरज से भी बड़ी खूबी यह थी कि वो हमेशा देखने में सुंदर लगती थीं। उपरोक्त बातों के साथ-साथ यह भी जोड़ दें कि वह एक तीर की तरह अपना सिर सीधा रखती थी, एक जोशीले, उत्साही और उत्कृष्ट तरीके से—उसकी आवाज स्पष्ट थी, उसमें एक खास तरह की खनक थी, और उसकी मुस्कान होठों तक पहुँचने से पहले उसकी आँखों में बहुत ही प्यारी सी झलकती थी—और देखिए, मेरी बेहतरीन चित्रकारी में उसका चित्र बिल्कुल सजीव है!

और उसके स्वभाव के बारे में क्या? क्या इस मनमोहक महिला में कोई दोष नहीं थे? उसमें भी उतने ही दोष थे जितने आपमें हैं, महोदया—न अधिक न कम।

सच कहूँ तो, मेरी प्यारी और खूबसूरत मिस राहेल, जो अनेकों गुणों और आकर्षणों से परिपूर्ण थीं, उनमें एक कमी थी, जिसे निष्पक्षता से स्वीकार करना मेरे लिए अनिवार्य है। वह अपनी उम्र की अन्य लड़कियों से इस मामले में अलग थीं कि उनके अपने विचार थे और अगर फैशन उनके विचारों से मेल नहीं खाता था, तो वह उसे चुनौती देने में भी संकोच नहीं करती थीं। छोटी-मोटी बातों में उनकी यह स्वतंत्रता ठीक थी; लेकिन महत्वपूर्ण मामलों में, यह उन्हें (जैसा कि मेरी पत्नी और मैं दोनों ही मानते थे) हद से ज़्यादा आगे ले जाती थी। वह अपने फैसले खुद लेती थीं, जैसा कि उनसे दोगुनी उम्र की बहुत कम महिलाएं आमतौर पर लेती हैं; वह कभी सलाह नहीं मांगती थीं; वह क्या करने वाली हैं, यह पहले से नहीं बताती थीं; अपनी माँ से लेकर किसी से भी अपने राज़ या विश्वास की बातें साझा नहीं करती थीं। छोटी-बड़ी बातों में, जिनसे वह प्यार करती थीं और जिनसे नफरत करती थीं (और वह दोनों से समान रूप से नफरत करती थीं), मिस राहेल हमेशा अपने तरीके से चलती थीं, जो उनके जीवन के सुख-दुखों में उनके लिए पर्याप्त था। मैंने अपनी पत्नी को बार-बार यह कहते सुना है, "रेचल की सबसे अच्छी दोस्त और रेचल की सबसे बड़ी दुश्मन, दोनों ही हैं - रेचल खुद।"

इसमें एक और चीज जोड़ दें, और मेरा काम हो जाएगा।

अपनी सारी गोपनीयता और दृढ़ इच्छाशक्ति के बावजूद, उसमें ज़रा भी बनावटीपन नहीं था। मुझे याद नहीं कि उसने कभी अपना वचन तोड़ा हो; मुझे याद नहीं कि उसने

कभी ना कहा हो और उसका मतलब हां रहा हो। मुझे उसके बचपन के कई ऐसे मौके याद हैं जब उस प्यारी बच्ची ने अपने प्रिय सहपाठी की गलती का दोष अपने ऊपर ले लिया और सज़ा भुगती। जब यह बात सामने आई और उस पर आरोप लगाया गया, तो किसी ने भी उसे कबूल करते नहीं देखा। लेकिन किसी ने भी उसे कभी झूठ बोलते नहीं देखा। वह सीधे आपकी आंखों में देखती, अपना नन्हा सा सिर हिलाती और साफ-साफ कहती, "मैं तुम्हें नहीं बताऊंगी!" इस बात पर दोबारा सज़ा मिलने पर, वह "नहीं बताऊंगी" कहने के लिए खेद जताती; लेकिन रोटी-पानी मिलने के बावजूद, उसने कभी आपको नहीं बताया। दृढ़ इच्छाशक्ति वाली—कभी-कभी हद से ज़्यादा दृढ़ इच्छाशक्ति वाली—मैं मानती हूं; लेकिन फिर भी, वह इस दुनिया में चलने वाली सबसे बेहतरीन इंसान थी। शायद आपको इसमें कुछ विरोधाभास दिख रहा हो? अगर ऐसा है, तो एक बात और। अगले चौबीस घंटों तक अपनी पत्नी को ध्यान से परखें। अगर इस दौरान आपकी पत्नी में कोई विरोधाभास नज़र न आए, तो समझ लीजिए कि आपने एक राक्षस से शादी कर ली है।

अब मैंने आपको मिस राहेल से परिचित करा दिया है, जिससे अब हम उस युवती के वैवाहिक विचारों के प्रश्न का सामना करेंगे।

बारह जून को मेरी मालकिन ने लंदन के एक सज्जन को मिस राहेल का जन्मदिन मनाने में मदद करने के लिए निमंत्रण भेजा। यही वह भाग्यशाली व्यक्ति था जिस पर मुझे विश्वास था कि मिस राहेल का दिल आ गया था! श्री फ्रैंकलिन की तरह, वह भी उनके चचेरे भाई थे। उनका नाम श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट था।

मेरी पत्नी की दूसरी बहन (घबराइए मत; इस बार हम पारिवारिक मामलों में ज़्यादा गहराई से नहीं जा रहे हैं) - मेरी पत्नी की दूसरी बहन को प्रेम में निराशा हाथ लगी; और बाद में उन्होंने 'या तो शादी करो या कुछ नहीं' के सिद्धांत पर चलते हुए शादी कर ली, जिसे 'बेमेल विवाह' कहते हैं। परिवार में तब बहुत हंगामा हुआ जब माननीय कैरोलीन ने फ्रिज़िंगहॉल के बैंकर, साधारण श्री एबलव्हाइट से शादी करने पर ज़ोर दिया। वे बहुत अमीर और सम्मानित थे, और उनका एक बहुत बड़ा परिवार था - अब तक सब कुछ उनके पक्ष में था। लेकिन उन्होंने दुनिया में एक निचले स्तर से ऊपर उठने का साहस किया था - और यही उनके खिलाफ गया। हालांकि, समय और आधुनिक ज्ञान के विकास ने सब कुछ ठीक कर दिया; और यह बेमेल विवाह भी स्वीकार्य हो गया। हम सब अब उदार हो रहे हैं; और (अगर आप मुझे खरोंच सकते हैं, अगर मैं आपको खरोंचूँ) मुझे क्या फर्क पड़ता है, चाहे आप संसद के अंदर हों या बाहर, कि आप

सफाईकर्मी हैं या ड्यूक? यह इस विषय को देखने का आधुनिक तरीका है—और मैं आधुनिक तरीकों से ही चलता हूँ। एबलवाइट परिवार फ्रिज़िंगहॉल से कुछ दूर एक सुंदर घर और ज़मीन में रहता था। वे बहुत ही नेक लोग थे और आस-पड़ोस में उनका बहुत सम्मान था। इन पन्नों में हम उनके बारे में ज़्यादा बात नहीं करेंगे—सिवाय श्री गॉडफ्रे के, जो श्री एबलवाइट के दूसरे बेटे थे, और कृपया मिस राहेल के लिए उन्हें यहाँ उचित स्थान दिया जाना चाहिए।

अपनी तमाम बुद्धिमत्ता, चतुराई और सामान्य अच्छे गुणों के बावजूद, मेरी राय में, मिस्टर फ्रैंकलिन के लिए हमारी युवती की नजरों में मिस्टर गॉडफ्रे को पछाड़ देने की संभावना वास्तव में बहुत कम थी।

सबसे पहले तो, कद-काठी के लिहाज़ से श्री गॉडफ्रे दोनों में कहीं ज़्यादा सुंदर थे। उनकी लंबाई छह फीट से भी ज़्यादा थी; उनका रंग लाल-सफेद था; उनका चेहरा गोल और चिकना था, बिल्कुल साफ़-सुथरा; और उनके सिर पर सुनहरे लंबे बाल थे, जो लापरवाही से उनकी गर्दन पर गिरे हुए थे। लेकिन मैं आपको उनका यह व्यक्तिगत विवरण क्यों दे रहा हूँ? अगर आपने कभी लंदन में किसी महिला दान संस्था को चंदा दिया हो, तो आप श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट को उतना ही अच्छी तरह जानते होंगे जितना मैं। वे पेशे से वकील थे; स्वभाव से महिलाओं के चहेते थे; और अपनी मर्ज़ी से एक नेक इंसान थे। महिलाओं की भलाई और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने में उन्हें कोई कसर नहीं छोड़ सकता था। गरीब महिलाओं के लिए मातृ संस्थाएँ; गरीब महिलाओं को बचाने के लिए मैग्डेलन संस्थाएँ; गरीब महिलाओं को पुरुषों की जगह बिठाने और पुरुषों को उनके हाल पर छोड़ने वाली दृढ़ निश्चयी संस्थाएँ—वे इन सभी के उपाध्यक्ष, प्रबंधक और मध्यस्थ थे। जहां कहीं भी कोई मेज होती और उसके चारों ओर महिलाओं की समिति विचार-विमर्श कर रही होती, वहां श्री गॉडफ्रे मेज के निचले पायदान पर बैठे होते, समिति का माहौल संभाले रखते और हाथ में टोपी लिए उन सभी महिलाओं को व्यापार के पेचीदा रास्तों पर आगे बढ़ाते। मेरा मानना है कि वे इंग्लैंड के सबसे कुशल परोपकारी (एक छोटी सी स्वतंत्रता के साथ) थे। धर्मार्थ सभाओं में उनके जैसा वक्ता मिलना मुश्किल था, जो लोगों को रुला भी देता था और उनसे धन भी लेता था। वे एक प्रसिद्ध व्यक्तित्व थे। पिछली बार जब मैं लंदन में था, मेरी प्रेमिका ने मुझे दो उपहार दिए। उन्होंने मुझे थिएटर भेजा, एक मशहूर नर्तकी का नृत्य देखने के लिए; और उन्होंने मुझे एक्सेटर हॉल भेजा, श्री गॉडफ्रे का नृत्य सुनने के लिए। उस महिला ने संगीत बैंड के साथ नृत्य किया। उस सज्जन ने सिर्फ एक रुमाल और एक गिलास पानी

के साथ नृत्य किया। प्रदर्शन देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी, उनके नृत्य और उनकी जुबान दोनों पर। और इन सबके साथ, सबसे मधुर स्वभाव वाले व्यक्ति (मैं श्री गॉडफ्रे की बात कर रहा हूँ)—सबसे सरल, सबसे सुखद और सबसे आसानी से प्रसन्न होने वाले—जिनसे आप कभी मिले होंगे। वे सभी से प्रेम करते थे। और सभी उनसे प्रेम करते थे। श्री फ्रैंकलिन—औसत प्रतिष्ठा और क्षमता वाले किसी भी व्यक्ति—के पास ऐसे व्यक्ति के सामने क्या सफलता थी?

चौदह तारीख को श्री गॉडफ्रे का जवाब आया।

उन्होंने मेरी प्रेमिका का निमंत्रण स्वीकार कर लिया, जन्मदिन वाले बुधवार से शुक्रवार शाम तक—जब लेडीज़ चैरिटीज़ में अपने कर्तव्यों के कारण उन्हें वापस शहर लौटना पड़ा। उन्होंने अपनी चचेरी बहन के "जन्मदिन" पर लिखी कविताओं की एक प्रति भी भेजी, जिसे उन्होंने बड़े ही सलीके से "जन्मदिन" कहा था। मुझे बताया गया कि मिस राहेल ने मिस्टर फ्रैंकलिन के साथ मिलकर रात के खाने पर उन कविताओं का मज़ाक उड़ाया; और पेनेलोप, जो पूरी तरह से मिस्टर फ्रैंकलिन के पक्ष में थी, ने बड़े गर्व से मुझसे पूछा कि मैं इसके बारे में क्या सोचती हूँ। "मिस राहेल ने तुम्हें गुमराह कर दिया है, मेरी प्यारी," मैंने जवाब दिया; "लेकिन मेरी नाक इतनी आसानी से धोखा नहीं खाती। मिस्टर एबलव्हाइट की कविताओं के बाद खुद मिस्टर एबलव्हाइट के आने का इंतज़ार करो।"

मेरी बेटी ने जवाब दिया कि कवि के कविता पाठ से पहले श्री फ्रैंकलिन शायद बीच में आकर अपनी किस्मत आजमा लें। इस विचार के समर्थन में, मुझे यह स्वीकार करना होगा कि श्री फ्रैंकलिन ने मिस राहेल का दिल जीतने का कोई भी मौका नहीं छोड़ा।

हालाँकि वह मेरे अब तक के सबसे पक्के धूम्रपान करने वालों में से एक थे, फिर भी उन्होंने सिगार पीना छोड़ दिया, क्योंकि एक दिन उनकी पत्नी ने कहा कि उन्हें उनके कपड़ों में सिगार की बासी गंध से नफरत है। इस त्याग के प्रयास के बाद, उन्हें इतनी खराब नींद आई, क्योंकि उन्हें तंबाकू के उस सुकून भरे प्रभाव की कमी महसूस हो रही थी, जिसकी उन्हें आदत थी, और वे हर सुबह इतने थके-हारे और मुरझाए हुए दिखाई देते थे कि मिस राहेल ने खुद उनसे सिगार फिर से पीने की विनती की। नहीं! वे ऐसी किसी भी चीज़ को फिर से नहीं अपनाएंगे जो उन्हें एक पल की भी परेशानी दे सके; वे दृढ़ता से इसका विरोध करेंगे, और धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करके अपनी नींद वापस पा लेंगे। आप कह सकते हैं (जैसा कि नीचे के कुछ लोगों ने कहा), इस तरह की निष्ठा मिस राहेल पर हमेशा सही प्रभाव डालती थी - और दरवाजे पर हर दिन होने वाला

सजावट का काम भी इसका समर्थन करता था। सब ठीक था - लेकिन उनके शयनकक्ष में मिस्टर गॉडफ्रे की एक तस्वीर थी; एक सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए, उनके बाल उनकी वाक्पटुता की वजह से उड़ रहे थे, और उनकी बेहद खूबसूरत आँखें, जो आपकी जेब से पैसे निकलवाने को तैयार थीं। इस पर आपकी क्या राय है? हर सुबह—जैसा कि पेनेलोप ने खुद मुझे बताया—वह आदमी, जिसके बिना औरतें नहीं रह सकती थीं, वहाँ एक पुतले की तरह मौजूद रहता था, जब मिस राहेल अपने बाल संवार रही होती थीं। मेरा मानना था कि जल्द ही वह सचमुच में वहाँ मौजूद होगा। सोलह जून को एक ऐसी घटना घटी जिसने श्री फ्रैंकलिन के जीतने की संभावना को, मेरी राय में, पहले से भी बदतर बना दिया।

उस सुबह एक अजनबी सज्जन, जो विदेशी लहजे में अंग्रेज़ी बोलते थे, घर आए और श्री फ्रैंकलिन ब्लेक से व्यापारिक सिलसिले में मिलने को कहा। यह व्यापारिक संबंध हीरे से बिलकुल भी नहीं हो सकता था, इसके दो कारण थे—पहला, श्री फ्रैंकलिन ने मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया; दूसरा, उन्होंने (जैसा कि मुझे लगता है, उस सज्जन के जाने के बाद) मेरी पत्नी को इसके बारे में बताया। शायद उन्होंने अपनी बेटी से भी इसके बारे में कुछ कहा होगा। खैर, उस शाम पियानो बजाते समय मिस राहेल ने श्री फ्रैंकलिन से उनके साथ रहे लोगों और विदेशों में अपनाए गए सिद्धांतों के बारे में कुछ तीखी बातें कही थीं। अगले दिन, पहली बार, दरवाजे की सजावट के लिए कुछ भी नहीं किया गया। मुझे शक है कि महाद्वीप पर श्री फ्रैंकलिन की किसी नासमझी—चाहे वह किसी महिला से जुड़ी हो या किसी कर्ज से—का असर उन पर इंग्लैंड तक आ गया था। लेकिन यह सब सिर्फ अनुमान है। इस मामले में, न केवल श्री फ्रैंकलिन, बल्कि मेरी पत्नी ने भी, आश्चर्य की बात है, मुझे अंधेरे में रखा।

सत्रह तारीख को, ऐसा लग रहा था मानो सारी मुश्किलें दूर हो गई हों। वे दरवाज़े की सजावट के काम में वापस लग गईं और पहले की तरह ही अच्छी दोस्त बन गईं। अगर पेनेलोप की बात मानें तो, मिस्टर फ्रैंकलिन ने सुलह का फ़ायदा उठाकर मिस राहेल को शादी का प्रस्ताव रखा था, जिसे न तो स्वीकार किया गया और न ही अस्वीकार किया गया। मेरी बेटी को पूरा यकीन था (कुछ संकेतों और इशारों से, जिनके बारे में आपको बताने की ज़रूरत नहीं है) कि उसकी मालकिन ने मिस्टर फ्रैंकलिन को यह कहकर मना कर दिया था कि वह सच में शादी का प्रस्ताव नहीं रख रहे हैं, और बाद में उन्हें इस तरह का बर्ताव करने पर मन ही मन पछतावा हुआ था। हालाँकि पेनेलोप को अपनी मालकिन से आम नौकरानियों से ज़्यादा नज़दीकी थी—क्योंकि दोनों लगभग

बचपन से साथ पली-बढ़ी थीं—फिर भी मैं मिस राहेल के संकोची स्वभाव को अच्छी तरह जानती थी, इसलिए मुझे विश्वास नहीं था कि वह किसी के सामने इस तरह अपने मन की बात कहेंगी। मेरी बेटी ने उस समय जो कुछ भी मुझे बताया, जैसा कि मुझे शक था, वह उसकी इच्छा थी, न कि उसकी असलियत।

उन्नीस तारीख को एक और घटना घटी। हमारे घर में डॉक्टर पेशेवर काम से आए थे। उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के लिए दवा लिखने के लिए बुलाया गया था, जिसका जिक्र मैंने इन पन्नों में आपसे किया है - हमारी दूसरी घरेलू नौकरानी, रोसन्ना स्पीयरमैन।

यह बेचारी लड़की—जिसने मुझे, जैसा कि आप जानते ही हैं, शिवरिंग सैंड में उलझन में डाल दिया था—ने मुझे उस समय के दौरान एक से अधिक बार उलझन में डाल दिया, जिसके बारे में मैं अभी लिख रहा हूँ। पेनेलोप का यह विचार कि उसकी साथी नौकरानी मिस्टर फ्रैंकलिन से प्यार करती थी (जिसे मेरी बेटी ने मेरे आदेश पर पूरी तरह गुप्त रखा था) पहले की तरह ही बेतुका लग रहा था। लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि मैंने और मेरी बेटी ने हमारी दूसरी नौकरानी के व्यवहार को जिस तरह से देखा, वह कम से कम रहस्यमय तो लगने ही वाला था।

उदाहरण के लिए, वह लड़की लगातार मिस्टर फ्रैंकलिन के रास्ते में आती रहती थी—बहुत चालाकी और चुपके से, लेकिन वह ऐसा करती थी। वह उस पर उतना ही ध्यान देते थे जितना बिल्ली पर; उन्हें कभी रोसन्ना के सादे चेहरे पर एक नज़र डालने का ख्याल भी नहीं आता था। बेचारी की भूख, जो वैसे भी कम थी, अचानक बहुत कम हो गई; और सुबह उसकी आँखों में रात को जागने और रोने के स्पष्ट संकेत दिखाई देते थे। एक दिन पेनेलोप ने एक अजीब बात देखी, जिसे हमने तुरंत दबा दिया। उसने रोसन्ना को मिस्टर फ्रैंकलिन की ड्रेसिंग टेबल पर चुपके से एक गुलाब निकालते हुए पकड़ा, जो मिस राहेल ने उन्हें बटनहोल में लगाने के लिए दिया था, और उसकी जगह खुद तोड़ा हुआ वैसा ही दूसरा गुलाब रख रही थी। इसके बाद, जब मैंने उसे अच्छे इरादे से अपने व्यवहार में सावधानी बरतने की सामान्य सलाह दी, तो वह एक-दो बार मुझसे बदतमीजी से पेश आई; और इससे भी बुरा यह था कि अब वह उन कुछ मौकों पर भी ज्यादा सम्मान नहीं दिखाती थी जब गलती से मिस राहेल उससे बात कर लेती थीं।

मेरी पत्नी ने बदलाव देखा और मुझसे पूछा कि मैं इसके बारे में क्या सोचता हूँ। मैंने लड़की को यह कहकर टालने की कोशिश की कि मुझे लगता है कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है; और जैसा कि पहले बताया गया है, उन्नीस तारीख को डॉक्टर को बुलाया

गया। डॉक्टर ने कहा कि यह उसकी नसों की समस्या है और उन्हें संदेह था कि वह सेवा के लिए उपयुक्त है या नहीं। मेरी पत्नी ने उसे ताज़ी हवा के लिए हमारे एक खेत में, जो अंदरूनी इलाके में था, ले जाने का प्रस्ताव रखा। उसने आँखों में आँसू लिए गिड़गिड़ाते हुए प्रार्थना की कि उसे रोने दिया जाए; और उस बुरे समय में, मैंने मेरी पत्नी को सलाह दी कि उसे कुछ और समय तक आज़माएँ। जैसा कि बाद में साबित हुआ, और जैसा कि आप जल्द ही देखेंगे, यह मेरी सबसे बुरी सलाह थी। अगर मैं थोड़ा सा भी भविष्य देख पाता, तो मैं उसी समय, अपने हाथों से रोसन्ना स्पीयरमैन को घर से बाहर निकाल लेता।

बीस तारीख को श्री गॉडफ्रे का एक पत्र आया। उन्होंने उस रात फ्रिज़िंगहॉल में रुकने का इंतज़ाम किया था, क्योंकि उन्हें अपने पिता से व्यापारिक सलाह लेनी थी। अगले दिन दोपहर को वे और उनकी दो बड़ी बहनें घोड़े पर सवार होकर हमारे पास आ जाएँगे, भोजन से ठीक पहले। पत्र के साथ चीन का बना एक सुंदर छोटा डिब्बा भी था, जो मिस राहेल को उनकी चचेरी बहन के प्यार और शुभकामनाओं के साथ भेंट किया गया था। श्री फ्रैंकलिन ने उन्हें केवल एक साधारण लॉकेट दिया था, जिसकी कीमत आधी भी नहीं थी। फिर भी, मेरी बेटी पेनेलोप—महिलाओं का हठ ऐसा ही होता है—उन्हें जीतने के लिए समर्थन दे रही थी।

ईश्वर की कृपा से, हम अंततः जन्मदिन की पूर्व संध्या पर पहुँच गए! मुझे विश्वास है कि आप मानेंगे कि इस बार मैंने आपको सही राह पर पहुँचा दिया है, बिना ज्यादा समय बर्बाद किए। खुश हो जाइए! मैं यहाँ एक नए अध्याय से आपको तसल्ली दूंगा—और तो और, यह अध्याय आपको सीधे कहानी के मुख्य भाग में ले जाएगा।

अध्याय 9

जन्मदिन के दिन, 21 जून को सूर्योदय के समय आसमान में बादल छाए हुए थे और मौसम अस्थिर था, लेकिन दोपहर होते-होते मौसम साफ हो गया।

नौकरों के हॉल में, हमने हमेशा की तरह, मिस राहेल को अपने छोटे-छोटे उपहार देकर इस शुभ वर्षगांठ की शुरुआत की, और हर साल की तरह, मैंने अपना मुख्य भाषण दिया। मैं संसद के उद्घाटन के समय महारानी द्वारा अपनाई गई योजना का पालन करता हूँ—अर्थात, हर साल लगभग एक ही बात दोहराने की योजना। मेरे भाषण से पहले (महारानी के भाषण की तरह) लोग इतनी उत्सुकता से इंतज़ार करते हैं मानो पहले कभी ऐसा कुछ सुना ही न गया हो। जब भाषण दिया जाता है और उम्मीद के मुताबिक नयापन नहीं निकलता, तो भले ही वे थोड़ी शिकायत करें, लेकिन

अगले साल कुछ नया सुनने की उम्मीद में आशा से भर जाते हैं। संसद में और रसोई में, इन लोगों पर शासन करना आसान है—यही इसका सार है। नाश्ते के बाद, श्री फ्रैंकलिन और मैंने मूनस्टोन के विषय पर एक निजी बैठक की—अब समय आ गया था कि इसे फ्रिज़िंगहॉल के किनारे से हटाकर मिस राहेल को सौंप दिया जाए।

मुझे नहीं पता कि क्या वह अपनी चचेरी बहन से दोबारा प्रेम संबंध बनाने की कोशिश कर रहा था और उसे अस्वीकृति मिली थी—या फिर रात-रात भर उसकी नींद की कमी उसके चरित्र की विचित्र विरोधाभासों और अनिश्चितताओं को और बढ़ा रही थी। लेकिन यह निश्चित है कि जन्मदिन की सुबह श्री फ्रैंकलिन अपने सर्वोत्तम रूप में नहीं दिखे। हीरे के बारे में उनके विचार बीस-बीस मिनट में बदल गए। जहाँ तक मेरी बात है, मैं तथ्यों पर अडिग रही। ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था जिससे हमें हीरे के विषय में मेरी पत्नी को चिंतित करने का औचित्य हो; और श्री फ्रैंकलिन पर अब हीरे को अपनी चचेरी बहन के पास रखने का जो कानूनी दायित्व था, उसे कोई बदल नहीं सकता था। मामले के बारे में मेरा यही विचार था; और चाहे वह इसे कितना भी घुमा-फिराकर पेश करें, अंत में उन्हें भी यही मानना पड़ा। हमने तय किया कि वह दोपहर के भोजन के बाद फ्रिज़िंगहॉल जाएँगे और हीरे को वापस लाएँगे, संभवतः श्री गॉडफ्रे और दोनों युवतियाँ उनके साथ घर वापसी के रास्ते में रहेंगी।

यह सब तय हो जाने के बाद, हमारा युवक मिस राहेल के पास वापस चला गया।

उन्होंने पूरी सुबह और दोपहर का कुछ हिस्सा दरवाज़े को सजाने के अंतहीन काम में लगा दिया। पेनेलोप निर्देशानुसार रंग मिलाने के लिए पास खड़ी रही; और दोपहर के भोजन का समय नज़दीक आते ही, मेरी मालकिन अपने रूमाल से नाक ढककर (क्योंकि उस दिन उन्होंने श्री फ्रैंकलिन की गाड़ी का काफ़ी इस्तेमाल किया था) कमरे में आती-जाती रहीं और दोनों कलाकारों को उनके काम से हटाने की व्यर्थ कोशिश करती रहीं। तीन बज गए, तब जाकर उन्होंने अपने एप्रन उतारे, पेनेलोप को (गाड़ी के इस्तेमाल से काफ़ी थकी हुई) छोड़ा और खुद को अपनी गंदगी से साफ़ किया। लेकिन उन्होंने जो चाहा था, वह कर लिया था - उन्होंने जन्मदिन पर दरवाज़ा सजा दिया था और उन्हें इस पर पूरा गर्व था। ग्रिफिन, कामदेव आदि, मुझे मानना पड़ेगा, देखने में बेहद खूबसूरत थे; हालाँकि उनकी संख्या इतनी ज़्यादा थी, वे फूलों और आकृतियों में इतने उलझे हुए थे, और उनकी हरकतें और हाव-भाव इतने उलटे-पुल्टे थे कि उन्हें देखने का आनंद समाप्त होने के घंटों बाद भी वे आपके दिमाग में अप्रिय रूप से गूंजते रहते थे। अगर मैं यह कहूँ कि पेनेलोप ने सुबह का काम खत्म करने के बाद पीछे की

रसोई में उल्टी कर दी, तो इसका मतलब गाड़ी के प्रति कोई दुर्भावना नहीं है। बिलकुल नहीं! सूखने के बाद भी उसमें से बदबू आ रही थी; और अगर कला को इस तरह के बलिदानों की ज़रूरत है—भले ही वह लड़की मेरी अपनी बेटी है—तो मैं कहती हूँ, कला को ये बलिदान करने दो!

श्री फ्रैंकलिन ने दोपहर के भोजन की मेज से एक टुकड़ा उठाया और फ्रिज़िंगहॉल के लिए रवाना हो गए—जैसा कि उन्होंने मेरी पत्नी को बताया, अपने चचेरे भाइयों को छोड़ने के लिए। और जैसा कि उन्हें और मुझे निजी तौर पर पता था, मूनस्टोन लाने के लिए।

यह उन खास त्योहारों में से एक था, जिनमें से एक पर मैं मेज पर सेवा की ज़िम्मेदारी संभालते हुए साइडबोर्ड पर बैठा था। श्री फ्रैंकलिन की अनुपस्थिति में मेरे पास सोचने-समझने के लिए बहुत कुछ था। शराब का इंतज़ाम करने और भोजन के समय सेवा करने वाले अपने कर्मचारियों की समीक्षा करने के बाद, मैं मेहमानों के आने से पहले खुद को तरोताज़ा करने के लिए एकांत में चला गया। एक हल्की सी गंध—आप जानते हैं क्या—और एक किताब पर एक नज़र, जिसका ज़िक्र मैंने इन पन्नों में किया है, ने मुझे तन-मन से शांत कर दिया। बाहर घोड़ों के खुरों की आवाज़ से मेरी नींद खुली, जो मुझे लगता है कि झपकी नहीं, बल्कि एक गहरी सोच थी। दरवाज़े पर जाकर मैंने श्री फ्रैंकलिन और उनके तीन चचेरे भाइयों का एक काफिला देखा, जिनके साथ श्री एबलव्हाइट के एक नौकर भी थे।

श्री गॉडफ्रे मुझे इस मामले में श्री फ्रैंकलिन के समान प्रतीत हुए—कि वे अपने सामान्य उत्साह में नहीं थे। उन्होंने हमेशा की तरह विनम्रतापूर्वक मुझसे हाथ मिलाया और अपने पुराने मित्र बेटरएज को इतना स्वस्थ देखकर अत्यंत प्रसन्न हुए। लेकिन उन पर एक उदासी छाई हुई थी, जिसका कारण मैं समझ नहीं पा रहा था; और जब मैंने उनसे पूछा कि उनके पिता का स्वास्थ्य कैसा है, तो उन्होंने संक्षिप्त उत्तर दिया, "लगभग पहले जैसा ही।" हालांकि, दोनों मिस एबलवाइट्स बीस वर्ष की आयु के बावजूद काफी हंसमुख थीं, जिससे मन को शांति मिली। वे लगभग अपने भाई जितनी ही लंबी थीं; सुंदर, सुनहरे बालों वाली, गुलाबी रंग की युवतियाँ, भरपूर मांस और रक्त से लबालब; सिर से पैर तक स्वास्थ्य और उत्साह से भरी हुई। बेचारे घोड़ों के पैर उन्हें ढोने से कांप रहे थे; और जब वे अपनी काठी से कूदीं (बिना किसी की मदद का इंतजार किए), तो मैं कसम खाता हूँ कि वे जमीन पर ऐसे उछलीं जैसे रबर की बनी हों। मिस एबलवाइट्स की हर बात एक बड़े 'ओ' से शुरू होती थी; वे जो भी करते थे,

पूरे जोश के साथ करते थे; और छोटी-छोटी बातों पर भी वे खिलखिलाकर हंसते और चिल्लाते थे, चाहे मौसम कैसा भी हो। मैं उन्हें बाउंसर कहता हूँ।
युवतियों के शोर की आड़ में, मुझे हॉल में श्री फ्रैंकलिन से कुछ निजी बातें करने का अवसर मिला।
"क्या आपने हीरे को सुरक्षित रख लिया है, महोदय?"
उसने सिर हिलाया और अपने कोट की जेब पर थपथपाया।
"क्या आपने भारतीयों के बारे में कुछ देखा है?"
"बिल्कुल नहीं।" इतना कहकर उन्होंने मेरी पत्नी के बारे में पूछा और जब उन्हें पता चला कि वह छोटे से ड्राइंग रूम में हैं, तो वे सीधे वहीं चले गए। कमरे में पहुंचे अभी एक मिनट भी नहीं बीता था कि घंटी बज उठी और पेनेलोप को मिस राहेल को यह बताने के लिए भेजा गया कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक उनसे बात करना चाहते हैं।
लगभग आधे घंटे बाद, जब मैं हॉल पार कर रहा था, तो छोटे से ड्राइंग रूम से चीखों की तेज़ आवाज़ सुनकर मैं एकदम रुक गया। मैं यह तो नहीं कह सकता कि मैं बिल्कुल भी घबराया था; क्योंकि चीखों में मुझे मिस एबलवाइट्स का पसंदीदा बड़ा 'ओ' अक्षर पहचान में आ गया था। फिर भी, मैं (रात के खाने के बारे में निर्देश लेने के बहाने) यह पता लगाने के लिए अंदर गया कि क्या सच में कुछ गंभीर हुआ था।
मेज पर मिस राहेल ऐसे खड़ी थीं मानो किसी सम्मोहित व्यक्ति हों, उनके हाथ में कर्नल का मनहूस हीरा था। उनके दोनों ओर दो बाउंसर घुटनों के बल बैठे थे, अपनी आँखों से उस हीरे को निहार रहे थे और हर बार जब वह चमकता तो खुशी से चिल्ला उठते थे। मेज के दूसरी ओर मिस्टर गॉडफ्रे खड़े थे, एक बड़े बच्चे की तरह ताली बजाते हुए और धीरे से गाते हुए, "अति सुंदर! अति सुंदर!" किताबों की अलमारी के पास एक कुर्सी पर मिस्टर फ्रैंकलिन बैठे थे, अपनी दाढ़ी सहलाते हुए और खिड़की की ओर चिंतित होकर देख रहे थे। और खिड़की पर वही खड़ी थीं जिस पर उनकी नजर थी - मेरी पत्नी, जिनके हाथ में कर्नल की वसीयत का अंश था और उन्होंने सभी लोगों से मुंह फेर रखा था।
जब मैंने उससे निर्देश मांगे तो उसने मेरी ओर देखा; और मैंने उसकी आँखों में पारिवारिक शिकन और होठों के कोनों पर पारिवारिक क्रोध की झलक देखी।
"आधे घंटे में मेरे कमरे में आ जाना," उसने जवाब दिया। "तब मुझे तुमसे कुछ कहना होगा।"

ये शब्द कहकर वह चली गई। यह स्पष्ट था कि वह उसी दुविधा में फंसी हुई थी, जिसने श्री फ्रैंकलिन और मुझे शिवरिंग सैंड में हुई हमारी बैठक में उलझाया था। क्या मूनस्टोन की विरासत इस बात का प्रमाण थी कि उसने अपने भाई के साथ क्रूर अन्याय किया था? या यह इस बात का प्रमाण था कि वह उससे भी कहीं बुरा था जितना उसने कभी उसके बारे में सोचा था? ये गंभीर प्रश्न थे जिनका निर्णय मेरी पत्नी को करना था, जबकि उसकी बेटी, कर्नल के चरित्र के बारे में कुछ भी न जानते हुए, कर्नल के जन्मदिन का उपहार हाथ में लिए वहीं खड़ी थी।

इससे पहले कि मैं कमरे से बाहर निकल पाता, मिस राहेल, जो हमेशा उस बूढ़ी नौकरानी के प्रति दयालु थीं जो उनके जन्म के समय से ही घर में थी, ने मुझे रोक दिया। "देखो, गैब्रियल!" उन्होंने कहा और खिड़की से आती सूरज की रोशनी में वह गहना मेरी आँखों के सामने चमका दिया।

हे भगवान! यह सचमुच एक हीरा था! इतना बड़ा, या लगभग उतना ही जितना एक चिड़िया का अंडा! इससे निकलने वाली रोशनी पूर्णिमा के चांद की रोशनी जैसी थी। जब आप पत्थर के भीतर देखते, तो ऐसा लगता मानो आप एक ऐसे पीले गहरे अंधकार में डूब गए हों जो आपकी आंखों को अपनी ओर खींच लेता था और आपको कुछ और दिखाई नहीं देता था। यह अथाह प्रतीत होता था; यह रत्न, जिसे आप अपनी उंगली और अंगूठे के बीच पकड़ सकते थे, आकाश के समान अथाह प्रतीत होता था। हमने इसे धूप में रखा, फिर कमरे की रोशनी बंद कर दी, और यह अपनी ही चमक की गहराई से, चांद जैसी आभा के साथ, अंधेरे में भयानक रूप से चमक रहा था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि मिस राहेल मोहित हो गईं: इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि उनके चचेरे भाई चीख पड़े। हीरे ने मुझ पर ऐसा प्रभाव डाला कि मैं बाउंसरों की तरह ही ज़ोर से चिल्ला उठा। हममें से केवल श्री गॉडफ्रे ही होश में रहे। उसने अपनी दोनों बहनों की कमर में हाथ डाला और डायमंड और मेरी ओर करुणा भरी निगाहों से देखते हुए कहा, "कार्बन बेटरएज! आखिर यह सिर्फ कार्बन ही तो है, मेरे प्यारे दोस्त!"

मुझे लगता है उनका मकसद मुझे सिखाना था। लेकिन उन्होंने बस मुझे खाने की याद दिला दी। मैं लड़खड़ाते हुए नीचे अपने वेटरों के दल के पास चला गया। बाहर आते ही मिस्टर गॉडफ्रे ने कहा, "प्यारे बेटरएज, मैं उनका दिल से सम्मान करता हूँ!" वे अपनी बहनों को गले लगा रहे थे और मिस राहेल को निहार रहे थे, और साथ ही मुझे स्नेह का यह संदेश दे रहे थे। मानो प्यार का भंडार हो! उनकी तुलना में मिस्टर फ्रैंकलिन तो बिलकुल जंगली थे।

आधे घंटे के अंत में, मैंने निर्देशानुसार अपनी पत्नी के कमरे में स्वयं को प्रस्तुत किया। इस अवसर पर मेरी मालकिन और मेरे बीच जो कुछ भी हुआ, वह मोटे तौर पर वही था जो श्री फ्रैंकलिन और मेरे बीच शिवरिंग सैंड में हुआ था - फर्क सिर्फ इतना था कि मैंने बाज़ीगरों के बारे में चुप रहना ही उचित समझा, क्योंकि ऐसा कुछ भी नहीं हुआ था जिससे इस मामले में मेरी मालकिन को डराने का कोई औचित्य हो। जब मुझे छुट्टी का पत्र मिला, तो मैंने देखा कि वह कर्नल के इरादों को लेकर बेहद नकारात्मक सोच रखती थीं और पहले अवसर पर ही अपनी बेटी से मूनस्टोन छीनने पर तुली हुई थीं।

घर के अपने हिस्से में लौटते समय मेरी मुलाकात मिस्टर फ्रैंकलिन से हुई। वे जानना चाहते थे कि क्या मैंने उनकी चचेरी बहन राहेल को कहीं देखा है। मैंने उसे कहीं नहीं देखा था। क्या मैं उन्हें बता सकता हूँ कि उनका चचेरा भाई गॉडफ्रे कहाँ है? मुझे नहीं पता था; लेकिन मुझे शक होने लगा कि चचेरा भाई गॉडफ्रे शायद राहेल से ज़्यादा दूर नहीं है। मिस्टर फ्रैंकलिन का शक भी शायद इसी ओर मुड़ गया। उन्होंने अपनी दाढ़ी को ज़ोर से खींचा और जाकर लाइब्रेरी में दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर लिया, जिसमें एक गहरा अर्थ छिपा था।

जन्मदिन के खाने की तैयारी में मैं तब तक व्यस्त रहा जब तक मेहमानों के स्वागत के लिए तैयार होने का समय नहीं आ गया। जैसे ही मैंने अपनी सफेद जैकेट पहनी, पेनेलोप मेरे पास आ गई। उसने बहाना बनाया कि वह मेरे बचे-खुचे बालों में कंघी कर रही है और मेरी सफेद टाई को ठीक कर रही है। मेरी बेटी बहुत खुश थी और मैंने समझ लिया कि वह मुझसे कुछ कहना चाहती है। उसने मेरे गंजे सिर पर एक चुंबन दिया और फुसफुसाते हुए कहा, "पिताजी, आपके लिए एक खबर है! मिस राहेल ने उसे ठुकरा दिया है।"

मैंने पूछा, "वह कौन है?"

"पिताजी, महिलाओं की समिति का सदस्य," पेनेलोप कहती है। "एक नीच और धूर्त आदमी! मैं उससे नफरत करती हूँ क्योंकि वह मिस्टर फ्रैंकलिन को हटाने की कोशिश कर रहा है!"

अगर मुझमें सांस लेने की शक्ति होती, तो मैं एक प्रतिष्ठित परोपकारी व्यक्ति के बारे में इस तरह की अभद्र टिप्पणी का अवश्य विरोध करता। लेकिन उस समय मेरी बेटी मेरी टाई ठीक कर रही थी, और उसके सारे भाव उसकी उंगलियों में समा गए। मैं अपने जीवन में कभी इतना घुटन महसूस नहीं किया था।

"मैंने उसे अकेले गुलाब के बगीचे में ले जाते देखा," पेनेलोप कहती है। "और मैं होली के पेड़ के पीछे इंतज़ार कर रही थी कि वे कैसे लौटते हैं। वे हाथ में हाथ डाले, हँसते हुए बाहर गए थे। वे वापस आए, अलग-अलग चलते हुए, एकदम गंभीर, और एक-दूसरे से नज़रें चुराते हुए, जिसे समझना नामुमकिन नहीं था। पिताजी, मैं अपनी ज़िंदगी में कभी इतनी खुश नहीं हुई थी! दुनिया में एक औरत तो है जो मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट का विरोध कर सकती है; और अगर मैं एक महिला होती, तो मैं भी उनमें से एक होती!"

मुझे यहाँ फिर से विरोध करना चाहिए था। लेकिन तब तक मेरी बेटी ने बाल कंघी ले ली थी, और उसकी सारी भावनाएँ उसी में समा गई थीं। अगर आप गंजे हैं, तो आप समझ सकते हैं कि उसने मुझे कैसे कुर्बान कर दिया। अगर आप गंजे नहीं हैं, तो इस हिस्से को छोड़ दें, और शुक्र मनाएँ कि आपके पास बाल कंघी और आपके सिर के बीच बचाव के लिए कुछ तो है।

"हॉली के उस पार ही," पेनेलोप आगे बोली, "मिस्टर गॉडफ्रे अचानक रुक गए। 'क्या आप चाहती हैं कि मैं यहाँ ऐसे ही रुक जाऊँ जैसे कुछ हुआ ही न हो?' मिस राहेल बिजली की तरह उन पर झपटी। 'आपने मेरी माँ का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है,' उन्होंने कहा; 'और आप उनके मेहमानों से मिलने आए हैं। अगर आप घर में हंगामा नहीं करना चाहते, तो आप यहीं रहेंगे, बिल्कुल!' वह कुछ कदम चलीं, और फिर थोड़ी नरम पड़ गईं। 'चलो जो हुआ उसे भूल जाते हैं, गॉडफ्रे,' उन्होंने कहा, 'और चचेरे भाई-बहन बने रहते हैं।' उन्होंने उन्हें अपना हाथ दिया। उन्होंने उसका हाथ चूमा, जिसे मैं एक तरह की गुस्ताखी समझती, और फिर वह उन्हें छोड़कर चली गईं। वह थोड़ी देर अकेले सिर झुकाए खड़े रहे, और उनकी एड़ी धीरे-धीरे बजरी वाले रास्ते में गड्ढा बना रही थी; आपने जीवन में कभी किसी आदमी को इतना परेशान नहीं देखा होगा। 'अजीब!' उन्होंने दाँतों के बीच से कहा, जब उन्होंने ऊपर देखा, और घर की ओर चल दिए - 'बहुत अजीब!' अगर यही उसकी खुद के बारे में राय थी, तो वो बिल्कुल सही था। मुझे यकीन है, काफी अजीब था। और अंत में, पिताजी, वही बात है जो मैंने आपको हमेशा से कही है," पेनेलोप चिल्लाती है, और मुझे आखिरी बार सबसे तीखे निशान से खत्म कर देती है। "मिस्टर फ्रैंकलिन ही असली आदमी हैं!"

मैंने बाल कंघी उठाई और अपनी बेटी की भाषा और व्यवहार के लिए उसे फटकार लगाने के लिए अपने होंठ खोले, जो कि आप मानेंगे कि उसकी फटकार उचित ही थी।

इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, बाहर गाड़ियों के पहियों की तेज़ आवाज़ ने मुझे रोक दिया। खाने के लिए आए मेहमानों में से पहला व्यक्ति आ चुका था। पेनेलोप तुरंत भाग गई। मैंने अपना कोट पहना और शीशे में देखा। मेरा चेहरा झींगा मछली की तरह लाल हो गया था; लेकिन बाकी सब मामलों में, मैं शाम के समारोहों के लिए जितना अच्छा कपड़े पहने होना चाहिए था, उतना ही अच्छे से तैयार था। मैं हॉल में ठीक समय पर पहुँचा और पहले दो मेहमानों के नाम की घोषणा की। आपको उनमें विशेष रुचि लेने की ज़रूरत नहीं है। वे तो परोपकारी व्यक्ति के पिता और माता हैं—श्रीमान और श्रीमती एबलव्हाइट।

अध्याय X

एक के ऊपर एक, बाकी सभी लोग एबलवाइट्स के पीछे-पीछे चलते रहे, जब तक कि हमें उनकी पूरी सूची नहीं मिल गई। परिवार सहित, वे कुल चौबीस लोग थे। यह एक भव्य दृश्य था, जब वे भोजन की मेज के चारों ओर अपनी-अपनी जगहों पर बैठ गए, और फ्रिज़िंगहॉल के रेक्टर (सुंदर वाक्पटुता के साथ) उठे और प्रार्थना की।

आपको मेहमानों की सूची से परेशान होने की कोई ज़रूरत नहीं है। आप उनमें से किसी से भी दोबारा नहीं मिलेंगे—कम से कम मेरी कहानी के अनुसार—दो को छोड़कर।

वे दोनों मिस राहेल के दोनों ओर बैठे थे, जो उस दिन की रानी होने के नाते स्वाभाविक रूप से पार्टी का मुख्य आकर्षण थीं। इस अवसर पर वे विशेष रूप से सबकी निगाहों का केंद्र थीं; क्योंकि (मेरी लेडी की दबी हुई झुंझलाहट के बावजूद) उन्होंने अपना अद्भुत जन्मदिन का उपहार पहना हुआ था, जिसने बाकी सभी उपहारों को फीका कर दिया था - मूनस्टोन। जब इसे उनके हाथों में रखा गया था तब इसमें कोई जड़ा हुआ नहीं था; लेकिन उस विलक्षण प्रतिभा के धनी श्री फ्रैंकलिन ने अपनी कुशल उंगलियों और थोड़े से चांदी के तार की मदद से इसे उनकी सफेद पोशाक के सीने पर ब्रोच की तरह लगा दिया था। स्वाभाविक रूप से, हर कोई हीरे के विशाल आकार और सुंदरता को देखकर आश्चर्यचकित था। लेकिन कंपनी में केवल दो ही ऐसे अतिथि थे जिन्होंने इस बारे में कुछ अलग कहा, वे वही दो अतिथि थे जिनका मैंने उल्लेख किया है, जो मिस राहेल के दाहिनी और बाईं ओर बैठे थे।

उनके बाईं ओर बैठे अतिथि श्री कैंडी थे, जो फ्रिज़िंगहॉल में हमारे डॉक्टर हैं।

वह एक मिलनसार और हंसमुख छोटा आदमी था, लेकिन मुझे यह स्वीकार करना होगा कि उसमें एक कमी थी - वह हर हाल में मज़ाक करने का शौकीन था और

अजनबियों से बिना सोचे-समझे, जल्दबाजी में बातचीत शुरू कर देता था। समाज में वह अक्सर गलतियाँ करता था और अनजाने में लोगों को झकझोर देता था। अपने चिकित्सा पेशे में वह अधिक विवेकशील था; (जैसा कि उसके दुश्मन कहते थे) वह अपनी सूझबूझ से काम लेता था और जहाँ अधिक सावधानी से काम करने वाले डॉक्टर गलत साबित होते थे, वहाँ वह अक्सर सही साबित होता था।

उन्होंने मिस राहेल से हीरे के बारे में जो कुछ कहा, वह हमेशा की तरह रहस्यमय या मज़ाक के अंदाज़ में कहा। उन्होंने (विज्ञान के हित में) उनसे गंभीरतापूर्वक विनती की कि उन्हें हीरा घर ले जाकर जलाने दें। डॉक्टर ने कहा, "मिस राहेल, हम पहले इसे इतने तापमान तक गर्म करेंगे; फिर इसे हवा के झोंके के संपर्क में लाएंगे; और धीरे-धीरे—पफ!—हीरा वाष्पित हो जाएगा, और आपको एक कीमती पत्थर की सुरक्षा को लेकर होने वाली चिंता से मुक्ति मिल जाएगी!" मेरी लेडी, चेहरे पर थोड़ी चिंता लिए सुन रही थीं, मानो वह चाहती हों कि डॉक्टर सच में गंभीर हों, और मिस राहेल विज्ञान के प्रति इतनी उत्साही हों कि अपने जन्मदिन के उपहार का त्याग कर दें।

मेरी युवती के दाहिनी ओर बैठे दूसरे अतिथि एक प्रतिष्ठित सार्वजनिक हस्ती थे - वे कोई और नहीं बल्कि प्रसिद्ध भारतीय यात्री श्री मुर्थवेट थे, जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर भेष बदलकर उस स्थान पर प्रवेश किया था जहां पहले कभी कोई यूरोपीय नहीं पहुंचा था।

वह एक लंबा, दुबला-पतला, चुस्त-दुरुस्त, सांवला और शांत स्वभाव का आदमी था। उसके चेहरे पर थकावट झलक रही थी और उसकी आँखें बेहद स्थिर और चौकस थीं। अफवाह थी कि वह हमारे इलाके के लोगों के बीच नीरस जीवन से ऊब चुका था और पूरब के जंगली इलाकों में वापस जाकर फिर से आवारागर्दी करने के लिए तरस रहा था। मिस राहेल से उसके गहने के बारे में जो कुछ उसने कहा, उसके अलावा मुझे शक है कि उसने पूरे खाने के दौरान छह शब्द भी बोले होंगे या एक गिलास शराब भी पी होगी। मूनस्टोन ही एकमात्र ऐसी वस्तु थी जिसमें उसकी थोड़ी सी भी दिलचस्पी थी। ऐसा लगता था कि उसकी प्रसिद्धि उन खतरनाक भारतीय इलाकों में भी उस तक पहुँच चुकी थी जहाँ वह भटकता रहा था। इतने लंबे समय तक चुपचाप देखते रहने के बाद कि मिस राहेल उलझन में पड़ गईं, उन्होंने अपने शांत और अटल अंदाज़ में उनसे कहा, "अगर आप कभी भारत जाएं, मिस वेरिंदर, तो अपने चाचा का जन्मदिन का उपहार अपने साथ मत ले जाना। हिंदू हीरा कभी-कभी हिंदू धर्म का हिस्सा होता है। मैं एक शहर और उस शहर में एक मंदिर जानता हूँ, जहाँ, आपके वर्तमान पहनावे में,

आपकी जान पाँच मिनट के लिए भी कीमती नहीं होगी।" इंग्लैंड में सुरक्षित मिस राहेल भारत में अपने खतरे के बारे में सुनकर बहुत खुश हुईं। बाउंसर तो और भी ज़्यादा खुश हुए; उन्होंने अपने चाकू और कांटे धड़ाम से गिरा दिए और एक साथ ज़ोर से चिल्लाए, "ओह! कितना दिलचस्प!" मेरी मालकिन अपनी कुर्सी पर बेचैन हो गईं और उन्होंने विषय बदल दिया।

जैसे-जैसे भोजन आगे बढ़ा, मुझे धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा कि यह उत्सव अन्य समान उत्सवों की तरह फल-फूल नहीं रहा था।

अब जन्मदिन के उस पल को याद करते हुए, और बाद में जो कुछ हुआ, उसे देखते हुए, मुझे आधा यकीन होता है कि उस मनहूस डायमंड ने पूरे समूह पर बुरा असर डाला होगा। मैंने उन्हें खूब शराब पिलाई; और एक खास शख्स होने के नाते, मैं मेज पर अलोकप्रिय पकवानों के पीछे-पीछे घूमता रहा, और धीरे से सबसे कहता रहा, "कृपया अपना मन बदल लें और इसे चखें; मुझे पता है यह आपको अच्छा लगेगा।" दस में से नौ बार उन्होंने अपना मन बदल लिया—वे अपने पुराने पसंदीदा बेटरएज के प्रति सम्मान के कारण ऐसा कहते रहे—लेकिन सब व्यर्थ। जैसे-जैसे खाना चलता रहा, बातचीत में बीच-बीच में चुप्पी छा जाती रही, जिससे मुझे व्यक्तिगत रूप से असहज महसूस हुआ। जब उन्होंने फिर से बोलना शुरू किया, तो मासूमियत से, लेकिन बेहद दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से और सबसे बुरे मकसद से। उदाहरण के लिए, डॉक्टर मिस्टर कैंडी ने इतनी बुरी बातें कह दीं जितनी मैंने उन्हें पहले कभी कहते नहीं सुना था। उनके बोलने के तरीके का एक उदाहरण ही ले लीजिए, और आप समझ जाएंगे कि मुझे साइडबोर्ड पर क्या-क्या सहना पड़ा, क्योंकि मैं एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभा रहा था जिसके दिल में उत्सव की सफलता की प्रबल इच्छा थी।

हमारे रात्रिभोज में उपस्थित महिलाओं में से एक थीं आदरणीय श्रीमती थ्रेडगैल, जो दिवंगत प्रोफेसर की विधवा थीं। अपने दिवंगत पति के बारे में लगातार बात करती रहने वाली यह महिला अजनबियों से कभी यह नहीं कहती थीं कि उनका निधन हो चुका है। शायद वह सोचती थीं कि इंग्लैंड के हर स्वस्थ वयस्क को इतना तो पता होना ही चाहिए। मौन के एक क्षण में, किसी ने मानव शरीर रचना विज्ञान के नीरस और कुछ हद तक अरुचिकर विषय का उल्लेख किया; जिस पर आदरणीय श्रीमती थ्रेडगैल ने हमेशा की तरह अपने दिवंगत पति का जिक्र किया, बिना यह बताए कि उनका निधन हो चुका है। उन्होंने बताया कि प्रोफेसर अपने खाली समय में शरीर रचना विज्ञान का अध्ययन करना पसंद करते थे। दुर्भाग्य से, सामने बैठे श्री कैंडी (जो दिवंगत सज्जन के

बारे में कुछ नहीं जानते थे) ने उनकी बातें सुन लीं। अत्यंत विनम्र स्वभाव के होने के कारण, उन्होंने प्रोफेसर के शरीर रचना विज्ञान संबंधी इस विषय में तुरंत शामिल होने का अवसर लपक लिया।

"हाल ही में सर्जन कॉलेज में कुछ बेहद शानदार कंकाल मिले हैं," श्री कैंडी ने मेज के उस पार बैठे हुए, ऊँची और हंसमुख आवाज़ में कहा। "मैडम, मैं प्रोफेसर को पुरजोर सलाह देता हूँ कि जब भी उन्हें एक घंटा खाली समय मिले, वे वहाँ अवश्य जाएँ।"

सन्नाटा पसरा हुआ था। प्रोफेसर की स्मृति में सम्मान के कारण सभी लोग मौन बैठे थे। उस समय मैं श्रीमती थ्रेडगैल के पीछे था और उन्हें चुपके से हॉक मछली का गिलास पिला रहा था। उन्होंने अपना सिर झुकाया और बहुत धीमी आवाज़ में कहा, "मेरे प्रिय पति अब हमारे बीच नहीं रहे।"

दुर्भाग्यवश, मिस्टर कैंडी ने कुछ भी नहीं सुना और सच्चाई पर शक करने से कोसों दूर, वे पहले से कहीं अधिक जोर से और विनम्रता से मेज के उस पार अपनी बात कहते रहे।

उन्होंने कहा, "प्रोफेसर को शायद इस बात की जानकारी न हो कि कॉलेज के किसी सदस्य का कार्ड उन्हें रविवार को छोड़कर किसी भी दिन सुबह दस बजे से शाम चार बजे के बीच प्रवेश करने की अनुमति देगा।"

श्रीमती थ्रेडगैल ने अपना सिर अपने भोजन में झुका लिया और उससे भी धीमी आवाज में गंभीर शब्दों को दोहराया, "मेरे प्यारे पति अब इस दुनिया में नहीं रहे।"

मैंने मेज के उस पार बैठे मिस्टर कैंडी को आँख मारी। मिस राहेल ने उनके हाथ को छुआ। मेरी पत्नी ने उन्हें घूर-घूर कर देखा। बिलकुल बेकार! वह अपनी बात जारी रखते रहे, उनकी गर्मजोशी का कोई ठिकाना नहीं था। उन्होंने कहा, "अगर आप कृपया प्रोफेसर का वर्तमान पता बता दें, तो मुझे उन्हें अपना कार्ड भेजने में बहुत खुशी होगी।"

"महोदय, उनका वर्तमान पता कब्र है," श्रीमती थ्रेडगैल ने अचानक अपना आपा खोते हुए और इतने ज़ोर से और गुस्से में बोलते हुए कहा कि गिलास फिर से बज उठे। "प्रोफेसर को मरे हुए दस साल हो गए हैं।"

"हे भगवान!" श्री कैंडी ने कहा। बाउंसरों को छोड़कर, जो खिलखिलाकर हंस पड़े, बाकी सभी पर ऐसा सन्नाटा छा गया मानो वे सब प्रोफेसर की ही राह पर चल रहे हों और कब्र की ओर से उन्हें पुकार रहे हों।

मिस्टर कैंडी के बारे में बस इतना ही। बाकी सब भी अपने-अपने तरीके से डॉक्टर की तरह ही उकसाने वाले थे। जब उन्हें बोलना चाहिए था, तब वे नहीं बोले; या जब बोले भी तो उनकी बातें हमेशा एक-दूसरे से टकराती रहीं। मिस्टर गॉडफ्रे, हालांकि सार्वजनिक रूप से बहुत वाक्पटु थे, निजी तौर पर बोलने से कतराते थे। गुलाब के बगीचे में हुई हार के बाद वे नाराज़ थे या शर्मीले, यह मैं नहीं कह सकता। वे अपनी सारी बातें अपने बगल में बैठी महिला (हमारे परिवार की एक सदस्य) से ही करते थे। वे उनकी समिति की सदस्य थीं - एक आध्यात्मिक स्वभाव की महिला, जिनकी कॉलरबोन बहुत आकर्षक थी और जिन्हें शैम्पेन का अच्छा शौक था; उन्हें सूखी शैम्पेन पसंद थी, आप समझ रहे हैं ना, और वह भी भरपूर मात्रा में। साइडबोर्ड पर इन दोनों के ठीक पीछे होने के कारण, मैं उनके बीच हुई बातचीत से गवाही दे सकता हूँ कि लोगों ने बहुत सी ज्ञानवर्धक बातचीत खो दी, जो मैंने कॉर्क निकालते, मटन काटते आदि के दौरान सुनी। उन्होंने अपने दान-पुण्य के बारे में क्या कहा, यह मैं नहीं सुन पाया। जब मुझे उन्हें सुनने का समय मिला, तब तक वे कैद की जाने वाली महिलाओं और बचाई जाने वाली महिलाओं के विषय से बहुत आगे निकल चुके थे और गंभीर मुद्दों पर बहस कर रहे थे। धर्म (मुझे लगता है कि श्री गॉडफ्रे ने कॉर्क और नक्काशी के बीच कहा) का अर्थ प्रेम था। और प्रेम का अर्थ धर्म था। और पृथ्वी स्वर्ग थी, जो थोड़ी जर्जर हो गई थी। और स्वर्ग पृथ्वी थी, जिसे फिर से नया जैसा बना दिया गया था। पृथ्वी पर कुछ बहुत ही अप्रिय लोग थे; लेकिन, इसकी भरपाई के लिए, स्वर्ग की सभी महिलाएं एक विशाल समिति की सदस्य होंगी जो कभी झगड़ा नहीं करेंगी, और सभी पुरुष उनकी सेवा में देवदूतों की तरह मौजूद रहेंगे। कितना सुंदर! कितना सुंदर! लेकिन श्री गॉडफ्रे ने यह सब अपनी पत्नी और खुद तक ही क्यों सीमित रखा?

श्री फ्रैंकलिन फिर से—निश्चित रूप से, आप कहेंगे, श्री फ्रैंकलिन ने कंपनी को उत्साहित किया और शाम को सुखद बना दिया?

ऐसा कुछ नहीं था! वह पूरी तरह से संभल गए थे और बेहद ऊर्जावान और खुश थे। मुझे लगता है कि पेनेलोप ने उन्हें गुलाब के बगीचे में मिस्टर गॉडफ्रे के स्वागत के बारे में बताया था। लेकिन, चाहे वह कितनी भी बातें करते, दस में से नौ बार वह गलत विषय पर बात करते या गलत व्यक्ति से बात करते; नतीजा यह होता कि कुछ लोग उनसे नाराज हो जाते और सभी उलझन में पड़ जाते। उनकी विदेशी परवरिश—उनके फ्रांसीसी, जर्मन और इतालवी पहलू, जिनका मैंने पहले ही जिक्र किया है—मेरी पत्नी के आतिथ्य सत्कार में बड़े ही अजीब तरीके से सामने आए।

उदाहरण के लिए, आप क्या सोचते हैं जब वह फ्रिज़िंगहॉल के विकर की अविवाहित चाची से इस बात पर चर्चा करते हैं कि एक विवाहित महिला अपने पति के अलावा किसी अन्य पुरुष के प्रति किस हद तक प्रशंसा कर सकती है, और इसे अपने स्पष्ट और हास्यपूर्ण फ्रांसीसी अंदाज़ में प्रस्तुत करते हैं? आप क्या सोचते हैं, जब वह जर्मन पक्ष की ओर मुड़े, तो आप जागीरदार से यह कहने पर क्या सोचते हैं, जबकि पशुपालन के उस महान विशेषज्ञ ने बैलों के प्रजनन में अपने अनुभव का हवाला दिया था, कि सही मायने में समझा गया अनुभव कोई मायने नहीं रखता, और बैलों के प्रजनन का सही तरीका अपने भीतर गहराई से देखना, उससे एक आदर्श बैल का विचार विकसित करना और उसे पैदा करना है? जब हमारे काउंटी सदस्य, पनीर और सलाद के समय, इंग्लैंड में लोकतंत्र के प्रसार को लेकर उत्तेजित होकर इस प्रकार बोले: "अगर हम एक बार अपने प्राचीन सुरक्षा उपायों को खो देते हैं, श्री ब्लेक, तो मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, हमारे पास क्या बचेगा?" तो आप क्या कहेंगे? जब श्री फ्रैंकलिन इतालवी दृष्टिकोण से उत्तर देते हैं: "हमारे पास तीन चीजें बची हैं, महोदय - प्रेम, संगीत और सलाद" तो आप क्या कहेंगे? उन्होंने न केवल अपने ऐसे उद्गारों से सभा को भयभीत किया, बल्कि जब उनका अंग्रेज़ पक्ष सामने आया, तो उन्होंने अपनी विदेशी शालीनता खो दी; और चिकित्सा पेशे के विषय पर आते हुए, उन्होंने डॉक्टरों का इस कदर मज़ाक उड़ाया कि उन्होंने हंसमुख छोटे श्री कैंडी को सचमुच क्रोधित कर दिया। उनके बीच विवाद तब शुरू हुआ जब श्री फ्रैंकलिन को—मुझे याद नहीं कैसे—यह स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया कि उन्हें हाल ही में रात को नींद नहीं आ रही थी। इस पर श्री कैंडी ने उनसे कहा कि उनकी नसें पूरी तरह से गड़बड़ा गई हैं और उन्हें तुरंत दवा लेनी चाहिए। श्री फ्रैंकलिन ने जवाब दिया कि दवा लेना और अंधेरे में भटकना, उनकी नज़र में एक ही बात है। श्री कैंडी ने तीखे शब्दों में पलटवार करते हुए कहा कि श्री फ्रैंकलिन स्वयं, स्वभाव से, नींद के बाद अंधेरे में भटक रहे हैं और दवा के अलावा कोई भी चीज़ उन्हें वह रास्ता नहीं दिखा सकती। श्री फ्रैंकलिन ने अपनी बात को बरकरार रखते हुए कहा कि उन्होंने अक्सर अंधे को अंधे का रास्ता दिखाते हुए सुना है और अब पहली बार उन्हें इसका मतलब समझ आया है। इस तरह, दोनों के बीच तीखी नोकझोंक होती रही, यहाँ तक कि दोनों उत्तेजित हो गए—खासकर श्री कैंडी, जो अपने पेशे के बचाव में अपना आपा पूरी तरह खो बैठे, यहाँ तक कि मेरी पत्नी को हस्तक्षेप करना पड़ा और विवाद को आगे बढ़ने से रोकना पड़ा। अधिकार के इस आवश्यक कार्य ने सभा के उत्साह पर अंतिम प्रहार कर दिया। बातचीत बीच-बीच में

एक-दो मिनट के लिए फिर से शुरू हुई; लेकिन उसमें जीवंतता और उत्साह का घोर अभाव था। मानो उस रात्रिभोज में सन्नाटा पसरा हुआ था; और जब मेरी मालकिन उठीं और महिलाओं को सज्जनों को उनकी शराब के पास छोड़कर जाने का इशारा किया, तो सभी को राहत मिली।

मैंने बूढ़े श्री एबलव्हाइट (जो घर के मालिक का प्रतिनिधित्व कर रहे थे) के सामने अभी-अभी बर्तनों को कतार में लगाया ही था कि छत से एक आवाज़ आई जिसने मुझे तुरंत चौंका दिया। श्री फ्रैंकलिन और मैंने एक-दूसरे की ओर देखा; यह भारतीय ढोल की आवाज़ थी। मैं रोटी से ही अपना पेट भरता हूँ, और देखो, बाज़ीगर मूनस्टोन को घर वापस लेकर हमारे पास लौट रहे हैं!

जैसे ही वे छज्जे के कोने से मुड़े और नज़र आए, मैं उन्हें रोकने के लिए लंगड़ाते हुए बाहर निकला। लेकिन बदकिस्मती से, दोनों बाउंसर मुझसे पहले ही वहाँ पहुँच चुके थे। वे दोनों रॉकेट की तरह छज्जे पर दौड़ पड़े, भारतीयों को अपना करतब दिखाते देखने के लिए बेताब थे। बाकी महिलाएँ भी उनके पीछे आईं; सज्जन भी उनके साथ आ गए। इससे पहले कि आप "भगवान हम पर कृपा करें!" कह पाते, बदमाश सलाम कर रहे थे; और बाउंसर उस प्यारे से छोटे लड़के को चूम रहे थे।

श्री फ्रैंकलिन मिस राहेल के एक तरफ खड़े हो गए, और मैं उनके पीछे खड़ा हो गया। अगर हमारा शक सही था, तो वह वहाँ खड़ी थीं, सच्चाई से पूरी तरह अनजान, और भारतीयों को अपनी पोशाक के भीतर छिपा हीरा दिखा रही थीं!

मैं आपको यह नहीं बता सकता कि उन्होंने क्या-क्या करतब दिखाए या कैसे दिखाए। खाने को लेकर हड़बड़ी और बदमाशों के ठीक समय पर लौटकर गहना अपनी आँखों से देखने की वजह से, मैं सच कहूँ तो अपना आपा खो बैठा था। सबसे पहली बात जो मुझे याद है, वह थी भारतीय यात्री श्री मुर्थवेट का अचानक वहाँ प्रकट होना। सज्जनों के खड़े या बैठे हुए अर्धवृत्त के किनारे से होते हुए, वह चुपचाप बाज़ीगरों के पीछे आए और अचानक उनसे उनकी अपनी भाषा में बात करने लगे।

अगर उसने उन्हें संगीन से घायल कर दिया होता, तो मुझे संदेह है कि उसके मुख से निकले पहले शब्द सुनते ही भारतीय इतनी तेज़ी से और बाघ की तरह उस पर झपट पड़ते। अगले ही पल वे अत्यंत विनम्रता और शालीनता से उसके सामने झुककर सलाम कर रहे थे। दोनों ओर से कुछ अज्ञात भाषा में बातचीत होने के बाद, श्री मुर्थवेट उतनी ही खामोशी से चले गए जितनी खामोशी से वे आए थे। दुभाषिया का काम कर रहे प्रमुख भारतीय ने फिर से सज्जनों की ओर रुख किया। मैंने देखा कि श्री मुर्थवेट के

उससे बात करने के बाद से उस व्यक्ति का कॉफी रंग का चेहरा पीला पड़ गया था। उसने मेरी पत्नी को प्रणाम किया और उन्हें बताया कि प्रदर्शन समाप्त हो गया है। बाउंसर, बेहद निराश होकर, प्रदर्शन रोकने के लिए श्री मुर्थवेट के विरुद्ध ज़ोर से "ओ!" चिल्लाए। प्रमुख भारतीय ने विनम्रता से अपना हाथ अपनी छाती पर रखा और दूसरी बार कहा कि करतब दिखाने का खेल समाप्त हो गया है। छोटा लड़का टोपी लेकर चारों ओर घूमा। महिलाएं ड्राइंग रूम में चली गईं; और सभी सज्जन (श्री फ्रैंकलिन और श्री मुर्थवेट को छोड़कर) अपनी शराब पीने लौट गए। मैं और नौकर उन भारतीयों के पीछे गए और उन्हें सुरक्षित परिसर से बाहर निकलते हुए देखा।

झाड़ियों के रास्ते लौटते समय मुझे तंबाकू की गंध आई और मैंने श्री फ्रैंकलिन और श्री मुर्थवेट (जिनमें से श्री मुर्थवेट सिगार पी रहे थे) को पेड़ों के बीच धीरे-धीरे चलते हुए पाया। श्री फ्रैंकलिन ने मुझे अपने साथ आने का इशारा किया।

श्री फ्रैंकलिन ने मुझे उस महान यात्री से मिलवाते हुए कहा, "यह गैब्रियल बेटरएज हैं, जो हमारे परिवार के पुराने नौकर और मित्र हैं, जिनके बारे में मैंने अभी आपसे बात की थी। कृपया उन्हें भी वही बताएं जो आपने अभी मुझे बताया है।"

श्री मुर्थवेट ने अपने मुंह से सिगार निकाला और अपनी थकी हुई मुद्रा में एक पेड़ के तने से टिक गए।

"श्री बेटरएज," उन्होंने कहना शुरू किया, "वे तीनों भारतीय उतने ही बाज़ीगर हैं जितने आप और मैं हैं।"

यह एक नया आश्चर्य था! मैंने स्वाभाविक रूप से यात्री से पूछा कि क्या वह पहले कभी भारतीयों से मिला था।

श्री मुर्थवेट कहते हैं, "बिल्कुल नहीं; लेकिन मैं जानता हूँ कि भारतीय बाज़ीगरी असल में क्या होती है। आज रात आपने जो कुछ देखा है, वह उसकी बेहद घटिया और भद्दी नकल है। अगर लंबे अनुभव के बाद मैं पूरी तरह गलत नहीं हूँ, तो वे लोग उच्च जाति के ब्राह्मण हैं। मैंने उन पर भेस बदलने का आरोप लगाया था, और आपने देखा कि हिंदू लोग अपनी भावनाओं को छिपाने में कितने माहिर होते हैं, तो वे कैसे बेनकाब हो गए। उनके व्यवहार में एक रहस्य है जिसे मैं समझा नहीं सकता। उन्होंने अपनी जाति का दोहरा बलिदान दिया है - पहला, समुद्र पार करके; दूसरा, बाज़ीगरों का वेश बदलकर। जिस देश में वे रहते हैं, वहाँ यह एक बहुत बड़ा बलिदान है। इसके पीछे कोई बहुत गंभीर मकसद होना चाहिए, और जब वे अपने देश लौटेंगे, तो उनकी जाति की बहाली के लिए उनकी पैरवी करने का कोई असाधारण औचित्य होना चाहिए।"

मैं अवाक रह गया। श्री मुर्थवेट अपनी सिगार पीते रहे। श्री फ्रैंकलिन ने, जो मुझे अपने चरित्र के विभिन्न पहलुओं के बीच थोड़ा सा निजी उतार-चढ़ाव जैसा लगा, चुप्पी तोड़ते हुए इस प्रकार कहा:
श्री मर्थवेट, पारिवारिक मामलों को लेकर आपको परेशान करने में मुझे कुछ झिझक हो रही है, जिनमें आपकी कोई दिलचस्पी नहीं होगी और जिनके बारे में मैं अपने निजी दायरे से बाहर बात करने को तैयार नहीं हूँ। लेकिन, आपकी बातों के बाद, लेडी वेरेंडर और उनकी बेटी के हित में, मुझे आपको कुछ बताना अपना कर्तव्य लगता है, जिससे शायद आपको कुछ सुराग मिल जाए। मैं आपसे गोपनीय रूप से बात कर रहा हूँ; मुझे पूरा विश्वास है कि आप इसे नहीं भूलेंगे।
इस भूमिका के साथ, उन्होंने भारतीय यात्री को वह सब कुछ बताया जो उन्होंने मुझे 'शिवरिंग सैंड' में बताया था। यहाँ तक कि अटल श्री मुर्थवेट भी जो कुछ सुन रहे थे उसमें इतने मग्न हो गए कि उन्होंने अपनी सिगार बुझा दी।
"अब," श्री फ्रैंकलिन ने अपनी बात पूरी करने के बाद कहा, "आपका अनुभव क्या कहता है?"
यात्री ने उत्तर दिया, "मेरा अनुभव कहता है कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक, आपने अपने जीवन में मुझसे कहीं अधिक बार बाल-बाल बचने का अनुभव किया है; और यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है।"
अब आश्चर्यचकित होने की बारी मिस्टर फ्रैंकलिन की थी।
"क्या यह वाकई इतना गंभीर है?" उसने पूछा।
“मेरी राय में तो यही है,” श्री मुर्थवेट ने उत्तर दिया। “आपने जो बताया है, उसके बाद मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि भारतीय मूर्ति के माथे पर मूनस्टोन को उसके स्थान पर पुनः स्थापित करना ही उस जातिगत बलिदान का मकसद और औचित्य है जिसका मैंने अभी जिक्र किया। वे लोग बिल्ली की तरह धैर्य से अवसर की प्रतीक्षा करेंगे और बाघों की तरह क्रूरता से उसका लाभ उठाएंगे। आप उनसे कैसे बच निकले, यह मेरी समझ से परे है,” प्रख्यात यात्री ने अपनी सिगार फिर से जलाते हुए और श्री फ्रैंकलिन को घूरते हुए कहा। “आप हीरे को यहाँ और लंदन में बार-बार ले जा रहे हैं और आप अभी भी जीवित हैं! चलिए इसका कारण जानने की कोशिश करते हैं। मुझे लगता है कि दोनों बार जब आपने लंदन के बैंक से हीरा निकाला था, तब दिन का उजाला था?”
"दिन दहाड़े," श्री फ्रैंकलिन कहते हैं।
"और सड़कों पर काफी लोग हैं?"

"बहुत।"
"आपने लेडी वेरेंडर के घर एक निश्चित समय पर पहुँचने का तय किया था, है ना? यहाँ से स्टेशन तक का रास्ता बिल्कुल सुनसान है। क्या आप अपने तय समय पर पहुँचे?"
"नहीं। मैं अपने निर्धारित समय से चार घंटे पहले ही पहुँच गया था।"
"मैं आपको इस कार्यवाही के लिए बधाई देता हूँ! आपने यहाँ शहर में बैंक में हीरा कब जमा कराया था?"
"मैंने इसे इस घर में लाने के एक घंटे बाद लिया था - और तीन घंटे पहले जब कोई भी मुझे इस इलाके में देखने के लिए तैयार नहीं था।"
"मैं आपको एक बार फिर बधाई देता हूँ! क्या आप इसे अकेले ही यहाँ वापस लाए थे?"
"नहीं। मैं संयोगवश अपने चचेरे भाइयों और दूल्हे के साथ वापस आ रहा था।"
"मैं आपको तीसरी बार बधाई देता हूँ! श्रीमान ब्लेक, यदि कभी आपका मन सभ्यता की सीमाओं से परे यात्रा करने का करे, तो मुझे बताइएगा, मैं आपके साथ चलूँगा। आप वाकई भाग्यशाली व्यक्ति हैं।"
यहीं पर मेरी आपत्ति उठी। इस तरह की बातें मेरे अंग्रेजी विचारों से बिल्कुल मेल नहीं खाती थीं।
मैंने पूछा, "क्या आपका सचमुच यह कहने का मतलब है, महोदय, कि अगर श्री फ्रैंकलिन ने उन्हें मौका दिया होता, तो वे अपना हीरा पाने के लिए उनकी जान ले लेते?"
"क्या आप धूम्रपान करते हैं, श्रीमान बेटरएज?" यात्री पूछता है।
"जी श्रीमान।
"क्या आपको पाइप खाली करते समय उसमें बची राख की ज्यादा परवाह होती है?"
"जी नहीं, महोदय।"
"जिस देश से वे लोग आए थे, वहाँ किसी आदमी को मारना उतना ही ज़रूरी है जितना कि पाइप से राख निकालना। अगर उनके और उनके हीरे को वापस पाने के बीच हज़ार जानें भी खड़ी हों—और अगर उन्हें लगे कि वे बिना पकड़े गए उन जानें को मिटा सकते हैं—तो वे सबको मार डालेंगे। भारत में जाति का बलिदान एक गंभीर मुद्दा है, लेकिन जान का बलिदान कुछ भी नहीं है।"
मैंने इस विषय पर अपनी राय व्यक्त की कि वे हत्यारे चोरों का गिरोह थे। श्री मुर्थवेट ने अपनी राय व्यक्त की कि वे अद्भुत लोग थे। श्री फ्रैंकलिन ने कोई राय व्यक्त नहीं की और हमें मुख्य मुद्दे पर वापस ले आए।

उन्होंने कहा, "उन्होंने मिस वेरेंडर की पोशाक पर मूनस्टोन देखा है। अब क्या किया जाए?"
श्री मुर्थवेट ने उत्तर दिया, "आपके चाचा ने जो धमकी दी थी, वही सही है। कर्नल हर्नकैसल उन लोगों को समझते थे जिनसे उन्हें निपटना था। हीरे को कल (एक से अधिक पहरेदारों की निगरानी में) एम्स्टर्डम में तराशने के लिए भेज दें। एक हीरे के बजाय आधे दर्जन हीरे बना दें। इससे 'मूनस्टोन' के रूप में इसकी पवित्र पहचान का अंत हो जाएगा - और इस तरह षड्यंत्र का भी अंत हो जाएगा।"
श्री फ्रैंकलिन ने मेरी ओर रुख किया।
उन्होंने कहा, "इसका कोई उपाय नहीं है। हमें कल लेडी वेरेंडर से बात करनी होगी।"
"आज रात क्या होगा, महोदय?" मैंने पूछा। "मान लीजिए कि भारतीय वापस आ गए?"
श्री फ्रैंकलिन के बोलने से पहले ही श्री मुर्थवेट ने मुझे जवाब दे दिया।
उन्होंने कहा, "भारतीय आज रात वापस आने का जोखिम नहीं उठाएंगे। वे शायद ही कभी किसी भी मामले में सीधा रास्ता अपनाते हैं—खासकर ऐसे मामले में, जिसमें जरा सी भी गलती उनके लिए घातक साबित हो सकती है।"
"लेकिन मान लीजिए कि बदमाश आपकी सोच से कहीं अधिक साहसी हैं, महोदय?" मैंने जोर देकर पूछा।
"तो फिर," श्री मुर्थवेट कहते हैं, "कुत्तों को खुला छोड़ दो। क्या आपके आंगन में कोई बड़े कुत्ते हैं?"
"दो कुत्ते हैं, महोदय। एक मैस्टिफ़ और एक ब्लडहाउंड।"
"वे ठीक रहेंगे। मौजूदा आपात स्थिति में, श्री बेटरएज, मास्टिफ़ और ब्लडहाउंड में एक बड़ी खूबी है - वे मानव जीवन की पवित्रता के बारे में आपकी शंकाओं से परेशान होने की संभावना नहीं रखते हैं।"
ड्राइंग रूम से पियानो की झंकार हम तक पहुँची, तभी उसने मुझ पर गोली चलाई। उसने अपनी सिगार फेंक दी और मिस्टर फ्रैंकलिन का हाथ पकड़कर महिलाओं के पास वापस चला गया। जब मैं उनके पीछे घर की ओर जा रहा था, तो मैंने देखा कि आसमान में तेज़ी से बादल छा रहे थे। मिस्टर मुर्थवेट ने भी इसे देखा। उन्होंने अपनी रूखी, नीरस आवाज़ में मेरी ओर देखा और कहा:
"आज रात भारतीयों को अपने छातों की जरूरत पड़ेगी, श्री बेटरएज!"
उसके लिए मज़ाक करना तो ठीक था। लेकिन मैं कोई प्रसिद्ध यात्री नहीं था—और इस दुनिया में मेरा जीवन मुझे चोरों और हत्यारों के बीच, धरती के सुदूर स्थानों में, अपनी

जान जोखिम में डालने के लिए नहीं बना था। मैं अपने छोटे से कमरे में गया, पसीने से तरबतर होकर कुर्सी पर बैठ गया और असहाय होकर सोचने लगा कि अब आगे क्या करना है। इस चिंता में डूबे हुए लोगों का शायद बुखार चढ़ जाता; लेकिन मेरा हाल अलग था। मैंने अपनी पाइप जलाई और रॉबिन्सन क्रूसो पढ़ना शुरू किया।

पांच मिनट तक काम करने के बाद ही मैं इस आश्चर्यजनक हिस्से पर पहुँच गया—पृष्ठ एक सौ इकसठ—जो इस प्रकार है:

"खतरे का भय, आंखों के सामने प्रकट होने वाले खतरे से दस हजार गुना अधिक भयावह होता है; और हम पाते हैं कि जिस बुराई के बारे में हम चिंतित हैं, उसकी तुलना में चिंता का बोझ कहीं अधिक होता है।"

इसके बाद जो व्यक्ति रॉबिन्सन क्रूसो पर विश्वास नहीं करता, वह या तो मानसिक रूप से विक्षिप्त है, या अपने अहंकार के भंवर में खोया हुआ है! ऐसे व्यक्ति के लिए तर्क व्यर्थ है; और उस पर दया करना किसी ऐसे व्यक्ति के लिए बेहतर होगा जिसका विश्वास अधिक जीवंत हो।

मैं अपनी दूसरी पाइप का काफी हिस्सा पी चुका था और उस अद्भुत किताब की प्रशंसा में डूबा हुआ था, तभी पेनेलोप (जो चाय परोस रही थी) ड्राइंग रूम से अपनी रिपोर्ट लेकर आई। उसने बाउंसरों को एक युगल गीत गाते हुए देखा था - जिसके बोल बड़े "ओ" से शुरू होते थे और संगीत भी उसी के अनुरूप था। उसने देखा कि मेरी मालकिन ने अपने व्हिस्ट के खेल में पहली बार गलतियाँ की थीं, जो हमारे अनुभव में पहली बार हुआ था। उसने महान यात्री को एक कोने में सोते हुए देखा था। उसने श्री फ्रैंकलिन को श्री गॉडफ्रे पर व्यंग्य करते हुए सुना था, जो आम तौर पर लेडीज़ चैरिटीज़ के खर्चे पर था; और उसने देखा कि श्री गॉडफ्रे ने उन्हें उनके उदार स्वभाव के विपरीत कहीं अधिक तीखे शब्दों में जवाब दिया। उसने मिस राहेल को देखा, जो जाहिर तौर पर श्रीमती थ्रेडगैल को कुछ तस्वीरें दिखाकर खुश करने में लगी हुई थी, लेकिन वास्तव में श्री फ्रैंकलिन को चोरी-छिपे देख रही थी, जिसे कोई भी समझदार नौकरानी एक पल के लिए भी गलत नहीं समझ सकती थी। अंत में, उसे डॉक्टर श्री कैंडी की कमी खल रही थी, जो रहस्यमय तरीके से ड्राइंग रूम से गायब हो गए थे, और फिर रहस्यमय तरीके से लौट आए थे और श्री गॉडफ्रे से बातचीत करने लगे थे। कुल मिलाकर, चीजें उस डिनर के अनुभव से कहीं बेहतर चल रही थीं जिसकी हमें उम्मीद थी। अगर हम बस एक घंटे और रुक पाते, तो समय के देवता उनकी गाड़ियाँ ले आते और हमें उनसे पूरी तरह छुटकारा दिला देते।

इस दुनिया में सब कुछ क्षणभंगुर है; और पेनेलोप के मुझे छोड़कर जाने के बाद रॉबिन्सन क्रूसो का सुकून देने वाला असर भी खत्म हो गया। मैं फिर से बेचैन हो गया और बारिश आने से पहले मैंने आसपास का जायज़ा लेने का फैसला किया। नौकर को साथ ले जाने के बजाय, जिसकी नाक इंसानी थी और इसलिए किसी भी आपात स्थिति में बेकार थी, मैंने अपने साथ खोजी कुत्ते को ले लिया। अजनबी को सूंघने की उसकी क्षमता पर भरोसा किया जा सकता था। हम पूरे परिसर में घूमे और सड़क पर भी गए —और उतने ही समझदार होकर लौटे, जितना समझदार होकर गए थे, क्योंकि हमें कहीं भी कोई छिपा हुआ इंसान नहीं मिला।
गाड़ियों के आने से बारिश शुरू हो गई। ऐसा लग रहा था मानो पूरी रात बारिश होती रहेगी। डॉक्टर को छोड़कर, जिनका घोड़ागाड़ी इंतज़ार कर रही थी, बाकी सभी लोग आराम से, सुरक्षित और तंग गाड़ियों में अपने घर चले गए। मैंने मिस्टर कैंडी से कहा कि मुझे डर है कि वे पूरी तरह भीग जाएँगे। उन्होंने जवाब में कहा कि उन्हें हैरानी होती है कि मैं इस उम्र तक कैसे पहुँच गया, बिना यह जाने कि डॉक्टर की त्वचा जलरोधी होती है। फिर वे अपनी ही छोटी सी बात पर हँसते हुए बारिश में गाड़ी चलाकर चले गए; और इस तरह हमारे साथ आए मेहमान चले गए।
अब अगली बात जो बतानी है, वह उस रात की कहानी है।

अध्याय XI

जब सभी मेहमान चले गए, तो मैं अंदर के हॉल में वापस गया और देखा कि सैमुअल बगल की मेज पर ब्रांडी और सोडा वाटर का आनंद ले रहा था। मेरी पत्नी और मिस राहेल ड्राइंग रूम से बाहर आईं, उनके पीछे दोनों सज्जन भी थे। श्री गॉडफ्रे ने थोड़ी ब्रांडी और सोडा वाटर लिया, श्री फ्रैंकलिन ने कुछ नहीं लिया। वे बैठ गए, एकदम थके हुए लग रहे थे; मुझे लगता है कि जन्मदिन के इस अवसर पर हुई बातचीत उनके लिए बहुत ज़्यादा हो गई थी।
मेरी पत्नी ने उन्हें शुभ रात्रि कहने के लिए पीछे मुड़ते हुए, अपनी बेटी की पोशाक में चमकती हुई दुष्ट कर्नल की विरासत को ध्यान से देखा।
"राहेल," उसने पूछा, "आज रात तुम अपना हीरा कहाँ रखने वाली हो?"
मिस राहेल बहुत खुश थीं, बस उसी बेतुकी बातें करने के मूड में थीं, और जानबूझकर उन्हें समझदारी भरी बातें बता रही थीं, जैसा कि आपने कभी-कभी युवा लड़कियों में देखा होगा, जब वे किसी रोमांचक दिन के अंत में बहुत उत्तेजित हो जाती हैं। पहले तो

उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं पता कि हीरे को कहाँ रखें। फिर उन्होंने कहा, "ज़ाहिर है, अपनी ड्रेसिंग टेबल पर, अपनी बाकी चीज़ों के साथ।" फिर उन्हें याद आया कि हीरा अंधेरे में अपने आप चमक सकता है, अपनी भयानक चाँदनी जैसी रोशनी से - और यह उन्हें आधी रात में डरा देगा। फिर उन्हें अपने बैठक कक्ष में रखी एक भारतीय अलमारी याद आई; और उन्होंने तुरंत भारतीय हीरे को उस अलमारी में रखने का फैसला कर लिया, ताकि दो खूबसूरत देसी चीज़ें एक-दूसरे की प्रशंसा कर सकें। उनकी बेतुकी बातों का सिलसिला यहाँ तक पहुँच ही गया था कि उनकी माँ ने बीच में आकर उन्हें रोक दिया।

"मेरे प्यारे! तुम्हारी भारतीय अलमारी में ताला नहीं है," मेरी पत्नी ने कहा।

"हे भगवान! माँ!" मिस राहेल चिल्लाईं, "क्या यह कोई होटल है? क्या घर में चोर हैं?"

बातचीत के इस अनोखे अंदाज़ पर ध्यान दिए बिना, मेरी पत्नी ने सज्जनों को शुभ रात्रि कहा। फिर वह मिस राहेल की ओर मुड़ी और उन्हें चूमा। "क्यों न आप मुझे आज रात के लिए हीरा अपने पास रखने दें?" उसने पूछा।

मिस राहेल ने उस प्रस्ताव को उसी तरह स्वीकार किया जैसे दस साल पहले उन्हें अपनी नई गुड़िया से अलग होने का प्रस्ताव मिलता। मेरी मालकिन ने देखा कि उस रात उनसे तर्क करना बेकार था। "कल सुबह सबसे पहले मेरे कमरे में आना, राहेल," उन्होंने कहा। "मुझे तुमसे कुछ कहना है।" इन आखिरी शब्दों के साथ वह धीरे-धीरे हमसे विदा हो गईं; अपने विचारों में डूबी हुई, और ऐसा लग रहा था कि वह उन विचारों से खुश नहीं थीं जो उन्हें इस ओर ले जा रहे थे।

इसके बाद मिस राहेल ने शुभ रात्रि कही। उन्होंने सबसे पहले श्री गॉडफ्रे से हाथ मिलाया, जो हॉल के दूसरे छोर पर खड़े एक चित्र को देख रहे थे। फिर वे श्री फ्रैंकलिन की ओर मुड़ीं, जो अभी भी थके हुए और चुपचाप एक कोने में बैठे थे।

उनके बीच क्या बातचीत हुई, यह मैं नहीं कह सकता। लेकिन हमारे बड़े शीशे वाले पुराने ओक के फ्रेम के पास खड़े होकर मैंने उसे शीशे में प्रतिबिंबित होते देखा। वह चुपके से मिस्टर फ्रैंकलिन द्वारा दिया गया लॉकेट अपनी पोशाक के सीने से निकाल रही थी और एक पल के लिए उसे मिस्टर फ्रैंकलिन को दिखा रही थी। उसके चेहरे पर एक ऐसी मुस्कान थी जिसका अर्थ कुछ असाधारण था, और फिर वह बिस्तर पर चली गई। इस घटना ने मेरे उस भरोसे को थोड़ा हिला दिया जो मुझे पहले अपने विवेक पर था। मुझे लगने लगा कि शायद पेनेलोप अपनी प्रेमिका के दिल की भावनाओं के बारे में सही कह रही थी।

जैसे ही मिस राहेल उनसे नज़रें हटाकर चली गईं, श्री फ्रैंकलिन ने मुझे देखा। उनका बदलता हुआ हास्य, जो हर बात पर बदलता रहता था, अब भारतीयों के बारे में भी बदल चुका था।
"बेटरएज," उसने कहा, "मुझे लगता है कि झाड़ियों में हुई उस बातचीत के दौरान मैंने श्री मुर्थवेट की बात को कुछ ज़्यादा ही गंभीरता से ले लिया था। मुझे आश्चर्य है कि क्या वह हम पर अपनी कोई मनगढ़ंत कहानी सुनाने की कोशिश कर रहे हैं? क्या आप सचमुच कुत्तों को खुला छोड़ने वाले हैं?"
"मैं उनके गले से पट्टे हटा दूंगा, महोदय," मैंने उत्तर दिया, "और उन्हें रात में बारी-बारी से अपना काम करने के लिए स्वतंत्र छोड़ दूंगा, अगर उन्हें ऐसा करने का कोई कारण मिलता है।"
“ठीक है,” श्री फ्रैंकलिन ने कहा। “कल देखेंगे कि क्या करना है। मैं अपनी चाची, बेटरएज को बिना किसी बहुत जरूरी कारण के परेशान नहीं करना चाहता। शुभ रात्रि।”
जब उन्होंने मुझे सिर हिलाकर अभिवादन किया और मोमबत्ती लेकर ऊपर जाने लगे, तो वे इतने थके हुए और पीले दिख रहे थे कि मैंने उन्हें रात को सोने से पहले थोड़ी सी ब्रांडी और पानी पीने की सलाह दी। हॉल के दूसरे छोर से हमारी ओर आते हुए मिस्टर गॉडफ्रे ने मेरी बात का समर्थन किया। उन्होंने बड़े ही दोस्ताना लहजे में मिस्टर फ्रैंकलिन से कहा कि सोने से पहले कुछ पी लें।
मैं इन मामूली बातों का ज़िक्र इसलिए कर रहा हूँ, क्योंकि उस दिन मैंने जो कुछ देखा और सुना था, उसके बाद यह देखकर मुझे बहुत खुशी हुई कि हमारे दोनों सज्जन पहले की तरह ही अच्छे संबंध बनाए हुए थे। ड्राइंग रूम में पेनेलोप द्वारा सुनी गई उनकी कहा-सुनी और मिस राहेल की नज़र में सबसे अच्छी जगह पाने की उनकी होड़ ने उनके बीच कोई गंभीर मतभेद पैदा नहीं किया था। लेकिन फिर भी! वे दोनों ही अच्छे स्वभाव के थे और दुनियादारी की समझ रखने वाले लोग थे। और ऊँचे ओहदे वाले लोगों में यह खूबी तो होती ही है कि वे आम लोगों की तुलना में आपस में कम झगड़ालू होते हैं।
श्री फ्रैंकलिन ने ब्रांडी और पानी लेने से इनकार कर दिया और श्री गॉडफ्रे के साथ ऊपर चले गए, क्योंकि उनके कमरे एक-दूसरे के बगल में ही थे। लेकिन ऊपर पहुँचते ही, या तो उनके चचेरे भाई ने उन्हें मना लिया, या फिर हमेशा की तरह उन्होंने अपना

इरादा बदल दिया। "शायद मुझे रात में इसकी ज़रूरत पड़े," उन्होंने मुझे पुकारा। "मेरे कमरे में थोड़ी ब्रांडी और पानी भेज देना।"
मैंने शमूएल को ब्रांडी और पानी लेकर ऊपर भेजा; फिर मैं बाहर गया और कुत्तों के पट्टे खोल दिए। रात के उस समय उन्हें खुला देखकर वे दोनों आश्चर्य से पागल हो गए और पिल्लों की तरह मुझ पर कूद पड़े! हालाँकि, बारिश ने उन्हें जल्द ही शांत कर दिया: उन्होंने पानी की एक-एक बूँद पी और वापस अपने पिंजरों में चले गए। जब मैं घर में गया तो मैंने आकाश में कुछ संकेत देखे जिनसे मौसम में सुधार का संकेत मिला। फिलहाल, अभी भी ज़ोरदार बारिश हो रही थी और ज़मीन पूरी तरह से गीली थी।
सैमुअल और मैंने पूरे घर की छानबीन की और हमेशा की तरह खुद को कमरे में बंद कर लिया। मैंने हर चीज़ की खुद जाँच की और इस बार अपने सहायक पर किसी भी बात का भरोसा नहीं किया। आधी रात से सुबह एक बजे के बीच जब मैंने बिस्तर पर लेटकर आराम किया, तब तक सब कुछ ठीक-ठाक था।
शायद दिनभर की चिंताएँ मुझ पर कुछ ज़्यादा ही हावी हो गई थीं। खैर, उस रात मुझ पर भी श्री फ्रैंकलिन की बीमारी का थोड़ा सा असर हो गया था। सूरज उगने से पहले मुझे आख़िरकार नींद नहीं आई। जब तक मैं जागता रहा, घर में सन्नाटा पसरा रहा। बारिश की बूँदों की आवाज़ और सुबह की हल्की हवा के साथ पेड़ों के बीच सरसराहट के अलावा कोई आवाज़ नहीं थी।
लगभग साढ़े सात बजे मैं जागा और एक सुहावने धूप वाले दिन अपनी खिड़की खोली। घड़ी में आठ बज चुके थे और मैं कुत्तों को दोबारा बांधने के लिए बाहर जा ही रहा था कि तभी मुझे अपने पीछे सीढ़ियों पर पेटीकोटों की अचानक सरसराहट सुनाई दी।
मैंने पीछे मुड़कर देखा तो पेनेलोप पागलों की तरह मेरे पीछे दौड़ती हुई आ रही थी। "पिताजी!" वह चिल्लाई, "ऊपर आइए, भगवान के लिए! हीरा गायब हो गया है!" "क्या तुम पागल हो गई हो?" मैंने उससे पूछा।
"चला गया!" पेनेलोप कहती है। "चला गया, किसी को नहीं पता कैसे! ऊपर आकर देखो।"
वह मुझे घसीटते हुए हमारी युवती के बैठक कक्ष में ले गई, जो उसके शयनकक्ष में खुलता था। वहाँ, उसके शयनकक्ष के दरवाजे की दहलीज पर, मिस राहेल खड़ी थीं, जिनका चेहरा उनके सफेद वस्त्र की तरह लगभग पीला पड़ गया था। वहाँ भारतीय

अलमारी के दोनों दरवाजे भी खुले हुए थे। अंदर की एक दराज पूरी तरह से बाहर खींची हुई थी।
"देखो!" पेनेलोप बोली। "मैंने खुद मिस राहेल को कल रात उस दराज में हीरा रखते हुए देखा था।" मैं अलमारी के पास गई। दराज खाली थी।
"क्या यह सच है, महोदया?" मैंने पूछा।
अपने चेहरे पर एक अलग ही भाव लिए, अपनी आवाज में भी एक अलग ही अंदाज में, मिस राहेल ने ठीक वैसे ही जवाब दिया जैसे मेरी बेटी ने दिया था: "हीरा गायब हो गया है!" ये शब्द कहकर वह अपने बेडरूम में चली गई और दरवाजा बंद करके ताला लगा दिया।
इससे पहले कि हम समझ पाते कि आगे क्या करें, मेरी पत्नी अंदर आ गईं। उन्होंने अपनी बेटी के बैठक कक्ष में मेरी आवाज़ सुनी और सोचने लगीं कि क्या हुआ है। हीरे के खो जाने की खबर सुनकर वे जैसे स्तब्ध रह गईं। वे सीधे मिस राहेल के शयनकक्ष में गईं और अंदर आने की ज़िद करने लगीं। मिस राहेल ने उन्हें अंदर आने दिया।
घर में आग की तरह फैलते हुए अलार्म ने सबसे पहले उन दो सज्जनों को अपनी चपेट में लिया।
श्री गॉडफ्रे सबसे पहले अपने कमरे से बाहर आए। घटना की खबर सुनकर उन्होंने बस हैरानी से अपने हाथ ऊपर उठा लिए, जिससे उनकी स्वाभाविक बुद्धिमत्ता का पता नहीं चलता था। श्री फ्रैंकलिन, जिनके स्पष्ट दिमाग पर मुझे पूरा भरोसा था कि वे हमें सलाह देंगे, खबर सुनकर अपने चचेरे भाई की तरह ही असहाय प्रतीत हुए। आश्चर्य की बात यह थी कि उन्हें आखिरकार अच्छी नींद आई थी; और नींद का यह असामान्य आराम, जैसा कि उन्होंने खुद कहा, उन्हें मानो सुन्न कर दिया था। हालांकि, जब उन्होंने अपनी कॉफी पी ली - जो वे हमेशा की तरह, विदेशी नियम के अनुसार, नाश्ता करने से कुछ घंटे पहले पीते थे - तो उनका दिमाग तेज हो गया; उनका स्पष्ट दिमाग फिर से सक्रिय हो गया, और उन्होंने दृढ़ता और चतुराई से मामले को अपने हाथ में लिया, जैसा कि नीचे बताया गया है:
सबसे पहले उन्होंने नौकरों को बुलवाया और उन्हें निर्देश दिया कि सभी निचले दरवाजे और खिड़कियाँ (सामने के दरवाजे को छोड़कर, जिसे मैंने खोला था) ठीक वैसे ही बंद कर दें जैसे हमने रात भर ताला लगाते समय छोड़ी थीं। इसके बाद उन्होंने अपने चचेरे भाई और मुझसे कहा कि आगे कोई कदम उठाने से पहले हम पूरी तरह से सुनिश्चित कर लें कि हीरा कहीं नज़र से ओझल तो नहीं हो गया—जैसे अलमारी के

पीछे या उस मेज के पीछे जिस पर अलमारी रखी थी। दोनों जगहों पर तलाशी लेने के बाद भी कुछ नहीं मिला—पेनेलोप से भी पूछताछ की, और उससे भी मुझे पहले से बताई गई जानकारी के अलावा कुछ नहीं पता चला—तो श्री फ्रैंकलिन ने सुझाव दिया कि हम अपनी पूछताछ मिस राहेल तक बढ़ाएँ और पेनेलोप को उनके शयनकक्ष का दरवाजा खटखटाने के लिए भेजा।

मेरी पत्नी ने दस्तक सुनी और दरवाज़ा बंद कर लिया। थोड़ी देर बाद हमने सुना कि मिस राहेल ने अंदर से दरवाज़ा बंद कर दिया है। मेरी मालकिन बाहर आईं, बेहद परेशान और दुखी लग रही थीं। उन्होंने श्री फ्रैंकलिन के सवाल के जवाब में कहा, "हीरा खोने से राहेल पूरी तरह टूट गई है। वह इसके बारे में मुझसे भी बात करने से कतराती है, और यह बहुत अजीब है। फिलहाल आप उससे मिल नहीं सकते।" मिस राहेल के इस विवरण से हमारी उलझनें और बढ़ गईं। थोड़ी कोशिश के बाद मेरी पत्नी ने अपना सामान्य धैर्य वापस पाया और हमेशा की तरह दृढ़ निश्चय के साथ काम किया।

"मुझे लगता है इसका कोई उपाय नहीं है?" उसने धीमी आवाज़ में कहा। "मुझे लगता है पुलिस को बुलाने के अलावा मेरे पास कोई विकल्प नहीं है?"

श्री फ्रैंकलिन ने उनकी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा, "और पुलिस को सबसे पहले उन भारतीय बाज़ीगरों को पकड़ना चाहिए जिन्होंने कल रात यहां प्रदर्शन किया था।"

मेरी पत्नी और श्री गॉडफ्रे (जो श्री फ्रैंकलिन और मुझे जो पता था, वह न जानते हुए) दोनों चौंक गए और दोनों आश्चर्यचकित दिखे।

“अभी मेरे पास समझाने का समय नहीं है,” श्री फ्रैंकलिन ने आगे कहा। “मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि हीरा निश्चित रूप से भारतीयों ने चुराया है। मुझे फ्रिज़िंगहॉल के किसी मजिस्ट्रेट के लिए एक परिचय पत्र दीजिए,” उन्होंने मेरी पत्नी से कहा, “जिसमें बस इतना लिखा हो कि मैं आपके हितों और इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करता हूँ, और मुझे इसे लेकर तुरंत निकल जाने दीजिए। चोरों को पकड़ने का हमारा मौका इस बात पर निर्भर करता है कि हम एक भी मिनट व्यर्थ न करें।” (ध्यान दें: चाहे फ्रांसीसी पक्ष हो या अंग्रेज, श्री फ्रैंकलिन का पक्ष अब सबसे ऊपर लग रहा था। सवाल बस इतना था कि यह कब तक चलेगा?)

उसने कलम, स्याही और कागज अपनी चाची के सामने रख दिए, जिन्होंने (जैसा कि मुझे लगा) थोड़ी अनिच्छा से वह पत्र लिखा जो वह चाहता था। अगर बीस हजार पाउंड के गहने के खोने जैसी घटना को नज़रअंदाज़ करना संभव होता, तो मुझे लगता है—

अपनी पत्नी की अपने दिवंगत भाई के बारे में राय और उसके जन्मदिन के उपहार पर अविश्वास को देखते हुए—चोरों को मूनस्टोन को बिना किसी सजा के ले जाने देना उनके लिए निजी तौर पर राहत की बात होती।

मैं मिस्टर फ्रैंकलिन के साथ अस्तबल में गया और इस मौके का फायदा उठाकर उनसे पूछा कि भारतीय (जिन पर मुझे शक था, बिल्कुल उनकी ही तरह चतुराई से) आखिर घर में कैसे घुस सकते थे।

श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "जब मेहमान जा रहे थे, उस अफरा-तफरी में उनमें से कोई एक चुपके से हॉल में घुस गया होगा। हो सकता है कि जब मेरी चाची और राहेल इस बारे में बात कर रही थीं कि हीरे को रात के लिए कहाँ रखा जाए, तब वह सोफे के नीचे छिपा रहा हो। उसे बस घर के शांत होने का इंतज़ार करना था, और हीरा अलमारी में रखा हुआ, बस उसे ले जाना था।" इतना कहकर उन्होंने दूल्हे को दरवाज़ा खोलने का इशारा किया और घोड़े पर सवार होकर चले गए।

यही एकमात्र तर्कसंगत स्पष्टीकरण प्रतीत हो रहा था। लेकिन चोर घर से भागने में कामयाब कैसे हुआ? जब मैं सुबह उठकर दरवाजा खोलने गया, तो मैंने देखा कि सामने का दरवाजा बंद था, जैसा मैंने रात को छोड़ा था। बाकी दरवाजे और खिड़कियां अपनी जगह पर थीं, सब सुरक्षित और मजबूती से बंद थीं। कुत्ते भी? मान लीजिए कि चोर ऊपर की किसी खिड़की से कूदकर भाग गया, तो वह कुत्तों से कैसे बच निकला? क्या वह उनके लिए नशीला मांस लेकर आया था? जैसे ही यह संदेह मेरे मन में आया, कुत्ते खुद एक कोने से मेरी ओर दौड़ते हुए आए और गीली घास पर एक-दूसरे को लोटपोट करने लगे। वे इतने चुस्त-दुरुस्त थे कि उन्हें होश में लाना और फिर से बांधना बड़ी मुश्किल से संभव हुआ। जितना ज्यादा मैं इस बारे में सोचता गया, श्री फ्रैंकलिन का स्पष्टीकरण उतना ही कम संतोषजनक प्रतीत होने लगा।

हमने नाश्ता किया—घर में चाहे कुछ भी हो जाए, चोरी हो या हत्या, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, नाश्ता तो करना ही पड़ता है। नाश्ता करने के बाद, मेरी पत्नी ने मुझे बुलवाया; और मुझे मजबूर होकर उन्हें वो सब बताना पड़ा जो मैंने अब तक छिपा रखा था, जो भारतीयों और उनकी साजिश से संबंधित था। उच्च साहस की महिला होने के कारण, मेरी बातों के पहले झटके से वो जल्दी उबर गईं। उनका मन उन विधर्मी बदमाशों और उनकी साजिश से कहीं ज़्यादा अपनी बेटी को लेकर चिंतित था। "तुम जानती हो कि राहेल कितनी अजीब है, और कभी-कभी वह दूसरी लड़कियों से कितनी अलग तरह से व्यवहार करती है," मेरी पत्नी ने मुझसे कहा। "लेकिन मैंने अपने पूरे

अनुभव में उसे इतना अजीब और इतना शांत कभी नहीं देखा जितना वह अब है। उसके गहने खोने से मानो उसका दिमाग खराब हो गया है। किसने सोचा होगा कि वो भयानक हीरा इतने कम समय में उस पर इतना असर डाल सकता है?"

यह वाकई अजीब था। खिलौनों और गहनों की बात करें तो, मिस राहेल आम लड़कियों की तरह इनके प्रति इतनी दीवानी नहीं थीं। फिर भी, वह अपने कमरे में बंद होकर बहुत दुखी थीं। यह कहना भी उचित होगा कि घर में हम सब में से केवल वही अकेली नहीं थीं जो अपनी दिनचर्या से भटक गई थीं। उदाहरण के लिए, मिस्टर गॉडफ्रे —जो पेशे से तो एक तरह से सांत्वना देने वाले थे—समझ नहीं पा रहे थे कि उन्हें अपनी मदद कहाँ से करनी चाहिए। उनका मनोरंजन करने के लिए कोई साथी नहीं था, और उन्हें मिस राहेल को सांत्वना देने के लिए महिलाओं की पीड़ा को समझने का कोई मौका भी नहीं मिला, इसलिए वे घर और बगीचे में इधर-उधर भटक रहे थे। हमारे साथ जो विपत्ति आई थी, उसके बाद उन्हें क्या करना चाहिए, इस बारे में वे दुविधा में थे। क्या उन्हें परिवार को उनकी वर्तमान स्थिति में एक अतिथि के रूप में अपनी जिम्मेदारी से मुक्त कर देना चाहिए, या इस उम्मीद में रुक जाना चाहिए कि शायद उनकी मामूली सेवाएँ भी किसी काम आ सकें? अंततः उन्होंने यही निर्णय लिया कि इस तरह के असाधारण पारिवारिक संकट के मामले में अंतिम उपाय ही शायद सबसे उचित और विवेकपूर्ण विकल्प था। परिस्थितियाँ ही किसी व्यक्ति की असलियत परखती हैं। परिस्थितियों से जूझते हुए श्री गॉडफ्रे मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक कमज़ोर निकले। जहाँ तक नौकरानियों की बात है, रोज़ाना स्पीयरमैन को छोड़कर, जो अकेली रहती थी, वे कोनों में फुसफुसाती रहीं और संदेह भरी निगाहों से इधर-उधर देखती रहीं, जैसा कि घर में कुछ असामान्य घटित होने पर परिवार के कमज़ोर सदस्यों का व्यवहार होता है। मैं स्वयं भी बेचैन और चिड़चिड़ा हो गया था। उस शापित मूनस्टोन ने हम सबको अस्त-व्यस्त कर दिया था।

ग्यारह बजने से कुछ ही पहले श्री फ्रैंकलिन वापस आए। ऐसा प्रतीत होता था कि उनके दृढ़ निश्चय वाले स्वभाव में, उनके जाने के बाद से पड़े तनाव के कारण, दरार आ गई थी। वे हमें छोड़कर बहुत तेज़ी से गए थे; और वापस आते-आते बहुत धीमे हो गए। जब वे गए थे, तब वे लोहे के समान कठोर थे। जब वे लौटे, तब वे रुई से भरे हुए, एकदम ढीले-ढाले हो गए थे।

"अच्छा," मेरी पत्नी ने कहा, "क्या पुलिस आ रही है?"

"जी हां," श्री फ्रैंकलिन कहते हैं; "उन्होंने कहा कि वे मेरा पीछा करेंगे। आपके स्थानीय पुलिस बल के अधीक्षक सीग्रेव और उनके दो आदमी। बस एक औपचारिकता! मामला निराशाजनक है।"
"क्या! क्या भारतीय भाग निकले, महोदय?" मैंने पूछा।
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "बेचारे सताए गए भारतीयों को बेहद अन्यायपूर्ण तरीके से जेल में डाल दिया गया है। वे उतने ही निर्दोष हैं जितना कि अजन्मा बच्चा। मेरा यह विचार कि उनमें से कोई एक घर में छिपा हुआ था, मेरे बाकी सभी विचारों की तरह ही व्यर्थ साबित हो गया है। यह बात बिल्कुल असंभव साबित हो चुकी है," श्री फ्रैंकलिन अपनी अक्षमता पर बड़े चाव से कहते हैं।
मूनस्टोन के मामले में इस बिल्कुल नए मोड़ की घोषणा करके हमें आश्चर्यचकित करने के बाद, हमारे युवक ने अपनी चाची के अनुरोध पर बैठ कर अपनी बात स्पष्ट की।
ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका दृढ़ निश्चय फ्रिज़िंगहॉल तक कायम रहा। उसने मजिस्ट्रेट के सामने सारा मामला स्पष्ट रूप से रख दिया था, और मजिस्ट्रेट ने तुरंत पुलिस को बुलवा लिया। भारतीयों के बारे में की गई शुरुआती पूछताछ से पता चला कि उन्होंने शहर छोड़ने का ज़रा भी प्रयास नहीं किया था। पुलिस से पूछे गए आगे के प्रश्नों से यह सिद्ध हुआ कि तीनों को पिछली रात दस से ग्यारह बजे के बीच अपने लड़के के साथ फ्रिज़िंगहॉल लौटते देखा गया था - जिससे (समय और दूरी को ध्यान में रखते हुए) यह भी सिद्ध हुआ कि वे हमारी छत पर प्रस्तुति देने के बाद सीधे वापस चले गए थे। इसके बाद, आधी रात को, पुलिस को उनके रहने वाले साझा लॉजिंग हाउस की तलाशी लेने का अवसर मिला, और उन्होंने तीनों को फिर से देखा, और उनके छोटे लड़के को भी हमेशा की तरह उनके साथ देखा। आधी रात के तुरंत बाद मैंने खुद घर को सुरक्षित रूप से बंद कर दिया था। भारतीयों के पक्ष में इससे स्पष्ट सबूत शायद ही हो सकता था। मजिस्ट्रेट ने कहा कि अब तक उनके खिलाफ संदेह का कोई मामला भी नहीं बनता है। लेकिन, जब पुलिस मामले की जांच करने आई, तो संभवत: बाज़ीगरों से संबंधित कुछ खुलासे हो सकते थे। इसलिए उसने उन्हें बदमाश और आवारा बताकर एक हफ्ते के लिए हमारे हवाले कर दिया, ताकि उन्हें ताला लगाकर रखा जा सके। उन्होंने अनजाने में कस्बे में कुछ किया था (मुझे याद नहीं क्या), जिससे वे कानून के दायरे में आ गए थे। हर मानवीय संस्था (न्याय व्यवस्था सहित) थोड़ी-बहुत लचीली हो जाती है, बशर्ते आप उसे सही तरीके से इस्तेमाल करें। माननीय मजिस्ट्रेट मेरी पत्नी के

पुराने दोस्त थे, और अदालत खुलते ही सुबह उन भारतीयों को एक हफ्ते के लिए "सज़ा" दे दी गई।

फ्रिज़िंगहॉल में घटी घटनाओं का श्री फ्रैंकलिन का वर्णन कुछ इस प्रकार था। खोए हुए रत्न के रहस्य से जुड़ा भारतीय सुराग अब मानो हमारे हाथों में ही टूट चुका था। यदि बाज़ीगर निर्दोष थे, तो आश्चर्य के नाम पर मिस राहेल की दराज से मूनस्टोन किसने निकाला था?

दस मिनट बाद, हमारी असीम राहत के लिए, अधीक्षक सीग्रेव घर पहुंचे। उन्होंने बताया कि उन्होंने श्री फ्रैंकलिन को छत पर धूप में बैठे देखा (मेरा अनुमान है कि उनका इतालवी पक्ष ऊपर की ओर था), और उन्होंने पुलिस को गुजरते हुए चेतावनी दी कि जांच शुरू होने से पहले ही जांच निराशाजनक है।

हमारे जैसे परिवार के लिए, फ्रिज़िंगहॉल पुलिस के अधीक्षक सबसे भरोसेमंद अधिकारी थे, जिन्हें देखकर हम सब मंत्रमुग्ध हो जाते थे। श्री सीग्रेव लंबे और तगड़े थे, और उनका व्यवहार फौजी शैली का था। उनकी आवाज़ बुलंद और प्रभावशाली थी, उनकी आँखें दृढ़ निश्चय से भरी थीं, और उनका शानदार फ्रॉक-कोट उनके चमड़े के पैंट तक खूबसूरती से बटनों से बंद होता था। उनके चेहरे पर साफ झलकता था, "मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसकी आपको ज़रूरत है!" और वे अपने दो अधीनस्थ पुलिसकर्मियों को इतनी सख्ती से आदेश देते थे कि हम सब आश्वस्त हो जाते थे कि उनसे कोई खिलवाड़ नहीं कर सकता।

उन्होंने परिसर के अंदर और बाहर चारों ओर छानबीन शुरू की; उनकी जाँच से यह साबित हो गया कि बाहर से कोई चोर नहीं घुसा था, और इसलिए चोरी घर के ही किसी व्यक्ति ने की होगी। आप कल्पना कीजिए कि जब यह आधिकारिक सूचना नौकरों तक पहुँची तो उनकी क्या हालत रही होगी। अधीक्षक ने पहले शयनकक्ष की जाँच करने का निर्णय लिया, और उसके बाद नौकरों की जाँच करने का। उसी समय, उन्होंने अपने एक आदमी को नौकरों के शयनकक्षों की ओर जाने वाली सीढ़ी पर तैनात कर दिया, और उसे निर्देश दिया कि अगले आदेश तक घर में किसी को भी उसके पास से न गुजरने दे।

इस घटनाक्रम के दौरान, परिवार के कमज़ोर सदस्य वहीं पर बौखला गए। वे अपने-अपने कोनों से उछलकर बाहर निकले, एक साथ मिस राहेल के कमरे में ऊपर चले गए (इस बार रोसन्ना स्पीयरमैन भी उनके साथ थीं), सुपरिंटेंडेंट सीग्रेव पर टूट पड़े

और, सभी समान रूप से दोषी दिखते हुए, उनसे तुरंत यह बताने को कहा कि उन्हें उनमें से किस पर शक है।
अधीक्षक महोदय ने परिस्थिति के अनुरूप अपनी कुशलता प्रदर्शित की; उन्होंने दृढ़ निश्चय के साथ उनकी ओर देखा और अपने सैन्य लहजे से उन्हें भयभीत कर दिया।
“अब, तुम सब औरतें नीचे जाओ; मैं तुम्हें यहाँ नहीं रखूँगा। देखो!” सुपरिटेंडेंट ने अचानक मिस राहेल के दरवाजे के बाहरी किनारे पर, ताले के ठीक नीचे, सजावटी पेंट के एक छोटे से धब्बे की ओर इशारा करते हुए कहा। “देखो, तुममें से कुछ की पेटीकोट ने पहले ही कितना नुकसान कर दिया है। निकल जाओ! निकल जाओ!” रोसन्ना स्पीयरमैन, जो उनके सबसे करीब थी और दरवाजे पर उस छोटे से धब्बे के सबसे पास थी, ने आज्ञाकारिता का उदाहरण पेश किया और तुरंत अपने काम पर चली गई। बाकी सब भी उसके पीछे-पीछे बाहर चली गईं। सुपरिटेंडेंट ने कमरे की जाँच पूरी की और बिना कोई बात बताए मुझसे पूछा कि चोरी का पता सबसे पहले किसने लगाया था। मेरी बेटी ने सबसे पहले पता लगाया था। मेरी बेटी को बुलवाया गया।
शुरुआत में ही अधीक्षक महोदय पेनेलोप के साथ कुछ ज़्यादा ही सख़्त हो गए। "अब, युवती, मेरी बात सुनो, और ध्यान रखना कि तुम सच बोलो।" पेनेलोप तुरंत भड़क उठी। "मुझे झूठ बोलना कभी नहीं सिखाया गया, श्रीमान पुलिसवाले! और अगर पिताजी वहाँ खड़े होकर मुझे झूठ और चोरी के आरोप में फंसा हुआ सुन सकते हैं, और मेरा अपना कमरा मेरे लिए बंद कर दिया जाए, और मेरी इज़्ज़त मिट्टी में मिला दी जाए, जो एक बेचारी लड़की के पास बस बची हुई इज़्ज़त है, तो वो वैसे अच्छे पिता नहीं हैं जैसा मैं उन्हें समझती हूँ!" मेरे एक सटीक शब्द ने न्याय और पेनेलोप के बीच बातचीत को थोड़ा बेहतर बना दिया। सवाल-जवाब का सिलसिला सुचारू रूप से चला और कुछ भी उल्लेखनीय नहीं निकला। मेरी बेटी ने मिस राहेल को रात में सोने से पहले हीरे को अलमारी के दराज में रखते हुए देखा था। अगली सुबह आठ बजे वह मिस राहेल के लिए चाय का कप लेकर अंदर गई, और उसने दराज को खुला और खाली पाया। इस पर उसने घर में हंगामा मचा दिया - और यहीं पेनेलोप की गवाही का अंत हो गया।
इसके बाद अधीक्षक महोदय ने सुश्री राहेल से मिलने की इच्छा जताई। पेनेलोप ने दरवाजे के बाहर से ही उनकी यह बात बताई। जवाब भी उसी रास्ते से हम तक पहुँचा: "मुझे पुलिसवाले को कुछ नहीं बताना है—मैं किसी से मिल नहीं सकती।" यह सुनकर

हमारे अनुभवी अधिकारी उतने ही हैरान और नाराज़ दिखे। मैंने उन्हें बताया कि मेरी पत्नी बीमार है और उनसे थोड़ी देर रुकने और बाद में मिलने का अनुरोध किया। फिर हम नीचे गए और वहाँ हमें श्री गॉडफ्रे और श्री फ्रैंकलिन गलियारे से आते हुए मिले।
घर में रहने वाले उन दोनों सज्जनों को बुलाया गया ताकि वे इस मामले पर कुछ प्रकाश डाल सकें। उनमें से किसी को भी इसके बारे में कुछ पता नहीं था। क्या उन्होंने पिछली रात कोई संदिग्ध आवाज़ सुनी थी? उन्होंने बारिश की बूँदों के अलावा कुछ नहीं सुना था। क्या मैं, जो उन दोनों से ज़्यादा देर तक जागता रहा, मैंने भी कुछ नहीं सुना? कुछ नहीं! पूछताछ से मुक्त होने पर, श्री फ्रैंकलिन, हमारी मुश्किल के प्रति अपनी लाचारी को बरकरार रखते हुए, मेरे कान में फुसफुसाए: "वह आदमी हमारे किसी काम का नहीं है। अधीक्षक सीग्रेव एक मूर्ख है।" अपनी बारी में मुक्त होने पर, श्री गॉडफ्रे मेरे कान में फुसफुसाए - "ज़ाहिर तौर पर एक बहुत ही सक्षम व्यक्ति। बेटरएज, मुझे उस पर पूरा भरोसा है!" जैसा कि मेरे समय से पहले के एक विद्वान ने कहा था, कई लोगों की कई राय होती हैं।
अधीक्षक महोदय की अगली कार्रवाई उन्हें फिर से "बेडरूम" में ले गई, और मेरी बेटी और मैं उनके पीछे-पीछे चल रहे थे। उनका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या रात के दौरान कोई फर्नीचर अपनी सामान्य जगह से हटाया गया था - कमरे में उनकी पिछली जाँच इस बिंदु पर उनके मन को पूरी तरह संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त नहीं थी।
जब हम अभी भी कुर्सियों और मेजों के बीच छानबीन कर ही रहे थे कि अचानक शयनकक्ष का दरवाजा खुल गया। सबसे मिलने से इनकार करने के बाद, मिस राहेल, हम सभी को आश्चर्यचकित करते हुए, अपनी मर्जी से हमारे बीच आ गईं। उन्होंने कुर्सी से अपनी बगीचे वाली टोपी उठाई और फिर सीधे पेनेलोप के पास जाकर यह सवाल पूछा:--
"क्या श्री फ्रैंकलिन ब्लेक ने आज सुबह आपको मेरे लिए एक संदेश देकर भेजा था?"
"हाँ मिस।"
"वह मुझसे बात करना चाहता था, है ना?"
"हाँ मिस।"
"जहां वह अब है?"
नीचे छत पर आवाज़ें सुनकर मैंने खिड़की से बाहर देखा और पाया कि दोनों सज्जन एक साथ ऊपर-नीचे चल रहे थे। अपनी बेटी की ओर से मैंने कहा, "श्रीमान फ्रैंकलिन छत पर हैं, महोदया।"

एक शब्द भी कहे बिना, और उससे बात करने की कोशिश कर रहे अधीक्षक महोदय की बात अनसुनी करते हुए, वह मौत की तरह पीली पड़ गई थी और अजीब तरह से अपने ही विचारों में डूबी हुई थी, उसने कमरा छोड़ दिया और छत पर अपने चचेरे भाइयों के पास चली गई।

यह मेरी ओर से उचित सम्मान की कमी और शिष्टाचार का उल्लंघन था, लेकिन लाख कोशिश करने पर भी मैं खिड़की से बाहर देखने से खुद को रोक नहीं पाया जब मिस राहेल बाहर सज्जनों से मिलीं। वह श्री गॉडफ्रे की ओर ध्यान दिए बिना ही श्री फ्रैंकलिन के पास चली गईं, जिसके बाद श्री गॉडफ्रे पीछे हट गए और उन्हें अकेला छोड़ दिया। उन्होंने श्री फ्रैंकलिन से जो कुछ कहा, वह बहुत गुस्से में कहा गया प्रतीत हुआ। यह बातचीत कुछ ही समय तक चली, और खिड़की से मैंने उनके चेहरे को देखकर ऐसा लगा कि वे आश्चर्यचकित रह गए। जब वे दोनों साथ थे, तभी मेरी मालकिन छत पर आ गईं। मिस राहेल ने उन्हें देखा - श्री फ्रैंकलिन से कुछ अंतिम शब्द कहे - और अपनी माँ के आने से पहले ही अचानक घर के अंदर चली गईं। मेरी मालकिन स्वयं भी आश्चर्यचकित रह गईं, और श्री फ्रैंकलिन की हैरानी देखकर उनसे बात की। श्री गॉडफ्रे भी उनके साथ आ गए और उन्होंने भी बात की। श्री फ्रैंकलिन उन दोनों के बीच थोड़ा दूर चले गए, शायद उन्हें कुछ बता रहे थे कि क्या हुआ था, क्योंकि वे दोनों कुछ कदम चलने के बाद अचानक रुक गए, जैसे किसी अचंभित व्यक्ति हों। मैंने अभी इतना ही देखा था कि बैठक कक्ष का दरवाजा ज़ोर से खुला। मिस राहेल गुस्से से आग बबूला होकर, आँखों में भयंकर क्रोध और गालों में लाली लिए तेज़ी से अपने शयनकक्ष की ओर चली गईं। अधीक्षक महोदय ने एक बार फिर उनसे पूछताछ करने का प्रयास किया। वह अपने शयनकक्ष के दरवाजे पर ही उनकी ओर मुड़ गईं। "मैंने आपको नहीं बुलाया है!" वह ज़ोर से चिल्लाईं। "मुझे आपकी ज़रूरत नहीं है। मेरा हीरा खो गया है। न तो आप और न ही कोई और इसे कभी ढूंढ पाएगा!" ये शब्द कहकर वह अंदर चली गईं और हमारे सामने दरवाजा बंद कर लिया। पेनेलोप, जो दरवाजे के सबसे पास खड़ी थी, ने जैसे ही वह फिर से अकेली हुई, उसके फूट-फूट कर रोने की आवाज़ सुनी।

एक पल गुस्से से भरी, अगले ही पल रोती हुई! इसका क्या मतलब था?

मैंने अधीक्षक को बताया कि इसका मतलब है कि मिस राहेल अपने गहने खोने से बहुत परेशान थीं। परिवार की प्रतिष्ठा की चिंता होने के कारण, मुझे अपनी युवती को पुलिस अधिकारी के सामने भी इस तरह व्यवहार करते देखना बहुत दुखदायी लगा,

और मैंने इसके लिए यथासंभव बहाना बनाया। मेरे मन में मिस राहेल के अजीबोगरीब शब्दों और व्यवहार को लेकर बहुत उलझन थी, जिसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उनके शयनकक्ष के दरवाजे पर कही गई बातों को आधार मानकर मैं यही निष्कर्ष निकाल सका कि पुलिस को बुलाने से उन्हें बहुत ठेस पहुंची थी, और मिस्टर फ्रैंकलिन का छत पर आश्चर्यचकित होना इसलिए था क्योंकि उन्होंने (पुलिस को बुलाने में मुख्य भूमिका निभाने वाले व्यक्ति के रूप में) उनसे यही बात कही थी। अगर मेरा अनुमान सही था, तो अपना हीरा खोने के बाद, उन्हें उन लोगों की घर में मौजूदगी पर आपत्ति क्यों थी जिनका काम उसे वापस दिलाना था? और भला उन्हें कैसे पता था कि मूनस्टोन फिर कभी नहीं मिलेगा?

फिलहाल, घर में किसी से भी उन सवालों का जवाब मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। श्री फ्रैंकलिन को ऐसा लगता था मानो किसी नौकर को—भले ही मैं कितना बूढ़ा नौकर था—मिस राहेल ने उनसे छत पर क्या कहा था, यह बताना सम्मान की बात हो। श्री गॉडफ्रे, जो एक सज्जन और रिश्तेदार होने के नाते शायद श्री फ्रैंकलिन के विश्वासपात्र थे, उन्होंने उस विश्वास का सम्मान किया, जैसा कि उनका कर्तव्य था। मेरी पत्नी, जो निस्संदेह इस गुप्त बात से अवगत थीं और जिनकी मिस राहेल तक पहुँच थी, ने खुले तौर पर स्वीकार किया कि उन्हें उनकी कोई बात समझ नहीं आई। "जब तुम हीरे की बात करती हो तो मुझे गुस्सा आता है!" उनकी माँ के सारे प्रभाव भी उनसे इससे ज़्यादा एक शब्द नहीं निकलवा सके।

तो हम मिस राहेल के मामले में और मूनस्टोन के मामले में भी गतिरोध में फंस गए थे। पहले मामले में, मेरी पत्नी हमारी मदद करने में असमर्थ थीं। दूसरे मामले में (जैसा कि आप अभी समझ जाएंगे), श्री सीग्रेव एक ऐसे अधीक्षक की स्थिति की ओर बढ़ रहे थे जो अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करने में असमर्थ हो चुका था।

कमरे की पूरी छानबीन करने के बाद भी फर्नीचर के बीच कुछ भी न मिलने पर, हमारे अनुभवी अधिकारी ने मुझसे यह जानने के लिए संपर्क किया कि क्या नौकरों को आम तौर पर उस जगह के बारे में पता था या नहीं, जहां हीरे को रात के लिए रखा गया था।

“मुझे पता था कि उसे कहाँ रखा गया था, महोदय,” मैंने कहा। “शुरू में तो मुझे पता था। नौकर सैमुअल को भी पता था—क्योंकि वह उस रात हॉल में मौजूद था जब वे हीरे को कहाँ रखने के बारे में बात कर रहे थे। मेरी बेटी को भी पता था, जैसा कि उसने आपको पहले ही बताया है। हो सकता है उसने या सैमुअल ने दूसरे नौकरों को इसके बारे में बताया हो—या हो सकता है कि दूसरे नौकरों ने हॉल के बगल वाले दरवाजे से,

जो पीछे की सीढ़ियों की ओर खुला हो, यह बात सुनी हो। जहाँ तक मुझे पता है, हो सकता है कि कल रात घर में सभी को पता हो कि हीरा कहाँ था।"
मेरे जवाब ने अधीक्षक महोदय के संदेह के लिए एक व्यापक क्षेत्र प्रस्तुत कर दिया, इसलिए उन्होंने नौकरों के चरित्र के बारे में पूछकर इसे सीमित करने का प्रयास किया।
मुझे तुरंत रोसन्ना स्पीयरमैन का ख्याल आया। लेकिन एक बेचारी लड़की पर शक करना न तो मेरा काम था और न ही मेरी इच्छा, जिसकी ईमानदारी पर मेरी जान-पहचान के समय से ही कोई शक नहीं था। सुधारगृह की मैट्रन ने मेरी मालकिन को उसके बारे में बताया था कि वह सच्चे मन से पश्चाताप करने वाली और पूरी तरह भरोसेमंद लड़की है। पहले तो अधीक्षक का काम था उस पर शक करने का कारण पता लगाना—और उसके बाद ही, और तभी, मेरा कर्तव्य होगा कि मैं उन्हें बताऊं कि वह मेरी मालकिन की सेवा में कैसे आई। मैंने कहा, "हमारे सभी लोग अच्छे चरित्र के हैं। और सभी अपनी मालकिन के भरोसे के लायक हैं।" इसके बाद, श्री सीग्रेव के लिए बस एक ही काम बचा था—यानी, काम पर लग जाना और नौकरों के चरित्र की खुद जांच करना।
एक-एक करके उनकी पूछताछ की गई। एक-एक करके सभी के पास कहने को कुछ नहीं था—और (महिलाओं की बात करें तो) उन्होंने बहुत विस्तार से और अपने शयनकक्षों पर लगाए गए प्रतिबंध के प्रति बहुत गुस्से के साथ अपनी बात रखी। बाकी सभी को नीचे उनके कमरों में वापस भेज दिया गया, फिर पेनेलोप को बुलाया गया और उससे अलग से दूसरी बार पूछताछ की गई।
मेरी बेटी का कमरे में थोड़ा गुस्सा फूटना और खुद को संदिग्ध समझने की उसकी तत्परता ने सुपरिटेंडेंट सीग्रेव पर बुरा असर डाला। ऐसा लग रहा था कि उनके मन में यह बात भी खटक रही थी कि रात में हीरे को आखिरी बार उसी ने देखा था। दूसरी पूछताछ खत्म होने पर मेरी बेटी गुस्से में मेरे पास लौटी। अब उसे कोई शक नहीं था - पुलिस अधिकारी ने लगभग उसे बता ही दिया था कि वही चोर है! मुझे (श्री फ्रैंकलिन के नज़रिए से) यह मानना मुश्किल हो रहा था कि वह इतना मूर्ख हो सकता है। लेकिन, हालांकि उसने कुछ नहीं कहा, जिस नज़र से उसने मेरी बेटी को देखा, वह देखने में बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी। मैंने बेचारी पेनेलोप के साथ इसे हंसी में उड़ा दिया, यह सोचकर कि यह इतनी हास्यास्पद बात है कि इसे गंभीरता से लेने की ज़रूरत नहीं है - जो कि वाकई थी। मुझे डर है कि मैं भी चुपके से गुस्सा हो गई थी। यह थोड़ा कष्टदायक

था - सचमुच। मेरी बेटी एक कोने में बैठ गई, सिर पर एप्रन ओढ़े, बिल्कुल टूटे हुए दिल से। आप कहेंगे, ये उसकी मूर्खता थी। उसे तब तक इंतज़ार करना चाहिए था जब तक वो खुलेआम उस पर आरोप न लगा दे। खैर, मैं भी उतना ही शांत स्वभाव का हूँ, इसलिए ये बात मानता हूँ। फिर भी, अधीक्षक महोदय को शायद याद आ गया होगा—जो भी याद आया हो, भाड़ में जाए वो!

जांच का अगला और आखिरी चरण मामले को, जैसा कि कहते हैं, एक गंभीर मोड़ पर ले आया। अधिकारी ने मेरी मालकिन से मुलाकात की (जिसमें मैं भी मौजूद था)। उन्हें यह बताने के बाद कि हीरा घर में किसी ने चुराया होगा, उन्होंने खुद और अपने आदमियों को नौकरों के कमरों और बक्सों की मौके पर तलाशी लेने की अनुमति मांगी। मेरी नेक मालकिन, अपनी उदार और उच्च कोटि की महिला होने के नाते, हमें चोरों की तरह व्यवहार किए जाने देने से साफ इनकार कर दिया। उन्होंने कहा, "मैं कभी भी इस तरह का बदला लेने के लिए राजी नहीं होऊंगी, क्योंकि मैं अपने घर में काम करने वाले वफादार नौकरों की ऋणी हूं।"

सुपरिटेंडेंट महोदय ने झुककर मेरी ओर देखा और उनकी नज़रें साफ कह रही थीं, "अगर आप मुझे इस तरह बांधकर ही रखना चाहते हैं, तो मुझे नौकरी पर क्यों रखा है?" नौकरों के मुखिया के तौर पर, मुझे तुरंत एहसास हुआ कि सभी पक्षों के साथ न्याय करने के लिए, हमें अपनी मालकिन की उदारता का लाभ नहीं उठाना चाहिए। मैंने कहा, "हम आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करते हैं; लेकिन हम इस मामले में उचित कार्य करने के लिए अपनी चाबियां सौंपने की अनुमति चाहते हैं। जब गैब्रियल बेटरएज उदाहरण पेश करेंगे," मैंने सुपरिटेंडेंट सीग्रेव को दरवाजे पर रोकते हुए कहा, "तो बाकी नौकर भी उनका अनुसरण करेंगे, मैं आपसे वादा करता हूं। ये रही मेरी चाबियां!" मेरी मालकिन ने मेरा हाथ पकड़ा और आंखों में आंसू लिए मुझे धन्यवाद दिया। हे भगवान! उस पल, सुपरिटेंडेंट सीग्रेव को सबक सिखाने का मौका पाने के लिए मैं क्या कुछ नहीं दे देता!

जैसा मैंने उनसे वादा किया था, बाकी नौकरों ने भी मेरा अनुसरण किया, बेशक मेरी सोच के बिल्कुल विपरीत, लेकिन सभी ने वही राय रखी जो मेरी थी। पुलिस अधिकारी अपने सामान में छानबीन कर रहे थे, जबकि औरतें देखने लायक थीं। रसोइया ऐसी लग रही थी मानो वह अधीक्षक महोदय को भट्टी पर जिंदा भून देगी, और बाकी औरतें ऐसी लग रही थीं मानो पकने के बाद उसे खा जाएंगी।

तलाशी पूरी हो गई, और ज़ाहिर है, कहीं भी हीरा या हीरे का कोई निशान नहीं मिला। सुपरिटेंडेंट सीग्रेव मेरे छोटे से कमरे में चले गए ताकि वे आगे की योजना पर विचार कर सकें। वे और उनके आदमी घंटों से घर में थे, लेकिन मूनस्टोन कैसे चुराया गया, या चोर कौन था, इस बारे में कोई सुराग नहीं मिला था।

जब पुलिस अधिकारी अभी भी एकांत में सोच-विचार कर रहे थे, मुझे पुस्तकालय में श्री फ्रैंकलिन से मिलने के लिए बुलाया गया। मेरे असीम आश्चर्य के बीच, जैसे ही मेरा हाथ दरवाजे पर पहुँचा, वह अचानक अंदर से खुल गया और रोसन्ना स्पीयरमैन बाहर निकली!

सुबह पुस्तकालय की सफाई हो जाने के बाद, पहली और दूसरी नौकरानी को दिन के किसी भी समय उस कमरे में जाने की अनुमति नहीं थी। मैंने रोसन्ना स्पीयरमैन को रोका और मौके पर ही उस पर घरेलू अनुशासन भंग करने का आरोप लगाया।

मैंने पूछा, "इस समय आपको पुस्तकालय में क्या चाहिए होगा?"

"श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक की एक अंगूठी ऊपर गिर गई थी," रोसन्ना ने कहा; "और मैं उन्हें देने के लिए पुस्तकालय में गई थी।" यह जवाब देते समय लड़की का चेहरा शर्म से लाल हो गया था; और वह सिर हिलाते हुए और खुद को बहुत महत्वपूर्ण समझते हुए चली गई, जिसका कारण मैं समझ नहीं पा रहा था। घर में हुई घटनाओं ने निस्संदेह सभी नौकरानियों को कमोबेश परेशान कर दिया था; लेकिन उनमें से कोई भी अपने स्वभाव से पूरी तरह विचलित नहीं हुई थी, जैसा कि रोसन्ना, स्पष्ट रूप से, अब अपने स्वभाव से विचलित हो गई थी।

मैंने श्री फ्रैंकलिन को पुस्तकालय की मेज पर लिखते हुए पाया। मेरे कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने रेलवे स्टेशन जाने के लिए वाहन मांगा। उनकी आवाज की पहली ध्वनि ने मुझे बता दिया कि अब उनके दृढ़ निश्चय का रूप एक बार फिर सामने आ गया था। रूई से बना हुआ वह व्यक्ति गायब हो गया था; और लोहे से बना हुआ वह व्यक्ति फिर से मेरे सामने बैठा था।

"क्या आप लंदन जा रहे हैं, महोदय?" मैंने पूछा।

श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "लंदन को टेलीग्राम भेजने जा रहा हूँ। मैंने अपनी चाची को मना लिया है कि हमें अधीक्षक सीग्रेव से भी ज़्यादा समझदार व्यक्ति की ज़रूरत है जो हमारी मदद कर सके; और मैंने अपने पिता को टेलीग्राम भेजने की उनकी अनुमति भी ले ली है। वे पुलिस प्रमुख को जानते हैं, और आयुक्त हीरे के रहस्य को सुलझाने के लिए सही व्यक्ति का पता लगा सकते हैं। वैसे, रहस्यों की बात करें तो," श्री फ्रैंकलिन

अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहते हैं, "अस्तबल जाने से पहले मुझे आपसे एक और बात कहनी है। अभी किसी को इसके बारे में कुछ मत बताना; लेकिन या तो रोज़ाना स्पीयरमैन का दिमाग ठीक नहीं है, या मुझे डर है कि वह मूनस्टोन के बारे में ज़रूरत से ज़्यादा जानती है।"

मुझे ठीक से याद नहीं कि उनकी यह बात सुनकर मैं ज़्यादा चौंकी या परेशान हुई। अगर मैं जवान होती, तो शायद मिस्टर फ्रैंकलिन को यह बात बता देती। लेकिन बुढ़ापे में एक अच्छी आदत पड़ जाती है। जब आपको रास्ता साफ़ नज़र न आए, तो चुप रहना ही बेहतर है।

“वह मेरे बेडरूम में गिरी हुई अंगूठी लेकर यहाँ आई,” श्री फ्रैंकलिन ने आगे बताया। “जब मैंने उसे धन्यवाद दिया, तो ज़ाहिर है मुझे उम्मीद थी कि वह चली जाएगी। लेकिन इसके बजाय, वह मेज पर मेरे सामने खड़ी हो गई और मुझे अजीब तरह से देखने लगी —आधी डरी हुई, आधी परिचित—मैं समझ नहीं पा रहा था। ‘हीरे के बारे में यह एक अजीब बात है, महोदय,’ उसने अचानक और बेपरवाही से कहा। मैंने कहा, ‘हाँ, है,’ और सोचने लगा कि आगे क्या होगा। कसम से, बेटरएज, मुझे लगता है कि उसका दिमाग खराब हो गया है! उसने कहा, ‘वे हीरा कभी नहीं ढूंढ पाएंगे, महोदय, है ना? नहीं! और न ही उसे चुराने वाला—मैं इसकी गवाही देती हूँ।’ उसने सचमुच मेरी तरफ सिर हिलाया और मुस्कुराई! इससे पहले कि मैं उससे पूछ पाता कि उसका क्या मतलब है, हमने बाहर आपके कदमों की आहट सुनी। मुझे लगता है कि वह आपको यहाँ पकड़ने से डर रही थी। खैर, उसका चेहरा बदल गया और वह कमरे से चली गई। आखिर इसका क्या मतलब है?”

तब भी मैं उस लड़की की कहानी उसे बताने की हिम्मत नहीं जुटा पाई। ऐसा करना लगभग उसे यह बताने जैसा ही होता कि वही चोर थी। इसके अलावा, अगर मैं सब कुछ सच-सच बता भी देती, और मान भी लेती कि वही चोर थी, तो भी यह बात समझना उतना ही मुश्किल होता कि उसने अपना राज़ दुनिया के सारे लोगों में से मिस्टर फ्रैंकलिन को ही क्यों बताया।

“मैं उस बेचारी लड़की को किसी मुसीबत में डालने का सोच भी नहीं सकता, सिर्फ इसलिए कि उसका स्वभाव चंचल है और वह अजीब तरह से बात करती है,” श्री फ्रैंकलिन ने आगे कहा। “और अगर उसने वही बात सुपरिटेंडेंट से कही होती जो उसने मुझसे कही, तो मुझे डर है कि वह मूर्ख ही होता—” वे वहीं रुक गए और बाकी बातें अनकही छोड़ दीं।

“महोदय, सबसे अच्छा तरीका यही होगा कि मैं पहले मौके पर ही अपनी मालकिन से इस बारे में दो शब्द कह दूं। मेरी मालकिन को रोसन्ना में बहुत दिलचस्पी है; और हो सकता है कि वो लड़की बस बेवजह ही इतनी जल्दबाज़ी और नादानी कर रही हो। महाराज, जब घर में कोई गड़बड़ होती है, तो नौकरानियां उदासी का पहलू देखना पसंद करती हैं—इससे बेचारी नौकरानियों को अपनी नज़र में अहमियत महसूस होती है। अगर कोई बीमार हो, तो यकीन मानिए कि औरतें भविष्यवाणी करेंगी कि वो मर जाएगा। अगर कोई गहना खो जाए, तो यकीन मानिए कि वे भविष्यवाणी करेंगी कि वो कभी नहीं मिलेगा।”

यह विचार (जिसे मैं स्वयं भी विचार करने पर संभावित मानता हूँ) श्री फ्रैंकलिन को बहुत राहत देने वाला प्रतीत हुआ: उन्होंने अपना टेलीग्राम समेटा और इस विषय को समाप्त कर दिया। टट्टू गाड़ी मंगवाने के लिए अस्तबल जाते समय, मैंने नौकरों के कक्ष में झाँका, जहाँ वे भोजन कर रहे थे। रोसन्ना स्पीयरमैन वहाँ नहीं थीं। पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि वह अचानक बीमार पड़ गई थीं और आराम करने के लिए ऊपर अपने कमरे में चली गई थीं।

"अजीब बात है! जब मैंने उसे आखिरी बार देखा था, तब वह काफी स्वस्थ लग रही थी," मैंने टिप्पणी की।

पेनेलोप मेरे पीछे-पीछे बाहर आई। उसने कहा, "बाकी लोगों के सामने इस तरह बात मत कीजिए, पिताजी। इससे वे रोसन्ना पर और भी ज़्यादा गुस्सा करेंगे। बेचारी रोसन्ना मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक के बारे में बहुत दुखी है।"

लड़की के व्यवहार का एक और पहलू भी था। अगर पेनेलोप सही होती, तो रोसन्ना की अजीब भाषा और व्यवहार का कारण शायद यही होता कि उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि वह क्या बोल रही है, बस वह मिस्टर फ्रैंकलिन को चौंका कर उनसे बात करने पर मजबूर कर दे। अगर पहेली का यही अर्थ सही माना जाए, तो शायद हॉल में मेरे पास से गुजरते समय उसके चंचल और अहंकारी व्यवहार का यही कारण था। हालांकि उन्होंने सिर्फ तीन शब्द कहे थे, फिर भी रोसन्ना ने अपनी बात मनवा ली थी और मिस्टर फ्रैंकलिन ने उससे बात की थी।

मैंने खुद टट्टू को जुताई करते देखा। रहस्यों और अनिश्चितताओं के उस भयानक जाल में, जो अब हमें घेरे हुए था, यह देखकर मुझे बहुत राहत मिली कि बकल और पट्टियाँ एक-दूसरे को कितनी अच्छी तरह समझ रही थीं! जब आपने टट्टू को कुर्सी के

शाफ्ट में पीछे की ओर जाते देखा, तो आपने कुछ ऐसा देखा जिस पर कोई संदेह नहीं था। और मैं आपको बता दूं, यह हमारे घर में एक दुर्लभ सौभाग्य बन गया था।
गाड़ी लेकर सामने के दरवाजे की ओर जाते हुए, मैंने पाया कि वहाँ न केवल श्री फ्रैंकलिन, बल्कि श्री गॉडफ्रे और अधीक्षक सीग्रेव भी सीढ़ियों पर मेरा इंतजार कर रहे थे।
अधीक्षक महोदय (नौकरों के कमरों या बक्सों में हीरा न मिलने के बाद) के चिंतन ने उन्हें एक बिल्कुल नए निष्कर्ष पर पहुँचा दिया था। अपने पहले अनुमान पर अडिग रहते हुए, यानी कि घर में किसी ने ही हीरा चुराया था, हमारे अनुभवी अधिकारी का अब यह मत था कि चोर (वे बेचारी पेनेलोप का नाम लेने से बचते हुए काफी समझदार थे, चाहे वे मन ही मन उसके बारे में कुछ भी सोचते हों!) भारतीयों के साथ मिलकर काम कर रहा था; और इसलिए उन्होंने अपनी जाँच फ्रिज़िंगहॉल की जेल में बंद जादूगरों की ओर मोड़ने का प्रस्ताव रखा। इस नए कदम की खबर सुनकर, श्री फ्रैंकलिन ने अधीक्षक महोदय को वापस शहर ले जाने की पेशकश की, जहाँ से वे हमारे स्टेशन की तरह ही आसानी से लंदन को टेलीग्राम भेज सकते थे। श्री गॉडफ्रे, जो अब भी श्री सीग्रेव पर पूरी तरह विश्वास करते थे और भारतीयों की जाँच देखने में बहुत रुचि रखते थे, ने अधिकारी के साथ फ्रिज़िंगहॉल जाने की अनुमति माँगी। दो निचले स्तर के पुलिसकर्मियों में से एक को घर पर ही छोड़ा जाना था, ताकि किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में वह वहाँ मौजूद रहे। दूसरा अधीक्षक महोदय के साथ शहर वापस जाना था। तो टट्टू गाड़ी में चारों सीटें भर चुकी थीं।
गाड़ी चलाने के लिए लगाम थामने से पहले, श्री फ्रैंकलिन मुझे कुछ कदम दूर ले गए ताकि मैं दूसरों की आवाज न सुन सकूं।
“मैं लंदन को टेलीग्राम भेजने से पहले इंतज़ार करूँगा,” उसने कहा, “जब तक मुझे भारतीयों से पूछताछ का नतीजा नहीं पता चल जाता। मेरा मानना है कि यह नासमझ स्थानीय पुलिस अधिकारी पहले की तरह ही बेखबर है और बस समय बिताने की कोशिश कर रहा है। मेरी राय में, नौकरों में से किसी का भी भारतीयों के साथ मिलीभगत होना सरासर बेतुका है। बेटरएज, मेरे लौटने तक घर पर ही रहना और रोसन्ना स्पीयरमैन के बारे में जो भी समझ सको, पता लगाने की कोशिश करना। मैं तुमसे यह नहीं कह रहा कि तुम अपने आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाओ या लड़की के साथ कोई क्रूरता करो। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि तुम हमेशा से ज़्यादा ध्यान से

देखो। हम मेरी चाची के सामने इस मामले को जितना हो सके हल्के में लेंगे—लेकिन यह मामला तुम्हारी सोच से कहीं ज़्यादा गंभीर है।”
"यह बीस हजार पाउंड की बात है, महोदय," मैंने हीरे के मूल्य के बारे में सोचते हुए कहा।
श्री फ्रैंकलिन ने गंभीरता से उत्तर दिया, "यह राहेल के मन को शांत करने का मामला है। मैं उसके बारे में बहुत चिंतित हूं।"
वह अचानक मुझे छोड़कर चला गया; मानो वह हमारे बीच की बातचीत को जल्द खत्म करना चाहता हो। मुझे लगा कि मैं उसका कारण समझ गई हूँ। आगे की बातचीत से शायद मुझे वह राज़ पता चल जाता जो मिस राहेल ने उससे छत पर कहा था।
तो वे फ्रिज़िंगहॉल के लिए रवाना हो गए। मैं लड़की के हित में, रोसन्ना से अकेले में थोड़ी बात करने के लिए तैयार था। लेकिन ज़रूरी मौका नहीं मिला। वह चाय के समय ही नीचे आई। जब वह आई, तो वह चंचल और उत्तेजित थी, उसे हिस्टीरिकल अटैक आया, मेरी मालकिन के आदेश पर उसे सैल-वोलेटाइल की एक खुराक दी गई और उसे वापस बिस्तर पर भेज दिया गया।
दिन बड़ी उदासी और निराशा के साथ बीत रहा था, मैं आपको बता सकती हूँ। मिस राहेल अभी भी अपने कमरे में ही थीं, यह कहते हुए कि वह इतनी बीमार हैं कि आज रात के खाने के लिए नीचे नहीं आ सकतीं। मेरी मालकिन अपनी बेटी को लेकर इतनी दुखी थीं कि मैं उन्हें और परेशान नहीं करना चाहती थी, इसलिए मैंने उन्हें यह नहीं बताया कि रोसन्ना स्पीयरमैन ने मिस्टर फ्रैंकलिन से क्या कहा था। पेनेलोप को अभी भी यकीन था कि उस पर तुरंत मुकदमा चलाया जाएगा, उसे सज़ा दी जाएगी और चोरी के आरोप में देश निकाला दे दिया जाएगा। बाकी महिलाओं ने अपनी बाइबिल और भजन-पुस्तकें उठा लीं और पढ़ते समय उनका चेहरा उतरा हुआ सा लग रहा था - ऐसा मैंने अपने जीवन में देखा है कि अक्सर दिन के असामान्य समय में धार्मिक अनुष्ठान करने पर ऐसा ही होता है। जहाँ तक मेरी बात है, मेरा तो रॉबिन्सन क्रूसो खोलने का भी मन नहीं हुआ। मैं आँगन में चली गई और थोड़ी सी खुशनुमा संगत की कमी के कारण, कुत्तों के घर के पास अपनी कुर्सी लगाकर कुत्तों से बातें करने लगी।
भोजन के समय से आधा घंटा पहले, दोनों सज्जन फ्रिज़िंगहॉल से वापस आ गए। उन्होंने अधीक्षक सीग्रेव से अगले दिन हमारे पास लौटने की व्यवस्था कर ली थी। वे कस्बे के पास स्थित अपने निवास पर भारतीय यात्री श्री मुर्थवेट से मिलने गए थे। श्री

फ्रैंकलिन के अनुरोध पर, उन्होंने कृपा करके उन दो भारतीयों से बात करने में उनकी मदद की, जो अंग्रेज़ी बिल्कुल नहीं जानते थे। सावधानीपूर्वक और लंबे समय तक की गई पूछताछ से कुछ भी हासिल नहीं हुआ; बाज़ीगरों द्वारा हमारे किसी भी नौकर के साथ छेड़छाड़ करने का कोई भी कारण नहीं मिला। इस निष्कर्ष पर पहुँचने के बाद, श्री फ्रैंकलिन ने लंदन को अपना टेलीग्राम भेजा, और मामला कल तक वहीं रुका रहा। जन्मदिन के अगले दिन का इतिहास यहीं समाप्त होता है। अब तक हमें आशा की कोई किरण नहीं दिखाई दी थी। हालांकि, एक-दो दिन बाद, अंधेरा थोड़ा छंट गया। कैसे और किस परिणाम के साथ, यह आप अभी जानेंगे।

अध्याय XII

गुरुवार की रात बीत गई और कुछ नहीं हुआ। शुक्रवार की सुबह दो खबरें आईं।

पहली बात: बेकर के नौकर ने बताया कि उसने पिछली दोपहर को रोसन्ना स्पीयरमैन को देखा था, जो एक मोटा घूंघट ओढ़े हुए दलदली भूमि से होकर जाने वाले पैदल रास्ते से फ्रिज़िंगहॉल की ओर जा रही थी। यह अजीब लग रहा था कि कोई रोसन्ना को पहचानने में गलती कैसे कर सकता है, क्योंकि बेचारी का कंधा उसे आसानी से पहचान दिलाता था—लेकिन वह आदमी ज़रूर गलत रहा होगा; क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, रोसन्ना गुरुवार की पूरी दोपहर बीमार होकर ऊपर अपने कमरे में थी।

दूसरी खबर डाकिया के ज़रिए आई। आदरणीय श्री कैंडी ने जन्मदिन की रात बारिश में गाड़ी चलाते हुए अपनी कई बदकिस्मती भरी बातों में से एक और बात कह दी थी और मुझसे कहा था कि डॉक्टर की त्वचा जलरोधी होती है। उनकी त्वचा के बावजूद, बारिश उन पर असर कर गई थी। उस रात उन्हें ठंड लग गई थी और अब उन्हें बुखार था। डाकिया द्वारा लाई गई आखिरी जानकारी के अनुसार, उनका सिर चकरा रहा था और वे बेहोशी की हालत में भी उतनी ही बेबाकी से बकवास कर रहे थे, जितनी बेबाकी से वे होश में रहते हुए करते थे। हम सभी को उस नन्हे डॉक्टर के लिए दुख हुआ; लेकिन श्री फ्रैंकलिन को उनकी बीमारी का सबसे ज़्यादा अफ़सोस था, खासकर मिस राहेल की वजह से। नाश्ते के समय जब मैं कमरे में थी, तब उन्होंने मेरी पत्नी से जो कहा, उससे ऐसा लगा कि उन्हें लगता है कि अगर मूनस्टोन के बारे में रहस्य जल्द ही सुलझ नहीं पाया, तो मिस राहेल को हमारे पास मौजूद सबसे अच्छी चिकित्सा सलाह की सख्त ज़रूरत पड़ सकती है।

नाश्ता खत्म हुए अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि श्री ब्लेक सीनियर का एक टेलीग्राम आया, जो उन्होंने अपने बेटे के पत्र का जवाब देते हुए भेजा था। उसमें बताया गया था

कि उन्होंने (अपने मित्र, कमिश्नर की मदद से) हमारी मदद के लिए सही व्यक्ति को ढूंढ लिया है। उनका नाम सार्जेंट कफ था; और लंदन से उनके आने की उम्मीद सुबह की ट्रेन से की जा सकती थी।

नए पुलिस अधिकारी का नाम पढ़ते ही श्री फ्रैंकलिन चौंक गए। ऐसा लगता है कि उन्होंने लंदन में अपने प्रवास के दौरान अपने पिता के वकील से सार्जेंट कफ के बारे में कुछ रोचक किस्से सुने थे।

उन्होंने कहा, "मुझे उम्मीद होने लगी है कि हमारी चिंताएं अब खत्म होने वाली हैं। अगर मैंने जो कहानियां सुनी हैं उनमें से आधी भी सच हैं, तो किसी रहस्य को सुलझाने की बात आती है तो इंग्लैंड में सार्जेंट कफ जैसा कोई दूसरा नहीं है!"

जैसे-जैसे इस प्रतिष्ठित और सक्षम व्यक्ति के आने का समय नज़दीक आता गया, हम सब उत्साहित और बेचैन होते गए। अधीक्षक सीग्रेव अपने तय समय पर लौट आए और जब उन्हें पता चला कि सार्जेंट आने वाले हैं, तो वे तुरंत कलम, स्याही और कागज़ लेकर एक कमरे में बंद हो गए, ताकि उस रिपोर्ट के नोट्स बना सकें जिसकी उनसे निश्चित रूप से अपेक्षा की जा रही थी। मैं खुद स्टेशन जाकर सार्जेंट को लाना चाहता था। लेकिन मेरी पत्नी की गाड़ी और घोड़े उपलब्ध नहीं थे, यहाँ तक कि उस प्रसिद्ध कफ के लिए भी नहीं; और पोनी-चेज़ की ज़रूरत बाद में मिस्टर गॉडफ्रे के लिए थी। उन्हें इस मुश्किल समय में अपनी चाची को छोड़कर जाने का बहुत अफ़सोस था; और उन्होंने बड़ी मेहरबानी से अपने जाने का समय आखिरी ट्रेन तक टाल दिया, ताकि वे उस चतुर लंदन पुलिस अधिकारी की राय सुन सकें। लेकिन शुक्रवार की रात उन्हें शहर में होना ही था, क्योंकि एक मुश्किल में फंसी महिला चैरिटी संस्था शनिवार सुबह उनसे सलाह लेने के लिए इंतज़ार कर रही थी।

जब सार्जेंट के आने का समय आया, तो मैं उनका इंतजार करने के लिए गेट पर चला गया।

जैसे ही मैं लॉज पहुँचा, रेलवे स्टेशन से एक मक्खी उड़कर आई; और उसमें से एक बूढ़ा, झुर्रियों वाला आदमी निकला, जो इतना दुबला-पतला था कि ऐसा लग रहा था मानो उसके शरीर के किसी भी हिस्से में मांस का एक अंश भी न हो। उसने शालीन काले कपड़े पहने थे और गले में सफेद टाई बाँधी थी। उसका चेहरा कुल्हाड़ी की तरह तीखा था और उसकी त्वचा पतझड़ के पत्ते की तरह पीली, सूखी और मुरझाई हुई थी। उसकी हल्की भूरी, स्टील जैसी आँखों में एक अजीब सी बेचैनी थी, जब वे आपकी आँखों से मिलतीं, तो ऐसा लगता मानो वे आपसे कुछ ऐसा उम्मीद कर रही हों जो आप

खुद भी नहीं जानते हों। उसकी चाल धीमी थी; उसकी आवाज़ उदास थी; उसकी लंबी, पतली उंगलियाँ पंजों की तरह मुड़ी हुई थीं। वह एक पादरी या अंतिम संस्कार करने वाला हो सकता था—या कुछ भी, सिवाय उस व्यक्ति के जो वह वास्तव में था। वह सार्जेंट कफ से भी ज़्यादा सुपरिटेंडेंट सीग्रेव के विपरीत था, और किसी संकटग्रस्त परिवार के लिए उससे कम सुकून देने वाला अधिकारी, मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप उसे ढूँढ़कर दिखाएँ, चाहे आप कहीं भी खोज लें।
"क्या यह लेडी वेरेंडर की है?" उसने पूछा।
"जी श्रीमान।"
मैं सार्जेंट कफ हूँ।
"इस तरफ आइए, महोदय, कृपया।"
घर जाते समय मैंने अपना नाम और परिवार में अपना पद बताया, ताकि वह मुझसे उस काम के बारे में बात कर सकें जिसके लिए मेरी पत्नी उन्हें नियुक्त करने वाली थीं। लेकिन उन्होंने उस काम के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। उन्होंने घर के मैदानों की प्रशंसा की और कहा कि उन्हें समुद्र की हवा बहुत ताज़गी भरी लग रही है। मैं मन ही मन सोच रहा था कि मशहूर कफ को यह प्रतिष्ठा कैसे मिली। हम घर पहुँचे, दो अजनबी कुत्तों की तरह, जिन्हें जीवन में पहली बार एक ही जंजीर से बांधा गया हो।
मैंने अपनी पत्नी के बारे में पूछा और पता चला कि वह किसी बगीचे में हैं, तो हम पीछे वाले बगीचे में गए और एक नौकर को उन्हें बुलाने के लिए भेजा। जब हम इंतज़ार कर रहे थे, सार्जेंट कफ ने बाईं ओर सदाबहार मेहराब से झाँका, हमारी गुलाब की क्यारी देखी और सीधे अंदर आ गए, मानो उन्होंने पहली बार किसी चीज़ में दिलचस्पी दिखाई हो। माली के आश्चर्य और मेरे गुस्से के लिए, यह मशहूर पुलिसवाला गुलाब की क्यारी जैसे तुच्छ विषय पर ज्ञान का भंडार साबित हुआ।
“अहा, यहाँ दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर बिल्कुल सही जगह है,” सार्जेंट ने अपने सफ़ेद बालों वाले सिर को हिलाते हुए और अपनी उदास आवाज़ में थोड़ी खुशी के साथ कहा। “गुलाब के बगीचे के लिए यही आकार है—एक वर्ग में बने वृत्त जैसा कुछ नहीं। हाँ, हाँ; सभी क्यारियों के बीच रास्ते भी हैं। लेकिन ये ऐसे कंकड़ वाले रास्ते नहीं होने चाहिए। घास, श्रीमान माली—आपके गुलाबों के बीच घास के रास्ते; कंकड़ उनके लिए बहुत सख्त होते हैं। सफेद और गुलाबी गुलाबों की यह सुंदर क्यारी कितनी प्यारी है। ये हमेशा एक साथ अच्छे लगते हैं, है ना? ये रहा सफेद कस्तूरी गुलाब, श्रीमान बेटरएज—हमारा पुराना अंग्रेजी गुलाब सबसे अच्छे और नए गुलाबों के साथ अपनी

जगह बनाए हुए है। कितना प्यारा!" सार्जेंट ने अपनी पतली उंगलियों से कस्तूरी गुलाब को सहलाते हुए और उससे ऐसे बात करते हुए कहा जैसे वह किसी बच्चे से बात कर रहा हो।
मिस राहेल का हीरा वापस दिलाने और उसे चुराने वाले चोर का पता लगाने के लिए यह एक नेक इंसान था!
"सार्जेंट, आपको गुलाब बहुत पसंद लगते हैं?" मैंने टिप्पणी की।
“मुझे किसी भी चीज़ से लगाव रखने का ज़्यादा समय नहीं मिलता,” सार्जेंट कफ कहते हैं। “लेकिन जब भी मुझे किसी चीज़ से लगाव होता है, तो श्रीमान बेटरएज, ज़्यादातर समय वह गुलाबों को ही मिलता है। मैंने अपने पिता के नर्सरी गार्डन में गुलाबों के बीच ही अपना जीवन शुरू किया था, और अगर हो सके तो मैं अपना जीवन भी गुलाबों के बीच ही समाप्त करूँगा। हाँ। एक दिन (ईश्वर की कृपा से) मैं चोरों को पकड़ने का काम छोड़ दूँगा और गुलाब उगाने की कोशिश करूँगा। श्रीमान माली, मेरी क्यारियों के बीच घास के रास्ते होंगे,” सार्जेंट कहते हैं, जिनके मन में हमारे गुलाब के बगीचे के कंकड़ वाले रास्ते अप्रिय रूप से बसे हुए प्रतीत होते थे।
"महोदय, आपके पेशे को देखते हुए यह एक अजीब सी पसंद लगती है," मैंने कहने की हिम्मत की।
सार्जेंट कफ कहते हैं, "अगर आप अपने आस-पास देखेंगे (जो ज़्यादातर लोग नहीं करते), तो आपको पता चलेगा कि किसी व्यक्ति की पसंद-नापसंद अक्सर उसके व्यवसाय से बिलकुल विपरीत होती है। मुझे गुलाब और चोर से ज़्यादा एक-दूसरे से विपरीत कोई दो चीज़ें दिखाओ; और मैं अपनी पसंद-नापसंद बदल लूँगा—अगर मेरी उम्र में अभी देर न हुई हो। आपको लगता है ना कि दमिश्क गुलाब ज़्यादातर नाज़ुक स्वभाव के लोगों के लिए अच्छा होता है, श्रीमान माली? आह! मुझे लगा ही था। एक महिला आ रही है। क्या यह लेडी वेरिंदर हैं?"
उसने उसे मुझसे या माली से पहले ही देख लिया था, हालांकि हमें पता था कि किस दिशा में देखना है, लेकिन उसे नहीं पता था। मुझे लगने लगा कि वह पहली नज़र में जितना दिखता है उससे कहीं ज़्यादा तेज़ है।
सार्जेंट का हावभाव, या सार्जेंट का काम—दोनों में से कोई एक या दोनों—मेरी पत्नी को थोड़ी असहजता का कारण बना। मेरे अनुभव में पहली बार, वह किसी अजनबी से बात करते समय असमंजस में थी कि क्या कहे। सार्जेंट कफ ने तुरंत उसे सहज कर दिया। उन्होंने पूछा कि क्या उसे बुलाने से पहले किसी और को इस काम में लगाया

गया था; और यह सुनकर कि एक और व्यक्ति को बुलाया गया था और वह अब घर में है, उन्होंने आगे कुछ भी करने से पहले उससे बात करने की अनुमति मांगी।
मेरी पत्नी आगे-आगे चल रही थी। उसके पीछे जाने से पहले, सार्जेंट ने माली से विदा लेते हुए बजरी वाले रास्तों के बारे में अपनी भड़ास निकाली। उसने रास्तों की ओर गुस्से भरी नज़र से देखते हुए कहा, "महामहिम, घास लगाने के लिए कहिए। बजरी नहीं! बजरी नहीं!"
सुपरिटेंडेंट सीग्रेव सार्जेंट कफ के सामने पेश किए जाने पर अपनी असलियत से कई गुना छोटे क्यों दिखाई दिए, यह मैं समझा नहीं सकता। मैं केवल तथ्य बता सकता हूँ। वे दोनों साथ में एकांतवास में गए; और काफी देर तक दुनियादारी से बेखबर एकांत में बैठे रहे। जब वे बाहर आए, तो सुपरिटेंडेंट उत्साहित थे और सार्जेंट जम्हाई ले रहे थे।
श्री सीग्रेव ने बड़े ही शान और उत्साह से मुझसे कहा, "सार्जेंट मिस वेरेंडर का बैठक कक्ष देखना चाहते हैं। सार्जेंट को कुछ सवाल पूछने होंगे। कृपया सार्जेंट की सेवा करें!"
जब मुझे इस तरह आदेश दिए जा रहे थे, तब मैंने बड़े कफ की ओर देखा। बड़ा कफ एक तरफ लेटा हुआ था और अधीक्षक सीग्रेव को उसी शांत और उम्मीद भरी निगाहों से देख रहा था, जिसका मैंने पहले ही जिक्र किया है। मैं यह तो नहीं कह सकता कि वह अपने साथी अधिकारी के गधे के वेश में जल्द आने का इंतजार कर रहा था—मैं बस इतना कह सकता हूँ कि मुझे इस बात का पक्का शक था।
मैं आगे-आगे सीढ़ियों से ऊपर गया। सार्जेंट धीरे-धीरे भारतीय अलमारी और "बेडरूम" के चारों ओर घूमता रहा; सवाल पूछता रहा (कभी-कभी केवल अधीक्षक महोदय से, और लगातार मुझसे), जिनका मतलब हम दोनों को ही समझ नहीं आ रहा था। कुछ देर बाद, वह दरवाजे तक पहुंचा और उस सजावटी पेंटिंग के सामने आ गया जिसके बारे में आप जानते हैं। उसने ताले के ठीक नीचे, उस छोटे से धब्बे पर अपनी एक पतली उंगली रखी, जिसे अधीक्षक सीग्रेव ने पहले ही देख लिया था, जब उन्होंने महिला नौकरानियों को कमरे में एक साथ भीड़ लगाने के लिए फटकारा था।
"यह तो बहुत दुख की बात है," सार्जेंट कफ ने कहा। "यह कैसे हुआ?"
उन्होंने मुझसे सवाल पूछा। मैंने जवाब दिया कि पिछली सुबह नौकरानियाँ कमरे में घुस आई थीं और उनकी कुछ पेटीकोट की वजह से गड़बड़ हुई थी। मैंने आगे कहा, "सुपरिटेंडेंट सीग्रेव ने उन्हें बाहर जाने का आदेश दिया था, महोदय, इससे पहले कि वे और नुकसान करतीं।"

"बिल्कुल!" अधीक्षक महोदय ने अपने फौजी लहजे में कहा। "मैंने ही उन्हें बाहर जाने का आदेश दिया था। पेटीकोट की वजह से ही ऐसा हुआ, सार्जेंट—पेटीकोट की वजह से ही ऐसा हुआ।"
"क्या आपने ध्यान दिया कि यह किस पेटीकोट ने किया?" सार्जेंट कफ ने पूछा, अभी भी वह अपने साथी अधिकारी से नहीं, बल्कि मुझसे बात कर रहे थे।
"जी नहीं, महोदय।"
इस पर उन्होंने अधीक्षक सीग्रेव की ओर मुड़कर कहा, "मुझे लगता है कि आपने ध्यान दिया होगा?"
सुपरिटेंडेंट थोड़ा अचंभित दिखे; लेकिन उन्होंने स्थिति को सहजता से संभाला। "सार्जेंट, मुझे कुछ याद नहीं आ रहा, बस एक मामूली सी बात—एक मामूली सी बात।"
सार्जेंट कफ ने मिस्टर सीग्रेव को उसी तरह देखा जैसे उन्होंने गुलाब के बगीचे में बजरी के रास्तों को देखा था, और अपने उदास अंदाज में हमें उनके उस गुण की पहली झलक दी जो हमें अब तक मिली थी।
"मैंने पिछले हफ्ते एक निजी जांच की थी, श्रीमान अधीक्षक," उन्होंने कहा। "जांच के एक पहलू में हत्या थी, और दूसरे पहलू में मेज़पोश पर स्याही का एक धब्बा था जिसका कोई हिसाब नहीं दे पा रहा था। इस गंदी दुनिया के सबसे गंदे रास्तों पर अपने पूरे अनुभव में, मैंने आज तक ऐसी मामूली बात नहीं देखी है। इस मामले में आगे बढ़ने से पहले हमें वह पेटीकोट देखना होगा जिससे यह धब्बा लगा है, और हमें यह निश्चित रूप से जानना होगा कि वह पेंट कब गीला हुआ था।"
अधीक्षक महोदय—थोड़ा रूठते हुए—ने पूछा कि क्या उन्हें महिलाओं को बुलाना चाहिए। सार्जेंट कफ ने एक मिनट सोचने के बाद आह भरी और सिर हिलाया।
“नहीं,” उसने कहा, “पहले हम पेंट का मामला सुलझा लेते हैं। पेंट के बारे में तो बस ‘हाँ’ या ‘ना’ का सवाल है—जो कि संक्षिप्त है। महिलाओं के पेटीकोट का मामला है—जो कि लंबा है। कल सुबह जब नौकर इस कमरे में आए थे, तब क्या समय था? ग्यारह बजे—हैं? क्या घर में कोई ऐसा है जिसे पता हो कि कल सुबह ग्यारह बजे पेंट गीला था या सूखा?”
मैंने कहा, "महामहिम के भतीजे, श्री फ्रैंकलिन ब्लेक, को पता है।"
क्या सज्जन घर में हैं?
श्री फ्रैंकलिन यथासंभव निकट ही उपस्थित थे—महान कफ से परिचय कराने के अपने पहले अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। आधे मिनट में ही वे कमरे में थे और उन्होंने

निम्नलिखित गवाही दी:
"सार्जेंट, वह दरवाजा मिस वेरेंडर ने मेरी देखरेख में, मेरी मदद से, और मेरे द्वारा तैयार किए गए रंग के मिश्रण से रंगा है। यह मिश्रण बारह घंटे में किसी भी रंग को सुखा देता है।"
"क्या आपको याद है कि वह लेप लगाने का काम कब हुआ था, महोदय?" सार्जेंट ने पूछा।
"बिल्कुल सही," श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया। "दरवाजे का बस एक छोटा सा हिस्सा बचा था। हम इसे पिछले बुधवार को पूरा करना चाहते थे - और मैंने खुद इसे दोपहर तीन बजे तक या उसके तुरंत बाद पूरा कर लिया।"
“आज शुक्रवार है,” सार्जेंट कफ ने अधीक्षक सीग्रेव से कहा। “मान लीजिए, हम पीछे की ओर गिनते हैं। बुधवार की दोपहर तीन बजे, पेंट का वह हिस्सा पूरा हुआ। गाड़ी ने उसे बारह घंटे में सुखा दिया—यानी गुरुवार की सुबह तीन बजे तक सुखा दिया। गुरुवार की सुबह ग्यारह बजे आपने यहाँ जाँच की। ग्यारह में से तीन घटाएँ, तो आठ शेष बचते हैं। श्रीमान अधीक्षक, जब आपने यह अनुमान लगाया कि महिला नौकरानियों के पेटीकोट से पेंट फैल गया था, तब तक वह पेंट आठ घंटे सूखा हुआ था।”
मिस्टर सीग्रेव के लिए पहला करारा झटका! अगर उन्हें बेचारी पेनेलोप पर शक न होता, तो मुझे उन पर तरस आता।
पेंट का मामला सुलझ जाने के बाद, सार्जेंट कफ ने उसी क्षण से अपने साथी अधिकारी को एक निकम्मा मानकर छोड़ दिया और श्री फ्रैंकलिन की ओर रुख किया, क्योंकि वह दोनों में से अधिक होनहार सहायक थे।
उन्होंने कहा, "यह लगभग तय है, महोदय, कि आपने ही सुराग हमारे हाथों में सौंप दिया है।"
जैसे ही ये शब्द उनके होठों से निकले, बेडरूम का दरवाजा खुला और मिस राहेल अचानक हमारे बीच आ गईं।
उसने सार्जेंट से बात की, मानो उसे इस बात का एहसास ही न हो (या वह इस बात पर ध्यान ही न दे) कि वह उसके लिए बिल्कुल अजनबी था।
"क्या आपने कहा था," उसने श्री फ्रैंकलिन की ओर इशारा करते हुए पूछा, "कि उन्होंने ही सुराग आपके हाथों में सौंपा था?"
("ये मिस वेरेंडर हैं," मैंने सार्जेंट के पीछे फुसफुसाते हुए कहा।)

सार्जेंट ने अपनी तीखी भूरी आँखों से मेरी युवती के चेहरे का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हुए कहा, "उस सज्जन ने संभवतः सुराग हमारे हाथों में सौंप दिया है।"
वह एक पल के लिए मुड़ी और मिस्टर फ्रैंकलिन को देखने की कोशिश की। मैंने कहा, कोशिश की, क्योंकि उनकी नज़रें मिलने से पहले ही उसने अचानक नज़रें हटा लीं। मानो उसके मन में कोई अजीब सी उथल-पुथल मची हो। उसका चेहरा लाल हो गया, और फिर पीला पड़ गया। पीलेपन के साथ ही उसके चेहरे पर एक नया भाव आ गया —एक ऐसा भाव जिसे देखकर मैं चौंक गया।
"आपके प्रश्न का उत्तर देने के बाद, महोदया," सार्जेंट ने कहा, "अब मैं भी एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। आपके दरवाजे के रंग पर एक धब्बा है। क्या आपको पता है कि यह कब लगा था? या किसने लगाया था?"
कोई जवाब देने के बजाय, मिस राहेल ने अपने सवाल पूछना जारी रखा, मानो उसने कुछ कहा ही न हो, या मानो उसने उसे सुना ही न हो।
"क्या आप भी पुलिस अधिकारी हैं?" उसने पूछा।
"मैं सार्जेंट कफ हूं, महोदया, डिटेक्टिव पुलिस का अधिकारी।"
"क्या आपको लगता है कि एक युवती की सलाह लेने लायक है?"
मुझे यह सुनकर खुशी होगी, महोदया।
"अपना कर्तव्य स्वयं निभाओ—और श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को अपनी मदद करने की अनुमति मत दो!"
उसने वे शब्द इतने द्वेषपूर्ण, इतने क्रूर ढंग से, श्री फ्रैंकलिन के प्रति इतनी असाधारण दुर्भावना के साथ कहे, उसकी आवाज़ और उसकी नज़र में, कि - यद्यपि मैं उसे बचपन से जानता था, यद्यपि मैं उसे अपनी पत्नी के बाद सबसे अधिक प्यार और सम्मान देता था - मुझे अपने जीवन में पहली बार मिस राहेल पर शर्म महसूस हुई।
सार्जेंट कफ की स्थिर निगाहें उनके चेहरे से हटी ही नहीं। "धन्यवाद, महोदया," उन्होंने कहा। "क्या आपको उस धब्बे के बारे में कुछ पता है? क्या आपने गलती से ऐसा किया होगा?"
मुझे इस बदनामी के बारे में कुछ नहीं पता।
यह जवाब देकर वह मुँह फेरकर अपने शयनकक्ष में फिर से बंद हो गई। इस बार मैंने उसे सुना—ठीक वैसे ही जैसे पेनेलोप ने पहले सुना था—कि अकेले होते ही वह फूट-फूटकर रोने लगी।

मैं सार्जेंट की ओर देखने की हिम्मत नहीं कर पाया—मैंने मिस्टर फ्रैंकलिन की ओर देखा, जो मेरे सबसे करीब खड़े थे। ऐसा लग रहा था कि जो कुछ हुआ था उससे वे मुझसे भी कहीं अधिक दुखी थे।
"मैंने तुमसे कहा था कि मुझे उसके बारे में चिंता है," उसने कहा। "और अब तुम्हें समझ आ गया होगा कि क्यों।"
सार्जेंट ने टिप्पणी की, "लगता है मिस वेरेंडर अपने हीरे के खो जाने से थोड़ी नाराज़ हैं। यह एक कीमती रत्न है। स्वाभाविक ही है! स्वाभाविक ही है!"
पिछले दिन जब वह सुपरिटेंडेंट सीग्रेव के सामने अपना आपा खो बैठी थी, तब मैंने उसके लिए जो बहाना बनाया था, वही बहाना अब एक ऐसे आदमी द्वारा बनाया जा रहा था जिसका इसमें मेरा कोई स्वार्थ नहीं हो सकता था—क्योंकि वह तो बिल्कुल अजनबी था! मेरे अंदर एक अजीब सी सिहरन दौड़ गई, जिसका कारण मैं उस समय समझ नहीं पाई। अब मुझे पता है कि मुझे उसी क्षण पहली बार यह शक हुआ होगा कि सार्जेंट कफ के मन में इस मामले पर अचानक एक नई (और भयानक) रोशनी पड़ गई है—पूरी तरह से और केवल मिस राहेल में जो कुछ उसने देखा था और मिस राहेल से उस पहली मुलाकात में जो कुछ सुना था, उसी के कारण।
"महोदय, एक युवती की ज़बान एक विशेष अंग है," सार्जेंट ने श्री फ्रैंकलिन से कहा। "चलिए, जो बीत गया उसे भूलकर सीधे इस काम पर लगें। आपकी बदौलत हमें पता चल गया है कि पेंट कब सूखा था। अब हमें यह पता लगाना है कि वह धब्बा हटाए बिना पेंट आखिरी बार कब देखा गया था। आप समझदार हैं और आप मेरी बात समझ रहे हैं।"
श्री फ्रैंकलिन ने खुद को संभाला और मिस राहेल की मदद से मामले पर वापस लौटे। उन्होंने कहा, "मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ। समय के प्रश्न को हम जितना अधिक सीमित करते हैं, उतना ही हम जांच के दायरे को भी सीमित करते जाते हैं।"
“बस इतना ही, महोदय,” सार्जेंट ने कहा। “क्या आपने बुधवार दोपहर को, काम पूरा करने के बाद, यहाँ अपने काम पर ध्यान दिया था?”
श्री फ्रैंकलिन ने अपना सिर हिलाया और उत्तर दिया, "मैं यह नहीं कह सकता कि मैंने ऐसा किया।"
"क्या तुमने किया?" सार्जेंट कफ ने मेरी ओर मुड़ते हुए पूछा।
"मैं भी ऐसा नहीं कह सकता, महोदय।"
"बुधवार की रात को कमरे में आखिरी व्यक्ति कौन था, आखिरी चीज क्या थी?"

"शायद मिस राहेल, महोदय।"
मिस्टर फ्रैंकलिन ने बीच में ही कहा, "या शायद आपकी बेटी, बेटरएज।" उन्होंने सार्जेंट कफ की ओर मुड़कर बताया कि मेरी बेटी मिस वेरेंडर की नौकरानी थी।
"श्री बेटरएज, अपनी बेटी को आगे आने के लिए कहिए। रुकिए!" सार्जेंट मुझे खिड़की के पास ले जाते हुए, मेरी सुनने की सीमा से बाहर ले जाते हुए बोला, "आपके अधीक्षक ने," वह फुसफुसाते हुए बोला, "मुझे इस मामले को संभालने के तरीके के बारे में पूरी रिपोर्ट दी है। अन्य बातों के अलावा, उन्होंने खुद स्वीकार किया है कि उन्होंने नौकरों को भड़काया है। उन्हें फिर से शांत करना बहुत ज़रूरी है। अपनी बेटी को, और बाकी सभी को, मेरी ओर से ये दो बातें बताइए: पहली बात, मेरे पास अभी तक इस बात का कोई सबूत नहीं है कि हीरा चोरी हुआ है; मुझे केवल इतना पता है कि हीरा खो गया है। दूसरी बात, नौकरों के साथ मेरा काम केवल उनसे मिलकर मेरी मदद करने और हीरा ढूंढने के लिए कहना है।"
जब अधीक्षक सीग्रेव ने महिला नौकरानियों के कमरों पर प्रतिबंध लगा दिया था, तब मुझे जो अनुभव हुआ था, वह यहां काम आया।
"सार्जेंट, क्या मैं इतनी हिम्मत कर सकता हूँ कि महिलाओं को एक तीसरी बात बता दूँ?" मैंने पूछा। "क्या वे (आपकी अनुमति से) ऊपर-नीचे आने-जाने और अपने शयनकक्षों में आने-जाने के लिए स्वतंत्र हैं, अगर उन्हें ऐसा करने का मन करे?"
"बिल्कुल मुफ्त," सार्जेंट ने कहा।
मैंने कहा, "इससे तो सब शांत हो जाएंगे, साहब, रसोइए से लेकर रसोई के नौकर तक।"
"जाओ, और इसे तुरंत करो, मिस्टर बेटरएज।"
मैंने इसे पाँच मिनट से भी कम समय में कर लिया। बेडरूम वाले हिस्से में बस एक ही दिक्कत आई। मुखिया होने के नाते मुझे अपनी सत्ता का काफी ज़ोरदार इस्तेमाल करना पड़ा ताकि घर की सारी महिलाएँ सार्जेंट कफ की मदद करने की तीव्र चिंता में स्वेच्छा से गवाह बनकर मेरे और पेनेलोप के पीछे ऊपर न आ जाएँ।
सार्जेंट को पेनेलोप पसंद आ गई थी। उसका उदास चेहरा थोड़ा कम उदास हो गया था; और वह वैसा ही दिख रहा था जैसा तब दिख रहा था जब उसने फूलों के बगीचे में सफेद कस्तूरी गुलाब देखा था। ये मेरी बेटी का बयान है, जो सार्जेंट ने उससे लिया था। मुझे लगता है उसने बहुत अच्छे से बयान दिया—लेकिन देखो! वह बिल्कुल मेरी ही

बच्ची है: उसमें उसकी माँ की कोई झलक नहीं है; भगवान भला करे, उसमें उसकी माँ की कोई झलक नहीं है!
पेनेलोप ने जांच की: उसने दरवाजे पर बनी पेंटिंग में गहरी दिलचस्पी दिखाई, क्योंकि उसने रंगों को मिलाने में मदद की थी। उसने ताले के नीचे के काम पर ध्यान दिया, क्योंकि वह आखिरी हिस्सा था। उसने कुछ घंटों बाद भी उसे बिना किसी दाग के देखा था। उसने उसे रात बारह बजे तक बिना किसी दाग के छोड़ दिया था। उस समय उसने बेडरूम में अपनी प्रेमिका को शुभ रात्रि कहा था; उसने बेडरूम में घड़ी की आवाज सुनी थी; उस समय उसका हाथ रंगे हुए दरवाजे के हैंडल पर था; उसे पता था कि पेंट गीला था (जैसा कि पहले बताया गया है, उसने रंगों को मिलाने में मदद की थी); उसने उसे छूने से बचने के लिए विशेष सावधानी बरती थी; वह कसम खा सकती थी कि उसने अपनी पोशाक का किनारा ऊपर उठाया था, और उस समय पेंट पर कोई दाग नहीं था; वह इस बात की कसम नहीं खा सकती थी कि बाहर जाते समय उसकी पोशाक गलती से पेंट से न छू गई हो; उसे अपनी पहनी हुई पोशाक याद थी, क्योंकि वह नई थी, मिस राहेल का उपहार; उसके पिता को भी याद था, और वे उससे बात भी कर सकते थे; वह उसे ला सकती थी, लाएगी और लाई भी; उसके पिता ने उस पोशाक को पहचान लिया जो उसने उस रात पहनी थी। स्कर्टों की जांच की गई, उनके आकार के कारण यह एक लंबा काम था; कहीं भी पेंट का एक भी दाग नहीं मिला। पेनेलोप के साक्ष्य यहीं समाप्त होते हैं—और ये साक्ष्य बहुत ही सुंदर और विश्वसनीय भी थे। हस्ताक्षर: गैब्रियल बेटरएज।
सार्जेंट ने मुझसे घर में मौजूद किसी बड़े कुत्ते के बारे में पूछताछ की, जो कमरे में घुसकर अपनी पूंछ हिलाकर यह गड़बड़ कर सकता था। यह सुनकर कि ऐसा होना असंभव था, उन्होंने एक आवर्धक लेंस मंगवाया और उस तरह से देखने पर धब्बे का दृश्य देखा। पेंट पर किसी भी त्वचा के निशान (जैसे किसी इंसान के हाथ का) नहीं दिख रहे थे। सभी स्पष्ट संकेत बता रहे थे कि पेंट किसी के कपड़ों के किसी ढीले हिस्से के छूने से फैला था। (पेनेलोप और मिस्टर फ्रैंकलिन के बयानों को मिलाकर) वह व्यक्ति गुरुवार की आधी रात से सुबह तीन बजे के बीच कमरे में मौजूद रहा होगा और उसने यह गड़बड़ की होगी।
अपनी जांच को इस बिंदु तक लाने के बाद, सार्जेंट कफ ने पाया कि अधीक्षक सीग्रेव नाम का एक व्यक्ति अभी भी कमरे में मौजूद था, जिस पर उन्होंने अपने साथी अधिकारी के लाभ के लिए कार्यवाही का सारांश इस प्रकार दिया:

"महामहिम, आपकी यह छोटी सी बात," सार्जेंट ने दरवाजे पर लगे निशान की ओर इशारा करते हुए कहा, "पिछली बार जब आपने इस पर ध्यान दिया था, तब से थोड़ी महत्वपूर्ण हो गई है। जांच के वर्तमान चरण में, जैसा कि मुझे लगता है, उस दाग से शुरू करते हुए तीन बातें पता लगानी हैं। (पहला) पता लगाइए कि क्या इस घर में कोई ऐसा कपड़ा है जिस पर पेंट का दाग लगा हो। (दूसरा) पता लगाइए कि वह कपड़ा किसका है। (तीसरा) पता लगाइए कि वह व्यक्ति आधी रात से लेकर सुबह तीन बजे के बीच इस कमरे में कैसे आया और उसने पेंट कैसे लगाया। अगर वह व्यक्ति आपको संतुष्ट नहीं कर पाता है, तो हीरे को चुराने वाले का पता लगाना ज्यादा दूर नहीं है। कृपया, मैं यह काम खुद कर लूंगा और आपको शहर में अपने नियमित काम से और नहीं रोकूंगा। मुझे लगता है कि आपका एक आदमी यहां है। उसे यहीं मेरे हवाले कर दीजिए, अगर मुझे उसकी जरूरत पड़े तो - और मुझे आपको सुप्रभात कहने दीजिए।"
सुपरिटेंडेंट सीग्रेव सार्जेंट का बहुत सम्मान करते थे; लेकिन उनका खुद के प्रति सम्मान उससे भी कहीं अधिक था। मशहूर कफ के प्रहार से बुरी तरह घायल होने के बावजूद, कमरे से निकलते समय उन्होंने अपनी पूरी क्षमता से करारा जवाब दिया।
“मैंने अब तक कोई राय व्यक्त नहीं की है,” अधीक्षक महोदय ने अपनी अभी भी दमदार सैन्य आवाज में कहा। “अब इस मामले को आपके हाथों में सौंपते हुए मुझे बस एक ही बात कहनी है। सार्जेंट, तिल का ताड़ बनाना भी एक बुरी बात होती है। सुप्रभात।”
"एक छोटी सी बात को बेवजह बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना भी एक तरह का अपराध है, क्योंकि आपका अहंकार आपको उसे देखने से रोकता है।" अपने साथी अधिकारी की प्रशंसा का इन शब्दों में जवाब देते हुए, सार्जेंट कफ मुड़े और अकेले ही खिड़की की ओर चले गए।
श्री फ्रैंकलिन और मैं यह देखने के लिए इंतज़ार कर रहे थे कि आगे क्या होगा। सार्जेंट खिड़की पर हाथ जेब में डाले बाहर देख रहे थे और धीरे-धीरे "द लास्ट रोज़ ऑफ़ समर" की धुन सीटी बजा रहे थे। बाद में मुझे पता चला कि वे शिष्टाचार भूलकर सीटी तभी बजाते थे जब उनका मन किसी काम में पूरी तरह मग्न होता था और अपने निजी उद्देश्यों की ओर बढ़ रहा होता था, और ऐसे मौकों पर "द लास्ट रोज़ ऑफ़ समर" उन्हें सहारा और प्रोत्साहन देता था। मुझे लगता है कि यह धुन उनके स्वभाव से मेल खाती थी। दरअसल, यह उन्हें उनके पसंदीदा गुलाबों की याद दिलाती थी, और जब वे इसे सीटी बजाते थे, तो यह सबसे उदास धुन लगती थी।

एक-दो मिनट बाद खिड़की से मुड़कर सार्जेंट कमरे के बीच में चले गए और वहीं रुक गए, गहरी सोच में डूबे हुए, उनकी निगाहें मिस राहेल के शयनकक्ष के दरवाजे पर टिकी थीं। थोड़ी देर बाद वे उठे, सिर हिलाकर मानो कह रहे हों, "बस इतना ही काफी है," और मुझसे बात करते हुए, मेरी मालकिन से दस मिनट की बातचीत करने का अनुरोध किया, जब भी उन्हें समय मिले।

यह संदेश लेकर कमरे से बाहर निकलते समय, मैंने श्री फ्रैंकलिन को सार्जेंट से एक प्रश्न पूछते हुए सुना, और दरवाजे की दहलीज पर रुककर उत्तर सुनने का फैसला किया।

श्री फ्रैंकलिन ने पूछा, "क्या आप अभी तक अनुमान लगा सकते हैं कि हीरा किसने चुराया है?"

"हीरा किसी ने नहीं चुराया है," सार्जेंट कफ ने उत्तर दिया।

हम दोनों उस मामले के असाधारण दृष्टिकोण को देखकर चौंक गए, और हम दोनों ने उनसे विनती की कि वे हमें बताएं कि उनका क्या मतलब है।

सार्जेंट ने कहा, "थोड़ा इंतजार करो। पहेली के सारे टुकड़े अभी तक एक साथ नहीं जुड़े हैं।"

अध्याय XIII

मैंने अपनी पत्नी को उसके बैठक कक्ष में पाया। जब मैंने बताया कि सार्जेंट कफ उससे बात करना चाहते हैं, तो वह चौंक गई और नाराज़ दिखने लगी।

"क्या मुझे उससे मिलना ही होगा?" उसने पूछा। "क्या तुम मेरी तरफ से प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते, गैब्रियल?"

मुझे यह बात समझ नहीं आई और शायद मेरे चेहरे पर यह साफ दिख रहा था। मेरी पत्नी ने बड़ी कृपा करके मुझे समझाया।

"मुझे डर है कि मैं थोड़ी घबरा गई हूँ," उसने कहा। "लंदन के उस पुलिसवाले में कुछ ऐसा है जिससे मुझे घिन आती है—पता नहीं क्यों। मुझे यह आशंका है कि वह अपने साथ घर में मुसीबत और दुख लेकर आएगा। बहुत मूर्खतापूर्ण है, और मेरे स्वभाव के बिल्कुल विपरीत है—लेकिन यही सच है।"

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि इस पर क्या कहूँ। सार्जेंट कफ को जितना ज़्यादा देखता गया, उतना ही वो मुझे पसंद आने लगे। मेरे सामने अपने दिल की बात कहने के बाद मेरी पत्नी थोड़ी संभली - क्योंकि जैसा कि मैंने आपको पहले ही बताया है, वो स्वभाव से ही बहुत साहसी महिला हैं।

"अगर मुझे उससे मिलना ही है, तो मिलना ही पड़ेगा," उसने कहा। "लेकिन मैं अकेले उससे मिलने के लिए खुद को मना नहीं सकती। उसे अंदर ले आओ, गैब्रियल, और जब तक वह यहाँ रहे, तुम भी यहीं रहो।"

मेरी प्रेमिका को बचपन से लेकर अब तक पहली बार माइग्रेन का दौरा पड़ा था। मैं अपने कमरे में वापस चला गया। श्री फ्रैंकलिन बगीचे में टहलते हुए बाहर आए और श्री गॉडफ्रे के साथ बैठ गए, जिनके जाने का समय अब नजदीक आ रहा था। सार्जेंट कफ और मैं सीधे मेरी प्रेमिका के कमरे में चले गए।

मैं कसम खाता हूँ कि उसे देखते ही मेरी पत्नी का चेहरा पीला पड़ गया! हालाँकि, उन्होंने अन्य मामलों में खुद को संभाला और सार्जेंट से पूछा कि क्या उन्हें मेरी उपस्थिति पर कोई आपत्ति है। उन्होंने यह भी कहा कि मैं उनका विश्वसनीय सलाहकार होने के साथ-साथ उनका पुराना नौकर भी हूँ, और घर से संबंधित किसी भी मामले में मुझसे सलाह लेना सबसे अधिक लाभदायक होगा। सार्जेंट ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया कि वे मेरी उपस्थिति को एक उपकार के रूप में स्वीकार करते हैं, क्योंकि उन्हें नौकरों के बारे में कुछ कहना था और इस क्षेत्र में मेरा अनुभव उनके लिए पहले ही उपयोगी साबित हो चुका था। मेरी पत्नी ने दो कुर्सियों की ओर इशारा किया और हम तुरंत अपनी बैठक के लिए बैठ गए।

सार्जेंट कफ कहते हैं, "मैंने इस मामले पर पहले ही अपनी राय बना ली है, जिसे मैं फिलहाल अपने तक ही रखना चाहता हूँ। अब मेरा काम यह बताना है कि मैंने मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष में क्या खोजा है, और मैंने (आपकी अनुमति से) आगे क्या करने का फैसला किया है।"

फिर उन्होंने पेंट पर लगे धब्बे के बारे में बात शुरू की और उससे निकाले गए निष्कर्ष बताए—ठीक वैसे ही जैसे उन्होंने (अधिक सम्मानजनक भाषा में) अधीक्षक सीग्रेव को बताए थे। अंत में उन्होंने कहा, "एक बात तो निश्चित है। हीरा अलमारी के दराज से गायब है। दूसरी बात लगभग निश्चित है। दरवाजे पर लगे धब्बे के निशान इस घर में किसी के कपड़े पर जरूर होंगे। आगे बढ़ने से पहले हमें वह कपड़ा ढूंढना होगा।"

"और वह खोज," मेरी मालकिन ने टिप्पणी की, "मेरा अनुमान है, चोर की खोज का संकेत देती है?"

"माननीय महोदया, क्षमा करें—मैं यह नहीं कह रही कि हीरा चोरी हो गया है। मैं केवल इतना कह रही हूँ कि फिलहाल हीरा गुम है। दाग लगे वस्त्र की खोज से शायद उसे ढूंढने में मदद मिल सके।"

उनकी महोदया ने मेरी ओर देखा। उन्होंने कहा, "क्या आपको यह समझ में आया?"
"सार्जेंट कफ इसे समझते हैं, महोदया," मैंने उत्तर दिया।
"आप दाग लगे कपड़े का पता कैसे लगाएंगे?" मेरी मालकिन ने सार्जेंट से एक बार फिर पूछा। "मुझे यह कहते हुए शर्म आ रही है कि मेरे अच्छे नौकर, जो वर्षों से मेरे साथ हैं, उनके बक्से और कमरे दूसरे अधिकारी द्वारा पहले ही तलाशे जा चुके हैं। मैं उन्हें दूसरी बार इस तरह अपमानित नहीं होने दूंगी!"
(सेवा करने के लिए एक मालकिन थी! अगर आप चाहें तो कह सकते हैं कि दस हज़ार में एक महिला थी!)
“यही बात मैं आपसे कहने ही वाला था,” सार्जेंट ने कहा। “दूसरे अधिकारी ने नौकरों को यह दिखाकर कि उसे उन पर शक है, इस जांच को बहुत नुकसान पहुंचाया है। अगर मैं उन्हें दोबारा शक करने का मौका देता हूं, तो पता नहीं वे मेरे रास्ते में क्या-क्या रुकावटें खड़ी कर दें—खासकर औरतें। साथ ही, उनके बक्सों की दोबारा तलाशी होनी चाहिए—क्योंकि पहली जांच में सिर्फ हीरे की तलाश की गई थी, और दूसरी जांच में दाग लगे कपड़े की तलाश करनी होगी। मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूं, महोदया, कि नौकरों की भावनाओं का ध्यान रखा जाना चाहिए। लेकिन मैं इस बात से भी पूरी तरह सहमत हूं कि नौकरों की अलमारियों की भी तलाशी होनी चाहिए।”
यह मामला गतिरोध जैसा लग रहा था। मेरी पत्नी ने मुझसे कहीं बेहतर शब्दों में ऐसा कहा।
सार्जेंट कफ ने कहा, "अगर आपकी पत्नी मान जाएं तो मेरे पास इस समस्या से निपटने की एक योजना है। मैं नौकरों को मामला समझाने का प्रस्ताव करता हूं।"
मैंने उसे रोकते हुए कहा, "महिलाएं खुद को सीधे तौर पर संदिग्ध समझेंगी।"
"औरतें ऐसा नहीं करेंगी, श्रीमान बेटरएज," सार्जेंट ने उत्तर दिया, "अगर मैं उन्हें बता दूं कि मैं बुधवार की रात घर में सोने वाले हर किसी के कपड़ों की तलाशी लेने जा रहा हूं —उनकी मालकिन से लेकर नीचे तक। यह महज़ एक औपचारिकता है," उन्होंने मेरी मालकिन की ओर तिरछी नज़र डालते हुए कहा; "लेकिन नौकरानियां इसे अपने और अपने से बड़ों के बीच का मामला समझकर स्वीकार करेंगी; और जांच में बाधा डालने के बजाय, वे इसमें सहयोग करने को अपना गौरव समझेंगी।"
मैंने उस बात की सच्चाई देखी। मेरी पत्नी ने भी, अपने पहले आश्चर्य के बाद, उस बात की सच्चाई को देखा।
"क्या आपको यकीन है कि जांच जरूरी है?" उसने कहा।

"मेरी महिला, मुझे लगता है कि यही सबसे छोटा रास्ता है, उस लक्ष्य तक पहुँचने का जो हम देख रहे हैं।"
मेरी मालकिन अपनी नौकरानी को बुलाने के लिए घंटी बजाने उठीं। उन्होंने कहा, "तुम नौकरों से मेरी अलमारी की चाबियाँ हाथ में लेकर बात करोगी।"
सार्जेंट कफ ने एक बेहद अप्रत्याशित प्रश्न पूछकर उसे रोक दिया।
उन्होंने पूछा, "क्या हमें पहले यह सुनिश्चित नहीं कर लेना चाहिए कि घर में मौजूद अन्य महिलाएं और पुरुष भी सहमत होंगे?"
"घर में इकलौती दूसरी महिला मिस वेरेंडर हैं," मेरी मालकिन ने हैरानी भरे लहजे में जवाब दिया। "सिर्फ़ मेरे भतीजे मिस्टर ब्लेक और मिस्टर एबलव्हाइट ही सज्जन हैं। इन तीनों में से किसी के भी मना करने का ज़रा भी डर नहीं है।"
मैंने यहाँ अपनी पत्नी को याद दिलाया कि श्री गॉडफ्रे जा रहे हैं। जैसे ही मैंने ये कहा, श्री गॉडफ्रे ने खुद अलविदा कहने के लिए दरवाज़ा खटखटाया और उनके पीछे-पीछे श्री फ्रैंकलिन भी आ गए, जो उनके साथ स्टेशन जा रहे थे। मेरी पत्नी ने समस्या समझाई। श्री गॉडफ्रे ने तुरंत उसका समाधान कर दिया। उन्होंने खिड़की से सैमुअल को आवाज़ दी कि वह अपना सूटकेस वापस ऊपर ले जाए, और फिर उन्होंने चाबी खुद सार्जेंट कफ के हाथ में दे दी। उन्होंने कहा, "जांच पूरी होने के बाद मेरा सामान मेरे साथ लंदन जा सकता है।" सार्जेंट ने उचित क्षमा मांगते हुए चाबी ले ली। "महोदय, आपको केवल एक औपचारिकता के लिए असुविधा पहुँचाने के लिए मुझे खेद है; लेकिन उनके वरिष्ठों का उदाहरण नौकरों को इस जांच के लिए राजी करने में चमत्कार कर देगा।" श्री गॉडफ्रे ने मेरी पत्नी से विदा लेने के बाद, अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण ढंग से बात की। उन्होंने मिस राहेल के लिए एक विदाई संदेश छोड़ा, जिसके शब्दों से मुझे स्पष्ट हो गया कि उन्होंने 'ना' को स्वीकार नहीं किया था और अगले अवसर पर उनसे फिर से शादी का प्रस्ताव रखने का इरादा रखते थे। श्री फ्रैंकलिन अपने चचेरे भाई के पीछे-पीछे बाहर निकले और सार्जेंट को सूचित किया कि उनके सभी कपड़े जांच के लिए उपलब्ध हैं और उनकी कोई भी वस्तु ताला लगाकर नहीं रखी गई है। सार्जेंट कफ ने हार्दिक आभार व्यक्त किया। आप देखेंगे कि उनके विचारों का मेरी पत्नी, श्री गॉडफ्रे और श्री फ्रैंकलिन ने पूरी तत्परता से समर्थन किया था। अब केवल मिस राहेल का उनके पीछे आना बाकी था, जिसके बाद हमने नौकरों को बुलाया और दाग लगे कपड़े की तलाश शुरू की।

सार्जेंट के प्रति मेरी पत्नी की अकारण आपत्ति ने हमारी बातचीत को पहले से कहीं अधिक अरुचिकर बना दिया, जैसे ही हम फिर से अकेले रह गए। "अगर मैं आपको मिस वेरेंडर की चाबियां नीचे भेज दूं," उसने उससे कहा, "तो मुझे लगता है कि मैंने फिलहाल आपकी सारी ज़रूरतें पूरी कर दी हैं?"

"माफ़ कीजिए, महोदया," सार्जेंट कफ ने कहा। "शुरू करने से पहले, अगर सुविधा हो तो मुझे कपड़े धोने की किताब चाहिए। दाग लगा कपड़ा शायद लिनेन का हो। अगर तलाशी में कुछ नहीं मिलता, तो मैं घर में मौजूद सभी लिनेन और धुलाई के लिए भेजे गए सभी लिनेन का हिसाब रखना चाहता हूँ। अगर कोई कपड़ा गायब है, तो कम से कम यह अनुमान तो लगाया जा सकता है कि उस पर पेंट का दाग लगा है और उसे कल या आज उसके मालिक ने जानबूझकर गायब कर दिया है। सुपरिंटेंडेंट सीग्रेव," सार्जेंट ने मेरी ओर मुड़ते हुए कहा, "गुरुवार की सुबह जब सभी नौकरानियाँ कमरे में जमा हुईं, तो उन्होंने उनका ध्यान उस दाग की ओर दिलाया। श्री बेटरएज, हो सकता है कि यह सुपरिंटेंडेंट सीग्रेव की कई गलतियों में से एक और गलती साबित हो।"

मेरी पत्नी ने मुझसे घंटी बजाने और कपड़े धोने की किताब मंगवाने का अनुरोध किया। वह तब तक हमारे साथ रहीं जब तक कि वह किताब नहीं लाई गई, ताकि अगर सार्जेंट कफ उसे देखने के बाद उनसे कोई और अनुरोध करें तो वह मौजूद रहें।

कपड़े धोने की किताब रोसन्ना स्पीयरमैन लेकर आई थी। वह लड़की उस सुबह नाश्ते के लिए बेहद पीली और कमजोर हालत में आई थी, लेकिन पिछले दिन की बीमारी से इतनी ठीक हो चुकी थी कि अपना रोज़ाना का काम कर सके। सार्जेंट कफ ने हमारी दूसरी नौकरानी को ध्यान से देखा—जब वह अंदर आई तो उसके चेहरे को; और जब वह बाहर गई तो उसके झुके हुए कंधे को।

"क्या आपको मुझसे कुछ और कहना है?" मेरी पत्नी ने पूछा, जो अभी भी सार्जेंट की संगति से बाहर निकलने के लिए पहले की तरह ही उत्सुक थी।

बड़े कफ ने कपड़े धोने की किताब खोली, आधे मिनट में उसे पूरी तरह समझ लिया और फिर बंद कर दिया। "मैं आपसे आखिरी सवाल पूछना चाहता हूँ," उसने कहा। "क्या यह किताब लाने वाली युवती भी आपके यहाँ उतने ही समय से काम कर रही है जितने समय से बाकी नौकर हैं?"

"आप क्यों पूछ रहे हैं?" मेरी पत्नी ने कहा।

सार्जेंट ने जवाब दिया, "पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, तब वह चोरी के आरोप में जेल में थी।"

उसके बाद, सच बताने के अलावा कोई चारा नहीं था। मेरी मालकिन ने रोसन्ना के अच्छे आचरण और सुधारगृह की मैट्रन द्वारा उसके प्रति रखे गए उच्च विचारों पर ज़ोर दिया। अंत में, मेरी मालकिन ने बड़ी गंभीरता से पूछा, "आशा है आपको उस पर शक नहीं है?"
"मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि मुझे घर में किसी भी व्यक्ति पर चोरी का संदेह नहीं है - अभी तक।"
उस जवाब के बाद, मेरी पत्नी ऊपर जाने के लिए उठीं और मिस राहेल की चाबियाँ माँगने लगीं। सार्जेंट ने मुझसे पहले ही उनके लिए दरवाजा खोल दिया। उन्होंने बहुत झुककर अभिवादन किया। मेरी पत्नी उनके पास से गुजरते हुए सिहर उठीं।
हम इंतज़ार करते रहे, करते रहे, लेकिन चाबियाँ नहीं मिलीं। सार्जेंट कफ ने मुझसे कोई बात नहीं की। उन्होंने अपना उदास चेहरा खिड़की की ओर कर लिया; अपने पतले हाथ जेब में डाल लिए; और धीरे-धीरे "द लास्ट रोज़ ऑफ़ समर" गुनगुनाने लगे।
आखिरकार, सैमुअल अंदर आया, चाबियों के साथ नहीं, बल्कि मेरे लिए कागज का एक टुकड़ा लेकर। मैंने बड़ी मुश्किल से अपना चश्मा निकाला, और महसूस किया कि सार्जेंट की गंभीर निगाहें हर पल मुझ पर टिकी हुई थीं। कागज पर मेरी मालकिन ने पेंसिल से दो-तीन लाइनें लिखी थीं। उनमें मुझे बताया गया था कि मिस राहेल ने अपने कपड़ों की जांच करवाने से साफ इनकार कर दिया है। कारण पूछे जाने पर वह फूट-फूट कर रोने लगीं। दोबारा पूछे जाने पर उन्होंने कहा: "मैं नहीं करवाऊंगी, क्योंकि मैं नहीं करवाऊंगी। अगर आप बल प्रयोग करेंगे तो मुझे मानना ही पड़ेगा, लेकिन मैं किसी और बात पर नहीं मानूंगी।" मैं समझ सकती थी कि मेरी मालकिन अपनी बेटी के ऐसे जवाब के साथ सार्जेंट कफ का सामना करने से क्यों हिचकिचा रही थीं। अगर मैं जवानी की भोली-भाली कमजोरियों के लिए बहुत बूढ़ी न होती, तो मुझे लगता है कि मैं खुद उनका सामना करने के ख्याल से ही शर्म से लाल हो जाती।
"मिस वेरेंडर की चाबियों के बारे में कोई खबर है?" सार्जेंट ने पूछा।
"मेरी युवती अपने कपड़ों की जांच करवाने से इनकार करती है।"
"आह!" सार्जेंट ने कहा।
उनकी आवाज़ उनके चेहरे की तरह पूरी तरह से संयमित नहीं थी। जब उन्होंने "आह!" कहा, तो उनका लहजा ऐसा था मानो उन्होंने वही सुना हो जिसकी उन्हें उम्मीद थी। इससे मुझे आधा गुस्सा आया और आधा डर भी लगा—क्यों, यह मैं बता नहीं सकता, लेकिन ऐसा हुआ ज़रूर।

"क्या खोज बंद कर देनी चाहिए?" मैंने पूछा।
“जी हां,” सार्जेंट ने कहा, “तलाशी रोकनी होगी, क्योंकि आपकी युवती बाकी लोगों की तरह सहयोग करने से इनकार कर रही है। हमें घर की सभी अलमारियों की जांच करनी होगी, नहीं तो किसी की भी नहीं। श्री एबलव्हाइट का सूटकेस अगली ट्रेन से लंदन भेज दीजिए, और कपड़े धोने की किताब मेरी शुभकामनाओं और धन्यवाद के साथ उस युवती को लौटा दीजिए जिसने इसे लाया था।”
उसने कपड़े धोने वाली किताब को मेज पर रख दिया और अपनी कलम निकालने वाले चाकू को निकालकर अपने नाखून काटने लगा।
मैंने कहा, "आप ज्यादा निराश नहीं लग रहे हैं।"
"नहीं," सार्जेंट कफ ने कहा; "मैं ज्यादा निराश नहीं हूं।"
मैंने उससे स्पष्टीकरण मांगने की कोशिश की।
मैंने पूछा, "मिस राहेल आपके रास्ते में बाधा क्यों डालेंगी? क्या आपकी मदद करना उनका हित नहीं है?"
"थोड़ा इंतजार कीजिए, मिस्टर बेटरएज—थोड़ा इंतजार कीजिए।"
मुझसे ज़्यादा समझदार लोग शायद उसकी मंशा समझ गए होते। या फिर कोई ऐसा व्यक्ति जो मिस राहेल को मुझसे कम पसंद करता हो, वह भी उसकी मंशा समझ गया होता। मेरी पत्नी का उसके प्रति घृणा का भाव (जैसा कि मैंने बाद में सोचा) शायद यह दर्शाता था कि उसने उसकी मंशा (जैसा कि शास्त्र में लिखा है) "धुंधले शीशे में" देख ली थी। मुझे अभी तक वह मंशा समझ नहीं आई थी—बस इतना ही मुझे पता है।
मैंने पूछा, "अब आगे क्या करना है?"
सार्जेंट कफ ने जिस कील पर वह काम कर रहे थे, उसे पूरा किया, कुछ पल के लिए उदास रुचि से उसे देखा और अपनी कलम रखने वाली छुरी को रख दिया।
उन्होंने कहा, "बगीचे में आओ और चलो गुलाबों को देखते हैं।"

अध्याय 14

मेरी पत्नी के बैठक कक्ष से बाहर निकलने पर बगीचे तक जाने का सबसे नज़दीकी रास्ता झाड़ियों वाला पगडंडी मार्ग था, जिसके बारे में आप पहले से ही जानते हैं। आगे जो बताया जाएगा उसे बेहतर ढंग से समझने के लिए, मैं इसमें यह जोड़ना चाहूँगा कि झाड़ियों वाला पगडंडी मार्ग श्री फ्रैंकलिन का पसंदीदा सैरगाह था। जब वे बाहर बगीचे में होते थे और जब वे हमें कहीं और नहीं मिलते थे, तो आमतौर पर वे यहीं मिलते थे।

मुझे यह स्वीकार करना ही पड़ेगा कि मैं एक जिद्दी बूढ़ा आदमी हूँ। सार्जेंट कफ जितनी दृढ़ता से अपने विचारों को मुझसे छुपाते रहे, उतनी ही दृढ़ता से मैंने उन्हें जानने की कोशिश जारी रखी। जैसे ही हम झाड़ियों वाले रास्ते पर मुड़े, मैंने उनसे बचने का दूसरा तरीका खोजने का प्रयास किया।

मैंने कहा, "जिस तरह की स्थिति अभी है, अगर मैं तुम्हारी जगह होता, तो मैं पूरी तरह से परेशान हो जाता।"

सार्जेंट ने उत्तर दिया, "अगर आप मेरी जगह होते, तो आप अपनी राय बना लेते—और अब हालात ऐसे हैं कि आपके मन में अपने निष्कर्षों को लेकर जो भी संदेह रहा हो, वह पूरी तरह से दूर हो जाता। श्री बेटरएज, अभी इस बात की चिंता न करें कि आपके निष्कर्ष क्या हैं। मैं आपको यहाँ किसी बिज्जू की तरह खींचने के लिए नहीं लाया हूँ; मैं आपको यहाँ कुछ जानकारी लेने के लिए लाया हूँ। आप मुझे यह जानकारी घर के अंदर ही दे सकते थे, बाहर नहीं। लेकिन दरवाजे और सुनने वालों में एक अजीब सी समानता होती है; और मेरे पेशे में, हमें खुली हवा में बात करने की आदत होती है।"

इस आदमी को कौन चकमा दे सकता था? मैंने हार मान ली और यथासंभव धैर्यपूर्वक यह सुनने का इंतजार किया कि आगे क्या होने वाला है।

सार्जेंट ने आगे कहा, "हम आपकी युवती के इरादों में नहीं पड़ेंगे; हम बस इतना कहेंगे कि यह अफ़सोस की बात है कि वह मेरी मदद करने से इनकार कर रही है, क्योंकि ऐसा करके वह इस जांच को और भी मुश्किल बना रही है। अब हमें दरवाजे पर लगे धब्बे के रहस्य को सुलझाने की कोशिश करनी होगी—जिसका मतलब, आप मेरी बात मानिए, हीरे का रहस्य भी है—किसी और तरीके से। श्री बेटरएज, मैंने नौकरों से मिलने और उनके विचारों और व्यवहार को जानने का फैसला किया है, न कि उनकी अलमारियों की तलाशी लेने का। लेकिन इससे पहले, मैं आपसे एक-दो सवाल पूछना चाहता हूँ। आप एक चौकस व्यक्ति हैं—क्या आपने हीरे के खोने का पता चलने के बाद किसी भी नौकर में कुछ अजीब देखा (डर और घबराहट को ध्यान में रखते हुए)? क्या उनमें कोई खास झगड़ा हुआ? क्या उनमें से कोई अपने सामान्य मूड में नहीं था? उदाहरण के लिए, अचानक चिड़चिड़ा हो गया हो? या अचानक बीमार पड़ गया हो?"

कल रात के खाने के समय मुझे रोसन्ना स्पीयरमैन की अचानक बीमारी के बारे में सोचने का ही समय मिला—लेकिन कोई जवाब देने का समय नहीं—तभी मैंने देखा कि सार्जेंट कफ की नज़रें अचानक झाड़ियों की ओर मुड़ गईं; और मैंने उन्हें धीरे से खुद से कहते सुना, "हैलो!"

मैंने पूछा, "क्या बात है?"
"मेरी पीठ में गठिया का हल्का दर्द है," सार्जेंट ने ऊँची आवाज़ में कहा, मानो वह चाहता हो कि कोई तीसरा व्यक्ति भी हमारी बात सुन ले। "जल्द ही मौसम में बदलाव आने वाला है।"
कुछ कदम आगे बढ़ने पर हम घर के कोने पर पहुँच गए। वहाँ से दाईं ओर तेज़ी से मुड़कर हम छत पर पहुँचे और बीच में बनी सीढ़ियों से नीचे बगीचे में चले गए। सार्जेंट कफ वहीं खुले मैदान में रुक गए, जहाँ से हम चारों ओर देख सकते थे।
“उस युवती, रोसन्ना स्पीयरमैन के बारे में क्या?” उसने कहा। “उसकी शक्ल-सूरत को देखते हुए तो ऐसा लगता नहीं कि उसका कोई प्रेमी है। लेकिन उस लड़की की भलाई के लिए, मुझे आपसे तुरंत पूछना होगा कि क्या उसने भी, बाकी लड़कियों की तरह, कोई प्रेमी ढूंढा है?”
इन परिस्थितियों में, इस तरह का सवाल पूछकर उसका आखिर क्या मतलब था? मैंने उसे जवाब देने के बजाय घूर कर देखा।
"जब हम वहां से गुजर रहे थे तो मैंने रोसन्ना स्पीयरमैन को झाड़ियों में छिपा हुआ देखा," सार्जेंट ने कहा।
"जब आपने 'हैलो' कहा था?"
"हाँ—जब मैंने 'हैलो!' कहा। अगर इस मामले में कोई प्रेमिका शामिल है, तो छिपाने का कोई खास महत्व नहीं है। अगर कोई प्रेमिका नहीं है—जैसा कि इस घर में है—तो छिपाना एक बेहद संदिग्ध परिस्थिति है, और इस पर उचित कार्रवाई करना मेरा कष्टदायक कर्तव्य होगा।"
भगवान के नाम पर, मैं उससे क्या कहती? मुझे पता था कि झाड़ियों वाला इलाका मिस्टर फ्रैंकलिन का पसंदीदा सैरगाह था; मुझे पता था कि स्टेशन से लौटते समय वे शायद उसी तरफ मुड़ते होंगे; मुझे पता था कि पेनेलोप ने अपनी साथी नौकरानी को बार-बार वहाँ घूमते हुए देखा था, और हमेशा मुझसे कहती थी कि रोसन्ना का मकसद मिस्टर फ्रैंकलिन का ध्यान आकर्षित करना था। अगर मेरी बेटी सही थी, तो हो सकता है कि सार्जेंट की नज़र उस पर पड़ी हो और वह मिस्टर फ्रैंकलिन के लौटने का इंतज़ार कर रही हो। मैं दो दुविधाओं में फँसी थी: या तो पेनेलोप के इस मनगढ़ंत विचार को अपना बता दूँ, या फिर उस बेचारी को सार्जेंट कफ के शक को जगाने के गंभीर परिणामों को भुगतने दूँ। उस लड़की पर तरस खाकर—कसम से, उस लड़की पर तरस खाकर—मैंने सार्जेंट को ज़रूरी स्पष्टीकरण दिए, और उनसे कहा कि रोसन्ना

इतनी पागल हो गई थी कि उसने मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक पर अपना दिल लगा लिया था।
सार्जेंट कफ कभी नहीं हंसते थे। जब कभी-कभार कोई बात उन्हें हंसाती थी, तो वे बस अपने होंठों के कोनों को थोड़ा सा सिकोड़ लेते थे, इससे ज्यादा कुछ नहीं। और आज भी वे ऐसे ही सिकोड़ रहे थे।
"क्या बेहतर नहीं होगा कि तुम कहो कि वह इतनी पागल है कि बदसूरत लड़की है और सिर्फ एक नौकरानी है?" उसने पूछा। "मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक जैसे शिष्टाचार और रूप-रंग वाले सज्जन से प्रेम कर बैठना मुझे उसके व्यवहार का सबसे पागलपन भरा हिस्सा नहीं लगता। फिर भी, मुझे खुशी है कि मामला सुलझ गया: चीजों के स्पष्ट होने से मन को शांति मिलती है। जी हां, मैं इसे गुप्त रखूंगी, मिस्टर बेटरएज। मुझे मानवीय दुर्बलता के प्रति सहानुभूति रखना अच्छा लगता है—हालांकि मुझे अपने जीवन में इस गुण का अभ्यास करने के बहुत कम अवसर मिलते हैं। आपको लगता है कि मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक को लड़की के उनके प्रति आकर्षण का कोई संदेह नहीं है? आह! अगर वह सुंदर होती तो उन्हें बहुत जल्दी पता चल जाता। बदसूरत महिलाओं का इस दुनिया में बुरा हाल होता है; उम्मीद है कि उन्हें दूसरी दुनिया में इसका फल मिलेगा। आपका बगीचा सुंदर है, और लॉन भी अच्छी तरह से रखा हुआ है। खुद ही देख लीजिए कि बजरी के बजाय घास के बीच फूल कितने अच्छे लगते हैं। नहीं, धन्यवाद। मैं गुलाब नहीं लूंगी। मुझे उन्हें डंठल से तोड़ना अच्छा नहीं लगता। जैसे आपको लगता है, वैसे ही आपको भी।" आपको पता है, नौकरों के हॉल में कुछ गड़बड़ है। जब हीरे के गुम होने का पता चला था, तब क्या आपने किसी नौकर में कुछ ऐसा देखा था जिसका आप हिसाब नहीं लगा सके?
सार्जेंट कफ के साथ अब तक मेरा व्यवहार काफी अच्छा था। लेकिन जिस चालाकी से उन्होंने आखिरी सवाल पूछा, उससे मैं सतर्क हो गया। सीधे शब्दों में कहूँ तो, मुझे उनकी पूछताछ में मदद करने का विचार बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा, खासकर तब जब उनकी पूछताछ में उनका हाथ मेरे साथी नौकरों के बीच (छिपे हुए साँप की तरह) था।
मैंने कहा, "मुझे कुछ भी नजर नहीं आया, सिवाय इसके कि हम सबने एक साथ अपना आपा खो दिया, जिसमें मैं भी शामिल था।"
"ओह," सार्जेंट ने कहा, "बस इतना ही बताना था आपको?"

मैंने (जैसा कि मैंने खुद को तसल्ली दी) भावहीन चेहरे के साथ उत्तर दिया, "बस इतना ही।"
सार्जेंट कफ की निराशा भरी आंखें सीधे मेरे चेहरे पर टिकी हुई थीं।
उन्होंने कहा, "श्री बेटरएज, क्या आपको मुझसे हाथ मिलाने में कोई आपत्ति है? मुझे आप बहुत पसंद आए हैं।"
(उसने ठीक उसी क्षण को क्यों चुना जब मैं उसे धोखा दे रही थी, ताकि वह मुझे अपनी अच्छी राय का सबूत दे सके, यह मेरी समझ से परे है! मुझे थोड़ा गर्व महसूस हुआ—सचमुच मुझे थोड़ा गर्व महसूस हुआ कि आखिरकार मैं उस मशहूर कफ के लिए एक और मुसीबत बन गई!)
हम वापस घर गए; सार्जेंट ने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उसे एक कमरा दे दूं, और फिर नौकरों (केवल घर के नौकरों) को एक-एक करके, उनके पद के क्रम में, पहले से आखिरी तक, अंदर भेज दूं।
मैंने सार्जेंट कफ को अपने कमरे में बुलाया और फिर हॉल में नौकरों को इकट्ठा किया। रोज़ाना स्पीयरमैन हमेशा की तरह उनके बीच आ गई। वह सार्जेंट की तरह ही फुर्तीली थी और मुझे शक है कि उसने वह सब सुन लिया था जो सार्जेंट ने उसे देखने से ठीक पहले नौकरों के बारे में मुझसे कहा था। खैर, वह वहाँ थी, मानो उसने कभी झाड़ियों वाली जगह के बारे में सुना ही न हो।
मैंने उन्हें इच्छानुसार एक-एक करके अंदर भेजा। रसोइया सबसे पहले न्यायलय (यानी मेरा कमरा) में दाखिल हुई। वह थोड़ी देर ही रुकी। बाहर आने पर उसने बताया: "सार्जेंट कफ उदास हैं; लेकिन सार्जेंट कफ एक सच्चे सज्जन हैं।" मेरी मालकिन की नौकरानी उसके पीछे गई। वह काफी देर तक रुकी रही। बाहर आने पर उसने बताया: "अगर सार्जेंट कफ एक सम्मानित महिला पर विश्वास नहीं करते, तो कम से कम उन्हें अपनी राय अपने तक ही रखनी चाहिए!" पेनेलोप उसके बाद गई। वह बस एक-दो पल ही रुकी। बाहर आने पर उसने बताया: "सार्जेंट कफ पर तरस आता है। पिताजी, जवानी में उन्हें प्रेम में धोखा मिला होगा।" पेनेलोप के बाद पहली नौकरानी गई। मेरी मालकिन की नौकरानी की तरह वह भी काफी देर तक रुकी रही। बाहर आने पर उसने बताया: "श्री बेटरएज, मैंने आपकी सेवा में इसलिए भर्ती नहीं की थी कि एक नीच पुलिस अधिकारी मेरे सामने मुझ पर शक करे!" रोसन्ना स्पीयरमैन उसके बाद गई। उन सब से ज़्यादा देर तक वहीं रुकी रही। बाहर आने पर कोई प्रतिक्रिया नहीं - सन्नाटा पसरा रहा, होंठ राख की तरह पीले पड़ गए। नौकर सैमुअल,

रोसन्ना के पीछे गया। एक-दो मिनट रुका। बाहर आने पर प्रतिक्रिया: "जो भी सार्जेंट कफ के जूते पॉलिश करता है, उसे खुद पर शर्म आनी चाहिए।" रसोई की नौकरानी नैन्सी सबसे आखिर में गई। एक-दो मिनट रुकी। बाहर आने पर प्रतिक्रिया: "सार्जेंट कफ का दिल बहुत अच्छा है; मिस्टर बेटरएज, वो किसी मेहनती लड़की के साथ मज़ाक नहीं करते।"

जब सब कुछ समाप्त हो गया और मैं यह जानने के लिए न्याय न्यायालय में गया कि क्या मेरे लिए कोई और आदेश हैं, तो मैंने सार्जेंट को अपनी पुरानी हरकत करते हुए पाया - खिड़की से बाहर देखते हुए और खुद ही "द लास्ट रोज़ ऑफ़ समर" की धुन सीटी बजाते हुए।

"क्या आपको कोई खोज मिली है, महोदय?" मैंने पूछा।

सार्जेंट ने कहा, "अगर रोसन्ना स्पीयरमैन बाहर जाने की छुट्टी मांगे, तो उसे जाने दो; लेकिन पहले मुझे बता देना।"

रोसन्ना और मिस्टर फ्रैंकलिन के बारे में चुप रहना ही मेरे लिए बेहतर होता! यह बिल्कुल स्पष्ट था; मेरी तमाम कोशिशों के बावजूद, वह बदकिस्मत लड़की सार्जेंट कफ के संदेह के दायरे में आ गई थी।

"मुझे उम्मीद है कि आपको नहीं लगता कि हीरे के खोने से रोसन्ना को कोई चिंता है?" मैंने कहने की हिम्मत की।

सार्जेंट के उदास होंठों के कोने ऊपर की ओर मुड़ गए, और उसने मेरी ओर उसी तरह घूरकर देखा, जैसे उसने बगीचे में देखा था।

"मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि मैं आपको न बताऊं, श्रीमान बेटरएज," उन्होंने कहा। "कहीं आप अपना आपा न खो बैठें, आप जानते हैं, दूसरी बार।"

मुझे शक होने लगा कि कहीं मैंने मशहूर कफ के लिए ज़रूरत से ज़्यादा तो नहीं पी ली थी! मेरे लिए राहत की बात यह थी कि दरवाज़े पर दस्तक हुई और रसोइए का संदेश आया। रोज़ाना स्पीयरमैन ने बाहर जाने की इजाज़त मांगी थी, हमेशा की तरह, उसका सिर खराब था और उसे ताज़ी हवा चाहिए थी। सार्जेंट के इशारे पर मैंने हां कह दी। संदेशवाहक के जाने के बाद उसने पूछा, "नौकरों के बाहर जाने का रास्ता किधर है?" मैंने उसे नौकरों के बाहर जाने का रास्ता दिखाया। सार्जेंट ने कहा, "अपने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लो; और अगर कोई मेरे बारे में पूछे, तो कहना कि मैं अंदर हूं, अपना मन शांत कर रहा हूं।" उसने अपने होंठ फिर से सिकोड़े और गायब हो गया।

उन परिस्थितियों में अकेले रह जाने पर, एक प्रचंड जिज्ञासा ने मुझे स्वयं कुछ खोज करने के लिए प्रेरित किया।

यह स्पष्ट था कि सार्जेंट कफ को रोसन्ना पर शक मेरे कमरे में नौकरों की जाँच के दौरान मिली किसी बात से हुआ था। अब, रोसन्ना को छोड़कर, केवल दो नौकरानियाँ ही लंबे समय तक जाँच के दायरे में रहीं - मेरी मालकिन की नौकरानी और पहली नौकरानी। ये दोनों ही वे महिलाएँ थीं जिन्होंने शुरू से ही अपनी बदकिस्मत साथी नौकरानी को सताने में पहल की थी। इन निष्कर्षों पर पहुँचकर, मैंने नौकरों के हॉल में उनसे ऐसे ही पूछताछ की, जैसे कि यह आकस्मिक ही क्यों न हो, और चाय बनते देख मैंने तुरंत खुद को उस भोजन में आमंत्रित कर लिया। (क्योंकि, ध्यान रहे, एक औरत की जीभ के लिए चाय की एक बूँद वही है जो बुझते हुए दीपक के लिए तेल की एक बूँद होती है।)

चायदानी पर एक सहयोगी के रूप में मेरा भरोसा व्यर्थ नहीं गया। आधे घंटे से भी कम समय में मुझे उतना ही ज्ञान हो गया जितना स्वयं सार्जेंट को था।

मेरी नौकरानी और घर की नौकरानी, ऐसा प्रतीत हुआ कि दोनों को ही पिछले दिन रोसन्ना की बीमारी पर विश्वास नहीं था। ये दोनों शैतान औरतें—क्षमा करें; लेकिन ऐसी दो द्वेषपूर्ण महिलाओं का वर्णन और कैसे किया जा सकता है?—गुरुवार की दोपहर को बीच-बीच में चुपके से ऊपर गई थीं; उन्होंने रोसन्ना के दरवाजे पर दस्तक दी, लेकिन वह बंद मिला; उन्होंने खटखटाया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला; उन्होंने कान लगाए, लेकिन अंदर से कोई आवाज नहीं आई। जब लड़की चाय पीने नीचे आई और उसे फिर से बिस्तर पर भेज दिया गया, तब भी वह ठीक नहीं थी, तो ऊपर बताई गई दोनों शैतान औरतों ने एक बार फिर उसके दरवाजे पर दस्तक दी, लेकिन वह बंद मिला; उन्होंने चाबी के छेद में देखा, और पाया कि वह जाम है; उन्होंने आधी रात को दरवाजे के नीचे से रोशनी देखी, और सुबह चार बजे आग की चटकने की आवाज सुनी (जून के महीने में नौकर के शयनकक्ष में आग!)। ये सब बातें उन्होंने सार्जेंट कफ को बताई थीं, जिन्होंने उन्हें समझाने की उनकी उत्सुकता के बदले में उन्हें तीखी और संदेह भरी निगाहों से देखा और स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि उन्हें उनकी किसी भी बात पर विश्वास नहीं है। इसीलिए इन दोनों महिलाओं ने पूछताछ से लौटते समय उनके बारे में जो नकारात्मक रिपोर्टें दी थीं, वे इसी कारण थीं। और इसीलिए (चायदानी के प्रभाव को छोड़कर), वे सार्जेंट के उनके प्रति असभ्य व्यवहार के बारे में खुलकर बोलने को तैयार थीं।

कफ के टेढ़े-मेढ़े तरीकों का कुछ अनुभव होने के कारण, और पिछली बार जब मैंने उसे रोसन्ना के टहलने जाने पर चुपके से उसका पीछा करते देखा था, तो मुझे स्पष्ट रूप से लगा कि उसने नौकरानी और घर की नौकरानी को यह बताना उचित नहीं समझा होगा कि उन्होंने उसकी कितनी मदद की थी। वे ठीक उसी तरह की महिलाएं थीं, अगर उसने उनकी गवाही को विश्वसनीय माना होता, तो वे इससे घमंड कर बैठतीं और कुछ ऐसा कह या कर देतीं जिससे रोसन्ना स्पीयरमैन सतर्क हो जाती।

सुहावनी गर्मी की दोपहर में मैं बाहर निकला, उस बेचारी लड़की के लिए बहुत दुखी था और हालात के इस मोड़ से बहुत बेचैन था। कुछ देर बाद झाड़ियों की तरफ जाते हुए मेरी मुलाकात मिस्टर फ्रैंकलिन से हुई। स्टेशन पर अपने चचेरे भाई को छोड़ने के बाद, वे मेरी पत्नी के साथ थे और उनसे काफी देर तक बातचीत कर रहे थे। उन्होंने उन्हें मिस राहेल के अपने कपड़ों की जांच करवाने से मना करने के बारे में बताया था; और मेरी पत्नी के बारे में उनकी चिंता इतनी बढ़ गई थी कि वे इस विषय पर बोलने से कतरा रहे थे। उस शाम उनके चेहरे पर पारिवारिक गुस्सा साफ दिखाई दिया, जो मेरे अनुभव में पहली बार था।

"अच्छा, बेटरएज," उसने कहा, "जिस रहस्य और संदेह के माहौल में हम सब अभी जी रहे हैं, वह आपको कैसा लगता है? क्या आपको वह सुबह याद है जब मैं पहली बार मूनस्टोन लेकर यहाँ आया था? काश हमने उसे दलदल में फेंक दिया होता!"

उस तरह से भड़कने के बाद, जब तक वह शांत नहीं हो गया, तब तक उसने कुछ नहीं बोला। हम एक-दो मिनट तक चुपचाप साथ-साथ चलते रहे, और फिर उसने मुझसे पूछा कि सार्जेंट कफ का क्या हुआ। सार्जेंट के मेरे कमरे में जाकर खुद को शांत करने का बहाना बनाकर मिस्टर फ्रैंकलिन को टालना नामुमकिन था। मैंने उसे पूरी घटना बताई, खासकर मेरी नौकरानी और घर की नौकरानी ने रोसन्ना स्पीयरमैन के बारे में जो कहा था, उसका जिक्र किया।

श्री फ्रैंकलिन के तेज दिमाग ने पलक झपकते ही सार्जेंट के संदेह का रुख बदल जाने का तरीका भांप लिया।

"क्या तुमने मुझे आज सुबह नहीं बताया था," उसने कहा, "कि व्यापारियों में से एक ने बताया था कि वह कल फ्रिज़िंगहॉल जाने वाले रास्ते पर रोसन्ना से मिला था, जबकि हम सोच रहे थे कि वह अपने कमरे में बीमार है?"

"जी श्रीमान।"

"अगर मेरी चाची की नौकरानी और दूसरी औरत ने सच कहा है, तो आप यकीन मानिए कि व्यापारी उससे मिला था। लड़की की बीमारी का बहाना हमें धोखा देने के लिए था। शहर चुपके से जाने के पीछे उसका कोई बुरा कारण था। रंग से सना हुआ कपड़ा उसी का है; और सुबह चार बजे उसके कमरे में जो आग की आवाज़ सुनाई दी, वह उसे जलाने के लिए लगाई गई थी। रोसन्ना स्पीयरमैन ने हीरा चुरा लिया है। मैं अभी जाकर अपनी चाची को सारी बातें बताऊँगी।"
"अभी नहीं, महोदय," हमारे पीछे से एक उदास आवाज आई।
हम दोनों मुड़े और अचानक सार्जेंट कफ के सामने आ गए।
श्री फ्रैंकलिन ने पूछा, "अभी क्यों नहीं?"
"क्योंकि, महोदय, यदि आप महारानी को बताएंगे, तो महारानी मिस वेरेंडर को बता देंगी।"
"मान लो वो ऐसा कर देती है। फिर क्या होगा?" श्री फ्रैंकलिन ने ये शब्द अचानक गुस्से और उग्रता से कहे, मानो सार्जेंट ने उन्हें जान से मार दिया हो।
सार्जेंट कफ ने धीमी आवाज़ में कहा, "क्या आपको लगता है कि इस समय मुझसे ऐसा सवाल पूछना बुद्धिमानी है, महोदय?"
उनके बीच एक पल का सन्नाटा छा गया: श्री फ्रैंकलिन सार्जेंट के पास गए। दोनों ने एक-दूसरे की आंखों में सीधे देखा। श्री फ्रैंकलिन ने पहले बोलना शुरू किया, और उनकी आवाज़ उतनी ही अचानक धीमी हो गई जितनी अचानक उन्होंने उसे उठाया था।
"मुझे लगता है कि आप जानते हैं, मिस्टर कफ," उन्होंने कहा, "कि आप एक नाजुक मामले पर बात कर रहे हैं?"
"ऐसा सैकड़ों बार हो चुका है कि मैं खुद को नाजुक स्थिति में पा रहा हूँ," दूसरे ने हमेशा की तरह अडिग रहते हुए उत्तर दिया।
"क्या मुझे यह समझना चाहिए कि आप मुझे मेरी चाची को जो कुछ हुआ है वह बताने से मना कर रहे हैं?"
"कृपया यह समझ लें, महोदय, कि यदि आप लेडी वेरेंडर को या किसी और को भी इस बारे में बताते हैं कि क्या हुआ है, तो मैं इस मामले को तब तक के लिए बंद कर दूंगा जब तक मैं आपको अनुमति नहीं देता।"
बात यहीं खत्म हो गई। श्री फ्रैंकलिन के पास आत्मसमर्पण करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। वे गुस्से में मुँह फेरकर चले गए।

मैं वहाँ काँपते हुए खड़ा उनकी बातें सुन रहा था; समझ नहीं आ रहा था कि किस पर शक करूँ या आगे क्या सोचूँ। मेरी इस उलझन के बीच दो बातें मुझे साफ़ नज़र आ रही थीं। पहली, कि मेरी प्रेमिका किसी अज्ञात कारण से उन तीखी बातों की जड़ थी जो उनके बीच हुई थीं। दूसरी, कि वे दोनों एक-दूसरे को पूरी तरह समझ चुके थे, बिना एक-दूसरे से कोई स्पष्टीकरण बोले।

सार्जेंट ने कहा, "श्री बेटरएज, आपने मेरी अनुपस्थिति में बहुत मूर्खतापूर्ण काम किया है। आपने अपने दम पर थोड़ी जासूसी की है। भविष्य में, शायद आप मेरे साथ जासूसी करने की कृपा करेंगे।"

उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे उसी रास्ते पर अपने साथ ले गया जिससे वह आया था। मैं कह सकती हूँ कि मैं उसकी डांट की हकदार थी—लेकिन मैं रोज़ाना स्पीयरमैन के लिए जाल बिछाने में उसकी मदद नहीं करने वाली थी। चाहे वह चोर हो या न हो, कानूनी हो या गैर-कानूनी, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता—मुझे उस पर दया आती थी।

मैंने उसे झटकते हुए और अचानक रुकते हुए पूछा, "तुम मुझसे क्या चाहते हो?"

"यहाँ के आसपास के इलाके के बारे में बस थोड़ी सी जानकारी है," सार्जेंट ने कहा।

मुझे सार्जेंट कफ के भूगोल ज्ञान में सुधार करने पर कोई आपत्ति नहीं हो सकती।

"क्या इस घर से उस दिशा में समुद्र तट तक जाने वाला कोई रास्ता है?" सार्जेंट ने पूछा। बोलते हुए उन्होंने देवदार के पेड़ों के बागान की ओर इशारा किया जो कंपकंपी वाली रेत की ओर जाता था।

मैंने कहा, "हां, एक रास्ता है।"

"मुझे दिखाओं।"

गर्मी की शाम के धुंधलेपन में, सार्जेंट कफ और मैं कंधे से कंधा मिलाकर कांपती रेत की ओर चल पड़े।

अध्याय पंद्रह

सार्जेंट चुपचाप अपने विचारों में डूबा रहा, जब तक कि हम दलदल की ओर जाने वाले देवदार के पेड़ों के बागान में नहीं पहुँच गए। वहाँ पहुँचकर उसने मानो दृढ़ निश्चय कर लिया हो और फिर मुझसे बात की।

"श्री बेटरएज," उन्होंने कहा, "चूंकि आपने मेरी नाव में चप्पू चलाकर मुझे सम्मानित किया है, और जैसा कि मुझे लगता है कि शाम ढलने से पहले आप मेरी कुछ मदद कर सकते हैं, इसलिए अब एक-दूसरे को रहस्य में रखने का कोई फायदा नहीं है, और मैं अपनी ओर से स्पष्टवादिता का उदाहरण आपके सामने प्रस्तुत करना चाहता हूं। आप

मुझे रोसन्ना स्पीयरमैन के खिलाफ कोई भी जानकारी न देने के लिए दृढ़ हैं, क्योंकि वह आपके प्रति अच्छी रही है, और क्योंकि आप उस पर दिल से दया करते हैं। ये मानवीय विचार आपको बहुत सम्मान दिलाते हैं, लेकिन इस मामले में ये मानवीय विचार पूरी तरह से व्यर्थ हैं। रोसन्ना स्पीयरमैन को किसी भी तरह की मुसीबत में पड़ने का कोई खतरा नहीं है - नहीं, अगर मैं उसे हीरे के गायब होने में शामिल होने का दोषी ठहरा दूं, जबकि सबूत बिल्कुल स्पष्ट हैं!"
मैंने पूछा, "क्या आपका मतलब यह है कि मेरी पत्नी मुकदमा नहीं चलाएगी?"
"मेरा मतलब है कि आपकी महिला मुकदमा नहीं चला सकती," सार्जेंट ने कहा। "रोसन्ना स्पीयरमैन तो बस किसी दूसरे व्यक्ति के हाथों की एक मोहर है, और उस दूसरे व्यक्ति के हित में रोसन्ना स्पीयरमैन को दोषमुक्त रखा जाएगा।"
वह एक गंभीर व्यक्ति की तरह बोल रहा था—इसमें कोई शक नहीं था। फिर भी, मेरे मन में उसके प्रति कुछ बेचैनी सी उठ रही थी। "क्या आप उस दूसरे व्यक्ति का नाम नहीं बता सकते?" मैंने कहा।
"क्या आप नहीं कर सकते, श्रीमान बेटरएज?"
"नहीं।"
सार्जेंट कफ एकदम स्थिर खड़े रहे और उदास रुचि भरी नजरों से मेरी ओर देखने लगे।
उन्होंने कहा, "मानव दुर्बलता के प्रति सहानुभूति रखना मुझे हमेशा सुखद लगता है। श्री बेटरएज, इस समय मुझे आपके प्रति विशेष सहानुभूति है। और आप भी, इसी नेक भावना से, रोसन्ना स्पीयरमैन के प्रति विशेष सहानुभूति रखते होंगे, है ना? क्या आपको पता है कि उन्होंने हाल ही में लिनेन का कोई नया परिधान खरीदा है?"
उन्होंने अचानक से यह असाधारण प्रश्न क्यों पूछा, यह मेरी समझ से बिल्कुल बाहर था। सच बताने पर रोसन्ना को कोई नुकसान नहीं हो सकता था, इसलिए मैंने जवाब दिया कि वह हमारे पास बहुत कम कपड़ों के साथ आई थी, और मेरी मालकिन ने उसके अच्छे व्यवहार (मैंने उसके अच्छे व्यवहार पर विशेष जोर दिया) के बदले में उसे दो हफ्ते पहले ही नए कपड़े दिए थे।
"यह एक दयनीय दुनिया है," सार्जेंट ने कहा। "मिस्टर बेटरएज, इंसानी ज़िंदगी एक तरह का निशाना है—बदकिस्मती हमेशा उस पर निशाना साधती है और हमेशा सही जगह पर लगती है। अगर वो पोशाक न होती, तो हमें रोसन्ना के सामान में कोई नई नाइटगाउन या पेटीकोट मिल जाती और हम उसे उसी तरह पकड़ लेते। आप मेरी

बात समझ रहे हैं ना? आपने खुद नौकरों की जाँच की है और आप जानते हैं कि उनमें से दो ने रोसन्ना के दरवाजे के बाहर क्या खोजा। आप ज़रूर जानते होंगे कि कल बीमार पड़ने के बाद वो लड़की क्या कर रही थी? आप अंदाज़ा नहीं लगा सकते? अरे बाप रे, ये तो पेड़ों के आखिर में उस रोशनी की पट्टी की तरह साफ़ है। गुरुवार की सुबह ग्यारह बजे, सुपरिटेंडेंट सीग्रेव (जो खुद कमज़ोरी का पुतला है) ने सभी महिला नौकरानियों को दरवाजे पर लगा दाग दिखाया। रोसन्ना को अपनी ही चीज़ों पर शक करने के अपने कारण थे; जैसे ही उसे अपने कमरे में जाने का मौका मिला, उसने अपनी नाइटगाउन या पेटीकोट या जो भी हो, उस पर पेंट का दाग देखा, बीमार होने का नाटक किया और चुपके से निकल गई। वह कस्बे जाती है, नया पेटीकोट या नाइटगाउन बनाने का सामान लाती है, गुरुवार की रात को अपने कमरे में अकेले उसे बनाती है, आग जलाती है (उसे नष्ट करने के लिए नहीं; उसकी दो नौकरानियाँ उसके दरवाजे के बाहर ताक-झाँक कर रही हैं, और वह जानती है कि जलने की गंध फैलाना और बहुत सारी ज्वलनशील सामग्री को नष्ट करना ठीक नहीं है) - आग जलाती है, मेरा कहना है, निचोड़ने के बाद नए कपड़े को सुखाने और इस्त्री करने के लिए, दाग लगे कपड़े को छिपाकर रखती है (शायद अपने ऊपर), और इस समय हमारे सामने उस सुनसान समुद्र तट पर किसी सुविधाजनक जगह पर उसे ठिकाने लगाने में लगी है। मैंने आज शाम उसका पीछा आपके मछली पकड़ने वाले गाँव और एक खास झोपड़ी तक किया, जहाँ हमें वापस जाने से पहले शायद जाना पड़े। वह झोपड़ी में कुछ देर रुकी, और (जैसा कि मुझे लगता है) अपने लबादे के नीचे कुछ छिपाकर बाहर आई। एक लबादा (औरत की पीठ पर) दान का प्रतीक है - यह अनेक पापों को छुपाता है। मैंने उसे वहाँ से निकलने के बाद तट के किनारे उत्तर की ओर जाते देखा। यह कॉटेज। क्या आपका यह समुद्र तट समुद्री परिदृश्य का एक उत्कृष्ट नमूना माना जाता है, श्री बेटरएज?

मैंने यथासंभव संक्षिप्त रूप से उत्तर दिया, "हाँ।"

सार्जेंट कफ कहते हैं, "सबकी पसंद अलग-अलग होती है।" मेरे नज़रिए से देखूँ तो, मैंने इससे कम पसंद आने वाला समुद्री नज़ारा कभी नहीं देखा। अगर आप समुद्र तट पर किसी का पीछा कर रहे हों, और वह व्यक्ति पीछे मुड़कर देखे, तो छिपने के लिए कोई जगह नहीं है। मुझे दो विकल्पों में से एक चुनना था: या तो रोसन्ना को शक के आधार पर हिरासत में ले लूँ, या उसे कुछ समय के लिए उसके हाल पर छोड़ दूँ। कुछ कारणों से, जिनके बारे में मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता, मैंने आज रात किसी

ऐसे व्यक्ति को आगाह करने के बजाय कोई भी बलिदान देना बेहतर समझा, जिसका नाम हम दोनों के बीच गुप्त रहेगा। मैं घर वापस इसलिए आया हूँ ताकि आपसे कह सकूँ कि मुझे दूसरे रास्ते से समुद्र तट के उत्तरी छोर तक ले चलें। रेत—लोगों के पदचिह्न छापने की क्षमता के कारण—मेरी जानकारी में सबसे बेहतरीन जासूसों में से एक है। अगर हम इस तरह से रोसन्ना स्पीयरमैन से नहीं मिल पाते हैं, तो रेत हमें बता सकती है कि वह क्या कर रही थी, बशर्ते रोशनी काफी देर तक बनी रहे। रेत यहीं है। अगर आप मुझे यह सुझाव देने की अनुमति दें—मान लीजिए कि आप अपनी और मुझे पहले जाने दो?

अगर डॉक्टरों के क्लिनिक में जासूसी बुखार जैसी कोई बीमारी होती, तो वह बीमारी अब आपके विनम्र सेवक को बुरी तरह जकड़ चुकी थी। सार्जेंट कफ रेत के टीलों के बीच से होते हुए समुद्र तट की ओर चल दिए। मैं उनके पीछे-पीछे गया (दिल थामे हुए); और थोड़ी दूरी पर खड़ा होकर आगे क्या होगा, इसका इंतज़ार करने लगा।

हुआ यूं कि मैं लगभग उसी जगह पर खड़ी थी जहाँ रोज़ाना स्पीयरमैन और मैं बातें कर रही थीं, तभी अचानक मिस्टर फ्रैंकलिन लंदन से हमारे घर आ गए और हमारे सामने प्रकट हो गए। मेरी नज़रें सार्जेंट पर टिकी थीं, लेकिन मेरा मन अनजाने में ही उस पल रोज़ाना और मेरे बीच हुई बातचीत की तरफ चला गया। मैं कसम खाती हूँ कि मुझे ऐसा लगा जैसे उस बेचारी ने अपना हाथ फिर से मेरे हाथ में रख दिया हो और मुझे प्यार से बोलने के लिए धन्यवाद देते हुए उसे हल्के से दबाया हो। मैं कसम खाती हूँ कि मुझे लगभग उसकी आवाज़ सुनाई दी, जैसे वह फिर से कह रही हो कि जब भी वह बाहर जाती है, कांपती हुई रेत उसे अपनी मर्ज़ी के खिलाफ अपनी ओर खींच लेती है —लगभग उसका चेहरा फिर से खिल उठा, जैसे तब खिला था जब उसने पहली बार मिस्टर फ्रैंकलिन को पहाड़ियों के बीच से तेज़ी से हमारी तरफ आते देखा था। इन बातों को सोचते-सोचते मेरा मन उदास होता चला गया—और जब मैंने खुद को जगाने के लिए चारों ओर देखा, तो उस सुनसान छोटी खाड़ी का नज़ारा देखकर मेरी बेचैनी और बढ़ गई।

शाम की आखिरी रोशनी धीरे-धीरे गायब हो रही थी; और उस सुनसान जगह पर एक भयानक सन्नाटा छाया हुआ था। खाड़ी में विशाल रेत के टीले पर समुद्र की लहरों का उठना एक ऐसी आवाज़ थी जिसका कोई उच्चारण नहीं हो रहा था। भीतरी समुद्र खोया हुआ और धुंधला पड़ा था, हवा का एक झोंका भी उसे हिला नहीं रहा था। पानी की सतह पर पीले-सफेद रंग के गंदे कीचड़ के धब्बे तैर रहे थे। कुछ जगहों पर मैल

और कीचड़ हल्की-हल्की चमक रही थी, जहाँ उत्तर और दक्षिण की ओर समुद्र में निकले हुए दो विशाल चट्टानी टीलों पर आखिरी रोशनी पड़ रही थी। अब ज्वार-भाटे का समय हो गया था: और जैसे ही मैं वहाँ इंतज़ार कर रहा था, दलदली रेत की चौड़ी भूरी सतह में गड्ढे बनने लगे और वह कांपने लगी—उस भयानक जगह में हिलने वाली एकमात्र चीज़।

मैंने देखा कि रेत की सरसराहट पर नज़र पड़ते ही सार्जेंट चौंक गया। एक मिनट तक उसे देखने के बाद, वह मुड़ा और मेरी ओर वापस आया।

"यह एक खतरनाक जगह है, मिस्टर बेटरएज," उन्होंने कहा; "और आप चाहे जहाँ भी देख लें, समुद्र तट पर रोसन्ना स्पीयरमैन का कोई निशान नहीं है।"

वह मुझे किनारे पर नीचे ले गया, और मैंने खुद देखा कि रेत पर केवल उसके और मेरे ही पदचिह्न अंकित थे।

"हम जहां अभी हैं, वहां खड़े होकर वह मछुआरा गांव कैसा दिखता होगा?" सार्जेंट कफ ने पूछा।

मैंने उत्तर दिया, "कॉब्स होल," (क्योंकि उस जगह का यही नाम था), "जहाँ तक संभव हो, ठीक दक्षिण दिशा में स्थित है।"

सार्जेंट ने कहा, "मैंने आज शाम उस लड़की को कॉब्स होल से तट के किनारे उत्तर की ओर चलते हुए देखा। इसलिए, वह इसी जगह की ओर आ रही होगी। क्या कॉब्स होल उस ज़मीन के उस हिस्से के दूसरी तरफ है? और क्या हम वहाँ तक पहुँच सकते हैं—अभी पानी कम है—समुद्र तट के रास्ते?"

मैंने उन दोनों सवालों का जवाब "हां" में दिया।

"अगर आप मेरी इस सलाह को माफ करें, तो चलिए जल्दी से बाहर चलते हैं," सार्जेंट ने कहा। "मैं अंधेरा होने से पहले उस जगह को ढूंढना चाहता हूं जहां से वह तट छोड़कर गई थी।"

हम कॉब्स होल की ओर लगभग दो सौ गज ही चले थे कि सार्जेंट कफ अचानक समुद्र तट पर घुटनों के बल बैठ गए, मानो उन्हें अचानक प्रार्थना करने की तीव्र इच्छा हो रही हो।

"यहाँ के समुद्री परिदृश्य की भी अपनी एक खूबसूरती है," सार्जेंट ने टिप्पणी की। "ये एक महिला के पदचिह्न हैं, श्री बेटरएज! जब तक हमें इसके विपरीत कोई ठोस सबूत नहीं मिल जाता, तब तक हम इन्हें रोसन्ना के पदचिह्न ही कहेंगे। कृपया ध्यान दें, ये पदचिह्न बहुत उलझे हुए हैं—जानबूझकर उलझे हुए, मैं कहूँगी। आह, बेचारी, वह रेत

की जासूसी शक्तियों को मेरी ही तरह समझती है! लेकिन क्या उसने निशानों को पूरी तरह मिटाने में कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी नहीं की? मुझे लगता है कि उसने की है। यहाँ एक पदचिह्न कॉब्स होल से जा रहा है; और यहाँ दूसरा वापस वहीं जा रहा है। क्या उसके जूते का अगला हिस्सा सीधे पानी के किनारे की ओर इशारा नहीं कर रहा है? और क्या मुझे समुद्र तट पर, पानी के किनारे के पास, एड़ी के दो निशान भी नहीं दिख रहे हैं? मैं आपकी भावनाओं को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती, लेकिन मुझे डर है कि रोसन्ना चालाक है। ऐसा लगता है कि उसने उस जगह तक पहुँचने का निश्चय कर लिया था जहाँ से आप और मैं अभी आए हैं, बिना रेत पर कोई निशान छोड़े जिससे उसका पता लगाया जा सके। क्या हम कह सकते हैं कि वह पानी से होकर गुज़री? क्या वह इसी बिंदु से पीछे चट्टानों की उस कगार तक गई, फिर उसी रास्ते से वापस आई, और फिर से समुद्र तट पर चली गई जहाँ अभी भी उन दो एड़ी के निशान मौजूद हैं? हाँ, हम यही कहेंगे। यह मेरे इस अनुमान से मेल खाता है कि जब वह कुटिया से निकली थी, तो उसने अपने लबादे के नीचे कुछ रखा था। नहीं! नष्ट करने के लिए कुछ नहीं—क्योंकि, अगर ऐसा होता, तो मुझे उस जगह का पता लगाने से रोकने के लिए इन सभी सावधानियों की क्या ज़रूरत होती जहाँ उसकी सैर समाप्त हुई थी? मुझे लगता है, कुछ छिपाने के लिए, यह अनुमान दोनों में से बेहतर है। शायद, अगर हम कुटिया तक जाएँ, तो हमें पता चल जाए कि वह क्या है?

इस प्रस्ताव पर जासूसी करने का मेरा जुनून अचानक ठंडा पड़ गया। "आप मुझे नहीं चाहते," मैंने कहा। "मैं क्या भला कर सकता हूँ?"

“मिस्टर बेटरएज, जितना ज़्यादा मैं आपको जानता हूँ, उतने ही ज़्यादा गुण मुझे आपमें नज़र आते हैं। विनम्रता—अरे वाह, इस दुनिया में विनम्रता कितनी दुर्लभ है! और आपमें तो यह दुर्लभता कितनी अधिक है! अगर मैं अकेले कुटिया में जाऊँ, तो मेरे पहले ही सवाल पर लोग चुप हो जाएँगे। लेकिन अगर मैं आपके साथ जाऊँ, तो एक सम्मानित पड़ोसी मेरा परिचय करवाएगा, और बातचीत का सिलसिला अपने आप शुरू हो जाएगा। मुझे तो ऐसा ही लगता है; आपको कैसा लगता है?”

मेरे पास जितनी चतुराई से जवाब देने की इच्छा थी, उतनी जल्दी न होने के कारण, मैंने उससे यह पूछकर समय हासिल करने की कोशिश की कि वह किस कॉटेज में जाना चाहता है।

सार्जेंट द्वारा उस जगह का वर्णन करने पर, मैंने उसे योलैंड नामक एक मछुआरे की कुटिया के रूप में पहचाना, जिसमें वह अपनी पत्नी और दो वयस्क बच्चों, एक बेटे और

एक बेटी के साथ रहता था। यदि आप पीछे देखेंगे, तो पाएंगे कि जब मैंने पहली बार रोसन्ना स्पीयरमैन का परिचय आपको कराया था, तब मैंने बताया था कि वह कभी-कभी शिवरिंग सैंड की सैर के दौरान कॉब्स होल में अपने कुछ दोस्तों से मिलने जाती थी। वे दोस्त योलैंड परिवार थे - सम्मानित, नेक लोग, पड़ोस के लिए गौरव। रोसन्ना की उनसे जान-पहचान उनकी बेटी के माध्यम से शुरू हुई थी, जिसका पैर विकृत था और जिसे हमारे इलाके में लंगड़ी लूसी के नाम से जाना जाता था। मुझे लगता है कि उन दोनों विकृत लड़कियों के बीच एक तरह की सहानुभूति थी। खैर, योलैंड परिवार और रोसन्ना जब भी मिलते थे, हमेशा एक-दूसरे के साथ सुखद और मैत्रीपूर्ण तरीके से पेश आते थे। सार्जेंट कफ द्वारा लड़की का पता उनके घर तक लगा लेने से मेरी ओर से उनकी जाँच में मदद करने का मामला पूरी तरह से बदल गया। रोसन्ना तो बस वहीं गई थी जहाँ वह अक्सर जाती थी; और यह साबित करना कि वह मछुआरे और उसके परिवार के साथ थी, लगभग यही साबित करता था कि अब तक वह निर्दोष थी। इसलिए, अगर मैं सार्जेंट कफ के तर्क से सहमत हो जाता, तो यह लड़की के लिए नुकसान की बजाय एक तरह से उसकी मदद ही होती। मैंने इसी के अनुसार खुद को इससे सहमत घोषित किया।

हम कॉब्स होल की ओर बढ़े और जब तक रोशनी रही, रेत पर बने पदचिह्न देखते रहे। झोपड़ी पहुँचने पर पता चला कि मछुआरा और उसका बेटा नाव में बाहर गए हुए थे; और लंगड़ी लूसी, जो हमेशा कमजोर और थकी हुई रहती थी, ऊपर अपने बिस्तर पर आराम कर रही थी। भली श्रीमती योलैंड ने रसोई में अकेले हमारा स्वागत किया। जब उन्होंने सुना कि सार्जेंट कफ लंदन में एक मशहूर शख्सियत हैं, तो उन्होंने मेज पर डच जिन की एक बोतल और दो साफ पाइप रख दिए और उन्हें ऐसे घूरने लगीं मानो उन्हें देखकर उनका मन कभी नहीं भरता।

मैं एक कोने में चुपचाप बैठा यह सुनने का इंतज़ार कर रहा था कि सार्जेंट रोज़ाना स्पीयरमैन के विषय तक कैसे पहुँचेंगे। काम पर जाने का उनका हमेशा का घुमावदार तरीका, इस बार पहले से भी ज़्यादा घुमावदार साबित हुआ। उन्होंने यह कैसे किया, यह मैं उस समय भी नहीं बता सकता था और अब भी नहीं बता सकता। लेकिन यह निश्चित है कि उन्होंने शाही परिवार, प्रिमिटिव मेथोडिस्टों और मछली की कीमत से शुरुआत की; और वहाँ से (अपने निराशाजनक, गुप्त तरीके से) मूनस्टोन के खोने, हमारी पहली नौकरानी की दुर्भावना और रोज़ाना स्पीयरमैन के प्रति महिला नौकरानियों के कठोर व्यवहार तक पहुँचे। इस तरह अपने विषय पर पहुँचकर, उन्होंने

बताया कि वे खोए हुए हीरे के बारे में पूछताछ कर रहे थे, आंशिक रूप से उसे खोजने के उद्देश्य से और आंशिक रूप से घर में रोज़ाना के दुश्मनों के अनुचित संदेहों से उसे मुक्त करने के उद्देश्य से। रसोई में हमारे प्रवेश करने के लगभग पंद्रह मिनट के भीतर, श्रीमती योलैंड को यकीन हो गया था कि वह रोसन्ना की सबसे अच्छी दोस्त से बात कर रही हैं, और वह सार्जेंट कफ पर दबाव डाल रही थीं कि वह डच बोतल से उसका पेट ठीक करें और उसके मनोबल को फिर से बढ़ाएं।

मुझे पूरा यकीन था कि सार्जेंट श्रीमती योलैंड पर अपना समय व्यर्थ ही बर्बाद कर रहे हैं, इसलिए मैं उन दोनों की बातचीत का आनंद ले रहा था, ठीक वैसे ही जैसे मैं अपने समय में कोई नाटक देखता था। महान कफ ने अद्भुत धैर्य दिखाया; वह बेमन से इधर-उधर अपनी किस्मत आजमा रहे थे, और मानो बेतरतीब ढंग से निशाना लगाने की उम्मीद में एक के बाद एक गोली चला रहे थे। रोसन्ना की हर बात सराहनीय थी, रोसन्ना के खिलाफ कुछ भी नहीं - अंत में यही हुआ, चाहे उन्होंने कितनी भी कोशिश की हो; श्रीमती योलैंड लगातार उनसे बातें कर रही थीं और उन पर पूरा भरोसा कर रही थीं। उन्होंने आखिरी कोशिश तब की, जब हमने अपनी घड़ियाँ देखीं और विदा लेने से पहले उठ खड़े हुए।

"अब मैं आपको शुभ रात्रि कहूंगा, महोदया," सार्जेंट ने कहा। "और विदाई के समय मैं बस इतना ही कहूंगा कि रोसन्ना स्पीयरमैन की मैं, आपका आज्ञाकारी सेवक, सच्ची शुभचिंतक हूं। लेकिन, हे भगवान! वह अपने वर्तमान पद पर कभी सफल नहीं हो पाएगी; और मेरी सलाह है कि वह इसे छोड़ दे।"

"हे भगवान! वो इसे छोड़कर जाने वाली है!" श्रीमती योलैंड चिल्लाती हैं। (ध्यान दें - मैंने श्रीमती योलैंड के शब्दों का अनुवाद यॉर्कशायर की भाषा से अंग्रेज़ी में किया है। जब मैं आपको बताऊँ कि सर्वज्ञ कफ को भी उनकी बात समझने में अक्सर परेशानी होती थी, जब तक कि मैंने उनकी मदद नहीं की, तो आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं कि अगर मैं उनकी मातृभाषा में उनकी बात कहूँ तो आपकी क्या मनोदशा होगी।)

रोसन्ना स्पीयरमैन हमें छोड़कर जा रही है! यह सुनकर मेरे कान खड़े हो गए। कम से कम इतना तो अजीब लगा कि उसने पहले तो मुझे या मेरी पत्नी को कोई चेतावनी नहीं दी। मेरे मन में एक शंका उठी कि कहीं सार्जेंट कफ का आखिरी अंधाधुंध निशाना तो नहीं लगा। मैं सोचने लगा कि क्या इस पूरी प्रक्रिया में मेरी भूमिका उतनी हानिरहित थी जितनी मैंने सोची थी। एक ईमानदार महिला को झूठ के जाल में फंसाकर भ्रमित करना सार्जेंट का काम तो था ही, लेकिन एक अच्छे प्रोटेस्टेंट होने के नाते यह मेरा

कर्तव्य था कि मैं याद रखूँ कि झूठ का जनक शैतान है और बुराई और शैतान कभी दूर नहीं होते। हवा में कुछ गड़बड़ महसूस करते हुए मैंने सार्जेंट कफ को बाहर ले जाने की कोशिश की। वह तुरंत वापस बैठ गया और डच बोतल से थोड़ी सी शराब माँगी। श्रीमती योलैंड उसके सामने बैठ गईं और उसे एक घूँट पिला दी। मैं बेहद असहज महसूस करते हुए दरवाजे तक गया और कहा कि मुझे लगता है कि मुझे उन्हें शुभ रात्रि कह देनी चाहिए - लेकिन मैं गया नहीं।

"तो क्या वो जाने वाली है?" सार्जेंट ने कहा। "जब वो चली जाएगी तो क्या करेगी? बेचारी! दुनिया में उसका कोई दोस्त नहीं है, सिवाय तुम्हारे और मेरे।"

“अरे हाँ, वो आई तो है!” श्रीमती योलैंड कहती हैं। “जैसा कि मैंने आपको बताया, वो आज शाम यहाँ आई थी; और मेरी बेटी लूसी और मेरे साथ थोड़ी देर बैठने और बातें करने के बाद उसने अकेले ऊपर लूसी के कमरे में जाने की इजाज़त माँगी। हमारे घर में वही एक कमरा है जहाँ कलम और स्याही है। उसने कहा, ‘मैं एक दोस्त को चिट्ठी लिखना चाहती हूँ, और ऊपर घर के नौकरों की ताक-झाँक के कारण मैं ऐसा नहीं कर सकती।’ चिट्ठी किसे लिखी गई थी, यह मैं आपको नहीं बता सकती: जिस तरह से वो ऊपर उसे लिखने में समय लगाती रही, उससे लगता है कि वह बहुत लंबी चिट्ठी रही होगी। जब वो नीचे आई तो मैंने उसे एक डाक टिकट दिया। उसके हाथ में चिट्ठी नहीं थी, और उसने टिकट भी नहीं लिया। बेचारी (जैसा कि आप जानते हैं), अपने बारे में और अपने कामों के बारे में थोड़ी संकोची है। लेकिन उसका एक दोस्त ज़रूर है, मैं आपको बता सकती हूँ; और आप यकीन मानिए, वो उस दोस्त के पास ज़रूर जाएगी।”

"जल्दी ही?" सार्जेंट ने पूछा।

श्रीमती योलैंड कहती हैं, "जैसे ही वह कर सकेंगी।"

मैं फिर दरवाजे से अंदर आ गया। मेरी मालकिन के प्रतिष्ठान के मुखिया के रूप में, मैं अपनी उपस्थिति में, हमारे किसी नौकर के जाने या न जाने के बारे में इस तरह की बेबुनियाद बातों को अनदेखा नहीं कर सकता था।

मैंने कहा, "रोसन्ना स्पीयरमैन के बारे में आपकी राय गलत होगी। अगर वह अपनी मौजूदा स्थिति को छोड़कर जाना चाहती, तो सबसे पहले मुझसे ही इस बारे में बात करती।"

"गलती हुई?" श्रीमती योलैंड चिल्लाईं। "अरे, अभी एक घंटा पहले ही उसने यात्रा के लिए कुछ सामान खरीदा था - मुझसे, श्री बेटरएज से, इसी कमरे में। और इससे मुझे

याद आया," थकी हुई महिला अचानक अपनी जेब टटोलते हुए बोली, "रोसन्ना और उसके पैसों के बारे में कुछ कहना चाहती हूँ। क्या आप दोनों में से कोई घर वापस जाते समय उससे मिलने की संभावना है?"
इससे पहले कि मैं कुछ कह पाता, सार्जेंट कफ ने जवाब दिया, "मैं उस बेचारे को अत्यंत प्रसन्नता से संदेश पहुंचा दूंगा।"
श्रीमती योलैंड ने अपनी जेब से कुछ शिलिंग और छह पेंस निकाले और बड़ी सावधानी से उन्हें अपनी हथेली पर गिनकर सार्जेंट को दिए, मानो वह उन्हें देने के लिए बिल्कुल अनिच्छुक थीं।
"क्या मैं आपसे अनुरोध करूँ कि आप इसे मेरी ओर से प्यार और सम्मान के साथ रोसन्ना को लौटा दें?" श्रीमती योलैंड कहती हैं। "आज शाम उसने जो एक-दो चीज़ें पसंद कीं, उनके लिए उसने मुझे पैसे देने की ज़िद की—और हमारे घर में पैसे का बहुत स्वागत है, मैं इससे इनकार नहीं करती। फिर भी, उस बेचारी की थोड़ी-सी बचत लेने में मुझे असहजता हो रही है। और सच कहूँ तो, मुझे नहीं लगता कि मेरे पति को यह सुनकर अच्छा लगेगा कि मैंने रोसन्ना स्पीयरमैन के पैसे ले लिए हैं, जब वह कल सुबह काम से लौटेंगे। कृपया कहिएगा कि उसने मुझसे जो चीज़ें खरीदी हैं—उपहार के रूप में—उनका हार्दिक स्वागत है। और पैसे मेज पर मत छोड़िएगा," श्रीमती योलैंड सार्जेंट के सामने अचानक पैसे रखते हुए कहती हैं, मानो उनकी उंगलियां जल गई हों—"नहीं, भले आदमी! क्योंकि समय कठिन है, और शरीर कमज़ोर है; और हो सकता है कि मुझे इसे वापस अपनी जेब में रखने का लालच हो जाए।"
"चलो!" मैंने कहा, "मैं और इंतजार नहीं कर सकती: मुझे घर वापस जाना होगा।"
"मैं सीधे आपके पीछे आऊंगा," सार्जेंट कफ कहते हैं।
मैं दूसरी बार दरवाजे तक गया; और दूसरी बार भी, लाख कोशिश करने के बावजूद, मैं दहलीज पार नहीं कर सका।
मैंने सार्जेंट को कहते सुना, "यह एक नाजुक मामला है, महोदया, पैसे वापस करना। मुझे यकीन है कि आपने उससे चीजों के लिए कम कीमत वसूली होगी।"
"सस्ता है!" श्रीमती योलैंड कहती हैं। "आओ और खुद देख लो।"
उसने मोमबत्ती उठाई और सार्जेंट को रसोई के एक कोने में ले गई। मैं भी उनके पीछे जाने से खुद को रोक नहीं पाया। कोने में कबाड़ का ढेर लगा था (ज़्यादातर पुरानी धातु), जिसे मछुआरे ने अलग-अलग समय पर डूबे हुए जहाजों से इकट्ठा किया था और जिसे उसने अपने मन में अभी तक बेचा नहीं था। श्रीमती योलैंड ने उस कबाड़ में

हाथ डाला और एक पुराना जापानी टिन का डिब्बा निकाला, जिस पर ढक्कन और टांगने के लिए कुंडी लगी थी—ठीक वैसा ही जैसा जहाज़ पर नक्शे, चार्ट और ऐसी ही चीज़ों को पानी से बचाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।
“लो!” वह बोली। “आज शाम जब रोसन्ना आई, तो वह उस आदमी को वहाँ ले आई। ‘यह ठीक रहेगा,’ उसने कहा, ‘मेरी कफ़ और कॉलर रखने के लिए, और उन्हें मेरे बक्से में सिकुड़ने से बचाने के लिए।’ एक शिलिंग और नौ पेंस, मिस्टर कफ़। मैं रोटी से गुज़ारा करती हूँ, एक पैसा भी ज़्यादा नहीं!”
"बेहद सस्ता!" सार्जेंट ने एक गहरी आह भरते हुए कहा।
उन्होंने अपने हाथ में संदूक का वजन किया। मुझे लगा जैसे ही उन्होंने उसे देखा, मुझे "द लास्ट रोज़ ऑफ़ समर" की एक-दो धुनें सुनाई दीं। अब कोई संदेह नहीं था! उन्होंने रोज़ाना स्पीयरमैन के खिलाफ एक और खोज कर ली थी, उस जगह पर जहाँ मुझे लगता था कि उसका चरित्र सबसे सुरक्षित है, और यह सब मेरे माध्यम से हुआ! आप कल्पना कीजिए कि मुझे कैसा महसूस हुआ और मुझे कितना पछतावा हुआ कि मैं श्रीमती योलैंड और सार्जेंट कफ के बीच परिचय का माध्यम बनी।
मैंने कहा, "बस इतना ही काफी है। हमें सच में जाना चाहिए।"
मेरी तरफ जरा भी ध्यान दिए बिना, श्रीमती योलैंड ने कूड़ेदान में एक और डुबकी लगाई और इस बार एक कुत्ते की जंजीर लेकर बाहर निकलीं।
"सर, इसे अपने हाथ में तौलिए," उसने सार्जेंट से कहा। "हमारे पास इनमें से तीन थे; और रोसन्ना ने दो ले लिए हैं। 'मेरी प्यारी, तुम्हें कुत्ते की जंजीरों के एक जोड़े से क्या चाहिए?' मैंने कहा। 'अगर मैं इन्हें जोड़ दूं तो ये मेरे बक्से के चारों ओर अच्छे से फिट हो जाएंगे,' उसने कहा। 'रस्सी सबसे सस्ती है,' मैंने कहा। 'जंजीर सबसे पक्की है,' उसने कहा। 'किसने सुना है बक्से को जंजीर से बांधा है?' मैंने कहा। 'ओह, श्रीमती योलैंड, आपत्ति मत कीजिए!' उसने कहा; 'मुझे मेरी जंजीरें लेने दीजिए!' मिस्टर कफ एक अजीब लड़की हैं - सोने जैसी अच्छी, और मेरी लूसी के लिए बहन से भी ज़्यादा दयालु - लेकिन हमेशा थोड़ी अजीब। लीजिए! मैंने उसकी बात मान ली। तीन शिलिंग और छह पेंस। एक ईमानदार औरत की बात पर, तीन शिलिंग और छह पेंस, मिस्टर कफ!"
"प्रत्येक?" सार्जेंट ने पूछा।
"दोनों एक साथ!" श्रीमती योलैंड कहती हैं। "दोनों के लिए तीन शिलिंग और छह पेंस।"

"दे दिया गया है, महोदया," सार्जेंट ने सिर हिलाते हुए कहा। "साफ-साफ दे दिया गया है!"
"ये रहे पैसे," श्रीमती योलैंड मेज पर रखे चांदी के छोटे ढेर की ओर झुकते हुए कहती हैं, मानो वह ढेर उन्हें अपनी ओर खींच रहा हो। "टिन का डिब्बा और कुत्ते की जंजीरें, बस यही सब उसने खरीदा था और यही सब वह अपने साथ ले गई। एक पौंड नौ पेंस और तीन पौंड छह पेंस—कुल मिलाकर पांच पौंड तीन पेंस। मेरे प्यार और सम्मान के साथ—और मैं एक गरीब लड़की की बचत को छीनने की हिम्मत नहीं कर सकती, जब उसे खुद इसकी ज़रूरत हो सकती है।"
"मैडम, मैं अपने विवेक से यह पैसा वापस नहीं कर सकता," सार्जेंट कफ ने कहा। "आपने एक तरह से उन्हें ये चीजें उपहार में दे दी हैं - सचमुच।"
"क्या यह आपकी सच्ची राय है, महोदय?" श्रीमती योलैंड बेहद खुश होकर बोलीं।
"इसमें कोई शक नहीं हो सकता," सार्जेंट ने जवाब दिया। "मिस्टर बेटरएज से पूछिए।"
मुझसे पूछने का कोई फायदा नहीं था। मुझसे उन्हें बस इतना ही मिला, "शुभ रात्रि।"
"पैसे की परवाह मत करो!" श्रीमती योलैंड कहती हैं। इन शब्दों के साथ, मानो उन्होंने अपना सारा नियंत्रण खो दिया हो; और चांदी के ढेर को झट से झट से उठाकर, पूरा का पूरा अपनी जेब में डाल लिया। "इसे वहाँ पड़ा देखकर और किसी को इसे उठाते हुए न देखकर गुस्सा आता है," यह गुस्सैल औरत धड़ाम से बैठते हुए चिल्लाई और सार्जेंट कफ की ओर देखते हुए मानो कह रही हो, "यह फिर से मेरी जेब में है - अगर निकाल सकते हो तो निकालो!"
इस बार, मैं न केवल दरवाजे तक गया, बल्कि वापस जाने वाली सड़क पर काफी दूर तक चला गया। आप इसे जैसे चाहें वैसे समझाएं, मुझे ऐसा लगा जैसे उनमें से किसी एक या दोनों ने मुझे बहुत बुरी तरह नाराज कर दिया हो। गांव में तीन कदम चलने से पहले ही, मैंने अपने पीछे सार्जेंट की आवाज सुनी।
"आपके परिचय के लिए धन्यवाद, श्री बेटरएज," उन्होंने कहा। "मछुआरे की पत्नी की वजह से मुझे एक बिल्कुल नया अनुभव मिला है। श्रीमती योलैंड ने मुझे उलझन में डाल दिया है।"
उसे करारा जवाब देने का मेरा मन तो बस यही कर रहा था कि मैं उससे नाराज़ था, क्योंकि मैं खुद से नाराज़ था। लेकिन जब उसने अपनी उलझन स्वीकार की, तो मन में एक राहत भरी शंका जागी कि कहीं कोई बड़ा नुकसान तो नहीं हुआ। मैं चुपचाप आगे की बात सुनने के लिए इंतज़ार करता रहा।

“जी हां,” सार्जेंट ने कहा, मानो वो अंधेरे में मेरे मन की बात पढ़ रहे हों। “मुझे सुराग देने के बजाय, आपको यह जानकर तसल्ली हो सकती है, मिस्टर बेटरएज (रोसन्ना में आपकी दिलचस्पी को देखते हुए), कि आप ही मुझे गुमराह करने का ज़रिया बने हैं। आज रात लड़की ने जो किया है, वो तो साफ़ है। उसने दोनों जंजीरों को जोड़कर टिन के डिब्बे के कुंडी से बांध दिया है। उसने डिब्बे को पानी में या दलदल में डुबो दिया है। उसने जंजीर का ढीला सिरा चट्टानों के नीचे किसी ऐसी जगह पर बांध दिया है, जिसके बारे में सिर्फ़ उसे ही पता है। और वो इस डिब्बे को तब तक वहीं सुरक्षित रखेगी जब तक ये सारी कार्यवाही खत्म नहीं हो जाती; उसके बाद वो अपनी सुविधानुसार चुपके से उसे बाहर निकाल लेगी। अब तक तो सब कुछ साफ़ है। लेकिन,” सार्जेंट ने अपनी आवाज़ में पहली बार इतनी बेसब्री से कहा, “रहस्य ये है कि उसने टिन के डिब्बे में आखिर क्या छिपा रखा है?”

मैंने मन ही मन सोचा, "मूनस्टोन!" लेकिन मैंने सार्जेंट कफ से सिर्फ इतना कहा, "क्या आप अनुमान नहीं लगा सकते?"

"हीरा तो नहीं है," सार्जेंट ने कहा। "अगर रोसन्ना स्पीयरमैन को हीरा मिल गया है, तो मेरे जीवन का पूरा अनुभव ही इसके लिए ज़िम्मेदार है।"

ये शब्द सुनते ही, मेरे अंदर जासूसी का जुनून फिर से जाग उठा। खैर, इस नई पहेली को सुलझाने में मैं खुद को भूल गया। मैंने जल्दबाजी में कहा, "दागदार पोशाक!"

अंधेरे में सार्जेंट कफ अचानक रुक गए और उन्होंने अपना हाथ मेरी बांह पर रख दिया।

"क्या तुम्हारी उस दलदल में फेंकी गई कोई भी चीज कभी सतह पर वापस आती है?" उसने पूछा।

"कभी नहीं," मैंने उत्तर दिया। "हल्का हो या भारी, कांपती रेत में जो कुछ भी जाता है, वह नीचे समा जाता है और फिर कभी दिखाई नहीं देता।"

क्या रोसन्ना स्पीयरमैन को यह बात पता है?

"वह भी इसे उतनी ही अच्छी तरह जानती है जितना मैं।"

“तो फिर,” सार्जेंट ने कहा, “उसके पास क्या चारा है सिवाय इसके कि वह दाग लगे कपड़े में एक पत्थर का टुकड़ा बांधकर उसे दलदल में फेंक दे? उसे छिपाने का कोई कारण नहीं है—और फिर भी उसने छिपाया होगा। सवाल,” सार्जेंट ने आगे बढ़ते हुए कहा, “क्या पेंट से सना हुआ कपड़ा पेटीकोट है या नाइटगाउन? या यह कुछ और है जिसे किसी भी कीमत पर बचाना ज़रूरी है? श्री बेटरएज, अगर कुछ नहीं हुआ तो मुझे

कल फ्रिज़िंगहॉल जाना होगा और पता लगाना होगा कि उसने चुपके से नकली कपड़ा बनाने का सामान शहर से क्या खरीदा था। अभी तो घर से निकलना ही जोखिम भरा है —लेकिन इस मामले में अंधेरे में एक और कदम उठाना उससे भी बड़ा जोखिम है। मुझे थोड़ा गुस्सा आने के लिए माफ़ करें; मैं अपनी नज़र में गिर गया हूँ—मैंने रोज़ाना स्पीयरमैन को उलझन में डाल दिया है।"

जब हम वापस लौटे, तो नौकर रात का खाना खा रहे थे। बाहरी आंगन में सबसे पहले हमने उस पुलिसकर्मी को देखा जिसे अधीक्षक सीग्रेव ने सार्जेंट के हवाले कर दिया था। सार्जेंट ने पूछा कि क्या रोसन्ना स्पीयरमैन लौट आई है? हाँ। कब? लगभग एक घंटा पहले। उसने क्या किया था? वह ऊपर जाकर अपनी टोपी और लबादा उतारने गई थी —और अब वह चुपचाप बाकी लोगों के साथ खाना खा रही थी।

बिना कुछ कहे, सार्जेंट कफ अपने आत्मसम्मान में लगातार गिरते हुए घर के पिछले हिस्से की ओर चल दिए। अंधेरे में प्रवेश द्वार न मिलने के कारण वे आगे बढ़ते रहे (मेरे बार-बार पुकारने के बावजूद) जब तक कि वे बगीचे में जाने वाले एक छोटे से फाटक के पास नहीं रुक गए। जब मैं उन्हें सही रास्ते से वापस लाने के लिए उनके पास पहुँचा, तो मैंने देखा कि वे घर के पिछले हिस्से में स्थित शयनकक्ष की एक खिड़की को ध्यान से देख रहे थे।

मैंने भी ऊपर देखते हुए पाया कि वह मिस राहेल के कमरे की खिड़की को ध्यान से देख रहा था, और वहां रोशनी इधर-उधर आ-जा रही थी मानो कुछ असामान्य हो रहा हो।

"क्या यह मिस वेरेंडर का कमरा नहीं है?" सार्जेंट कफ ने पूछा।

मैंने जवाब दिया कि हाँ, और उन्हें मेरे साथ रात के खाने पर आने का न्योता दिया। सार्जेंट अपनी जगह पर ही बैठे रहे और रात में बगीचे की खुशबू का आनंद लेने के बारे में कुछ कहा। मैंने उन्हें उनके आनंद में ही छोड़ दिया। जैसे ही मैं दरवाजे से अंदर मुड़ने ही वाला था, मुझे छोटे गेट पर "द लास्ट रोज़ ऑफ़ समर" गाना सुनाई दिया। सार्जेंट कफ ने एक और खोज कर ली थी! और इस बार मेरी प्रेमिका की खिड़की उस खोज के नीचे थी!

बाद में मुझे सार्जेंट की याद आ गई, और मैंने विनम्रतापूर्वक कहा कि मैं उन्हें अकेला नहीं छोड़ सकता। "क्या ऊपर कुछ ऐसा है जो आपको समझ नहीं आ रहा?" मैंने मिस राहेल की खिड़की की ओर इशारा करते हुए पूछा।

उनकी आवाज़ से ऐसा लग रहा था कि सार्जेंट कफ ने अचानक अपनी नज़र में फिर से सही जगह पा ली थी। उन्होंने पूछा, "यॉर्कशायर में सट्टेबाजी करने वाले आप लोग वाकई बड़े लोग हैं, है ना?"
"तो?" मैंने कहा। "मान लीजिए कि हम हैं?"
“अगर मैं यॉर्कशायर का रहने वाला होता,” सार्जेंट ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा, “मिस्टर बेटरएज, मैं शर्त लगाता कि आपकी प्रेमिका ने अचानक घर छोड़ने का फैसला कर लिया है। अगर मेरी शर्त सही होती, तो मैं एक और शर्त लगाता कि यह विचार उसके मन में पिछले एक घंटे के भीतर आया है।” सार्जेंट के पहले अनुमान ने मुझे चौंका दिया। दूसरा अनुमान मेरे दिमाग में उस रिपोर्ट से जुड़ गया जो हमने पुलिसवाले से सुनी थी, कि रोसन्ना स्पीयरमैन पिछले एक घंटे के भीतर रेगिस्तान से लौटी है। इन दोनों बातों का मुझ पर अजीब सा असर हुआ जब हम रात के खाने के लिए अंदर गए। मैंने सार्जेंट कफ का हाथ झटक दिया और शिष्टाचार भूलकर, खुद पूछताछ करने के लिए दरवाजे से बाहर निकल गया।
मार्ग में मेरी मुलाकात सबसे पहले सैमुअल नामक सेवक से हुई।
इससे पहले कि मैं उनसे कोई सवाल पूछ पाता, उन्होंने कहा, "महामहिम आपसे और सार्जेंट कफ से मिलने का इंतजार कर रही हैं।"
"वह कब से इंतजार कर रही है?" मेरे पीछे से सार्जेंट की आवाज आई।
"पिछले एक घंटे से, महोदय।"
फिर वही हुआ! रोसन्ना वापस आ गई थी; मिस राहेल ने आम ज़िंदगी से कुछ हिम्मत जुटाई थी; और मेरी मालकिन सार्जेंट से मिलने का इंतज़ार कर रही थीं—ये सब पिछले एक घंटे में हुआ! इन बिल्कुल अलग-अलग लोगों और घटनाओं का इस तरह आपस में जुड़ना अच्छा नहीं लगा। मैं सार्जेंट कफ की तरफ देखे बिना या उनसे बात किए बिना ऊपर चली गई। जैसे ही मैंने अपनी मालकिन के दरवाजे पर दस्तक देने के लिए हाथ उठाया, मेरा हाथ अचानक कांपने लगा।
"मुझे आश्चर्य नहीं होगा अगर आज रात घर में कोई बड़ा विवाद खड़ा हो जाए। घबराओ मत! मैंने अपने समय में इससे भी बदतर पारिवारिक समस्याओं को संभाला है।"
जैसे ही उसने ये शब्द कहे, मुझे मेरी प्रेमिका की आवाज़ सुनाई दी जो हमें अंदर आने के लिए बुला रही थी।
अध्याय सोलह

हमने देखा कि कमरे में पढ़ने वाले लैंप के अलावा कोई रोशनी नहीं थी। लैंप का पर्दा इस तरह कसा हुआ था कि उसका चेहरा पूरी तरह से ढक गया था। अपनी सामान्य सीधी-सादी शैली में हमारी ओर देखने के बजाय, वह मेज के पास बैठी थी और अपनी आँखें हठपूर्वक एक खुली किताब पर टिकाए हुए थी।
"अधिकारी," उसने कहा, "क्या आपके द्वारा की जा रही जांच के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि इस घर में मौजूद कोई व्यक्ति इसे छोड़ना चाहता है या नहीं?"
"सबसे महत्वपूर्ण बात, मेरी महिला।"
"तो मुझे आपको यह बताना होगा कि मिस वेरेंडर अपनी चाची, श्रीमती एबलव्हाइट, जो फ्रिज़िंगहॉल में रहती हैं, के साथ रहने जा रही हैं। उन्होंने कल सुबह सबसे पहले हमें छोड़कर जाने की व्यवस्था की है।"
सार्जेंट कफ ने मेरी तरफ देखा। मैं अपनी प्रेमिका से बात करने के लिए एक कदम आगे बढ़ा—और, (अगर मुझे स्वीकार करना ही है तो) मेरा दिल बैठ गया, इसलिए मैं एक कदम पीछे हट गया और कुछ नहीं बोला।
"क्या मैं आपसे यह पूछ सकता हूँ कि मिस वेरेंडर ने आपको कब सूचित किया था कि वह अपनी चाची के घर जा रही हैं?" सार्जेंट ने पूछा।
"लगभग एक घंटे पहले," मेरी मालकिन ने उत्तर दिया।
सार्जेंट कफ ने मेरी तरफ एक बार फिर देखा। कहते हैं कि बूढ़े लोगों का दिल आसानी से पिघलता नहीं है। अगर मैं फिर से पच्चीस साल का होता, तो भी मेरा दिल इतनी ज़ोर से नहीं धड़कता जितना अब धड़क रहा है!
"मैडम, मुझे मिस वेरेंडर के कार्यों को नियंत्रित करने का कोई अधिकार नहीं है। मैं आपसे केवल इतना ही अनुरोध कर सकता हूँ कि यदि संभव हो तो उनकी रवानगी को आज बाद में टाल दें। मुझे स्वयं कल सुबह फ्रिज़िंगहॉल जाना है और मैं दो बजे तक, या उससे पहले ही वापस आ जाऊँगा। यदि मिस वेरेंडर को तब तक यहाँ रोका जा सके, तो मैं उनके जाने से पहले उनसे दो शब्द कहना चाहूँगा - अचानक।"
मेरी पत्नी ने मुझे कोचवान को यह आदेश देने का निर्देश दिया कि मिस राहेल के लिए गाड़ी दो बजे तक न आए। यह आदेश देने के बाद उन्होंने सार्जेंट से पूछा, "क्या आपको कुछ और कहना है?"
"केवल एक बात, महोदया। यदि मिस वेरेंडर को व्यवस्थाओं में इस बदलाव से आश्चर्य होता है, तो कृपया मुझे उनकी यात्रा स्थगित करने का कारण न बताएं।"

मेरी शिक्षिका ने अचानक अपनी किताब से सिर उठाया, मानो वह कुछ कहने वाली हो —बड़े संघर्ष से खुद को रोका—और फिर से खुले पन्ने की ओर देखते हुए, हाथ के इशारे से हमें विदा कर दिया।

जब हम दोबारा हॉल में आए तो सार्जेंट कफ ने कहा, "वह एक अद्‌भुत महिला हैं। अगर उनमें आत्मसंयम न होता, तो मिस्टर बेटरएज, जिस रहस्य ने आपको परेशान कर रखा है, वह आज रात ही सुलझ गया होता।"

उन शब्दों को सुनते ही, सच्चाई आखिरकार मेरे मूर्ख बूढ़े दिमाग में कौंध गई। उस पल, शायद मैं पूरी तरह से होश खो बैठा था। मैंने सार्जेंट को उसके कोट के कॉलर से पकड़ा और उसे दीवार से सटा दिया।

"तुम्हें धिक्कार है!" मैं चिल्लाई, "मिस राहेल में कुछ गड़बड़ है—और तुमने इसे मुझसे इतने समय तक छिपाए रखा है!"

सार्जेंट कफ ने दीवार से सटकर मेरी ओर देखा—बिना हाथ हिलाए, बिना अपने उदास चेहरे की एक भी मांसपेशी हिलाए।

"आह," उसने कहा, "आखिरकार तुमने सही अनुमान लगा ही लिया।"

मेरा हाथ उसके कॉलर से छूट गया और मैंने अपना सिर अपनी छाती पर झुका लिया। कृपया याद रखें, मेरे इस तरह के व्यवहार के लिए एक बहाना यह भी हो सकता है कि मैंने पचास वर्षों तक इस परिवार की सेवा की थी। मिस राहेल बचपन में कई बार मेरी गोद में चढ़कर मेरी मूंछें खींचती थीं। मिस राहेल, अपनी तमाम कमियों के बावजूद, मेरी नज़र में सबसे प्यारी, सबसे सुंदर और सबसे अच्छी मालकिन थीं, जिनकी सेवा और प्यार किसी बूढ़े नौकर ने किया था। मैंने सार्जेंट कफ से क्षमा मांगी, लेकिन मुझे डर है कि मैंने नम आंखों से ऐसा किया, और वह भी उचित तरीके से नहीं।

"चिंता मत कीजिए, मिस्टर बेटरएज," सार्जेंट ने मुझसे कहीं अधिक विनम्रता से कहा। "हमारे पेशे में अगर हम जल्दी नाराज़ हो जाते, तो हमारी कोई कीमत नहीं होती। अगर इससे आपको तसल्ली मिले, तो मुझे फिर से पट्टा पहना दीजिए। आपको यह करना बिल्कुल नहीं आता; लेकिन मैं आपकी इस नासमझी को नज़रअंदाज़ कर दूंगा, क्योंकि मैं आपकी भावनाओं का ख्याल रख रहा हूँ।"

उसने अपने होठों के कोनों को सिकोड़ा और अपने ही नीरस अंदाज में, मानो उसे लगा कि उसने खुद पर एक बहुत अच्छा मजाक किया है।

मैं उसे अपने छोटे से बैठक कक्ष में ले गया और दरवाजा बंद कर दिया।

मैंने कहा, "सार्जेंट, मुझे सच बताइए। आपको क्या शक है? अब मुझसे इसे छुपाना कोई दयालुता नहीं होगी।"
सार्जेंट कफ ने कहा, "मुझे शक नहीं है। मैं जानता हूं।"
मेरा दुर्भाग्यवश गुस्सा एक बार फिर मुझ पर हावी होने लगा।
मैंने कहा, "क्या आप मुझे सीधे-सीधे शब्दों में यह बताना चाहते हैं कि मिस राहेल ने अपना हीरा चुरा लिया है?"
“जी हां,” सार्जेंट ने कहा; “मैं आपको यही बात साफ-साफ बताना चाहता हूं। मिस वेरेंडर शुरू से अंत तक गुप्त रूप से मूनस्टोन को अपने कब्जे में रखे हुए थीं; और उन्होंने रोसन्ना स्पीयरमैन का विश्वास इसलिए जीता क्योंकि उन्हें लगा कि हम रोसन्ना स्पीयरमैन पर चोरी का शक करेंगे। संक्षेप में यही पूरा मामला है। मुझे फिर से पकड़िए, मिस्टर बेटरएज। अगर इससे आपके मन को शांति मिलती है, तो मुझे फिर से पकड़िए।”
हे भगवान! इस तरह से मेरी भावनाओं को शांत करना संभव नहीं था। "मुझे कारण बताओ!" मैं उससे बस इतना ही कह पाई।
“कल आपको मेरे तर्क सुनने को मिलेंगे,” सार्जेंट ने कहा। “अगर मिस वेरेंडर अपनी चाची से मिलने जाने का कार्यक्रम टालने से इनकार करती हैं (जो आप देखेंगे कि मिस वेरेंडर करेंगी), तो मुझे कल आपकी मालकिन के सामने पूरा मामला रखना पड़ेगा। और, क्योंकि मुझे नहीं पता कि इसका क्या नतीजा निकलेगा, मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप उपस्थित रहें और दोनों पक्षों की बात सुनें। आज रात के लिए इस मामले को यहीं छोड़ दें। नहीं, मिस्टर बेटरएज, आप मुझसे मूनस्टोन के विषय पर एक शब्द भी नहीं सुन सकते। यह लीजिए, आपके लिए रात के खाने की मेज लगी है। यह उन कई मानवीय कमजोरियों में से एक है जिनका मैं हमेशा कोमल भाव से इलाज करता हूँ। अगर आप घंटी बजाएंगे, तो मैं प्रार्थना करूँगा। 'जो हमें मिलने वाला है----'”
"सार्जेंट, आपको इसे खाने में अच्छी भूख लगे, यही मेरी कामना है," मैंने कहा। "मेरी भूख तो मर चुकी है। मैं इंतज़ार करूँगा और देखूँगा कि आपको खाना परोसा जाता है, और फिर अगर मैं चला जाऊँ और खुद ही इस समस्या से निपटने की कोशिश करूँ, तो मुझे माफ़ कर देना।"
मैंने उसे हर चीज़ बेहतरीन परोसी जाती देखी—और अगर उस बेहतरीन चीज़ से उसका दम घुट जाता तो मुझे कोई अफ़सोस नहीं होता। उसी समय मुख्य माली (श्री बेगबी) अपने साप्ताहिक हिसाब के साथ अंदर आए। सार्जेंट ने तुरंत गुलाबों और घास

और बजरी के रास्तों के फ़ायदों के बारे में बात शुरू कर दी। मैंने उन दोनों को वहीं छोड़ दिया और भारी मन से बाहर चला गया। यह कई सालों में पहली ऐसी मुसीबत थी जो तंबाकू की एक हल्की सी महक से भी दूर नहीं होने वाली थी, और जो रॉबिन्सन क्रूसो की पहुँच से भी परे थी।

बेचैन और दुखी होकर, और कहीं जाने के लिए कोई जगह न होने के कारण, मैंने छत पर एक चक्कर लगाया और शांति और सुकून से अकेले में इस बारे में सोचा। मेरे विचार क्या थे, इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। मैं खुद को बहुत बूढ़ा, थका हुआ और अपनी जगह के लिए अयोग्य महसूस कर रहा था—और अपने जीवन में पहली बार सोचने लगा कि भगवान मुझे कब अपने पास बुला लेंगे। इन सबके बावजूद, मिस राहेल पर मेरा विश्वास अडिग रहा। अगर सार्जेंट कफ अपनी पूरी महिमा में सुलेमान होते और मुझसे कहते कि मेरी प्रेमिका एक घिनौनी और घिनौनी साजिश में शामिल हो गई है, तो सुलेमान, चाहे वह कितना भी बुद्धिमान क्यों न हो, के लिए मेरे पास केवल एक ही जवाब होता, "आप उसे नहीं जानते; और मैं जानता हूँ।"

मेरी ध्यान साधना सैमुअल के आने से भंग हो गई। वह मेरी प्रेमिका का एक लिखित संदेश लेकर आया था।

पढ़ने के लिए रोशनी लेने घर के अंदर जाते हुए सैमुअल ने कहा कि मौसम में बदलाव आता दिख रहा है। मेरे परेशान मन के कारण मैं पहले इस बात पर ध्यान नहीं दे पाया था। लेकिन अब मेरा ध्यान इस ओर गया, मैंने कुत्तों की बेचैनी और हवा की धीमी सरसराहट सुनी। आसमान की ओर देखते हुए मैंने बादलों को और भी काला होते हुए और पानी जैसे चाँद के ऊपर तेज़ी से आगे बढ़ते देखा। भयानक मौसम आने वाला था —सैमुअल सही था, भयानक मौसम आने वाला था।

मेरी पत्नी के संदेश से मुझे पता चला कि फ्रिज़िंगहॉल के मजिस्ट्रेट ने उन्हें तीन भारतीयों के बारे में याद दिलाने के लिए पत्र लिखा था। आने वाले सप्ताह की शुरुआत में, उन बदमाशों को रिहा करना होगा और उन्हें अपनी मर्ज़ी से जीने के लिए छोड़ देना होगा। अगर हमें उनसे कोई और सवाल पूछना था, तो समय बर्बाद नहीं करना था। सार्जेंट कफ से पिछली बार मिलने पर यह बात बताना भूल जाने के कारण, मेरी पत्नी अब मुझसे यह बात बताने को कह रही थीं। भारतीय मेरे दिमाग से पूरी तरह निकल चुके थे (जैसे कि वे निस्संदेह आपके दिमाग से भी निकल चुके होंगे)। मुझे उस विषय को फिर से उठाने में कोई फायदा नहीं दिख रहा था। फिर भी, मैंने तुरंत अपने आदेशों का पालन किया।

मैंने सार्जेंट कफ और माली को, जिनके बीच स्कॉच व्हिस्की की एक बोतल रखी थी, गुलाब उगाने के विषय पर ज़ोर-शोर से बहस करते हुए पाया। सार्जेंट इतना मग्न था कि जब मैं अंदर आया तो उसने हाथ उठाकर मुझे इशारा किया कि मैं बहस में दखल न दूं। जहाँ तक मैं समझ पाया, उनके बीच का सवाल यह था कि क्या सफेद मॉस गुलाब को अच्छी तरह से उगाने के लिए उसे डॉग-रोज़ पर ग्राफ्ट करना ज़रूरी है या नहीं। श्री बेगबी ने कहा, हाँ; और सार्जेंट कफ ने कहा, नहीं। वे मुझसे दो लड़कों की तरह गरमागरम बहस कर रहे थे। गुलाब उगाने के बारे में मुझे ज़रा भी जानकारी नहीं थी, इसलिए मैंने बीच का रास्ता अपनाया—ठीक वैसे ही जैसे महारानी के न्यायाधीश करते हैं, जब न्याय का तराजू एक बाल बराबर भी डगमगाता है। मैंने कहा, "सज्जनों, दोनों पक्षों की अपनी-अपनी राय है।" उस निष्पक्ष फैसले से उत्पन्न अस्थायी शांति में, मैंने अपनी पत्नी का लिखित संदेश सार्जेंट कफ की निगाहों के सामने मेज पर रख दिया।

इस समय तक मैं लगभग सार्जेंट से नफरत करने लगा था। लेकिन सच्चाई मुझे यह स्वीकार करने पर मजबूर करती है कि मानसिक तत्परता के मामले में वह एक अद्भुत व्यक्ति थे।

संदेश पढ़ने के आधे मिनट के भीतर ही उन्होंने अधीक्षक सीग्रेव की रिपोर्ट को याद किया; उसमें से भारतीयों से संबंधित अंश चुना; और अपना जवाब तैयार कर लिया। श्री सीग्रेव की रिपोर्ट में एक प्रसिद्ध यात्री का ज़िक्र था, जो भारतीयों और उनकी भाषा को समझता था, है ना? बिल्कुल। क्या मुझे उस सज्जन का नाम और पता पता है? बिल्कुल। क्या मैं उन्हें मेरी पत्नी के संदेश के पीछे लिख दूँ? आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। सार्जेंट कफ सुबह फ्रिज़िंगहॉल जाते समय उस सज्जन से संपर्क करेंगे।

मैंने पूछा, "क्या आपको इससे कुछ परिणाम की उम्मीद है?" उन्होंने जवाब दिया, "सुपरिटेंडेंट सीग्रेव ने भारतीयों को उतना ही निर्दोष पाया जितना कि अजन्मा बच्चा।"

“सुपरिटेंडेंट सीग्रेव अब तक अपने सभी निष्कर्षों में गलत साबित हुए हैं,” सार्जेंट ने उत्तर दिया। “कल यह पता लगाना शायद उचित होगा कि क्या सुपरिटेंडेंट सीग्रेव भारतीयों के बारे में भी गलत थे।” इतना कहकर वह श्री बेगबी की ओर मुड़े और ठीक वहीं से बहस शुरू की जहाँ से रुकी थी। “श्री गार्डनर, हमारे बीच यह प्रश्न मिट्टी, मौसम, धैर्य और परिश्रम का है। अब मैं इसे एक अलग दृष्टिकोण से देखता हूँ। आप अपने सफेद मॉस रोज़ को लीजिए----”

तब तक मैंने उनके लिए दरवाजा बंद कर दिया था, और बाकी विवाद की बातें मुझे सुनाई नहीं दे रही थीं।

रास्ते में मेरी मुलाकात पेनेलोप से हुई जो इधर-उधर घूम रही थी, और मैंने उससे पूछा कि वह किस चीज का इंतजार कर रही है।
वह अपनी दासी की घंटी का इंतज़ार कर रही थी, तभी उसकी दासी ने उसे अगले दिन की यात्रा के लिए पैकिंग जारी रखने के लिए वापस बुला लिया। और पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि मिस राहेल ने फ्रिज़िंगहॉल में अपनी चाची के घर जाने का कारण यह बताया था कि वह घर उसके लिए असहनीय हो गया था, और वह अब एक ही छत के नीचे एक पुलिसकर्मी की घृणित उपस्थिति को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। आधे घंटे पहले जब उसे बताया गया कि उसका प्रस्थान दोपहर दो बजे तक विलंबित हो जाएगा, तो वह बहुत क्रोधित हो गई। उस समय मौजूद मेरी मालकिन ने उसे खूब डांटा, और फिर (शायद कुछ ऐसा कहना चाहती थी जो उसने अपनी बेटी को ही बताया हो) पेनेलोप को कमरे से बाहर भेज दिया। घर की बदली हुई स्थिति को लेकर मेरी बेटी बहुत उदास थी। "कुछ भी ठीक नहीं चल रहा है, पिताजी; कुछ भी पहले जैसा नहीं रहा। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे हम सब पर कोई भयानक विपत्ति मंडरा रही हो।"
मुझे भी ऐसा ही लग रहा था। लेकिन मैंने अपनी बेटी के सामने दिखावा किया। जब हम बात कर रहे थे तभी मिस राहेल की घंटी बजी। पेनेलोप सामान पैक करने के लिए पीछे की सीढ़ियों से ऊपर भागी। मैं मौसम में बदलाव देखने के लिए दूसरे रास्ते से हॉल में गई।
जैसे ही मैं नौकरों के दफ्तर से हॉल में जाने वाले झूलते दरवाजे के पास पहुँचा, वह दूसरी तरफ से ज़ोर से खुला और रोसन्ना स्पीयरमैन दर्द से कराहते हुए मेरे पास से भागी। उसका एक हाथ उसके दिल पर था, मानो दर्द उसी तरफ हो। "क्या बात है, मेरी बच्ची?" मैंने उसे रोकते हुए पूछा। "क्या तुम बीमार हो?" "भगवान के लिए, मुझसे बात मत करो," उसने जवाब दिया और मेरे हाथों से खुद को छुड़ाकर नौकरों की सीढ़ियों की तरफ भाग गई। मैंने रसोइए (जो पास ही था) को उस बेचारी लड़की का ध्यान रखने के लिए कहा। रसोइए के अलावा दो और लोग भी पास ही थे। सार्जेंट कफ चुपके से मेरे कमरे से बाहर आया और पूछा कि क्या हुआ। मैंने जवाब दिया, "कुछ नहीं।" दूसरी तरफ, मिस्टर फ्रैंकलिन ने झूलता दरवाजा खोला और मुझे हॉल में बुलाकर पूछा कि क्या मैंने रोसन्ना स्पीयरमैन को देखा है।
"वह अभी-अभी मेरे पास से गुजरी है, महोदय, उसका चेहरा बहुत परेशान था और वह बहुत अजीब तरीके से चल रही थी।"

"मुझे खेद है कि अनजाने में ही उस गड़बड़ी का कारण मैं ही हूं, बेटरएज।"
"आप, महोदय!"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "मैं इसकी व्याख्या नहीं कर सकता; लेकिन, अगर हीरे के खोने में लड़की का हाथ है, तो मुझे पूरा विश्वास है कि वह दो मिनट पहले ही सब कुछ कबूल करने वाली थी - और वह भी मुझसे, दुनिया के सभी लोगों में से।"
जब उसने वे आखिरी शब्द कहे, तो मैंने झूलते हुए दरवाजे की ओर देखा और मुझे लगा कि वह अंदर की तरफ से थोड़ा सा खुला हुआ था।
क्या कोई सुन रहा था? मेरे पहुँचने से पहले ही दरवाज़ा गिर गया। उसके तुरंत बाद, मैंने देखा कि सार्जेंट कफ के सम्मानित काले कोट का किनारा गलियारे के कोने में गायब हो रहा है। वह भी मेरी तरह जानता था कि अब जब मुझे उसकी जाँच का असली मोड़ पता चल गया था, तो वह मुझसे और कोई मदद की उम्मीद नहीं कर सकता था। ऐसी परिस्थितियों में, खुद की मदद करना और वो भी गुप्त तरीके से करना उसके स्वभाव के अनुरूप था।
मुझे यकीन नहीं था कि मैंने वास्तव में सार्जेंट को देखा था—और मैं बेवजह कोई गड़बड़ नहीं करना चाहता था, क्योंकि भगवान ही जानता है कि पहले से ही बहुत गड़बड़ चल रही थी—इसलिए मैंने मिस्टर फ्रैंकलिन से कहा कि मुझे लगता है कि कोई कुत्ता घर में घुस गया था—और फिर उनसे विनती की कि वे रोसन्ना और उनके बीच जो कुछ हुआ था उसका वर्णन करें।
"क्या आप हॉल से गुजर रहे थे, महोदय?" मैंने पूछा। "क्या आपकी उनसे आकस्मिक मुलाकात हुई थी, जब उन्होंने आपसे बात की थी?"
श्री फ्रैंकलिन ने बिलियर्ड टेबल की ओर इशारा किया।
“मैं गेंदों को इधर-उधर मार रहा था,” उसने कहा, “और डायमंड के इस बुरे मामले को अपने दिमाग से निकालने की कोशिश कर रहा था। अचानक मेरी नज़र ऊपर उठी—और वहाँ रोसन्ना स्पीयरमैन मेरे बगल में एक भूत की तरह खड़ी थी! उसका इस तरह चुपके से मेरे पास आना इतना अजीब था कि मुझे पहले समझ ही नहीं आया कि क्या करूँ। उसके चेहरे पर चिंता का भाव देखकर मैंने उससे पूछा कि क्या वह मुझसे बात करना चाहती है। उसने जवाब दिया, 'हाँ, अगर हिम्मत हो तो।' उसके प्रति संदेह को जानते हुए, मैं उसके इस शब्द का केवल एक ही अर्थ निकाल सका। मैं मानता हूँ कि इससे मुझे असहजता हुई। मैं उस लड़की का विश्वास जीतने की कोशिश नहीं कर रहा था। साथ ही, अब हमारे सामने जो मुश्किलें थीं, उनमें अगर वह मुझसे बात करने पर

तुली हुई थी, तो उसे सुनने से इनकार करना मेरे लिए उचित नहीं था। यह एक अजीब स्थिति थी; और मैं कह सकता हूँ कि मैं इससे अजीब तरीके से ही बाहर निकला। मैंने उससे कहा, 'मैं तुम्हें पूरी तरह समझ नहीं पा रहा हूँ। क्या तुम मुझसे कुछ करवाना चाहती हो?'" ध्यान रहे, बेटरएज, मैंने कुछ भी बुरा नहीं कहा! बेचारी लड़की बदसूरत है—मुझे उस समय यही लगा था। क्यू अभी भी मेरे हाथ में था, और मैं गेंदों को इधर-उधर मारता रहा, ताकि स्थिति थोड़ी अजीब लगे। लेकिन हुआ यह कि मैंने मामला और बिगाड़ दिया। मुझे डर है कि मैंने अनजाने में उसे शर्मिंदा कर दिया! वह अचानक मुँह फेर लिया। 'वह बिलियर्ड की गेंदों को देख रहा है,' मैंने उसे कहते सुना। 'कुछ भी हो, मुझे देखने के बजाय!' इससे पहले कि मैं उसे रोक पाता, वह हॉल से चली गई। मुझे इस बात से थोड़ी परेशानी हो रही है, बेटरएज। क्या आप रोज़ाना को बता देंगे कि मेरा इरादा उसे कुछ बुरा कहने का नहीं था? शायद मैंने मन ही मन उसके बारे में थोड़ा कठोर रवैया अपनाया—मुझे लगभग उम्मीद थी कि डायमंड के खोने का कारण वही हो। बेचारी लड़की के प्रति किसी दुर्भावना से नहीं: बल्कि—" वह वहीं रुक गया, और बिलियर्ड टेबल पर वापस जाकर एक बार फिर गेंदों को इधर-उधर मारने लगा।

सार्जेंट और मेरे बीच जो कुछ भी हुआ था, उसके बाद मैं यह जान गया था कि उसने क्या अनकहा छोड़ दिया था, ठीक वैसे ही जैसे वह खुद जानता था।

अब मिस राहेल को सार्जेंट कफ के मन में बसे कुख्यात संदेह से उबारने का एकमात्र उपाय मूनस्टोन का हमारी दूसरी नौकरानी से मिलना ही था। अब सवाल सिर्फ मेरी युवती की घबराहट को शांत करने का नहीं था; बल्कि उसकी बेगुनाही साबित करने का था। अगर रोसन्ना ने खुद को बदनाम करने के लिए कुछ नहीं किया होता, तो मिस्टर फ्रैंकलिन द्वारा स्वीकार की गई उम्मीद भी उसके लिए काफी कठिन होती। लेकिन ऐसा नहीं था। उसने बीमार होने का बहाना बनाया था और चुपके से फ्रिज़िंगहॉल चली गई थी। वह पूरी रात जागती रही, अकेले में कुछ बनाती या बिगाड़ती रही। और उस शाम वह शिवरिंग सैंड में बेहद संदिग्ध परिस्थितियों में मौजूद थी। इन सभी कारणों से (हालांकि मुझे रोसन्ना के लिए दुख था) मैं यह सोचे बिना नहीं रह सका कि मिस्टर फ्रैंकलिन का इस मामले को देखने का तरीका उनकी स्थिति में न तो अस्वाभाविक था और न ही अनुचित। मैंने उनसे इस बारे में कुछ कहा।

“जी हाँ!” उसने जवाब दिया। “लेकिन बस एक संभावना है—हालांकि बहुत कम—कि रोज़ाना के व्यवहार का कोई स्पष्टीकरण हो सकता है जो हमें अभी नहीं दिख रहा। मुझे किसी औरत की भावनाओं को ठेस पहुँचाना पसंद नहीं, बेटरएज! उस बेचारी को

वही कहना जो मैंने तुम्हें कहने को कहा है। और अगर वह मुझसे बात करना चाहती है —चाहे मुझे कोई परेशानी हो या न हो—तो उसे पुस्तकालय में मेरे पास भेज देना।" इन मीठे शब्दों के साथ उसने क्यू स्टिक नीचे रख दी और चला गया।

नौकरों के दफ्तर में पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि रोसन्ना अपने कमरे में चली गई है। उसने मदद के सभी प्रस्तावों को धन्यवाद सहित अस्वीकार कर दिया था और केवल शांति से आराम करने के लिए कहा था। इसलिए, उस रात उसकी ओर से किसी भी तरह के कबूलनामे की संभावना यहीं समाप्त हो गई (यदि उसे वास्तव में कुछ कबूल करना था)। मैंने यह जानकारी श्री फ्रैंकलिन को दी, जिसके बाद वे पुस्तकालय से निकलकर सोने चले गए।

मैं बत्तियाँ बुझा रहा था और खिड़कियाँ बंद कर रहा था, तभी सैमुअल मेरे कमरे में आए और मुझे उन दो मेहमानों के बारे में खबर दी जिन्हें मैं अपने कमरे में छोड़कर आया था।

सफेद काई वाले गुलाब को लेकर चल रहा विवाद आखिरकार समाप्त हो गया था। माली घर चला गया था, और सार्जेंट कफ घर के निचले हिस्से में कहीं भी नहीं मिला।

मैंने अपने कमरे में झाँका। बिलकुल सही—वहाँ खाली गिलासों के अलावा कुछ नहीं मिला और गरम शराब की तेज़ गंध आ रही थी। क्या सार्जेंट अपनी मर्ज़ी से अपने लिए तैयार किए गए शयनकक्ष में चले गए थे? मैं देखने के लिए ऊपर गया।

दूसरी मंजिल पर पहुँचने के बाद, मुझे अपने बाईं ओर से धीमी और नियमित साँसों की आवाज़ सुनाई दी। मेरा बायाँ रास्ता उस गलियारे की ओर जाता था जो मिस राहेल के कमरे से जुड़ा हुआ था। मैंने अंदर झाँका, और वहाँ, गलियारे के ठीक सामने रखी तीन कुर्सियों पर, अपने सफ़ेद बालों वाले सिर पर लाल रुमाल बाँधे और अपने शालीन काले कोट को तकिए की तरह लपेटे हुए, सार्जेंट कफ़ लेटे और सो रहे थे!

जैसे ही मैं उसके पास पहुंचा, वह तुरंत और चुपचाप, कुत्ते की तरह जाग गया।

"शुभ रात्रि, श्रीमान बेटरएज," उन्होंने कहा। "और याद रखना, अगर आप कभी गुलाब उगाने का शौक पालें, तो सफेद मॉस गुलाब इसलिए बेहतर है क्योंकि उसे डॉग-रोज़ पर नहीं उगाया जाता, माली चाहे कुछ भी कहे!"

मैंने पूछा, "तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम अपने सही बिस्तर पर क्यों नहीं हो?"

सार्जेंट ने उत्तर दिया, "मैं अपने सही बिस्तर पर नहीं हूँ, क्योंकि मैं इस दयनीय दुनिया के उन अनेक लोगों में से एक हूँ जो ईमानदारी और आसानी से पैसा नहीं कमा सकते। आज शाम, रोसन्ना स्पीयरमैन के सैंड्स से लौटने और मिस वेरेंडर के घर छोड़ने के

निर्णय के बीच एक संयोग हुआ। रोसन्ना ने चाहे जो भी छिपाया हो, मुझे स्पष्ट है कि आपकी युवती तब तक नहीं जा सकती थी जब तक उसे यह पता न चल जाए कि वह बात छिपी हुई है। आज रात दोनों ने एक बार निजी तौर पर बात की होगी। अगर वे घर के शांत होने पर फिर से बात करने की कोशिश करें, तो मैं बीच में आकर उन्हें रोकना चाहता हूँ। श्री बेटरएज, आपकी नींद में खलल डालने के लिए मुझे दोष मत दीजिए—इसके लिए डायमंड को दोष दीजिए।"

"काश, ये हीरा कभी इस घर में आया ही न होता!" मैं फूट-फूटकर चिल्लाई।

सार्जेंट कफ ने उदास चेहरे से उन तीन कुर्सियों को देखा जिन पर उसे रात गुजारने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

"मैं भी यही सोचता हूँ," उसने गंभीरता से कहा।

अध्याय सत्रह

रात में कुछ भी नहीं हुआ; और (मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है) मिस राहेल और रोसन्ना के बीच संचार का कोई भी प्रयास सार्जेंट कफ की सतर्कता के लायक नहीं था। मुझे उम्मीद थी कि सार्जेंट सुबह सबसे पहले फ्रिज़िंगहॉल के लिए रवाना हो जाएगा। लेकिन वह वहीं रुका रहा, मानो उसे पहले कोई और काम करना हो। मैंने उसे वहीं छोड़ दिया; और थोड़ी देर बाद मैदान में जाकर, झाड़ियों के किनारे अपनी पसंदीदा सैर पर श्री फ्रैंकलिन से मिला।

हमारे बीच दो शब्द भी नहीं बोले थे कि सार्जेंट अचानक हमारे बीच आ गया। उसने मिस्टर फ्रैंकलिन से मुलाकात की, जिन्होंने उसका स्वागत बड़े ही घमंडी अंदाज में किया। मिस्टर फ्रैंकलिन को सुबह की शुभकामना देने पर उसे बस इतना ही जवाब मिला, "क्या आपको मुझसे कुछ कहना है?"

"महामहिम, मुझे आपसे कुछ कहना है," सार्जेंट ने उत्तर दिया, "यहाँ चल रही जाँच के विषय में। आपने कल ही इस जाँच के वास्तविक मोड़ को भाँप लिया था। स्वाभाविक रूप से, आपकी स्थिति को देखते हुए, आप स्तब्ध और दुखी हैं। और स्वाभाविक ही है कि आप अपने पारिवारिक कलंक के कारण उत्पन्न अपने गुस्से को मुझ पर निकाल रहे हैं।"

"तुम क्या चाहते हो?" श्री फ्रैंकलिन ने तीखे स्वर में बीच में ही टोकते हुए कहा।

"मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ, महोदय, कि कम से कम अभी तक तो मैं गलत साबित नहीं हुआ हूँ। इसे ध्यान में रखते हुए, कृपया यह भी याद रखें कि मैं कानून का एक अधिकारी हूँ और यहाँ घर की मालकिन की अनुमति से कार्य कर रहा हूँ। इन

परिस्थितियों में, क्या एक अच्छे नागरिक के रूप में आपका यह कर्तव्य है कि आप मुझे किसी भी विशेष जानकारी से सहायता करें जो आपके पास हो?"
श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "मेरे पास कोई विशेष जानकारी नहीं है।"
सार्जेंट कफ ने उस उत्तर को उसके पास इस तरह रख दिया मानो कोई उत्तर दिया ही न गया हो।
उन्होंने आगे कहा, "आप मेरा समय बचा सकते हैं, महोदय, दूर से पूछताछ करने में बर्बाद होने से, यदि आप मुझे समझने और खुलकर बोलने का विकल्प चुनते हैं।"
श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है; और मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है।"
"कल रात एक महिला नौकरानी (मैं नाम नहीं बताऊंगी) ने आपसे निजी तौर पर बात की थी, महोदय।"
एक बार फिर श्री फ्रैंकलिन ने उनकी बात काट दी; एक बार फिर श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है।"
चुपचाप खड़े-खड़े मुझे पिछली शाम झूलते दरवाजे में हुई हलचल और गलियारे में गायब होते कोट के पिछले हिस्से की याद आ गई। सार्जेंट कफ ने, निस्संदेह, मेरे टोकने से पहले इतना सुन लिया था कि उन्हें शक हो गया होगा कि रोसन्ना ने मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक से कुछ कबूल करके अपने मन का बोझ हल्का कर लिया है।
मुझे अभी ये ख्याल आया ही था कि झाड़ियों के रास्ते के आखिर में रोज़ाना स्पीयरमैन अपने असली रूप में नज़र आ गईं! उनके पीछे पेनेलोप भी थीं, जो ज़ाहिर तौर पर उन्हें वापस घर ले जाने की कोशिश कर रही थीं। मिस्टर फ्रैंकलिन को अकेला न देखकर रोज़ाना वहीं रुक गईं, मानो उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करें। पेनेलोप उनके पीछे-पीछे रुक गईं। मिस्टर फ्रैंकलिन ने लड़कियों को देखते ही देख लिया, जैसे मैंने देखा। सार्जेंट ने अपनी शातिर चालाकी से ऐसा दिखाया जैसे उन्होंने उन्हें देखा ही न हो। ये सब पलक झपकते ही हो गया। इससे पहले कि मिस्टर फ्रैंकलिन या मैं कुछ कह पाते, सार्जेंट कफ ने बड़ी चतुराई से बात शुरू कर दी, मानो वो पिछली बातचीत को जारी रख रहे हों।
"आपको लड़की को नुकसान पहुंचाने से डरने की ज़रूरत नहीं है, महोदय," उन्होंने श्री फ्रैंकलिन से ऊँची आवाज़ में कहा, ताकि रोज़ाना उन्हें सुन सके। "इसके विपरीत, यदि आपको रोज़ाना स्पीयरमैन में कोई दिलचस्पी है, तो मैं आपको अपना विश्वास मुझ पर जताने की सलाह देता हूँ।"

श्री फ्रैंकलिन ने तुरंत यह जताने की कोशिश की कि उन्होंने भी लड़कियों को नहीं देखा था। उन्होंने अपनी तरफ से ऊँची आवाज़ में जवाब दिया:
मुझे रोसन्ना स्पीयरमैन में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है।
मैंने रास्ते के अंत की ओर देखा। दूर से मुझे बस इतना ही दिखाई दिया कि श्री फ्रैंकलिन के बोलते ही रोसन्ना अचानक मुड़ गई। पेनेलोप का विरोध करने के बजाय, जैसा कि उसने कुछ देर पहले किया था, अब उसने मेरी बेटी को अपना हाथ पकड़ने दिया और वह उसे वापस घर ले गई।
नाश्ते की घंटी बजते ही दोनों लड़कियाँ गायब हो गईं—और यहाँ तक कि सार्जेंट कफ को भी अब हार माननी पड़ी! उन्होंने मुझसे धीरे से कहा, "मैं फ्रिज़िंगहॉल जा रहा हूँ, मिस्टर बेटरएज; और मैं दो बजे से पहले वापस आ जाऊँगा।" वे बिना कुछ और कहे चले गए—और कुछ घंटों के लिए हमें उनसे छुटकारा मिल गया।
जब हम अकेले थे, तो मिस्टर फ्रैंकलिन ने मुझसे कहा, "तुम्हें रोसन्ना से सब ठीक करना होगा। लगता है मेरी किस्मत में यही लिखा है कि उस बदनसीब लड़की के सामने कुछ न कुछ अटपटा बोल देना या कर देना। तुमने खुद देखा होगा कि सार्जेंट कफ ने हम दोनों के लिए जाल बिछाया था। अगर वह मुझे उलझा सकता, या उसे इतना गुस्सा दिला सकता कि वह भड़क उठे, तो या तो वह या मैं कुछ ऐसा कह देते जिससे उसका मकसद पूरा हो जाता। उस पल अचानक मुझे इससे बचने का वही रास्ता सूझा जो मैंने चुना। इससे लड़की चुप हो गई और सार्जेंट को पता चल गया कि मैं उसकी चाल समझ गया हूँ। बेटरएज, पिछली रात जब मैं तुमसे बात कर रहा था, तो वह साफ-साफ सुन रहा था।"
मैंने मन ही मन सोचा कि उसने मेरी बात सुनने से भी बदतर काम किया था। उसे याद था कि मैंने उसे बताया था कि वह लड़की मिस्टर फ्रैंकलिन से प्यार करती है; और उसने इसी बात का फायदा उठाकर रोज़ाना के सामने ही मिस्टर फ्रैंकलिन की रोज़ाना में दिलचस्पी का फायदा उठाने की कोशिश की थी।
"सुनने की बात करें तो, महोदय," मैंने कहा (दूसरी बात अपने तक ही रखते हुए), "अगर यह सब ऐसे ही चलता रहा तो हम सब एक ही नाव में सवार होंगे। ताक-झांक करना, ताकना और सुनना हम जैसे लोगों का स्वाभाविक काम है। श्रीमान फ्रैंकलिन, एक-दो दिन में हम सब एक साथ चुप हो जाएंगे - क्योंकि हम सब एक-दूसरे के राज़ जानने के लिए सुनते रहेंगे और सबको पता भी चल जाएगा। क्षमा कीजिए, महोदय। इस घर में हम पर मंडरा रहा भयानक रहस्य मेरे दिमाग पर शराब की तरह चढ़ गया

है और मुझे बेकाबू कर रहा है। आपने जो कहा है, मैं उसे नहीं भूलूंगा। मैं रोज़ाना स्पीयरमैन से सब ठीक करने का पहला मौका ज़रूर लूंगा।"
"आपने कल रात के बारे में उससे अभी तक कुछ नहीं कहा है, है ना?" श्री फ्रैंकलिन ने पूछा।
"जी नहीं, महोदय।"
"तो अब कुछ मत कहो। सार्जेंट हम दोनों को एक साथ पकड़ने के लिए घात लगाए बैठा है, ऐसे में लड़की का भरोसा जीतना मेरे लिए बेहतर नहीं होगा। मेरा व्यवहार कुछ खास सुसंगत नहीं है, बेटरएज—है ना? इस मामले से निकलने का मुझे कोई रास्ता नहीं दिख रहा, जो कि इतना बुरा भी नहीं है, जब तक कि डायमंड का पता रोसन्ना तक न चल जाए। और फिर भी मैं सार्जेंट कफ को लड़की का पता लगाने में मदद नहीं कर सकता, और न ही करूंगा।"
यह बात बेशक अतार्किक थी। लेकिन मेरी मानसिक स्थिति भी कुछ ऐसी ही थी। मैं उसे अच्छी तरह समझता था। अगर आप भी जीवन में एक बार यह याद रखें कि आप भी नश्वर हैं, तो शायद आप भी उसे अच्छी तरह समझ पाएंगे।
जब सार्जेंट कफ फ्रिज़िंगहॉल जा रहे थे, उस दौरान घर के अंदर और बाहर की स्थिति संक्षेप में इस प्रकार थी:
मिस राहेल अपनी चाची के घर जाने के लिए गाड़ी का इंतज़ार कर रही थीं, और हठपूर्वक अपने कमरे में ही बंद थीं। मेरी पत्नी और श्रीमान फ्रैंकलिन ने साथ में नाश्ता किया। नाश्ते के बाद, श्रीमान फ्रैंकलिन ने अचानक एक फैसला लिया और मन को शांत करने के लिए टहलने निकल गए। उन्हें जाते हुए मैंने ही देखा था; और उन्होंने मुझसे कहा कि सार्जेंट के लौटने से पहले वे वापस आ जाएँगे। रात भर में मौसम में आए बदलाव का जो संकेत मिला था, वह आ गया था। भोर होते ही तेज़ बारिश के बाद ज़ोरदार हवा चलने लगी। दिन बढ़ने के साथ-साथ हवा और तेज़ होती गई। हालाँकि बादल कई बार छाए, फिर भी बारिश नहीं हुई। अगर आप जवान और तंदुरुस्त हैं और समुद्र से आने वाली तेज़ हवाओं का सामना कर सकते हैं, तो टहलने के लिए यह बुरा दिन नहीं था।
नाश्ते के बाद मैं अपनी पत्नी के पास गया और घर के हिसाब-किताब निपटाने में उनकी मदद की। उन्होंने सिर्फ एक बार मूनस्टोन का ज़िक्र किया, और वो भी इस तरह कि हम दोनों के बीच अभी इस बारे में कोई बात न हो। उन्होंने कहा, "उस

आदमी के लौटने तक इंतज़ार करो," उनका मतलब सार्जेंट से था। "हमें इस बारे में तभी बात करनी होगी: अभी इस बारे में बात करना हमारे लिए ज़रूरी नहीं है।"
अपनी प्रेमिका को छोड़कर जाने के बाद, मैंने अपने कमरे में पेनेलोप को मेरा इंतजार करते हुए पाया।
"पिताजी, काश आप आकर रोसन्ना से बात कर लेते," उसने कहा। "मैं उसके बारे में बहुत चिंतित हूँ।"
मुझे तुरंत ही समझ आ गया कि मामला क्या है। लेकिन मेरा यह मानना है कि पुरुष (श्रेष्ठ प्राणी होने के नाते) महिलाओं को सुधारने के लिए बाध्य हैं—यदि वे ऐसा कर सकें। जब कोई महिला मुझसे कुछ भी करवाना चाहती है (चाहे वह मेरी बेटी हो या कोई और, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता), तो मैं हमेशा यह जानना चाहता हूँ कि क्यों। आप उन्हें जितनी बार कारण जानने के लिए अपने दिमाग में सोचने पर मजबूर करेंगे, जीवन के सभी रिश्तों में वे उतनी ही सहजता से व्यवहार करेंगी। यह उनकी गलती नहीं है (बेचारी!) कि वे पहले काम करती हैं और बाद में सोचती हैं; यह उन मूर्खों की गलती है जो उन्हें बढ़ावा देते हैं।
इस अवसर पर पेनेलोप की वजह उसके अपने शब्दों में बताई जा सकती है। उसने कहा, "मुझे डर है, पिताजी, श्री फ्रैंकलिन ने अनजाने में ही रोसन्ना को बेरहमी से चोट पहुंचाई है।"
मैंने पूछा, "रोसन्ना झाड़ियों वाले रास्ते पर क्यों गई थी?"
"उसका अपना पागलपन," पेनेलोप कहती है; "मैं इसे और कुछ नहीं कह सकती। आज सुबह वह मिस्टर फ्रैंकलिन से बात करने पर तुली हुई थी, चाहे कुछ भी हो जाए। मैंने उसे रोकने की पूरी कोशिश की; आपने देखा ही होगा। काश मैं उसे उन भयानक शब्दों को सुनने से पहले वहाँ से ले जा पाती----"
"शांत हो जाओ! शांत हो जाओ!" मैंने कहा, "अपना आपा मत खोओ। मुझे याद नहीं आ रहा कि रोसन्ना को डराने वाली कोई घटना घटी हो।"
"उसे घबराने की कोई बात नहीं है, पिताजी। लेकिन मिस्टर फ्रैंकलिन ने कहा कि उन्हें उसमें ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है - और, ओह, उन्होंने यह बात इतने क्रूर स्वर में कही!"
मैंने जवाब दिया, "उसने सार्जेंट का मुंह बंद करने के लिए ऐसा कहा था।"
"मैंने उसे यह बताया था," पेनेलोप कहती है। "लेकिन देखिए पिताजी (हालाँकि इसमें मिस्टर फ्रैंकलिन की कोई गलती नहीं है), वह पिछले कई हफ्तों से उसे अपमानित और निराश कर रहे हैं; और अब यह हद पार हो गई है! ज़ाहिर है, उसे उनसे यह

उम्मीद करने का कोई हक नहीं है कि वह उसमें कोई दिलचस्पी लेंगे। यह बहुत ही घिनौना है कि वह इस तरह खुद को और अपनी हैसियत को भूल गई हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि उन्होंने अपना स्वाभिमान, अपनी मर्यादा और सब कुछ खो दिया है। पिताजी, जब मिस्टर फ्रैंकलिन ने वे शब्द कहे तो मैं डर गई थी। ऐसा लगा जैसे वे शब्द उन्हें पत्थर बना गए हों। अचानक उन पर सन्नाटा छा गया, और तब से वह अपने काम में किसी सपने में डूबी औरत की तरह लगी हुई हैं।"

मुझे थोड़ी बेचैनी होने लगी। पेनेलोप के कहने के तरीके में कुछ ऐसा था जिसने मेरी उच्च चेतना को शांत कर दिया। अब जब मेरे विचार उस ओर मुड़ गए, तो मुझे मिस्टर फ्रैंकलिन और रोज़ाना के बीच रात भर में हुई घटना याद आ गई। उस समय वह दिल से बहुत दुखी लग रही थी; और अब, दुर्भाग्यवश, बेचारी, उसे फिर से उसी नाज़ुक जगह पर चोट लगी थी। दुखद! दुखद!—और भी दुखद इसलिए क्योंकि उस लड़की के पास अपने इस दुख को सही ठहराने का कोई कारण नहीं था, और न ही उसे ऐसा महसूस करने का कोई अधिकार था।

मैंने श्री फ्रैंकलिन से रोसन्ना से बात करने का वादा किया था, और मुझे लगा कि अपना वादा निभाने का यह सबसे उपयुक्त समय है।

हमने उस लड़की को कमरों के बाहर गलियारे में झाड़ू लगाते हुए पाया। उसका चेहरा पीला और शांत था, और हमेशा की तरह वह अपनी सादी प्रिंट वाली पोशाक में साफ-सुथरी लग रही थी। मैंने उसकी आँखों में एक अजीब सी उदासी और सुस्ती देखी—ऐसा नहीं लग रहा था जैसे वह रो रही हो, बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी चीज़ को बहुत देर तक देखती रही हो। शायद, यह उसके अपने विचारों से उपजी कोई धुंधली सी उदासी थी। उसके आस-पास ऐसी कोई चीज़ नहीं थी जिसे उसने पहले सैकड़ों बार न देखा हो।

"रोज़ाना, हिम्मत रखो!" मैंने कहा। "तुम्हें अपनी ही चिंताओं पर परेशान नहीं होना चाहिए। मुझे तुमसे मिस्टर फ्रैंकलिन की तरफ से कुछ कहना है।"

तब मैंने यथासंभव मैत्रीपूर्ण और सांत्वनापूर्ण शब्दों में उसके सामने इस मामले को स्पष्ट रूप से रखा। जैसा कि आपने देखा होगा, महिलाओं के प्रति मेरे सिद्धांत अत्यंत कठोर हैं। लेकिन किसी न किसी कारण से, जब मेरा सामना महिलाओं से होता है, तो मेरा व्यवहार (मैं स्वीकार करता हूँ) उनके अनुरूप नहीं रहता।

"श्री फ्रैंकलिन बहुत दयालु और विचारशील हैं। कृपया उन्हें धन्यवाद दें।" उन्होंने मुझे बस इतना ही जवाब दिया।

मेरी बेटी ने पहले ही गौर कर लिया था कि रोसन्ना अपना काम किसी स्वप्नलोक की स्त्री की तरह कर रही थी। अब मैंने इस बात में एक और बात जोड़ दी कि वह सुनती और बोलती भी किसी स्वप्नलोक की स्त्री की तरह ही थी। मुझे संदेह था कि क्या उसका दिमाग मेरी कही बातों को समझने की स्थिति में था।
"क्या आपको पूरा यकीन है, रोसन्ना, कि आप मेरी बात समझ गई हैं?" मैंने पूछा।
"यकीन के साथ।"
वह मेरी बात दोहराती रही, किसी जीवित स्त्री की तरह नहीं, बल्कि किसी मशीन से चलने वाली प्राणी की तरह। वह लगातार झाड़ू लगाती रही। मैंने यथासंभव नरमी और विनम्रता से झाड़ू उससे ले ली।
"आओ, आओ, मेरी बच्ची!" मैंने कहा, "तुम्हारा व्यवहार ऐसा नहीं है। लगता है तुम्हारे मन में कुछ चल रहा है। मैं तुम्हारी दोस्त हूँ—और मैं तुम्हारी दोस्त बनी रहूँगी, चाहे तुमने कुछ गलत ही क्यों न किया हो। मुझे सब कुछ साफ-साफ बता दो, रोसन्ना—सब कुछ साफ-साफ बता दो!"
एक समय था जब मेरी उससे इस तरह बात करने पर उसकी आँखों में आंसू आ जाते थे। अब मुझे उसकी आँखों में कोई बदलाव नहीं दिख रहा था।
"हां," उसने कहा, "मैं सब कुछ साफ-साफ बता दूंगी।"
"मेरी मालकिन को?" मैंने पूछा।
"नहीं।"
"श्रीमान फ्रैंकलिन को?"
"जी हां; श्री फ्रैंकलिन को।"
मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्या कहूँ। वह उस स्थिति में नहीं थी कि श्री फ्रैंकलिन द्वारा मुझे दी गई चेतावनी को समझ सके, जिसमें मैंने उनसे अकेले में बात न करने के लिए कहा था। धीरे-धीरे बात संभालते हुए, मैंने बस इतना कहा कि श्री फ्रैंकलिन टहलने के लिए बाहर गए हैं।
"कोई बात नहीं," उसने जवाब दिया। "मैं आज मिस्टर फ्रैंकलिन को परेशान नहीं करूंगी।"
मैंने कहा, "आप मेरी मालकिन से क्यों नहीं बात करते? अपने मन को शांत करने का सबसे अच्छा तरीका उस दयालु और ईसाई स्वामिनी से बात करना है जो हमेशा आपके प्रति दयालु रही हैं।"

उसने कुछ पल के लिए मुझे गंभीर और स्थिर भाव से देखा, मानो वह मेरी कही हुई बातों को मन में बिठा रही हो। फिर उसने मेरे हाथों से झाड़ू ले ली और धीरे-धीरे गलियारे में थोड़ी दूर चली गई।
"नहीं," उसने झाड़ू लगाते हुए और खुद से बात करते हुए कहा; "मुझे अपने मन को शांत करने का इससे बेहतर तरीका पता है।"
"यह क्या है?"
"कृपया मुझे अपना काम जारी रखने दें।"
पेनेलोप उसके पीछे गई और उसकी मदद करने की पेशकश की।
उसने जवाब दिया, "नहीं। मैं अपना काम करना चाहती हूँ। धन्यवाद, पेनेलोप।" उसने मेरी तरफ देखा। "धन्यवाद, मिस्टर बेटरएज।"
उसे हिलाना नामुमकिन था—कहने के लिए कुछ बचा ही नहीं था। मैंने पेनेलोप को अपने साथ चलने का इशारा किया। हमने उसे वहीं छोड़ दिया, जैसे हमने उसे पाया था, गलियारे में झाड़ू लगाती हुई, मानो सपने में खोई कोई औरत हो।
मैंने कहा, "यह डॉक्टर के देखने का मामला है। यह मेरी समझ से परे है।"
मेरी बेटी ने मुझे श्री कैंडी की बीमारी की याद दिलाई, जो (जैसा कि आपको याद होगा) डिनर पार्टी की रात को लगी ठंड के कारण हुई थी। उनके सहायक - श्री एज्रा जेनिंग्स - हमारी सेवा में थे, यह तो निश्चित था। लेकिन हमारे इलाके में उनके बारे में कोई ज्यादा नहीं जानता था। श्री कैंडी ने उन्हें कुछ अजीब परिस्थितियों में नियुक्त किया था; और चाहे सही हो या गलत, हममें से कोई भी उन्हें पसंद नहीं करता था और न ही उन पर भरोसा करता था। फ्रिज़िंगहॉल में अन्य डॉक्टर भी थे। लेकिन वे हमारे घर के लिए अजनबी थे; और पेनेलोप को रोसन्ना की वर्तमान स्थिति में संदेह था कि कहीं अजनबी उसके लिए फायदे से ज्यादा नुकसान तो नहीं कर देंगे।
मैंने अपनी मालकिन से बात करने का सोचा। लेकिन, उनके मन में पहले से ही मौजूद भारी चिंता को याद करके, मैंने पहले से ही मौजूद परेशानियों में इस नई मुसीबत को जोड़ने से हिचकिचाया। फिर भी, कुछ करना ज़रूरी था। मेरी राय में, लड़की की हालत बेहद चिंताजनक थी—और मेरी मालकिन को इसकी जानकारी दी जानी चाहिए थी। अनिच्छा से ही सही, मैं उनके बैठक कक्ष में गया। वहाँ कोई नहीं था। मेरी मालकिन मिस राहेल के साथ कमरे में बंद थीं। उनके बाहर आने तक उनसे मिलना मेरे लिए नामुमकिन था।

मैंने व्यर्थ ही इंतज़ार किया जब तक कि सामने की सीढ़ियों पर लगी घड़ी में पौने दो नहीं बज गए। पाँच मिनट बाद, घर के बाहर ड्राइववे से मेरा नाम पुकारा गया। मैं उस आवाज़ को तुरंत पहचान गया। सार्जेंट कफ फ्रिज़िंगहॉल से लौट आए थे।

अध्याय अठारह

सामने के दरवाजे की ओर नीचे जाते हुए, सीढ़ियों पर मेरी मुलाकात सार्जेंट से हुई। हमारे बीच जो कुछ भी हुआ था, उसके बाद मुझे यह जताना बिल्कुल भी ठीक नहीं लग रहा था कि मुझे उसकी गतिविधियों में कोई दिलचस्पी है। फिर भी, मैं खुद को रोक नहीं पाया और मेरी दिलचस्पी इतनी बढ़ गई कि मैं उसे दबा नहीं सका। मेरी गरिमा धराशायी हो गई और मेरे मुंह से निकल गए: "फ्रिज़िंगहॉल से क्या खबर है?"

“मैंने भारतीयों को देखा है,” सार्जेंट कफ ने उत्तर दिया। “और मुझे पता चल गया है कि रोसन्ना ने पिछले गुरुवार को कस्बे में चुपके से क्या खरीदा था। भारतीयों को अगले सप्ताह बुधवार को रिहा कर दिया जाएगा। मुझे और श्री मुर्थवेट को इस बात में कोई संदेह नहीं है कि वे मूनस्टोन चुराने के लिए यहाँ आए थे। बुधवार रात घर में जो कुछ हुआ, उससे उनकी सारी योजनाएँ धरी की धरी रह गईं; और गहने के खोने में उनका उतना ही हाथ है जितना आपका। लेकिन मैं आपको एक बात बता सकता हूँ, श्री बेटरएज—अगर हम मूनस्टोन नहीं ढूँढ़ पाए, तो वे ढूँढ़ लेंगे। आपने अभी तक उन तीन बाज़ीगरों की कहानी पूरी नहीं सुनी है।”

जब सार्जेंट ने वे चौंकाने वाले शब्द कहे, तभी श्री फ्रैंकलिन अपनी सैर से वापस लौटे। उन्होंने अपनी जिज्ञासा को मुझसे कहीं बेहतर ढंग से नियंत्रित किया और बिना कुछ कहे हमारे पास से गुजरकर घर के अंदर चले गए।

जहां तक मेरी बात है, मैंने अपनी गरिमा को त्यागते हुए, बलिदान का पूरा लाभ उठाने का निश्चय किया। मैंने कहा, "भारतीयों का तो काम तमाम हो गया। अब रोज़ाना का क्या होगा?"

सार्जेंट कफ ने अपना सिर हिलाया।

“उस इलाके का रहस्य पहले से कहीं ज़्यादा गहरा हो गया है,” उन्होंने कहा। “मैंने उसका पता फ्रिज़िंगहॉल में माल्टबी नाम के एक कपड़े के व्यापारी की दुकान तक लगाया है। उसने किसी भी दूसरे कपड़े की दुकान, टोपी बनाने वाले या दर्जी की दुकान से कुछ भी नहीं खरीदा; और माल्टबी की दुकान से उसने सिर्फ़ एक लंबा कपड़ा खरीदा। वह एक खास तरह का कपड़ा चुनने में बहुत सावधानी बरतती थी। मात्रा की बात करें तो, उसने इतना कपड़ा खरीदा जिससे एक नाइटगाउन बन सके।”

मैंने पूछा, "किसकी नाइटगाउन?"
"यकीनन, यह उसका अपना ही काम था। गुरुवार की सुबह बारह से तीन बजे के बीच, जब आप सब सो रहे थे, वह चुपके से आपकी युवती के कमरे में गई होगी, ताकि मूनस्टोन को छुपा सके। अपने कमरे में लौटते समय, उसकी नाइटगाउन दरवाजे पर लगे गीले पेंट से टकरा गई होगी। वह दाग को धो नहीं सकी; और वह अपनी नाइटगाउन को तब तक सुरक्षित रूप से नष्ट नहीं कर सकती थी जब तक कि वह अपने लिनेन की सूची पूरी करने के लिए वैसी ही दूसरी नाइटगाउन न ले आए।"
"इस बात का क्या प्रमाण है कि यह रोसन्ना का नाइटगाउन था?" मैंने आपत्ति जताई।
“उसने नकली पोशाक बनाने के लिए जो कपड़ा खरीदा था,” सार्जेंट ने उत्तर दिया। “अगर यह मिस वेरेंडर की नाइटगाउन होती, तो उसे लेस, झालर और न जाने क्या-क्या खरीदना पड़ता; और उसके पास एक रात में इसे बनाने का समय भी नहीं होता। सादा लंबा कपड़ा मतलब एक साधारण नौकरानी की नाइटगाउन। नहीं, नहीं, मिस्टर बेटरएज—यह तो बिल्कुल स्पष्ट है। असली सवाल यह है—नकली पोशाक देने के बाद, वह गंदी नाइटगाउन को नष्ट करने के बजाय क्यों छिपा रही है? अगर लड़की कुछ नहीं बोलती, तो इस समस्या को सुलझाने का केवल एक ही तरीका है। शिवरिंग सैंड में छिपी जगह की तलाशी लेनी होगी—और मामले की सच्चाई वहीं सामने आएगी।”
मैंने पूछा, "आप उस जगह को कैसे ढूंढेंगे?"
"मुझे आपको निराश करने के लिए खेद है," सार्जेंट ने कहा—"लेकिन यह एक ऐसा रहस्य है जिसे मैं अपने तक ही रखना चाहता हूँ।"
(आपकी जिज्ञासा को और भड़काने के लिए नहीं, जैसा कि उसने मेरी जिज्ञासा को भड़काया था, मैं आपको यहाँ सूचित कर सकता हूँ कि वह फ्रिज़िंगहॉल से तलाशी वारंट लेकर लौटा था। ऐसे मामलों में उसके अनुभव ने उसे बताया कि रोसन्ना संभवतः अपने साथ छिपने की जगह का एक ज्ञापन रखे हुए थी, ताकि बदले हुए हालात में और कुछ समय बाद वहाँ लौटने पर उसे मार्गदर्शन मिल सके। इस ज्ञापन के मिलने पर सार्जेंट को वह सब कुछ मिल जाएगा जो वह चाहता है।)
"अब, श्री बेटरएज," उन्होंने आगे कहा, "मान लीजिए कि हम अटकलों को छोड़ दें और काम पर लग जाएं। मैंने जॉयस को रोसन्ना पर नज़र रखने के लिए कहा था। जॉयस कहाँ है?"

जॉयस फ्रिज़िंगहॉल का पुलिसकर्मी था, जिसे अधीक्षक सीग्रेव ने सार्जेंट कफ के हवाले कर दिया था। जैसे ही उसने सवाल पूछा, घड़ी में दो बज गए; और ठीक समय पर, मिस राहेल को उनकी चाची के घर ले जाने के लिए गाड़ी आ गई।
"एक बार में एक ही काम," सार्जेंट ने मुझे रोकते हुए कहा, जब मैं जॉयस को ढूंढने के लिए किसी को भेजने ही वाला था। "मुझे पहले मिस वेरेंडर को देखना होगा।"
बारिश की आशंका को देखते हुए, मिस राहेल को फ्रिज़िंगहॉल ले जाने के लिए पास की ही गाड़ी को नियुक्त किया गया था। सार्जेंट कफ ने पीछे से सैमुअल को इशारा करके अपने पास बुलाया।
“लॉज के द्वार के इस तरफ पेड़ों के बीच मेरा एक दोस्त इंतज़ार कर रहा होगा,” उसने कहा। “मेरा दोस्त गाड़ी रोके बिना ही तुम्हारे साथ शोरगुल में आ जाएगा। तुम्हें बस चुप रहना है और आँखें बंद रखनी हैं। वरना तुम मुसीबत में पड़ जाओगे।”
उस सलाह के साथ, उसने नौकर को वापस उसके स्थान पर भेज दिया। सैमुअल ने क्या सोचा, यह मैं नहीं जानता। मेरे विचार से यह स्पष्ट था कि मिस राहेल पर हमारे घर से निकलने के समय से ही छुपकर नज़र रखी जानी थी—अगर वह निकली भी तो। मेरी युवती पर नज़र रखी जा रही थी! उसकी माँ की गाड़ी की गड़गड़ाहट में उसके पीछे एक जासूस! सार्जेंट कफ से बात करने की हद तक बहक जाने पर मैं अपनी जीभ काट सकता था।
घर से सबसे पहले मेरी पत्नी निकलीं। वह सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर एक तरफ खड़ी हो गईं, यह देखने के लिए कि क्या होता है। उन्होंने न तो सार्जेंट से कुछ कहा और न ही मुझसे। होंठ बंद किए और हवा में आते ही अपने ऊपर लपेटे हुए हल्के बगीचे के लबादे में बाहें समेटे, वह एक मूर्ति की तरह स्थिर खड़ी रहीं, अपनी बेटी के आने का इंतजार करती रहीं।
एक मिनट बाद, मिस राहेल नीचे आईं—उन्होंने हल्के पीले रंग का एक सुंदर वस्त्र पहना हुआ था, जो उनके सांवले रंग को और भी निखार रहा था, और कमर पर एक जैकेट कसकर बांधी हुई थी। उनके सिर पर एक सुंदर सी छोटी सी भूसे की टोपी थी, जिसके चारों ओर एक सफेद घूंघट लिपटा हुआ था। उन्होंने गुलाबी रंग के दस्ताने पहने हुए थे जो उनके हाथों में बिल्कुल फिट थे। टोपी के नीचे उनके खूबसूरत काले बाल रेशम की तरह चिकने लग रहे थे। उनके छोटे-छोटे कान गुलाबी सीपियों जैसे थे —हर कान से एक मोती लटक रहा था। वह तेज़ी से हमारे पास आईं, बिल्कुल सीधी, और उनकी हर हरकत किसी युवा बिल्ली की तरह फुर्तीली और लचीली थी। मुझे

उनके सुंदर चेहरे में आँखों और होठों के अलावा कुछ भी बदला हुआ नहीं दिखा। उनकी आँखें मेरी उम्मीद से कहीं ज़्यादा चमकीली और तीखी थीं; और उनके होठों का रंग और मुस्कान इतनी गायब हो गई थी कि मैं उन्हें पहचान ही नहीं पा रही थी। उन्होंने जल्दबाजी में और अचानक अपनी माँ के गाल पर चुंबन किया। उसने कहा, "मुझे माफ़ कर दो, माँ"—और फिर इतनी ज़ोर से अपना घूंघट अपने चेहरे पर खींचा कि वह फट गया। अगले ही पल वह सीढ़ियों से नीचे भागी और गाड़ी में ऐसे घुस गई जैसे वह कोई छिपने की जगह हो।

सार्जेंट कफ भी उतनी ही फुर्ती से काम कर रहे थे। उन्होंने सैमुअल को वापस बिठाया और मिस राहेल के सामने खड़े हो गए, उनके हाथ में गाड़ी का खुला दरवाजा था, ठीक उसी क्षण जब वह अपनी जगह पर बैठ गईं।

"तुम क्या चाहती हो?" मिस राहेल ने अपने घूंघट के पीछे से कहा।

“श्रीमती, जाने से पहले मैं आपसे एक बात कहना चाहता हूँ। मैं आपको आपकी चाची से मिलने जाने से नहीं रोक सकता। मैं बस इतना कह सकता हूँ कि इस समय आपका हमें छोड़कर जाना मेरे लिए आपका हीरा वापस पाने में बाधा उत्पन्न करेगा। कृपया इसे समझें; और अब आप स्वयं निर्णय लें कि आप जाना चाहती हैं या रुकना चाहती हैं।”

मिस राहेल ने उसे कोई जवाब तक नहीं दिया। "आगे बढ़ो, जेम्स!" उसने कोचवान को पुकारा।

बिना कुछ कहे, सार्जेंट ने गाड़ी का दरवाजा बंद कर दिया। जैसे ही उसने दरवाजा बंद किया, मिस्टर फ्रैंकलिन सीढ़ियों से दौड़ते हुए नीचे आए। "अलविदा, रेचल," उन्होंने हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"आगे बढ़ो!" मिस राहेल पहले से भी अधिक जोर से चिल्लाईं, और उन्होंने मिस्टर फ्रैंकलिन पर उतना ही ध्यान दिया जितना उन्होंने सार्जेंट कफ पर दिया था।

श्री फ्रैंकलिन स्तब्ध होकर पीछे हट गए, और ऐसा होना स्वाभाविक भी था। कोचवान को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, इसलिए उसने मेरी पत्नी की ओर देखा, जो अब भी सबसे ऊपरी सीढ़ी पर अडिग खड़ी थी। मेरी पत्नी के चेहरे पर क्रोध, दुःख और शर्म के भाव एक साथ उभर रहे थे। उसने कोचवान को घोड़ों को दौड़ाने का इशारा किया और जल्दी से घर के अंदर चली गई। श्री फ्रैंकलिन ने होश में आकर गाड़ी के चलते ही अपनी पत्नी को पुकारा, "आंटी! आप बिल्कुल सही थीं। आपकी सारी दयालुता के लिए धन्यवाद स्वीकार कीजिए और मुझे जाने दीजिए।"

मेरी पत्नी ने मानो उससे बात करने के लिए मुड़ी। फिर, मानो खुद पर अविश्वास करते हुए, उसने विनम्रता से हाथ हिलाया। "हमें छोड़कर जाने से पहले मुझे आपसे मिलने दीजिए, फ्रैंकलिन," उसने टूटी हुई आवाज़ में कहा—और अपने कमरे की ओर चली गई।
"बेटरएज, मेरा एक आखिरी काम कर दो," श्री फ्रैंकलिन ने मेरी ओर मुड़ते हुए, आँखों में आँसू लिए कहा। "मुझे जितनी जल्दी हो सके ट्रेन तक पहुँचा दो!"
वह भी घर के अंदर चला गया। फिलहाल, मिस राहेल ने उसे पूरी तरह से बेबस कर दिया था। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि वह उससे कितना प्यार करता होगा!
सार्जेंट कफ और मैं सीढ़ियों के नीचे आमने-सामने खड़े थे। सार्जेंट पेड़ों के बीच एक खाली जगह की ओर मुंह करके खड़े थे, जहाँ से घर से निकलने वाले घुमावदार रास्ते का नज़ारा दिखाई दे रहा था। उनके हाथ जेब में थे और वे धीरे-धीरे "द लास्ट रोज़ ऑफ़ समर" की धुन गुनगुना रहे थे।
मैंने काफी तीखे लहजे में कहा, "हर चीज का एक समय होता है। यह सीटी बजाने का समय नहीं है।"
उसी क्षण, दूर से, उस खाई के पार, एक गाड़ी दिखाई दी, जो लॉज के द्वार की ओर जा रही थी। पीछे से आ रही गड़गड़ाहट में सैमुअल के अलावा एक और आदमी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था।
“ठीक है!” सार्जेंट ने मन ही मन कहा। वह मेरी ओर मुड़ा। “जैसा कि आप कहते हैं, मिस्टर बेटरएज, यह सीटी बजाने का समय नहीं है। अब इस मामले को अपने हाथ में लेने का समय है, बिना किसी को छोड़े। हम रोसन्ना स्पीयरमैन से शुरू करेंगे। जॉयस कहाँ है?”
हम दोनों ने जॉयस को पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। मैंने अस्तबल के एक लड़के को उसे ढूंढने के लिए भेजा।
"तुमने सुना मैंने मिस वेरेंडर से क्या कहा?" सार्जेंट ने इंतज़ार करते हुए कहा। "और तुमने देखा कि उसने इसे कैसे लिया? मैंने उससे साफ़-साफ़ कहा कि उसका हमें छोड़कर जाना मेरे लिए उसका हीरा वापस पाने में बाधा बनेगा - और वह इस बात को सुनकर भी चली गई! तुम्हारी युवती को उसकी माँ की गाड़ी में एक साथी मिल गया है, मिस्टर बेटरएज - और उसका नाम है, मूनस्टोन।"
मैंने कुछ नहीं कहा। मैं बस मिस राहेल पर अपने विश्वास को मजबूती से थामे रहा।

अस्तबल का नौकर वापस आया, और उसके पीछे-पीछे जॉयस भी आई, जैसा कि मुझे प्रतीत हुआ, वह बहुत अनिच्छा से आ रही थी।
"रोसन्ना स्पीयरमैन कहाँ है?" सार्जेंट कफ ने पूछा।
"मैं इसका कारण नहीं बता सकती, महोदय," जॉयस ने कहना शुरू किया; "और मुझे बहुत खेद है। लेकिन किसी न किसी तरह से----"
"फ्रिजिंगहॉल जाने से पहले," सार्जेंट ने उसकी बात काटते हुए कहा, "मैंने तुमसे कहा था कि रोसन्ना स्पीयरमैन पर नज़र रखना, और उसे यह पता न चलने देना कि उस पर नज़र रखी जा रही है। क्या तुम यह कहना चाहते हो कि तुमने उसे चकमा दे दिया?"
"मुझे डर है, महोदय," जॉयस कांपते हुए बोली, "कि शायद मैं उसे मुझे पहचानने से रोकने के लिए कुछ ज़्यादा ही सावधान हो गई थी। इस घर के निचले हिस्सों में इतने सारे रास्ते हैं----"
"तुम्हें उसकी याद आए कितना समय हो गया है?"
"लगभग एक घंटा हो गया है, महोदय।"
"आप फ्रिज़िंगहॉल में अपने नियमित काम पर वापस जा सकते हैं," सार्जेंट ने हमेशा की तरह शांत और गंभीर लहजे में कहा। "मुझे नहीं लगता कि आपकी प्रतिभा हमारे काम के लिए उपयुक्त है, मिस्टर जॉयस। आपका वर्तमान काम आपके बस की बात नहीं है। सुप्रभात।"
वह आदमी चुपके से चला गया। रोसन्ना स्पीयरमैन के लापता होने की खबर से मुझ पर जो असर हुआ, उसे शब्दों में बयान करना मेरे लिए बहुत मुश्किल है। ऐसा लग रहा था मानो मेरे मन में एक साथ पचास अलग-अलग विचार चल रहे हों। उस हालत में मैं सार्जेंट कफ को घूरता रहा—और मेरे पास बोलने के लिए शब्द ही नहीं थे।
“नहीं, श्रीमान बेटरएज,” सार्जेंट ने कहा, मानो उन्होंने मेरे मन की सबसे गहरी बात जान ली हो और बाकी सब बातों से पहले उसी का जवाब देना चाहते हों। “आपकी युवा मित्र, रोज़ाना, इतनी आसानी से मेरे हाथों से नहीं फिसलेगी जितना आप सोचते हैं। जब तक मुझे पता है कि मिस वेरेंडर कहाँ हैं, मेरे पास मिस वेरेंडर के साथी का पता लगाने के सारे साधन मौजूद हैं। मैंने कल रात उन्हें आपस में बात करने से रोक दिया। बहुत अच्छा। वे यहाँ मिलने के बजाय फ्रिज़िंगहॉल में मिलेंगे। इस समय की जाँच को (मेरी उम्मीद से थोड़ा जल्दी) इस घर से उस घर में स्थानांतरित करना होगा जहाँ मिस वेरेंडर गई हुई हैं। इस बीच, मुझे खेद है कि मुझे आपसे नौकरों को फिर से बुलाने का अनुरोध करना होगा।”

मैं उसके साथ नौकरों के हॉल में गया। यह बहुत शर्मनाक है, लेकिन सच भी है, कि जब उसने वे आखिरी शब्द कहे, तो मुझे फिर से जासूसी का बुखार चढ़ गया। मैं भूल गया कि मैं सार्जेंट कफ से नफरत करता था। मैंने चुपके से उसका हाथ पकड़ा और कहा, "भगवान के लिए, हमें बताओ कि अब तुम नौकरों के साथ क्या करने वाले हो?"
महान कफ एकदम स्थिर खड़े रहे और एक प्रकार के उदास उत्साह के साथ खाली हवा की ओर देखने लगे।
सार्जेंट (शायद मेरा ही जिक्र कर रहे थे) ने कहा, "अगर इस आदमी को गुलाब उगाना आता, तो वह सृष्टि का सबसे परिपूर्ण चरित्र होता!" अपनी इस भावुक अभिव्यक्ति के बाद, उन्होंने आह भरी और मेरा हाथ थाम लिया। उन्होंने फिर से काम की बात पर आते हुए कहा, "बात कुछ इस तरह है। रोसन्ना ने दो में से एक काम किया है। या तो वह सीधे फ्रिज़िंगहॉल चली गई है (मेरे वहाँ पहुँचने से पहले), या फिर वह पहले शिवरिंग सैंड में अपने छिपने की जगह पर गई है। सबसे पहले यह पता लगाना है कि घर छोड़ने से पहले उसे आखिरी बार किस नौकर ने देखा था।"
इस जांच को शुरू करने पर पता चला कि रोसन्ना को आखिरी बार देखने वाली व्यक्ति रसोई की नौकरानी नैन्सी थी।
नैन्सी ने उसे हाथ में एक पत्र लिए चुपके से बाहर निकलते देखा था, और उसने कसाई के उस आदमी को रोका जो अभी-अभी पिछले दरवाजे पर मांस पहुँचा रहा था। नैन्सी ने उसे उस आदमी से यह कहते सुना कि जब वह फ्रिज़िंगहॉल वापस जाए तो पत्र पोस्ट कर दे। उस आदमी ने पता देखा और कहा कि कॉब्स होल को संबोधित पत्र पहुँचाने का यह एक घुमावदार तरीका है, इसे फ्रिज़िंगहॉल से पोस्ट करना - और तो और, शनिवार होने के कारण पत्र सोमवार सुबह तक अपने गंतव्य तक नहीं पहुँचेगा। रोसन्ना ने जवाब दिया कि पत्र की डिलीवरी में सोमवार तक की देरी कोई मायने नहीं रखती। वह बस इतना सुनिश्चित करना चाहती थी कि वह आदमी उसकी बात मानेगा। उस आदमी ने वादा किया और चला गया। नैन्सी को रसोई में अपने काम पर वापस बुला लिया गया। और उसके बाद रोसन्ना स्पीयरमैन को किसी और ने नहीं देखा।
"तो?" मैंने पूछा, जब हम फिर से अकेले हो गए।
"ठीक है," सार्जेंट ने कहा। "मुझे फ्रिज़िंगहॉल जाना होगा।"
"पत्र के बारे में, महोदय?"
"जी हां। छिपने की जगह का ज्ञापन उस पत्र में है। मुझे डाकघर जाकर पता देखना होगा। अगर यह वही पता है जिसका मुझे संदेह है, तो मैं अगले सोमवार को अपनी

मित्र श्रीमती योलैंड से दोबारा मिलने जाऊंगी।"
मैं सार्जेंट के साथ टट्टू गाड़ी मंगवाने गया। अस्तबल में हमें लापता लड़की के बारे में एक नई जानकारी मिली।

अध्याय XIX

ऐसा प्रतीत होता है कि रोसन्ना के लापता होने की खबर घर के बाहर काम करने वाले नौकरों में फैल चुकी थी। उन्होंने भी पूछताछ शुरू कर दी थी; और उन्हें "डफी" नाम का एक फुर्तीला लड़का मिला, जो कभी-कभी बगीचे से खरपतवार निकालने का काम करता था और जिसने लगभग आधे घंटे पहले ही रोसन्ना स्पीयरमैन को देखा था। डफी को पूरा यकीन था कि लड़की देवदार के बागान में उसके पास से गुजरी थी, चलते हुए नहीं, बल्कि दौड़ते हुए, समुद्र तट की ओर।
"क्या यह लड़का यहाँ के तटीय क्षेत्र को जानता है?" सार्जेंट कफ ने पूछा।
मैंने उत्तर दिया, "उनका जन्म और पालन-पोषण तटवर्ती इलाके में हुआ है।"
सार्जेंट ने कहा, "डफी, क्या तुम एक शिलिंग कमाना चाहते हो? अगर हाँ, तो मेरे साथ चलो। मिस्टर बेटरएज, मेरे लौटने तक टट्टू गाड़ी तैयार रखना।"
वह कंपकंपती रेत की ओर इतनी तेज़ी से भागा कि मेरे पैर (हालांकि मेरी उम्र के हिसाब से काफी चुस्त-दुरुस्त थे) उसका मुकाबला करने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। नन्हा डफी, जैसा कि हमारे इलाके के नौजवानों का जोश में आने पर अक्सर होता है, एक चीख मारी और सार्जेंट के पीछे-पीछे दौड़ पड़ा।
यहाँ भी, सार्जेंट कफ के जाने के बाद के समय में मेरी मनस्थिति का स्पष्ट वर्णन करना मेरे लिए असंभव है। एक अजीब और स्तब्ध कर देने वाली बेचैनी ने मुझे घेर लिया था। मैंने घर के अंदर और बाहर दर्जनों अनावश्यक काम किए, जिनमें से एक भी मुझे अब याद नहीं है। मुझे यह भी नहीं पता कि सार्जेंट के जाने के कितने समय बाद डफी मेरे लिए एक संदेश लेकर दौड़ता हुआ वापस आया। सार्जेंट कफ ने लड़के को अपनी पॉकेटबुक से फाड़ा हुआ एक पत्ता दिया था, जिस पर पेंसिल से लिखा था, "मुझे रोसन्ना स्पीयरमैन के जूतों में से एक भेज दो, और जल्दी भेजो।"
मैंने जो पहली नौकरानी मिली उसे रोसन्ना के कमरे में भेज दिया; और मैंने लड़के को वापस भेजकर कहा कि मैं खुद उसके पीछे लात मारने आऊंगा।
मुझे भली-भांति पता है कि यह मुझे मिले निर्देशों का पालन करने का सबसे तेज़ तरीका नहीं था। लेकिन सार्जेंट के हाथों में रोसन्ना का जूता सौंपने से पहले मैं खुद देखना चाहता था कि आखिर चल-फिर में क्या गड़बड़ है। लड़की को बचाने का मेरा

पुराना विचार, अगर मुमकिन हो तो, आखिरी समय में फिर से मेरे दिमाग में आ गया था। इस भावना (और जासूसी के जुनून) ने मुझे जूता मिलते ही तुरंत भागने पर मजबूर कर दिया, जितनी तेज़ी से एक सत्तर साल का आदमी भाग सकता है।
जैसे ही मैं किनारे के पास पहुँचा, काले बादल घिर आए और बारिश बरसने लगी, हवा के साथ पानी की बड़ी-बड़ी सफेद चादरें बह रही थीं। मैंने खाड़ी के मुहाने पर रेत के टीले पर समुद्र की गर्जना सुनी। थोड़ा आगे जाकर, मैंने उस लड़के को देखा जो रेत के टीलों की ओट में शरण लिए बैठा था। फिर मैंने उग्र समुद्र को देखा, और लहरें रेत के टीले पर टकरा रही थीं, और तेज़ बारिश पानी पर उड़ते हुए वस्त्र की तरह बह रही थी, और समुद्र तट का पीला वीरान इलाका था जिस पर एक अकेली काली आकृति खड़ी थी - सार्जेंट कफ की आकृति।
जब उसने मुझे पहली बार देखा, तो उसने उत्तर दिशा की ओर हाथ हिलाया। "उस तरफ रहो!" वह चिल्लाया। "और नीचे मेरे पास आ जाओ!"
मैं हांफते हुए उसके पास गई, मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था मानो फट पड़ेगा। मैं कुछ बोल नहीं पा रही थी। मेरे मन में उससे पूछने के लिए सौ सवाल थे, लेकिन एक भी नहीं। उसका चेहरा मुझे डरा रहा था। उसकी आँखों में मैंने खौफ देखा। उसने मेरे हाथ से जूता छीन लिया और उसे रेत पर बने एक पदचिह्न में रख दिया, जो हमसे दक्षिण की ओर था और सीधे उस चट्टानी कगार की ओर इशारा कर रहा था जिसे साउथ स्पिट कहते हैं। बारिश से निशान अभी धुंधला नहीं हुआ था और लड़की का जूता उस निशान पर बिल्कुल फिट बैठ रहा था।
सार्जेंट ने बिना कुछ कहे, पदचिह्न में पड़े जूते की ओर इशारा किया।
मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन पहले की तरह ही नाकाम रहा। वह पैरों के निशानों का पीछा करते हुए नीचे की ओर बढ़ता गया, जहाँ चट्टानें और रेत मिलती थीं। दक्षिणी थूक बहते ज्वार से पूरी तरह भीगा हुआ था; पानी कांपती रेत के छिपे हुए हिस्से पर लहरें मार रहा था। कभी इधर, कभी उधर, एक ऐसी हठधर्मी धैर्य के साथ जिसे देखना भयानक था, सार्जेंट कफ ने अपने जूते को पैरों के निशानों में रखा, और हर बार पाया कि वह एक ही दिशा में इशारा कर रहा था - सीधे चट्टानों की ओर। लाख कोशिश करने के बावजूद, उसे कहीं भी उन चट्टानों से आने वाले पैरों के निशान नहीं मिले।
अंततः उसने हार मान ली। अभी भी चुप रहते हुए, उसने फिर मेरी ओर देखा; और फिर उसने हमारे सामने गहरे होते पानी की ओर देखा, जो दलदल के ऊपर से

लगातार गहराता जा रहा था। मैंने भी वहीं देखा जहाँ उसने देखा—और मैंने उसके चेहरे पर उसके विचार देख लिए। अचानक एक भयानक कंपकंपी मेरे पूरे शरीर में फैल गई। मैं घुटनों के बल समुद्र तट पर गिर पड़ा।

मैंने सार्जेंट को मन ही मन कहते सुना, "वह फिर से अपने छिपने की जगह पर लौट आई है। उन चट्टानों पर उसके साथ कोई घातक दुर्घटना हो गई है।"

कुछ ही घंटे पहले जब मैंने उस लड़की को गलियारे में झाड़ू लगाते हुए पाया था, तब उसके बदले हुए हाव-भाव, उसके शब्द और उसकी हरकतें—जिस सुन्न और बेजान तरीके से वह मेरी बातें सुन रही थी और मुझसे बात कर रही थी—ये सब मेरे मन में उभर आए और सार्जेंट के बोलते ही मुझे चेतावनी देने लगे कि उसका अनुमान भयानक सच्चाई से कितना दूर है। मैंने उसे उस डर के बारे में बताने की कोशिश की जिसने मुझे जकड़ लिया था। मैंने कहने की कोशिश की, "सार्जेंट, उसकी जो मृत्यु हुई है, वह उसकी अपनी इच्छा से हुई मृत्यु थी।" नहीं! शब्द नहीं निकल रहे थे। कंपकंपी ने मुझे जकड़ रखा था। मैं तेज बारिश को महसूस नहीं कर पा रहा था। मैं बढ़ते ज्वार को देख नहीं पा रहा था। मानो किसी सपने में, वह बेचारी खोई हुई लड़की मेरे सामने लौट आई। मैंने उसे फिर से वैसे ही देखा जैसे मैंने उसे पहले देखा था—उस सुबह जब मैं उसे घर लाने गया था। मैंने उसे फिर से सुना, वह मुझसे कह रही थी कि कांपती हुई रेत उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध अपनी ओर खींच रही है, और वह सोच रही थी कि क्या उसकी कब्र वहीं उसका इंतजार कर रही है। उस भयावह घटना ने मुझे किसी अकल्पनीय तरीके से झकझोर दिया, मेरी अपनी बच्ची के माध्यम से। मेरी बेटी बिल्कुल उसकी उम्र की थी। मेरी बेटी, अगर रोसन्ना की तरह ही उस दुखमय जीवन को जीती और इस भयानक मौत को प्राप्त होती, तो शायद वही दुख झेलती।

सार्जेंट ने दयालुतापूर्वक मुझे उठाया और मुझे उस स्थान से दूर कर दिया जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी।

उस राहत के साथ, मैंने फिर से सांस लेना शुरू किया और अपने आसपास की चीजों को वैसे ही देखना शुरू किया जैसी वे वास्तव में थीं। रेत के टीलों की ओर देखते हुए, मैंने बाहर से नौकरों और योलैंड नाम के मछुआरे को एक साथ हमारी ओर दौड़ते हुए देखा; और सभी को खतरे का संकेत मिल गया था, वे यह जानने के लिए चिल्ला रहे थे कि क्या लड़की मिल गई है। सार्जेंट ने बहुत कम शब्दों में उन्हें पैरों के निशान दिखाए और बताया कि उसके साथ कोई जानलेवा दुर्घटना हुई होगी। फिर उसने बाकी लोगों में से मछुआरे को चुना और समुद्र की ओर मुड़कर उससे एक सवाल पूछा: "मुझे

बताओ," उसने कहा। "क्या इस तरह के मौसम में, उन चट्टानों से जहां उसके पैरों के निशान खत्म होते हैं, कोई नाव उसे ले जा सकती है?"
मछुआरे ने रेत के टीले पर आती लहरों की ओर और हमारे दोनों ओर की चट्टानों से टकराकर झाग के बादलों की तरह ऊपर उठती विशाल लहरों की ओर इशारा किया। उन्होंने जवाब दिया, "आज तक बनी कोई भी नाव उस रास्ते से उसके पास नहीं पहुंच सकती थी।"
सार्जेंट कफ ने आखिरी बार रेत पर बने पैरों के निशानों को देखा, जो अब बारिश के कारण तेजी से धुंधले पड़ रहे थे।
“ये रहा सबूत कि वह ज़मीन के रास्ते इस जगह से नहीं जा सकती थी। और ये रहा सबूत कि वह समुद्र के रास्ते भी नहीं जा सकती थी।” वह रुका और एक मिनट तक सोचता रहा। “मुझे घर से यहाँ आने से आधा घंटा पहले उसे इस जगह की ओर दौड़ते हुए देखा गया था,” उसने योलैंड से कहा। “तब से कुछ समय बीत चुका है। मान लीजिए, एक घंटा पहले। उस समय चट्टानों के इस तरफ पानी कितना ऊँचा रहा होगा?” उसने दक्षिण की ओर इशारा किया—यानी उस तरफ जो दलदल से नहीं भरा था।
मछुआरे ने कहा, "आज जिस तरह से ज्वार आ रहा है, एक घंटे पहले तक उस तरफ इतना पानी भी नहीं था कि एक बिल्ली का बच्चा भी डूब सके।"
सार्जेंट कफ उत्तर दिशा की ओर, दलदल की ओर मुड़ गया।
"इस तरफ कितना?" उसने पूछा।
"और भी कम," योलैंड ने उत्तर दिया। "कांपती हुई रेत बस पानी से भर जाती, और कुछ नहीं।"
सार्जेंट मेरी ओर मुड़ा और बोला कि दुर्घटना दलदल वाली जगह पर ही हुई होगी। यह सुनकर मेरी ज़बान खुल गई। "कोई दुर्घटना नहीं!" मैंने उससे कहा। "जब वह इस जगह आई, तो वह अपनी ज़िंदगी से तंग आकर यहीं अपना अंत करने आई थी।"
वह मुझसे थोड़ा पीछे हट गया। "तुम्हें कैसे पता?" उसने पूछा। बाकी लोग उसके चारों ओर जमा हो गए। सार्जेंट ने तुरंत खुद को संभाला। उसने उन्हें मुझसे दूर किया; उसने कहा कि मैं बूढ़ा आदमी हूँ; उसने कहा कि इस खोज ने मुझे हिला दिया है; उसने कहा, "उसे थोड़ी देर अकेला छोड़ दो।" फिर वह योलैंड की ओर मुड़ा और पूछा, "जब ज्वार उतरेगा, तो क्या उसे ढूंढने की कोई संभावना है?" योलैंड ने उत्तर दिया, "बिल्कुल

नहीं। रेत जो पकड़ती है, उसे हमेशा के लिए अपने पास रखती है।" इतना कहकर मछुआरा एक कदम और पास आया और मुझसे बात करने लगा।
"श्रीमान बेटरएज," उन्होंने कहा, "मुझे उस युवती की मृत्यु के बारे में आपसे कुछ कहना है। रेत के टीले के किनारे से चार फ़ुट बाहर, चौड़ाई में, लगभग आधा फ़ैदम नीचे एक चट्टान की पट्टी है। मेरा सवाल यह है कि वह उस पर क्यों नहीं गिरी? यदि वह गलती से रेत के टीले से फिसल गई, तो वह नीचे उस जगह गिरी होगी जहाँ पैर रखने की जगह है, इतनी गहराई में जहाँ उसका पानी कमर तक भी मुश्किल से डूबता। वह ज़रूर दलदल में तैरकर या कूदकर आगे गहरे पानी में चली गई होगी - वरना वह अब तक लापता नहीं होती। यह कोई दुर्घटना नहीं है, महोदय! दलदल की गहराई ने उसे निगल लिया है। और यह उसकी अपनी करनी का फल है।"
उस व्यक्ति की गवाही के बाद, जिसके ज्ञान पर भरोसा किया जा सकता था, सार्जेंट चुप हो गया। हम सब भी उसकी तरह चुप रहे। एकमत होकर हम सब समुद्र तट की ढलान पर वापस मुड़ गए।
रेत के टीलों पर हमें घर से दौड़ता हुआ आया सहायक मिला। वह लड़का नेक है और मेरा बहुत आदर करता है। उसने मुझे एक छोटा सा नोट दिया, उसके चेहरे पर थोड़ी उदासी थी। उसने कहा, "पेनेलोप ने मुझे यह भेजा है, श्री बेटरएज। उसे यह रोसन्ना के कमरे में मिला।"
यह उस बूढ़े व्यक्ति के लिए उसका आखिरी विदाई शब्द था जिसने उससे दोस्ती करने की पूरी कोशिश की थी - भगवान का शुक्र है, उसने हमेशा अपनी पूरी कोशिश की थी।
"आपने अतीत में कई बार मुझे क्षमा किया है, श्रीमान बेटरएज। जब आप अगली बार शिवरिंग सैंड को देखें, तो कृपया मुझे एक बार फिर क्षमा करने का प्रयास करें। मुझे मेरी कब्र वहीं मिल गई है जहाँ मेरी कब्र मेरा इंतजार कर रही थी। मैं आपके स्नेह के लिए कृतज्ञ होकर जिया और मरा, महोदय।"
बस इतना ही था। जो कुछ भी था, उसे सहने की हिम्मत मुझमें नहीं थी। जवानी में, जब दुनिया की शुरुआत होती है, तो आंसू आसानी से बहते हैं। बुढ़ापे में, जब दुनिया को अलविदा कहते हैं, तब भी आंसू आसानी से बहते हैं। मैं फूट-फूटकर रोने लगा।
सार्जेंट कफ मेरे करीब आए—मुझे यकीन है कि उनका इरादा दयालुता का था। मैं उनसे पीछे हट गई। "मुझे मत छुओ," मैंने कहा। "तुम्हारे डर ने ही उसे ऐसा करने पर मजबूर किया है।"

"आप गलत हैं, श्रीमान बेटरएज," उन्होंने शांत स्वर में उत्तर दिया। "लेकिन जब हम वापस घर के अंदर होंगे, तब इस बारे में बात करने के लिए पर्याप्त समय होगा।"
मैंने दूल्हे का हाथ पकड़कर बाकी लोगों का पीछा किया। मूसलाधार बारिश में हम वापस घर की ओर चल पड़े—वहाँ उस मुसीबत और आतंक का सामना करने के लिए जो हमारा इंतज़ार कर रहा था।

अध्याय XX

आगे वालों ने हमसे पहले ही खबर फैला दी थी। हमने नौकरों को दहशत में पाया। जैसे ही हम मालकिन के दरवाजे के पास से गुजरे, वह अंदर से ज़ोर से खुल गया। मालकिन (उनके पीछे मिस्टर फ्रैंकलिन भी थे, जो उन्हें शांत करने की व्यर्थ कोशिश कर रहे थे) घटना के खौफ से बिल्कुल बेहाल होकर हमारे बीच आ गईं।
"इसके लिए तुम ही जिम्मेदार हो!" वह चिल्लाई और गुस्से में हाथ हिलाते हुए सार्जेंट को धमकाया। "गैब्रियल! उस नीच को उसका पैसा दे दो और मुझे उसकी नजरों से दूर कर दो!"
हममें से केवल सार्जेंट ही उससे निपटने में सक्षम था—क्योंकि वही हममें से एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो खुद पर नियंत्रण रख सकता था।
"इस विपत्ति के लिए मैं उतना ही उत्तरदायी हूँ जितना आप हैं, महोदया, जितना आप हैं," उन्होंने कहा। "यदि आधे घंटे के भीतर भी आप मुझे घर छोड़ने के लिए कहती हैं, तो मैं आपकी अनुमति स्वीकार कर लूँगा, लेकिन आपका पैसा नहीं।"
यह बात बहुत सम्मानपूर्वक, लेकिन साथ ही दृढ़ता से कही गई थी—और इसका असर मेरी मालकिन पर भी पड़ा, मुझ पर भी। उन्होंने श्री फ्रैंकलिन को उन्हें वापस कमरे में ले जाने दिया। जैसे ही दरवाज़ा बंद हुआ, सार्जेंट ने अपनी पैनी नज़र से नौकरानियों के बीच देखा कि बाकी सब तो सिर्फ़ डरी हुई थीं, लेकिन पेनेलोप रो रही थी। उन्होंने उससे कहा, "जब तुम्हारे पिता अपने गीले कपड़े बदल लें, तो अपने पिता के कमरे में आकर हमसे बात करना।"
आधा घंटा बीतने से पहले ही मैंने अपने सूखे कपड़े पहन लिए थे और सार्जेंट कफ को भी उनकी ज़रूरत के हिसाब से कपड़े दे दिए थे। पेनेलोप यह जानने के लिए हमारे पास आई कि सार्जेंट उससे क्या चाहते हैं। मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी इतना दृढ़ निश्चय किया था कि मैं कितनी आज्ञाकारी बेटी हूँ, जितना उस क्षण किया। मैंने उसे गोद में उठाया और उसे अपनी बाहों में भर लिया और प्रार्थना की कि ईश्वर उसे आशीर्वाद दे। उसने अपना सिर मेरी छाती पर रख लिया और अपनी बाहें मेरी गर्दन में

डाल दीं—और हम थोड़ी देर चुपचाप इंतज़ार करते रहे। मुझे लगता है कि उस बेचारी मृत लड़की का इस सब में हाथ रहा होगा, मेरी बेटी के साथ-साथ मेरे साथ भी। सार्जेंट खिड़की के पास गए और वहाँ खड़े होकर बाहर देखने लगे। मुझे लगा कि हम दोनों के बारे में इस तरह सोचने के लिए उन्हें धन्यवाद देना उचित होगा—और मैंने दिया भी।

उच्च वर्ग के लोगों के पास सभी सुख-सुविधाएँ होती हैं—जिनमें अपनी भावनाओं को तृप्त करने की विलासिता भी शामिल है। निम्न वर्ग के लोगों को ऐसा कोई विशेषाधिकार नहीं मिलता। आवश्यकता, जो हमारे श्रेष्ठ लोगों को बख्श देती है, हम पर दया नहीं करती। हम अपनी भावनाओं को दबाना सीखते हैं और यथासंभव धैर्य से अपने कर्तव्यों का पालन करते रहते हैं। मैं इसकी शिकायत नहीं करता—मैं बस इसे देखता हूँ। पेनेलोप और मैं सार्जेंट के लिए तैयार थे, जैसे ही सार्जेंट अपनी तरफ तैयार हुआ। जब मुझसे पूछा गया कि क्या वह जानती है कि उसकी साथी नौकरानी ने आत्महत्या क्यों की, तो मेरी बेटी ने उत्तर दिया (जैसा कि आप आगे समझ जाएँगे) कि यह श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के प्रेम के कारण था। फिर जब मुझसे पूछा गया कि क्या उसने अपने इस विचार का किसी और से जिक्र किया है, तो पेनेलोप ने उत्तर दिया, "मैंने रोसन्ना की खातिर इसका जिक्र नहीं किया है।" मुझे इसमें कुछ जोड़ना आवश्यक लगा। मैंने कहा, "और मिस्टर फ्रैंकलिन के लिए भी, मेरी प्यारी। अगर रोज़ाना की मौत उनके प्यार की वजह से हुई है, तो यह उनकी जानकारी में या उनकी गलती से नहीं हुई है। अगर वह आज घर छोड़ते हैं, तो उन्हें सच्चाई जानने के व्यर्थ कष्ट के बिना ही घर छोड़ देने दीजिए।" सार्जेंट कफ ने कहा, "बिल्कुल सही," और फिर चुप हो गए; पेनेलोप के विचार (जैसा कि मुझे लगा) की तुलना अपने किसी दूसरे विचार से कर रहे थे, जिसे उन्होंने अपने तक ही सीमित रखा।

आधे घंटे के अंत में, मेरी मालकिन की घंटी बजी।

जब मैं उसका जवाब देने जा रहा था, तो मेरी मुलाकात मिस्टर फ्रैंकलिन से हुई जो अपनी चाची के बैठक कक्ष से बाहर आ रहे थे। उन्होंने बताया कि उनकी चाची सार्जेंट कफ से मिलने के लिए तैयार हैं—पहले की तरह मेरी उपस्थिति में—और उन्होंने यह भी कहा कि वे स्वयं सार्जेंट से पहले दो शब्द कहना चाहते हैं। मेरे कमरे में वापस जाते समय, वे रुके और हॉल में लगी रेलवे समय सारिणी को देखने लगे।

"क्या आप सचमुच हमें छोड़कर जा रहे हैं, महोदय?" मैंने पूछा। "मिस राहेल ज़रूर सुधर जाएँगी, बस उन्हें थोड़ा समय दीजिए?"

श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "जब उसे पता चलेगा कि मैं चला गया हूँ और वह मुझे फिर कभी नहीं देख पाएगी, तो वह ठीक हो जाएगी।"
मुझे लगा कि वह मेरी प्रेमिका के उसके साथ किए गए व्यवहार से नाराज़ होकर बोल रहा था। लेकिन ऐसा नहीं था। मेरी मालकिन ने पुलिस के घर आने के समय से ही यह गौर किया था कि उसका नाम सुनते ही मिस राहेल का गुस्सा भड़क उठता था। वह अपनी चचेरी बहन से इतना प्यार करता था कि इस बात को स्वीकार नहीं करना चाहता था, जब तक कि सच्चाई उससे जबरदस्ती नहीं पूछी गई, जब वह अपनी चाची के घर चली गई। एक बार जब उसकी आँखें उस क्रूर तरीके से खुलीं, जिसके बारे में आप जानते हैं, तो मिस्टर फ्रैंकलिन ने घर छोड़ने का फैसला कर लिया - वह एकमात्र फैसला जो कोई भी दृढ़ निश्चयी व्यक्ति ले सकता है।
सार्जेंट से उन्होंने जो कुछ कहा, वह मेरी उपस्थिति में कहा गया। उन्होंने बताया कि महारानी ने यह स्वीकार किया कि उन्होंने जल्दबाजी में बात कह दी थी। उन्होंने पूछा कि क्या सार्जेंट कफ इस स्थिति में अपनी फीस स्वीकार कर लेंगे और हीरे के मामले को वहीं छोड़ देंगे जहाँ वह अभी है। सार्जेंट ने उत्तर दिया, "नहीं महोदय। मुझे मेरी फीस मेरे कर्तव्य निभाने के लिए दी जाती है। मैं इसे तब तक नहीं लूंगा जब तक मेरा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता।"
"मुझे आपकी बात समझ नहीं आ रही है," श्री फ्रैंकलिन कहते हैं।
“मैं अपनी बात स्पष्ट कर देता हूँ, महोदय,” सार्जेंट ने कहा। “जब मैं यहाँ आया था, तो मैंने लापता हीरे के मामले पर आवश्यक प्रकाश डालने का जिम्मा लिया था। अब मैं तैयार हूँ और अपना वादा पूरा करने के लिए प्रतीक्षारत हूँ। जब मैं लेडी वेरेंडर को वर्तमान स्थिति के बारे में बता दूँगा और उन्हें स्पष्ट रूप से यह बता दूँगा कि मूनस्टोन की बरामदगी के लिए क्या कार्रवाई करनी है, तो मेरी जिम्मेदारी समाप्त हो जाएगी। उसके बाद, वेरेंडर तय करें कि वे मुझे आगे बढ़ने की अनुमति देती हैं या नहीं। तब मैं अपना वादा पूरा कर लूँगा और अपनी फीस ले लूँगा।”
इन शब्दों में सार्जेंट कफ ने हमें याद दिलाया कि यहां तक कि डिटेक्टिव पुलिस में भी, एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हो सकती है।
उनका नज़रिया इतना स्पष्ट रूप से सही था कि और कुछ कहने की ज़रूरत ही नहीं थी। जब मैं उन्हें मेरी पत्नी के कमरे में ले जाने के लिए उठी, तो उन्होंने पूछा कि क्या श्री फ्रैंकलिन उपस्थित रहना चाहते हैं। श्री फ्रैंकलिन ने उत्तर दिया, "जब तक लेडी वेरेंडर न चाहें, तब तक नहीं।" जब मैं सार्जेंट के पीछे-पीछे बाहर जा रही थी, तो उन्होंने मुझसे

फुसफुसाते हुए कहा, "मुझे पता है कि वह आदमी राहेल के बारे में क्या कहने वाला है; और मैं उससे इतना प्यार करता हूँ कि उसे सुनकर अपना आपा नहीं खो सकता। मुझे अकेला छोड़ दो।"
मैंने उसे खिड़की की चौखट पर झुका हुआ, बेहद दुखी हालत में छोड़ दिया, उसका चेहरा हाथों में छिपा हुआ था और पेनेलोप दरवाजे से झाँक रही थी, उसे दिलासा देने की चाहत में। मिस्टर फ्रैंकलिन की जगह मैं होती तो उसे बुला लेती। जब एक औरत आपके साथ बुरा बर्ताव करती है, तो दूसरी औरत को बताने में बहुत सुकून मिलता है —क्योंकि दस में से नौ बार दूसरी औरत आपका ही साथ देती है। शायद, जब मेरी पीठ मुड़ी हुई थी, तब उसने उसे बुलाया हो? अगर ऐसा है तो मेरी बेटी के साथ न्याय करते हुए यह कहना ही सही होगा कि वह मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक को दिलासा देने में कोई कसर नहीं छोड़ती।
इसी बीच, सार्जेंट कफ और मैं मेरी पत्नी के कमरे में चले गए।
पिछली बार जब हमने उनसे मुलाकात की थी, तब हमने पाया था कि वे मेज पर रखी किताब से अपनी नज़रें हटाने को तैयार नहीं थीं। लेकिन इस बार स्थिति बेहतर थी। उन्होंने सार्जेंट की आँखों में उसी दृढ़ता से देखा जैसे सार्जेंट की आँखें होती हैं। उनके चेहरे की हर रेखा में पारिवारिक भावना झलक रही थी; और मैं जानता था कि जब मेरी प्रेमिका जैसी महिला को सार्जेंट कफ के हाथों सबसे बुरी बातें सुननी पड़ेंगी, तो सार्जेंट कफ को अपनी असलियत का सामना करना पड़ेगा।

अध्याय XXI

जब हम अपनी सीटों पर बैठ गए, तो सबसे पहले मेरी पत्नी ने शब्द कहे।
"सार्जेंट कफ," उसने कहा, "शायद आधे घंटे पहले आपसे बात करने के मेरे असभ्य तरीके के लिए कुछ बहाना हो सकता है। लेकिन मैं उस बहाने का दावा नहीं करना चाहती। मैं पूरी ईमानदारी से कहती हूं कि अगर मैंने आपको ठेस पहुंचाई है तो मुझे खेद है।"
जिस मधुर स्वर और भाव से उसने उससे प्रायश्चित करवाया, उसका सार्जेंट पर उचित प्रभाव पड़ा। उसने अपने बचाव के लिए अनुमति मांगी और इसे मेरी मालकिन के प्रति सम्मान का कार्य बताया। उसने कहा कि इस विपत्ति के लिए, जिसने हम सभी को झकझोर दिया था, वह किसी भी तरह से जिम्मेदार नहीं हो सकता, क्योंकि उसकी जांच को सही अंजाम तक पहुंचाने में सफलता इस बात पर निर्भर थी कि वह रोसन्ना स्पीयरमैन को डराने वाली कोई बात न कहे और न ही कोई काम करे। उसने मुझसे

गवाही देने का अनुरोध किया कि क्या उसने ऐसा किया था या नहीं। मैं गवाही दे सकती थी, और मैंने दी भी, कि उसने ऐसा किया था। और मुझे लगा कि यहीं पर मामले को समाप्त करना उचित होगा।

हालांकि, सार्जेंट कफ ने इसे एक कदम और आगे बढ़ाया, जाहिर तौर पर (जैसा कि अब आप समझेंगे) महारानी और खुद के बीच सबसे दर्दनाक स्पष्टीकरण देने के उद्देश्य से।

सार्जेंट ने कहा, "मैंने उस युवती की आत्महत्या का एक कारण सुना है, जो शायद सही हो। यह कारण मेरे द्वारा चलाए जा रहे मामले से बिल्कुल अलग है। हालांकि, मैं यह कहना चाहूंगा कि मेरी अपनी राय इससे अलग है। मेरा मानना है कि लापता हीरे को लेकर किसी असहनीय चिंता ने उस बेचारी को आत्महत्या करने पर मजबूर कर दिया। मुझे नहीं पता कि वह असहनीय चिंता क्या थी। लेकिन मुझे लगता है (आपकी अनुमति से) मैं एक ऐसे व्यक्ति से संपर्क कर सकता हूं जो यह तय कर सकता है कि मैं सही हूं या गलत।"

"क्या वह व्यक्ति अब घर में है?" मेरी मालकिन ने थोड़ी देर इंतजार करने के बाद पूछा।

"वह व्यक्ति घर से निकल चुका है," महोदया।

वह जवाब सीधे मिस राहेल की ओर इशारा कर रहा था। चारों ओर सन्नाटा छा गया, जो मुझे लगा कि कभी खत्म नहीं होगा। हे भगवान! हवा कितनी ज़ोर से चल रही थी और बारिश खिड़की पर कितनी ज़ोर से पड़ रही थी, जब मैं वहाँ बैठकर उनमें से किसी एक के फिर से बोलने का इंतज़ार कर रही थी!

"कृपया स्पष्ट रूप से अपनी बात कहें," मेरी पत्नी ने कहा। "क्या आप मेरी बेटी की बात कर रहे हैं?"

"हाँ," सार्जेंट कफ ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

जब हम कमरे में दाखिल हुए तो मेरी मालकिन की चेक-बुक मेज पर पड़ी थी—निस्संदेह सार्जेंट को उसकी फीस देने के लिए। अब उन्होंने उसे वापस दराज में रख दिया। उनका बेचारा हाथ कांपता देखकर मेरा दिल भर आया—वही हाथ जिसने उनकी बूढ़ी नौकरानी को इतने सारे लाभ दिए थे; वही हाथ, हे भगवान, जब मेरा समय आएगा और मैं हमेशा के लिए इस पद को छोड़ दूंगी, तो मेरा हाथ भी उसी हाथ को थामे!

"मुझे उम्मीद थी," मेरी पत्नी ने बहुत धीरे और शांत स्वर में कहा, "कि मैंने आपकी सेवाओं का प्रतिफल दे दिया होगा, और आपसे विदा लेते समय हमारे बीच मिस वेरेंडर का नाम खुलकर न लिया गया होगा, जैसा कि अब लिया गया है। शायद आपके मेरे कमरे में आने से पहले मेरे भतीजे ने इस बारे में कुछ कहा होगा।"
"श्रीमान ब्लेक ने अपना संदेश दिया, महोदया। और मैंने श्रीमान ब्लेक को एक कारण बताया----"
"मुझे अपना कारण बताने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपने अभी जो कहा है, उसके बाद आप भी मेरी तरह जानते हैं कि आप बहुत आगे बढ़ चुके हैं और अब पीछे हटना संभव नहीं है। यह मेरा कर्तव्य है, अपने लिए भी और अपने बच्चे के लिए भी, कि मैं आपको यहीं रहने के लिए कहूँ और आपको खुलकर बोलने के लिए प्रेरित करूँ।"
सार्जेंट ने अपनी घड़ी देखी।
“अगर समय होता, महोदया,” उन्होंने उत्तर दिया, “तो मैं मौखिक रूप से बताने के बजाय अपनी रिपोर्ट लिखकर देना पसंद करता। लेकिन, अगर यह जांच जारी रखनी है, तो लिखने में समय बर्बाद करना बहुत बड़ी गलती होगी। मैं इस मामले में तुरंत आगे बढ़ने के लिए तैयार हूं। यह मेरे लिए बोलना और आपके लिए सुनना बहुत कष्टदायक है।”
वहाँ मेरी मालकिन ने उसे एक बार फिर रोक दिया।
"शायद मैं आपके लिए और यहाँ मौजूद अपने अच्छे सेवक और मित्र के लिए इस पीड़ा को कम कर सकूँ," उसने कहा, "अगर मैं अपनी ओर से निडरता से बोलने का उदाहरण पेश करूँ। क्या आपको संदेह है कि मिस वेरेंडर किसी निजी उद्देश्य से हीरे को छिपाकर हम सभी को धोखा दे रही हैं? क्या यह सच है?"
"बिल्कुल सही, महोदया।"
बहुत खूब। अब, शुरू करने से पहले, मुझे आपको, मिस वेरिंदर की माँ होने के नाते, यह बताना होगा कि वह वह सब करने में बिल्कुल असमर्थ है जो आप उस पर करने का आरोप लगा रहे हैं। उसके चरित्र के बारे में आपकी जानकारी एक-दो दिन पहले की है। उसके चरित्र के बारे में मेरी जानकारी उसके जीवन के आरंभ से है। आप उस पर अपने संदेह को जितना चाहें उतना ज़ोर से व्यक्त करें—ऐसा करने से आप मुझे नाराज़ नहीं कर सकते। मुझे पहले से ही यकीन है कि (आपके अनुभव के बावजूद) इस मामले में परिस्थितियाँ आपको बुरी तरह से गुमराह कर रही हैं। ध्यान रहे! मेरे पास कोई निजी जानकारी नहीं है। मैं अपनी बेटी के बारे में उतनी ही गोपनीय हूँ

जितनी आप हैं। मेरे सकारात्मक रूप से बोलने का एकमात्र कारण वही है जो आप पहले ही सुन चुके हैं। मैं अपनी बच्ची को जानती हूँ।
वह मेरी ओर मुड़ी और उसने मुझे अपना हाथ दिया। मैंने चुपचाप उसका हाथ चूमा। "आप जा सकते हैं," उसने कहा और हमेशा की तरह स्थिर भाव से सार्जेंट की ओर देखने लगी।
सार्जेंट कफ ने सिर झुकाया। मेरी प्रेमिका का उस पर केवल एक ही प्रभाव पड़ा था। उसका कठोर चेहरा एक पल के लिए नरम पड़ गया, मानो उसे उस पर दया आ रही हो। जहाँ तक उसके अपने विश्वास को झकझोरने की बात थी, यह स्पष्ट था कि वह उसे एक इंच भी नहीं हिला पाई थी। वह अपनी कुर्सी पर बैठ गया; और उसने मिस राहेल के चरित्र पर अपना घिनौना हमला इन शब्दों से शुरू किया:
उन्होंने कहा, "मुझे आपसे निवेदन करना होगा कि आप इस मामले को मेरे और अपने दोनों के दृष्टिकोण से देखें। क्या आप मेरी जगह पर आकर, मेरे अनुभवों को समझकर, इस मामले का सामना करेंगी? और क्या आप मुझे संक्षेप में यह बताने की अनुमति देंगी कि मेरा अनुभव कैसा रहा है?"
मेरी प्रेमिका ने उसे हस्ताक्षर करके यह बात बताई थी। सार्जेंट ने आगे कहा:
“पिछले बीस वर्षों से,” उन्होंने कहा, “मैं पारिवारिक घोटालों के मामलों में मुख्य रूप से गुप्त सलाहकार के रूप में काम करता रहा हूँ। मेरे घरेलू अनुभव का एकमात्र परिणाम, जिसका इस मामले से सीधा संबंध है, उसे मैं दो शब्दों में बता सकता हूँ। मुझे यह भली-भांति पता है कि उच्च पदस्थ युवतियों पर कभी-कभी ऐसे निजी ऋण होते हैं जिन्हें वे अपने निकटतम रिश्तेदारों और मित्रों के सामने स्वीकार करने की हिम्मत नहीं करतीं। कभी-कभी इसके पीछे टोपी बनाने वाले और जौहरी का हाथ होता है। कभी-कभी धन की आवश्यकता ऐसे उद्देश्यों के लिए होती है जिन पर मुझे इस मामले में संदेह नहीं है, और जिनका उल्लेख करके मैं आपको चौंकाना नहीं चाहता। मेरी कही बातों को ध्यान में रखें, महोदया—और अब देखते हैं कि इस घर की घटनाओं ने मुझे अपने स्वयं के अनुभव पर वापस लौटने के लिए कैसे विवश किया है, चाहे मुझे यह पसंद हो या न हो!”
उसने एक पल के लिए खुद से विचार किया, और फिर आगे बढ़ा—एक भयावह स्पष्टता के साथ जो आपको उसे समझने के लिए बाध्य करती थी; एक घृणित न्याय के साथ जो किसी का पक्ष नहीं लेता था।

“मूनस्टोन के गुम होने से संबंधित मेरी पहली जानकारी मुझे सुपरिटेंडेंट सीग्रेव से मिली। उन्होंने मुझे पूरी तरह से आश्वस्त कर दिया कि वे इस मामले को संभालने में पूरी तरह असमर्थ थे। उनकी एक बात जो मुझे ध्यान देने योग्य लगी, वह यह थी कि मिस वेरेंडर ने उनसे पूछताछ करने से इनकार कर दिया था और उनसे पूरी तरह से समझ से परे अशिष्टता और तिरस्कार के साथ बात की थी। मुझे यह बात अजीब लगी - लेकिन मैंने इसे मुख्य रूप से सुपरिटेंडेंट की किसी नासमझी का नतीजा माना, जिससे शायद उस युवती को ठेस पहुंची हो। इसके बाद, मैंने इस बात को अपने दिमाग से निकाल दिया और अकेले ही इस मामले को सुलझाने में जुट गया। जैसा कि आप जानते हैं, इसका अंत दरवाजे पर लगे धब्बे की खोज और श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के साक्ष्य से हुआ, जिससे मुझे यह तसल्ली हुई कि यह धब्बा और हीरे का गुम होना एक ही पहेली के टुकड़े थे। अब तक, अगर मुझे किसी बात पर शक था, तो वह यह था कि मूनस्टोन चोरी हो गया था और हो सकता है कि कोई नौकर ही चोर हो। बहुत अच्छा। इस स्थिति में, क्या क्या हुआ? मिस वेरिंदर अचानक अपने कमरे से बाहर आती हैं और मुझसे बात करती हैं। उस युवती में मुझे तीन संदिग्ध लक्षण दिखाई देते हैं। हीरा खोए हुए चौबीस घंटे से अधिक समय बीत चुका है, फिर भी वह बहुत उत्तेजित है। वह मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करती है जैसा उसने पहले अधीक्षक सीग्रेव के साथ किया था। और वह श्री फ्रैंकलिन ब्लेक से बुरी तरह नाराज़ है। फिर से बहुत अच्छा। यहाँ (मैं मन ही मन कहता हूँ) एक युवती है जिसने एक कीमती हीरा खो दिया है - एक युवती, जैसा कि मेरी आँखों और कानों ने मुझे बताया है, जो उग्र स्वभाव की भी है। इन परिस्थितियों में, और इस स्वभाव के साथ, वह क्या करती है? वह श्री ब्लेक, अधीक्षक और मेरे प्रति एक समझ से परे आक्रोश प्रकट करती है - अन्यथा, वही तीन लोग जो अपने-अपने तरीकों से उसका खोया हुआ हीरा वापस पाने में उसकी मदद करने की कोशिश कर रहे थे। अपनी पूछताछ को इस बिंदु तक लाने के बाद - तब, महोदया, और तभी, मैं अपने स्वयं के अनुभव के लिए अपने मन में झाँकना शुरू करता हूँ। मेरा अपना अनुभव मिस वेरिंदर के इस अलग व्यवहार की व्याख्या करता है। यह व्यवहार समझ से परे है। यह उसे उन अन्य युवतियों से जोड़ता है जिन्हें मैं जानता हूँ। इससे मुझे लगता है कि उस पर कुछ ऐसे कर्ज हैं जिन्हें वह स्वीकार करने की हिम्मत नहीं करती, और जिन्हें चुकाना ही होगा। और इससे मेरे मन में यह सवाल उठता है कि क्या हीरे के खोने का मतलब यह तो नहीं है कि हीरे को गुप्त रूप से उन कर्जों को चुकाने के लिए

गिरवी रखा गया है? यही निष्कर्ष मेरे अनुभव से स्पष्ट तथ्यों से निकलता है। महोदया, आपका अनुभव इसके विपरीत क्या कहता है?
"जो मैं पहले ही कह चुकी हूँ," मेरी मालकिन ने उत्तर दिया। "परिस्थितियों ने आपको गुमराह कर दिया है।"
मैंने अपनी तरफ से कुछ नहीं कहा। रॉबिन्सन क्रूसो—पता नहीं कैसे—मेरे उलझे हुए दिमाग में घर कर गया था। अगर सार्जेंट कफ उस पल किसी रेगिस्तानी द्वीप पर पहुँच जाता, जहाँ उसका साथ देने के लिए कोई साथी न हो, या उसे वहाँ से ले जाने के लिए कोई जहाज़ न हो—तो वह ठीक उसी जगह पहुँचता जहाँ मैं उसे देखना चाहता था! (ध्यान दें:—मैं एक औसत दर्जे का अच्छा ईसाई हूँ, बशर्ते आप मेरी ईसाई धर्म की सीमाओं को ज़्यादा न बढ़ाएँ। और आप सभी—जो मेरे लिए बहुत राहत की बात है—इस मामले में काफी हद तक मेरे जैसे ही हैं।)
सार्जेंट कफ ने आगे कहा:
"सही हो या गलत, महोदया," उन्होंने कहा, "अपना निष्कर्ष निकालने के बाद, अगला काम था उसे परखना। मैंने महोदया को घर की सभी अलमारियों की जाँच करने का सुझाव दिया था। यह उस कपड़े को खोजने का एक तरीका था जिससे संभवतः दाग लगा था; और यह मेरे निष्कर्ष को परखने का भी एक तरीका था। क्या नतीजा निकला? महोदया सहमत हुईं; श्री ब्लेक सहमत हुए; श्री एबलव्हाइट सहमत हुए। केवल मिस वेरेंडर ने साफ इनकार करके पूरी कार्यवाही रोक दी। इस परिणाम से मुझे यकीन हो गया कि मेरा विचार सही था। यदि महोदया और श्री बेटरएज मुझसे सहमत नहीं होते हैं, तो आप आज ही के दिन आपके सामने जो हुआ है, उससे अनजान हैं। आपके सामने, मैंने उस युवती से कहा था कि उसका घर छोड़ना (उस समय की स्थिति के अनुसार) मेरे द्वारा उसके गहने वापस पाने में बाधा उत्पन्न करेगा। आपने स्वयं देखा कि वह इस बात को अनसुना करते हुए चली गई। आपने स्वयं देखा कि उसने श्री ब्लेक को माफ करने के बजाय, जिन्होंने आप सभी से अधिक प्रयास किया था, सुराग मेरे हाथ में आने के बाद, उसने अपनी माँ के घर की सीढ़ियों पर श्री ब्लेक का सार्वजनिक रूप से अपमान किया। इन बातों का क्या अर्थ है? यदि मिस वेरेंडर को डायमंड के दमन की जानकारी नहीं है, तो इन बातों का क्या अर्थ है?
इस बार उन्होंने मेरी तरफ देखा। मिस राहेल के खिलाफ एक के बाद एक सबूत पेश करते हुए उन्हें सुनना बेहद डरावना था, और यह जानकर कि उनका बचाव करने की इच्छा होते हुए भी, उनकी कही बातों की सच्चाई पर कोई विवाद नहीं हो सकता था।

(भगवान का शुक्र है!) मैं स्वभाव से तर्क से ऊपर हूँ। इसी वजह से मैं अपनी पत्नी के विचार पर अडिग रहा, जो मेरा भी विचार था। इससे मेरा हौसला बढ़ा और मैंने सार्जेंट कफ के सामने साहस दिखाया। मेरे प्रिय मित्रों, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरे उदाहरण से सीख लें। यह आपको कई तरह की परेशानियों से बचाएगा। तर्क से ऊपर उठकर सोचें और देखें कि कैसे आप उन सभी समझदार लोगों के पंजे काट देते हैं जो आपके भले के लिए आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश करते हैं!

मैंने और मेरी प्रेमिका ने कोई टिप्पणी नहीं की, यह देखकर सार्जेंट कफ आगे बढ़ गया। हे भगवान! यह देखकर मुझे कितना गुस्सा आया कि हमारी चुप्पी से उसे ज़रा भी परेशानी नहीं हुई!

"माई लेडी, मामला सिर्फ मिस वेरेंडर के खिलाफ है," उन्होंने कहा। "अगला काम है मिस वेरिंदर और मृतक रोसन्ना स्पीयरमैन के खिलाफ मौजूदा मामले को एक साथ रखना। अगर आप चाहें तो हम एक पल के लिए आपकी बेटी द्वारा अपने कपड़ों की जांच न करवाने के इनकार पर वापस जाना चाहेंगे। उस घटना के बाद, मेरा मन पक्का हो जाने पर, मुझे दो सवालों पर विचार करना था। पहला, अपनी जांच करने का सही तरीका क्या है। दूसरा, क्या मिस वेरिंदर का घर की महिला नौकरानियों में कोई साथी था। इस पर ध्यानपूर्वक विचार करने के बाद, मैंने जांच को, जिसे हम अपने कार्यालय में 'अत्यंत अनियमित' तरीका कहेंगे, करने का निश्चय किया। इसका कारण यह था: मुझे एक पारिवारिक बदनामी से निपटना था, जिसे परिवार की सीमाओं के भीतर रखना मेरा कर्तव्य था। जितना कम शोर मचाया जाए और जितने कम बाहरी लोगों को मेरी मदद के लिए लगाया जाए, उतना ही बेहतर था। संदेह के आधार पर लोगों को हिरासत में लेने, मजिस्ट्रेट के सामने पेश करने और बाकी सब जैसी सामान्य प्रक्रियाओं के बारे में सोचना भी संभव नहीं था, जब आपकी महोदया (जैसा कि मेरा मानना था) आपकी बेटी इस पूरे मामले की जड़ में थी। इस मामले में, मुझे लगा कि श्रीमान..." बेटरएज का चरित्र और घर में उनकी स्थिति—नौकरों को अच्छी तरह जानने और परिवार की प्रतिष्ठा को दिल से चाहने के कारण—उन्हें सहायक के रूप में रखना मेरे लिए किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में अधिक सुरक्षित होता। मैंने श्री ब्लेक से भी संपर्क करने की कोशिश की होती—लेकिन एक बाधा के कारण ऐसा नहीं हो सका। उन्होंने मेरी योजनाओं को बहुत पहले ही भांप लिया था; और मिस वेरेंडर में उनकी रुचि के कारण, उनके और मेरे बीच कोई आपसी समझ असंभव थी। मैं आपको ये सब इसलिए बता रहा हूँ ताकि आपको यह दिखा सकूँ कि मैंने पारिवारिक

रहस्य को परिवार के भीतर ही रखा है। मैं एकमात्र बाहरी व्यक्ति हूँ जो इसे जानता है —और मेरा पेशेवर अस्तित्व चुप रहने पर निर्भर करता है।
यहां मुझे लगा कि मेरा पेशेवर अस्तित्व चुप न रहने पर निर्भर करता है। बुढ़ापे में अपनी प्रेमिका के सामने एक तरह के डिट्टी-पुलिसकर्मी के रूप में पेश किया जाना, एक बार फिर, मेरे ईसाई धर्म की सहनशीलता से परे था।
मैंने कहा, "मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि जहाँ तक मुझे पता है, मैंने शुरू से अंत तक इस घिनौने जासूसी मामले में किसी भी तरह से मदद नहीं की; और मैं सार्जेंट कफ को चुनौती देता हूँ कि अगर उनमें हिम्मत है तो वे मेरा खंडन करें!"
उन शब्दों में अपनी भड़ास निकाल देने के बाद मुझे बहुत राहत मिली। महारानी ने मेरे कंधे पर हल्के से थपथपाकर मुझे सम्मान दिया। मैंने गुस्से से सार्जेंट की ओर देखा, यह जानने के लिए कि वह इस तरह की गवाही के बारे में क्या सोचता है। सार्जेंट ने एक मेमने की तरह मेरी ओर देखा और ऐसा लगा जैसे वह मुझे पहले से भी ज़्यादा पसंद करने लगा हो।
मेरी पत्नी ने उन्हें बताया कि वे अपना बयान जारी रख सकते हैं। उन्होंने कहा, "मैं समझती हूँ कि आपने ईमानदारी से मेरी भलाई के लिए अपना पूरा प्रयास किया है। मैं अब आपकी अगली बात सुनने के लिए तैयार हूँ।"
“अब मुझे जो कहना है,” सार्जेंट कफ ने उत्तर दिया, “वह रोसन्ना स्पीयरमैन से संबंधित है। जैसा कि आपको याद होगा, मैंने उस युवती को तब पहचाना जब वह कपड़े धोने की किताब इस कमरे में लाई थी। उस समय तक मुझे संदेह था कि मिस वेरेंडर ने अपना रहस्य किसी को बताया होगा या नहीं। जब मैंने रोसन्ना को देखा, तो मेरा विचार बदल गया। मुझे तुरंत शक हुआ कि वह डायमंड को छिपाने की साजिश में शामिल थी। उस बेचारी की भयानक मौत हो गई है, और मैं नहीं चाहता कि अब जब वह चली गई है, तो आप यह सोचें कि मैंने उसके साथ अनुचित व्यवहार किया। अगर यह चोरी का कोई सामान्य मामला होता, तो मैं रोसन्ना को भी उतना ही माफ़ कर देता जितना कि घर के किसी अन्य नौकर को। सुधार गृह की महिलाओं के बारे में हमारा अनुभव यह है कि जब उनकी सेवा की परीक्षा ली जाती है - और जब उनके साथ दयालुता और विवेकपूर्ण व्यवहार किया जाता है - तो वे अधिकतर मामलों में ईमानदारी से पश्चाताप करती हैं, और उनके साथ किए गए प्रयासों की वास्तव में योग्य होती हैं। लेकिन यह कोई सामान्य मामला नहीं था। यह चोरी का एक आम मामला था। मेरे विचार में, यह एक सोची-समझी साजिश थी, जिसमें हीरे का मालिक मुख्य साजिशकर्ता था। इस

विचार को ध्यान में रखते हुए, रोसन्ना के संबंध में मेरे मन में सबसे पहला सवाल यह आया: क्या मिस वेरेंडर (आपकी क्षमा के लिए) हम सबको यह सोचने पर मजबूर कर देंगी कि मूनस्टोन बस खो गया है? या वह एक कदम आगे बढ़कर हमें यह विश्वास दिला देंगी कि मूनस्टोन चोरी हो गया है? बाद की स्थिति में, रोसन्ना स्पीयरमैन - एक चोर जैसी शख्सियत के साथ - उनके हाथ में थी; वह व्यक्ति जो आपको और मुझे झूठे सुरागों पर गुमराह कर सकती थी।

क्या यह संभव था (मैंने खुद से पूछा) कि वह मिस राहेल और रोसन्ना के खिलाफ अपने मामले को इससे भी अधिक भयावह तरीके से पेश कर सकता था? यह संभव था, जैसा कि आप अब देखेंगे।

“मृत महिला पर शक करने का मेरे पास एक और कारण था,” उन्होंने कहा, “जो मुझे कहीं अधिक मजबूत प्रतीत होता है। हीरे के लिए निजी तौर पर धन जुटाने में मिस वेरिंदर की मदद कौन कर सकता था? रोसन्ना स्पीयरमैन। मिस वेरिंदर जैसी कोई भी युवती इतने जोखिम भरे मामले को अकेले नहीं संभाल सकती थी। उन्हें किसी बिचौलिए की ज़रूरत थी, और मैं फिर से पूछता हूँ, रोसन्ना स्पीयरमैन से बेहतर कौन हो सकता था? आपकी दिवंगत नौकरानी अपने पेशे में उस समय सबसे आगे थी जब वह चोर थी। मेरी जानकारी के अनुसार, उसके लंदन के उन गिने-चुने लोगों में से एक से संबंध थे (जो साहूकारी के धंधे में थे) जो बिना कोई अटपटे सवाल पूछे या अटपटी शर्तें रखे, मूनस्टोन जैसे कीमती रत्न पर बड़ी रकम उधार दे सकते थे। इस बात को ध्यान में रखें, महोदया; और अब मैं आपको दिखाता हूँ कि रोसन्ना के कार्यों और उनसे निकाले जा सकने वाले स्पष्ट निष्कर्षों से मेरे संदेह कैसे सही साबित हुए हैं।”

इसके बाद उन्होंने रोसन्ना की पूरी कार्यवाही की समीक्षा की। आप भी उन कार्यवाही से उतने ही परिचित हैं जितना मैं; और आप समझ सकते हैं कि उनकी रिपोर्ट के इस हिस्से ने किस प्रकार मूनस्टोन के गायब होने में संलिप्त होने का दोष उस बेचारी मृत लड़की की स्मृति पर स्पष्ट रूप से मढ़ दिया। यहाँ तक कि मेरी मालकिन भी उनकी बातों से भयभीत हो गईं। जब उन्होंने अपनी बात समाप्त कर ली तो उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। सार्जेंट को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा कि उन्हें उत्तर दिया गया या नहीं। वे (ईश्वर उन्हें ले जाए!) हमेशा की तरह दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़ते रहे।

“मैंने अपनी समझ के अनुसार पूरा मामला बता दिया है,” उन्होंने कहा, “अब मुझे बस आपको यह बताना है कि मैं आगे क्या करने वाला हूँ। मुझे इस जाँच को सफलतापूर्वक समाप्त करने के दो तरीके नज़र आते हैं। इनमें से एक तरीका मुझे निश्चित लगता है।

दूसरा, मैं मानता हूँ, एक साहसिक प्रयोग है, और कुछ नहीं। आप निर्णय लेंगी। क्या हम पहले निश्चित तरीके को अपनाएँ?”
मेरी प्रेमिका ने उसे संकेत दिया कि वह अपना रास्ता खुद चुने और अपने लिए निर्णय स्वयं ले।
"धन्यवाद," सार्जेंट ने कहा। "हम निश्चितता से शुरू करेंगे, जैसा कि आपने कृपा करके मुझे सौंपा है। चाहे मिस वेरेंडर फ्रिज़िंगहॉल में रहें या यहाँ लौट आएं, मैं दोनों ही मामलों में उनकी सभी गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखूंगा - वे किन लोगों से मिलती हैं, वे किन घुड़सवारी और सैर पर जाती हैं, और वे कौन से पत्र लिखती और प्राप्त करती हैं।"
"अब आगे क्या?" मेरी मालकिन ने पूछा।
सार्जेंट ने उत्तर दिया, "मैं अब आपकी महोदया से यह निवेदन करूंगा कि मुझे रोसन्ना स्पीयरमैन के स्थान पर एक नौकरानी के रूप में घर में एक ऐसी महिला को नियुक्त करने की अनुमति दी जाए, जो इस प्रकार की निजी पूछताछों से परिचित हो, और जिसकी गोपनीयता का मैं उत्तर दे सकता हूं।"
"अब आगे क्या?" मेरी मालकिन ने दोहराया।
“अगला कदम,” सार्जेंट ने आगे कहा, “और अंत में, मैं अपने एक साथी अधिकारी को लंदन के उस साहूकार से बात करने के लिए भेजना चाहता हूँ, जिसका ज़िक्र मैंने अभी किया था और जो रोज़ाना स्पीयरमैन से पहले परिचित था—और जिसका नाम और पता, जैसा कि आप विश्वास कर सकती हैं, रोज़ाना ने मिस वेरिंदर को बता दिया है। मैं यह नहीं मानता कि मेरे द्वारा सुझाए गए इस तरीके में पैसा और समय लगेगा। लेकिन नतीजा निश्चित है। हम मूनस्टोन के चारों ओर एक रेखा खींचेंगे और उसे तब तक करीब लाते जाएंगे जब तक कि वह मिस वेरिंदर के पास न पहुँच जाए, यह मानते हुए कि वह उसे अपने पास रखने का फैसला करती है। अगर उसके कर्ज़ का बोझ बढ़ जाता है और वह उसे कहीं और भेजने का फैसला करती है, तो हमारा आदमी तैयार रहेगा और हम लंदन पहुँचते ही मूनस्टोन से मिलेंगे।”
अपनी ही बेटी के बारे में इस तरह के प्रस्ताव की बात सुनकर मेरी मालकिन को इतना दुख हुआ कि वह पहली बार गुस्से में बोलीं।
उन्होंने कहा, "आपका प्रस्ताव हर तरह से अस्वीकृत माना जाए। और जांच को समाप्त करने के अपने दूसरे तरीके पर आगे बढ़ें।"

सार्जेंट ने हमेशा की तरह सहज भाव से कहा, "मेरा दूसरा तरीका वही साहसिक प्रयोग करना है जिसका मैंने जिक्र किया है। मुझे लगता है कि मैंने मिस वेरिंदर के स्वभाव का काफी हद तक सही आकलन किया है। मेरे अनुमान के अनुसार, वह एक बड़ा धोखा देने में पूरी तरह सक्षम हैं। लेकिन उनका स्वभाव बहुत उग्र और उतावला है, और उन्हें छल करने की आदत भी नहीं है, इसलिए वे छोटी-छोटी बातों में पाखंडी बनकर हर उकसावे में खुद को संयमित नहीं रख सकतीं। इस मामले में, उनके भाव बार-बार उनके नियंत्रण से बाहर हो गए हैं, ठीक उसी समय जब उन्हें छुपाना उनके हित में था। उनके चरित्र की इसी विशेषता का फायदा उठाकर मैं अब कार्रवाई करने का प्रस्ताव रखता हूँ। मैं उन्हें अचानक एक बड़ा झटका देना चाहता हूँ, ऐसी परिस्थितियों में जो उन्हें अंदर तक झकझोर दें। सीधे शब्दों में कहूँ तो, मैं मिस वेरिंदर को बिना किसी चेतावनी के, रोसन्ना की मृत्यु के बारे में बताना चाहता हूँ—इस उम्मीद में कि उनकी अंतरात्मा उन्हें सच्चाई बताने के लिए प्रेरित करेगी। क्या आपकी महोदया यह विकल्प स्वीकार करती हैं?"

मेरी प्रेमिका ने मुझे अचंभित कर दिया, जिसे शब्दों में व्यक्त करना मेरे लिए असंभव था। उसने तुरंत ही उसे उत्तर दिया:

"हा करता हु।"

सार्जेंट ने कहा, "घोड़े वाली गाड़ी तैयार है। आपको सुप्रभात।"

मेरी पत्नी ने अपना हाथ उठाया और उसे दरवाजे पर ही रोक दिया।

"जैसा कि आपने सुझाव दिया है, मेरी बेटी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचेगी," उसने कहा। "लेकिन एक माँ होने के नाते, मुझे उसे स्वयं परखने का अधिकार है। आप चाहें तो यहीं रह सकते हैं; और मैं फ्रिज़िंगहॉल चली जाऊंगी।"

अपने जीवन में पहली बार, महान कफ एक साधारण व्यक्ति की तरह आश्चर्य से अवाक खड़े रहे।

मेरी मालकिन ने घंटी बजाई और अपने वाटरप्रूफ कपड़े मंगवाए। अभी भी मूसलाधार बारिश हो रही थी; और जैसा कि आप जानते हैं, बंद गाड़ी मिस राहेल को लेकर फ्रिज़िंगहॉल जा चुकी थी। मैंने उन्हें खराब मौसम का सामना न करने के लिए समझाने की कोशिश की। बिलकुल बेकार! मैंने उनके साथ जाने और छाता पकड़ने की अनुमति मांगी। उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। घोड़े वाली गाड़ी, उसके रखवाले के साथ, आ गई। उन्होंने हॉल में सार्जेंट कफ से कहा, "आप दो बातों पर भरोसा कर सकते हैं। मैं मिस वेरेंडर पर वह प्रयोग उतनी ही हिम्मत से करूंगी जितनी हिम्मत से आप खुद

कर सकते हैं। और मैं आपको इसका नतीजा, या तो व्यक्तिगत रूप से या पत्र द्वारा, आज रात लंदन के लिए आखिरी ट्रेन छूटने से पहले बता दूंगी।"
इतना कहकर वह गाड़ी में बैठ गई और खुद लगाम संभालकर फ्रिज़िंगहॉल की ओर चल पड़ी।

अध्याय XXII

मेरी प्रेमिका के चले जाने के बाद, मुझे सार्जेंट कफ के बारे में सोचने का समय मिला। मैंने उसे हॉल के एक आरामदायक कोने में बैठे हुए, अपनी मेमोरेंडम बुक देखते हुए और होठों के कोनों को बुरी तरह सिकोड़ते हुए पाया।
"क्या आप मामले के नोट्स बना रहे हैं?" मैंने पूछा।
"नहीं," सार्जेंट ने कहा। "मैं यह देख रहा हूँ कि मेरा अगला पेशेवर काम क्या होगा।"
"ओह!" मैंने कहा। "तो तुम्हें लगता है कि यहाँ सब कुछ खत्म हो गया है?"
सार्जेंट कफ ने उत्तर दिया, "मुझे लगता है कि लेडी वेरेंडर इंग्लैंड की सबसे बुद्धिमान महिलाओं में से एक हैं। मुझे यह भी लगता है कि हीरे की तुलना में गुलाब देखना कहीं अधिक सुंदर होता है। माली कहाँ है, श्री बेटरएज?"
मूनस्टोन के मामले में उससे एक शब्द भी निकलवाना असंभव था। उसने अपनी ही जांच में सारी रुचि खो दी थी; और वह माली को ढूंढने में लगा रहा। एक घंटे बाद, मैंने उन्हें कंज़र्वेटरी में तीखी बहस करते सुना, और विवाद की जड़ में एक बार फिर जंगली गुलाब का पौधा था।
इस बीच, मेरा काम यह पता लगाना था कि क्या श्री फ्रैंकलिन दोपहर की ट्रेन से हमें छोड़ने के अपने इरादे पर अडिग हैं। मेरी पत्नी के कमरे में हुई बैठक और उसके नतीजों की जानकारी मिलने के बाद, उन्होंने तुरंत फ्रिज़िंगहॉल से खबर सुनने का इंतज़ार करने का फैसला किया। उनकी योजनाओं में यह स्वाभाविक बदलाव—जो आम लोगों के मामले में किसी खास बात का संकेत नहीं देता—श्री फ्रैंकलिन के मामले में एक अप्रिय परिणाम लेकर आया। इससे वे बेचैन हो गए, उनके पास काफी खाली समय था, और इस तरह उनके चरित्र के सारे बाहरी पहलू एक के बाद एक, जैसे थैले से चूहे निकलते हैं, सामने आ गए।
कभी इतालवी-अंग्रेज़, कभी जर्मन-अंग्रेज़, और कभी फ्रेंच-अंग्रेज़, वह घर के सभी बैठक-कक्षों में आता-जाता रहता था, उसके पास मिस राहेल के व्यवहार के अलावा बात करने को कुछ नहीं होता था; और मेरे सिवा उससे बात करने वाला कोई नहीं था। मैंने उसे (उदाहरण के लिए) पुस्तकालय में आधुनिक इटली के नक्शे के नीचे बैठे हुए

पाया, और उसे अपनी परेशानियों से निपटने का कोई और तरीका नहीं सूझता था, सिवाय उनके बारे में बात करने के। "बेटरएज, मेरी कई नेक आकांक्षाएँ हैं; लेकिन अब मैं उनका क्या करूँ? मुझमें सुप्त गुण भरे हुए हैं, काश राहेल ने उन्हें बाहर लाने में मेरी मदद की होती!" वह अपने उपेक्षित गुणों का इतना सजीव वर्णन करता था, और जब वर्णन पूरा हो जाता था तो उस पर इतना विलाप करता था कि मुझे समझ नहीं आता था कि उसे कैसे सांत्वना दूँ, तभी अचानक मुझे ख्याल आया कि यहाँ रॉबिन्सन क्रूसो की कुछ रचनाएँ उपयोगी साबित हो सकती हैं। मैं लड़खड़ाते हुए अपने कमरे में गया, और उस अमर पुस्तक को लेकर वापस आया। पुस्तकालय में कोई नहीं था! आधुनिक इटली का नक्शा मुझे घूर रहा था; और मैं आधुनिक इटली के नक्शे को घूर रहा था।

मैंने ड्राइंग रूम में जाकर देखा। वहाँ फर्श पर उसका रूमाल पड़ा था, जो इस बात का सबूत था कि वह कुछ देर के लिए अंदर आया था। और वहाँ खाली कमरा इस बात का सबूत था कि वह फिर से बाहर चला गया था।

मैंने भोजन कक्ष में झाँका और पाया कि सैमुअल एक बिस्कुट और शेरी का गिलास लिए चुपचाप खाली हवा का जायज़ा ले रहा था। एक मिनट पहले ही श्री फ्रैंकलिन ने थोड़ी सी हल्की-फुल्की जलपान की माँग करते हुए ज़ोर-ज़ोर से घंटी बजाई थी। सैमुअल द्वारा जल्दबाजी में उसे लाते ही, श्री फ्रैंकलिन नीचे की घंटी के पूरी तरह बजने से पहले ही गायब हो गए थे।

मैंने सुबह के कमरे में जाकर देखा, और आखिरकार वह मिल ही गया। वह खिड़की पर बैठा था, शीशे पर जमी नमी में अपनी उंगली से चित्रलिपि बना रहा था।

“आपकी शेरी आपका इंतज़ार कर रही है, महोदय,” मैंने उनसे कहा। ऐसा लग रहा था मानो मैं कमरे की किसी दीवार से बात कर रहा हूँ; वे अपने ही विचारों की अथाह गहराई में डूबे हुए थे, बाहर निकलने की कोई गुंजाइश नहीं थी। “बेटरएज, आप राहेल के व्यवहार को कैसे समझाते हैं?” मुझे बस यही जवाब मिला। मेरे पास इसका कोई पुख्ता जवाब नहीं था, इसलिए मैंने रॉबिन्सन क्रूसो किताब निकाली, जिसमें मुझे पूरा यकीन है कि अगर हमने ठीक से खोजबीन की होती, तो शायद कोई न कोई स्पष्टीकरण मिल जाता। श्री फ्रैंकलिन ने रॉबिन्सन क्रूसो किताब बंद कर दी और वहीं जर्मन-अंग्रेज़ी में बड़बड़ाने लगे। “क्यों न इसकी जाँच की जाए?” उन्होंने कहा, मानो मैंने व्यक्तिगत रूप से इसकी जाँच करने पर आपत्ति जताई हो। "बेटरएज, तुम अपना धैर्य क्यों खो रहे हो, जबकि सच्चाई तक पहुँचने के लिए धैर्य ही सबसे ज़रूरी है? मुझे

बीच में मत टोको। राहेल का व्यवहार पूरी तरह से समझ में आता है, अगर तुम उसे न्यायोचित समझो और पहले वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण, फिर व्यक्तिपरक दृष्टिकोण और अंत में वस्तुनिष्ठ-व्यक्तिपरक दृष्टिकोण अपनाओ। हम क्या जानते हैं? हम जानते हैं कि पिछले गुरुवार की सुबह मूनस्टोन के खो जाने से वह मानसिक रूप से बहुत उत्तेजित हो गई थी, जिससे वह अभी तक उबर नहीं पाई है। क्या तुम अब तक वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण को नकारना चाहते हो? ठीक है, तो मुझे बीच में मत टोको। अब, मानसिक रूप से उत्तेजित होने की स्थिति में, हम उससे यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि वह अपने आस-पास के लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करे जैसा वह सामान्य रूप से करती? इस तरह से, भीतर से बाहर की ओर तर्क करते हुए, हम कहाँ पहुँचते हैं? हम व्यक्तिपरक दृष्टिकोण पर पहुँचते हैं। मैं तुम्हें व्यक्तिपरक दृष्टिकोण का खंडन करने की चुनौती देता हूँ। ठीक है, तो आगे क्या? हे भगवान! वस्तुनिष्ठ-व्यक्तिपरक व्याख्या तो निश्चित रूप से आगे आती है! राहेल, सही मायने में, रेचल, लेकिन कोई और। क्या मुझे किसी और के द्वारा किए गए क्रूर व्यवहार से कोई आपत्ति है? तुम तो हद से ज़्यादा तर्कहीन हो, बेटरएज; लेकिन तुम मुझ पर इसका आरोप नहीं लगा सकते। तो फिर इसका अंत कैसे होता है? तुम्हारे इस घिनौने अंग्रेज़ी संकीर्णता और पूर्वाग्रह के बावजूद, इसका अंत मेरे पूरी तरह से खुश और आरामदायक होने में होता है। शेरी कहाँ है?

उस समय मेरा दिमाग इस कदर खराब हो चुका था कि मुझे खुद भी यकीन नहीं था कि ये मेरा अपना दिमाग है या मिस्टर फ्रैंकलिन का। इस दयनीय हालत में मैंने तीन काम किए, जो मुझे लगता है कि मैंने जानबूझकर किए। मैंने मिस्टर फ्रैंकलिन के लिए शेरी लाई; मैं अपने कमरे में चला गया; और मैंने अपने जीवन में अब तक पी गई सबसे सुकून देने वाली तंबाकू की पाइप से खुद को तसल्ली दी।

लेकिन यह मत सोचिए कि मिस्टर फ्रैंकलिन से मेरा पीछा इतनी आसानी से छूट गया था। सुबह के कमरे से निकलकर हॉल में आते हुए, वह फिर दफ्तर की ओर बढ़े, मेरी पाइप की गंध सूंघी और तुरंत उन्हें याद आ गया कि उन्होंने मिस राहेल के लिए सिगरेट पीना छोड़ दिया था। पलक झपकते ही वह सिगार का डिब्बा लेकर मुझ पर टूट पड़े और अपने साफ-सुथरे, मजाकिया, अविश्वासी, फ्रांसीसी अंदाज में उस चिरस्थायी विषय पर जमकर बोलने लगे। "मुझे एक सिगरेट दो, बेटरएज। क्या यह संभव है कि कोई व्यक्ति मेरे जितना लंबे समय तक सिगरेट पीता रहे और उसे यह पता न चले कि उसकी सिगार की पेटी में महिलाओं के साथ व्यवहार करने की पूरी

विधि छिपी हुई है? ध्यान से सुनो, मैं इसे दो शब्दों में साबित कर देता हूँ। तुम एक सिगार चुनते हो, उसे पीते हो, और वह तुम्हें निराश करती है। तुम क्या करते हो? तुम उसे फेंक देते हो और दूसरी सिगार लेते हो। अब इसका प्रयोग देखो! तुम एक महिला चुनते हो, उसे आजमाते हो, और वह तुम्हारा दिल तोड़ देती है। मूर्ख! अपनी सिगार की पेटी से सबक लो। उसे फेंक दो, और दूसरी आजमाओ!"

मैंने इस पर अपना सिर हिलाया। मैं कह सकता हूँ कि यह बहुत ही चतुराई भरा विचार था, लेकिन मेरा अपना अनुभव इसके बिल्कुल विपरीत था। मैंने कहा, "दिवंगत श्रीमती बेटरएज के समय में, श्रीमान फ्रैंकलिन, मुझे अक्सर आपकी इस पद्धति को आजमाने का मन करता था। लेकिन कानून कहता है कि एक बार सिगार चुनने के बाद उसे पीना अनिवार्य है।" मैंने आँख मारते हुए यह बात कही। श्रीमान फ्रैंकलिन ज़ोर से हँस पड़े—और हम दोनों तब तक हँसते रहे जब तक कि उनके चरित्र का एक और नया पहलू सामने नहीं आ गया। मेरे और मेरे युवा मालिक के बीच कुछ ऐसा ही चलता रहा; और इस तरह (जब सार्जेंट और माली गुलाबों को लेकर झगड़ रहे थे) हम दोनों ने फ्रिज़िंगहॉल से खबर आने से पहले का समय बिताया।

घोड़े वाली गाड़ी मेरे अनुमान से पूरे आधे घंटे पहले लौट आई। मेरी पत्नी ने फिलहाल अपनी बहन के घर पर ही रहने का फैसला किया था। घोड़े की देखभाल करने वाला अपनी प्रेमिका के दो पत्र लेकर आया; एक श्री फ्रैंकलिन के नाम और दूसरा मेरे नाम।

मैंने श्री फ्रैंकलिन को पुस्तकालय में उनका पत्र भेजा था—जहां भटकते हुए वे दूसरी बार शरण लेने आए थे। मैंने अपना पत्र अपने कमरे में पढ़ा। पत्र खोलते ही एक चेक निकला, जिससे मुझे (पत्र की सामग्री समझने से पहले ही) पता चला कि मूनस्टोन मामले की जांच से सार्जेंट कफ की बर्खास्तगी अब तय हो चुकी है।

मैंने कंज़र्वेटरी में संदेश भेजा कि मैं सार्जेंट से सीधे बात करना चाहता हूँ। वह प्रकट हुए, उनका दिमाग माली और जंगली गुलाब के बारे में ही सोच रहा था, और उन्होंने कहा कि श्री बेगबी की हठधर्मिता के बराबर कोई आज तक नहीं हुआ है, और न ही कभी होगा। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे इस तरह की तुच्छ बातों को हमारी बातचीत से हटा दें और एक गंभीर मामले पर पूरा ध्यान दें। इस पर उन्होंने मेरी ओर से लिखे पत्र पर ध्यान दिया। "आह!" उन्होंने थके हुए स्वर में कहा, "आपने महारानी का संदेश सुना है। क्या इसमें मेरा कोई हाथ है, श्री बेटरएज?"

"सार्जेंट, आप स्वयं ही निर्णय लें।" इसके बाद मैंने उन्हें पत्र पढ़कर सुनाया (पूरी जोर और विवेक के साथ), निम्नलिखित शब्दों में:

"मेरे प्रिय गैब्रियल, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि आप सार्जेंट कफ को सूचित करें कि मैंने उनसे किया वादा पूरा कर दिया है; और रोज़ाना स्पीयरमैन के मामले में इसका यह परिणाम निकला है। मिस वेरेंडर ने स्पष्ट रूप से कहा है कि जब से वह अभागी महिला मेरे घर आई है, तब से उन्होंने रोज़ाना से अकेले में एक शब्द भी नहीं कहा है। जिस रात हीरा खोया था, उस रात उनकी मुलाकात संयोगवश भी नहीं हुई थी; और गुरुवार की सुबह जब घर में पहली बार अलार्म बजा था, तब से लेकर आज शनिवार दोपहर तक, जब मिस वेरेंडर हमें छोड़कर चली गईं, उनके बीच किसी भी प्रकार का कोई संवाद नहीं हुआ। मेरी बेटी को अचानक और स्पष्ट शब्दों में रोज़ाना स्पीयरमैन की आत्महत्या के बारे में बताने के बाद—यह परिणाम निकला है।"

उस बिंदु पर पहुँचकर, मैंने ऊपर देखा और सार्जेंट कफ से पूछा कि अब तक उन्हें पत्र के बारे में क्या लगता है?

"मैं आपको तभी नाराज करूंगा जब मैं अपनी राय व्यक्त करूंगा," सार्जेंट ने उत्तर दिया। "चलिए, श्रीमान बेटरएज," उसने अत्यंत झुंझलाहट भरे लहजे में कहा, "चलिए।"

जब मुझे याद आया कि इस आदमी ने हमारे माली की हठधर्मिता की शिकायत करने की हिम्मत की थी, तो मेरी ज़बान अपनी मालकिन के शब्दों के अलावा कुछ और कहने के लिए उतड़पने लगी। लेकिन इस बार, मेरा ईसाई धर्म दृढ़ रहा। मैंने महारानी के पत्र को पढ़ना जारी रखा:

"अधिकारी द्वारा उचित समझे गए तरीके से मिस वेरेंडर से अपील करने के बाद, मैंने उनसे उस तरीके से बात की जिससे मुझे लगा कि वे सबसे अधिक प्रभावित होंगी। दो अलग-अलग मौकों पर, मेरी बेटी के मेरे घर से जाने से पहले, मैंने उसे निजी तौर पर चेतावनी दी थी कि वह खुद को सबसे असहनीय और अपमानजनक संदेह के दायरे में ला रही है। अब मैंने उसे स्पष्ट शब्दों में बता दिया है कि मेरी आशंकाएं सच साबित हुई हैं।"

"इस सवाल का उनका जवाब, उनके अपने गंभीर कथन के अनुसार, शब्दों में जितना स्पष्ट हो सकता है, उतना ही स्पष्ट है। पहली बात तो यह है कि उनका किसी भी जीवित प्राणी से कोई निजी ऋणी नहीं है। दूसरी बात यह है कि हीरा अब उनके पास नहीं है, और बुधवार रात को जब उन्होंने इसे अपनी अलमारी में रखा था, तब से यह कभी भी उनके कब्जे में नहीं रहा है।"

"मेरी बेटी ने मुझ पर जो भरोसा किया है, वह इससे आगे नहीं बढ़ता। जब मैं उससे हीरे के गायब होने के बारे में पूछती हूँ, तो वह हठपूर्वक चुप रहती है। जब मैं उससे मेरे

लिए बोलने की गुहार लगाती हूँ, तो वह आँसुओं के साथ इनकार कर देती है। 'वह दिन आएगा जब आप जान जाएँगी कि मैं संदेह किए जाने की परवाह क्यों नहीं करती और आपसे भी चुप क्यों रहती हूँ। मैंने अपनी माँ को मुझ पर दया दिलाने के लिए बहुत कुछ किया है - ऐसा कुछ नहीं किया जिससे मेरी माँ को मुझ पर शर्म आए।' ये मेरी बेटी के अपने शब्द हैं।"

"अधिकारी और मेरे बीच जो कुछ भी हुआ है, उसके बाद मुझे लगता है - भले ही वह अजनबी हो - कि उसे और आपको भी मिस वेरिंदर की कही बातों से अवगत कराया जाना चाहिए। उसे मेरा पत्र पढ़कर सुनाइए, और फिर उसके हाथों में वह चेक सौंप दीजिए जो मैं संलग्न कर रहा हूँ। उसकी सेवाओं पर आगे कोई दावा न करते हुए, मुझे बस इतना कहना है कि मैं उसकी ईमानदारी और बुद्धिमत्ता से पूरी तरह आश्वस्त हूँ; लेकिन मुझे पहले से कहीं अधिक दृढ़ विश्वास है कि इस मामले में परिस्थितियों ने उसे बुरी तरह गुमराह किया है।"

पत्र यहीं समाप्त हो गया। चेक प्रस्तुत करने से पहले, मैंने सार्जेंट कफ से पूछा कि क्या उन्हें कुछ कहना है।

"मिस्टर बेटरएज, किसी मामले से निपट लेने के बाद उस पर टिप्पणी करना मेरा कर्तव्य नहीं है," उन्होंने उत्तर दिया।

मैंने चेक मेज के उस पार उसकी ओर उछाल दिया। मैंने गुस्से से कहा, "क्या आप महारानी के पत्र के उस हिस्से पर विश्वास करते हैं?"

सार्जेंट ने चेक को देखा और महारानी की उदारता को स्वीकार करते हुए अपनी उदास भौहें ऊपर उठा लीं।

उन्होंने कहा, "मेरे समय के मूल्य का यह इतना उदार आकलन है कि मैं इसके बदले कुछ न कुछ देना अपना कर्तव्य समझता हूँ। श्री बेटरएज, जब भी मुझे इसकी याद आएगी, मैं इस चेक की राशि को ध्यान में रखूंगा।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" मैंने पूछा।

सार्जेंट ने कहा, "महामहिम ने फिलहाल मामले को बड़ी चतुराई से संभाल लिया है। लेकिन यह पारिवारिक घोटाला ऐसा है जो अप्रत्याशित समय पर फिर से फूट पड़ता है। महोदय, मूनस्टोन का मामला कुछ ही महीनों में सुलझने वाला है और हमें और भी जासूसी के काम करने पड़ेंगे।"

अगर उन शब्दों का कोई अर्थ था, और अगर उनके बोलने का तरीका भी कोई अर्थ रखता था—तो बात यह थी। मेरी प्रेमिका के पत्र ने, उनके मन में, यह साबित कर दिया

था कि मिस राहेल इतनी कठोर हो चुकी थीं कि उन पर की गई सबसे ज़ोरदार अपील का भी विरोध कर सकती थीं, और उन्होंने अपनी माँ को (हे भगवान, किन परिस्थितियों में!) घिनौने झूठों की एक श्रृंखला से धोखा दिया था। मेरी जगह पर कोई और सार्जेंट को क्या जवाब देता, यह मैं नहीं जानती। मैंने उनके कहे का जवाब इन सीधे-सादे शब्दों में दिया:

"सार्जेंट कफ, मैं आपकी आखिरी टिप्पणी को मेरी पत्नी और उनकी बेटी का अपमान मानता हूँ!"

"श्री बेटरएज, इसे अपने लिए एक चेतावनी समझें, और आप सही दिशा के करीब पहुंच जाएंगे।"

मैं गुस्से से आग बबूला था, लेकिन जिस बेहिसाब आत्मविश्वास के साथ उसने मुझे वह जवाब दिया, उससे मेरे होंठ थम गए।

मैंने खुद को संभालने के लिए खिड़की के पास जाकर देखा। बारिश रुक चुकी थी; और तभी मैंने आंगन में माली श्री बेगबी को देखा, जो सार्जेंट कफ के साथ जंगली गुलाब के विवाद को जारी रखने के लिए बाहर इंतजार कर रहे थे।

श्री बेगबी ने मुझे देखते ही कहा, "सार्जेंट को मेरा सलाम। अगर वे थाने तक पैदल जाना चाहें, तो मैं उनके साथ चलने को तैयार हूँ।"

मेरे पीछे खड़े सार्जेंट ने चिल्लाकर कहा, "क्या! क्या तुम अब तक आश्वस्त नहीं हुए हो?"

"मुझे पूरा यकीन है कि शैतान थोड़ा सा सच है!" श्री बेगबी ने उत्तर दिया।

"तो मैं थाने तक पैदल ही जाऊंगा!" सार्जेंट ने कहा।

"तो मैं आपसे द्वार पर मिलूंगा!" श्री बेगबी कहते हैं।

जैसा कि आप जानते हैं, मैं पहले से ही बहुत गुस्से में था—लेकिन इस तरह की रुकावट के सामने किसी का गुस्सा कैसे टिक सकता था? सार्जेंट कफ ने मुझमें आए बदलाव को देखा और सही समय पर एक शब्द कहकर मुझे प्रोत्साहित किया।

"आइए! आइए!" उन्होंने कहा, "क्यों न मैं इस मामले पर आपके विचार को उसी तरह स्वीकार करूँ जैसे आप इसे स्वीकार करती हैं? क्यों न मैं कहूँ कि परिस्थितियों ने मुझे बुरी तरह गुमराह कर दिया है?"

किसी भी बात को उसकी लेडीशिप के नज़रिए से स्वीकार करना एक ऐसा विशेषाधिकार था जिसका आनंद लेना चाहिए था—भले ही यह विशेषाधिकार मुझे सार्जेंट कफ ने दिया था। मैं धीरे-धीरे अपने सामान्य स्तर पर लौट आया। मिस राहेल के

बारे में मेरी या मेरी राय के अलावा किसी भी अन्य राय को मैं घोर तिरस्कार की दृष्टि से देखता था। एकमात्र चीज़ जो मैं नहीं कर सका, वह थी मूनस्टोन के विषय से दूर रहना! मुझे पता है कि मेरी अच्छी समझ ने मुझे चेतावनी दी होगी कि इस मामले को यहीं छोड़ दूं—लेकिन, खैर! वर्तमान पीढ़ी को अलग करने वाले गुण मेरे समय में नहीं बने थे। सार्जेंट कफ ने मुझे सीधे दिल पर चोट पहुंचाई थी, और यद्यपि मैं उसे तिरस्कार से देखता था, फिर भी मेरे दिल में दर्द हो रहा था। अंत में, मैंने जानबूझकर उसे वापस उसकी लेडीशिप के पत्र के विषय पर ला दिया। "मैं स्वयं पूरी तरह संतुष्ट हूं," मैंने कहा। "पर छोड़ो ये सब! बोलो, मानो मैं अब भी अपनी बात मनवाने को तैयार हूँ। तुम्हें लगता है कि मिस राहेल की बातों पर विश्वास नहीं किया जा सकता; और तुम कहते हो कि हम मूनस्टोन के बारे में फिर सुनेंगे। अपने मत का समर्थन करो, सार्जेंट," मैंने बेपरवाही से कहा। "अपने मत का समर्थन करो।"

नाराज होने के बजाय, सार्जेंट कफ ने मेरा हाथ पकड़ लिया और तब तक हिलाते रहे जब तक मेरी उंगलियों में फिर से दर्द नहीं होने लगा।

“मैं ईश्वर की कसम खाकर कहता हूँ,” वह अजनबी अधिकारी गंभीरता से बोला, “श्रीमान बेटरएज, अगर मुझे आपके साथ काम करने का मौका मिले, तो मैं कल ही घरेलू नौकरानी बन जाऊँगा! आपको बच्चे की तरह भोला कहना, महोदय, बच्चों की ऐसी तारीफ़ करने जैसा है जिसके दस में से नौ बच्चे लायक नहीं होते। बस! बस! हम फिर बहस शुरू नहीं करेंगे। आप मुझसे इससे कहीं ज़्यादा आसान शब्दों में बात कर लेंगे। मैं महारानी या मिस वेरेंडर के बारे में एक शब्द भी नहीं कहूँगा—मैं बस एक बार, और आपके लिए, भविष्यवाणी कर रहा हूँ। मैंने आपको पहले ही चेतावनी दे दी है कि आपने मूनस्टोन का काम अभी पूरा नहीं किया है। ठीक है। अब विदाई के समय, मैं आपको तीन ऐसी बातें बताऊँगा जो भविष्य में घटित होंगी, और मुझे विश्वास है कि वे आपका ध्यान अपनी ओर खींच लेंगी, चाहे आपको पसंद हो या न हो।”

"आगे बढ़ो!" मैंने पूरी निडरता और हमेशा की तरह बेफिक्री से कहा।

सार्जेंट ने कहा, "सबसे पहले, आपको योलैंड्स की ओर से कुछ खबर मिलेगी - जब डाकिया अगले सोमवार को कॉब्स होल में रोसन्ना का पत्र पहुंचाएगा।"

अगर उसने मुझ पर ठंडे पानी की बाल्टी भी फेंक दी होती, तो मुझे शक है कि मुझे उन शब्दों से ज़्यादा बुरा लगता। मिस राहेल के अपनी बेगुनाही के दावे ने रोज़ाना के सारे कामों को—नया नाइटगाउन बनाना, गंदा नाइटगाउन छुपाना, और बाकी सब कुछ—

पूरी तरह से बेमानी बना दिया था। और यह बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं थी, जब तक कि सार्जेंट कफ ने एक पल में मेरे दिमाग में यह बात बिठा नहीं दी!
"दूसरी बात," सार्जेंट ने आगे कहा, "आपको उन तीनों भारतीयों के बारे में फिर से सुनने को मिलेगा। अगर मिस राहेल आस-पास रहती हैं, तो आपको उनके बारे में आस-पास के इलाकों में सुनने को मिलेगा। अगर मिस राहेल लंदन जाती हैं, तो आपको उनके बारे में लंदन में सुनने को मिलेगा।"
तीनों बाज़ीगरों में मेरी सारी दिलचस्पी खत्म हो चुकी थी, और मुझे अपनी प्रेमिका की बेगुनाही का पूरा यकीन हो गया था, इसलिए मैंने इस दूसरी भविष्यवाणी को आसानी से मान लिया। मैंने कहा, "तीन में से दो बातें तो हो ही गईं। अब तीसरी की बारी!"
सार्जेंट कफ ने कहा, "तीसरा और आखिरी, आपको लंदन के उस साहूकार के बारे में जल्द ही पता चल जाएगा, जिसका जिक्र मैंने पहले ही दो बार कर दिया है। मुझे अपनी जेब से पैसे दीजिए, मैं उसका नाम और पता लिख लूंगा—ताकि अगर वह घटना सच में घटित होती है तो कोई गलती न हो।"
उन्होंने तदनुसार एक खाली पन्ने पर लिखा—"श्री सेप्टिमस लुकर, मिडलसेक्स-प्लेस, लैम्बेथ, लंदन।"
"ये रहे," उन्होंने पते की ओर इशारा करते हुए कहा, "मूनस्टोन के विषय पर अंतिम शब्द, जिसके बारे में मैं अभी आपको परेशान कर रहा हूँ। समय बताएगा कि मैं सही हूँ या गलत। इस बीच, महोदय, मैं आपके प्रति सच्ची व्यक्तिगत पसंद रखता हूँ, जो मुझे लगता है कि हम दोनों के लिए सम्मान की बात है। यदि मेरी पेशेवर सेवानिवृत्ति से पहले हमारी मुलाकात नहीं हो पाती है, तो मुझे आशा है कि आप लंदन के पास एक छोटे से घर में मुझसे मिलने आएंगे, जिस पर मेरी नज़र है। श्री बेटरएज, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे बगीचे में घास के रास्ते होंगे। और जहाँ तक सफेद मॉस रोज़ की बात है----"
"अगर आप उसे पहले डॉग-रोज़ पर नहीं लगाते हैं, तो सफेद मॉस रोज़ उग जाएगा," खिड़की पर एक आवाज ने कहा।
हम दोनों मुड़े। वहाँ वही चिरस्थायी श्री बेगबी द्वार पर खड़े थे, विवाद को लेकर इतने बेताब कि अब और इंतज़ार नहीं कर सकते थे। सार्जेंट ने मेरा हाथ पकड़ा और गुस्से में आँगन की ओर दौड़ पड़े। "जब वह वापस आए तो उससे मॉस रोज़ के बारे में पूछना, और देखना कि क्या मैंने उसे कुछ कहने का मौका दिया है!" बड़े कफ ने खिड़की से

मुझे पुकारते हुए कहा। "सज्जन, आप दोनों!" मैंने उन्हें फिर से संयमित करते हुए उत्तर दिया, जैसा कि मैंने पहले भी किया था।
"मॉस रोज़ के मामले में दोनों पक्षों की अपनी-अपनी राय है!" मैं तो मानो (जैसा कि आयरिश लोग कहते हैं) किसी मील के पत्थर को देखकर सीटी बजा रहा था। वे दोनों साथ चले गए, गुलाबों की लड़ाई लड़ते हुए, बिना किसी से दया मांगे या दया दिखाए। आखिरी बार जब मैंने उन्हें देखा, तो मिस्टर बेगबी अपना हठी सिर हिला रहे थे, और सार्जेंट कफ ने उन्हें किसी कैदी की तरह बांह से पकड़ रखा था। खैर! खैर! मैं मानता हूँ कि मुझे सार्जेंट पसंद आने लगा था—हालाँकि मैं उससे हमेशा नफरत करता था।
अगर आप बता सकें तो मेरी उस मनस्थिति को समझाइए। अब आप जल्द ही मुझसे और मेरे विरोधाभासों से छुटकारा पा लेंगे। जब मैं श्री फ्रैंकलिन के जाने की सूचना दे दूंगा, तो शनिवार की घटनाओं का वृत्तांत अंततः समाप्त हो जाएगा। और जब मैं अगले सप्ताह में घटी कुछ विचित्र घटनाओं का वर्णन कर दूंगा, तो मैं कहानी का अपना हिस्सा पूरा कर लूंगा और कलम उस व्यक्ति को सौंप दूंगा जिसे मेरा काम आगे बढ़ाने के लिए नियुक्त किया गया है। अगर आप इस वृत्तांत को पढ़ते-पढ़ते उतने ही थक गए हैं जितना मैं इसे लिखते-लिखते—हे भगवान, कुछ पन्नों के बाद हम दोनों को कितना आनंद आएगा!

अध्याय XXIII

मैंने घोड़े वाली गाड़ी तैयार रखी थी, इस उम्मीद में कि शायद मिस्टर फ्रैंकलिन उस रात हमें ट्रेन से छोड़कर चले जाएंगे। सामान के दिखने और फिर खुद मिस्टर फ्रैंकलिन के नीचे आने से मुझे साफ पता चल गया कि उन्होंने अपने जीवन में पहली बार किसी फैसले पर अडिग रहने का निश्चय किया था।
"तो आपने सचमुच अपना मन बना लिया है, महोदय?" मैंने हॉल में मिलते हुए कहा। "क्यों न एक-दो दिन और इंतज़ार करें और मिस राहेल को एक और मौका दें?"
अब विदाई का समय आ गया था, ऐसा लग रहा था मानो श्री फ्रैंकलिन का दिखावटीपन पूरी तरह से उतर चुका था। मुझे शब्दों में जवाब देने के बजाय, उन्होंने वह पत्र मेरे हाथ में थमा दिया जो उनकी पत्नी ने उन्हें संबोधित किया था। उस पत्र का अधिकांश भाग वही था जो मुझे पहले मिले पत्र में लिखा जा चुका था। लेकिन अंत में मिस राहेल के बारे में कुछ लिखा था, जो श्री फ्रैंकलिन के दृढ़ संकल्प का कारण बताता है, भले ही इससे और कुछ स्पष्ट न हो।

“मुझे यकीन है कि आप हैरान होंगे,” (उनकी लेडीशिप ने लिखा), “कि मैंने अपनी ही बेटी को मुझे पूरी तरह से अंधेरे में रखने दिया। बीस हजार पाउंड का एक हीरा खो गया है—और मुझे यह अनुमान लगाना पड़ रहा है कि इसके गायब होने का रहस्य रैचल के लिए कोई रहस्य नहीं है, और किसी ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा, जिन्हें मैं बिल्कुल नहीं जानती, उस पर चुप रहने का कोई ऐसा दायित्व डाल दिया गया है जिसका मैं अंदाजा भी नहीं लगा सकती। क्या यह कल्पना करना संभव है कि मैं खुद को इस तरह से अपमानित होने दूं? रैचल की वर्तमान स्थिति में यह बिल्कुल संभव है। वह इतनी मानसिक रूप से परेशान है कि उसे देखकर दया आती है। जब तक समय उसे शांत नहीं कर देता, मैं मूनस्टोन के विषय पर फिर से बात करने की हिम्मत नहीं कर सकती। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए, मैंने पुलिस अधिकारी को बर्खास्त करने में जरा भी संकोच नहीं किया। जो रहस्य हमें उलझा रहा है, वही उसे भी उलझा रहा है। यह ऐसा मामला नहीं है जिसमें कोई अजनबी हमारी मदद कर सके। वह मेरे कष्टों को और बढ़ा रहा है; और अगर रैचल उसका नाम भी सुन ले तो वह पागल हो जाती है।”

भविष्य के लिए मेरी योजनाएँ लगभग तय हैं। मेरा वर्तमान विचार राहेल को लंदन ले जाने का है—कुछ हद तक उसके मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए, और कुछ हद तक सर्वोत्तम चिकित्सा सलाह लेने के लिए। क्या आप शहर में हमसे मिल सकते हैं? मेरे प्रिय फ्रैंकलिन, आपको भी मेरी तरह धैर्य रखना चाहिए और मेरी तरह ही उचित समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए। खोए हुए गहने की खोज में आपने जो बहुमूल्य सहायता की, वह राहेल की वर्तमान दयनीय मानसिक स्थिति में एक अक्षम्य अपराध है। इस मामले में आँख बंद करके काम करके, आपने अनजाने में उसके रहस्य के उजागर होने का खतरा पैदा करके उसकी चिंता को और बढ़ा दिया है। आपके द्वारा उन परिणामों के लिए आपको जिम्मेदार ठहराने की इस कुटिलता को मैं क्षमा नहीं कर सकता, जिनकी न तो आप और न ही मैं कल्पना कर सकते थे। उससे तर्क नहीं किया जा सकता—उस पर केवल दया की जा सकती है। मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है, लेकिन फिलहाल आप और राहेल अलग ही रहें तो बेहतर है। मैं आपको बस यही सलाह दे सकता हूँ कि उसे समय दें।

मैंने पत्र लौटा दिया, मुझे श्री फ्रैंकलिन के लिए बहुत खेद हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि वे मेरी प्रेमिका से कितना प्यार करते थे; और मैंने देखा कि उनकी माँ की बातों ने उन्हें बहुत आहत किया था। मैंने उनसे बस इतना ही कहा, "आप कहावत तो जानते ही हैं,

महोदय। जब हालात सबसे बुरे होते हैं, तो वे ज़रूर सुधर जाते हैं। श्री फ्रैंकलिन, हालात इससे ज़्यादा बुरे नहीं हो सकते, जितने कि अभी हैं।"
श्री फ्रैंकलिन ने अपनी चाची का पत्र मोड़कर रख दिया, ऐसा प्रतीत नहीं हुआ कि मेरी उस टिप्पणी से उन्हें कोई खास तसल्ली मिली हो, जिसे मैंने उन्हें संबोधित करने का साहस किया था।
"जब मैं उस भयानक हीरे के साथ लंदन से यहाँ आया था," उसने कहा, "मुझे नहीं लगता कि इंग्लैंड में इससे ज़्यादा खुशहाल कोई घर रहा होगा। अब इस घर को देखो! बिखरा हुआ, टूटा हुआ—यहाँ की हवा ही रहस्य और संदेह से भरी हुई है! क्या तुम्हें वो सुबह याद है जब हम शिवरिंग सैंड में मेरे चाचा हर्नकैसल और उनके जन्मदिन के तोहफे के बारे में बात कर रहे थे? मूनस्टोन ने कर्नल बेटरएज के बदले को ऐसे तरीके से पूरा किया है जिसके बारे में कर्नल ने खुद कभी सोचा भी नहीं था!"
इतना कहकर उसने मुझसे हाथ मिलाया और टट्टू वाली गाड़ी की ओर चला गया।
मैं उनके पीछे सीढ़ियों से नीचे उतरा। उन्हें उस पुराने घर को इस तरह छोड़ते देखना बहुत दुखद था, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के सबसे सुखद वर्ष बिताए थे। पेनेलोप (घर में हुई सारी घटनाओं से दुखी) रोते हुए उन्हें अलविदा कहने आई। श्री फ्रैंकलिन ने उसे चूमा। मैंने हाथ हिलाकर मानो कहा, "आपका हार्दिक स्वागत है, महोदय।" कुछ अन्य नौकरानियाँ कोने से झाँकती हुई दिखाई दीं। वह उन पुरुषों में से एक थे जिन्हें सभी महिलाएँ पसंद करती थीं। अंतिम क्षण में, मैंने घोड़े की गाड़ी रोकी और उनसे विनती की कि वे हमें पत्र लिखकर सूचित करें। ऐसा लगा जैसे उन्होंने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया - वे इधर-उधर देख रहे थे, मानो पुराने घर और उसके आसपास के इलाके को अलविदा कह रहे हों। "हमें बताइए, महोदय, आप कहाँ जा रहे हैं!" मैंने गाड़ी को पकड़ते हुए कहा और इस तरह उनकी भविष्य की योजनाओं के बारे में जानने की कोशिश की। श्री फ्रैंकलिन ने अचानक अपनी टोपी आँखों पर खींच ली। "जा रहे हैं?" मेरे शब्दों को दोहराते हुए उसने कहा, "मैं शैतान के पास जा रहा हूँ!" यह शब्द सुनते ही टट्टू चौंक गया, मानो उसे इस शब्द से ईसाई धर्म के अनुसार घोर भय लग गया हो। "ईश्वर आपका भला करे, महोदय, आप जहाँ चाहें जाएँ!" इससे पहले कि वह मेरी नज़रों और कानों से ओझल हो जाए, मेरे पास बस इतना ही कहने का समय था। एक प्यारा और मिलनसार सज्जन! अपनी तमाम कमियों और मूर्खताओं के बावजूद, एक प्यारा और मिलनसार सज्जन! जब वह मेरी पत्नी के घर से गया, तो अपने पीछे एक गहरा खालीपन छोड़ गया।

उस शनिवार की रात, जब गर्मी की लंबी शाम ढलने लगी, तो माहौल काफी नीरस और उदास था।

मैंने अपने पाइप और रॉबिन्सन क्रूसो को पकड़े रहकर अपना मनोबल गिरने से बचाया। महिलाओं (पेनेलोप को छोड़कर) ने रोसन्ना की आत्महत्या की बातें करके समय बिताया। वे सभी हठपूर्वक इस बात पर अड़ी थीं कि उस बेचारी लड़की ने मूनस्टोन चुराया था और पकड़े जाने के डर से उसने आत्महत्या कर ली थी। मेरी बेटी, ज़ाहिर है, मन ही मन अपनी कही बात पर अड़ी रही। आत्महत्या के असली कारण के बारे में उसकी धारणा, अजीब बात है, ठीक उसी जगह विफल हो गई जहाँ मेरी बेटी का अपनी बेगुनाही का दावा भी विफल हो गया। इससे रोसन्ना की फ्रिज़िंगहॉल की गुप्त यात्रा और नाइटगाउन के मामले में रोसन्ना की हरकतें पूरी तरह से अनसुलझी रह गईं। पेनेलोप को यह बताने का कोई फायदा नहीं था; मेरी बात का उस पर उतना ही असर हुआ जितना वाटरप्रूफ कोट पर बारिश की बूँद का। सच तो यह है कि मेरी बेटी को तर्क से ऊपर रहने की मेरी क्षमता विरासत में मिली है - और इस मामले में वह अपने पिता से बहुत आगे निकल चुकी है।

अगले दिन (रविवार को), श्री एबलव्हाइट के यहाँ रखी हुई बंद गाड़ी खाली वापस आ गई। कोचवान मेरे लिए एक संदेश और मेरी पत्नी की नौकरानी और पेनेलोप के लिए लिखित निर्देश लेकर आया था।

मुझे संदेश मिला कि मेरी मालकिन ने सोमवार को मिस राहेल को अपने लंदन स्थित घर ले जाने का निश्चय किया है। लिखित निर्देशों में दोनों नौकरानियों को आवश्यक कपड़ों के बारे में बताया गया था और उन्हें निर्धारित समय पर शहर में अपनी मालकिनों से मिलने का निर्देश दिया गया था। बाकी नौकरानियों को भी उनके पीछे-पीछे आना था। मेरी मालकिन ने पाया कि घर में जो कुछ हुआ था उसके बाद मिस राहेल वापस घर आने को बिल्कुल तैयार नहीं थीं, इसलिए उन्होंने फ्रिज़िंगहॉल से सीधे लंदन जाने का फैसला किया था। मुझे अगले आदेश तक गाँव में ही रहना था, ताकि मैं घर के अंदर और बाहर की देखभाल कर सकूँ। मेरे साथ छोड़े गए नौकरों को भोजन-भत्ता दिया जाना था।

इन सब बातों से मुझे श्री फ्रैंकलिन की वह बात याद आ गई कि हमारा परिवार बिखरा हुआ और असंबद्ध है, और स्वाभाविक रूप से मेरा ध्यान श्री फ्रैंकलिन की ओर गया। जितना अधिक मैं उनके बारे में सोचता, उतना ही मुझे उनके भविष्य के कार्यों को लेकर बेचैनी महसूस होती। अंततः मैंने रविवार की डाक से उनके पिता के नौकर श्री

जेफको (जिन्हें मैं पहले से जानता था) को पत्र लिखकर उनसे यह निवेदन किया कि वे मुझे बता दें कि लंदन पहुँचने पर श्री फ्रैंकलिन ने क्या करने का निर्णय लिया है।
रविवार की शाम, अगर संभव हो तो, शनिवार की शाम से भी ज़्यादा नीरस थी। हमने विश्राम का दिन समाप्त किया, जैसे इन द्वीपों में लाखों लोग सप्ताह में एक बार नियमित रूप से करते हैं—अर्थात्, हम सभी सोने के समय का इंतज़ार कर रहे थे, और अपनी कुर्सियों पर ही सो गए।
सोमवार का घर के बाकी सदस्यों पर क्या असर पड़ा, यह तो मुझे नहीं पता। लेकिन सोमवार ने मुझे बुरी तरह झकझोर दिया। सार्जेंट कफ की भविष्यवाणियों में से पहली भविष्यवाणी - यानी कि मुझे योलैंड्स से खबर मिलेगी - उसी दिन सच हो गई।
मैंने पेनेलोप और अपनी नौकरानी को सामान के साथ लंदन जाने के लिए रेलगाड़ी में विदा कर दिया था और मैं अपने घर के आसपास टहल रहा था, तभी मैंने अपना नाम पुकारा जाते सुना। मुड़कर देखा तो मेरे सामने मछुआरे की बेटी, लंगड़ी लूसी खड़ी थी। अपने लंगड़े पैर और दुबलेपन (मेरी राय में यह दुबलापन किसी भी स्त्री के लिए एक बड़ी कमी है) के बावजूद, उस लड़की में कुछ खूबियाँ थीं जो पुरुषों को अच्छी लगती थीं। उसका सांवला, तेज और समझदार चेहरा, सुरीली और साफ आवाज, और सुंदर भूरे बाल उसकी खूबियों में शामिल थे। उसकी बदकिस्मती में बैसाखी भी शामिल थी। और उसका गुस्सैल स्वभाव उसकी कमियों में सबसे ऊपर था।
मैंने कहा, "तो मेरी प्यारी, तुम मुझसे क्या चाहती हो?"
"फ्रैंकलिन ब्लेक नाम का वो आदमी कहाँ है?" लड़की ने अपनी बैसाखी पर टिकते हुए, मुझे गुस्से भरी नज़रों से घूरते हुए कहा।
मैंने उत्तर दिया, "किसी भी सज्जन के बारे में इस तरह से बात करना सम्मानजनक नहीं है। यदि आप मेरी पत्नी के भतीजे के बारे में पूछताछ करना चाहते हैं, तो कृपया उनका नाम श्री फ्रैंकलिन ब्लेक बताएं।"
वह लंगड़ाते हुए एक कदम मेरे करीब आई और ऐसा लग रहा था मानो वह मुझे जिंदा ही खा जाएगी। "श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक?" उसने मेरे पीछे दोहराया। "हत्यारा फ्रैंकलिन ब्लेक उसके लिए ज़्यादा उपयुक्त नाम होगा।"
स्वर्गीय श्रीमती बेटरएज के साथ किया गया मेरा अभ्यास यहाँ काम आया। जब भी कोई महिला आपको गुस्सा दिलाने की कोशिश करे, तो पासा पलट दें और उसे ही गुस्सा दिला दें। वे आम तौर पर आपके बचाव में किए गए हर प्रयास के लिए तैयार रहती हैं, सिवाय इसके। एक शब्द सौ शब्दों के बराबर असर करता है; और एक शब्द

ने लंगड़ी लूसी के साथ कमाल कर दिया। मैंने उसकी आँखों में प्यार से देखा और कहा —"छी!"
लड़की का गुस्सा भड़क उठा। वह अपने सही पैर पर खड़ी हुई, अपनी बैसाखी उठाई और उसे ज़मीन पर तीन बार ज़ोर से पटका। "वह हत्यारा है! वह हत्यारा है! वह हत्यारा है! उसी ने रोज़ाना स्पीयरमैन की जान ली है!" उसने पूरी ताकत से चिल्लाकर जवाब दिया। हमारे पास ही परिसर में काम कर रहे एक-दो लोगों ने ऊपर देखा—लम्पिंग लूसी को देखा—उससे क्या उम्मीद करनी है, यह समझ गए—और फिर नज़रें हटा लीं।
"क्या वही रोसन्ना स्पीयरमैन की मौत का कारण है?" मैंने दोहराया। "लूसी, तुम ऐसा क्यों कह रही हो?"
"तुम्हें क्या फर्क पड़ता है? किसी भी पुरुष को क्या फर्क पड़ता है? ओह! अगर उसने पुरुषों के बारे में मेरी तरह सोचा होता, तो शायद वह अब जीवित होती!"
मैंने कहा, "वह हमेशा मेरे बारे में अच्छा सोचती थी, बेचारी; और मैंने भी अपनी पूरी क्षमता से उसके प्रति अच्छा व्यवहार करने की कोशिश की।"
मैंने उन शब्दों को यथासंभव सांत्वना भरे लहजे में कहा। सच तो यह है कि मैं अपनी चतुराई भरी बातों से उस लड़की को और परेशान नहीं करना चाहता था। मैंने पहले तो केवल उसके गुस्से को ही देखा था। अब मैंने उसकी दयनीयता को भी महसूस किया —और दयनीयता अक्सर साधारण जीवन में उद्दंडता का प्रतीक होती है, आप पाएंगे। मेरे जवाब ने लंगड़ाती लूसी को पिघला दिया। उसने अपना सिर नीचे झुकाया और उसे अपनी बैसाखी के ऊपर रख दिया।
"मैं उससे प्यार करती थी," लड़की ने धीरे से कहा। "उसने बहुत दुख भरी ज़िंदगी जी थी, मिस्टर बेटरएज—बुरे लोगों ने उसके साथ बुरा बर्ताव किया था और उसे गुमराह किया था—लेकिन इससे उसका मीठा स्वभाव ज़रा भी नहीं बदला था। वह एक फरिश्ता थी। वह मेरे साथ खुश रह सकती थी। मैंने सोचा था कि हम दोनों बहनें बनकर लंदन जाएँगी और खूब पैसा कमाएँगी। वह आदमी यहाँ आया और सब कुछ बर्बाद कर दिया। उसने उसे अपने वश में कर लिया। यह मत कहो कि उसका इरादा नहीं था और उसे पता भी नहीं था। उसे पता होना चाहिए था। उसे उस पर तरस खाना चाहिए था। 'मैं उसके बिना जी नहीं सकती—और, ओह, लूसी, वह मेरी तरफ देखता भी नहीं।' उसने यही कहा था। कितनी बेरहम, कितनी बेरहम। मैंने कहा, 'कोई भी आदमी इस तरह परेशान होने लायक नहीं है।' और उसने कहा, 'ऐसे आदमी होते हैं

जिनके लिए जान भी दी जा सकती है, लूसी, और वह उनमें से एक है।'" मैंने कुछ पैसे बचा लिए थे। मैंने माता-पिता से सब कुछ सुलझा लिया था। मैं उसे यहाँ के उस अपमान से दूर ले जाना चाहती थी जो वह झेल रही थी। हम लंदन में एक छोटा सा घर लेकर बहनों की तरह साथ रहते। जैसा कि आप जानते हैं, उसकी शिक्षा अच्छी थी और उसकी लिखावट भी अच्छी थी। वह सिलाई में बहुत कुशल थी। मेरी भी शिक्षा अच्छी है और मेरी लिखावट भी अच्छी है। मैं सिलाई में उतनी कुशल नहीं हूँ जितनी वह थी—लेकिन हो सकती थी। हम आराम से अपना जीवन यापन कर सकते थे। और, ओह! आज सुबह क्या हुआ? आज सुबह क्या हुआ? उसका पत्र आया और उसने मुझे बताया कि उसने अपने जीवन के बोझ से मुक्ति पा ली है। उसका पत्र आया और उसने मुझे हमेशा के लिए अलविदा कह दिया। "वह कहाँ है?" लड़की बैसाखी से सिर उठाकर रोते हुए बोली, और उसके आँसू फिर से फूट पड़े। "वह सज्जन कहाँ हैं जिनके बारे में मुझे सम्मान के साथ ही बात करनी चाहिए? हा हा, श्री बेटरएज, वह दिन दूर नहीं जब गरीब लोग अमीरों के खिलाफ विद्रोह करेंगे। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे इसकी शुरुआत उन्हीं से करें। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे इसकी शुरुआत उन्हीं से करें।"

यहाँ एक और आम नेक ईसाई लड़की थी, और यहाँ वही आम टूटन देखने को मिली, जो उसी आम ईसाई धर्म को हद से ज़्यादा आज़माने का नतीजा थी! पादरी खुद (हालाँकि मैं मानता हूँ कि यह कहना कुछ ज़्यादा ही होगा) उस लड़की को उसकी मौजूदा हालत में उपदेश नहीं दे सकते थे। मैंने बस इतना ही किया कि उसे मुद्दे पर ही रखा—इस उम्मीद में कि शायद कुछ सुनने लायक बात निकल आए।

मैंने पूछा, "आप श्री फ्रैंकलिन ब्लेक से क्या चाहते हैं?"

"मैं उसे देखना चाहता हूं।"

"क्या किसी खास बात के लिए?"

मुझे उसे देने के लिए एक पत्र मिला है।

"रोसन्ना स्पीयरमैन से?"

"हाँ।"

"क्या यह पत्र आपको आपके ही शब्दों में भेजा गया है?"

"हाँ।"

क्या अंधेरा छंटने वाला था? क्या वे सभी खोजें, जिन्हें करने के लिए मैं बेताब था, अपने आप मेरे सामने आ रही थीं? मुझे एक पल रुकना पड़ा। सार्जेंट कफ अपना संक्रमण

पीछे छोड़ चुके थे। कुछ निजी संकेत और निशानियाँ मुझे चेतावनी दे रही थीं कि जासूसी का जुनून फिर से जागने लगा है।
मैंने कहा, "आप मिस्टर फ्रैंकलिन को नहीं देख सकते।"
मुझे उससे मिलना ही होगा, और मैं उससे जरूर मिलूंगा।
वह कल रात लंदन गया था।
लंगड़ाती हुई लूसी ने मेरी आँखों में आँखें डालकर देखा और पाया कि मैं सच कह रहा हूँ। बिना कुछ और कहे, वह तुरंत कोब्स होल की ओर मुड़ गई।
"रुको!" मैंने कहा। "मुझे कल श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के बारे में खबर मिलने की उम्मीद है। मुझे अपना पत्र दे दो, मैं इसे डाक से उन तक पहुंचा दूंगा।"
लंगड़ाती हुई लूसी ने अपनी बैसाखी के सहारे खुद को संभाला और कंधे के ऊपर से मेरी तरफ देखा।
उसने कहा, "मुझे इसे अपने हाथों से उसके हाथों में देना है। और मुझे इसे किसी और तरीके से उसे नहीं देना है।"
"क्या मैं लिखकर उसे बता दूं कि आपने क्या कहा है?"
"उसे बता दो कि मैं उससे नफरत करता हूँ। और तुम उसे सच बता दोगे।"
"जी हां। लेकिन उस पत्र के बारे में क्या?"
"अगर उसे पत्र चाहिए, तो उसे वापस यहीं आना होगा और मुझसे लेना होगा।"
ये शब्द कहकर वो लंगड़ाते हुए कॉब्स होल की ओर चल पड़ी। जासूसी का बुखार मेरी सारी इज़्ज़त को वहीं चूर-चूर कर गया। मैं उसके पीछे गया और उससे बात करवाने की कोशिश की। सब व्यर्थ। मेरा बदनसीब ही था कि मैं एक पुरुष था—और लंगड़ाती लूसी को मुझे निराश करने में मज़ा आता था। दिन में बाद में, मैंने उसकी माँ से भी बात करने की कोशिश की। भली श्रीमती योलैंड बस रोती रहीं और डच बोतल से थोड़ी सी शराब पीने की सलाह दी। मुझे मछुआरा किनारे पर मिला। उसने कहा कि "काम खराब है" और अपना जाल ठीक करने लगा। न तो उसके पिता को और न ही उसकी माँ को मुझसे ज़्यादा कुछ पता था। अब बस एक ही रास्ता बचा था, शायद सुबह तक मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक को पत्र लिखने का मौका मिल जाए।
आप कल्पना कीजिए कि मंगलवार की सुबह मैं डाकिया का कितनी बेसब्री से इंतज़ार कर रहा था। वह मेरे लिए दो पत्र लेकर आया। एक पेनेलोप का था (जिसे पढ़ने का धैर्य मुझमें मुश्किल से ही था), जिसमें बताया गया था कि मेरी पत्नी और मिस राहेल लंदन में

सुरक्षित पहुँच गई हैं। दूसरा पत्र मिस्टर जेफको का था, जिसमें उन्होंने मुझे सूचित किया कि उनके मालिक का बेटा इंग्लैंड छोड़कर जा चुका है।

महानगर पहुँचते ही, ऐसा प्रतीत हुआ कि श्री फ्रैंकलिन सीधे अपने पिता के निवास पर चले गए थे। उनका आगमन एक असुविधाजनक समय पर हुआ। श्री ब्लेक, बड़े, सदन के कामकाज में पूरी तरह से व्यस्त थे और उस रात घर पर संसद के पसंदीदा खेल, जिसे वे "निजी विधेयक" कहते हैं, में अपना समय बिता रहे थे। श्री जेफको स्वयं श्री फ्रैंकलिन को उनके पिता के अध्ययन कक्ष में ले गए। "मेरे प्यारे फ्रैंकलिन! तुम मुझे इस तरह अचानक क्यों आ गए? क्या कुछ गड़बड़ है?" "हाँ; राहेल के साथ कुछ गड़बड़ है; मैं इसके बारे में बहुत परेशान हूँ।" "यह सुनकर दुख हुआ। लेकिन मैं अभी तुम्हारी बात नहीं सुन सकता।" "आप कब सुन सकते हैं?" "मेरे प्यारे बेटे! मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगा। मैं सत्र के अंत में सुन सकता हूँ, उससे पहले एक पल भी नहीं। शुभ रात्रि।" "धन्यवाद, महोदय। शुभ रात्रि।"

अध्ययन कक्ष के अंदर हुई बातचीत कुछ इस प्रकार थी, जैसा कि श्री जेफको ने मुझे बताया। अध्ययन कक्ष के बाहर हुई बातचीत और भी संक्षिप्त थी। "जेफको, पता कर लो कल सुबह ज्वारीय ट्रेन कितने बजे चलती है।" "छह बजकर चालीस मिनट पर, श्री फ्रैंकलिन।" "मुझे पाँच बजे बुला लेना।" "क्या आप विदेश जा रहे हैं, महोदय?" "जा रहा हूँ, जेफको, जहाँ भी रेलवे मुझे ले जाना चाहेगी।" "क्या मैं आपके पिताजी को बता दूँ, महोदय?" "जी हाँ; सत्र के अंत में उन्हें बता देना।"

अगली सुबह श्री फ्रैंकलिन विदेश यात्रा पर निकल पड़े। वे किस स्थान पर जा रहे थे, इसका अनुमान कोई भी (स्वयं वे स्वयं भी) नहीं लगा सकता था। हो सकता है कि हम उनके बारे में अगली खबर यूरोप, एशिया, अफ्रीका या अमेरिका में सुनें। श्री जेफको के अनुसार, दुनिया के चारों कोनों में उनके होने की संभावना लगभग बराबर थी।

इस खबर ने—लिम्पिंग लूसी और मिस्टर फ्रैंकलिन को मिलाने की मेरी सारी संभावनाओं को खत्म कर दिया—और खोज की राह पर मेरी आगे की सारी प्रगति रोक दी। पेनेलोप का यह विश्वास कि उसकी साथी नौकरानी ने मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक के लिए एकतरफा प्यार के कारण आत्महत्या कर ली थी, पुष्ट हो गया—और बस यही हुआ। यह कहना असंभव था कि रोसन्ना ने अपनी मृत्यु के बाद उन्हें देने के लिए जो पत्र छोड़ा था, उसमें वह स्वीकारोक्ति थी या नहीं, जिसके बारे में मिस्टर फ्रैंकलिन को शक था कि वह अपने जीवनकाल में उनसे करने की कोशिश कर रही थी। हो सकता है वह सिर्फ विदाई का शब्द हो, जिसमें उसकी पहुंच से बाहर के व्यक्ति के लिए उसके दुखी

प्रेम का रहस्य छिपा हो। या हो सकता है उसमें उन सभी अजीब घटनाओं का पूरा सच हो, जिनमें सार्जेंट कफ ने मूनस्टोन के खो जाने से लेकर शिवरिंग सैंड में अपनी जान देने तक उसका पता लगाया था। वह एक सीलबंद पत्र था जो लिम्पिंग लूसी के हाथ में रखा गया था, और वह मेरे लिए और उस लड़की के बारे में जानने वाले हर किसी के लिए, उसके माता-पिता सहित, एक सीलबंद पत्र ही बना रहा। हम सभी को शक था कि वह मृत महिला की विश्वासपात्र थी; हम सभी ने उससे सच उगलवाने की कोशिश की; हम सभी असफल रहे। नौकरों में से एक, और एक दूसरे, अब भी इस विश्वास पर अड़े हुए थे कि रोसन्ना ने हीरा चुराया था और उसे छिपा दिया था—और वे उन चट्टानों को टटोलते और छानबीन करते रहे जहाँ उसके होने का पता चला था, लेकिन व्यर्थ। ज्वार उतरता, फिर चढ़ता; गर्मी बीतती, और पतझड़ आ जाता। और दलदल, जिसने उसके शरीर को छिपा रखा था, उसके रहस्य को भी छिपा रखा था।

जैसा कि आप जानते हैं, मुझे मंगलवार की डाक से रविवार की सुबह श्री फ्रैंकलिन के इंग्लैंड से प्रस्थान करने और सोमवार दोपहर को मिस राहेल के साथ मेरी पत्नी के लंदन पहुंचने की खबर मिली थी। बुधवार आया, और कुछ भी खबर नहीं मिली। गुरुवार को पेनेलोप से दूसरी बार खबर मिली।

मेरी बेटी के पत्र से मुझे पता चला कि लंदन के एक बड़े डॉक्टर से उसकी युवती के बारे में सलाह ली गई थी, और उन्होंने यह कहकर एक गिनी कमा ली थी कि उसे मनोरंजन करना चाहिए। फूलों की प्रदर्शनी, ओपेरा, बॉल डांस—खुशियों का पूरा सिलसिला चल रहा था; और मिस राहेल ने अपनी माँ को आश्चर्यचकित करते हुए, इन सभी में बड़ी उत्सुकता से भाग लिया। मिस्टर गॉडफ्रे आए थे; जाहिर तौर पर अपनी चचेरी बहन के प्रति हमेशा की तरह स्नेहपूर्ण थे, भले ही जन्मदिन के अवसर पर उनका स्वागत अच्छा नहीं हुआ था। पेनेलोप को बहुत दुख हुआ, लेकिन उनका बहुत ही सौहार्दपूर्ण स्वागत हुआ था, और उन्होंने मौके पर ही मिस राहेल का नाम अपने एक लेडीज़ चैरिटी में जोड़ दिया था। मेरी मालकिन के बारे में खबर थी कि वह उदास थीं, और उन्होंने अपने वकील के साथ दो लंबी बैठकें की थीं। कुछ अटकलें भी लगाई गईं, जिनमें परिवार की एक गरीब रिश्तेदार—मिस क्लैक—का जिक्र किया गया था, जिनका मैंने जन्मदिन के भोज के अपने विवरण में किया है, कि वह मिस्टर गॉडफ्रे के बगल में बैठी थीं, और उन्हें शैंपेन का अच्छा शौक था। पेनेलोप यह देखकर हैरान रह गई कि मिस क्लैक ने अभी तक फोन नहीं किया था। वह हमेशा की तरह जल्द ही मेरी मालकिन के पीछे पड़ जाएगी—और इसी तरह, जैसे औरतें एक-दूसरे पर आरोप-

प्रत्यारोप लगाती रहती हैं, कागज़ पर भी और असल ज़िंदगी में भी। मैं मानती हूँ कि यह बात कहने लायक नहीं थी, लेकिन एक वजह है। मैंने सुना है कि मुझसे विदा लेने के बाद आपको मिस क्लैक के हवाले किया जा सकता है। ऐसे में, अगर वह आपकी इस विनम्र सेविका के बारे में कुछ भी कहे, तो कृपया उस पर विश्वास न करें।
शुक्रवार को कुछ खास नहीं हुआ—सिवाय इसके कि एक कुत्ते के कानों के पीछे दाने निकलने लगे। मैंने उसे बकथॉर्न सिरप की एक खुराक दी और अगले आदेश तक उसे शराब और सब्ज़ियों पर रखा। इस बात का ज़िक्र करने के लिए माफ़ कीजिएगा। यह कहीं न कहीं छूट गया। कृपया इसे नज़रअंदाज़ कर दीजिए। आपकी आधुनिक और परिष्कृत रुचि के विरुद्ध मेरी आपत्तियाँ अब लगभग समाप्त होने वाली हैं। वैसे भी, कुत्ता अच्छा प्राणी था और उसे अच्छे इलाज की ज़रूरत थी; वास्तव में थी भी।
शनिवार, सप्ताह का आखिरी दिन, मेरी कहानी का भी आखिरी दिन है।
आज सुबह डाक से मुझे लंदन का एक अखबार मिला, जो मेरे लिए एक आश्चर्य की बात थी। उस पर लिखे पते की लिखावट ने मुझे उलझन में डाल दिया। मैंने उसकी तुलना अपने पर्स में दर्ज साहूकार के नाम और पते से की और तुरंत पहचान लिया कि यह सार्जेंट कफ की लिखावट है।
इस खोज के बाद, मैंने उत्सुकता से अखबार पलटा और पाया कि पुलिस रिपोर्टों में से एक के चारों ओर स्याही का निशान बना हुआ है। यह लीजिए, आपकी सेवा में। इसे वैसे ही पढ़िए जैसे मैंने पढ़ा है, और आप सार्जेंट द्वारा मुझे दिन की खबरें भेजने में दिखाई गई विनम्रता और ध्यान का सही महत्व समझ पाएंगे।
लैम्बेथ--अदालत की कार्यवाही समाप्त होने से कुछ ही समय पहले, प्राचीन रत्नों, नक्काशी, उत्कीर्णन आदि के जाने-माने व्यापारी श्री सेप्टिमस लुकर ने मजिस्ट्रेट से सलाह मांगी। उन्होंने बताया कि दिनभर सड़कों पर घूमने वाले कुछ भारतीयों की हरकतों से उन्हें बार-बार परेशानी हुई थी। शिकायत में तीन लोगों की बात कही गई थी। पुलिस द्वारा भगाए जाने के बाद भी वे बार-बार लौट आए और भीख मांगने के बहाने घर में घुसने की कोशिश की। सामने से चेतावनी मिलने पर उन्हें घर के पीछे फिर से पकड़ लिया गया। शिकायत में बताई गई परेशानी के अलावा, श्री लुकर ने यह आशंका भी जताई कि कहीं चोरी की साजिश तो नहीं रची जा रही है। उनके संग्रह में कई अनमोल रत्न थे, जिनमें शास्त्रीय और प्राच्य दोनों प्रकार के रत्न शामिल थे। एक दिन पहले ही उन्हें हाथी दांत की नक्काशी में कुशल कारीगर (जैसा कि हमें पता चला, वह भारत का मूल निवासी था) को चोरी के प्रयास के संदेह में नौकरी से निकालना

पड़ा था। और उन्हें इस बात का ज़रा भी यकीन नहीं था कि यह आदमी और जिन गली-मोहल्ले के करतब दिखाने वालों की उन्होंने शिकायत की थी, वे आपस में मिले हुए न हों। हो सकता है उनका मकसद भीड़ इकट्ठा करना, गली में हंगामा करना और इस गड़बड़ी का फायदा उठाकर घर में घुसना हो। मजिस्ट्रेट के सामने श्री लूकर ने स्वीकार किया कि उनके पास लूटपाट की किसी भी कोशिश का कोई सबूत नहीं है। वे भारतीयों द्वारा मचाई गई परेशानी और व्यवधान के बारे में तो निश्चित रूप से बता सकते थे, लेकिन इसके अलावा किसी और बात पर नहीं। मजिस्ट्रेट ने कहा कि अगर यह परेशानी दोबारा होती है, तो याचिकाकर्ता भारतीयों को अदालत में बुला सकता है, जहाँ उनके साथ कानून के तहत आसानी से निपटा जा सकता है। श्री लूकर के पास मौजूद कीमती सामान के लिए, श्री लूकर को खुद ही उनकी सुरक्षा के लिए सर्वोत्तम उपाय करने चाहिए। उनके लिए बेहतर होगा कि वे पुलिस से संपर्क करें और उनके अनुभव के आधार पर अतिरिक्त सावधानियां बरतें। याचिकाकर्ता ने मजिस्ट्रेट को धन्यवाद दिया और चले गए।

ऐसा कहा जाता है कि एक ज्ञानी प्राचीन ने (मुझे याद नहीं कि किस अवसर पर) अपने साथी मनुष्यों को "अंत की ओर देखने" की सलाह दी थी। अपने इस लेख के अंत की ओर देखते हुए, और पिछले कुछ दिनों से यह सोचते हुए कि मैं इसे कैसे लिख पाऊँगा, मुझे लगता है कि तथ्यों का मेरा सीधा-सादा कथन अपने आप ही एक निष्कर्ष पर पहुँच रहा है, जो कि बिल्कुल उपयुक्त है। हम मूनस्टोन के इस मामले में एक चमत्कार से दूसरे चमत्कार की ओर बढ़ते रहे हैं; और यहाँ हम सबसे बड़े चमत्कार के साथ समाप्त करते हैं - अर्थात्, सार्जेंट कफ की तीन भविष्यवाणियों का उनके द्वारा किए जाने के एक सप्ताह से भी कम समय में पूरा होना।

सोमवार को योलैंड्स से खबर मिलने के बाद, मुझे लंदन से आई खबरों में भारतीयों और साहूकार के बारे में पता चला—मिस राहेल खुद भी उस समय लंदन में थीं, याद है ना? आप देखिए, मैं हर बात को सबसे बुरे रूप में देखता हूँ, भले ही वो मेरे अपने विचार के बिल्कुल विपरीत हो। अगर आप मेरा साथ छोड़ दें और आपके सामने मौजूद सबूतों के आधार पर सार्जेंट का पक्ष लें—अगर आपको एकमात्र तर्कसंगत स्पष्टीकरण यही लगता है कि मिस राहेल और मिस्टर लूकर का मिलन हुआ होगा और मूनस्टोन अब साहूकार के घर में गिरवी रखा होगा—तो मैं मानता हूँ कि इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए मैं आपको दोष नहीं दे सकता। अंधेरे में ही मैं आपको यहाँ तक लाया हूँ। अंधेरे में ही मैं आपको अपनी शुभकामनाओं के साथ विदा करता हूँ।

यह सवाल पूछा जा सकता है कि ऐसा करने के लिए मजबूर क्यों किया गया? जो लोग अब तक मेरे साथ रहे हैं, उन्हें भी उन उच्चतर ज्ञान के क्षेत्रों में क्यों न ले जाया जाए जिनमें मैं स्वयं विराजमान हूं?

इसके जवाब में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि मैं आदेशों का पालन कर रहा हूँ, और ये आदेश मुझे (मेरी समझ के अनुसार) सत्य के हित में दिए गए हैं। मुझे इस वृत्तांत में उस समय मुझे जो स्वयं पता था, उससे अधिक बताने की मनाही है। या, इसे और स्पष्ट शब्दों में कहें तो, मुझे अपने अनुभव की सीमाओं में ही रहना है, और आपको वह जानकारी नहीं देनी है जो अन्य लोगों ने मुझे बताई है—क्योंकि यह पर्याप्त कारण है कि आपको वह जानकारी उन अन्य लोगों से सीधे, प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करनी है। मूनस्टोन के इस मामले में योजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने की नहीं, बल्कि गवाहों को पेश करने की है। मैं कल्पना करता हूँ कि पचास वर्ष बाद परिवार का कोई सदस्य इन पृष्ठों को पढ़ेगा। हे भगवान! उसे कितना सम्मान महसूस होगा, जब उसे सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न करने के लिए कहा जाएगा, और हर तरह से एक न्यायाधीश की तरह व्यवहार किया जाएगा।

इस स्थान पर, हम विदा होते हैं—कम से कम अभी के लिए—एक लंबी यात्रा के बाद, आशा है कि दोनों ओर सौहार्दपूर्ण भावना के साथ। भारतीय हीरे का शैतानी नाच लंदन तक पहुँच गया है; और आपको मुझे कंट्री हाउस में छोड़कर लंदन जाना होगा। कृपया इस रचना की कमियों के लिए क्षमा करें—मेरे द्वारा अपने बारे में बहुत अधिक बोलने और आपके साथ कुछ अधिक ही घुलमिल जाने के लिए। मेरा कोई बुरा इरादा नहीं है; और मैं (अभी-अभी भोजन करने के बाद) आपके स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए आदरपूर्वक, महारानी की बीयर के एक बड़े गिलास में पीता हूँ। आशा है कि आपको मेरे इन पन्नों में वही मिलेगा जो रॉबिन्सन क्रूसो को रेगिस्तानी द्वीप पर अपने अनुभव में मिला था—अर्थात, "कुछ ऐसा जिससे आप स्वयं को सांत्वना दे सकें, और अच्छाई और बुराई के विवरण में, खाते के क्रेडिट पक्ष में रख सकें।"—अलविदा।

पहले सत्र की समाप्ति।

दूसरा पीरियड

सत्य की खोज (1848-1849)

कई वृत्तांतों में वर्णित घटनाएँ।

पहली कहानी

मिस क्लैक द्वारा योगदान; स्वर्गीय सर जॉन वेरेंडर की भतीजी

अध्याय 1

मैं अपने प्यारे माता-पिता (जो अब स्वर्ग में हैं) का ऋणी हूं, जिन्होंने मुझे बहुत कम उम्र में ही व्यवस्था और नियमितता की आदतें सिखाईं।

उस सुखद बीते समय में, मुझे सिखाया गया था कि दिन-रात अपने बालों को संवार कर रखना चाहिए, और सोने से पहले अपने सभी कपड़ों को एक ही क्रम में, एक ही कुर्सी पर, बिस्तर के नीचे एक ही जगह पर सावधानीपूर्वक तह करके रखना चाहिए। कपड़ों को तह करने से पहले मैं हमेशा अपनी छोटी डायरी में दिन भर की घटनाओं का ब्यौरा लिखती थी। कपड़ों को तह करने के बाद हमेशा शाम की प्रार्थना (सोते समय) दोहराई जाती थी। और शाम की प्रार्थना के बाद हमेशा बचपन की मीठी नींद आती थी।

बाद के जीवन में (अफ़सोस!) भजन की जगह दुख और कड़वे विचारों ने ले ली है; और मीठी नींद की जगह चिंता के अशांत तकिये पर मंडराती टूटी-फूटी नींद ने ले ली है। दूसरी ओर, मैंने अपने कपड़े तह करना और अपनी छोटी डायरी लिखना जारी रखा है। पहली आदत मुझे मेरे खुशहाल बचपन से जोड़ती है—पिताजी के बर्बाद होने से पहले का। दूसरी आदत—जो अब तक मुख्य रूप से आदम से विरासत में मिली हमारी पतित प्रकृति को अनुशासित करने में सहायक रही है—अप्रत्याशित रूप से मेरे साधारण हितों के लिए एक बिल्कुल अलग तरीके से महत्वपूर्ण साबित हुई है। इसने मुझे, एक धनी सदस्य की इच्छा पूरी करने में सक्षम बनाया है, जिस परिवार में मेरे दिवंगत चाचा ने विवाह किया था। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के काम आ पा रहा हूँ।

विवाह के कारण मैं अपने रिश्तेदारों से काफी समय से संपर्क में नहीं हूँ। जब हम एकांतप्रिय और गरीब होते हैं, तो अक्सर लोग हमें भूल जाते हैं। फिलहाल, खर्च कम करने के लिए, मैं ब्रिटनी के एक छोटे से कस्बे में रह रहा हूँ, जहाँ मेरे कुछ चुनिंदा गंभीर अंग्रेज़ मित्र रहते हैं, और मुझे एक प्रोटेस्टेंट पादरी और सस्ते बाज़ार का अमूल्य लाभ प्राप्त है।

इस एकांतवास में—हमारे चारों ओर फैले धर्मवाद के प्रचंड सागर के बीच एक शांत जगह—आखिरकार इंग्लैंड से एक पत्र मुझ तक पहुँचा है। श्री फ्रैंकलिन ब्लेक ने अचानक मेरे तुच्छ अस्तित्व को याद कर लिया है। मेरे धनी रिश्तेदार—काश मैं उन्हें आध्यात्मिक रूप से धनी रिश्तेदार भी कह पाता!—बिना किसी छिपाव के लिखते हैं कि उन्हें मुझसे कुछ चाहिए। उन्हें मूनस्टोन का घिनौना घोटाला फिर से कुरेदने का

मन कर रहा है: और मुझे लंदन में आंटी वेरेंडर के घर पर रहते हुए जो कुछ मैंने स्वयं देखा, उसका विवरण लिखकर उनकी मदद करनी है। मुझे धन का प्रस्ताव दिया गया है—धनी लोगों की तरह भावनाओं का अभाव लिए हुए। मुझे उन घावों को फिर से कुरेदना है जिन्हें समय ने मुश्किल से भरा है; मुझे सबसे तीव्र पीड़ादायक यादों को याद करना है—और यह सब करने के बाद, मुझे श्री ब्लेक के चेक के रूप में एक नए घाव से मुआवजा मिलेगा। मेरा स्वभाव कमजोर है। मुझे इसके लिए एक कठिन संघर्ष करना पड़ा, इससे पहले कि ईसाई विनम्रता ने पापी अहंकार पर विजय प्राप्त की और आत्म-त्याग ने कीमत चुकाई।

मेरी डायरी के बिना, मुझे संदेह है—कृपया इसे सबसे कठोर शब्दों में कहूँ!—कि क्या मैं ईमानदारी से अपनी कमाई कर पाती। मेरी डायरी के साथ, वह गरीब मजदूर (जो श्री ब्लेक को अपने अपमान के लिए माफ कर देती है) अपनी मजदूरी की हकदार है। जब मैं प्यारी आंटी वेरिंदर से मिलने गई थी, तब मुझसे कुछ भी नहीं छिपा। (मेरी शुरुआती शिक्षा के कारण) हर दिन जो कुछ हुआ, उसे मैंने दर्ज किया; और छोटी से छोटी बात भी यहाँ लिखी जाएगी। सत्य के प्रति मेरा पवित्र आदर (ईश्वर का शुक्र है) व्यक्तियों के प्रति मेरे सम्मान से कहीं अधिक है। श्री ब्लेक के लिए इन पन्नों में उस बात को दबाना आसान होगा जो मुख्य रूप से संबंधित व्यक्ति के लिए पर्याप्त रूप से प्रशंसात्मक साबित न हो। उन्होंने मेरा समय तो खरीद लिया है, लेकिन उनका धन भी मेरे विवेक को नहीं खरीद सकता।*

* टिप्पणी: फ्रैंकलिन ब्लेक द्वारा जोड़ा गया।--मिस क्लैक इस बात को लेकर पूरी तरह निश्चिंत हो सकती हैं। उनकी पांडुलिपि में, या मेरे पास से गुजरने वाली किसी भी अन्य पांडुलिपि में, कुछ भी जोड़ा, बदला या हटाया नहीं जाएगा। लेखकों की राय चाहे जो भी हो, लेखन शैली में चाहे जो भी विशिष्टताएँ हों, और शायद साहित्यिक दृष्टि से, मेरे द्वारा संकलित की जा रही कहानियों को विकृत करती हों, एक भी पंक्ति में, शुरू से अंत तक, कोई छेड़छाड़ नहीं की जाएगी। ये प्रामाणिक दस्तावेज़ के रूप में मुझे भेजे गए हैं - और मैं इन्हें प्रामाणिक दस्तावेज़ के रूप में ही सुरक्षित रखूंगा, उन गवाहों के प्रमाणों के साथ जो तथ्यों की पुष्टि कर सकते हैं। केवल इतना ही कहना बाकी है कि मिस क्लैक की कहानी में "मुख्य रूप से संबंधित व्यक्ति" इस समय न केवल मिस क्लैक की कलम की सबसे तीखी रचना को पढ़ने के लिए तैयार है, बल्कि मिस क्लैक के चरित्र को प्रदर्शित करने के साधन के रूप में इसके निर्विवाद मूल्य को भी स्वीकार करता है।

मेरी डायरी से मुझे पता चलता है कि मैं सोमवार, 3 जुलाई, 1848 को मोंटागु स्क्वायर में आंटी वेरिंदर के घर के पास से संयोगवश गुजर रहा था।
खिड़की के शटर खुले और पर्दे लगे देखकर मुझे लगा कि दरवाजा खटखटाकर पूछताछ करना शिष्टाचार का अच्छा संकेत होगा। दरवाजा खोलने वाले व्यक्ति ने बताया कि मेरी चाची और उनकी बेटी (मैं उन्हें अपनी चचेरी बहन नहीं कह सकती!) एक सप्ताह पहले गांव से आई हैं और लंदन में कुछ दिन रुकने का विचार कर रही हैं। मैंने तुरंत संदेश भेजा, उन्हें परेशान न करने की इच्छा जताई और केवल यह पूछा कि क्या मैं उनकी किसी तरह मदद कर सकती हूँ।
दरवाजा खोलने वाली महिला ने मेरी बात को बड़ी ही अभद्र चुप्पी से सुना और मुझे हॉल में खड़ा छोड़ दिया। वह बेटरएज नाम के एक बूढ़े, नास्तिक व्यक्ति की बेटी है—जिसे मेरी चाची के परिवार ने बहुत लंबे समय तक, बल्कि ज़रूरत से ज़्यादा लंबे समय तक बर्दाश्त किया है। मैं जवाब का इंतज़ार करने के लिए हॉल में बैठ गया—और, मेरे बैग में हमेशा कुछ पर्चे रहते थे, इसलिए मैंने एक ऐसा पर्चा चुना जो दरवाजा खोलने वाली महिला पर बिल्कुल सटीक बैठता था। हॉल गंदा था और कुर्सी सख्त थी; लेकिन बुराई के बदले भलाई करने की पवित्र भावना ने मुझे इन सब छोटी-मोटी बातों से ऊपर उठा दिया। वह पर्चा युवा महिलाओं को संबोधित परिधानों की एक श्रृंखला में से एक था, जिसमें पहनावे की पापमयता के बारे में बताया गया था। शैली में यह धार्मिक रूप से परिचित था। इसका शीर्षक था, "आपकी टोपी की पट्टियों पर एक बात।"
"मेरी पत्नी आपकी बहुत आभारी हैं और आपसे अनुरोध करती हैं कि आप कल दोपहर दो बजे भोजन के लिए आएं।"
मैंने उसके संदेश देने के तरीके और उसकी आँखों में दिख रही भयानक निर्भीकता को नज़रअंदाज़ कर दिया। मैंने उस युवती को धन्यवाद दिया और ईसाई भाव से पूछा, "क्या आप मुझे एक पर्चा देकर मेरी मदद करेंगी?"
उसने शीर्षक देखा। "क्या इसे किसी पुरुष ने लिखा है या स्त्री ने, महोदया? अगर इसे किसी स्त्री ने लिखा है, तो मैं इसे पढ़ना नहीं चाहूँगी। अगर इसे किसी पुरुष ने लिखा है, तो मैं उनसे निवेदन करती हूँ कि उन्हें इसके बारे में कुछ भी पता नहीं है।" उसने मुझे पर्चा वापस दिया और दरवाज़ा खोल दिया। हमें किसी न किसी तरह से अच्छाई का बीज बोना ही होगा। मैंने दरवाज़ा बंद होने तक इंतज़ार किया और पर्चा लेटरबॉक्स में डाल दिया। जब मैंने एक और पर्चा बाड़ के नीचे से डाला, तो मुझे दूसरों के प्रति भारी ज़िम्मेदारी से कुछ हद तक राहत महसूस हुई।

उस शाम हमारी मदर्स स्मॉल क्लोथ्स कन्वर्जन सोसाइटी की चयन समिति की बैठक थी। इस उत्कृष्ट दान संस्था का उद्देश्य—जैसा कि सभी गंभीर लोग जानते हैं—गिरवी रखे गए पिताओं की पतलूनों को छुड़ाना और उन्हें तुरंत बेटे के नाप के अनुसार छोटा करके, उन्हें वापस लेने से रोकना है। मैं उस समय चयन समिति का सदस्य था; और मैं यहाँ सोसाइटी का उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि मेरे प्रिय और प्रशंसनीय मित्र, श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट, हमारे इस नैतिक और भौतिक रूप से उपयोगी कार्य से जुड़े हुए थे। मुझे उम्मीद थी कि जिस सोमवार की शाम मैं यह लिख रहा हूँ, उस शाम मैं उनसे बोर्डरूम में मिलूँगा और मैंने उनसे मिलने पर उन्हें प्रिय आंटी वेरिंदर के लंदन आने की सूचना देने का प्रस्ताव रखा था। मुझे बहुत निराशा हुई कि वे नहीं आए। उनकी अनुपस्थिति पर आश्चर्य व्यक्त करने पर, समिति की मेरी सभी सहेलियों ने (उस रात हम पर काम का बहुत दबाव था) अपनी पतलून से नज़रें उठाकर हैरानी से पूछा कि क्या मुझे खबर नहीं मिली? मैंने अपनी अनभिज्ञता स्वीकार की, और तब मुझे पहली बार उस घटना के बारे में बताया गया जो इस वृत्तांत का आरंभिक बिंदु है। पिछले शुक्रवार को, समाज में बिल्कुल अलग-अलग पदों पर आसीन दो सज्जन एक ऐसे अत्याचार का शिकार हुए थे जिसने पूरे लंदन को स्तब्ध कर दिया था। उनमें से एक लैम्बेथ के श्री सेप्टिमस लुकर थे। दूसरे श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट थे।

वर्तमान में एकांत में जी रही मैं, अखबार में छपी उस घटना की खबर को अपनी कहानी में शामिल नहीं कर सकती। उस समय मुझे श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के जोशीले शब्दों में घटनाओं का वर्णन सुनने का अमूल्य अवसर भी नहीं मिला। मैं बस इतना ही कर सकती हूँ कि सोमवार की शाम को मुझे जो तथ्य बताए गए थे, उन्हें ही बताऊँ; उसी तरीके से, जैसे मुझे बचपन से कपड़े समेटने का तरीका सिखाया गया है। हर चीज़ करीने से रखी जाए, और हर चीज़ अपनी जगह पर हो। ये पंक्तियाँ एक गरीब, कमजोर औरत ने लिखी हैं। एक गरीब, कमजोर औरत से भला कौन इतनी बेरहमी से और उम्मीद करेगा?

तारीख—मेरे प्यारे माता-पिता की बदौलत, आज तक लिखी गई कोई भी डिक्शनरी तारीखों के बारे में मुझसे ज्यादा सटीक नहीं हो सकती—शुक्रवार, 30 जून, 1848 थी। उस यादगार दिन की शुरुआत में, हमारे प्रतिभाशाली श्री गॉडफ्रे संयोगवश लोम्बार्ड स्ट्रीट स्थित एक बैंक में चेक भुना रहे थे। मेरी डायरी में गलती से उस बैंक का नाम अंकित नहीं है, और सत्य के प्रति मेरी श्रद्धा मुझे इस तरह के मामले में अनुमान लगाने से रोकती है। सौभाग्य से, बैंक का नाम मायने नहीं रखता। मायने रखता है वह घटना

जो श्री गॉडफ्रे के काम निपटाने के दौरान घटी। बैंक के दरवाजे पर पहुँचते ही उनकी मुलाकात एक ऐसे सज्जन से हुई - जो उनके लिए बिलकुल अजनबी थे - जो संयोगवश ठीक उसी समय कार्यालय से निकल रहे थे जब वे खुद निकल रहे थे। दोनों के बीच कुछ क्षणों के लिए शिष्टाचार की होड़ मच गई कि बैंक के दरवाजे से पहले कौन निकलेगा। अजनबी ने श्री गॉडफ्रे को अपने से पहले निकलने पर जोर दिया; श्री गॉडफ्रे ने कुछ शिष्टाचारपूर्ण शब्द कहे; दोनों ने एक-दूसरे को नमस्कार किया और सड़क पर अलग हो गए।

नासमझ और सतही लोग कह सकते हैं, "यह तो एक छोटी-सी तुच्छ घटना है जिसे बेतुके ढंग से बयान किया गया है।" अरे मेरे नौजवान दोस्तों और साथी पापियों! अपनी तुच्छ सांसारिक बुद्धि का प्रयोग करने की धृष्टता मत करो। नैतिक रूप से स्वच्छ रहो। तुम्हारा विश्वास तुम्हारे मोजों के समान हो, और तुम्हारे मोजे तुम्हारे विश्वास के समान। दोनों सदा बेदाग और क्षण भर में पहनने के लिए तैयार!

मैं क्षमा चाहता हूँ। मैं अनजाने में अपने संडे-स्कूल वाले अंदाज़ में आ गया हूँ। इस तरह के विवरण में यह बिल्कुल अनुचित है। चलिए, व्यावहारिक होने की कोशिश करते हैं —मैं कहना चाहता हूँ कि इस मामले में, और कई अन्य मामलों में भी, छोटी-छोटी बातों के भयानक परिणाम निकले। मान लीजिए कि वह विनम्र अजनबी लैम्बेथ के श्री लूकर थे, तो अब हम श्री गॉडफ्रे के घर, किलबर्न तक उनका अनुसरण करेंगे।

हॉल में उनका इंतज़ार एक दुबले-पतले, लेकिन नाज़ुक और दिलचस्प दिखने वाले छोटे लड़के ने किया। लड़के ने उन्हें एक पत्र दिया, जिसमें उसने बस इतना लिखा था कि यह पत्र उसे एक अनजान बुज़ुर्ग महिला ने सौंपा था, जिसने उसे जवाब का इंतज़ार करने के लिए कोई निर्देश नहीं दिया था। सार्वजनिक दान के क्षेत्र में श्री गॉडफ्रे के व्यापक अनुभव में इस तरह की घटनाएँ आम थीं। उन्होंने लड़के को जाने दिया और पत्र खोला।

लिखाई उनके लिए बिल्कुल अपरिचित थी। उसमें उन्हें एक घंटे के भीतर स्ट्रैंड के नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट स्थित एक घर में आने का अनुरोध किया गया था, जहाँ वे पहले कभी नहीं गए थे। अनुरोध का उद्देश्य सम्मानित प्रबंधक से मदर्स स्मॉल क्लोथ्स कन्वर्जन सोसाइटी के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त करना था, और यह जानकारी एक बुजुर्ग महिला को चाहिए थी जो संतोषजनक उत्तर मिलने पर दान संस्था के संसाधनों में बड़ी राशि का योगदान देना चाहती थीं। उन्होंने अपना नाम बताया और

कहा कि लंदन में उनके कम समय के प्रवास के कारण वे उस प्रख्यात परोपकारी व्यक्ति को अधिक समय नहीं दे सकतीं जिनसे वे बात कर रही थीं।

आम लोग किसी अजनबी की सुविधा के लिए अपने निजी कामों को टालने में हिचकिचाते। लेकिन सच्चा ईसाई नायक भलाई के काम में कभी नहीं हिचकिचाता। श्री गॉडफ्रे तुरंत वापस मुड़े और नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट स्थित घर की ओर चल पड़े। एक अत्यंत सम्मानित, हालांकि कुछ मोटे व्यक्ति ने दरवाजा खोला और श्री गॉडफ्रे का नाम सुनते ही उन्हें तुरंत पीछे के खाली कमरे में, ड्राइंग रूम के फर्श पर ले गए। कमरे में प्रवेश करते ही उन्होंने दो असामान्य चीजें देखीं। एक तो कस्तूरी और कपूर की हल्की सी खुशबू थी। दूसरी एक प्राचीन प्राच्य पांडुलिपि थी, जो भारतीय आकृतियों और चित्रों से खूबसूरती से सजी हुई थी और एक मेज पर खुली पड़ी थी।

वह किताब देख रहा था, जिसके कारण उसे सामने वाले कमरे की ओर खुलने वाले बंद दरवाज़ों की तरफ पीठ करके खड़ा होना पड़ा। तभी, बिना किसी पूर्व चेतावनी के, अचानक पीछे से किसी ने उसकी गर्दन पकड़ ली। उसे बस इतना ही पता चला कि उसकी गर्दन पर लिपटी बांह नंगी और भूरे रंग की थी। इसके बाद उसकी आँखों पर पट्टी बाँध दी गई, मुँह बंद कर दिया गया और (जैसा कि उसने अनुमान लगाया) दो आदमियों ने उसे बेबस होकर ज़मीन पर पटक दिया। तीसरे ने उसकी जेबें टटोलीं और—अगर एक महिला होने के नाते मैं ऐसा शब्द इस्तेमाल करने का साहस करूँ—तो उसने बिना किसी औपचारिकता के, उसकी पूरी त्वचा तक तलाशी ली।

यहां मुझे श्री गॉडफ्रे के अटूट विश्वास की प्रशंसा में कुछ उत्साहवर्धक शब्द कहने में बहुत आनंद आएगा, जिसने इस तरह की भयानक आपात स्थिति में उन्हें सहारा दिया। हालांकि, शायद इस अत्याचार के चरम पर (जैसा कि ऊपर वर्णित है) मेरे प्रशंसनीय मित्र की स्थिति और रूप-रंग महिलाओं की चर्चा के लिए उपयुक्त नहीं है। चलिए, अगले कुछ क्षणों को छोड़ देते हैं और श्री गॉडफ्रे की उस स्थिति पर लौटते हैं जब उनकी घिनौनी तलाशी पूरी हो चुकी थी। यह अत्याचार पूरी तरह सन्नाटे में अंजाम दिया गया था। अंत में, अदृश्य दुष्टों के बीच कुछ शब्द बोले गए, एक ऐसी भाषा में जिसे वे समझ नहीं पाए, लेकिन उनके सुसंस्कृत कानों को स्पष्ट रूप से निराशा और क्रोध का भाव प्रकट हुआ। उन्हें अचानक जमीन से उठाया गया, एक कुर्सी पर बिठाया गया और उनके हाथ-पैर बांध दिए गए। अगले ही क्षण उन्होंने खुले दरवाजे से आती हवा को महसूस किया, ध्यान से सुना और निष्कर्ष निकाला कि वे कमरे में फिर से अकेले हैं।

कुछ देर बाद, उसे नीचे से एक आवाज़ सुनाई दी, जैसे किसी औरत के कपड़े सरसरा रहे हों। वह आवाज़ सीढ़ियों से ऊपर आई और रुक गई। एक औरत की चीख ने अपराधबोध से भरे माहौल को चीर दिया। नीचे से एक आदमी की आवाज़ आई, "हैलो!" एक आदमी के कदमों की आहट सीढ़ियों पर सुनाई दी। मिस्टर गॉडफ्रे ने महसूस किया कि क्रिश्चियन की उंगलियां उसकी पट्टी खोल रही हैं और उसके मुंह से कपड़ा हटा रही हैं। उसने हैरानी से दो सम्मानित अजनबियों को देखा और धीमी आवाज़ में पूछा, "इसका क्या मतलब है?" दोनों सम्मानित अजनबियों ने उसकी ओर देखा और कहा, "बिल्कुल वही सवाल जो हम तुमसे पूछने वाले थे।"
इसके बाद अनिवार्य स्पष्टीकरण आया। नहीं! मुझे बहुत बारीकी से बताना होगा। प्रिय श्री गॉडफ्रे के मन को शांत करने के लिए सैल वोलेटाइल और पानी दिया गया। फिर स्पष्टीकरण आया।
मकान मालिक और मालकिन (जो आस-पड़ोस में अच्छी प्रतिष्ठा रखते थे) के बयान से पता चला कि उनके पहले और दूसरे तल के अपार्टमेंट पिछले दिन एक सप्ताह के लिए एक बहुत ही सम्मानित दिखने वाले सज्जन द्वारा किराए पर लिए गए थे - वही सज्जन जिनका वर्णन पहले ही किया जा चुका है कि उन्होंने श्री गॉडफ्रे के दस्तक देने पर दरवाजा खोला था। उस सज्जन ने सप्ताह का किराया और सभी अतिरिक्त खर्च अग्रिम रूप से चुका दिए थे, और बताया था कि अपार्टमेंट उनके तीन पूर्वी रईस मित्रों के लिए चाहिए थे, जो पहली बार इंग्लैंड घूमने आए थे। घटना वाले दिन सुबह तड़के, दो पूर्वी विदेशी अपने सम्मानित अंग्रेज मित्र के साथ अपार्टमेंट में दाखिल हुए। तीसरे के जल्द ही उनके साथ आने की उम्मीद थी; और सामान (जो बहुत भारी बताया गया था) दोपहर बाद कस्टम हाउस से गुजरने के बाद आने की सूचना दी गई थी। श्री गॉडफ्रे के आने से ठीक दस मिनट पहले, तीसरा विदेशी भी आ गया था। नीचे रहने वाले मकान मालिक और मालकिन की जानकारी में अंतिम पाँच मिनटों तक कुछ भी असामान्य नहीं हुआ था—जब उन्होंने तीन विदेशियों को, उनके सम्मानित अंग्रेज़ मित्र के साथ, घर से चुपचाप समुद्र तट की ओर जाते हुए देखा। एक मेहमान के आने की बात याद करके और उसे भी घर से जाते हुए न देखकर, मकान मालकिन को यह थोड़ा अजीब लगा कि सज्जन को ऊपर अकेले छोड़ दिया गया था। अपने पति से थोड़ी बातचीत के बाद, उन्होंने यह पता लगाना उचित समझा कि कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है। परिणाम वही हुआ, जैसा कि मैंने पहले ही बताने का प्रयास किया है; और यहीं मकान मालिक और मालकिन की व्याख्या समाप्त होती है।

इसके बाद कमरे में छानबीन की गई। प्रिय श्री गॉडफ्रे का सामान चारों ओर बिखरा हुआ मिला। हालाँकि, जब सामान इकट्ठा किया गया, तो कुछ भी गायब नहीं था; उनकी घड़ी, चेन, पर्स, चाबियाँ, रुमाल, नोटबुक और उनके सभी बिखरे हुए कागज़ात की बारीकी से जाँच की गई थी और उन्हें सुरक्षित रूप से वहीं छोड़ दिया गया था ताकि मालिक उन्हें वापस ले सकें। इसी तरह, घर के मालिकों की संपत्ति का एक छोटा सा टुकड़ा भी नहीं चुराया गया था। पूर्वी रईसों ने अपनी अलंकृत पांडुलिपि तो ले ली थी, लेकिन इसके अलावा कुछ भी नहीं चुराया था।

इसका क्या अर्थ था? सांसारिक दृष्टिकोण से देखें तो, ऐसा प्रतीत होता था कि श्री गॉडफ्रे किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा की गई किसी समझ से परे गलती का शिकार हो गए थे। हमारे बीच एक गहरी साजिश रची जा रही थी; और हमारे प्रिय और निर्दोष मित्र उसके जाल में फंस गए थे। जब सौ परोपकारी विजयों का ईसाई नायक गलती से खोदे गए गड्ढे में गिर जाता है, तो यह हम सभी के लिए कितना बड़ा सबक है कि हम निरंतर सतर्क रहें! हमारी अपनी बुरी भावनाएँ कितनी जल्दी पूर्वी रईसों की तरह हम पर अचानक हमला कर सकती हैं!

मैं इस एक विषय पर स्नेहपूर्ण चेतावनी के पन्ने लिख सकता था, लेकिन (अफ़सोस!) मुझे सुधार करने की अनुमति नहीं है—मुझे बस वर्णन करना है। मेरे धनी रिश्तेदार का चेक—जो अब से मेरे जीवन का बोझ बन गया है—मुझे चेतावनी देता है कि हिंसा का यह वृत्तांत अभी समाप्त नहीं हुआ है। हमें श्री गॉडफ्रे को नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट में आराम करने के लिए छोड़ना होगा, और श्री लूकर की कार्यवाही का अनुसरण दिन के बाद के समय में करना होगा।

बैंक से निकलने के बाद, श्री लूकर व्यापारिक कामों के सिलसिले में लंदन के विभिन्न हिस्सों में गए। अपने निवास पर लौटने पर उन्हें एक पत्र मिला, जिसके बारे में लिखा था कि इसे कुछ समय पहले एक लड़के ने छोड़ा था। इस मामले में, श्री गॉडफ्रे के मामले की तरह, लिखावट अजीब थी; लेकिन जिस नाम का उल्लेख किया गया था, वह श्री लूकर के ग्राहकों में से एक का नाम था। उनके पत्र में (तीसरे व्यक्ति में लिखा गया था - जाहिर तौर पर किसी प्रतिनिधि के माध्यम से) बताया गया था कि उन्हें अचानक लंदन बुलाया गया है। उन्होंने अभी-अभी टॉटेनहैम कोर्ट रोड स्थित अल्फ्रेड प्लेस में किराए के कमरे में रहना शुरू किया था; और वे एक खरीददारी के सिलसिले में श्री लूकर से तुरंत मिलना चाहते थे। वे सज्जन प्राच्य पुरावशेषों के शौकीन संग्राहक थे, और कई

वर्षों से लैम्बेथ स्थित प्रतिष्ठान के उदार संरक्षक रहे थे। अरे, हम कब धन-पूजा से मुक्त होंगे! श्री लूकर ने एक टैक्सी बुलाई और तुरंत अपने उदार ग्राहक के पास चले गए।
नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट में मिस्टर गॉडफ्रे के साथ जो हुआ था, वही अब अल्फ्रेड प्लेस में मिस्टर लूकर के साथ हुआ। एक बार फिर उस सम्मानित व्यक्ति ने दरवाजा खोला और आगंतुक को ऊपर पीछे वाले ड्राइंग रूम में ले गया। वहाँ, फिर से, मेज पर वही अलंकृत पांडुलिपि रखी थी। मिस्टर लूकर का ध्यान भी उसी तरह इस खूबसूरत भारतीय कलाकृति में मग्न हो गया, जैसे मिस्टर गॉडफ्रे का हुआ था। उनकी पढ़ाई भी तब टूट गई जब उनके गले पर एक भूरे रंग की नंगी बांह लिपटी हुई थी, उनकी आँखों पर पट्टी बंधी थी और उनके मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ था। उन्हें भी ज़मीन पर लिटाकर उनकी पूरी तलाशी ली गई। मिस्टर गॉडफ्रे के अनुभव से ज़्यादा समय बीत चुका था; लेकिन अंत में वही हुआ, घर के लोगों को कुछ गड़बड़ होने का शक हुआ और वे यह देखने के लिए ऊपर गए कि क्या हुआ है। नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट के मकान मालिक ने मिस्टर गॉडफ्रे को जो स्पष्टीकरण दिया था, वही स्पष्टीकरण अब अल्फ्रेड प्लेस के मकान मालिक ने मिस्टर लूकर को दिया। दोनों को एक ही तरह से धोखा दिया गया था, उस सम्मानित अजनबी के भरोसेमंद व्यवहार और भरे हुए पर्स के झांसे में आकर, जिसने खुद को अपने विदेशी दोस्तों का प्रतिनिधि बताया था। दोनों मामलों में एकमात्र अंतर तब सामने आया जब श्री लूकर की जेबों में बिखरी हुई चीजें फर्श से उठाई जा रही थीं। उनकी घड़ी और पर्स तो सुरक्षित थे, लेकिन (श्री गॉडफ्रे की तुलना में कम भाग्यशाली) उनके पास मौजूद कागजों में से एक कागज गायब हो गया था। उस कागज में एक बहुमूल्य वस्तु की प्राप्ति की पुष्टि थी, जिसे श्री लूकर ने उस दिन अपने बैंक में जमा कराया था। यह दस्तावेज़ धोखाधड़ी के लिए बेकार था, क्योंकि इसमें लिखा था कि वस्तु केवल मालिक के व्यक्तिगत अनुरोध पर ही दी जाएगी। जैसे ही श्री लूकर संभले, वे बैंक की ओर दौड़े, इस उम्मीद में कि शायद उन्हें लूटने वाले चोर अनजाने में रसीद लेकर आ जाएं। जब वे बैंक पहुंचे तो वे कहीं नहीं दिखे, और उसके बाद भी उनका कोई पता नहीं चला। उनके सम्मानित अंग्रेज मित्र ने (बैंकरों की राय में) रसीद का उपयोग करने से पहले ही उसकी जांच कर ली थी और उन्हें समय रहते आवश्यक चेतावनी दे दी थी।
दोनों घटनाओं की सूचना पुलिस को दी गई और मुझे विश्वास है कि आवश्यक जांच पूरी तत्परता से की गई। अधिकारियों का मानना था कि चोरों से मिली अपर्याप्त जानकारी के आधार पर डकैती की योजना बनाई गई थी। वे स्पष्ट रूप से इस बात को

लेकर अनिश्चित थे कि श्री लूकर ने अपने कीमती रत्न को किसी अन्य व्यक्ति को सौंपने में विश्वास किया था या नहीं; और बेचारे विनम्र श्री गॉडफ्रे को गलती से उनसे बात करते हुए देखे जाने का खामियाजा भुगतना पड़ा। इसके अलावा, श्री गॉडफ्रे सोमवार शाम की हमारी बैठक में अनुपस्थित थे क्योंकि उन्हें अधिकारियों के साथ परामर्श करने के लिए कहा गया था - और अब जब सभी आवश्यक स्पष्टीकरण दे दिए गए हैं, तो मैं मोंटागु स्क्वायर में अपने छोटे से व्यक्तिगत अनुभव की सरल कहानी सुना सकता हूँ।

मैं मंगलवार को दोपहर के भोजन के समय समय पर पहुँच गया था। मेरी डायरी से पता चलता है कि वह दिन उतार-चढ़ाव भरा रहा—कई ऐसी बातें थीं जिनका मुझे गहरा अफसोस है, और कई ऐसी बातें भी थीं जिनके लिए मैं दिल से आभारी हूँ।

प्रिय आंटी वरिंदर ने हमेशा की तरह शालीनता और दयालुता से मेरा स्वागत किया। लेकिन थोड़ी देर बाद ही मुझे लगा कि कुछ गड़बड़ है। आंटी के चेहरे पर चिंता के भाव उभर आए, जो उनकी बेटी की ओर इशारा कर रहे थे। मैं खुद भी रेचल को कभी देखे बिना नहीं रह पाती कि इतनी साधारण दिखने वाली बच्ची सर जॉन और लेडी वरिंदर जैसे प्रतिष्ठित माता-पिता की संतान कैसे हो सकती है। लेकिन इस बार तो उसने मुझे न सिर्फ निराश किया, बल्कि सचमुच चौंका दिया। उसके लहजे और व्यवहार में शालीनता का नामोनिशान नहीं था, जिसे देखकर बहुत दुख हुआ। वह किसी तीव्र उत्तेजना से ग्रस्त थी, जिसके कारण हंसते समय उसकी आवाज़ बहुत तेज़ हो जाती थी, और दोपहर के भोजन में वह बेहिसाब खाना-पीना करती थी। मुझे उसकी बेचारी माँ के लिए बहुत दुख हुआ, यहाँ तक कि मुझे मामले की सच्चाई पता चलने से पहले ही।

दोपहर का भोजन समाप्त होने पर, मेरी चाची ने कहा: "राहेल, डॉक्टर ने तुम्हें जो बताया था, उसे याद रखना, खाना खाने के बाद किताब पढ़कर खुद को शांत करना।"

“मैं पुस्तकालय जा रही हूँ, माँ,” उसने उत्तर दिया। “लेकिन अगर गॉडफ्रे का फोन आए, तो मुझे ज़रूर बताना। नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट में उसके कारनामे के बाद, मैं उसके बारे में और जानने के लिए बेताब हूँ।” उसने अपनी माँ के माथे पर चुंबन किया और मेरी तरफ देखा। “अलविदा, क्लैक,” उसने लापरवाही से कहा। उसकी इस उद्दंडता से मुझे कोई गुस्सा नहीं आया; मैंने बस मन ही मन उसके लिए प्रार्थना करने का निश्चय किया।

जब हम अकेले रह गए, तो मेरी चाची ने मुझे भारतीय हीरे की पूरी भयानक कहानी सुनाई, जिसे यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं है, यह जानकर मुझे खुशी हुई। उन्होंने मुझसे यह बात नहीं छिपाई कि वे इस विषय पर चुप रहना पसंद करतीं। लेकिन जब उनके सभी नौकरों को मूनस्टोन के खोने की खबर मिल गई, और जब कुछ घटनाएँ अखबारों में भी छप गईं—जब अजनबी लोग यह अटकलें लगा रहे थे कि लेडी वेरेंडर के कंट्री हाउस में जो हुआ था और नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट और अल्फ्रेड प्लेस में जो हुआ था, उसके बीच कोई संबंध है या नहीं—तो छिपाने का विचार ही नहीं आया; और पूरी ईमानदारी एक आवश्यकता के साथ-साथ एक गुण भी बन गई।

जो बातें मैंने अब सुनीं, उन्हें सुनकर शायद कुछ लोग आश्चर्य से भर उठते। जहाँ तक मेरी बात है, मैं जानती थी कि राहेल का स्वभाव बचपन से ही धर्म से विमुख था, इसलिए मैं अपनी चाची द्वारा अपनी बेटी के बारे में बताई जाने वाली किसी भी बात को सुनने के लिए तैयार थी। मामला बद से बदतर होता जाता और अंत में हत्या तक पहुँच जाता; तब भी मैं मन ही मन कहती, यही तो होना था! हे भगवान, यही तो होना था! जिस एक बात ने मुझे सचमुच चौंका दिया, वह थी मेरी चाची का उस परिस्थिति में उठाया गया कदम। अगर कभी किसी पादरी की ज़रूरत पड़ी हो, तो यह वही था! लेडी वेरेंडर तो इसे चिकित्सक का मामला समझती थीं। मेरी बेचारी चाची का पूरा प्रारंभिक जीवन उनके पिता के नास्तिक घर में बीता था। फिर से वही तो होना था! हे भगवान, यही तो होना था!

लेडी वेरेंडर ने कहा, "डॉक्टरों ने राहेल के लिए भरपूर व्यायाम और मनोरंजन की सलाह दी है, और मुझसे आग्रह किया है कि मैं उसका ध्यान यथासंभव अतीत की यादों में खोने से बचाऊं।"

"अरे, ये तो नास्तिक सलाह है!" मैंने मन ही मन सोचा। "इस ईसाई देश में, ये कैसी नास्तिक सलाह है!"

मेरी चाची ने आगे कहा, "मैं अपने निर्देशों का पालन करने की पूरी कोशिश करती हूँ। लेकिन गॉडफ्रे का यह अजीबोगरीब किस्सा एक बेहद दुर्भाग्यपूर्ण समय पर घटित हुआ है। जब से राहेल ने इसके बारे में सुना है, तब से वह लगातार बेचैन और उत्तेजित है। उसने मुझे तब तक चैन से नहीं बैठने दिया जब तक मैंने अपने भतीजे एबलव्हाइट को पत्र लिखकर यहाँ आने के लिए नहीं कहा। उसे उस दूसरे व्यक्ति में भी दिलचस्पी है जिसके साथ दुर्व्यवहार हुआ था - श्री लूकर, या इसी तरह का कोई नाम - हालाँकि वह आदमी उसके लिए बिलकुल अजनबी है।"

"प्यारी चाची, दुनिया के बारे में आपका ज्ञान मुझसे कहीं अधिक है," मैंने संकोच से कहा। "लेकिन राहेल के इस असाधारण व्यवहार के पीछे कोई न कोई कारण तो जरूर होगा। वह आपसे और सबसे एक पापपूर्ण रहस्य छिपा रही है। क्या हाल की घटनाओं में कुछ ऐसा तो नहीं है जिससे उसका रहस्य उजागर होने का खतरा हो?"
"खोज?" मेरी चाची ने दोहराया। "तुम्हारा मतलब क्या है? श्री लूकर के माध्यम से खोज? मेरे भतीजे के माध्यम से खोज?"
जैसे ही ये शब्द उसके होंठों से निकले, एक अद्‌भुत संयोग हुआ। नौकर ने दरवाजा खोला और मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट के आने की सूचना दी।

अध्याय II

श्री गॉडफ्रे ने अपने नाम की घोषणा होते ही—जैसा कि वे हर काम में करते हैं—ठीक समय पर अपना काम किया। वे नौकर के इतने करीब नहीं थे कि हमें चौंका दें। वे इतने पीछे भी नहीं थे कि हमें रुकने और दरवाज़ा खुला छोड़ने की दोहरी असुविधा हो। सच्चे ईसाई की झलक उनके दैनिक जीवन की संपूर्णता में ही दिखाई देती है। यह प्रिय व्यक्ति सचमुच संपूर्ण थे।
मेरी चाची ने नौकरानी से कहा, "मिस वेरेंडर के पास जाओ और उन्हें बताओ कि मिस्टर एबलव्हाइट यहां हैं।"
हम दोनों ने उनके स्वास्थ्य के बारे में पूछा। हम दोनों ने एक साथ उनसे पूछा कि क्या पिछले सप्ताह की भयानक घटना के बाद वे फिर से पहले जैसे महसूस कर रहे हैं। उन्होंने बड़ी चतुराई से एक ही क्षण में हम दोनों को उत्तर दिया। लेडी वेरिंदर के पास उनके शब्दों में उत्तर था। मेरे पास उनकी मनमोहक मुस्कान थी।
“मैंने ऐसा क्या किया है कि मुझे इतनी सहानुभूति मिल रही है? मेरी प्यारी चाची! मेरी प्यारी मिस क्लैक! मुझे बस किसी और के लिए गलत समझा गया था। मेरी आँखों पर पट्टी बाँधी गई थी; मेरा गला घोंटा गया था; मुझे एक बहुत पतले कालीन पर, जो एक बेहद सख्त फर्श को ढके हुए था, पीठ के बल पटक दिया गया था। ज़रा सोचिए, कितना बुरा हो सकता था! मेरी हत्या हो सकती थी; मुझे लूटा जा सकता था। मैंने क्या खोया है? कुछ नहीं, सिवाय मानसिक शक्ति के—जिसे कानून संपत्ति नहीं मानता; इसलिए, सच कहें तो, मैंने कुछ भी नहीं खोया है। अगर मेरी मर्ज़ी चलती, तो मैं अपने इस कारनामे को अपने तक ही सीमित रखता—मैं इस सारी हलचल और प्रचार से दूर भागता हूँ। लेकिन मिस्टर लूकर ने अपनी चोटों को सार्वजनिक कर दिया, और मेरी चोटें, स्वाभाविक रूप से, घोषित हो गईं। मैं अखबारों की संपत्ति बन गया हूँ, जब तक

कि सज्जन पाठक इस विषय से ऊब न जाएँ। मैं खुद इससे बहुत ऊब गया हूँ। काश सज्जन पाठक भी जल्द ही मेरी तरह हो जाएँ! और प्यारी राहेल कैसी हैं? अभी भी आनंद ले रही हैं... लंदन की खुशियाँ? सुनकर बहुत खुशी हुई! मिस क्लैक, मुझे आपकी थोड़ी मदद चाहिए। मैं कमेटी के काम और अपनी प्यारी सहेलियों के साथ काफी पीछे चल रही हूँ। लेकिन मुझे पूरी उम्मीद है कि अगले हफ्ते मैं माताओं के छोटे कपड़ों पर नज़र डाल पाऊँगी। क्या सोमवार की कमेटी में आपने अच्छी प्रगति की? क्या बोर्ड भविष्य की संभावनाओं को लेकर आशावादी था? और क्या हम पैंट के लिए तैयार हैं?

उनकी मुस्कान की दिव्य कोमलता ने उनकी क्षमा को अत्यंत सहज बना दिया। उनकी गहरी आवाज़ की मिठास ने उस रोचक व्यावसायिक प्रश्न में एक अनूठा आकर्षण जोड़ दिया जो उन्होंने अभी-अभी मुझसे पूछा था। सच कहूँ तो, हम ट्राउज़र्स के लिए लगभग ज़रूरत से ज़्यादा ही आरामदायक स्थिति में थे; हम उनसे पूरी तरह अभिभूत थे। मैं बस यही कहने ही वाला था कि दरवाज़ा फिर से खुला, और मिस वेरेंडर के रूप में कमरे में एक सांसारिक हलचल सी छा गई।

वह बेहद अशोभनीय गति से प्रिय श्री गॉडफ्रे की ओर बढ़ी, उसके बाल बेहद बिखरे हुए थे और उसका चेहरा, जिसे मैं कहूँ तो, अनुचित रूप से लाल था।

"गॉडफ्रे, आपसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई," उसने उससे कहा, और मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि उसकी बात में एक नौजवान का दूसरे नौजवान से बात करने का सहज अंदाज़ झलक रहा था। "काश आप मिस्टर लूकर को भी साथ लाए होते। आप और वह (जब तक हमारा यह उत्साह बना रहता है) पूरे लंदन के दो सबसे दिलचस्प आदमी हैं। यह कहना थोड़ा अटपटा है; यह अस्वस्थ है; मिस क्लैक जैसे संयमित दिमाग के लिए तो यह सबसे स्वाभाविक बात है जिससे वह कांप उठती है। खैर, छोड़िए। मुझे नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट की पूरी कहानी सीधे-सीधे बताइए। मुझे पता है कि अखबारों ने इसका कुछ हिस्सा छोड़ दिया है।"

प्रिय श्री गॉडफ्रे भी उस पतित स्वभाव के अंश हैं जो हम सभी को आदम से विरासत में मिला है—यह हमारी मानवीय विरासत का बहुत छोटा हिस्सा है, लेकिन अफसोस! यह उनमें भी है। मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे यह देखकर दुख हुआ कि उन्होंने राहेल का हाथ अपने दोनों हाथों में लिया और उसे धीरे से अपनी जैकेट के बाईं ओर रख दिया। यह राहेल के बेपरवाह बोलने के तरीके और मेरे प्रति उसके उद्दंड रवैये को सीधा प्रोत्साहन था।

"मेरी प्यारी रेचल," उसने उसी आवाज़ में कहा, जिसने मुझे तब रोमांचित कर दिया था जब उसने हमारी संभावनाओं और हमारी पतलून के बारे में बात की थी, "अखबारों ने तुम्हें सब कुछ बता दिया है - और उन्होंने इसे मुझसे कहीं बेहतर तरीके से बताया है।"
मेरी चाची ने कहा, "गॉडफ्रे को लगता है कि हम सब इस मामले को ज़रूरत से ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश कर रहे हैं। अभी तो वह यही कह रहा था कि वह इस बारे में बात नहीं करना चाहता।"
"क्यों?"
उसकी आँखों में अचानक चमक आ गई और उसने श्री गॉडफ्रे की ओर देखते हुए प्रश्न पूछा। दूसरी ओर, श्री गॉडफ्रे ने उसे इतनी अनुचित और अनुचित उदारता से देखा कि मुझे वास्तव में हस्तक्षेप करने की आवश्यकता महसूस हुई।
"राहेल, मेरी प्यारी!" मैंने धीरे से कहा, "सच्ची महानता और सच्चा साहस हमेशा विनम्र होते हैं।"
“गॉडफ्रे, तुम अपने तरीके से बहुत अच्छे इंसान हो,” उसने कहा—ध्यान रहे, मेरी तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया और अपने चचेरे भाई से ऐसे बात कर रही थी जैसे कोई दो युवक दूसरे से बात कर रहे हों। “लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि तुम महान नहीं हो; मुझे नहीं लगता कि तुममें कोई असाधारण साहस है; और मुझे पक्का विश्वास है—अगर तुममें कभी थोड़ी भी शर्म थी—तो तुम्हारी चाहने वाली महिलाओं ने कई साल पहले ही तुमसे वह सतीत्व छीन लिया होगा। नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट में अपने उस कारनामे के बारे में बात न करने का तुम्हारा कोई निजी कारण होगा; और मैं उसे जानना चाहती हूँ।”
"मेरा कारण सबसे सरल और आसानी से स्वीकार किया जाने वाला है," उसने जवाब दिया, अभी भी उसकी बात सुन रहा था। "मैं इस विषय से थक गया हूँ।"
"क्या आप इस विषय से थक गए हैं? मेरे प्यारे गॉडफ्रे, मैं एक टिप्पणी करने जा रहा हूँ।"
"यह क्या है?"
"तुम स्त्रियों की संगति में बहुत अधिक समय बिताते हो। परिणामस्वरूप, तुम्हें दो बहुत बुरी आदतें लग गई हैं। तुमने गंभीरता से बेतुकी बातें करना सीख लिया है, और तुम्हें झूठ बोलने में आनंद आता है। तुम अपनी स्त्रियों के साथ ईमानदारी से पेश नहीं आ सकते। मैं तुम्हें अपने साथ ईमानदारी से पेश आने पर मजबूर कर दूंगी। आओ, बैठो। मेरे पास सीधे-सादे सवालों की भरमार है; और मैं तुमसे भी सीधे-सादे जवाबों की उम्मीद करती हूं।"

वह उसे घसीटकर कमरे के उस पार खिड़की के पास एक कुर्सी पर ले गई, जहाँ रोशनी उसके चेहरे पर पड़ती थी। मुझे ऐसी भाषा और ऐसे व्यवहार का वर्णन करना अत्यंत आवश्यक लगता है। लेकिन, एक तरफ श्री फ्रैंकलिन ब्लेक का चेक और दूसरी तरफ सत्य के प्रति मेरा अटूट सम्मान, इन दोनों के बीच मैं क्या करूँ? मैंने अपनी चाची की ओर देखा। वह अविचलित बैठी रहीं; ऐसा प्रतीत होता था कि उनका हस्तक्षेप करने का कोई इरादा नहीं था। मैंने उनमें पहले कभी इस तरह की सुस्ती नहीं देखी थी। शायद यह गाँव में बिताए कठिन समय की प्रतिक्रिया थी। प्रिय लेडी वेरेंडर की उम्र और उनके बदलते हुए आकर्षक शरीर को देखते हुए, यह एक सुखद लक्षण नहीं है।

इसी बीच, राहेल हमारे मिलनसार और सहनशील—बल्कि कुछ ज़्यादा ही सहनशील—श्री गॉडफ्रे के साथ खिड़की पर बैठ गई। उसने सवालों की वही झड़ी लगा दी, जिनसे उसने उन्हें धमकाया था, और अपनी माँ या मेरी तरफ़ बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया, मानो हम कमरे में मौजूद ही न हों।

"क्या पुलिस ने कुछ किया है, गॉडफ्रे?"

"बिल्कुल कुछ नहीं।"

"मुझे लगता है कि यह निश्चित है कि जिन तीन लोगों ने आपके लिए जाल बिछाया था, वे ही तीन लोग थे जिन्होंने बाद में मिस्टर लूकर के लिए भी जाल बिछाया था?"

"मानवीय दृष्टि से, मेरी प्यारी राहेल, इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता।"

"और उनका कोई सुराग नहीं मिला?"

"कोई निशान नहीं।"

"ऐसा माना जाता है—है ना?—कि ये तीनों आदमी वही तीन भारतीय हैं जो हमारे गांव वाले घर आए थे।"

"कुछ लोग ऐसा सोचते हैं।"

"क्या आप ऐसा सोचते हैं?"

"मेरी प्यारी रेचल, उन्होंने मुझे उनके चेहरे देखने से पहले ही मेरी आंखों पर पट्टी बांध दी। मुझे इस मामले के बारे में कुछ भी पता नहीं है। मैं इस पर अपनी राय कैसे दे सकता हूँ?"

आप देख सकते हैं कि श्री गॉडफ्रे की देवदूत जैसी कोमलता भी उन पर हो रहे अत्याचार के आगे आखिरकार टूटने लगी थी। मिस वेरेंडर के सवालों के पीछे अनियंत्रित जिज्ञासा थी या असहनीय भय, यह मैं जानने का साहस नहीं करता। मैं बस

इतना ही बता सकता हूँ कि श्री गॉडफ्रे ने ऊपर वर्णित उत्तर देने के बाद जब उठने की कोशिश की, तो उन्होंने सचमुच उन्हें दोनों कंधों से पकड़कर वापस कुर्सी पर धकेल दिया—अरे, इसे अभद्र मत कहिए! यह संकेत भी मत दीजिए कि दोषी भय की निर्ममता ही ऐसे व्यवहार का कारण हो सकती है जैसा मैंने वर्णन किया है! हमें दूसरों का न्याय नहीं करना चाहिए। मेरे ईसाई मित्रों, सचमुच, सचमुच, सचमुच, हमें दूसरों का न्याय नहीं करना चाहिए!

वह निडर होकर अपने प्रश्न पूछती रही। बाइबल के गंभीर अध्येता शायद मुझे याद दिलाएंगे—जैसा कि मुझे याद दिलाया गया—शैतान के उन अंधे बच्चों को, जो जलप्रलय से पहले के समय में निडर होकर अपनी अय्याशी करते रहे थे।

"मैं मिस्टर लुकर के बारे में कुछ जानना चाहता हूँ, गॉडफ्रे।"

"मैं फिर से बदकिस्मत हूँ, रेचल। मिस्टर लूकर के बारे में मुझसे कम कोई नहीं जानता।"

"क्या आपने उसे बैंक में उससे आकस्मिक मुलाकात से पहले कभी नहीं देखा था?"

"कभी नहीं।"

"क्या आपने उसे तब से देखा है?"

"हां। पुलिस की सहायता के लिए हमारी एक साथ और अलग-अलग भी पूछताछ की गई है।"

"श्री लुकर की एक रसीद चोरी हो गई थी जो उन्हें उनके बैंकर से मिली थी - क्या ऐसा नहीं हुआ था? वह रसीद किस लिए थी?"

"एक बहुमूल्य रत्न के लिए जिसे उसने बैंक की सुरक्षित हिरासत में रखा था।"

"अखबारों में यही छपा है। आम पाठक के लिए शायद इतना काफी हो; लेकिन मेरे लिए काफी नहीं है। बैंक की रसीद में तो यह जरूर लिखा होना चाहिए था कि वह रत्न क्या था?"

"बैंक की रसीद, रेचल—जैसा कि मैंने सुना है—में इस तरह की कोई बात नहीं लिखी थी। एक कीमती रत्न, जो श्री लूकर का था; श्री लूकर द्वारा जमा किया गया; श्री लूकर की मुहर से सीलबंद; और केवल श्री लूकर के व्यक्तिगत आवेदन पर ही दिया जाना था। यही प्रारूप था, और इसके बारे में मुझे बस इतना ही पता है।"

उसके ऐसा कहने के बाद वह एक पल रुकी। उसने अपनी माँ की ओर देखा और आह भरी। उसने फिर से मिस्टर गॉडफ्रे की ओर देखा और आगे बढ़ गई।

उन्होंने कहा, "हमारे घर के कुछ निजी मामले अखबारों में छप गए हैं?"

मुझे यह कहते हुए दुख हो रहा है, लेकिन यह सच है।
"और कुछ निकम्मे लोग, जो हमारे लिए बिलकुल अजनबी हैं, यॉर्कशायर में हमारे घर पर जो हुआ और उसके बाद लंदन में जो हुआ, उसके बीच संबंध खोजने की कोशिश कर रहे हैं?"
"मुझे डर है कि कुछ हलकों में जनता की जिज्ञासा उसी दिशा में मुड़ रही है।"
"जो लोग कहते हैं कि आपके और श्री लूकर के साथ दुर्व्यवहार करने वाले तीन अज्ञात व्यक्ति वे तीन भारतीय हैं, वे यह भी कहते हैं कि वह बहुमूल्य रत्न----"
वहाँ वह रुक गई। पिछले कुछ पलों में उसका चेहरा धीरे-धीरे और भी पीला पड़ गया था। उसके बालों का असाधारण कालापन उसके इस पीलेपन को इतना भयावह बना रहा था कि हम सबने सोचा कि वह बेहोश हो जाएगी, ठीक उसी क्षण जब उसने अपना सवाल बीच में ही रोक लिया। प्रिय श्री गॉडफ्रे ने अपनी कुर्सी से उठने की दूसरी कोशिश की। मेरी चाची ने उनसे और कुछ न बोलने की विनती की। मैं अपनी चाची के पीछे-पीछे नमक की एक बोतल लेकर गया, जो एक मामूली सा शांति का तोहफा था। हम में से किसी का भी उस पर ज़रा सा भी असर नहीं हुआ। "गॉडफ्रे, तुम यहीं रुक जाओ। माँ, मुझे लेकर घबराने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं है। क्लैक, तुम तो यह सब खत्म करने के लिए बेताब हो - मैं बेहोश नहीं होऊँगी, सिर्फ़ तुम्हें खुश करने के लिए।"
ठीक यही शब्द उसने कहे थे—घर पहुँचते ही मैंने उन्हें अपनी डायरी में लिख लिया। लेकिन, अरे, हमें किसी का न्याय नहीं करना चाहिए! मेरे ईसाई मित्रों, हमें किसी का न्याय नहीं करना चाहिए!
वह एक बार फिर मिस्टर गॉडफ्रे की ओर मुड़ी। एक भयावह हठ के साथ, वह फिर से उसी स्थान पर लौट आई जहाँ उसने खुद को रोका था, और अपने प्रश्न को इन शब्दों में पूरा किया:
"मैंने अभी कुछ देर पहले आपसे कुछ खास हलकों में कही जा रही बातों के बारे में बात की थी। गॉडफ्रे, मुझे साफ-साफ बताओ, क्या उनमें से कोई यह कहता है कि मिस्टर लूकर का कीमती रत्न मूनस्टोन है?"
जैसे ही उनके होंठों से भारतीय हीरे का नाम निकला, मैंने अपने प्रशंसनीय मित्र के चेहरे पर एक बदलाव देखा। उनका रंग गहरा हो गया। उनके व्यवहार की वह सौम्यता और विनम्रता गायब हो गई जो उनके सबसे बड़े आकर्षणों में से एक थी। उनके उत्तर में एक उदात्त आक्रोश झलक रहा था।

“वे ऐसा कहते हैं,” उन्होंने जवाब दिया। “कुछ लोग श्री लुकर पर अपने निजी स्वार्थों के लिए झूठ बोलने का आरोप लगाने में ज़रा भी संकोच नहीं करते। उन्होंने बार-बार पूरी गंभीरता से कहा है कि इस घोटाले के सामने आने से पहले उन्होंने मूनस्टोन के बारे में कभी सुना भी नहीं था। और ये नीच लोग बिना किसी सबूत के जवाब देते हैं, “उनके पास छिपाने के अपने कारण हैं; हम उनकी कसम पर विश्वास नहीं करते। शर्मनाक! शर्मनाक!”

जब वह बोल रहा था, राहेल उसे बहुत अजीब तरह से देख रही थी—मैं ठीक से बता नहीं सकती कि कैसे। जब उसने बोलना समाप्त किया, तो उसने कहा, "यह देखते हुए कि श्री लूकर आपके केवल एक संयोगवश परिचित हैं, आप उनका पक्ष बड़े उत्साह से ले रहे हैं, गॉडफ्रे।"

मेरी प्रतिभाशाली दोस्त ने उसे एक ऐसा जवाब दिया जो मेरे जीवन में सुने गए सबसे सच्चे और धर्मपरायण उत्तरों में से एक था।

उन्होंने कहा, "मुझे उम्मीद है, राहेल, कि मैं सभी उत्पीड़ित लोगों के मुद्दे को पूरी गर्मजोशी से उठाऊंगा।"

जिस लहजे में ये शब्द बोले गए थे, उससे पत्थर भी पिघल सकता था। लेकिन, हे भगवान, पत्थर की कठोरता क्या होती है? कुछ भी नहीं, उस निर्मम मनुष्य के हृदय की कठोरता के आगे! उसने ताना मारा। मुझे ये लिखते हुए शर्म आ रही है—उसने उसके सामने ही ताना मारा।

"गॉडफ्रे, अपनी नेक भावनाओं को अपनी महिला समितियों के लिए ही रखें। मुझे पूरा यकीन है कि श्री लूकर को जिस बदनामी का सामना करना पड़ा है, उससे आप भी अछूते नहीं रहे हैं।"

उन शब्दों से मेरी चाची की सुस्ती भी जाग उठी।

"मेरी प्यारी राहेल," उसने विरोध करते हुए कहा, "तुम्हें ऐसा कहने का बिल्कुल भी अधिकार नहीं है!"

"मेरा इरादा किसी को नुकसान पहुंचाने का नहीं है, माँ—मेरा इरादा अच्छा करने का है। मुझ पर थोड़ा धैर्य रखिए, आपको खुद ही पता चल जाएगा।"

उसने मिस्टर गॉडफ्रे की ओर देखा, मानो उसे अचानक उन पर दया आ गई हो। उसने हद पार कर दी—जो कि एक महिला के लिए बिल्कुल अनुचित था—और उनका हाथ थाम लिया।

"मुझे पूरा यकीन है कि मुझे आपकी इस बात का असली कारण पता चल गया है कि आप मेरी माँ और मेरे सामने इस मामले पर बात करने को तैयार क्यों नहीं थे। एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना ने लोगों के मन में आपको मिस्टर लूकर से जोड़ दिया है। आपने मुझे बताया है कि बदनामी उनके बारे में क्या कहती है। बदनामी आपके बारे में क्या कहती है?"

अंतिम समय में भी, प्रिय श्री गॉडफ्रे—जो हमेशा बुराई के बदले भलाई करने के लिए तत्पर रहते थे—ने उसे बचाने की कोशिश की।

"मुझसे मत पूछो!" उसने कहा। "इसे भूल जाना ही बेहतर है, रेचल—सचमुच।"

"मैं इसे सुनूंगी!" वह उग्रता से, अपनी पूरी आवाज में चिल्लाई।

"उसे बताओ, गॉडफ्रे!" मेरी चाची ने विनती की। "तुम्हारी चुप्पी से उसे जितना नुकसान हो रहा है, उतना नुकसान और किसी चीज से नहीं हो सकता!"

मिस्टर गॉडफ्रे की सुंदर आँखें आँसुओं से भर उठीं। उन्होंने आखिरी बार उनसे विनती भरी नज़र डाली—और फिर उन्होंने वे घातक शब्द कहे:

"अगर आप इसे लेना चाहें, रेचल—अफवाह है कि मूनस्टोन मिस्टर लूकर के पास गिरवी रखा हुआ है, और मैंने ही इसे गिरवी रखा है।"

वह चीखते हुए उठ खड़ी हुई। वह मिस्टर गॉडफ्रे से मेरी चाची और मेरी चाची से मिस्टर गॉडफ्रे की ओर इतनी बेचैनी से देख रही थी कि मुझे लगा जैसे वह पागल हो गई हो।

"मुझसे बात मत करो! मुझे मत छुओ!" वह चीखी और हम सबसे पीछे हटते हुए (मैं कसम खाती हूँ, किसी शिकार किए गए जानवर की तरह!) कमरे के एक कोने में दुबक गई। "यह मेरी गलती है! मुझे इसे ठीक करना होगा। मैंने खुद को कुर्बान कर दिया—अगर मैं चाहती तो ऐसा करने का मुझे अधिकार था। लेकिन एक निर्दोष आदमी को बर्बाद होने देना; एक ऐसा राज़ छुपाना जो उसकी छवि को हमेशा के लिए खराब कर दे—हे भगवान, यह कितना भयानक है! मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती!"

मेरी चाची आधी कुर्सी से उठीं, फिर अचानक वापस बैठ गईं। उन्होंने धीमी आवाज़ में मुझे पुकारा और अपने काम के बक्से में रखी एक छोटी सी शीशी की ओर इशारा किया।

"जल्दी करो!" उसने फुसफुसाते हुए कहा। "पानी में छह बूंदें। राहेल को देखने मत देना।"

किसी और परिस्थिति में, मुझे यह अजीब लगता। अब सोचने का समय नहीं था—केवल दवा देने का समय था। प्रिय श्री गॉडफ्रे ने अनजाने में ही राहेल से मेरी बात छिपाने में मेरी मदद की, क्योंकि वे कमरे के दूसरे छोर पर बैठी राहेल से कुछ शांत शब्द बोल रहे थे।

"सचमुच, सचमुच, आप अतिशयोक्ति कर रही हैं," मैंने उन्हें कहते सुना। "मेरी प्रतिष्ठा इतनी ऊँची है कि इस तरह के तुच्छ क्षणिक विवाद से इसे नष्ट नहीं किया जा सकता। एक हफ्ते में सब कुछ भुला दिया जाएगा। आइए इसके बारे में फिर कभी बात न करें।" वह पूरी तरह से अप्रसन्न थीं, यहाँ तक कि इस तरह की उदारता के लिए भी। उनकी हालत बद से बदतर होती चली गई।

"मुझे इसे रोकना ही होगा, और मैं रोकूंगी," उसने कहा। "माँ! मेरी बात सुनो। मिस क्लैक! मेरी बात सुनो। मैं उस हाथ को जानती हूँ जिसने मूनस्टोन चुराया है। मैं जानती हूँ--" उसने शब्दों पर ज़ोर देते हुए कहा; गुस्से में उसने अपना पैर पटका--"मैं जानती हूँ कि गॉडफ्रे एबलव्हाइट निर्दोष है। मुझे मजिस्ट्रेट के पास ले चलो, गॉडफ्रे! मुझे मजिस्ट्रेट के पास ले चलो, और मैं कसम खाकर कहूँगी!"

मेरी चाची ने मेरा हाथ पकड़ा और फुसफुसाते हुए कहा, "एक-दो मिनट के लिए हमारे बीच खड़े रहो। रेचल को मुझे देखने मत देना।" मैंने उनके चेहरे पर एक नीलापन देखा जिससे मैं घबरा गई। उन्होंने देखा कि मैं सहम गई हूँ। "एक-दो मिनट में दवा की बूँदें मुझे ठीक कर देंगी," उन्होंने कहा और अपनी आँखें बंद कर लीं और थोड़ी देर इंतजार किया।

जब यह सब चल रहा था, तब मैंने प्रिय श्री गॉडफ्रे को विनम्रतापूर्वक विरोध करते हुए सुना।

उन्होंने कहा, "तुम्हें इस तरह सार्वजनिक रूप से नहीं दिखना चाहिए। प्रिय राहेल, तुम्हारी प्रतिष्ठा इतनी पवित्र और पावन है कि इसके साथ खिलवाड़ नहीं किया जा सकता।"

"मेरी प्रतिष्ठा!" वह खिलखिलाकर हंस पड़ी। "अरे, मुझ पर भी आरोप लगा है, गॉडफ्रे, आप पर भी। इंग्लैंड के सबसे बेहतरीन जासूस का कहना है कि मैंने अपना हीरा चुराया है। उनसे पूछिए कि वे क्या सोचते हैं—और वे आपको बताएंगे कि मैंने अपने निजी कर्ज चुकाने के लिए मूनस्टोन गिरवी रखा है!" वह रुकी, कमरे के उस पार भागी—और अपनी माँ के चरणों में गिर पड़ी। "ओह माँ! माँ! माँ! मैं पागल हो गई हूँ—है ना? —कि अभी सच क्यों नहीं मान रही?" वह इतनी उत्तेजित थी कि अपनी माँ की हालत

पर ध्यान ही नहीं दिया—वह पल भर में फिर खड़ी हो गई और मिस्टर गॉडफ्रे के पास वापस चली गई। मैं तुम्हें—मैं किसी भी निर्दोष व्यक्ति को—अपनी गलती के कारण दोषी ठहराए जाने और बदनाम होने नहीं दूँगा। अगर तुम मुझे मजिस्ट्रेट के सामने पेश नहीं करोगे, तो कागज़ पर अपनी निर्दोषता का बयान लिखो, मैं उस पर हस्ताक्षर कर दूँगा। जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो, गॉडफ्रे, वरना मैं इसे अखबारों में लिख दूँगा, मैं बाहर निकलकर सड़कों पर चिल्लाकर इसका ऐलान करूँगा!

हम यह नहीं कहेंगे कि यह पश्चाताप की भाषा थी—हम कहेंगे कि यह उन्माद की भाषा थी। दयालु श्री गॉडफ्रे ने एक कागज़ लेकर उस पर घोषणापत्र लिखकर उसे शांत किया। उसने जल्दबाजी में उस पर हस्ताक्षर कर दिए। "इसे हर जगह दिखाओ—मेरे बारे में मत सोचो," उसने कागज़ देते हुए कहा। "मुझे खेद है, गॉडफ्रे, मैंने अब तक आपके बारे में जो सोचा है, उसमें आपके साथ न्याय नहीं किया है। आप कहीं अधिक निस्वार्थ हैं—आप मेरी सोच से कहीं बेहतर इंसान हैं। जब भी संभव हो, यहाँ आना, और मैं आपके साथ किए गए अन्याय को सुधारने की कोशिश करूंगी।"

उसने उसे अपना हाथ दिया। हाय, हमारी पतित प्रकृति पर! हाय, मिस्टर गॉडफ्रे पर! वह न केवल इतना बहक गया कि उसने उसका हाथ चूम लिया, बल्कि उसने जवाब देते समय इतनी कोमलता अपनाई जो उस स्थिति में पाप से समझौता करने से कम नहीं थी। "मैं आऊंगा, प्रियतम," उसने कहा, "इस शर्त पर कि हम इस घृणित विषय पर फिर कभी बात न करें।" मैंने अपने ईसाई नायक को इस अवसर से पहले कभी इतना बुरा नहीं देखा था।

किसी के कुछ कहने से पहले ही, गली के दरवाजे पर ज़ोरदार दस्तक ने हम सबको चौंका दिया। मैंने खिड़की से झाँका और देखा कि दुनिया, शरीर और शैतान घर के सामने इंतज़ार कर रहे थे—एक रथ और घोड़ों के रूप में, एक पाउडर लगाए हुए नौकर और तीन ऐसी महिलाओं के रूप में जो मैंने अपने जीवन में अब तक देखे सबसे बेबाक ढंग से सजी हुई थीं।

राहेल चौंक गई और फिर खुद को संभाला। वह कमरे में अपनी माँ के पास गई।

“ये लोग मुझे फूलों की प्रदर्शनी में ले जाने आए हैं,” उसने कहा। “जाने से पहले एक बात कह दूं, माँ। मैंने आपको परेशान तो नहीं किया?”

(क्या नैतिक भावना की उस निर्ममता पर दया की जानी चाहिए जो अभी-अभी घटी घटना के बाद ऐसा प्रश्न पूछ सकती है, या उसकी निंदा की जानी चाहिए? मैं दया की ओर झुकना पसंद करता हूँ। आइए हम उस पर दया करें।)

बूंदों का असर हो चुका था। मेरी बेचारी चाची का चेहरा फिर से पहले जैसा हो गया था। "नहीं, नहीं, मेरी प्यारी," उन्होंने कहा। "अपने दोस्तों के साथ जाओ और खूब मजे करो।"

उसकी बेटी झुकी और उसने उसे चूमा। मैं खिड़की से हटकर दरवाजे के पास ही था, तभी राहेल बाहर जाने के लिए दरवाजे की ओर बढ़ी। उसमें एक और बदलाव आ गया था—वह रो रही थी। मैंने उस कठोर हृदय के क्षणिक नरमी को उत्सुकता से देखा। मेरा मन हुआ कि मैं कुछ गंभीर शब्द कहूँ। अफसोस! मेरी नेक इरादे वाली सहानुभूति ने उसे ठेस पहुँचाई। "तुम मुझसे दया क्यों जता रहे हो?" उसने दरवाजे की ओर जाते हुए कड़वी फुसफुसाहट में पूछा। "क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि मैं कितनी खुश हूँ? मैं फूलों की प्रदर्शनी में जा रही हूँ, क्लैक; और मेरे पास लंदन की सबसे खूबसूरत टोपी है।" उसने मुझे एक चुंबन देकर अपने उस खोखले भाषण को पूरा किया—और इस तरह कमरे से चली गई।

काश मैं उस बेचारी और गुमराह लड़की के प्रति अपने दिल में उमड़ी सहानुभूति को शब्दों में बयान कर पाती। लेकिन मेरे पास शब्दों की उतनी ही कमी है जितनी पैसों की। बस इतना ही कहना चाहूँगी कि मेरा दिल उसके लिए तड़प उठा।

अपनी चाची की कुर्सी पर लौटते हुए मैंने देखा कि प्रिय श्री गॉडफ्रे कमरे के अलग-अलग हिस्सों में धीरे-धीरे कुछ खोज रहे थे। इससे पहले कि मैं उनकी मदद कर पाती, उन्हें वह मिल गया जो वे चाहते थे। वे एक हाथ में अपनी निर्दोषता का बयान और दूसरे हाथ में माचिस की डिब्बी लिए मेरी चाची और मेरे पास वापस आए।

"प्यारी चाची, एक छोटी सी साजिश!" उसने कहा। "प्यारी मिस क्लैक, एक ऐसा पवित्र धोखा जिसे आपकी उच्च नैतिक शुद्धता भी माफ कर देगी! क्या आप राहेल को यह मानने देंगी कि मैं इस कागज पर हस्ताक्षर करने वाले उदार आत्म-बलिदान को स्वीकार करता/करती हूँ? और क्या आप कृपा करके इस बात की गवाह बनेंगी कि मैं घर छोड़ने से पहले इसे आपकी उपस्थिति में नष्ट कर दूँ?" उसने एक माचिस जलाई और कागज को जलाकर मेज पर रखी एक थाली में रख दिया। "मुझे जो भी मामूली असुविधा हो रही है, वह कुछ भी नहीं है," उसने कहा, "उस पवित्र नाम को दुनिया के दूषित संपर्क से बचाने के महत्व के मुकाबले। लो! हमने इसे राख के एक छोटे से हानिरहित ढेर में बदल दिया है; और हमारी प्यारी, चंचल राहेल को कभी पता नहीं चलेगा कि हमने क्या किया है! आपको कैसा लग रहा है? मेरे प्यारे दोस्तों, आपको कैसा लग रहा है? जहाँ तक मेरी बात है, मैं तो बिल्कुल एक बच्चे की तरह खुश हूँ!"

उन्होंने अपनी सुंदर मुस्कान से हम पर कृपा बरसाई; उन्होंने मेरी चाची की ओर हाथ बढ़ाया, और मेरी ओर भी। उनके इस नेक व्यवहार से मैं इतनी प्रभावित हुई कि कुछ बोल नहीं पाई। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं; मैंने आध्यात्मिक आत्म-विस्मृति में उनका हाथ अपने होठों से लगा लिया। उन्होंने धीरे से कुछ कहा। ओह, उस पल का आनंद, वह शुद्ध, अलौकिक आनंद! मैं बैठी रही—पता नहीं किस पर—अपने ही उच्च भावों में पूरी तरह खोई हुई। जब मैंने दोबारा आँखें खोलीं, तो ऐसा लगा जैसे मैं स्वर्ग से धरती पर उतर आई हूँ। कमरे में मेरी चाची के सिवा कोई नहीं था। वे जा चुके थे।

मैं यहीं रुकना चाहूंगा—मैं श्री गॉडफ्रे के नेक आचरण के वर्णन के साथ अपनी कहानी समाप्त करना चाहूंगा। दुर्भाग्य से, अभी और भी बहुत कुछ है, जिसे श्री ब्लेक के चेक के लगातार बढ़ते वित्तीय दबाव के कारण मुझे बताना पड़ रहा है। मंगलवार को मोंटागु स्क्वायर की मेरी यात्रा के दौरान जो दर्दनाक खुलासे होने वाले थे, वे अभी समाप्त नहीं हुए थे।

लेडी वेरेंडर के साथ अकेले होने पर, मैंने स्वाभाविक रूप से उनके स्वास्थ्य के विषय पर बात शुरू की; और बड़ी ही सूक्ष्मता से उस अजीब चिंता का जिक्र किया जो उन्होंने अपनी बीमारी और उसके इलाज को अपनी बेटी की नजरों से छिपाने के लिए दिखाई थी।

मेरी चाची के जवाब ने मुझे बहुत आश्चर्यचकित कर दिया।

"ड्रूसिला," उसने कहा (यदि मैंने पहले ही यह उल्लेख नहीं किया है कि मेरा ईसाई नाम ड्रूसिला है, तो मुझे अब इसका उल्लेख करने की अनुमति दें), "मुझे पता है कि आप पूरी मासूमियत से एक बहुत ही दुखद विषय पर बात कर रही हैं।"

मैं तुरंत उठ खड़ा हुआ। शिष्टाचार के चलते मेरे पास केवल एक ही विकल्प बचा था—माफी मांगने के बाद वहां से चले जाना। लेडी वेरेंडर ने मुझे रोका और दोबारा बैठने पर जोर दिया।

"तुमने एक राज़ खोल दिया है," उसने कहा, "जो मैंने अपनी बहन श्रीमती एबलव्हाइट और अपने वकील श्री ब्रुफ़ को ही बताया था, किसी और को नहीं। मुझे उनकी समझदारी पर पूरा भरोसा है; और मुझे यकीन है, जब मैं तुम्हें सारी बातें बताऊंगी, तो मुझे तुम्हारी समझदारी पर भी भरोसा होगा। क्या तुम्हारा कोई ज़रूरी काम है, ड्रूसिला? या आज दोपहर तुम्हारा समय तुम्हारा अपना है?"

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मेरा सारा समय मेरी चाची के अधीन था।

"तो फिर एक घंटे और मेरे साथ रहो," उसने कहा। "मुझे तुम्हें कुछ बताना है, जिसे सुनकर तुम्हें दुख होगा। और अगर तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो बाद में मुझे तुमसे एक काम करवाना है।"
यह कहना अनावश्यक है कि आपत्ति करने के बजाय, मैं उसकी सहायता करने के लिए पूरी तरह से उत्सुक था।
"तुम यहाँ इंतज़ार कर सकती हो, जब तक मिस्टर ब्रफ पाँच बजे नहीं आ जाते। और जब मैं अपनी वसीयत पर हस्ताक्षर करूँगी, तो तुम गवाहों में से एक हो सकती हो, ड्रूसिला।"
उसकी वसीयत! मुझे उसकी काम पेटी में गिरी बूँदें याद आईं। मुझे उसके चेहरे पर आई नीली आभा याद आई। एक ऐसी रोशनी जो इस दुनिया की नहीं थी—एक अधूरी कब्र से भविष्यवाणी की तरह चमकती हुई रोशनी—मेरे मन में कौंध गई। मेरी चाची का रहस्य अब रहस्य नहीं रहा।

अध्याय III

बेचारी लेडी वेरेंडर के प्रति सहानुभूति के कारण मैंने उनके बोलने से पहले ही इस दुखद सच्चाई का संकेत देने की ज़हमत भी नहीं उठाई। मैं चुपचाप उनकी इच्छा का इंतज़ार करता रहा; और, पहले सुविधाजनक अवसर पर कुछ सांत्वना भरे शब्द कहने का गुप्त रूप से निश्चय कर लिया था, और किसी भी कर्तव्य के लिए तैयार था, चाहे वह कितना भी कष्टदायी क्यों न हो।
"ड्रूसिला, मैं कुछ समय से गंभीर रूप से बीमार हूँ," मेरी चाची ने कहना शुरू किया। "और हैरानी की बात यह है कि मुझे खुद भी इसका एहसास नहीं था।"
मैंने उन हजारों-हजारों मरणासन्न मनुष्यों के बारे में सोचा जो उस समय अनजाने में ही आध्यात्मिक रूप से बीमार थे। और मुझे बहुत डर था कि कहीं मेरी बेचारी चाची भी उनमें से एक न हों। "हाँ, प्रिय," मैंने उदास स्वर में कहा। "हाँ।"
"जैसा कि आप जानते हैं, मैं राहेल को चिकित्सा सलाह के लिए लंदन लाई थी," उसने आगे कहा। "मुझे लगा कि दो डॉक्टरों से परामर्श करना सही रहेगा।"
दो डॉक्टर! और, हे भगवान (राहेल की हालत में), एक भी पादरी नहीं! "जी हाँ, प्रिय?" मैंने एक बार फिर कहा। "जी हाँ?"
मेरी चाची ने आगे बताया, “उन दो डॉक्टरों में से एक मेरे लिए अजनबी था। दूसरा मेरे पति का पुराना दोस्त था और मेरे पति की खातिर हमेशा से मेरी परवाह करता था। राहेल को दवाइयाँ लिखने के बाद उसने कहा कि वह मुझसे दूसरे कमरे में अकेले में

बात करना चाहता है। ज़ाहिर है, मुझे उम्मीद थी कि वह मेरी बेटी की सेहत की देखभाल के लिए कुछ खास निर्देश देगा। लेकिन मुझे हैरानी हुई जब उसने गंभीरता से मेरा हाथ पकड़ा और कहा, 'लेडी वेरेंडर, मैं आपको पेशेवर और व्यक्तिगत दोनों ही नज़रों से देख रहा हूँ। मुझे डर है कि आपको अपनी बेटी से कहीं ज़्यादा तुरंत चिकित्सीय सलाह की ज़रूरत है।'" उन्होंने मुझसे कुछ सवाल पूछे, जिन्हें मैंने पहले तो हल्के में लिया, लेकिन फिर मैंने देखा कि मेरे जवाबों से वे परेशान हो गए। बात यहाँ तक पहुँच गई कि उन्होंने अगले दिन मुझसे मिलने का समय तय किया, साथ में एक डॉक्टर दोस्त भी थे, और मिलने का समय ऐसा था जब राहेल घर पर नहीं होंगी। उस मुलाकात का नतीजा—जो मुझे बड़े ही प्यार और नरमी से बताया गया—दोनों डॉक्टरों को इस बात से संतुष्ट कर गया कि कीमती समय बर्बाद हो चुका है, जिसे कभी वापस नहीं पाया जा सकता, और अब मेरा मामला उनके बस से बाहर हो चुका है। दो साल से ज़्यादा समय से मैं दिल की एक ऐसी बीमारी से जूझ रहा हूँ जो धीरे-धीरे मुझे कमज़ोर कर रही है, और जिसके कोई लक्षण मुझे डरा नहीं रहे हैं, लेकिन इसने मुझे धीरे-धीरे जानलेवा बना दिया है। मैं कुछ महीने जी सकता हूँ, या हो सकता है कि एक दिन भी बीतने से पहले ही मेरी मृत्यु हो जाए—डॉक्टर इससे ज़्यादा पक्के तौर पर कुछ नहीं कह सकते, और कहने की हिम्मत भी नहीं करते। यह कहना व्यर्थ होगा, मेरे प्रिय, कि जब से मुझे अपनी असलियत पता चली है, तब से मैंने कुछ दुख भरे पल नहीं बिताए हैं। लेकिन मैं पहले से ज़्यादा शांत हूँ, और मैं अपने सांसारिक मामलों को सुलझाने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ। आदेश। मेरी सबसे बड़ी चिंता यही है कि राहेल को सच्चाई से अनजान रखा जाए। अगर उसे पता चल गया, तो वह तुरंत मेरी बिगड़ती सेहत का कारण हीरे को लेकर चिंता को बताएगी और खुद को बुरी तरह कोसेंगी, बेचारी बच्ची, जबकि इसमें उसकी कोई गलती नहीं है। दोनों डॉक्टर इस बात से सहमत हैं कि यह समस्या दो, या शायद तीन साल पहले शुरू हुई थी। मुझे पूरा यकीन है कि तुम मेरा राज़ रखोगी, ड्रूसिला—क्योंकि मुझे यकीन है कि तुम्हारे चेहरे पर मेरे लिए सच्ची उदासी और सहानुभूति दिखाई दे रही है।

दुःख और सहानुभूति! ओह, अपनी आस्था में दृढ़ विश्वास रखने वाली एक ईसाई अंग्रेज महिला से ऐसी नास्तिक भावनाओं की अपेक्षा करना कितना अनुचित है!

मेरी बेचारी चाची ने कल्पना भी नहीं की होगी कि उनकी दुख भरी कहानी के अंत तक पहुँचते ही मेरे भीतर कृतज्ञता का कितना गहरा ज्वार उमड़ आया। मेरे सामने उपयोगिता का एक नया जीवन खुल गया था! एक प्रिय रिश्तेदार और जीवन में एक

ऐसी साथी, जो मृत्यु के कगार पर थी, एक बड़े बदलाव की पूर्व संध्या पर, बिल्कुल भी तैयार नहीं थी; और ईश्वरीय कृपा से, उसने अपनी स्थिति मुझे बताई! मैं उस खुशी का वर्णन कैसे करूँ जो मुझे यह याद करके हुई कि मेरे जिन अनमोल पादरी मित्रों पर मैं भरोसा कर सकती थी, वे एक-दो नहीं, बल्कि दस-बीस की संख्या में थे। मैंने अपनी चाची को बाहों में भर लिया—मेरी उमड़ती कोमलता अब एक आलिंगन से कम किसी चीज़ से संतुष्ट नहीं हो सकती थी। "ओह!" मैंने उनसे भावुक होकर कहा, "आप मुझे कितनी असीम रुचि से भर देती हैं! ओह! प्रिय, बिछड़ने से पहले मैं आपके लिए कितना अच्छा काम करने वाली हूँ!" कुछ और गंभीर प्रारंभिक चेतावनियों के बाद, मैंने उन्हें तीन प्रिय मित्रों में से एक चुनने का विकल्प दिया, जो सभी उनके पड़ोस में सुबह से शाम तक परोपकार का कार्य कर रहे थे; सभी प्रोत्साहन देने में समान रूप से तत्पर थे; और सभी मेरे कहने पर अपनी प्रतिभा का उपयोग करने के लिए तैयार थे। अफसोस! परिणाम उत्साहजनक नहीं था। बेचारी लेडी वेरिंदर उलझन में और डरी हुई लग रही थीं, और मैंने उनसे जो कुछ भी कहा, उन्होंने विशुद्ध सांसारिक आपत्ति के साथ जवाब दिया कि उनमें अजनबियों का सामना करने की हिम्मत नहीं है। मैं मान गया—बेशक, केवल उस क्षण के लिए। मेरे व्यापक अनुभव (पाठक और आगंतुक के रूप में, चौदह प्रिय पादरी मित्रों के मार्गदर्शन में) ने मुझे बताया कि यह पुस्तकों के माध्यम से तैयारी का एक और मामला था। मेरे पास पुस्तकों का एक छोटा सा पुस्तकालय था, जो वर्तमान आपात स्थिति के लिए उपयुक्त था, जो मेरी चाची को प्रेरित करने, समझाने, तैयार करने, ज्ञान देने और मजबूत करने के लिए उपयुक्त था। "तुम पढ़ोगी, प्यारी, है ना?" मैंने अपने सबसे आकर्षक अंदाज में कहा। “अगर मैं तुम्हें अपनी अनमोल किताबें लाकर दूँ, तो तुम पढ़ोगी? चाची, मैंने उन्हें सही जगहों पर मोड़ दिया है। और पेंसिल से निशान भी लगा दिए हैं जहाँ तुम्हें रुककर खुद से पूछना है, 'क्या यह मेरे लिए उपयोगी है?'" दुनिया के प्रभाव ने इतना विकृत कर दिया है कि मेरी चाची की यह सरल अपील भी चौंक गई। उन्होंने आश्चर्य भरी नज़र से कहा, “ड्रूसिला, मैं तुम्हें खुश करने के लिए जो कर सकती हूँ, करूँगी।” उनका यह आश्चर्य देखना एक साथ शिक्षाप्रद और भयावह था। एक पल भी बर्बाद नहीं करना था। मेंटलपीस पर लगी घड़ी ने मुझे बताया कि मेरे पास घर जल्दी पहुँचने का समय है; कुछ चुनिंदा किताबें (लगभग एक दर्जन) पढ़ने के लिए; और वकील से मिलने और लेडी वेरेंडर की वसीयत पर गवाही देने के लिए समय पर वापस आने का। पाँच बजे तक वापस आने का पक्का वादा करके, मैं दया का काम करने के लिए घर से निकल पड़ी।

जब मेरे अपने हितों के अलावा कोई और हित शामिल नहीं होता, तो मैं विनम्रतापूर्वक एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के लिए बस का उपयोग करने में संतुष्ट रहता हूँ। मेरी चाची के हितों के प्रति मेरी निष्ठा को दर्शाने के लिए, मैं यह कहना चाहूँगा कि इस बार मैंने टैक्सी लेने की फिजूलखर्ची की।

मैं घर वापस आया, अपनी पहली पठन सामग्री का चयन किया और उसे चिह्नित किया, और एक कालीन के थैले में एक दर्जन रचनाएँ लेकर मोंटागु स्क्वायर वापस चला गया। मेरा दृढ़ विश्वास है कि ऐसी रचनाएँ यूरोप के किसी अन्य देश के साहित्य में नहीं मिलेंगी। मैंने टैक्सी ड्राइवर को ठीक-ठीक किराया दिया। उसने किराया लेते समय एक गाली दी; जिस पर मैंने तुरंत उसे एक पर्चा दे दिया। अगर मैंने उसके सिर पर पिस्तौल तान दी होती, तो भी यह दुष्ट इतना घबराया हुआ नहीं होता। वह अपनी गाड़ी की डिक्की पर उछल पड़ा और गुस्से में अपशब्द बोलते हुए गाड़ी भगा ले गया। बिल्कुल बेकार, मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है! मैंने उसकी परवाह किए बिना, टैक्सी की खिड़की से दूसरा पर्चा अंदर फेंककर अच्छाई का बीज बो दिया।

दरवाजा खोलने वाले नौकर ने—मेरी राहत की बात यह थी कि वह टोपी पर रिबन बांधने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि नौकर था—मुझे बताया कि डॉक्टर आए थे और अभी भी लेडी वेरेंडर के साथ कमरे में बंद हैं। वकील श्री ब्रूफ एक मिनट पहले ही आ चुके थे और पुस्तकालय में इंतजार कर रहे थे। मुझे भी पुस्तकालय में इंतजार करने के लिए कहा गया।

मुझे देखकर श्री ब्रूफ आश्चर्यचकित रह गए। वे परिवार के वकील हैं और हम लेडी वेरेंडर के घर पर पहले भी कई बार मिल चुके थे। मुझे यह कहते हुए दुख होता है कि वे दुनिया की सेवा करते-करते बूढ़े और अनुभवी हो गए हैं। वे अपने काम के समय में कानून और धन के ज्ञाता थे; और अपने खाली समय में उपन्यास पढ़ने और पर्चे फाड़ने में समान रूप से सक्षम थे।

"क्या आप यहां रहने आई हैं, मिस क्लैक?" उसने मेरे बैग की ओर देखते हुए पूछा।

ऐसे व्यक्ति के सामने अपने कीमती बैग की सामग्री का खुलासा करना सीधे तौर पर अपशब्दों की बौछार को न्योता देना होता। मैंने खुद को उसके स्तर तक गिराया और घर में अपने काम के बारे में बताया।

मैंने जवाब दिया, "मेरी चाची ने मुझे बताया है कि वह अपनी वसीयत पर हस्ताक्षर करने वाली हैं। उन्होंने कृपा करके मुझे गवाहों में से एक बनने के लिए कहा है।"

"जी? जी? ठीक है, मिस क्लैक, आप ठीक रहेंगी। आपकी उम्र इक्कीस साल से अधिक है, और लेडी वेरेंडर की वसीयत में आपका कोई आर्थिक हित नहीं है।"
लेडी वेरेंडर की वसीयत में ज़रा भी आर्थिक हित नहीं था। ओह, यह सुनकर मुझे कितनी राहत मिली! अगर मेरी चाची, जिनके पास हज़ारों की संपत्ति थी, मुझ जैसे बेचारे को याद रखतीं, जिसके लिए पाँच पाउंड भी मामूली रकम है—अगर वसीयत में मेरा नाम होता, और साथ में थोड़ी सी राहत भी होती—तो मेरे दुश्मन उस मकसद पर शक कर सकते थे जिसके लिए उन्होंने मुझे मेरी लाइब्रेरी के सबसे अनमोल खजाने दिए थे, और मेरी घटती हुई दौलत से टैक्सी का बेहिसाब खर्चा किया था। अब तो सबसे क्रूर उपहास करने वाला भी शक नहीं कर सकता। जैसा था वैसा ही बेहतर था! ओह, सच में, सच में, जैसा था वैसा ही बेहतर था!
श्री ब्रुफ की आवाज ने मुझे इन सुकून भरे विचारों से जगा दिया। मेरी मौन मुद्रा मानो इस सांसारिक व्यक्ति के मन पर गहरा प्रभाव डाल रही थी और मानो उसे अपनी इच्छा के विरुद्ध मुझसे बात करने के लिए विवश कर रही थी।
"अच्छा, मिस क्लैक, दान-पुण्य जगत में क्या ताज़ा ख़बर है? नॉर्थम्बरलैंड स्ट्रीट के बदमाशों द्वारा आपके मित्र श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट पर किए गए हमले के बाद उनका हालचाल कैसा है? अरे बाप रे! मेरे क्लब में उस दानवीर सज्जन के बारे में बड़ी बड़ी कहानी सुनाई जा रही है!"
मैंने उस बात पर ध्यान नहीं दिया था जिस तरह से उस व्यक्ति ने टिप्पणी की थी कि मेरी उम्र इक्कीस वर्ष से अधिक है और मेरी चाची की वसीयत में मेरा कोई आर्थिक हित नहीं है। लेकिन जिस लहजे में उसने प्रिय श्री गॉडफ्रे का जिक्र किया, वह मेरी सहनशीलता से परे था। उस दोपहर मेरी उपस्थिति में जो कुछ हुआ था, उसके बाद अपने प्रशंसनीय मित्र की निर्दोषता पर जब भी संदेह होता था, उसे साबित करना मेरा कर्तव्य बन गया था - और मैं यह स्वीकार करता हूँ कि इस नेक उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैंने श्री ब्रफ की कड़ी निंदा करना भी अपना कर्तव्य समझा।
मैंने कहा, "मैं दुनिया से बिल्कुल अलग-थलग रहता हूँ; और महोदय, मुझे किसी क्लब का सदस्य होने का लाभ भी प्राप्त नहीं है। लेकिन मैं उस कहानी को जानता हूँ जिसका आप जिक्र कर रहे हैं; और मैं यह भी जानता हूँ कि उस कहानी से भी घिनौना झूठ कभी नहीं बोला गया।"
जी हां, मिस क्लैक—आप अपने दोस्त पर भरोसा करती हैं। स्वाभाविक ही है। श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट को आम तौर पर दुनिया को मनाना उतना आसान नहीं होगा

जितना कि दयालु महिलाओं की एक समिति को। परिस्थितियाँ उनके खिलाफ हैं। हीरा खोते समय वे घर में ही थे। और बाद में घर से लंदन जाने वाले वे पहले व्यक्ति थे। बाद की घटनाओं के आलोक में देखें तो ये बहुत ही भयावह परिस्थितियाँ हैं, महोदया। मुझे पता है कि मुझे उसे आगे बढ़ने से पहले ही सही राह दिखा देनी चाहिए थी। मुझे उसे बता देना चाहिए था कि वह श्री गॉडफ्रे की निर्दोषता के प्रमाण से अनभिज्ञ होकर बोल रहा है, जो उस एकमात्र व्यक्ति द्वारा दिया गया है जो इस विषय का निर्विवाद रूप से पुख्ता ज्ञान रखता है। अफसोस! वकील को चतुराई से फंसाकर उसे ही शर्मिंदा करने का प्रलोभन मुझ पर हावी हो गया। मैंने उससे पूछा कि "बाद की घटनाओं" से उसका क्या मतलब है—पूरी तरह निर्दोषता का भाव दिखाते हुए।

"बाद की घटनाओं से मेरा तात्पर्य उन घटनाओं से है जिनमें भारतीयों का संबंध है," श्री ब्रुफ ने आगे कहा, और जैसे-जैसे वह बोलते गए, वे बेचारे मुझ पर और अधिक श्रेष्ठता का भाव प्रदर्शित करते गए। फ्रिज़िंगहॉल की जेल से छूटते ही भारतीय क्या करते हैं? वे सीधे लंदन जाते हैं और मिस्टर लूकर को निशाना बनाते हैं। आगे क्या होता है? मिस्टर लूकर अपने घर में रखी 'एक बहुमूल्य वस्तु' की सुरक्षा को लेकर चिंतित हो जाते हैं। वे उसे चुपके से (एक सामान्य विवरण के साथ) अपने बैंक के तिजोरी में रख देते हैं। यह उनकी बड़ी चतुराई थी: लेकिन भारतीय भी उतने ही चतुर थे। उन्हें शक था कि 'बहुमूल्य वस्तु' को एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा रहा है; और वे अपने इस शक को दूर करने का एक बेहद साहसिक और कारगर तरीका ढूंढ निकालते हैं। वे किसे पकड़ते हैं और किसकी तलाशी लेते हैं? सिर्फ मिस्टर लूकर को ही नहीं—जो कि स्वाभाविक है—बल्कि मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट को भी। क्यों? मिस्टर एबलव्हाइट का कहना है कि उन्होंने मिस्टर लूकर से गलती से बात करते हुए देखने के बाद सिर्फ शक के आधार पर कार्रवाई की। बेतुका! उस सुबह छह और लोगों ने मिस्टर लूकर से बात की थी। उनका भी घर तक पीछा क्यों नहीं किया गया? और क्या उन्हें जाल में फंसाया गया? नहीं! नहीं! सीधा निष्कर्ष यह है कि श्री एबलव्हाइट और श्री लूकर दोनों का ही उस 'कीमती वस्तु' में निजी हित था, और भारतीय इस बात को लेकर इतने अनिश्चित थे कि दोनों में से किसके पास वह वस्तु है, कि उनके पास दोनों की तलाशी लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। मिस क्लैक, जनमत यही कहता है। और इस मामले में जनमत को आसानी से नकारा नहीं जा सकता।

उन्होंने अपने सांसारिक घमंड में इतने अद्भुत रूप से बुद्धिमान दिखते हुए वे अंतिम शब्द कहे कि मैं वास्तव में (यह कहना मेरे लिए शर्म की बात है) उन्हें सच्चाई से

अभिभूत करने से पहले थोड़ा और आगे ले जाने से खुद को रोक नहीं सका।
मैंने कहा, "मैं आप जैसे चतुर वकील से बहस करने का साहस नहीं करता। लेकिन क्या श्री एबलव्हाइट के लिए यह उचित है कि इस मामले की जांच करने वाले लंदन के प्रसिद्ध पुलिस अधिकारी की राय को नज़रअंदाज़ कर दिया जाए? सार्जेंट कफ के मन में मिस वेरेंडर के अलावा किसी पर भी संदेह की कोई गुंजाइश नहीं थी।"
"क्या आप मुझे यह बताना चाहती हैं, मिस क्लैक, कि आप सार्जेंट से सहमत हैं?"
"मैं किसी का न्याय नहीं करता, महोदय, और मैं कोई राय नहीं देता।"
"और मैं ये दोनों गुनाह कबूल करता हूँ, महोदया। मेरा मानना है कि सार्जेंट पूरी तरह गलत था; और मेरा यह मत है कि अगर वह राहेल के स्वभाव को उतना जानता जितना मैं जानता हूँ, तो वह घर में हर किसी पर शक करता, सिवाय उस पर। मैं मानता हूँ कि उसमें कुछ कमियाँ हैं - वह रहस्यमयी और मनमानी करने वाली है; अजीब और बेबाक है, और अपनी उम्र की दूसरी लड़कियों से अलग है। लेकिन वह लोहे की तरह सच्ची, ऊँचे दिल वाली और हद से ज़्यादा उदार है। अगर दुनिया का सबसे स्पष्ट सबूत एक तरफ इशारा करे, और अगर राहेल के वचन के अलावा कुछ भी दूसरी तरफ इशारा न करे, तो मैं सबूत से पहले उसके वचन पर भरोसा करूँगा, भले ही मैं वकील हूँ! कड़े शब्दों का इस्तेमाल किया है, मिस क्लैक; लेकिन मेरा यही मतलब है।"
"क्या आप अपने कहने का अर्थ स्पष्ट करने में कोई आपत्ति करेंगे, श्रीमान ब्रफ़, ताकि मैं इसे अच्छी तरह समझ सकूँ? मान लीजिए कि मिस वेरेंडर श्री एबलव्हाइट और श्री लूकर के साथ जो कुछ हुआ है उसमें अप्रत्याशित रूप से रुचि रखती हैं? मान लीजिए कि वह इस भयानक घोटाले के बारे में सबसे अजीब सवाल पूछती हैं, और जब उन्हें पता चलता है कि मामला किस मोड़ पर जा रहा है तो वह बेहद बेचैन हो जाती हैं?"
"आप जो चाहें कह लें, मिस क्लैक, इससे राहेल वेरेंडर में मेरा विश्वास रत्ती भर भी नहीं डगमगाएगा।"
"क्या उस पर पूरी तरह से भरोसा किया जा सकता है?"
"इसलिए इस पर पूरी तरह से भरोसा किया जा सकता है।"
"तो मुझे आपको सूचित करने की अनुमति दें, श्री ब्रफ, कि श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट दो घंटे पहले इसी घर में थे, और मूनस्टोन के गायब होने में उनकी पूर्ण निर्दोषता की घोषणा स्वयं मिस वेरेंडर ने की थी, और उन्होंने जिस कड़े शब्दों का प्रयोग किया, वैसा मैंने अपने जीवन में किसी युवती द्वारा कभी नहीं सुना।"

मुझे अपनी जीत का आनंद मिला—भले ही यह एक अपवित्र जीत थी, मुझे यह स्वीकार करना ही पड़ेगा—कि श्री ब्रुफ मेरे कुछ सीधे-सादे शब्दों से पूरी तरह से भ्रमित और पराजित हो गए। वे उठ खड़े हुए और चुपचाप मेरी ओर देखते रहे। मैं बिना विचलित हुए अपनी जगह पर बैठा रहा और सारा वाकया जैसा हुआ था वैसा ही सुनाया। "और अब श्री एबलव्हाइट के बारे में आपका क्या कहना है?" मैंने अपनी बात समाप्त करते ही अत्यंत विनम्रता से पूछा।

"अगर राहेल ने उनकी बेगुनाही की गवाही दी है, मिस क्लैक, तो मैं यह कहने में संकोच नहीं करती कि मैं भी उनकी बेगुनाही पर उतना ही दृढ़ विश्वास रखती हूँ जितना आप रखती हैं: मैं भी बाकी दुनिया की तरह बाहरी दिखावे से गुमराह हो गई थी; और मैं आपके दोस्त पर लगे हर तरह के कलंक का सार्वजनिक रूप से खंडन करके अपनी ओर से हर संभव प्रायश्चित करूँगी। इस बीच, मुझे आपको उस कुशलता के लिए बधाई देने दीजिए जिस तरह से आपने उस समय मुझ पर पूरी ताकत से हमला किया जब मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। अगर आप पुरुष होतीं, तो आप मेरे पेशे में बहुत बड़ी उपलब्धियाँ हासिल कर लेतीं, महोदया।"

ये कहकर वह मुझसे मुंह फेरकर कमरे में इधर-उधर चिड़चिड़ाते हुए घूमने लगा।

मैं स्पष्ट रूप से देख सकता था कि मैंने इस विषय पर जो नई रोशनी डाली थी, उससे वह बहुत हैरान और परेशान हो गया था। जैसे-जैसे वह अपने विचारों में और अधिक मग्न होता गया, उसके होठों से कुछ ऐसे भाव निकले जिनसे मुझे खोए हुए मूनस्टोन के रहस्य के बारे में उसके अब तक के घृणित दृष्टिकोण का एहसास हुआ। उसने प्रिय श्री गॉडफ्रे पर हीरे की चोरी का संदेह करने में कोई संकोच नहीं किया था और राहेल के आचरण को अपराध को छिपाने के उदार इरादे का परिणाम माना था। मिस वेरेंडर के स्वयं के प्रमाण के आधार पर - जो कि श्री ब्रूफ की नज़र में पूरी तरह से अकाट्य प्रमाण है, जैसा कि आप जानते हैं - परिस्थितियों की वह व्याख्या अब पूरी तरह से गलत साबित हो गई थी। मैंने इस उच्च कानूनी अधिकारी को जिस उलझन में डाल दिया था, वह इतनी भारी थी कि वह इसे छुपा नहीं सका। "क्या मामला है!" मैंने उसे अपने आप से कहते सुना, चलते-चलते खिड़की पर रुककर और अपनी उंगलियों से शीशे पर थपथपाते हुए। "यह न केवल व्याख्या से परे है, बल्कि अनुमान से भी परे है।"

इन शब्दों में ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे मेरी ओर से कोई जवाब देना ज़रूरी हो—फिर भी, मैंने जवाब दिया! यह बात शायद ही विश्वास करने लायक है कि मैं मिस्टर ब्रफ़ को अब भी अकेला नहीं छोड़ सकता। यह तो लगभग मानवीय विकृति से परे है

कि मैंने उनकी कही बातों में खुद को उनके लिए अप्रिय साबित करने का एक नया अवसर खोज लिया। लेकिन—अरे, मेरे दोस्तों! मानवीय विकृति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है; और जब हमारी गिरी हुई प्रवृत्ति हम पर हावी हो जाती है तो कुछ भी संभव हो जाता है!

मैंने श्री ब्रूफ से कहा, "आपकी सोच में दखल देने के लिए क्षमा करें। लेकिन निश्चित रूप से कोई ऐसी अटकल है जो अभी तक हमारे दिमाग में नहीं आई है।"

"शायद, मिस क्लैक। मुझे नहीं पता कि यह क्या है।"

"इससे पहले कि मैं आपको श्री एबलव्हाइट की निर्दोषता के बारे में आश्वस्त कर पाता, महोदय, आपने उन पर संदेह करने के कारणों में से एक यह बताया था कि हीरा खो जाने के समय वे घर में मौजूद थे। कृपया मुझे याद दिला दें कि हीरा खो जाने के समय श्री फ्रैंकलिन ब्लेक भी घर में मौजूद थे।"

उस पुराने ख्यालों वाले व्यक्ति ने खिड़की छोड़ दी, मेरी कुर्सी के ठीक सामने एक कुर्सी पर बैठ गया और एक कठोर और क्रूर मुस्कान के साथ मुझे लगातार देखता रहा।

"आप उतनी अच्छी वकील नहीं हैं, मिस क्लैक," उन्होंने चिंतनशील भाव से कहा। "जितना मैंने सोचा था। आपको चीजों को शांत रखना नहीं आता।"

"मुझे खेद है कि मैं आपकी बात समझ नहीं पा रहा हूँ, श्रीमान ब्रफ," मैंने विनम्रतापूर्वक कहा।

"यह ठीक नहीं है, मिस क्लैक—यह दूसरी बार बिल्कुल भी ठीक नहीं है। जैसा कि आप भली-भांति जानती हैं, फ्रैंकलिन ब्लेक मेरे पसंदीदा लेखकों में से एक हैं। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बार मैं आपकी बात मान लेता हूँ, इससे पहले कि आप मुझ पर पलटवार करें। आप बिल्कुल सही हैं, महोदया। मुझे श्री एबलव्हाइट पर शक है, और इसी आधार पर श्री ब्लेक पर भी शक करना उचित है। बहुत अच्छा—चलिए, हम दोनों पर एक साथ शक करते हैं। हम कहेंगे कि मूनस्टोन चुराना उनके स्वभाव के अनुरूप है। सवाल सिर्फ इतना है कि क्या ऐसा करना उनके हित में था।"

मैंने टिप्पणी की, "श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के कर्ज पारिवारिक बदनामी का विषय हैं।"

और श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के कर्ज अभी उस स्तर तक नहीं पहुंचे हैं। बिलकुल सही। लेकिन मिस क्लैक, आपके सिद्धांत में दो अड़चनें हैं। मैं फ्रैंकलिन ब्लेक के मामलों का प्रबंधन करता हूँ, और मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि उनके अधिकांश लेनदार (उनके पिता को धनी जानते हुए) अपने कर्ज पर ब्याज लेने और अपने पैसे का इंतजार

करने के लिए तैयार हैं। यह पहली अड़चन है - जो काफी कठिन है। आपको दूसरी और भी कठिन लगेगी। मुझे स्वयं लेडी वेरेंडर से पता चला है कि उनकी बेटी उस दुष्ट इंडियन डायमंड के घर से गायब होने से पहले फ्रैंकलिन ब्लेक से शादी करने के लिए तैयार थी। उसने एक युवा लड़की के नखरे से उसे लुभाया और फिर मना कर दिया। लेकिन उसने अपनी माँ से कबूल किया था कि वह अपने चचेरे भाई फ्रैंकलिन से प्यार करती है, और उसकी माँ ने इस रहस्य को अपने चचेरे भाई फ्रैंकलिन को बता दिया था। तो मिस क्लैक, वह अपने लेनदारों के इंतजार करने के लिए तैयार था, और उसके सामने एक उत्तराधिकारी से शादी करने की निश्चित संभावना थी। आप उसे बदमाश समझिए; लेकिन बताइए। कृपया मुझे बताएं कि उसे मूनस्टोन क्यों चुराना चाहिए?
मैंने कोमल स्वर में कहा, "मनुष्य का हृदय अथाह है। भला कौन इसे समझ सकता है?"
दूसरे शब्दों में कहें तो, महोदया—भले ही उसके पास हीरा लेने का कोई ठोस कारण न हो—फिर भी हो सकता है उसने अपनी स्वाभाविक दुष्टता के कारण ही उसे ले लिया हो। ठीक है। मान लीजिए उसने ले लिया। भला क्यों—”
"श्रीमान ब्रफ, मुझे क्षमा करें। यदि मुझे शैतान का इस तरह से उल्लेख करते हुए सुना गया, तो मुझे कमरे से बाहर जाना होगा।"
"माफ़ कीजिए, मिस क्लैक—मैं भविष्य में अपने शब्दों के चुनाव में अधिक सावधान रहूँगा। मेरा बस यही पूछना था। मान लीजिए कि उसने हीरा चुराया भी था, तो फ्रैंकलिन ब्लेक ने उसे वापस पाने की कोशिश में घर में सबसे प्रमुख भूमिका क्यों निभाई? आप कह सकती हैं कि उसने चालाकी से ऐसा किया ताकि शक उससे हट जाए। मेरा जवाब है कि उसे शक हटाने की कोई ज़रूरत नहीं थी—क्योंकि किसी को उस पर शक ही नहीं था। उसने पहले तो (बिना किसी कारण के) अपनी स्वाभाविक दुष्टता के कारण मूनस्टोन चुराया; और फिर उसने हीरे के खोने के संबंध में एक ऐसी भूमिका निभाई, जिसकी कोई ज़रूरत नहीं थी, और जिसके कारण उसने उस युवती को बुरी तरह से नाराज़ कर दिया, जिससे वह शादी करने वाला था। अगर आप मूनस्टोन के गायब होने को फ्रैंकलिन ब्लेक से जोड़ने की कोशिश करती हैं, तो आप यही घिनौना तर्क देने पर मजबूर हो जाती हैं। नहीं, नहीं, मिस क्लैक! आज हम दोनों के बीच जो कुछ हुआ है, उसके बाद इस मामले में गतिरोध पूरी तरह से खत्म हो चुका है। राहेल की अपनी बेगुनाही..." (जैसा कि उसकी माँ जानती है, और जैसा कि मैं जानता हूँ) इसमें कोई संदेह नहीं है। श्री एबलव्हाइट की निर्दोषता भी उतनी ही निश्चित है—

वरना राहेल कभी इसकी गवाही न देती। और फ्रैंकलिन ब्लेक की निर्दोषता, जैसा कि आपने अभी देखा, अकाट्य रूप से सिद्ध होती है। एक ओर, हम इन सभी बातों के बारे में नैतिक रूप से आश्वस्त हैं। और दूसरी ओर, हम उतने ही आश्वस्त हैं कि कोई मूनस्टोन को लंदन लाया है, और श्री लूकर, या उनका बैंकर, इस समय निजी तौर पर उसके कब्जे में हैं। ऐसे मामले में मेरे अनुभव का क्या उपयोग है, किसी भी व्यक्ति के अनुभव का क्या उपयोग है? यह मुझे हैरान करता है; यह आपको हैरान करता है, यह सबको हैरान करता है।

नहीं—सब लोग नहीं। सार्जेंट कफ इससे हैरान नहीं थे। मैं इस बात का ज़िक्र अत्यंत विनम्रता से और राहेल पर कलंक लगाने के संदेह से बचने के लिए आवश्यक विरोध जताते हुए करने ही वाला था कि नौकरानी अंदर आकर बोली कि डॉक्टर जा चुके हैं और मेरी चाची हमारा स्वागत करने के लिए इंतज़ार कर रही हैं।

इससे चर्चा रुक गई। श्री ब्रुफ़ ने अपने कागज़ात समेटे, हमारी बातचीत से वे थोड़े थके हुए लग रहे थे। मैंने अपने बहुमूल्य प्रकाशनों से भरा थैला उठाया, ऐसा लग रहा था मानो मैं घंटों तक बोलती रह सकती थी। हम चुपचाप लेडी वेरेंडर के कमरे की ओर चल पड़े।

आगे की घटनाओं का वर्णन करने से पहले, मैं यहाँ यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मैंने वकील और मेरे बीच हुई बातचीत का वर्णन बिना किसी स्पष्ट उद्देश्य के नहीं किया है। मुझे मूनस्टोन की इस सनसनीखेज कहानी में अपना योगदान देते हुए न केवल संदेह के मोड़ का, बल्कि उन व्यक्तियों के नामों का भी खुलासा करना अनिवार्य है जिन पर उस समय संदेह टिका हुआ था जब भारतीय हीरा लंदन में होने का संदेह था। पुस्तकालय में श्री ब्रूफ के साथ हुई मेरी बातचीत का विवरण मुझे इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बिल्कुल उपयुक्त लगा—साथ ही, इससे मुझे अपने पापी आत्मसम्मान का त्याग करने का नैतिक लाभ भी मिला। मुझे यह स्वीकार करना पड़ा कि मेरी पतित प्रकृति मुझ पर हावी हो गई। इस अपमानजनक स्वीकारोक्ति के द्वारा, मैंने अपनी पतित प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली। नैतिक संतुलन बहाल हो गया; आध्यात्मिक वातावरण एक बार फिर स्वच्छ प्रतीत होता है। प्रिय मित्रों, अब हम आगे बढ़ सकते हैं।

अध्याय IV

वसीयत पर हस्ताक्षर करना मेरी उम्मीद से कहीं कम समय में हो गया। मुझे लगा कि यह काम बहुत जल्दबाजी में निपटाया गया। नौकर सैमुअल को दूसरे गवाह के तौर पर बुलाया गया और कलम तुरंत मेरी चाची के हाथ में थमा दी गई। इस गंभीर अवसर

पर कुछ उचित शब्द कहने की मेरी तीव्र इच्छा हुई। लेकिन श्री ब्रूफ के व्यवहार ने मुझे आश्वस्त कर दिया कि उनके कमरे में रहते हुए अपनी इस इच्छा को रोकना ही बुद्धिमानी होगी। दो मिनट से भी कम समय में सब कुछ समाप्त हो गया और सैमुअल (मेरी बातों से बेपरवाह होकर) नीचे चला गया।

श्री ब्रूफ ने वसीयत को समेटा और फिर मेरी ओर देखा; मानो सोच रहे हों कि क्या मैं उन्हें अपनी चाची के साथ अकेला छोड़ने जा रही हूँ। मुझे अपना परोपकारी कार्य पूरा करना था और मेरी गोद में बहुमूल्य प्रकाशनों से भरा थैला तैयार था। उन्हें सेंट पॉल कैथेड्रल को देखकर हिला देने की उम्मीद करना उतना ही मुश्किल था जितना कि मुझे। उनमें एक खूबी थी (निस्संदेह उनके सांसारिक अनुभव के कारण) जिसे मैं नकारना नहीं चाहती। वे चीजों को जल्दी समझ लेते थे। ऐसा प्रतीत हुआ कि मैंने उन पर लगभग वही प्रभाव डाला जो मैंने उस टैक्सी ड्राइवर पर डाला था। उन्होंने भी एक अपशब्द कहा और तेज़ी से वहाँ से चले गए, और मुझे मैदान की मालकिन छोड़ गए।

जैसे ही हम अकेले हुए, मेरी चाची सोफे पर लेट गईं और फिर कुछ उलझन भरी मुद्रा में अपनी वसीयत के विषय पर बात करने लगीं।

"मुझे उम्मीद है कि तुम खुद को उपेक्षित नहीं समझोगी, ड्रूसिला," उसने कहा। "मैं तुम्हें तुम्हारी छोटी सी विरासत अपने हाथों से देना चाहती हूँ, मेरी प्यारी।"

यह एक सुनहरा अवसर था! मैंने इसे तुरंत लपक लिया। दूसरे शब्दों में, मैंने झटपट अपना बैग खोला और सबसे ऊपर वाली किताब निकाली। यह प्रसिद्ध गुमनाम कृति (माना जाता है कि यह प्रिय मिस बेलोज़ की है) का एक प्रारंभिक संस्करण निकला—केवल पच्चीसवाँ संस्करण—जिसका शीर्षक था "घर में सर्प"। इस पुस्तक का उद्देश्य—जिससे सांसारिक पाठक शायद परिचित न हों—यह दिखाना है कि शैतान हमारे दैनिक जीवन के सबसे निर्दोष दिखने वाले कार्यों में भी हमारा इंतजार करता है। महिलाओं के लिए सबसे उपयुक्त अध्याय हैं "बालों के ब्रश में शैतान", "शीशे के पीछे शैतान", "चाय की मेज के नीचे शैतान", "खिड़की से बाहर शैतान"—और कई अन्य।

"प्यारी चाची, कृपया इस अनमोल किताब पर ध्यान दीजिए—और आप मुझे वह सब कुछ दे देंगी जो मैं माँगती हूँ।" ये कहते हुए मैंने किताब उन्हें सौंप दी, जो एक खास अंश पर खुली हुई थी—एकदम जोशीले शब्दों का प्रवाह! विषय: सोफे के कुशनों के बीच शैतान।

बेचारी लेडी वेरेंडर (अपने सोफे के कुशन पर बेफिक्र होकर लेटी हुई) ने किताब पर एक नजर डाली और पहले से कहीं ज्यादा उलझन में दिखते हुए उसे मुझे वापस दे

दिया।
"मुझे खेद है, ड्रूसिला," उसने कहा, "मुझे थोड़ा ठीक होने तक इंतजार करना होगा, तभी मैं इसे पढ़ पाऊंगी। डॉक्टर----"
जैसे ही उसने डॉक्टर का नाम लिया, मैं समझ गया कि क्या होने वाला है। अपने अतीत में, मृत्यु की ओर बढ़ रहे साथी मनुष्यों के बीच, मैंने बार-बार देखा था कि चिकित्सा जगत के कुख्यात नास्तिक लोग मेरे और मेरे परोपकारी कार्य के बीच आ जाते थे—इस घटिया बहाने से कि मरीज़ शांति चाहता है, और सबसे ज़्यादा जिस चीज़ से वह डरता है, वह है मिस क्लैक और उनकी किताबों का प्रभाव। ठीक वही अंधा भौतिकवाद (जो मेरी पीठ पीछे छल से काम कर रहा था) अब मुझसे मेरे उस एकमात्र अधिकार को छीनने की कोशिश कर रहा था जिस पर मेरी गरीबी का हक था—मेरी मरती हुई चाची में मेरा आध्यात्मिक अधिकार।
“डॉक्टर ने मुझे बताया,” मेरी बेचारी भोली रिश्तेदार ने आगे कहा, “कि आज मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। उन्होंने मुझे किसी अजनबी से मिलने से मना किया है; और आदेश दिया है कि अगर मैं पढ़ूँ भी तो केवल हल्की-फुल्की और मनोरंजक किताबें ही पढ़ूँ। ‘लेडी वेरेंडर, ऐसा कुछ मत करो जिससे तुम्हारा दिमाग थक जाए या तुम्हारी धड़कन तेज हो जाए’—ड्रूसिला, ये उनके आखिरी शब्द थे जब वे आज मुझे छोड़कर गए।”
इसके अलावा कोई चारा नहीं था सिवाय इसके कि पहले की तरह ही, केवल कुछ समय के लिए ही सही, फिर से हार मान ली जाए। चिकित्सक के कार्य की तुलना में मेरे जैसे कार्य के असीम महत्व का कोई भी खुला दावा, चिकित्सक को अपने रोगी की मानवीय कमजोरी का फायदा उठाने और मामले को छोड़ने की धमकी देने के लिए ही उकसाता। सौभाग्य से, अच्छे बीज बोने के अनेक तरीके हैं, और उन तरीकों में मुझसे बेहतर पारंगत शायद ही कोई हो।
"शायद एक-दो घंटे में तुम बेहतर महसूस करोगी, प्यारी," मैंने कहा। "या फिर कल सुबह तुम किसी कमी के एहसास के साथ उठोगी, और शायद यह साधारण सी किताब भी उसे पूरा कर दे। क्या तुम मुझे किताब यहीं छोड़ने दोगी, चाची? डॉक्टर को तो शायद ही कोई आपत्ति होगी!"
मैंने उसे सोफे के कुशनों के नीचे, आधा अंदर और आधा बाहर, उनके रूमाल और इत्र की बोतल के पास रख दिया। जब भी उनका हाथ इनमें से किसी को ढूंढता, किताब से टकरा जाता; और देर-सवेर (कौन जाने?) किताब उन्हें भी छू सकती थी।

यह सब करने के बाद, मुझे लगा कि अब चले जाना ही बेहतर होगा। "आप आराम कर लीजिए, प्यारी चाची; मैं कल फिर आऊँगी।" यह कहते हुए मेरी नज़र खिड़की की तरफ़ गई। वह डिब्बों और गमलों में लगे फूलों से भरी हुई थी। लेडी वेरेंडर को इन नाशवान खजानों से बहुत लगाव था, और उनकी आदत थी कि वे बार-बार उठकर उन्हें देखने और सूंघने जाती थीं। मेरे मन में एक नया विचार आया। "ओह! क्या मैं एक फूल ले सकती हूँ?" मैंने कहा—और इस तरह बिना किसी को शक हुए खिड़की तक पहुँच गई। फूल ले जाने के बजाय, मैंने अपने बैग से एक और किताब निकाल कर रख दी, जिसे मैंने चाची को आश्चर्यचकित करने के लिए जेरेनियम और गुलाबों के बीच छोड़ दिया। मन में एक सुखद विचार आया, "क्यों न मैं भी उसके लिए, बेचारी, हर उस कमरे में ऐसा ही करूँ जहाँ वह जाती है?" मैंने तुरंत अलविदा कहा और हॉल पार करके लाइब्रेरी में चली गई। सैमुअल मुझे छोड़ने आया और यह सोचकर कि मैं चली गई हूँ, वापस नीचे चला गया। लाइब्रेरी की मेज पर मैंने वे दो "मनोरंजक किताबें" देखीं जिनकी सिफारिश उस नास्तिक डॉक्टर ने की थी। मैंने तुरंत उन्हें अपनी दो कीमती किताबों से ढक दिया। नाश्ते के कमरे में मैंने अपनी चाची के पसंदीदा कैनरी पक्षी को पिंजरे में गाते हुए पाया। वह हमेशा खुद पक्षी को दाना खिलाती थीं। पिंजरे के ठीक नीचे वाली मेज पर कुछ ग्राउंडसेल (एक प्रकार का झाग) बिखरा हुआ था। मैंने ग्राउंडसेल के बीच एक किताब रख दी। ड्राइंग रूम में मुझे अपना बैग खाली करने के और भी सुखद अवसर मिले। पियानो पर मेरी चाची के पसंदीदा संगीत के टुकड़े बज रहे थे। मैंने संगीत के बीच दो और किताबें रख दीं। मैंने एक और किताब पीछे वाले ड्राइंग रूम में, कुछ अधूरी कढ़ाई के नीचे रख दी, जो मुझे पता था कि लेडी वेरेंडर का काम था। पीछे वाले ड्राइंग रूम से एक तीसरा छोटा कमरा निकलता था, जो दरवाज़े की जगह पर्दों से बंद था। मेरी चाची का सादा पुराना पंखा चिमनी पर रखा था। मैंने अपनी नौवीं किताब एक बहुत ही खास पन्ने पर खोली और उस जगह को याद रखने के लिए पंखे को निशान के तौर पर रख दिया। फिर सवाल आया कि क्या मुझे और ऊपर जाकर बेडरूम के फर्श पर कोशिश करनी चाहिए—इस बात का खतरा तो था ही कि अगर टोपी के रिबन वाला आदमी घर के ऊपरी हिस्से में हो और मुझे वहाँ देख ले तो मेरी बेइज्जती हो जाएगी। लेकिन अरे, इसकी क्या परवाह? बेइज्जती से डरने वाला बेचारा ईसाई ही होता है। मैं ऊपर चली गई, हर बात सहने के लिए तैयार। सब कुछ शांत और सुनसान था—शायद नौकरों के चाय का समय था। मेरी चाची का कमरा सामने था। मेरे प्यारे चाचा सर जॉन की छोटी सी तस्वीर बिस्तर के सामने वाली

दीवार पर टंगी थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह मुझे देखकर मुस्कुरा रही हो; मानो कह रही हो, "ड्रूसिला! एक किताब रख दो।" मेरी चाची के बिस्तर के दोनों ओर मेजें थीं। उसे नींद ठीक से नहीं आती थी, और रात में वह कई चीज़ें चाहती थी, या उसे लगता था कि वह चाहती है। मैंने एक तरफ माचिस के पास एक किताब रख दी, और दूसरी तरफ चॉकलेट ड्रॉप्स के डिब्बे के नीचे एक किताब। चाहे उसे माचिस चाहिए हो, या चॉकलेट ड्रॉप, उसकी नज़र या हाथ में एक अनमोल किताब हमेशा मौजूद रहती थी, और हर हाल में खामोशी से यही कहती थी, "आओ, मुझे आज़माओ! मुझे आज़माओ!" लेकिन अब मेरे बैग के नीचे एक किताब ही बची थी, और एक कमरा अभी भी अनछुआ था - बाथरूम, जो बेडरूम से जुड़ा हुआ था। मैंने अंदर झाँका; और मेरे अंदर की पवित्र आवाज़, जो कभी धोखा नहीं देती, ने मुझसे फुसफुसाकर कहा, "ड्रूसिला, तुम उससे हर जगह मिल चुकी हो; अब उससे बाथरूम में मिलो, और काम हो जाएगा।" मैंने एक कुर्सी पर पड़ा हुआ ड्रेसिंग गाउन देखा। उसमें एक जेब थी, और उस जेब में मैंने अपनी आखिरी किताब रख दी। क्या मेरे कर्तव्य के निर्वाह की उस अद्भुत अनुभूति को शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है, जब मैं चुपके से घर से निकल गया, किसी को शक नहीं हुआ, और जब मैंने खुद को सड़क पर अपने खाली थैले के साथ पाया? हे मेरे सांसारिक मित्रों, जो आनंद के भ्रम में डूबे हुए व्यभिचार के पथभ्रष्ट रास्तों पर भटकते हैं, खुश रहना कितना आसान है, बस अगर तुम अच्छे बन जाओ!

उस रात जब मैंने अपना सामान समेटा—जब मैंने अपनी धनी चाची के घर में ऊपर से नीचे तक बेहिसाब बिखेरी हुई अपनी सच्ची दौलत पर विचार किया—सच कहूँ तो, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं सारी चिंताओं से मुक्त हो गई हूँ, मानो मैं फिर से बच्ची बन गई हूँ। मैं इतनी खुश थी कि मैंने शाम की प्रार्थना का एक श्लोक गाया। मैं इतनी खुश थी कि दूसरा श्लोक गाने से पहले ही सो गई। बिलकुल बच्ची की तरह! बिलकुल बच्ची की तरह!

इस प्रकार मैंने वह आनंदमय रात बिताई। अगली सुबह उठकर मैंने कितना युवा महसूस किया! मैं यह भी कह सकता था कि मैं कितना युवा दिखता था, अगर मैं अपने नश्वर शरीर की चिंताओं पर ध्यान दे पाता। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता—और मैं कुछ भी नहीं कह सकता।

दोपहर के भोजन के समय के आसपास—आरामदायक चीजों के लिए नहीं, बल्कि अपनी प्यारी चाची को ढूंढने की निश्चितता के लिए—मैंने मोंटागु स्क्वायर जाने के लिए अपनी टोपी पहनी। जैसे ही मैं तैयार हुई, जिस कमरे में मैं रहती थी, वहाँ की नौकरानी

ने दरवाजे से झाँककर कहा, "लेडी वेरेंडर की नौकरानी, मिस क्लैक से मिलने आई हूँ।"
लंदन में रहने के दौरान मैं बैठक के कमरे में रहता था। सामने वाला कमरा मेरा बैठक कक्ष था। बहुत छोटा, छत बहुत नीची, सादा फर्नीचर—लेकिन, ओह, कितना साफ-सुथरा! मैंने गलियारे में देखा कि लेडी वेरेंडर के नौकरों में से किसने मुझे बुलाया है। वह युवा नौकर सैमुअल था—एक सभ्य, युवा, सीखने की ललक रखने वाला और बहुत ही विनम्र स्वभाव का व्यक्ति। मुझे हमेशा से सैमुअल में आध्यात्मिक रुचि रही थी और मैं उससे कुछ गंभीर बातें करना चाहता था। इस बार मैंने उसे अपने बैठक कक्ष में आमंत्रित किया।
वह बगल में एक बड़ा पार्सल दबाए अंदर आया। पार्सल नीचे रखते ही वह डर गया। "मेरी मालकिन, महोदया; और मैं आपको बताना चाहता था कि इसके अंदर एक पत्र है।" यह संदेश देते ही, उस युवा नौकर ने मुझे चौंका दिया, ऐसा लग रहा था मानो वह भाग जाना चाहता हो।
मैंने कुछ औपचारिक पूछताछ करने के लिए उसे रोक लिया। क्या मैं मोंटागु स्क्वायर जाकर अपनी चाची से मिल सकती हूँ? नहीं; वह गाड़ी में घूमने गई थीं। मिस राहेल उनके साथ गई थीं, और मिस्टर एबलव्हाइट भी गाड़ी में बैठ गए थे। यह जानते हुए कि मिस्टर गॉडफ्रे के परोपकारी कार्यों का कितना बकाया था, मुझे यह अजीब लगा कि वह एक आलसी आदमी की तरह गाड़ी में घूमने गए थे। मैंने सैमुअल को दरवाजे पर रोक लिया और कुछ और औपचारिक पूछताछ की। मिस राहेल उस रात एक बॉल पार्टी में जा रही थीं, और मिस्टर एबलव्हाइट ने उनके साथ कॉफी पीने और जाने का इंतजाम किया था। कल सुबह एक संगीत कार्यक्रम का विज्ञापन था, और सैमुअल को एक बड़ी पार्टी के लिए जगह लेने का आदेश दिया गया था, जिसमें मिस्टर एबलव्हाइट के लिए भी जगह थी। "सारे टिकट बिक सकते हैं, मिस," उस भोले-भाले युवक ने कहा, "अगर मैं दौड़कर तुरंत टिकट नहीं लाता!" वह ये कहते ही दौड़ पड़ा - और मैं फिर से अकेली रह गई, कुछ चिंताजनक विचारों में खो गई।
उस रात मदर्स स्मॉल क्लोथ्स कन्वर्जन सोसाइटी की एक विशेष बैठक थी, जिसे खास तौर पर मिस्टर गॉडफ्रे की सलाह और सहायता प्राप्त करने के उद्देश्य से बुलाया गया था। पैंटों की भारी भीड़ से जूझ रही हमारी छोटी सी संस्था को सहारा देने के बजाय, उन्होंने मोंटागु स्क्वायर में कॉफी पीने और उसके बाद एक बॉल पार्टी में जाने का इंतजाम कर लिया था! अगले दिन दोपहर को ब्रिटिश लेडीज सर्वेंट्स संडे स्वीटहार्ट

सुपरविजन सोसाइटी के उत्सव के लिए चुना गया था। उस संघर्षरत संस्था की जान और आत्मा, गॉडफ्रे, वहां उपस्थित होने के बजाय, सुबह के एक संगीत कार्यक्रम में सांसारिक लोगों की टोली में शामिल होने के लिए चले गए! मैंने खुद से पूछा कि इसका क्या मतलब है? अफसोस! इसका मतलब था कि हमारे ईसाई नायक को मेरे सामने एक नए रूप में प्रकट होना था, और मेरे मन में आधुनिक युग के सबसे भयानक पतन में से एक के साथ जुड़ना था।

चलिए, बीते दिन की घटनाओं पर लौटते हैं। अपने कमरे में अकेले पाकर, मेरा ध्यान स्वाभाविक रूप से उस पार्सल पर गया जिसने उस युवा नौकर को अजीब तरह से डरा दिया था। क्या मेरी चाची ने मुझे मेरी वादा की हुई विरासत भेजी थी? और क्या वह पुराने कपड़ों, घिसे-पिटे चांदी के चम्मचों, पुराने ज़माने के गहनों या इसी तरह की किसी चीज़ के रूप में थी? सब कुछ स्वीकार करने और किसी बात का विरोध न करने के लिए तैयार होकर, मैंने पार्सल खोला - और मेरे सामने क्या आया? वे बारह अनमोल प्रकाशन जो मैंने पिछले दिन घर में बिखेर दिए थे; डॉक्टर के आदेश पर सब मुझे वापस कर दिए गए थे! जब युवा सैमुअल अपना पार्सल मेरे कमरे में लाया तो वह डर से कांप उठा होगा! अपना यह घटिया काम पूरा करने के बाद वह भाग भी गया होगा! जहाँ तक मेरी चाची के पत्र की बात है, बेचारी, उसका सीधा सा मतलब यही था कि वह अपने डॉक्टर की बात मानने से इनकार नहीं कर सकती।

अब क्या किया जाए? अपनी ट्रेनिंग और सिद्धांतों के साथ, मुझे कभी एक पल का भी संदेह नहीं हुआ।

एक बार अंतरात्मा के बल पर आत्मनिर्भर हो जाने पर, एक बार स्पष्ट उपयोगिता के मार्ग पर चल पड़ने पर, सच्चा ईसाई कभी पीछे नहीं हटता। एक बार अपना मिशन मिल जाने पर, सार्वजनिक या निजी प्रभाव हम पर जरा भी असर नहीं डालते। चाहे कराधान मिशन का परिणाम हो; दंगे मिशन का परिणाम हो; युद्ध मिशन का परिणाम हो: हम अपने काम में लगे रहते हैं, बाहरी दुनिया में चल रहे हर मानवीय पहलू की परवाह किए बिना। हम तर्क से परे हैं; हम उपहास से परे हैं; हम किसी की आँखों से नहीं देखते, किसी के कानों से नहीं सुनते, किसी के दिल से नहीं महसूस करते, सिवाय अपने। कितना गौरवशाली विशेषाधिकार! और यह कैसे अर्जित किया जाता है? अरे, मेरे मित्रों, आप व्यर्थ की पूछताछ से बच सकते हैं! हम ही एकमात्र ऐसे लोग हैं जो इसे अर्जित कर सकते हैं - क्योंकि हम ही एकमात्र ऐसे लोग हैं जो हमेशा सही होते हैं।

मेरी गुमराह चाची के मामले में, धार्मिक दृढ़ता का अगला रूप मेरे सामने स्पष्ट रूप से प्रकट हो गया।
पादरी मित्रों द्वारा की गई तैयारी लेडी वेरेंडर की अनिच्छा के कारण विफल हो गई थी। डॉक्टर के अड़ियल हठ के कारण पुस्तकों द्वारा की गई तैयारी भी विफल हो गई थी। खैर, अब क्या किया जाए? अगला उपाय था - छोटे-छोटे नोट्स द्वारा तैयारी। दूसरे शब्दों में, पुस्तकें वापस भेज दी गई थीं, इसलिए पुस्तकों से चुने हुए अंश, अलग-अलग हाथों से कॉपी किए गए, और सभी मेरी चाची को पत्रों के रूप में संबोधित किए गए, कुछ डाक द्वारा भेजे जाने थे, और कुछ घर में उस योजना के अनुसार वितरित किए जाने थे जो मैंने पिछले दिन अपनाई थी। पत्रों के रूप में वे किसी संदेह को जन्म नहीं देंगे; पत्रों के रूप में उन्हें खोला जाएगा - और, एक बार खोले जाने पर, पढ़ा जा सकता है। उनमें से कुछ मैंने स्वयं लिखे। "प्रिय चाची, क्या मैं आपका ध्यान कुछ पंक्तियों की ओर आकर्षित कर सकती हूँ?" इत्यादि। "प्रिय चाची, मैं कल रात पढ़ रही थी, और मुझे संयोग से निम्नलिखित अंश मिला," इत्यादि। अन्य पत्र मेरे लिए मेरी सम्मानित सहकर्मी, मदर्स स्मॉल क्लोथ्स की बहनों ने लिखे थे। "प्रिय महोदया, एक सच्चे, यद्यपि विनम्र मित्र द्वारा आपमें दिखाई गई रुचि के लिए क्षमा करें।" "प्रिय महोदया, क्या कोई गंभीर व्यक्ति कुछ उत्साहवर्धक शब्द कहकर आपको आश्चर्यचकित कर सकता है?" इन और इसी तरह के अन्य विनम्र निवेदनों का उपयोग करते हुए, हमने अपने सभी अनमोल अंशों को इस रूप में पुनः प्रस्तुत किया कि डॉक्टर के सतर्क भौतिकवाद को भी इसका संदेह नहीं हुआ। शाम ढलने से पहले ही, मेरे पास अपनी चाची के लिए एक दर्जन जागृति पत्र थे, एक दर्जन जागृति पुस्तकों के स्थान पर। छह पत्र मैंने तुरंत डाक से भेजने की व्यवस्था की, और छह पत्र मैंने अगले दिन घर में व्यक्तिगत रूप से वितरित करने के लिए अपनी जेब में रख लिए।
दो बजे के कुछ ही समय बाद मैं एक बार फिर धार्मिक संघर्ष के मैदान में था, लेडी वेरेंडर के दरवाजे पर सैमुअल से और अधिक विनम्र पूछताछ कर रहा था।
मेरी चाची की रात अच्छी नहीं गुज़री थी। वह फिर से उसी कमरे में थीं जहाँ मैंने उनकी वसीयत देखी थी, सोफे पर आराम कर रही थीं और थोड़ी नींद लेने की कोशिश कर रही थीं।
मैंने कहा कि मैं पुस्तकालय में उसका इंतज़ार करूँगा, शायद उससे मिलने की उम्मीद में। चिट्ठियाँ बाँटने की हड़बड़ी में, मुझे राहेल के बारे में पूछने का ख्याल ही नहीं आया। घर में सन्नाटा था, और संगीत कार्यक्रम शुरू होने का समय भी बीत चुका

था। मैंने मान लिया था कि वह और उसके साथ आए लोग (जिनमें श्री गॉडफ्रे भी थे, अफसोस!) सभी संगीत कार्यक्रम में होंगे, और मैंने समय और अवसर का लाभ उठाते हुए अपने अच्छे काम में पूरी लगन से जुट गया।

मेरी चाची के सुबह के पत्र—जिनमें वे छह पत्र भी शामिल थे जो मैंने रात भर में डाक से भेजे थे—पुस्तकालय की मेज पर बिना खोले पड़े थे। जाहिर है, उन्हें इतने सारे पत्रों को पढ़ने में परेशानी हो रही थी—और अगर वे दिन में बाद में पुस्तकालय आतीं, तो शायद पत्रों की संख्या देखकर घबरा जातीं। मैंने अपने दूसरे सेट के छह पत्रों में से एक पत्र चिमनी के ऊपर अलग से रख दिया; ताकि बाकी पत्रों से अलग उसकी अकेली स्थिति उनकी जिज्ञासा को आकर्षित करे। दूसरा पत्र मैंने जानबूझकर नाश्ते के कमरे के फर्श पर रख दिया। मेरे बाद जो पहला नौकर अंदर जाएगा, वह सोचेगा कि मेरी चाची से वह पत्र गिर गया है, और उसे वापस लौटाने में खास सावधानी बरतेगा। इस तरह तहखाने में पत्र बोने के बाद, मैं हल्के कदमों से ऊपर भागा और ड्राइंग रूम के फर्श पर अपने पत्र बिखेर दिए।

जैसे ही मैं सामने वाले कमरे में दाखिल हुआ, मुझे सड़क के दरवाज़े पर दो बार दस्तक सुनाई दी—एक हल्की, धीमी, विनम्र दस्तक। इससे पहले कि मैं पुस्तकालय (जहाँ मुझे इंतज़ार करना था) में वापस जाने के बारे में सोच पाता, फुर्तीला नौजवान नौकर हॉल में दरवाज़ा खोलने के लिए आ गया। मुझे लगा कि इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। मेरी चाची की सेहत को देखते हुए, आम तौर पर आगंतुकों को अंदर आने की इजाज़त नहीं थी। लेकिन मुझे हैरानी और डर दोनों हुआ, क्योंकि उस हल्की दस्तक देने वाला आम नियमों का अपवाद निकला। मेरे नीचे से सैमुअल की आवाज़ (कुछ सवालों के जवाब देने के बाद, जो मुझे सुनाई नहीं दिए) ने साफ-साफ कहा, "ऊपर आइए, महोदय।" अगले ही पल मुझे कदमों की आहट सुनाई दी—एक आदमी के कदमों की आहट—जो ड्राइंग रूम की ओर आ रही थी। आखिर यह खास मेहमान कौन हो सकता है? जैसे ही मैंने खुद से यह सवाल पूछा, जवाब मेरे दिमाग में आ गया। आखिर यह डॉक्टर के अलावा और कौन हो सकता है?

किसी और आगंतुक के मामले में, मैं ड्राइंग रूम में ही खुद को प्रकट होने देता। पुस्तकालय से ऊबकर ऊपर चले जाना कोई असामान्य बात नहीं थी। लेकिन मेरी आत्मसम्मान की भावना उस व्यक्ति से मिलने से हिचक रही थी जिसने मेरी किताबें लौटाकर मेरा अपमान किया था। मैं चुपके से उस छोटे से तीसरे कमरे में चला गया, जिसका मैंने उल्लेख किया है कि वह पीछे वाले ड्राइंग रूम से जुड़ा हुआ है, और खुले

दरवाजे पर लगे पर्दे गिरा दिए। अगर मैं वहाँ एक-दो मिनट रुकता, तो ऐसे मामलों में जो होता है वही होता। यानी, डॉक्टर को उसके मरीज के कमरे में ले जाया जाता।
मैंने एक-दो मिनट इंतज़ार किया, और फिर एक-दो मिनट से भी ज़्यादा। मैंने आगंतुक को बेचैनी से इधर-उधर चलते सुना। मैंने उसे खुद से बात करते भी सुना। मुझे लगा जैसे मैंने उसकी आवाज़ पहचान ली हो। क्या मुझसे कोई गलती हो गई? क्या वह डॉक्टर नहीं, बल्कि कोई और था? जैसे कि मिस्टर ब्रूफ? नहीं! मेरी अंतरात्मा ने मुझे बताया कि वह मिस्टर ब्रूफ नहीं थे। जो भी थे, वे अब भी खुद से बात कर रहे थे। मैंने भारी पर्दों को ज़रा सा हटाया और सुना।
मैंने जो शब्द सुने वे थे, "मैं इसे आज ही करूँगा!" और ये शब्द मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट की आवाज़ में निकले थे।

अध्याय V

मेरा हाथ पर्दे से हट गया। लेकिन ऐसा मत सोचो—बिल्कुल मत सोचो—कि मेरी स्थिति की भयानक शर्मिंदगी मेरे दिमाग में सबसे ऊपर थी! श्री गॉडफ्रे के प्रति मेरी बहन जैसी दिलचस्पी इतनी प्रबल थी कि मैंने खुद से यह पूछने की ज़हमत ही नहीं उठाई कि वे संगीत कार्यक्रम में क्यों नहीं थे। नहीं! मैं केवल उनके शब्दों—उन चौंकाने वाले शब्दों—के बारे में सोच रही थी जो अभी-अभी उनके मुँह से निकले थे। वे आज ऐसा करेंगे। उन्होंने दृढ़ निश्चय के स्वर में कहा था, वे आज ऐसा करेंगे। आखिर वे क्या करेंगे? क्या वे कुछ ऐसा करेंगे जो उनके पहले किए गए काम से भी कहीं अधिक निंदनीय होगा? क्या वे धर्म त्याग देंगे? क्या वे हमें मदर्स स्मॉल क्लोथ्स कार्यक्रम में छोड़ देंगे? क्या हमने समिति कक्ष में उनकी देवदूत जैसी मुस्कान आखिरी बार देखी थी? क्या हमने एक्सेटर हॉल में उनके अद्वितीय वाक्पटुता का आखिरी बार अनुभव किया था? ऐसे व्यक्ति से जुड़ी इन भयानक घटनाओं के ख्याल मात्र से ही मैं इतनी घबरा गई थी कि मुझे लगता है कि मैं अपने छिपने की जगह से दौड़कर बाहर आ जाती और लंदन की सभी महिला समितियों की ओर से उससे स्पष्टीकरण मांगती—तभी अचानक कमरे में एक और आवाज सुनाई दी। वह पर्दों को भेदकर आई; वह तेज थी, वह साहसी थी, उसमें नारीत्व का कोई आकर्षण नहीं था। वह आवाज थी राहेल वेरेंडर की।
"गॉडफ्रे, तुम यहाँ क्यों आए हो?" उसने पूछा। "तुम पुस्तकालय में क्यों नहीं गए?"
वह धीरे से हँसा और बोला, "मिस क्लैक पुस्तकालय में हैं।"

"पुस्तकालय में खटखट!" वह तुरंत पीछे वाले ड्राइंग रूम में रखे फुटरेस्ट पर बैठ गई। "तुम बिल्कुल सही कह रहे हो, गॉडफ्रे। हमें यहीं रुक जाना चाहिए।"
कुछ देर पहले तक मुझे तेज़ बुखार था और मैं असमंजस में था कि आगे क्या करूँ। अब मुझे बहुत ठंड लग रही थी और मुझे कोई संदेह नहीं था। जो कुछ मैंने सुना था, उसके बाद खुद को प्रकट करना असंभव था। पीछे हटना—सिवाय अंगीठी में शरण लेने के—भी नामुमकिन था। शहादत मेरे सामने थी। अपने साथ न्याय करने के लिए, मैंने चुपचाप पर्दे इस तरह लगाए कि मैं देख और सुन सकूँ। और फिर मैंने एक आदिम ईसाई की भावना के साथ अपनी शहादत को गले लगाया।
"फुटपाथ पर मत बैठो," युवती ने आगे कहा। "एक कुर्सी लाओ, गॉडफ्रे। मुझे अच्छा लगता है जब लोग मुझसे बात करते समय मेरे सामने बैठे हों।"
वह पास वाली कुर्सी पर बैठ गया। वह एक नीची कुर्सी थी। वह बहुत लंबा था, और वह कुर्सी उसके लिए बहुत बड़ी थी। मैंने पहले कभी उसके पैरों को इस तरह असहज स्थिति में नहीं देखा था।
"तो?" उसने आगे पूछा। "आपने उनसे क्या कहा?"
"बिल्कुल वही जो तुमने मुझसे कहा था, प्रिय रेचल।"
"क्या आज मम्मी की तबीयत बिल्कुल ठीक नहीं थी? और मुझे उन्हें छोड़कर कॉन्सर्ट में जाना बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था?"
"ये शब्द थे। कॉन्सर्ट में आपको खोने से वे दुखी थे, लेकिन वे आपकी स्थिति को पूरी तरह समझते थे। सभी ने अपना प्यार भेजा; और सभी ने यह आशा व्यक्त की कि लेडी वेरेंडर की बीमारी जल्द ही ठीक हो जाएगी।"
"तुम्हें नहीं लगता कि यह गंभीर मामला है, है ना, गॉडफ्रे?"
"बिल्कुल नहीं! मुझे पूरा यकीन है कि कुछ ही दिनों में सब कुछ फिर से ठीक हो जाएगा।"
मुझे भी ऐसा ही लगता है। पहले तो मैं थोड़ा डर गई थी, लेकिन मुझे भी ऐसा ही लगता है। उन लोगों के सामने जाकर मेरी तरफ से माफी मांगना बहुत अच्छा लगा जो लगभग अजनबी थे। लेकिन उनके साथ कॉन्सर्ट में क्यों नहीं गए? यह बहुत दुख की बात है कि आप भी संगीत से वंचित रह गए।
"ऐसा मत कहो, रेचल! अगर तुम्हें पता होता कि मैं यहाँ तुम्हारे साथ कितना खुश हूँ!"
उसने अपने हाथ जोड़े और उसकी ओर देखा। जिस मुद्रा में वह था, उसी मुद्रा में उसने मेरी ओर देखा। क्या शब्दों में बयान कर सकते हैं कि मैं कितना विचलित हो गया जब

मैंने उसके चेहरे पर ठीक वही दयनीय भाव देखा, जिसने मुझे तब मोहित कर लिया था जब वह एक्सेटर हॉल के मंच पर अपने लाखों बेसहारा साथियों के लिए प्रार्थना कर रहा था!

"अपनी बुरी आदतों से छुटकारा पाना मुश्किल है, गॉडफ्रे। लेकिन तारीफ करने की आदत छोड़ने की कोशिश जरूर करो—प्लीज, मुझे खुश करने के लिए।"

"मैंने अपनी जिंदगी में कभी तुम्हारी तारीफ नहीं की, रेचल। मैं मानता हूँ कि सफल प्रेम कभी-कभी चापलूसी की भाषा का इस्तेमाल करता है। लेकिन प्रियतम, निराशा से भरा प्रेम हमेशा सच बोलता है।"

उसने अपनी कुर्सी पास खींची और उसका हाथ थामते हुए कहा, "निराशाजनक प्रेम।"

पल भर सन्नाटा छा गया। जिसने सबको रोमांचित कर दिया था, उसने निस्संदेह उसे भी रोमांचित कर दिया था। मुझे लगा कि अब मैं उन शब्दों का अर्थ समझ गई हूँ जो उसने ड्राइंग रूम में अकेले में कहे थे, "मैं आज ही कर लूँगा।" अफसोस! सबसे सख्त मर्यादा भी शायद ही इस बात को न समझ पाती कि वह अब ऐसा कर रहा था।

"क्या तुम वह बात भूल गए हो जिस पर हम सहमत हुए थे, गॉडफ्रे, जब तुमने मुझसे गाँव में बात की थी? हम इस बात पर सहमत हुए थे कि हम चचेरे भाई होंगे, और इससे ज्यादा कुछ नहीं।"

"मैं हर बार जब तुम्हें देखता हूँ, तो समझौते का उल्लंघन करता हूँ, रेचल।"

"तो फिर मुझसे मत मिलना।"

"बिल्कुल बेकार! जब भी मैं तुम्हारे बारे में सोचता हूँ, मैं अपना वादा तोड़ देता हूँ। ओह, रेचल! तुमने कितनी प्यारी बात कही थी, कुछ ही दिन पहले, कि तुम्हारी नज़र में मेरा स्थान पहले से कहीं अधिक ऊँचा हो गया है! क्या मैं पागल हूँ जो उन प्यारे शब्दों पर इतनी उम्मीदें लगाए बैठा हूँ? क्या मैं पागल हूँ जो उस भविष्य के दिन का सपना देख रहा हूँ जब तुम्हारा दिल मेरे लिए नरम हो जाएगा? अगर मैं पागल हूँ, तो मुझे ऐसा मत कहना! मुझे मेरा भ्रम ही रहने दो, प्रियतम! मुझे बस यही संजोना है, और यही मुझे सुकून देगा, अगर मेरे पास और कुछ नहीं है तो!"

उनकी आवाज़ कांप रही थी, और उन्होंने अपना सफेद रुमाल अपनी आँखों पर रख लिया। फिर से एक्सेटर हॉल! इस समानता को पूरा करने के लिए बस दर्शकों, तालियों की गड़गड़ाहट और पानी के गिलास की कमी थी।

उसकी हठी प्रकृति भी पिघल गई। मैंने देखा कि वह थोड़ा और उसके करीब झुक गई। उसके अगले शब्दों में मुझे रुचि का एक नया स्वर सुनाई दिया।

"गॉडफ्रे, क्या तुम्हें वाकई यकीन है कि तुम मुझसे इतना प्यार करते हो?"
"ज़रूर! तुम जानती हो मैं पहले क्या था, रेचल। चलो मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं अब क्या हूँ। मैंने जीवन में सारी रुचि खो दी है, सिवाय तुम्हारे। मुझमें एक ऐसा बदलाव आ गया है जिसे मैं खुद भी नहीं समझ पा रहा। यकीन मानोगी? मेरा धर्मार्थ कार्य मेरे लिए असहनीय झंझट बन गया है; और अब जब मैं किसी महिला समिति को देखता हूँ, तो मेरा मन करता है कि मैं दुनिया के सबसे दूर कोने में पहुँच जाऊँ!"
यदि धर्मत्याग के इतिहास में ऐसी किसी घोषणा के समान कुछ मिलता है, तो मैं केवल इतना ही कह सकती हूँ कि मेरे अध्ययन भंडार में ऐसा कोई उदाहरण नहीं है। मैंने 'मदर्स स्मॉल क्लोथ्स' के बारे में सोचा। मैंने 'संडे स्वीटहार्ट सुपरविजन' के बारे में सोचा। मैंने अन्य कई सोसाइटियों के बारे में सोचा, जिनका उल्लेख करना असंभव है, और जो सभी इस व्यक्ति को शक्ति के स्तंभ के रूप में इस्तेमाल करती थीं। मैंने संघर्षरत महिला बोर्डों के बारे में सोचा, जो एक तरह से श्री गॉडफ्रे के प्रभाव में अपना जीवन यापन करती थीं - उसी श्री गॉडफ्रे के प्रभाव में, जिन्होंने अभी-अभी हमारे अच्छे काम को "परेशानी" कहकर निंदा की थी - और अभी-अभी कहा था कि जब वे हमारे बीच होते हैं तो वे चाहते हैं कि वे पृथ्वी के सुदूर छोर पर हों! मेरी युवा महिला मित्रों को दृढ़ रहने की प्रेरणा मिलेगी, जब मैं यह बताऊँगी कि इसने मेरे संयम की भी परीक्षा ली, इससे पहले कि मैं अपने धार्मिक आक्रोश को चुपचाप दबा पाती। साथ ही, यह कहना भी मेरे लिए न्यायसंगत होगा कि मैंने बातचीत का एक भी शब्द नहीं छोड़ा। इसके बाद राहेल ने बोलना शुरू किया।
"तुमने अपना गुनाह कबूल कर लिया है," उसने कहा। "मुझे आश्चर्य है कि अगर मैं भी अपना गुनाह कबूल कर लूँ, तो क्या इससे तुम्हारे मेरे प्रति इस दुखद लगाव का इलाज हो जाएगा?"
वह चौंक गया। मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं भी चौंक गया था। उसने सोचा, और मैंने भी सोचा, कि वह मूनस्टोन के रहस्य को उजागर करने वाली है।
"क्या तुम्हें मुझे देखकर ऐसा लगता है कि मैं दुनिया की सबसे दुखी लड़की हूँ? यह सच है, गॉडफ्रे। खुद को नीचा समझने से बढ़कर और क्या दुख हो सकता है? यही मेरी आज की जिंदगी है।"
"मेरी प्यारी रेचल! ऐसा हो ही नहीं सकता कि तुम्हारे पास अपने बारे में इस तरह बोलने का कोई कारण हो!"
"आपको कैसे पता कि मेरे पास कोई कारण नहीं है?"

"क्या तुम मुझसे सवाल पूछ सकते हो? मैं जानता हूँ, क्योंकि मैं तुम्हें जानता हूँ। प्रियतम, तुम्हारी चुप्पी ने तुम्हारे सच्चे मित्रों की नज़र में तुम्हें कभी नीचा नहीं दिखाया है। तुम्हारे अनमोल जन्मदिन के उपहार का गायब होना अजीब लग सकता है; उस घटना से तुम्हारा अनसुलझा संबंध और भी अजीब लग सकता है।"
"क्या आप मूनस्टोन की बात कर रहे हैं, गॉडफ्रे----"
"मुझे तो यही लगा था कि आप यही कह रहे थे----"
मैंने इस तरह की किसी बात का ज़िक्र नहीं किया। मूनस्टोन के खो जाने की खबर सुनकर मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, चाहे कोई भी इसके बारे में बात करे। अगर हीरे की कहानी कभी सामने आती है, तो यह पता चलेगा कि मैंने एक भयानक ज़िम्मेदारी ली थी; यह पता चलेगा कि मैंने एक घिनौने राज़ को छुपाने में खुद को उलझा लिया था —लेकिन यह बात दोपहर के सूरज की तरह साफ़ होगी कि मैंने कुछ भी बुरा नहीं किया! तुमने मुझे गलत समझा है, गॉडफ्रे। साफ़-साफ़ न बोलने की गलती मेरी है। चाहे मुझे कुछ भी कीमत चुकानी पड़े, अब मैं साफ़-साफ़ बोलूंगी। मान लो कि तुम मुझसे प्यार नहीं करते? मान लो कि तुम किसी और औरत से प्यार करते हो?
"हाँ?"
"मान लीजिए कि आपको पता चलता है कि वह महिला आपके बिल्कुल भी लायक नहीं है? मान लीजिए कि आप पूरी तरह से आश्वस्त हैं कि उसके बारे में एक और विचार करना भी आपके लिए शर्म की बात है? मान लीजिए कि ऐसे व्यक्ति से कभी शादी करने का विचार मात्र ही आपके चेहरे को लाल कर देता है।"
"हाँ?"
और मान लो, इन सब के बावजूद—तुम उसे अपने दिल से नहीं निकाल पाए? मान लो, जो भावना उसने तुम्हारे अंदर जगाई थी (जब तुम उस पर विश्वास करते थे) वो छिपाने लायक भावना नहीं थी? मान लो, उस नीच औरत ने तुम्हारे अंदर जो प्यार जगाया था? ओह, मैं इसे शब्दों में कैसे बयां करूं! मैं एक आदमी को कैसे समझाऊं कि जो भावना मुझे खुद पर शर्मिंदा करती है, वही मुझे मोहित भी कर सकती है? ये मेरी सांस है, गॉडफ्रे, और ये वो जहर है जो मुझे मारता है—दोनों एक ही में! चले जाओ! मैं अभी जिस तरह बोल रही हूं, उससे लगता है कि मैं पागल हो गई हूं। नहीं! तुम्हें मुझे छोड़कर नहीं जाना चाहिए—तुम्हें गलतफहमी नहीं होनी चाहिए। मुझे अपने बचाव में जो कहना है, वो कहना ही होगा। ध्यान रहे! उसे नहीं पता—उसे कभी नहीं पता चलेगा, जो मैंने तुम्हें बताया है। मैं उसे कभी नहीं देखूंगी—मुझे परवाह नहीं कि क्या होता है—

मैं उसे कभी, कभी, कभी दोबारा नहीं देखूंगी! मुझसे उसके बारे में मत पूछो। नाम! मुझसे और कुछ मत पूछो! चलो विषय बदलते हैं। क्या तुम इतने डॉक्टर हो, गॉडफ्रे, कि मुझे बता सको कि मुझे ऐसा क्यों लग रहा है जैसे मैं सांस लेने में असमर्थ हूँ? क्या हिस्टीरिया का कोई ऐसा रूप होता है जिसमें आँसुओं की जगह शब्द फूट पड़ते हैं? मुझे लगता है! इससे क्या फर्क पड़ता है? मैंने तुम्हें जो भी परेशानी दी है, उसे तुम आसानी से भूल जाओगे। तुम्हारी नज़र में मैं अपनी सही जगह पर आ गया हूँ, है ना? मेरी तरफ ध्यान मत दो! मुझ पर दया मत करो! भगवान के लिए, चले जाओ!

वह अचानक मुड़ी और सोफे की पीठ पर बेतहाशा हाथ पटकने लगी। उसका सिर तकियों पर गिर पड़ा और वह फूट-फूट कर रोने लगी। इससे पहले कि मैं इस सदमे से उबर पाता, मिस्टर गॉडफ्रे की ओर से एक बिल्कुल अप्रत्याशित घटना ने मुझे दहला दिया। क्या यह मानना उचित होगा कि वह उसके पैरों पर घुटने टेक दिए? - दोनों घुटनों पर, मैं पूरी ईमानदारी से कहता हूँ! क्या विनम्रता से यह उल्लेख किया जा सकता है कि उन्होंने उसे अपनी बाहों में भर लिया? और क्या अनिच्छा से की गई प्रशंसा इस बात को स्वीकार कर सकती है कि उन्होंने दो शब्दों से उसे मंत्रमुग्ध कर दिया?

"महान प्राणी!"

बस इतना ही! लेकिन उन्होंने इसे उसी जोश के साथ किया जिसने उन्हें एक सार्वजनिक वक्ता के रूप में प्रसिद्धि दिलाई है। वह या तो पूरी तरह से स्तब्ध थीं, या पूरी तरह से मंत्रमुग्ध—मुझे नहीं पता—और उन्होंने उनके हाथों को वापस उनकी सही जगह पर रखने की कोशिश तक नहीं की। जहाँ तक मेरी बात है, मेरी शालीनता पूरी तरह से चकरा गई थी। मैं इतनी बुरी तरह असमंजस में थी कि मेरा पहला कर्तव्य आँखें बंद करना था या कान बंद करना, इसलिए मैंने दोनों में से कुछ भी नहीं किया। पर्दे को सही स्थिति में पकड़े रहने की मेरी क्षमता का श्रेय मैं पूरी तरह से दबी हुई हिस्टीरिया को देती हूँ। दबी हुई हिस्टीरिया में, यहाँ तक कि डॉक्टर भी मानते हैं कि कुछ न कुछ पकड़ना ज़रूरी होता है।

“हाँ,” उन्होंने अपने जोशीले स्वर और भाव से कहा, “तुम एक महान प्राणी हो! जो स्त्री सत्य की खातिर सत्य बोलती है—जो स्त्री अपने स्वाभिमान का त्याग कर देती है, न कि उस ईमानदार पुरुष का जो उससे प्रेम करता है—वह अनमोल है। जब ऐसी स्त्री विवाह करती है, तो यदि उसका पति केवल उसका आदर और सम्मान जीत लेता है, तो वह अपने पूरे जीवन को महान बनाने के लिए पर्याप्त धन जीत लेता है। प्रियतम,

तुमने मेरे मन में अपने स्थान का वर्णन किया है। तुम स्वयं उस स्थान का मूल्यांकन करो—जब मैं तुम्हारे सामने घुटने टेककर विनती करता हूँ कि तुम्हारे दुखी हृदय के उपचार का दायित्व मुझ पर छोड़ दो। राहेल! क्या तुम मेरी पत्नी बनकर मुझे सम्मान दोगी, क्या तुम मुझे आशीर्वाद दोगी?"

इस समय तक तो मैं निश्चित रूप से अपने कान बंद करने का फैसला कर चुका होता, अगर राहेल ने मुझे अपने कान खुले रखने के लिए प्रोत्साहित न किया होता, और उसे उन पहले समझदारी भरे शब्दों में जवाब न दिया होता जो मैंने कभी उसके मुंह से सुने थे।

"गॉडफ्रे!" उसने कहा, "तुम पागल हो गए हो!"

प्रियतम, मैंने इससे अधिक समझदारी से कभी बात नहीं की—आपके हित में भी और अपने हित में भी। एक पल के लिए भविष्य के बारे में सोचो। क्या तुम अपनी खुशी उस आदमी के लिए कुर्बान कर दोगी जिसने कभी तुम्हारे दिल की बात नहीं जानी और जिसे तुम फिर कभी न देखने का निश्चय कर चुकी हो? क्या इस दुर्भाग्यपूर्ण रिश्ते को भूल जाना तुम्हारा कर्तव्य नहीं है? और क्या तुम जो जीवन जी रही हो उसमें विस्मृति संभव है? तुमने वह जीवन जी लिया है और अब उससे ऊब चुकी हो। अपने आप को संसार की तुच्छ रुचियों से दूर रखो। एक ऐसा हृदय जो तुमसे प्रेम करे और तुम्हारा सम्मान करे; एक ऐसा घर जिसके शांतिपूर्ण परिवेश और सुखदायी कर्तव्य तुम्हें दिन-प्रतिदिन अपने वश में कर लें—राहेल, वहाँ मिलने वाले सुकून को महसूस करो! मैं तुम्हारा प्रेम नहीं माँगता—मैं तुम्हारे स्नेह और सम्मान से ही संतुष्ट रहूँगा। बाकी सब कुछ अपने पति की निष्ठा और समय पर छोड़ दो, जो तुम्हारे जैसे गहरे घावों को भी भर देता है।

वह पहले से ही झुकने लगी थी। ओह, उसकी परवरिश कितनी कठिन रही होगी! ओह, उसकी जगह मैं होती तो कितना अलग व्यवहार करती!

"मुझे उकसाओ मत, गॉडफ्रे," उसने कहा; "मैं पहले से ही बहुत दुखी और लापरवाह हूँ। मुझे और दुखी और लापरवाह होने के लिए उकसाओ मत!"

"एक सवाल, रेचल। क्या आपको मुझसे कोई व्यक्तिगत आपत्ति है?"

"मैं! मुझे आप हमेशा से पसंद थे। आपने अभी जो मुझसे कहा है, उसके बाद अगर मैं आपका सम्मान और प्रशंसा न करूं तो मैं वास्तव में मूर्ख ही कहलाऊंगा।"

"मेरी प्यारी राहेल, क्या तुम ऐसी कई पत्नियों को जानती हो जो अपने पतियों का आदर और प्रशंसा करती हैं? और फिर भी वे और उनके पति बहुत अच्छे से रहते हैं। कितनी

दुल्हनें ऐसे दिलों के साथ वेदी पर जाती हैं जो उन्हें वहाँ ले जाने वाले पुरुषों द्वारा जांचे जाने योग्य हों? और फिर भी उनका अंत दुखद नहीं होता—किसी न किसी तरह वैवाहिक बंधन चलता रहता है। सच्चाई यह है कि महिलाएं जितनी स्वीकार करती हैं, उससे कहीं अधिक संख्या में महिलाएं विवाह को एक शरणस्थल के रूप में आजमाती हैं; और इससे भी बढ़कर, वे पाती हैं कि विवाह ने उन पर उनके विश्वास को सही ठहराया है। अपने मामले पर एक बार फिर विचार करो। तुम्हारी उम्र और तुम्हारे आकर्षण को देखते हुए, क्या तुम्हारे लिए खुद को एक ही जीवन तक सीमित रखना संभव है? मेरे ज्ञान पर भरोसा करो—यह असंभव है। यह केवल समय की बात है। हो सकता है कि तुम कुछ वर्षों बाद किसी और पुरुष से शादी कर लो। या हो सकता है कि तुम उस पुरुष से शादी कर लो, प्रियतम, जो अब तुम्हारे चरणों में है, और जो पृथ्वी पर किसी भी अन्य स्त्री के प्रेम से बढ़कर तुम्हारे सम्मान और प्रशंसा को महत्व देता है।"

"शांत हो जाओ, गॉडफ्रे! तुम मेरे दिमाग में एक ऐसी बात डाल रहे हो जिसके बारे में मैंने पहले कभी सोचा ही नहीं था। तुम मुझे एक नए अवसर का लालच दे रहे हो, जबकि मेरे सामने सारे रास्ते बंद हो चुके हैं। मैं फिर से कह रही हूँ, मैं इतनी दुखी और हताश हूँ कि अगर तुमने एक और शब्द भी कहा, तो मैं तुमसे तुम्हारी शर्तों पर शादी कर लूँगी। मेरी चेतावनी समझो और चले जाओ!"

"जब तक तुम हां नहीं कह दोगी, मैं अपने घुटनों से उठूंगा भी नहीं!"

"अगर मैं हां कह दूं तो तुम पछताओगे, और मैं भी पछताऊंगा, जब बहुत देर हो चुकी होगी!"

"हम दोनों उस दिन को हमेशा याद रखेंगे, प्रिय, जब मैंने जोर दिया और जब तुमने हार मान ली।"

"क्या आप बोलने में जितने आत्मविश्वासी हैं, उतना ही आत्मविश्वासी महसूस भी करते हैं?"

"आप स्वयं निर्णय लें। मैं अपने परिवार में जो देखा है, उसी के आधार पर बोल रहा हूँ। मुझे बताइए कि फ्रिज़िंगहॉल में हमारे घर के बारे में आपका क्या विचार है। क्या मेरे माता-पिता एक साथ दुखी जीवन व्यतीत करते हैं?"

"बिल्कुल नहीं—जहां तक मैं देख सकता हूं।"

"जब मेरी माँ, राहेल (परिवार में यह कोई रहस्य नहीं है), छोटी थी, तब उसने भी वैसे ही प्यार किया था जैसे तुम करती हो—उसने अपना दिल एक ऐसे आदमी को दे दिया

था जो उसके लायक नहीं था। उसने मेरे पिता से शादी की, उनका सम्मान किया, उनकी प्रशंसा की, बस इतना ही। इसका परिणाम तुमने अपनी आँखों से देखा है। क्या इसमें तुम्हारे और मेरे लिए कोई सीख नहीं है?"
* बेटरएज की कथा, अध्याय viii देखें।
"क्या तुम मुझे जल्दी नहीं करोगे, गॉडफ्रे?"
"मेरा समय तुम्हारा होगा।"
"तुम मुझसे मेरी क्षमता से अधिक की अपेक्षा नहीं करोगे?"
"मेरी परी! मैं तुमसे बस इतना ही विनती करता हूँ कि तुम मुझे स्वयं को सौंप दो।"
"मुझे भी साथ लो!"
उन दो शब्दों में ही उसने उसे स्वीकार कर लिया!
उसे एक और तीव्र आवेग आया—इस बार एक अपवित्र उन्माद का। उसने उसे अपने करीब खींच लिया, यहाँ तक कि उसका चेहरा उसके चेहरे से छू गया; और फिर—नहीं! मैं इस चौंकाने वाले खुलासे को और आगे नहीं बढ़ा सकती। बस इतना ही कहूँगी कि मैंने ऐसा होने से पहले अपनी आँखें बंद करने की कोशिश की थी, और मैं बस एक पल देर हो गई। मैंने सोचा था कि वह विरोध करेगी। लेकिन उसने हार मान ली। मेरी जैसी हर समझदार महिला के लिए, इससे ज़्यादा कुछ कहना मुश्किल है।
इन मामलों में मेरी भोली-भाली छवि भी अब साक्षात्कार के अंत तक धूमिल होने लगी थी। वे दोनों एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह समझ चुके थे कि मुझे पूरा यकीन था कि वे हाथ में हाथ डालकर शादी करने के लिए साथ चले जाएंगे। हालांकि, श्री गॉडफ्रे के अगले शब्दों से ऐसा प्रतीत हुआ कि एक और छोटी सी औपचारिकता निभाना आवश्यक था। इस बार बिना किसी रोक-टोक के वे उसके बगल में रखे फुटरेस्ट पर बैठ गए। उन्होंने पूछा, "क्या मैं आपकी प्यारी माँ से बात करूँ? या आप करेंगे?"
उसने दोनों विकल्पों को अस्वीकार कर दिया।
"जब तक मेरी माँ ठीक नहीं हो जातीं, हम दोनों में से किसी को भी उनसे कुछ मत कहना। मैं चाहती हूँ कि फिलहाल यह बात गुप्त रहे, गॉडफ्रे। अब जाओ और आज शाम को वापस आना। हम यहाँ अकेले काफी देर बिता चुके हैं।"
वह उठी, और उठते ही उसने पहली बार उस छोटे से कमरे की ओर देखा जिसमें मेरी शहादत चल रही थी।
"ये पर्दे किसने खींचे हैं?" उसने हैरानी से कहा।
"कमरा वैसे भी काफी बंद है, इस तरह से हवा को बाहर रखने की जरूरत नहीं है।"

वह पर्दों की ओर बढ़ी। जिस क्षण उसने पर्दों पर हाथ रखा—जिस क्षण मेरा पकड़ा जाना लगभग तय लग रहा था—सीढ़ियों पर खड़े युवा नौकर की आवाज़ ने अचानक मेरी और उसकी ओर की सारी कार्यवाही रोक दी। यह स्पष्ट रूप से एक बेहद घबराए हुए आदमी की आवाज़ थी।
"मिस राहेल!" उसने पुकारा, "आप कहाँ हैं, मिस राहेल?"
वह पर्दों से उछलकर पीछे हटी और दरवाजे की ओर भागी।
नौकर कमरे के अंदर आया। उसका पीला चेहरा बिल्कुल गायब हो चुका था। उसने कहा, "कृपया नीचे आइए, महोदया! मेरी मालकिन बेहोश हो गई हैं और हम उन्हें होश में नहीं ला पा रहे हैं।"
कुछ ही पलों में मैं अकेला हो गया, और बिना किसी की नजरों में आए, मैं भी नीचे जाने के लिए स्वतंत्र था।
श्री गॉडफ्रे हॉल में मेरे पास से गुज़रे और डॉक्टर को बुलाने के लिए जल्दी से बाहर चले गए। "अंदर जाओ और उनकी मदद करो!" उन्होंने कमरे की ओर इशारा करते हुए कहा। मैंने राहेल को सोफे के पास घुटनों के बल बैठे हुए पाया, उसकी माँ का सिर उसकी छाती पर था। मेरी चाची के चेहरे को एक नज़र देखने भर से (जो मैं जानती थी) मुझे भयानक सच्चाई का आगाह हो गया। डॉक्टर के आने तक मैंने अपने विचार मन में ही रखे। थोड़ी ही देर में वह आ गए। उन्होंने सबसे पहले राहेल को कमरे से बाहर भेजा और फिर हम सबको बताया कि लेडी वेरेंडर अब इस दुनिया में नहीं रहीं। गंभीर लोग, जो मेरे कठोर संशयवाद के प्रमाण खोज रहे हैं, शायद यह जानकर रुचि लेंगे कि जब उन्होंने मेरी ओर देखा तो उनके चेहरे पर पश्चाताप का कोई भाव नहीं दिखा।
कुछ देर बाद मैंने नाश्ते के कमरे और पुस्तकालय में झाँका। मेरी चाची का निधन हो गया था और उन्होंने मेरे लिखे पत्रों में से एक भी नहीं खोला था। मुझे इस बात का इतना गहरा सदमा लगा कि कुछ दिनों बाद तक मुझे यह ख्याल ही नहीं आया कि उनका निधन मुझे मेरी थोड़ी सी विरासत दिए बिना ही हो गया था।

अध्याय VI

(1.) "मिस क्लैक श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को अपना प्रणाम प्रस्तुत करती हैं; और अपनी विनम्र कहानी का पाँचवाँ अध्याय उन्हें भेजते हुए यह कहना चाहती हैं कि लेडी वेरेंडर की मृत्यु जैसी भयावह घटना का विस्तार से वर्णन करने में वे स्वयं को असमर्थ महसूस करती हैं। इसलिए, उन्होंने अपनी पांडुलिपियों के साथ अपने पास मौजूद बहुमूल्य

प्रकाशनों से इस भयावह विषय से संबंधित कई अंश संलग्न किए हैं। और मिस क्लैक को पूरी उम्मीद है कि ये अंश उनके आदरणीय रिश्तेदार श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के कानों में तुरही की ध्वनि की तरह गूंजेंगे।"

(2.) श्री फ्रैंकलिन ब्लेक, मिस क्लैक को अपनी शुभकामनाएँ देते हैं और उनकी कहानी के पाँचवें अध्याय के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं। इसके साथ भेजे गए अंशों को लौटाते समय, वे इस प्रकार के साहित्य के प्रति अपनी किसी भी व्यक्तिगत आपत्ति का उल्लेख करने से परहेज़ करेंगे और केवल इतना कहेंगे कि पांडुलिपि में प्रस्तावित परिवर्धन उनके उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक नहीं हैं।

(3.) "मिस क्लैक अपने अंशों की वापसी स्वीकार करती हैं। वे स्नेहपूर्वक श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को याद दिलाती हैं कि वे एक ईसाई हैं, और इसलिए उनके लिए उन्हें नाराज करना बिल्कुल असंभव है। मिस क्लैक श्री ब्लेक के प्रति गहरी रुचि रखती हैं, और वचन देती हैं कि जैसे ही वे बीमार पड़ें, वे उन्हें अपने अंश दोबारा उपलब्ध कराएंगी। इस बीच, वे अपनी कहानी के अंतिम अध्यायों को शुरू करने से पहले यह जानना चाहेंगी कि क्या उन्हें मूनस्टोन के रहस्य पर बाद में हुए शोधों से मिली जानकारी का लाभ उठाकर अपना विनम्र योगदान पूरा करने की अनुमति दी जा सकती है।"

(4.) श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को मिस क्लैक को निराश करने का खेद है। वे केवल उन्हीं निर्देशों को दोहरा सकते हैं जो उन्होंने मिस क्लैक को उनकी कहानी शुरू करते समय दिए थे। उनसे अनुरोध है कि वे व्यक्तियों और घटनाओं के अपने व्यक्तिगत अनुभव तक ही सीमित रहें, जैसा कि उन्होंने अपनी डायरी में दर्ज किया है। बाद में हुई खोजों को वे उन लोगों के लिए छोड़ दें जो वास्तविक गवाहों के रूप में लिख सकते हैं।

(5.) "मिस क्लैक को श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को एक और पत्र लिखकर परेशान करने का बहुत खेद है। उनके अंश लौटा दिए गए हैं, और मूनस्टोन विषय पर उनके परिपक्व विचारों को व्यक्त करने पर रोक लगा दी गई है। मिस क्लैक इस बात से बहुत दुखी हैं कि उन्हें (व्यावहारिक भाषा में) अपमानित महसूस करना चाहिए। लेकिन नहीं—मिस क्लैक ने विपत्ति के विद्यालय में दृढ़ता सीखी है। उनका पत्र लिखने का उद्देश्य यह जानना है कि क्या श्री ब्लेक (जो हर चीज़ पर रोक लगाते हैं) मिस क्लैक के वृत्तांत में इस पत्र-व्यवहार के प्रकाशन पर भी रोक लगाते हैं? श्री ब्लेक के हस्तक्षेप से एक लेखिका के रूप में उनकी जो स्थिति उत्पन्न हुई है, उसका कुछ स्पष्टीकरण सामान्य न्याय के आधार पर आवश्यक प्रतीत होता है। और मिस क्लैक, अपनी ओर से, इस बात को लेकर अत्यंत उत्सुक हैं कि उनके पत्र स्वयं अपनी कहानी बयां करें।"

(6.) "श्री फ्रैंकलिन ब्लेक, मिस क्लैक के प्रस्ताव से इस समझ के साथ सहमत हैं कि वह उनकी सहमति की इस सूचना को उनके बीच पत्राचार समाप्त करने के रूप में मानेंगी।"

(7.) मिस क्लैक (पत्राचार समाप्त होने से पहले) श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को यह सूचित करना अपना ईसाई कर्तव्य समझती हैं कि उनका पिछला पत्र—जो स्पष्ट रूप से उन्हें अपमानित करने के उद्देश्य से लिखा गया था—लेखक के उद्देश्य को पूरा करने में सफल नहीं हुआ है। वह स्नेहपूर्वक श्री ब्लेक से अनुरोध करती हैं कि वे अपने कमरे में एकांत में जाकर विचार करें कि क्या वह शिक्षा, जो एक निर्धन स्त्री को अपमान से ऊपर उठा सकती है, उस प्रशंसा से कहीं अधिक प्रशंसनीय नहीं है जो वे अब उसके प्रति रखते हैं। इस आशय का सूचना मिलने पर, मिस क्लैक पूरी गंभीरता से श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को अपने सभी उद्धरणों की संपूर्ण श्रृंखला वापस भेजने का वचन देती हैं।

इस पत्र का कोई उत्तर नहीं मिला। टिप्पणी करना अनावश्यक है।

(हस्ताक्षरित) ड्रूसिला क्लैक।]

अध्याय VII

उपरोक्त पत्राचार से यह स्पष्ट हो जाएगा कि मेरे पास लेडी वेरेंडर की मृत्यु को इस तथ्य की साधारण घोषणा के साथ नजरअंदाज करने के अलावा कोई विकल्प क्यों नहीं बचा है, जिसके साथ मेरा पांचवा अध्याय समाप्त होता है।

भविष्य में अपनी निजी जानकारी को सीमित रखते हुए, मैं आगे बताना चाहता हूँ कि मेरी चाची के निधन के एक महीने बाद राहेल वेरेंडर से मेरी दोबारा मुलाकात हुई। उस मुलाकात के दौरान मैंने उनके साथ कुछ दिन बिताए। मेरी इस मुलाकात के दौरान, श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के साथ उनकी शादी की सगाई को लेकर कुछ ऐसा हुआ जो इतना महत्वपूर्ण है कि इन पन्नों में इसका विशेष उल्लेख आवश्यक है। जब परिवार की इस अनेक दुखद घटनाओं में से अंतिम घटना का खुलासा हो जाएगा, तब मेरा कार्य पूर्ण हो जाएगा; क्योंकि तब मैं घटनाओं के प्रत्यक्ष (और बेहद अनिच्छुक) गवाह के रूप में वह सब कुछ बता चुका हूँ जो मुझे पता है।

मेरी चाची के पार्थिव शरीर को लंदन से लाकर उनके अपने पार्क में स्थित चर्च से सटे छोटे कब्रिस्तान में दफनाया गया। मुझे परिवार के बाकी सदस्यों के साथ अंतिम संस्कार में आमंत्रित किया गया था। लेकिन (मेरी धार्मिक मान्यताओं के कारण) इस मृत्यु से हुए सदमे से कुछ ही दिनों में उबरना मेरे लिए असंभव था। इसके अलावा, मुझे

यह भी बताया गया कि फ्रिज़िंगहॉल के रेक्टर प्रार्थना सभा का संचालन करेंगे। मैंने स्वयं अतीत में इस पादरी को लेडी वेरेंडर की व्हिस्ट टेबल पर खिलाड़ियों में से एक बनते देखा था, इसलिए मुझे संदेह है कि अगर मैं यात्रा करने में सक्षम भी होता, तो भी क्या मैं समारोह में शामिल होना उचित समझता।

लेडी वेरेंडर की मृत्यु के बाद उनकी बेटी की देखभाल उनके बहनोई, श्री एबलव्हाइट सीनियर ने कर ली। वसीयत के अनुसार, उन्हें भतीजी की शादी होने तक या उसके बालिग होने तक उसका अभिभावक नियुक्त किया गया था। इन परिस्थितियों में, श्री गॉडफ्रे ने अपने पिता को, मेरा मानना है, राहेल के प्रति अपने नए रिश्ते के बारे में सूचित किया। खैर, मेरी चाची की मृत्यु के दस दिनों के भीतर, शादी की सगाई का रहस्य परिवार के भीतर पूरी तरह से खुल गया था, और श्री एबलव्हाइट सीनियर - जो खुद भी एक और अछूत साबित हो चुके थे! - के सामने सबसे बड़ा सवाल यह था कि वे अपने बेटे से शादी करने वाली धनी युवती को कैसे प्रभावित करें और अपने अधिकार का इस्तेमाल कैसे करें।

शुरुआत में राहेल ने उन्हें घर चुनने में थोड़ी परेशानी दी, खासकर उस जगह को लेकर जहाँ उन्हें रहने के लिए राजी किया जा सके। मोंटागु स्क्वायर का घर उनकी माँ की मृत्यु की त्रासदी से जुड़ा था। यॉर्कशायर का घर खोए हुए मूनस्टोन के शर्मनाक कांड से जुड़ा था। फ्रिज़िंगहॉल में उनके अभिभावक का अपना घर इन दोनों आपत्तियों से परे था। लेकिन हाल ही में हुए अपने दुखद निधन के बाद राहेल की वहाँ उपस्थिति ने उनकी चचेरी बहनों, मिस एबलवाइट्स के उल्लास पर रोक लगा दी - और उन्होंने खुद अनुरोध किया कि उनकी यात्रा को किसी बेहतर अवसर के लिए स्थगित कर दिया जाए। अंततः, श्री एबलवाइट ने ब्राइटन में एक सुसज्जित घर में रहने का प्रस्ताव रखा। उनकी पत्नी, एक बीमार बेटी और राहेल को उस घर में साथ रहना था, और उन्हें उम्मीद थी कि वह बाद में उनके साथ शामिल हो जाएँगे। उन्हें कुछ पुराने दोस्तों के अलावा किसी और से मिलने की ज़रूरत नहीं थी, और उनके बेटे गॉडफ्रे, जो लंदन ट्रेन से आते-जाते रहते थे, हमेशा उनकी सेवा में तत्पर रहेंगे।

मैं इस उद्देश्यहीन भटकन का वर्णन एक निवास स्थान से दूसरे निवास स्थान पर करता हूँ—शरीर की इस अतृप्त बेचैनी और आत्मा की भयावह निष्क्रियता का—केवल परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से। वह घटना (ईश्वरीय कृपा से) जिसने राहेल वेरिंदर और मुझे पुनः मिलाया, ब्राइटन में घर किराए पर लेने के अलावा और कुछ नहीं थी।

मेरी आंटी एबलव्हाइट एक लंबी, शांत, गोरे रंग की महिला हैं, जिनके चरित्र की एक खास बात है। जन्म से ही उन्होंने कभी भी अपने लिए कुछ नहीं किया। उन्होंने जीवन भर सबकी मदद ली है और सबकी राय मानी है। आध्यात्मिक दृष्टि से, मैंने उनसे ज्यादा निराश व्यक्ति कभी नहीं देखा - इस पेचीदा मामले में, सुधार की कोई गुंजाइश नहीं है। आंटी एबलव्हाइट तिब्बत के ग्रैंड लामा की बातें ठीक वैसे ही सुनती हैं जैसे मेरी सुनती हैं, और उनके विचारों को भी उतनी ही सहजता से अपनाती हैं जैसे मेरे विचारों को। उन्होंने ब्राइटन में सुसज्जित घर लंदन के एक होटल में रुककर, सोफे पर बैठकर और अपने बेटे को बुलवाकर पाया। उन्होंने एक सुबह (होटल में ही) बिस्तर पर नाश्ता करके और अपनी नौकरानी को इस शर्त पर छुट्टी देकर ज़रूरी नौकरों का इंतजाम किया कि वह "मिस क्लैक को बुलाकर अपना मनोरंजन शुरू करेगी"। मैंने उन्हें सुबह ग्यारह बजे अपने ड्रेसिंग गाउन में शांति से पंखा झलते हुए पाया। "ड्रूसिला, प्यारी, मुझे कुछ नौकर चाहिए। तुम बहुत होशियार हो—कृपया मेरे लिए नौकरों का इंतज़ाम कर दो।" मैंने अस्त-व्यस्त कमरे में चारों ओर देखा। सप्ताह के दिन की प्रार्थना के लिए चर्च की घंटियाँ बज रही थीं; उन्होंने मुझे कुछ स्नेहपूर्ण फटकार लगाने का संकेत दिया। "ओह, चाची!" मैंने उदास होकर कहा। "क्या यह एक ईसाई अंग्रेज़ महिला के लिए शोभा देता है? क्या इस तरह से अनंत काल की यात्रा की जानी है?" मेरी चाची ने उत्तर दिया, "मैं अपना गाउन पहन लेती हूँ, ड्रूसिला, अगर तुम मेरी मदद करोगी।" इसके बाद क्या कहा जा सकता था? मैंने हत्यारिनों के साथ तो चमत्कार कर दिए थे—लेकिन चाची एबलव्हाइट के साथ मैं एक इंच भी आगे नहीं बढ़ पाई थी। "नौकरों की सूची कहाँ है?" मैंने पूछा। मेरी चाची ने अपना सिर हिलाया; उनमें सूची रखने की भी ऊर्जा नहीं थी। "राहेल के पास है, प्यारी," उन्होंने कहा, "अगले कमरे में।" मैं अगले कमरे में गई, और इस तरह मोंटागु स्क्वायर में बिछड़ने के बाद पहली बार राहेल से मिली।

गहरे शोक में डूबी वह बेहद दुबली-पतली और कमजोर दिख रही थी। अगर मैं व्यक्तिगत रूप-रंग जैसी क्षणभंगुर चीज़ को गंभीरता से लेती, तो शायद मैं यह भी कहती कि उसका रंग उन बदनसीब रंगों में से एक था जो त्वचा के पास सफेद रंग की परत न होने पर हमेशा फीके पड़ जाते हैं। लेकिन हमारा रंग-रूप और हमारी सूरत क्या मायने रखती है? प्यारी बच्चियों, ये तो हमारे लिए बाधाएं और मुश्किलें हैं जो हमें ऊँचाइयों की ओर ले जाती हैं! मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब मेरे कमरे में आते ही राहेल उठी और हाथ बढ़ाकर मुझसे मिलने के लिए आगे बढ़ी।

"तुम्हें देखकर मुझे खुशी हुई," उसने कहा। "ड्रूसिला, मैंने पहले भी कई बार तुमसे बहुत ही मूर्खतापूर्ण और असभ्य तरीके से बात की है। मैं क्षमा चाहती हूँ। मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे माफ कर दोगी।"

मुझे लगता है कि मेरे चेहरे पर मेरी हैरानी साफ झलक रही थी। वह एक पल के लिए शर्म से लाल हो गई, और फिर अपनी बात समझाने लगी।

"मेरी बेचारी माँ के जीवनकाल में, उनके दोस्त हमेशा मेरे भी दोस्त नहीं थे। अब जब मैंने उन्हें खो दिया है, तो मेरा दिल उन लोगों से सांत्वना पाता है जिन्हें वह पसंद करती थीं। वह तुम्हें पसंद करती थीं। अगर हो सके तो मुझसे दोस्ती करने की कोशिश करो, ड्रूसिला।"

किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए, इस तरह स्वीकार किया गया मकसद बेहद चौंकाने वाला था। ईसाई धर्म को मानने वाले इंग्लैंड में, एक युवती शोक में डूबी हुई थी, और उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि सच्चा सहारा कहाँ से मिलेगा, यहाँ तक कि वह अपनी माँ की सहेलियों के बीच ही उसे पाने की उम्मीद कर रही थी! मेरी एक रिश्तेदार, दूसरों के प्रति अपनी कमियों के प्रति सचेत हो रही थी, और यह चेतना और कर्तव्य से प्रेरित नहीं थी, बल्कि भावनाओं और आवेग से प्रेरित थी! यह सोचना बेहद दुखद था—लेकिन फिर भी, समाज सेवा में लगे रहने के मेरे अनुभव को देखते हुए, इसमें कुछ उम्मीद की किरण भी थी। मैंने सोचा कि राहेल के चरित्र में माँ की मृत्यु के बाद आए बदलाव का पता लगाने में कोई हर्ज नहीं है। एक उपयोगी परीक्षण के तौर पर, मैंने उससे मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट के साथ उसकी सगाई के बारे में पूछने का फैसला किया।

मैंने पहले तो उसके प्रस्ताव का पूरी विनम्रता से जवाब दिया और फिर उसकी इच्छा पर उसके पास सोफे पर बैठ गया। हमने पारिवारिक मामलों और भविष्य की योजनाओं पर चर्चा की—सिवाय उस एक योजना के जो उसकी शादी से जुड़ी थी। मैंने बातचीत को उस ओर मोड़ने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसने मेरी बात को पूरी तरह से अनसुना कर दिया। हमारे बीच सुलह के इस शुरुआती दौर में, मेरे लिए इस सवाल का सीधा ज़िक्र करना जल्दबाजी होती। इसके अलावा, मुझे जो जानना था, वह सब पता चल चुका था। वह अब वैसी लापरवाह और अड़ियल नहीं थी, जैसी मैंने मोंटागु स्क्वायर में अपनी शहादत के समय देखी और सुनी थी। यही बात मुझे उसके भविष्य के परिवर्तन की जिम्मेदारी लेने के लिए प्रेरित करने के लिए काफी थी—शुरुआत में मैंने उसे जल्दबाजी में शादी करने के खिलाफ कुछ गंभीर चेतावनी दी

और फिर आगे बढ़कर गंभीर विषयों पर बात की। अब उसे नए सिरे से दिलचस्पी से देखते हुए—और श्री गॉडफ्रे के वैवाहिक प्रस्तावों पर उसकी जल्दबाजी और उतावली को याद करते हुए—मुझे हस्तक्षेप करने का गंभीर कर्तव्य महसूस हुआ, और मुझे पूरा विश्वास था कि इससे कोई सामान्य परिणाम नहीं निकलेगा। मेरे विचार से इस मामले में शीघ्रता अत्यंत महत्वपूर्ण थी। मैं तुरंत सुसज्जित घर के लिए आवश्यक नौकरों के प्रश्न पर लौट गया।

"सूची कहाँ है, प्रिय?"

इसे राहेल ने प्रोड्यूस किया था।

“रसोइया, रसोई की नौकरानी, घर की नौकरानी और नौकर,” मैंने पढ़ा। “मेरी प्यारी राहेल, इन नौकरों की ज़रूरत केवल एक निश्चित अवधि के लिए है—उस अवधि के लिए जब तक आपके अभिभावक ने घर का कार्यभार संभाला है। अगर हम लंदन में कोशिश करेंगे तो इस तरह के अस्थायी काम के लिए योग्य और सक्षम व्यक्ति मिलना बहुत मुश्किल होगा। क्या ब्राइटन में घर मिल गया है?”

"हाँ। गॉडफ्रे ने इसे ले लिया है; और घर के लोग चाहते थे कि वह उन्हें नौकर के रूप में काम पर रख ले। उसे लगा कि वे हमारे लिए ठीक नहीं रहेंगे, और वह बिना कुछ तय किए वापस आ गया।"

"और तुम्हें खुद इन मामलों में कोई अनुभव नहीं है, रेचल?"

"बिल्कुल नहीं।"

"और आंटी एबलव्हाइट खुद को मेहनत करने के लिए प्रेरित नहीं करेंगी?"

"नहीं, बेचारी। उसे दोष मत दो, ड्रूसिला। मुझे लगता है कि वह एकमात्र ऐसी महिला है जो वास्तव में खुश है, जिनसे मैं कभी मिला हूँ।"

"खुशी के भी अलग-अलग स्तर होते हैं, प्रिय। हमें इस विषय पर कभी न कभी थोड़ी बात करनी चाहिए। तब तक मैं नौकरों से जुड़ी समस्या को सुलझाने का प्रयास करूंगा। तुम्हारी चाची घर के लोगों को एक पत्र लिखेंगी----"

"अगर मैं उसके लिए पत्र लिखूं तो वह उस पर हस्ताक्षर कर देगी, जिसका मतलब वही है।"

"बिल्कुल वही बात है। मुझे पत्र मिल जाएगा और मैं कल ब्राइटन जाऊंगा।"

"आपकी कृपा के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! जैसे ही आप तैयार होंगे, हम आपके साथ शामिल हो जाएंगे। और मुझे उम्मीद है कि आप मेरे मेहमान के रूप में ठहरेंगे। ब्राइटन बहुत ही जीवंत शहर है; आपको निश्चित रूप से बहुत अच्छा लगेगा।"

इन्हीं शब्दों में निमंत्रण दिया गया था, और मेरे सामने हस्तक्षेप की शानदार संभावना खुल गई थी।
तब सप्ताह का मध्य था। शनिवार दोपहर तक घर उनके लिए तैयार था। उस थोड़े से समय में मैंने न केवल चरित्रों का, बल्कि धार्मिक विचारों का भी, उन सभी नौकरों के बीच छानबीन की, जिन्होंने मुझसे संपर्क किया था, और एक ऐसा चयन करने में सफल रहा जो मेरी अंतरात्मा को भाता था। मैंने शहर में रहने वाले अपने दो गंभीर मित्रों से भी संपर्क किया, जिनसे मैं ब्राइटन आने के अपने धार्मिक उद्देश्य के बारे में खुलकर बात कर सकता था। उनमें से एक - एक पादरी मित्र - ने कृपा करके मुझे उस चर्च में हमारे छोटे समूह के लिए बैठने की व्यवस्था करने में मदद की, जहाँ वे स्वयं सेवा करते थे। दूसरी - मेरी ही तरह एक अविवाहित महिला - ने अपने पुस्तकालय (जो पूरी तरह से बहुमूल्य प्रकाशनों से भरा था) के सभी संसाधनों को मेरे लिए उपलब्ध करा दिया। मैंने राहेल को ध्यान में रखते हुए सावधानीपूर्वक चुनी गई लगभग आधा दर्जन पुस्तकें उधार लीं। जब इन पुस्तकों को उन विभिन्न कमरों में उचित रूप से वितरित कर दिया गया जहाँ वह रहने वाली थी, तो मैंने सोचा कि मेरी तैयारियाँ पूरी हो गई हैं। उसकी सेवा करने वाले नौकरों में सही धार्मिक शिक्षा; उसे उपदेश देने वाले पादरी में सही धार्मिक शिक्षा; उसकी मेज पर रखी किताबों में मौजूद सही शिक्षाएँ—मेरी लगन ने उस अनाथ बच्ची के लिए ऐसा ही शानदार स्वागत तैयार किया था! उस शनिवार की दोपहर, जब मैं खिड़की पर बैठकर अपने रिश्तेदारों के आने का इंतज़ार कर रहा था, मेरे मन में एक दिव्य शांति छाई हुई थी। वह उत्साहित भीड़ मेरी आँखों के सामने से आती-जाती रही। हाय! उनमें से कितनों ने मेरे कर्तव्य की उत्कृष्ट भावना को महसूस किया होगा? एक भयानक सवाल। चलिए इस पर विचार न करें।
छह और सात बजे के बीच यात्री पहुंचे। मुझे बेहद आश्चर्य हुआ कि उनके साथ मिस्टर गॉडफ्रे (जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था) नहीं, बल्कि वकील मिस्टर ब्रफ थे।
"कैसी हो, मिस क्लैक?" उसने कहा। "इस बार तो मैं यहीं रुकूंगा।"
मोंटागु स्क्वायर में हमारी मुलाकात के दौरान, जिस मौके पर मैंने उन्हें अपना काम छोड़कर मेरे काम में हिस्सा लेने के लिए मजबूर किया था, उस घटना के जिक्र ने मुझे आश्वस्त कर दिया कि वह पुराने ख्यालों वाला व्यक्ति किसी निजी मकसद से ब्राइटन आया था। मैंने अपनी प्रिय राहेल के लिए एक छोटा सा स्वर्ग तैयार किया था - और यहाँ वह सर्प पहले से ही मौजूद था!

“डूसिला, गॉडफ्रे हमारे साथ न आ पाने से बहुत नाराज़ था,” मेरी आंटी एबलव्हाइट ने कहा। “रास्ते में कुछ ऐसा था जिसकी वजह से वह शहर में ही रुका रहा। श्री ब्रूफ ने उसकी जगह जाने की पेशकश की और सोमवार सुबह तक छुट्टी मनाने का मन बना लिया। वैसे, श्री ब्रूफ, मुझे व्यायाम करने का आदेश दिया गया है, और मुझे यह पसंद नहीं है।” आंटी एबलव्हाइट ने खिड़की से बाहर एक बीमार व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए कहा, जो पहियों वाली कुर्सी पर एक आदमी द्वारा खींचा जा रहा था, “यह मेरे लिए व्यायाम का मतलब है। अगर आपको ताज़ी हवा चाहिए, तो अपनी कुर्सी पर ही मिल जाएगी। और अगर आपको थकान चाहिए, तो मुझे यकीन है कि उस आदमी को देखना ही काफी थकान है।”

राहेल चुपचाप एक खिड़की के पास अकेली खड़ी थी, उसकी निगाहें समुद्र पर टिकी हुई थीं।

"थक गई हो, प्रिये?" मैंने पूछा।

"नहीं। बस थोड़ी उदास थी," उसने जवाब दिया। "मैंने अक्सर यॉर्कशायर तट पर समुद्र को उस रोशनी में देखा है। और मैं सोच रही थी, डूसिला, उन दिनों के बारे में जो कभी वापस नहीं आएंगे।"

श्री ब्रूफ रात के खाने तक रुके रहे और शाम तक वहीं ठहरे रहे। जैसे-जैसे मैं उन्हें देखता गया, मेरा यह विश्वास और पुख्ता होता गया कि ब्राइटन आने के पीछे उनका कोई निजी मकसद है। मैंने उन्हें ध्यान से देखा। वे घंटों तक वही सहज भाव बनाए रहे और वही बेबुनियाद गपशप करते रहे, जब तक कि जाने का समय नहीं हो गया। जब उन्होंने रैचल से हाथ मिलाया, तो मैंने देखा कि उनकी कठोर और धूर्त निगाहें एक पल के लिए रैचल पर टिक गईं, मानो उनमें कोई विशेष रुचि और एकाग्रता हो। रैचल स्पष्ट रूप से उनके उद्देश्य को लेकर चिंतित थी। जाते समय उन्होंने रैचल या किसी और से कुछ भी असामान्य नहीं कहा। उन्होंने अगले दिन दोपहर के भोजन के लिए खुद को आमंत्रित किया और फिर अपने होटल चले गए।

अगली सुबह मेरी आंटी एबलवाइट को समय पर चर्च ले जाने के लिए उनके ड्रेसिंग गाउन से बाहर निकालना नामुमकिन था। उनकी बीमार बेटी (मेरी राय में, जिसे अपनी माँ से विरासत में मिली असाध्य आलस्य के अलावा और कुछ नहीं था) ने घोषणा की कि वह दिन भर बिस्तर पर ही रहेगी। मैं और राहेल अकेले चर्च गए। मेरे प्रतिभाशाली मित्र ने छोटे-छोटे पापों के प्रति संसार की उदासीनता पर एक शानदार उपदेश दिया। एक घंटे से अधिक समय तक उनकी वाक्पटुता (उनकी दमदार आवाज के साथ)

पवित्र भवन में गूंजती रही। जब हम बाहर आए तो मैंने राहेल से कहा, "क्या यह तुम्हारे दिल को छू गया, प्रिय?" और उसने उत्तर दिया, "नहीं; इससे तो बस मेरा सिर दर्द हो गया है।" यह बात कुछ लोगों को हतोत्साहित कर सकती थी; लेकिन, एक बार स्पष्ट उपयोगिता के मार्ग पर चलने के बाद, मुझे कोई भी चीज हतोत्साहित नहीं कर सकती।
हमें आंटी एबलव्हाइट और मिस्टर ब्रफ दोपहर के भोजन पर मिले। जब राहेल ने कुछ भी खाने से इनकार कर दिया और इसका कारण सिरदर्द बताया, तो वकील की चतुराई ने तुरंत उस मौके को भांप लिया जो राहेल ने उसे दिया था।
“सिरदर्द का सिर्फ एक ही इलाज है,” उस भयानक बूढ़े आदमी ने कहा। “मिस राहेल, टहलने से ही आप ठीक हो जाएंगी। अगर आप मेरा हाथ थामकर मुझे सम्मानित करेंगी, तो मैं आपकी सेवा में तत्पर हूं।”
"मुझे बेहद खुशी हुई। सैर करना ही वह चीज है जिसकी मुझे बहुत चाह थी।"
"दो बज चुके हैं," मैंने धीरे से कहा। "और दोपहर की प्रार्थना सभा, रेचल, तीन बजे शुरू होती है।"
"आप मुझसे यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि मैं दोबारा चर्च जाऊं, जबकि मुझे इतना तेज सिरदर्द है?" उसने चिढ़कर पूछा।
श्री ब्रूफ ने बड़ी विनम्रता से उनके लिए दरवाजा खोला। एक मिनट के भीतर ही वे दोनों घर से बाहर निकल गए। मुझे याद नहीं कि मैंने हस्तक्षेप करने के गंभीर कर्तव्य को इतना प्रबल रूप से कब महसूस किया था जितना उस क्षण किया। लेकिन क्या किया जा सकता था? दिन में आगे, जैसे ही मौका मिले, हस्तक्षेप करने के अलावा और कोई चारा नहीं था।
दोपहर की प्रार्थना सभा से लौटने पर मैंने देखा कि वे दोनों अभी-अभी लौटे थे। उन्हें देखते ही समझ गया कि वकील ने अपनी बात कह दी थी। मैंने राहेल को पहले कभी इतना शांत और विचारशील नहीं देखा था। मैंने श्री ब्रूफ को भी राहेल पर इतना ध्यान देते और इतने सम्मान से देखते हुए पहले कभी नहीं देखा था। उस दिन उनका (या उन्होंने ऐसा दिखावा किया) रात के खाने का कार्यक्रम था और वे हम सबसे जल्दी विदा लेकर अगली सुबह पहली ट्रेन से लंदन वापस जाने के इरादे से निकल गए।
"क्या आपको अपने संकल्प पर पूरा भरोसा है?" उसने दरवाजे पर खड़ी राहेल से कहा।
"बिल्कुल," उसने जवाब दिया—और इस तरह वे अलग हो गए।

जैसे ही उसने पीठ मोड़ी, राहेल अपने कमरे में चली गई। वह रात के खाने पर नहीं आई। उसकी नौकरानी (टोपी पर रिबन बांधने वाली) को नीचे भेजा गया ताकि वह बता सके कि उसका सिरदर्द फिर से शुरू हो गया है। मैं दौड़कर उसके पास गई और दरवाजे के बाहर से ही बहन जैसे कई प्रस्ताव रखे। दरवाजा बंद था, और वह उसे बंद ही रखती थी। यहाँ तो काम करने के लिए बहुत कुछ था! मुझे उसके दरवाजा बंद करने से बहुत खुशी और प्रेरणा मिली।

अगली सुबह जब चाय का प्याला उनके पास पहुँचा, तो मैं भी उनके पीछे-पीछे अंदर चला गया। मैं उनके बिस्तर के पास बैठ गया और कुछ गंभीर बातें कहीं। उन्होंने बड़ी विनम्रता से सुना। मैंने देखा कि मेरी गंभीर सहेली की कीमती किताबें एक कोने में मेज पर ढेर सारी रखी थीं। क्या उन्होंने गलती से भी उन्हें देखा था? मैंने पूछा। हाँ—और उनमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। क्या वह मुझे कुछ ऐसे अंश पढ़ने देंगी जो शायद उनकी नज़र से छूट गए हों? नहीं, अभी नहीं—उन्हें और भी बहुत कुछ सोचना था। उन्होंने ये जवाब दिए, मानो उनका ध्यान अपनी नाइटगाउन की झालर को बार-बार मोड़ने और खोलने में लगा हुआ था। स्पष्ट रूप से उन्हें उन सांसारिक रुचियों की ओर ध्यान दिलाकर जगाना ज़रूरी था जो अब भी उनके दिल में बसी हुई थीं।

"जानती हो, प्रिय," मैंने कहा, "कल मुझे मिस्टर ब्रफ के बारे में एक अजीब सा ख्याल आया था? जब मैंने तुम्हें उनके साथ टहलने के बाद देखा, तो मुझे लगा कि वह तुम्हें कोई बुरी खबर सुना रहे थे।"

उसकी उंगलियां नाइटगाउन की झालर से हट गईं और उसकी तेज काली आंखें मेरी ओर चमक उठीं।

"बिल्कुल इसके विपरीत!" उसने कहा। "यह एक ऐसी खबर थी जिसे सुनने में मुझे दिलचस्पी थी - और इसके बारे में मुझे बताने के लिए मैं श्री ब्रफ की बहुत आभारी हूं।"

"जी?" मैंने सौम्य जिज्ञासा भरे स्वर में कहा।

उसकी उंगलियाँ फिर से झालर पर चली गईं और उसने नाराज़गी से अपना सिर मुझसे दूर कर लिया। भलाई का काम करते हुए सैकड़ों बार मेरा सामना इसी तरह हुआ था। उसने मुझे बस फिर से कोशिश करने के लिए प्रेरित किया। उसकी भलाई के लिए अपने निडर उत्साह में, मैंने बड़ा जोखिम उठाया और खुलेआम उसकी शादी की सगाई का ज़िक्र कर दिया।

"क्या आप कोई खबर सुनना चाहती थीं?" मैंने दोहराया। "मुझे लगता है, मेरी प्यारी राहेल, यह मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट की खबर होगी?"

वह बिस्तर पर झट से उठ बैठी और उसका चेहरा पीला पड़ गया। ज़ाहिर है, वह पहले की तरह ही बेशर्मी से मुझे जवाब देने के लिए उतरा ही बैठी थी। उसने खुद को संभाला—अपना सिर तकिए पर वापस रखा—एक मिनट सोचा—और फिर इन अद्भुत शब्दों में जवाब दिया:

मैं मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट से कभी शादी नहीं करूंगी।

अब मेरी बारी थी शुरुआत करने की।

"तुम्हारा मतलब क्या है?" मैंने हैरानी से कहा। "पूरे परिवार में तो शादी को एक तयशुदा बात माना जाता है!"

"मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट के आज यहां आने की उम्मीद है," उसने दृढ़ता से कहा। "उनके आने का इंतज़ार कीजिए—और आप खुद देख लेंगे।"

"लेकिन मेरी प्यारी राहेल----"

उसने अपने बिस्तर के सिरहाने लगी घंटी बजाई। टोपी पर रिबन बांधे हुए व्यक्ति प्रकट हुआ।

"पेनेलोप! मेरा स्नान।"

मुझे उसकी बात माननी चाहिए। उस समय मेरी भावनाओं को देखते हुए, मुझे सच में लगता है कि उसने मुझे कमरे से बाहर निकालने का एकमात्र संभव तरीका ढूंढ लिया था।

सांसारिक दृष्टि से देखा जाए तो राहेल के प्रति मेरा रवैया असाधारण कठिनाई भरा लग सकता था। मैंने सोचा था कि विवाह के विषय पर थोड़ी सी गंभीर सलाह देकर मैं उसे उच्चतर जीवन की ओर ले जा सकूँगा। और अब, अगर उसकी बात मानी जाए, तो उसका विवाह होना ही नहीं था। लेकिन, मेरे मित्रों! मेरे जैसे अनुभवी ईसाई (जिनके सामने प्रचार का भविष्य है) की सोच इससे कहीं व्यापक होती है। मान लीजिए राहेल सचमुच विवाह तोड़ देती है, जिसे एबलवाइट्स, पिता और पुत्र, एक निश्चित बात मानते थे, तो परिणाम क्या होगा? अगर वह अपने फैसले पर अड़ी रहती है, तो दोनों ओर से तीखी नोकझोंक और एक-दूसरे पर कड़वे आरोप ही लगेंगे। और जब यह तूफानी बातचीत समाप्त होगी, तो राहेल पर क्या प्रभाव पड़ेगा? एक गंभीर नैतिक अवसाद ही होगा। उसका स्वाभिमान और हठ, परिस्थितियों में उसके स्वभाव के अनुरूप दृढ़ प्रतिरोध से चूर-चूर हो जाएगा। वह सहानुभूति पाने के लिए अपने सबसे करीबी व्यक्ति की ओर रुख करेगी। और मैं ही वह निकटतम व्यक्ति था—जो सांत्वना से परिपूर्ण था,

सामयिक और स्फूर्तिदायक शब्दों से लबालब भरा हुआ था। मेरी दृष्टि में, प्रचार का भविष्य अब जितना उज्ज्वल दिख रहा था, उतना पहले कभी नहीं दिखा था।
वह नाश्ता करने के लिए नीचे आई, लेकिन उसने कुछ नहीं खाया और मुश्किल से एक शब्द भी बोला।
नाश्ते के बाद वह बेसुध होकर एक कमरे से दूसरे कमरे में भटकती रही—फिर अचानक जाग उठी और पियानो खोल लिया। उसने जो संगीत बजाने के लिए चुना, वह बेहद अश्लील किस्म का था, मंच पर होने वाले उन प्रदर्शनों से जुड़ा हुआ था जिनके बारे में सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ऐसे समय में उससे दखल देना जल्दबाजी होती। मैंने चुपके से पता लगाया कि श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट किस समय आने वाले थे, और फिर मैं घर से निकलकर उस संगीत से बच गया।
अकेले बाहर होने के कारण, मैंने अपने दो दोस्तों से मिलने का मौका लिया। गंभीर व्यक्तियों के साथ सार्थक बातचीत करना एक अतुलनीय आनंद था। बेहद उत्साहित और तरोताज़ा होकर, मैं वापस घर की ओर मुड़ा, और ठीक समय पर अपने आने वाले मेहमान का इंतज़ार करने लगा। मैं भोजन कक्ष में दाखिल हुआ, जो दिन के उस समय हमेशा खाली रहता था, और वहाँ मेरी मुलाकात श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट से हुई!
उसने वहां से भागने की कोई कोशिश नहीं की। बल्कि इसके विपरीत, वह अत्यंत उत्सुकता से मुझसे मिलने के लिए आगे बढ़ा।
"प्रिय मिस क्लैक, मैं बस आपसे मिलने का ही इंतजार कर रहा था! संयोग से आज मुझे लंदन के अपने कार्यक्रमों से उम्मीद से पहले ही छुट्टी मिल गई, और परिणामस्वरूप मैं अपने निर्धारित समय से पहले ही यहाँ पहुँच गया हूँ।"
मोंटागु स्क्वायर की घटना के बाद मुझसे यह उनकी पहली मुलाकात थी, फिर भी उनकी बातों में जरा भी शर्मिंदगी नहीं झलक रही थी। यह सच है कि उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी कि मैं उस घटना की गवाह थी। लेकिन दूसरी ओर, उन्हें यह भी पता था कि मदर्स स्मॉल-क्लॉथ्स में मेरी नियमित उपस्थिति और अन्य दान संस्थाओं से जुड़े मेरे मित्रों के साथ मेरे संबंधों से मुझे उनकी महिलाओं और गरीबों के प्रति उनकी घोर उपेक्षा का पता चल गया होगा। और फिर भी वे मेरे सामने अपनी मनमोहक आवाज और दिलकश मुस्कान के साथ मौजूद थे!
मैंने पूछा, "क्या तुमने राहेल को देखा है?"
उन्होंने धीरे से आह भरी और मेरा हाथ पकड़ लिया। अगर उनके जवाब देने का तरीका मुझे आश्चर्य से स्तब्ध न कर देता, तो मैं निश्चित रूप से अपना हाथ छुड़ा लेती।

“मैंने राहेल को देखा है,” उसने पूर्ण शांति से कहा। “प्रिय मित्र, तुम्हें पता है कि उसकी मुझसे सगाई हुई थी? खैर, उसने अचानक सगाई तोड़ने का फैसला कर लिया है। सोच-विचार करने के बाद उसे समझ आ गया है कि जल्दबाजी में किए गए वादे को वापस लेने में ही उसका और मेरा भला होगा, और मुझे कहीं और बेहतर विकल्प चुनने की आजादी मिलेगी। यही एकमात्र कारण है जो वह बताती है, और यही एकमात्र उत्तर है जो वह मेरे हर सवाल का देती है।”
मैंने पूछा, "आपने अपनी तरफ से क्या किया है?" "क्या आपने आत्मसमर्पण कर दिया है?"
"हां," उन्होंने अत्यंत शांत भाव से कहा, "मैंने आत्मसमर्पण कर दिया है।"
उन परिस्थितियों में उनका व्यवहार इतना अकल्पनीय था कि मैं उनका हाथ पकड़े हुए स्तब्ध रह गई। किसी को घूरना असभ्य व्यवहार है, और किसी सज्जन को घूरना तो और भी अशोभनीय है। मैंने ये दोनों ही गलतियाँ कीं। और मैंने मानो सपने में कहा, "इसका क्या अर्थ है?"
"मुझे बताने की अनुमति दें," उसने उत्तर दिया। "और मान लीजिए कि हम बैठ जाते हैं?"
वह मुझे कुर्सी तक ले गया। मुझे धुंधला सा याद है कि वह बहुत स्नेहपूर्ण था। मुझे नहीं लगता कि उसने मुझे सहारा देने के लिए मेरी कमर पर हाथ रखा था—लेकिन मुझे पक्का यकीन नहीं है। मैं बिल्कुल असहाय थी, और महिलाओं के प्रति उसका व्यवहार बहुत प्यारा था। खैर, हम बैठ गए। मैं इस बात का जवाब दे सकती हूँ, अगर मैं इससे ज़्यादा किसी बात का जवाब नहीं दे सकती।

अध्याय आठ

“मैंने एक खूबसूरत लड़की, एक बेहतरीन सामाजिक प्रतिष्ठा और एक अच्छी आमदनी खो दी है,” श्री गॉडफ्रे ने कहना शुरू किया; “और मैंने बिना किसी विरोध के इसे स्वीकार कर लिया है। ऐसे असाधारण व्यवहार का क्या मकसद हो सकता है? मेरे प्रिय मित्र, इसका कोई मकसद नहीं है।”
"कोई मकसद नहीं?" मैंने दोहराया।
"प्रिय मिस क्लैक, मैं आपसे बच्चों के साथ आपके अनुभव का हवाला देना चाहता हूँ," उन्होंने आगे कहा। "एक बच्चा एक खास तरह का व्यवहार करता है। आप उससे बहुत प्रभावित होती हैं और उसके पीछे का कारण जानने की कोशिश करती हैं। वह नन्हा सा बच्चा आपको अपना कारण नहीं बता सकता। आप घास से पूछ सकती हैं कि

वह क्यों उगती है, या पक्षियों से पूछ सकती हैं कि वे क्यों गाते हैं। खैर! इस मामले में, मैं उस नन्हे से बच्चे जैसा ही हूँ - घास जैसा - पक्षियों जैसा। मुझे नहीं पता कि मैंने मिस वेरेंडर को शादी का प्रस्ताव क्यों दिया। मुझे नहीं पता कि मैंने अपनी प्यारी सहेलियों की इतनी शर्मनाक तरीके से उपेक्षा क्यों की। मुझे नहीं पता कि मैंने माताओं के छोटे कपड़ों से क्यों किनारा कर लिया। आप बच्चे से पूछती हैं, "तुम शरारती क्यों हो गए?" और वह नन्हा सा फरिश्ता अपनी उंगली मुंह में डाल लेता है और उसे पता नहीं होता। बिल्कुल यही हाल मेरा भी है, मिस क्लैक! मैं इसे किसी और को नहीं बता सकता। मुझे मजबूरी में इसे आपको बताना पड़ रहा है!"

मैंने धीरे-धीरे खुद को संभालना शुरू किया। इसमें एक मानसिक समस्या शामिल थी। मुझे मानसिक समस्याओं में गहरी रुचि है—और ऐसा माना जाता है कि मुझे उन्हें सुलझाने का कुछ कौशल भी है।

"मेरे सबसे अच्छे दोस्तों, अपनी बुद्धि का प्रयोग करो और मेरी मदद करो," उसने आगे कहा। मुझे बताइए—ऐसा समय क्यों आता है जब मेरी ये वैवाहिक प्रक्रियाएँ किसी सपने जैसी लगने लगती हैं? अचानक मुझे ऐसा क्यों लगता है कि मेरी सच्ची खुशी मेरी प्यारी महिलाओं की मदद करने में, अपने छोटे-मोटे उपयोगी काम करने में, और अपने अध्यक्ष द्वारा बुलाए जाने पर अपने कुछ गंभीर शब्द कहने में है? मुझे पद की क्या ज़रूरत है? मेरे पास पद तो है ही। मुझे आमदनी की क्या ज़रूरत है? मैं अपनी रोटी-पानी, अपने अच्छे से छोटे से कमरे और साल में दो कोट का खर्च उठा सकता हूँ। मुझे मिस वेरेंडर की क्या ज़रूरत है? उन्होंने खुद मुझसे कहा है (यह बात, प्रिय महोदया, हमारे बीच ही रहेगी) कि वह किसी और पुरुष से प्यार करती हैं, और मुझसे शादी करने का उनका एकमात्र मकसद उस दूसरे पुरुष को अपने दिमाग से निकालना है। यह कितना भयानक रिश्ता है! हे भगवान, यह कितना भयानक रिश्ता है! मिस क्लैक, ब्राइटन जाते समय मेरे मन में यही विचार आ रहे थे। मैं राहेल के पास ऐसे भाव से पहुँचा जैसे कोई अपराधी अपनी सज़ा भुगतने जा रहा हो। जब मुझे पता चला कि उसने भी अपना मन बदल लिया है—जब मैंने सुना जब उसने सगाई तोड़ने का प्रस्ताव रखा, तो मुझे (इसमें कोई शक नहीं) बेहद राहत महसूस हुई। एक महीने पहले मैं उसे प्यार से गले लगा रहा था। एक घंटे पहले, यह जानकर कि अब मुझे उसे कभी गले नहीं लगाना पड़ेगा, मुझे ऐसा नशा हो गया जैसे कोई तेज़ शराब। यह असंभव सा लगता है—ऐसा हो ही नहीं सकता। फिर भी, सच्चाई यही है, जैसा कि मैंने तब कहा था जब हम पहली बार इन दो कुर्सियों पर साथ बैठे थे। मैंने एक खूबसूरत

लड़की, एक ऊँचा सामाजिक रुतबा और एक अच्छी आमदनी खो दी है; और मैंने बिना किसी विरोध के इसे स्वीकार कर लिया है। क्या तुम इसका कारण बता सकते हो, मेरे प्रिय मित्र? यह मेरी समझ से परे है।

उसका भव्य सिर उसकी छाती पर झुक गया, और उसने निराशा में अपनी मानसिक समस्या को त्याग दिया।

मैं अत्यंत भावुक हो गया। मामला (यदि मैं आध्यात्मिक चिकित्सक के रूप में बोलूँ तो) अब मेरे लिए बिल्कुल स्पष्ट हो गया था। हम सभी के अनुभव में यह कोई असामान्य घटना नहीं है कि उच्च प्रतिभा वाले लोग कभी-कभी अपने आसपास के सबसे कम प्रतिभाशाली लोगों के स्तर तक गिर जाते हैं। निस्संदेह, ईश्वर की बुद्धिमत्तापूर्ण योजना में इसका उद्देश्य महानता को यह याद दिलाना है कि वह नश्वर है और जिस शक्ति ने उसे प्रदान किया है, वही उसे छीन भी सकती है। अब—मेरे विचार से—प्रिय श्री गॉडफ्रे के साथ हुई दुखद घटना में, जिसका मैं प्रत्यक्षदर्शी था, ऐसी ही एक लाभकारी अपमान की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। और यह भी उतना ही स्पष्ट था कि राहेल से विवाह के विचार से जिस घृणा से वे पीछे हटे, और अपनी लेडीज़ एंड पोर्लिंग में लौटने की जिस मनमोहक उत्सुकता से उन्होंने प्रेम दिखाया, उसमें उनके अपने उत्तम स्वभाव का सुखद पुन: प्रकट होना भी स्पष्ट था।

मैंने कुछ सरल और स्नेहपूर्ण शब्दों में उनके सामने यह विचार रखा। उनकी खुशी देखना अद्भुत था। जैसे-जैसे मैं बोलती गई, उन्होंने अपनी तुलना एक खोए हुए व्यक्ति से की जो अंधेरे से निकलकर प्रकाश में आ रहा हो। जब मैंने मदर्स स्मॉल-क्लॉथ्स में उनके स्नेहपूर्ण स्वागत के लिए धन्यवाद दिया, तो हमारे ईसाई नायक का कृतज्ञ हृदय खुशी से भर गया। उन्होंने बारी-बारी से मेरे हाथों को अपने होठों से लगाया। उन्हें हमारे बीच वापस पाकर मिली अपार खुशी से अभिभूत होकर, मैंने उन्हें अपने हाथों से जो चाहे करने दिया। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं। आध्यात्मिक आत्म-विस्मृति के आनंद में डूबी हुई, मैंने महसूस किया कि मेरा सिर उनके कंधे पर झुक रहा है। एक पल में मैं निश्चित रूप से उनकी बाहों में बेहोश हो जाती, लेकिन बाहरी दुनिया की एक रुकावट ने मुझे होश में ला दिया। दरवाजे के बाहर चाकू और कांटों की भयानक खड़खड़ाहट सुनाई दी, और नौकर दोपहर के भोजन के लिए मेज लगाने अंदर आया।

मिस्टर गॉडफ्रे अचानक उठे और उन्होंने मेंटलपीस पर रखी घड़ी की ओर देखा।

"तुम्हारे साथ समय कितनी जल्दी बीत जाता है!" उसने हैरानी से कहा। "मैं तो बड़ी मुश्किल से ट्रेन पकड़ पाऊंगा।"

मैंने हिम्मत करके उनसे पूछा कि उन्हें शहर वापस जाने की इतनी जल्दी क्यों है। उनके जवाब ने मुझे उन पारिवारिक समस्याओं की याद दिला दी जिनका अभी समाधान होना बाकी था, और उन पारिवारिक मतभेदों की भी जो भविष्य में होने वाले थे।

"मुझे अपने पिता से खबर मिली है," उसने कहा। "काम के सिलसिले में उन्हें आज फ्रिज़िंगहॉल से लंदन जाना पड़ रहा है, और उनका इरादा है कि वे या तो आज शाम या कल यहाँ आएँगे। मुझे उन्हें बताना होगा कि मेरे और राहेल के बीच क्या हुआ है। उनका दिल हमारी शादी के लिए अड़ा हुआ है—मुझे डर है कि सगाई तोड़ने के लिए उन्हें मनाना बहुत मुश्किल होगा। हम सबके भले के लिए, मुझे उन्हें तब तक यहाँ आने से रोकना होगा जब तक वे मान न जाएँ। मेरे प्यारे दोस्तों, हम फिर मिलेंगे!"

ये कहकर वह जल्दी से बाहर निकल गया। मैं भी उतनी ही जल्दी में ऊपर अपने कमरे में भागा ताकि दोपहर के भोजन की मेज पर आंटी एबलव्हाइट और राहेल से मिलने से पहले खुद को संभाल सकूं।

मैं भली-भांति जानती हूँ—श्री गॉडफ्रे के विषय पर एक क्षण और विचार करने के लिए —कि दुनिया भर में फैले उनके दुष्प्रचार के कारण यह आरोप लगाया गया है कि राहेल द्वारा दिए गए पहले अवसर पर ही उन्होंने सगाई तोड़ दी, जिसके पीछे उनके अपने निजी कारण थे। यह भी मेरे कानों तक पहुँचा है कि मेरी नज़र में अपना स्थान पुनः प्राप्त करने की उनकी बेचैनी को कुछ हलकों में इस लालच से जोड़ा गया है कि वे (मेरे माध्यम से) मदर्स स्मॉल-क्लॉथ्स की एक सम्मानित समिति सदस्य, जो इस दुनिया की सुख-सुविधाओं से भरपूर हैं और मेरी प्रिय एवं घनिष्ठ मित्र हैं, से सुलह करना चाहते हैं। मैं इन घृणित आरोपों का उल्लेख केवल यह स्पष्ट करने के लिए कर रही हूँ कि इनका मेरे मन पर कभी कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अपने निर्देशों का पालन करते हुए, मैंने अपने ईसाई नायक के बारे में अपने विचारों में आए उतार-चढ़ाव को ठीक उसी तरह प्रदर्शित किया है जैसा कि मैंने अपनी डायरी में दर्ज किया है। अपने प्रति न्यायसंगत रहते हुए, मैं यहाँ यह जोड़ना चाहूँगी कि एक बार मेरी नज़र में अपना स्थान पुनः प्राप्त करने के बाद, मेरे प्रतिभाशाली मित्र ने वह स्थान फिर कभी नहीं खोया। मेरी आँखों में आँसू भरे हैं, और मैं बहुत कुछ कहना चाहता हूँ। लेकिन नहीं—मैं व्यक्तियों और चीजों के अपने वास्तविक अनुभव तक ही सीमित हूँ। जिस समय से मैं अब लिख रहा हूँ, उसके एक महीने से भी कम समय में, बाजार में हुई घटनाओं (जिसने मेरी मामूली आमदनी को भी कम कर दिया) ने मुझे विदेश में निर्वासन के लिए मजबूर कर दिया,

और मेरे पास श्री गॉडफ्रे की एक प्यारी याद के अलावा कुछ नहीं बचा, जिस पर दुनिया भर के दुष्प्रचार ने हमला किया है, और व्यर्थ ही किया है।
मुझे अपनी आँखें पोंछने दीजिए, और मैं अपनी कहानी पर वापस लौटता हूँ।
मैं दोपहर के भोजन के लिए नीचे गया, स्वाभाविक रूप से यह देखने के लिए उत्सुक था कि शादी की सगाई से मुक्त होने का राहेल पर क्या प्रभाव पड़ा है।
मुझे ऐसा लगा—हालांकि मैं मानता हूँ कि ऐसे मामलों में मैं बहुत जानकार नहीं हूँ—कि अपनी आज़ादी वापस मिलने से वह उस दूसरे आदमी के बारे में फिर से सोचने लगी थी जिससे वह प्यार करती थी, और वह अपने आप पर बहुत गुस्सा थी क्योंकि वह अपनी उस भावना को काबू नहीं कर पा रही थी जिससे वह अंदर ही अंदर शर्मिंदा थी। वह आदमी कौन था? मुझे शक था—लेकिन बेकार की अटकलों में समय बर्बाद करना उचित नहीं था। जब मैं उसे धर्म परिवर्तन करवा दूँगा, तो वह स्वाभाविक रूप से मुझसे कुछ भी नहीं छिपाएगी। मैं उस आदमी के बारे में सब कुछ सुनूँगा; मैं मूनस्टोन के बारे में सब कुछ सुनूँगा। अगर उसे आध्यात्मिक ज्ञान दिलाने का मेरा कोई और उद्देश्य न भी होता, तो भी उसके मन से उन गुप्त रहस्यों को दूर करने का मकसद ही मुझे आगे बढ़ने के लिए काफी होता।
आंटी एबलव्हाइट दोपहर में एक विकलांगों की कुर्सी पर बैठकर व्यायाम करती थीं। राहेल उनके साथ जाती थीं। "काश मैं कुर्सी को घसीट पाती," वह बेपरवाही से बोली। "काश मैं खुद को इतना थका पाती कि गिर पड़ती।"
शाम को भी उनका मूड कुछ ऐसा ही था। मैंने अपनी एक सहेली की अनमोल किताब - मिस जेन ऐन स्टैम्पर की जीवनी, पत्र और कार्य, चौवालीसवाँ संस्करण - में कुछ ऐसे अंश पाए जो राहेल की वर्तमान स्थिति से बिल्कुल मेल खाते थे। जब मैंने उन्हें पढ़ने का प्रस्ताव रखा, तो वह पियानो बजाने चली गईं। सोचिए, उन्हें गंभीर लोगों के बारे में कितनी कम जानकारी रही होगी, अगर उन्हें लगा कि मेरा धैर्य इस तरह खत्म हो जाएगा! मैंने मिस जेन ऐन स्टैम्पर को अपने पास रखा और भविष्य पर अटूट विश्वास के साथ आगे की घटनाओं का इंतजार किया।
उस रात बूढ़े श्री एबलव्हाइट आए ही नहीं। लेकिन मैं जानती थी कि उनके सांसारिक लालच के लिए उनके बेटे का मिस वेरेंडर से विवाह कितना महत्वपूर्ण था—और मुझे पूरा यकीन था (श्री गॉडफ्रे चाहे जो भी कोशिश करें) कि हम उन्हें अगले दिन जरूर देखेंगे। उनके दखल से वह तूफान जरूर आएगा जिसकी मैंने उम्मीद की थी, और राहेल की प्रतिरोधक क्षमता भी निश्चित रूप से टूट जाएगी। मैं जानती हूँ कि बूढ़े श्री

एबलव्हाइट की आम तौर पर (विशेषकर उनके मातहतों के बीच) एक बेहद नेक इंसान के रूप में प्रतिष्ठा है। मेरे अवलोकन के अनुसार, जब तक उनकी मनमानी चलती रहेगी, वे अपनी इस प्रतिष्ठा के पात्र रहेंगे, उससे ज्यादा नहीं।

अगले दिन, जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, आंटी एबलव्हाइट अपने पति के अचानक आगमन से लगभग उतनी ही आश्चर्यचकित थीं जितनी उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति उन्हें होने देती थी। घर में आए उन्हें आए अभी एक मिनट भी नहीं हुआ था कि उनके पीछे-पीछे, इस बार मुझे आश्चर्यचकित करते हुए, मिस्टर ब्रफ के रूप में एक अप्रत्याशित घटना घटित हो गई।

मुझे याद नहीं कि मैंने कभी वकील की उपस्थिति को इतना अप्रिय महसूस किया हो जितना उस क्षण किया। वह किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न करने के लिए तैयार दिख रहा था—यहाँ तक कि वह झगड़े में शामिल पक्षों में से एक के लिए राहेल के साथ शांति बनाए रखने में भी सक्षम था!

श्री एबलवाइट ने अपनी बनावटी सौहार्दता के साथ श्री ब्रफ से कहा, "यह एक सुखद आश्चर्य है, महोदय। कल जब मैं आपके कार्यालय से निकला था, तो मुझे उम्मीद नहीं थी कि आज ब्राइटन में आपसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त होगा।"

श्री ब्रुफ ने उत्तर दिया, "आपके जाने के बाद मैंने हमारी बातचीत पर विचार किया। और मुझे लगा कि शायद इस अवसर पर मैं कुछ उपयोगी साबित हो सकता हूँ। मैं ट्रेन पकड़ने के लिए ठीक समय पर पहुँचा था, और मुझे यह पता लगाने का कोई अवसर नहीं मिला कि आप किस डिब्बे में यात्रा कर रहे थे।"

यह स्पष्टीकरण देने के बाद, वह राहेल के पास बैठ गए। मैं विनम्रतापूर्वक एक कोने में चली गई—अगली आपात स्थिति में मिस जेन एन स्टैम्पर को अपनी गोद में लिए हुए। मेरी चाची खिड़की पर बैठी थीं; हमेशा की तरह शांति से पंखा झल रही थीं। श्री एबलव्हाइट कमरे के बीच में खड़े हो गए, उनका गंजा सिर पहले से कहीं अधिक गुलाबी था, और उन्होंने अपनी भतीजी से अत्यंत स्नेहपूर्वक बात की।

"राहेल, मेरी प्यारी," उसने कहा, "मैंने गॉडफ्रे से कुछ बहुत ही असाधारण खबर सुनी है। और मैं इसके बारे में पूछताछ करने आया हूँ। इस घर में तुम्हारा अपना एक बैठक कक्ष है। क्या तुम मुझे वहाँ का रास्ता दिखाकर मुझे सम्मानित करोगी?"

राहेल टस से मस नहीं हुई। चाहे वह मामले को गंभीर मोड़ पर लाने के लिए दृढ़ थी, या श्री ब्रुफ के किसी निजी संकेत से प्रेरित थी, यह मैं नहीं कह सकता। उसने बूढ़े श्री एबलव्हाइट को अपने बैठक कक्ष में ले जाने का सम्मान देने से इनकार कर दिया।

"आप मुझसे जो कुछ भी कहना चाहें," उसने उत्तर दिया, "वह यहाँ कहा जा सकता है - मेरे रिश्तेदारों की उपस्थिति में, और (उसने श्री ब्रुफ की ओर देखा) "मेरी माँ के भरोसेमंद पुराने दोस्त की उपस्थिति में।"
"जैसा आपको अच्छा लगे, प्रिय," सौम्य स्वभाव वाले श्री एबलव्हाइट ने कहा। वे एक कुर्सी पर बैठ गए। बाकी सब उनके चेहरे की ओर देखने लगे—मानो उन्हें उम्मीद हो कि सत्तर वर्षों के सांसारिक अनुभव के बाद उनका चेहरा सच बोलेगा। मैंने उनके गंजे सिर की ओर देखा; क्योंकि मैंने पहले भी कई बार गौर किया था कि उनके भीतर का असली गुस्सा अक्सर उनके चेहरे पर ही झलकता था।
“कुछ सप्ताह पहले,” उस बुजुर्ग सज्जन ने बात जारी रखते हुए कहा, “मेरे बेटे ने मुझे बताया कि मिस वेरेंडर ने उससे शादी करने का वादा करके उसे सम्मानित किया है। क्या यह संभव है, रेचल, कि उसने आपकी कही हुई बात को गलत समझा हो—या उस पर गलत अनुमान लगाया हो?”
"बिल्कुल नहीं," उसने जवाब दिया। "मैंने उससे शादी करने का वादा किया था।"
“बहुत स्पष्ट जवाब दिया!” श्री एबलव्हाइट ने कहा। “और प्रिय, अब तक तो बेहद संतोषजनक रहा है। कुछ सप्ताह पहले जो हुआ, उसके बारे में गॉडफ्रे ने कोई गलती नहीं की है। गलती स्पष्ट रूप से उस बात में है जो उसने मुझे कल बताई थी। अब मुझे समझ आने लगा है। आप दोनों के बीच प्रेमियों का झगड़ा हुआ था—और मेरे मूर्ख बेटे ने इसे गंभीरता से ले लिया। आह! उसकी उम्र में मुझे इससे बेहतर समझ होनी चाहिए थी।”
राहेल (यानी, माता हव्वा) के भीतर की पतित प्रकृति को यह बात चुभने लगी।
"कृपा करके हम एक-दूसरे को समझने की कोशिश करें, श्री एबलव्हाइट," उसने कहा। "कल आपके बेटे और मेरे बीच किसी तरह का कोई झगड़ा नहीं हुआ। अगर उसने आपको बताया कि मैंने हमारी सगाई तोड़ने का प्रस्ताव रखा था, और वह अपनी तरफ से सहमत था - तो उसने आपको सच बताया।"
श्री एबलव्हाइट के गंजे सिर के ऊपर लगा स्वतः तापमान मापने वाला थर्मामीटर उनके गुस्से में वृद्धि का संकेत देने लगा। उनका चेहरा पहले से कहीं अधिक सौम्य था—लेकिन उनके चेहरे के ऊपरी हिस्से पर गुलाबीपन पहले से कहीं अधिक गहरा हो गया था!
"आओ, आओ, मेरी प्यारी!" उसने अपने बेहद शांत लहजे में कहा, "गुस्सा मत करो, और बेचारे गॉडफ्रे पर सख्ती मत करो! उसने शायद कोई दुर्भाग्यपूर्ण बात कह दी है।

वह बचपन से ही अनाड़ी था—लेकिन उसका इरादा अच्छा है, रेचल, उसका इरादा अच्छा ही है!"
"श्री एबलव्हाइट, या तो मैंने अपनी बात ठीक से नहीं कही है, या आप जानबूझकर मुझे गलत समझ रहे हैं। एक बार फिर, आपके बेटे और मेरे बीच यह तय हो चुका है कि हम जीवन भर चचेरे भाई-बहन ही रहेंगे, इससे ज्यादा कुछ नहीं। क्या यह बात आपको स्पष्ट है?"
जिस लहजे में उसने ये शब्द कहे, उससे बूढ़े श्री एबलव्हाइट के लिए भी उसे पहचानने में कोई गलती न रह गई। उनका तापमान एक डिग्री और बढ़ गया, और अगली बार जब उन्होंने बात की, तो उनकी आवाज़ एक सुप्रसिद्ध मिलनसार व्यक्ति की आवाज़ जैसी नहीं रही।
"तो क्या मुझे यह समझना चाहिए कि आपकी शादी की सगाई टूट गई है?" उसने कहा।
"कृपया श्री एबलव्हाइट, कृपया इस बात को समझें।"
"क्या मुझे यह भी मान लेना चाहिए कि सगाई से पीछे हटने का प्रस्ताव सबसे पहले आपकी ओर से आया था?"
"यह प्रस्ताव सबसे पहले मेरी तरफ से आया था। और जैसा कि मैंने आपको बताया है, इसे आपके बेटे की सहमति और स्वीकृति मिली थी।"
थर्मामीटर का तापमान एकदम ऊपर तक पहुंच गया। मतलब, गुलाबी रंग अचानक गहरे लाल रंग में बदल गया।
"मेरा बेटा एक नीच स्वभाव का कुत्ता है!" उस क्रोधित पुराने ख्यालों वाले व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा। "अपने पिता होने के नाते, न कि उसके प्रति न्याय करते हुए, मैं आपसे, मिस वेरेंडर, यह पूछना चाहता हूँ कि आपको मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट से क्या शिकायत है?"
यहां श्री ब्रुफ ने पहली बार हस्तक्षेप किया।
"तुम उस सवाल का जवाब देने के लिए बाध्य नहीं हो," उसने राहेल से कहा।
बूढ़े श्री एबलव्हाइट ने तुरंत उस पर ध्यान केंद्रित कर लिया।
"महोदय, यह मत भूलिए कि आप यहाँ स्वयं आमंत्रित अतिथि हैं। यदि आपने अनुरोध किए जाने तक प्रतीक्षा की होती, तो आपका हस्तक्षेप अधिक शालीनतापूर्ण होता।"
श्री ब्रुफ ने कोई ध्यान नहीं दिया। उनके दुष्ट बूढ़े चेहरे पर जमी चिकनी पॉलिश कभी नहीं टूटी। राहेल ने उन्हें दी गई सलाह के लिए धन्यवाद दिया और फिर बूढ़े श्री

एबलव्हाइट की ओर मुड़ी - अपनी उम्र और स्त्रीत्व को ध्यान में रखते हुए, उसने जिस तरह से अपना संयम बनाए रखा, वह देखना (उसकी उम्र और स्त्रीत्व को देखते हुए) बेहद भयावह था।
"आपके बेटे ने मुझसे वही सवाल पूछा जो आपने अभी पूछा है," उसने कहा। "मेरे पास उसके लिए केवल एक ही जवाब था, और आपके लिए भी मेरे पास केवल एक ही जवाब है। मैंने प्रस्ताव दिया कि हम एक-दूसरे को छोड़ दें, क्योंकि सोच-विचार करने के बाद मुझे यह विश्वास हो गया कि जल्दबाजी में किए गए वादे को वापस लेकर और उसे कहीं और अपना विकल्प चुनने की स्वतंत्रता देकर ही मैं उसके और अपने हित का बेहतर ध्यान रख पाऊँगी।"
श्री एबलव्हाइट ने बार-बार पूछा, "मेरे बेटे ने क्या किया है? मुझे यह जानने का पूरा अधिकार है। मेरे बेटे ने क्या किया है?"
वह भी उतनी ही हठपूर्वक अपनी बात पर अड़ी रही।
"आपको वह एकमात्र स्पष्टीकरण मिल चुका है जो मुझे लगता है कि आपको या उसे देना आवश्यक है," उसने उत्तर दिया।
"सीधे शब्दों में कहें तो, मिस वेरेंडर, मेरे बेटे को त्यागना आपकी सर्वोच्च इच्छा और प्रसन्नता है?"
राहेल कुछ पल चुप रही। उसके ठीक पीछे बैठे हुए मैंने उसकी आह सुनी। श्री ब्रुफ ने उसका हाथ पकड़ा और हल्के से दबाया। उसने खुद को संभाला और हमेशा की तरह बेबाकी से श्री एबलव्हाइट को जवाब दिया।
उन्होंने कहा, "मैंने इससे भी बदतर गलतफहमियों का सामना किया है। और मैंने इसे धैर्यपूर्वक सहन किया है। वो समय बीत गया जब आप मुझे धोखेबाज कहकर अपमानित कर सकते थे।"
उसके लहजे में कड़वाहट थी, जिससे मुझे यकीन हो गया कि मूनस्टोन कांड किसी न किसी तरह उसके दिमाग में ताजा हो गया था। "मुझे अब और कुछ नहीं कहना," उसने थके हुए स्वर में कहा, किसी विशेष व्यक्ति को संबोधित किए बिना, और हम सभी से नज़रें हटाकर, अपने सबसे नज़दीकी खिड़की से बाहर देखने लगी।
मिस्टर एबलव्हाइट उठे और अपनी कुर्सी को इतनी जोर से धक्का दिया कि वह पलटकर फर्श पर गिर गई।
"मुझे अपनी बात रखने के लिए कुछ और भी कहना है," उसने मेज पर ज़ोर से हाथ पटकते हुए घोषणा की। "मुझे कहना होगा कि अगर मेरे बेटे को यह अपमान महसूस

नहीं होता, तो मुझे होता है!"
राहेल चौंक गई और अचानक आश्चर्य से उसकी ओर देखने लगी।
"अपमान?" उसने दोहराया। "तुम्हारा क्या मतलब है?"
"अपमान!" श्री एबलव्हाइट ने दोहराया। "मैं तुम्हारे मकसद को जानता हूँ, मिस वेरेंडर, मेरे बेटे से किया वादा तोड़ने के पीछे! मैं इसे उतनी ही निश्चितता से जानता हूँ जैसे तुमने इसे शब्दों में कबूल किया हो। तुम्हारा वह अभिशापित पारिवारिक अभिमान गॉडफ्रे का अपमान कर रहा है, जैसा कि इसने मेरा अपमान किया था जब मैंने तुम्हारी चाची से शादी की थी। उनके परिवार—उनके कंगाल परिवार—ने एक ईमानदार आदमी से शादी करने पर उनसे मुंह मोड़ लिया, जिसने अपना स्थान खुद बनाया था और अपनी दौलत खुद कमाई थी। मेरे कोई पूर्वज नहीं थे। मैं उन खूंखार बदमाशों के वंशज नहीं था जो लूट और हत्या करके जीते थे। मैं उस समय का जिक्र भी नहीं कर सकता जब एबलव्हाइट्स के पास पहनने के लिए एक कमीज भी न हो और वे अपना नाम भी न लिख सकें। हा! हा! जब मैंने शादी की थी, तब मैं हर्नकैसल परिवार के लायक नहीं था। और अब, जब बात हद से आगे बढ़ गई है, तो मेरा बेटा तुम्हारे लायक नहीं है। मुझे शुरू से ही इस बात का शक था। तुममें हर्नकैसल का खून है, मेरी युवती! मुझे शुरू से ही इस बात का शक था।"
श्री ब्रुफ ने टिप्पणी की, "यह एक बेहद निराधार संदेह है। मुझे आश्चर्य है कि आपमें इसे स्वीकार करने का साहस है।"
इससे पहले कि मिस्टर एबलव्हाइट जवाब देने के लिए शब्द ढूंढ पाते, राहेल ने बेहद चिढ़ाने वाले तिरस्कार भरे लहजे में बात की।
"निश्चित रूप से," उसने वकील से कहा, "यह ध्यान देने योग्य बात नहीं है। अगर वह इस तरह सोच सकता है, तो उसे जैसा चाहे वैसा सोचने दें।"
लाल-लाल से श्री एबलवाइट का चेहरा अब बैंगनी हो रहा था। वे हांफ रहे थे; वे राहेल और श्री ब्रूफ को गुस्से से इस कदर घूर रहे थे कि उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि पहले किस पर हमला करें। उनकी पत्नी, जो अब तक चुपचाप बैठी खुद को पंखा कर रही थीं, घबरा गईं और उन्हें शांत करने की व्यर्थ कोशिश की। इस कष्टदायक मुलाकात के दौरान, मेरे मन में कई बार यह इच्छा हुई कि मैं कुछ गंभीर शब्द बोलकर हस्तक्षेप करूं, लेकिन संभावित परिणामों के डर से मैंने खुद को रोक लिया, जो एक ईसाई अंग्रेज महिला के लिए बहुत ही अनुचित था, जो तुच्छ विवेक की नहीं, बल्कि नैतिक रूप से सही की बात करती है। अब जब मामला इस मोड़ पर आ गया था, तो मैंने

केवल व्यावहारिकता के सभी विचारों को दरकिनार कर दिया। अगर मैंने अपनी ओर से कोई विनम्र विरोध करने का सोचा होता, तो शायद मैं अब भी हिचकिचाती। लेकिन अब मेरे सामने जो भयावह घरेलू संकट था, उसका समाधान मिस जेन एन स्टैम्पर के पत्रों में बड़ी खूबसूरती से मौजूद था—पत्र संख्या एक हजार एक, "परिवारों में शांति" विषय पर। मैं अपने साधारण से कोने से उठी और अपनी अनमोल किताब खोली।
मैंने कहा, "प्रिय श्री एबलव्हाइट, बस एक शब्द!"
जब मैंने उठकर सबका ध्यान अपनी ओर खींचा, तो मुझे लगा कि वह मुझसे कुछ अभद्र कहने ही वाला है। मेरे बहन जैसे विनम्र संबोधन ने उसे रोक दिया। वह अचरज भरी निगाहों से मुझे घूरने लगा।
मैंने आगे कहा, "एक स्नेही शुभचिंतक और मित्र के रूप में, और दूसरों को प्रेरित करने, समझाने, तैयार करने, ज्ञान देने और मजबूत करने के आदी व्यक्ति के रूप में, मुझे सभी स्वतंत्रताओं में सबसे क्षमायोग्य स्वतंत्रता लेने की अनुमति दें - आपके मन को शांत करने की स्वतंत्रता।"
वह खुद को संभालने लगा; वह भड़कने ही वाला था—अगर कोई और होता तो वह भड़क ही जाता। लेकिन मेरी आवाज़ (जो आमतौर पर कोमल होती है) आपात स्थिति में थोड़ी ऊंची हो जाती है। इस आपात स्थिति में, मुझे लगा कि मुझे ही अपनी सबसे ऊंची आवाज़ निकालनी चाहिए।
मैंने अपनी अनमोल किताब उनके सामने उठाई; मैंने अपनी तर्जनी उंगली से पन्ने पर ज़ोर से खटखटाया। "ये मेरे शब्द नहीं हैं!" मैंने जोश से भरी आवाज़ में कहा। "अरे, ये मत सोचिए कि मैं अपने विनम्र शब्दों के लिए ध्यान आकर्षित करने की हकदार हूँ! श्रीमान एबलव्हाइट, ये तो रेगिस्तान में मिलने वाला अमृत हैं! सूखी धरती पर ओस हैं! ये सांत्वना के शब्द हैं, ज्ञान के शब्द हैं, प्रेम के शब्द हैं—श्रीमती जेन ऐन स्टैम्पर के धन्य, धन्य, धन्य शब्द!"
मुझे सांस लेने में क्षणिक रुकावट आ गई और मैं वहीं रुक गया। इससे पहले कि मैं खुद को संभाल पाता, मानव रूप धारण किए इस राक्षस ने क्रोध से चिल्लाते हुए कहा, "मिस जेन एन स्टैम्पर हो----!"
मेरे लिए वह भयानक शब्द लिखना असंभव है, जिसे यहाँ खाली जगह से दर्शाया गया है। जैसे ही वह शब्द उसके मुँह से निकला, मैं चीख पड़ी; मैं साइड टेबल पर रखे अपने छोटे से बैग की ओर दौड़ी; मैंने अपने सारे पर्चे बाहर निकाले; मैंने अपशब्दों पर लिखे उस पर्चे को उठाया, जिसका शीर्षक था, "चुप रहो, भगवान के लिए!"; मैंने उसे

दर्द भरी विनती के साथ उसे सौंप दिया। उसने उसे दो टुकड़ों में फाड़ दिया और मेज के उस पार मेरी ओर फेंक दिया। बाकी सब घबराकर उठ खड़े हुए, उन्हें नहीं पता था कि आगे क्या होगा। मैं तुरंत अपने कोने में वापस बैठ गई। एक बार, कुछ इसी तरह की परिस्थितियों में, मिस जेन एन स्टैम्पर को दोनों कंधों से पकड़कर कमरे से बाहर निकाल दिया गया था। मैं उनकी भावना से प्रेरित होकर, उनके बलिदान की पुनरावृत्ति की प्रतीक्षा कर रही थी।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उन्होंने सबसे पहले अपनी पत्नी से बात की। गुस्से से हकलाते हुए उन्होंने कहा, "कौन—कौन—किसने इस धृष्ट कट्टरपंथी को घर में बुलाया? क्या तुमने?"

आंटी एबलव्हाइट कुछ कह पातीं, उससे पहले ही राहेल ने उनकी ओर से जवाब दे दिया।

उन्होंने कहा, "मिस क्लैक यहां मेरी मेहमान के रूप में आई हैं।"

उन शब्दों का श्री एबलव्हाइट पर गहरा प्रभाव पड़ा। अचानक ही वे उग्र क्रोध से भरे व्यक्ति से निर्मम तिरस्कार की स्थिति में आ गए। यह बात सभी को स्पष्ट थी कि राहेल ने कुछ ऐसा कहा था—भले ही उसका जवाब संक्षिप्त और सीधा था—जिसने अंततः उन्हें राहेल पर विजय दिला दी।

"ओह?" उसने कहा। "मिस क्लैक यहाँ आपकी मेहमान बनकर आई हैं—मेरे घर में?"

अब राहेल की बारी थी अपना आपा खोने की। उसका चेहरा लाल हो गया और उसकी आँखें गुस्से से चमक उठीं। उसने वकील की ओर मुड़कर, मिस्टर एबलव्हाइट की ओर इशारा करते हुए, घमंडी लहजे में पूछा, "इसका क्या मतलब है?"

श्री ब्रुफ ने तीसरी बार हस्तक्षेप किया।

उन्होंने श्री एबलव्हाइट को संबोधित करते हुए कहा, "ऐसा लगता है कि आप भूल गए हैं कि आपने यह घर मिस वेरेंडर के संरक्षक के रूप में, मिस वेरेंडर के उपयोग के लिए लिया था।"

“इतनी जल्दी नहीं,” श्री एबलव्हाइट ने बीच में टोकते हुए कहा। “मुझे एक आखिरी बात कहनी है, जो मैं बहुत पहले कह देता, अगर यह----” उन्होंने मेरी ओर देखा, यह सोचते हुए कि मुझे क्या घिनौना नाम दें--“अगर इस उद्दंड कुंवारी ने हमें बीच में न टोका होता। मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ, महोदय, कि यदि मेरा पुत्र श्रीमती वरिंदर का पति बनने के योग्य नहीं है, तो मैं उसके पिता को श्रीमती वरिंदर का संरक्षक बनने के योग्य नहीं मान सकता। कृपया समझें कि मैं लेडी वरिंदर की वसीयत द्वारा

मुझे दिए गए पद को स्वीकार करने से इनकार करता हूँ। आपके कानूनी शब्दों में, मैं कार्य करने से मना करता हूँ। यह घर अनिवार्य रूप से मेरे नाम पर किराए पर दिया गया है। मैं इसकी पूरी जिम्मेदारी अपने कंधों पर लेता हूँ। यह मेरा घर है। मैं इसे अपनी मर्जी से रख सकता हूँ या किराए पर दे सकता हूँ। मैं श्रीमती वरिंदर को जल्दबाजी करने के लिए नहीं कह रहा हूँ। इसके विपरीत, मैं उनसे अनुरोध करता हूँ कि वे अपनी सुविधानुसार अपने अतिथि और सामान को ले जाएँ।" उन्होंने झुककर अभिवादन किया और कमरे से बाहर चले गए।

यह मिस्टर एबलव्हाइट का रैचल से बदला था, क्योंकि रैचल ने उनके बेटे से शादी करने से इनकार कर दिया था!

जैसे ही दरवाजा बंद हुआ, आंटी एबलव्हाइट ने एक ऐसी अद्भुत घटना का प्रदर्शन किया जिसने हम सभी को स्तब्ध कर दिया। उनमें इतनी ऊर्जा आ गई कि वे कमरे को पार कर गईं!

"मेरी प्यारी," उसने राहेल का हाथ पकड़ते हुए कहा, "अगर मुझे यह पता न होता कि यह उसका गुस्सा है जिसने तुम्हें उकसाया है, न कि वह खुद। तो मुझे अपने पति पर शर्म आती," आंटी एबलवाइट ने कोने में मेरी ओर मुड़ते हुए, इस बार अपने हाव-भाव के बजाय अपनी नज़रों से ऊर्जा दिखाते हुए कहा— "तुम ही वह शरारती इंसान हो जिसने उसे चिढ़ाया है। मुझे उम्मीद है कि मैं तुम्हें या तुम्हारे लेखों को फिर कभी न देखूँ।" वह राहेल के पास लौटी और उसे चूमा। "माफ़ करना मेरी प्यारी," उसने अपने पति के नाम पर कहा। मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूँ?"

हर चीज में लगातार विकृत स्वभाव वाली—अपने जीवन के सभी कार्यों में मनमौजी और तर्कहीन—राहेल उन सामान्य शब्दों को सुनकर आँसुओं में डूब गई, और चुपचाप अपनी चाची के चुंबन का जवाब दिया।

"अगर मुझे मिस वेरेंडर की ओर से जवाब देने की अनुमति हो," श्री ब्रूफ ने कहा, "क्या मैं आपसे, श्रीमती एबलव्हाइट, यह अनुरोध कर सकता हूँ कि आप पेनेलोप को उसकी मालकिन की टोपी और शॉल के साथ नीचे भेज दें। हमें दस मिनट साथ बिताने दीजिए," उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, "और आप मुझ पर भरोसा रख सकती हैं कि मैं मामले को सुलझा दूँगा, जिससे आप और राहेल दोनों संतुष्ट होंगी।"

इस व्यक्ति पर परिवार का भरोसा देखना वाकई अद्भुत था। बिना कुछ और कहे, आंटी एबलव्हाइट कमरे से चली गईं।

"आह!" श्री ब्रुफ़ ने उसकी ओर देखते हुए कहा। "मैं मानता हूँ कि हर्नकैसल वंश की कुछ कमियाँ हैं। लेकिन अच्छे संस्कारों में भी कुछ तो खास बात होती है!"
वह विशुद्ध सांसारिक टिप्पणी करने के बाद, उसने मेरी ओर घूरकर देखा, मानो वह मुझसे जाने की उम्मीद कर रहा हो। राहेल में मेरी रुचि—जो उसकी रुचि से कहीं अधिक थी—ने मुझे अपनी कुर्सी पर जकड़ लिया।
मिस्टर ब्रफ ने इसे ठीक वैसे ही त्याग दिया, जैसे उन्होंने मोंटागु स्क्वायर में आंटी वेरेंडर के यहाँ त्याग दिया था। उन्होंने राहेल को खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठाया और उससे वहीं बात की।
“मेरी प्यारी युवती,” उन्होंने कहा, “श्री एबलव्हाइट के व्यवहार ने स्वाभाविक रूप से आपको चौंका दिया है और आपको आश्चर्यचकित कर दिया है। यदि ऐसे व्यक्ति से इस प्रश्न पर बहस करना सार्थक होता, तो हम उन्हें जल्द ही दिखा सकते थे कि उनकी मनमानी नहीं चलेगी। लेकिन यह सार्थक नहीं है। आपने अभी जो कहा वह बिल्कुल सही था; वह हमारे ध्यान देने योग्य नहीं हैं।”
वह रुका और मेरे कोने की ओर देखा। मैं वहाँ बिल्कुल स्थिर बैठा था, मेरी किताबें मेरी कोहनी के पास थीं और मिस जेन एन स्टैम्पर मेरी गोद में थीं।
“तुम्हें पता है,” उसने राहेल की ओर मुड़ते हुए अपनी बात जारी रखी, “तुम्हारी बेचारी माँ का स्वभाव ऐसा था कि वह हमेशा अपने आस-पास के लोगों में अच्छाई देखती थी, कभी बुराई नहीं। उसने अपने बहनोई को तुम्हारा संरक्षक इसलिए बनाया क्योंकि उसे उस पर भरोसा था और उसे लगा कि इससे उसकी बहन खुश होगी। मुझे खुद मिस्टर एबलव्हाइट कभी पसंद नहीं थे, और मैंने तुम्हारी माँ को वसीयत में एक शर्त जोड़ने के लिए राजी किया, जिसमें उनके वसीयत के निष्पादकों को कुछ खास परिस्थितियों में नए संरक्षक की नियुक्ति के बारे में मुझसे सलाह लेने का अधिकार दिया गया था। आज ऐसी ही एक घटना घटित हुई है; और मैं इन सभी नीरस व्यावसायिक विवरणों को, आशा है सुखद तरीके से, अपनी पत्नी के संदेश के साथ समाप्त करने की स्थिति में हूँ। क्या तुम श्रीमती ब्रफ की मेहमान बनकर उनका सम्मान करोगी? और क्या तुम मेरे घर में रहोगी और मेरे परिवार का हिस्सा बनोगी, जब तक हम समझदार लोग मिलकर विचार-विमर्श करके आगे क्या करना है, इस पर फैसला नहीं कर लेते?”
ये शब्द सुनते ही मैं बीच में दखल देने के लिए उठ खड़ा हुआ। श्री ब्रुफ ने ठीक वही किया था जिसका मुझे डर था, जब उन्होंने श्रीमती एबलव्हाइट से राहेल की टोपी और शॉल मांगी थी।

मेरे कुछ कहने से पहले ही राहेल ने बड़े उत्साह से उनका निमंत्रण स्वीकार कर लिया था। अगर मैंने उनके बीच हुए इस समझौते को होने दिया—अगर वह एक बार भी मिस्टर ब्रफ के घर की दहलीज पार कर गई—तो मेरी ज़िंदगी की सबसे प्यारी उम्मीद, अपनी खोई हुई भेड़ को वापस झुंड में लाने की उम्मीद, सब खत्म हो जाएगी! इस विपत्ति के ख्याल मात्र से ही मैं पूरी तरह टूट गया। मैंने सांसारिक विवेक के बंधनों को ताक पर रख दिया और अपने अंदर उमड़ रहे जोश के साथ, जो शब्द मेरे मन में सबसे पहले आए, बोल दिए।

"रुको!" मैंने कहा—"रुको! मुझे सुना जाना चाहिए। श्रीमान ब्रफ़! आपका उससे कोई रिश्ता नहीं है, और मेरा है। मैं उसे आमंत्रित करता हूँ—मैं वसीयत के अधिकारियों से मुझे अभिभावक नियुक्त करने का अनुरोध करता हूँ। राहेल, मेरी प्यारी राहेल, मैं तुम्हें अपना छोटा सा घर भेंट करता हूँ; अगली ट्रेन से लंदन आओ, प्रिय, और मेरे साथ इसे साझा करो!"

श्री ब्रुफ ने कुछ नहीं कहा। राहेल ने मुझे क्रूर आश्चर्य से देखा, जिसे छिपाने का उसने कोई प्रयास नहीं किया।

"आप बहुत दयालु हैं, ड्रूसिला," उसने कहा। "जब भी मैं लंदन में आऊंगी, आपसे मिलने की आशा करूंगी। लेकिन मैंने श्री ब्रूफ का निमंत्रण स्वीकार कर लिया है, और मुझे लगता है कि फिलहाल श्री ब्रूफ की देखरेख में रहना ही सबसे अच्छा होगा।"

"अरे, ऐसा मत कहो!" मैंने विनती की। "मैं तुमसे अलग नहीं हो सकता, रेचल—मैं तुमसे अलग नहीं हो सकता!"

मैंने उसे अपनी बाहों में भरने की कोशिश की। लेकिन वह पीछे हट गई। मेरी भावनाओं का उस पर कोई असर नहीं हुआ; बल्कि वह घबरा गई।

"निश्चित रूप से," उसने कहा, "यह आक्रोश का एक बहुत ही अनावश्यक प्रदर्शन है? मुझे यह समझ में नहीं आता।"

"अब मैं ऐसा नहीं करता," श्री ब्रफ ने कहा।

उनकी कठोरता—उनकी घिनौनी, सांसारिक कठोरता—ने मुझे घृणा उत्पन्न कर दी।

"ओह, रेचल! रेचल!" मैं फूट पड़ी। "क्या तुम्हें अभी तक नहीं पता चला कि मेरा दिल तुम्हें ईसाई बनाने के लिए तड़प रहा है? क्या किसी अंतरात्मा की आवाज ने तुम्हें नहीं बताया कि मैं तुम्हारे लिए वही करने की कोशिश कर रही हूँ जो मैं तुम्हारी प्यारी माँ के लिए कर रही थी जब मृत्यु ने उसे मुझसे छीन लिया था?"

राहेल एक कदम और आगे बढ़ी और मुझे बहुत अजीब तरीके से देखने लगी।

"मुझे आपकी मेरी माँ के बारे में की गई टिप्पणी समझ नहीं आई," उसने कहा। "मिस क्लैक, क्या आप कृपया अपनी बात स्पष्ट करेंगी?"
इससे पहले कि मैं जवाब दे पाती, मिस्टर ब्रफ आगे आए और राहेल को अपना हाथ बढ़ाते हुए उसे कमरे से बाहर ले जाने की कोशिश की।
"मेरी प्यारी, बेहतर होगा कि तुम इस विषय को आगे न बढ़ाओ," उसने कहा। "और मिस क्लैक को भी अपनी सफाई देने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।"
यदि मैं एक पत्थर या जड़ होता, तो इस तरह के हस्तक्षेप से मैं सत्य की गवाही देने के लिए प्रेरित हो जाता। मैंने श्री ब्रुफ़ को अपने हाथ से गुस्से में एक तरफ धकेल दिया, और गंभीर और उचित शब्दों में, मैंने उस दृष्टिकोण को व्यक्त किया जिसके साथ सही सिद्धांत बिना किसी संकोच के असमय मृत्यु की भयावह त्रासदी को देखता है।
रेचल मुझसे पीछे हट गई—यह लिखते हुए मुझे शर्म आ रही है—और वह डर के मारे चीख पड़ी।
"चले जाओ!" उसने मिस्टर ब्रफ़ से कहा। "भगवान के लिए, यहाँ से चले जाओ, इससे पहले कि वह औरत कुछ और कह पाए! ओह, मेरी बेचारी माँ के सीधे-सादे, नेक और खूबसूरत जीवन के बारे में सोचो! आप अंतिम संस्कार में थे, मिस्टर ब्रफ़; आपने देखा कि कैसे सब लोग उनसे प्यार करते थे; आपने देखा कि कैसे बेचारे बेबस लोग उनकी कब्र पर अपनी सबसे अच्छी दोस्त को खोने के गम में रो रहे थे। और वह नीच औरत वहाँ खड़ी है, और मुझे यह शक दिलाने की कोशिश कर रही है कि मेरी माँ, जो धरती पर एक फरिश्ता थी, अब स्वर्ग में एक फरिश्ता है! इस बारे में बात करना बंद करो! चले जाओ! उसके साथ एक ही हवा में साँस लेना मेरे लिए घुटन भरा है! यह सोचकर ही मुझे डर लगता है कि हम एक ही कमरे में हैं!"
सभी विरोधों को अनसुना करते हुए, वह दरवाजे की ओर दौड़ी।
उसी क्षण, उसकी नौकरानी उसका बोनट और शॉल लेकर अंदर आई। उसने जैसे-तैसे उन्हें ओढ़ लिया। "मेरा सामान पैक करो," उसने कहा, "और इसे श्री ब्रूफ के पास ले जाओ।" मैंने उसके पास जाने की कोशिश की - मैं स्तब्ध और दुखी थी, लेकिन कहने की ज़रूरत नहीं है कि मुझे कोई ठेस नहीं पहुँची थी। मैं बस उससे कहना चाहती थी, "ईश्वर करे तुम्हारा कठोर हृदय पिघल जाए! मैं तुम्हें क्षमा करती हूँ!" उसने अपना घूंघट नीचे खींच लिया, मेरे हाथ से शॉल छीन ली और जल्दी से बाहर निकलकर मेरे चेहरे पर दरवाज़ा बंद कर दिया। मैंने हमेशा की तरह धैर्य से इस अपमान को

सहन किया। अब भी मैं इसे हमेशा की तरह अपमान की भावना से ऊपर उठाकर याद करती हूँ।
श्री ब्रुफ ने मुझसे विदाई के समय कुछ व्यंग्यात्मक शब्द कहे, और फिर वे भी अपनी बारी में जल्दी से बाहर निकल गए।
"मिस क्लैक, बेहतर होगा कि आपने खुद को स्पष्ट न किया हो," उन्होंने कहा, झुककर अभिवादन किया और कमरे से चले गए।
टोपी पर रिबन बांधे हुए व्यक्ति ने उनका पीछा किया।
“यह आसानी से देखा जा सकता है कि किसने इन सबको कान पकड़कर एक साथ बांध रखा है,” उसने कहा। “मैं तो बस एक मामूली नौकरानी हूँ—पर मैं कसम खाती हूँ कि मुझे तुम पर शर्म आती है!” वह भी बाहर चली गई और दरवाज़ा ज़ोर से बंद कर दिया।
मैं कमरे में अकेला रह गया था। उन सभी ने मुझे अपमानित किया, उन सभी ने मुझे छोड़ दिया, मैं कमरे में अकेला रह गया था।
क्या तथ्यों के इस सीधे-सादे बयान में—संसार द्वारा सताए गए एक ईसाई के इस मार्मिक चित्र में—कुछ और जोड़ने की आवश्यकता है? नहीं! मेरी डायरी मुझे याद दिलाती है कि मेरे जीवन के कई उतार-चढ़ावों भरे अध्यायों में से एक और अध्याय यहीं समाप्त होता है। उस दिन के बाद से, मैंने राहेल वेरेंडर को फिर कभी नहीं देखा। जब उसने मेरा अपमान किया था, तब मैंने उसे क्षमा कर दिया था। तब से मेरी प्रार्थनाएँ उसके साथ हैं। और जब मैं मर जाऊँगा—बुराई के बदले भलाई का अपना कर्म पूरा करते हुए—उसे मेरी वसीयत के अनुसार मिस जेन ऐन स्टैम्पर का जीवन, पत्र और कार्य विरासत में मिलेंगे।

दूसरी कथा
ग्रेज़ इन स्क्वायर के सॉलिसिटर मैथ्यू ब्रफ द्वारा योगदान।

अध्याय 1

मेरी प्यारी दोस्त, मिस क्लैक, आपने कलम रख दी है, और अब मेरी बारी आने पर इसे उठाने के दो कारण हैं।
सबसे पहले, मैं कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालने की स्थिति में हूँ जो अब तक अनसुने रहे हैं। मिस वेरेंडर के विवाह अनुबंध तोड़ने का अपना निजी कारण था —और मैंने उस कारण का पता लगाया। श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के अपनी आकर्षक

चचेरी बहन से विवाह का दावा वापस लेने का अपना निजी कारण था—और मैंने उसका पता लगाया।

दूसरी बात, यह मेरा सौभाग्य था या दुर्भाग्य, मैं ठीक से नहीं जानता, कि मैं स्वयं भारतीय हीरे के रहस्य में उलझ गया—ठीक उसी समय जब मैं यह लिख रहा हूँ। मुझे अपने कार्यालय में एक प्रतिष्ठित और शिष्ट पूर्वी अजनबी से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो निस्संदेह उन तीन भारतीयों के मुखिया थे। इसके अतिरिक्त, अगले दिन मेरी मुलाकात प्रसिद्ध यात्री श्री मुर्थवेट से हुई और मैंने उनसे मूनस्टोन के विषय पर चर्चा की, जिसका आगे की घटनाओं पर बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। और यही वह आधार है जिससे इन पृष्ठों में मेरे द्वारा निभाई जा रही भूमिका के लिए मेरा दावा स्पष्ट होता है।

टूटी हुई सगाई की सच्ची कहानी समय के हिसाब से सबसे पहले आती है, इसलिए वर्तमान वृत्तांत में इसे ही पहला स्थान मिलना चाहिए। घटनाओं की कड़ी को शुरू से अंत तक देखते हुए, मुझे यह आवश्यक लगता है कि मैं अपने उत्कृष्ट ग्राहक और मित्र, स्वर्गीय सर जॉन वेरेंडर के बिस्तर के पास से शुरुआत करूं, जैसा कि आपको शायद अजीब लगे।

सर जॉन में भी मानवीय स्वभाव की कुछ हानिरहित और सौम्य कमजोरियाँ थीं—शायद काफी हद तक। इनमें से एक, जो इस मामले से संबंधित है, वह थी वसीयत बनाने की जिम्मेदारी का सामना करने से उनकी अटूट अनिच्छा—जब तक वे स्वस्थ थे। लेडी वेरेंडर ने उन्हें इस मामले में कर्तव्यबोध दिलाने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया; और मैंने भी अपना प्रभाव डाला। उन्होंने हमारे विचारों की सत्यता को स्वीकार किया—लेकिन वे इससे आगे नहीं बढ़े, जब तक कि वे उस बीमारी से ग्रसित नहीं हो गए जिसने अंततः उन्हें मृत्यु के घाट उतार दिया। तब मुझे अंततः अपने मुवक्किल की वसीयत के विषय में निर्देश लेने के लिए बुलाया गया। वे निर्देश मेरे पूरे पेशेवर जीवन में प्राप्त किए गए सबसे सरल निर्देश साबित हुए।

जब मैं कमरे में दाखिल हुआ तो सर जॉन ऊंघ रहे थे। मुझे देखते ही वे जाग गए।

“आप कैसे हैं, श्रीमान ब्रफ़?” उन्होंने कहा। “मैं इसमें ज़्यादा समय नहीं लगाऊँगा। फिर मैं सोने चला जाऊँगा।” जब मैं कलम, स्याही और कागज़ इकट्ठा कर रहा था, तब वे बड़ी दिलचस्पी से मुझे देख रहे थे। “क्या आप तैयार हैं?” उन्होंने पूछा। मैंने झुककर अभिवादन किया, स्याही में डुबोया और निर्देशों का इंतज़ार करने लगा।

“मैं अपनी सारी संपत्ति अपनी पत्नी के नाम कर देता हूँ,” सर जॉन ने कहा। “बस इतना ही।” वह तकिए पर करवट बदलकर फिर से सोने के लिए लेट गए।
मुझे उसे परेशान करना पड़ा।
मैंने पूछा, "क्या मुझे यह समझना चाहिए कि आप अपनी मृत्यु के समय तक अपनी सारी संपत्ति, हर प्रकार की और हर तरह की, लेडी वेरेंडर को पूर्णतः सौंप रहे हैं?"
"जी हां," सर जॉन ने कहा। "बस, मैंने इसे छोटा कर दिया है। आप इसे छोटा क्यों नहीं कर देते, और मुझे फिर से सोने क्यों नहीं देते? सब कुछ मेरी पत्नी के लिए है। यही मेरी वसीयत है।"
उनकी संपत्ति पूरी तरह से उनके अपने अधिकार में थी और दो प्रकार की थी। भूमि संपत्ति (मैं जानबूझकर तकनीकी भाषा का प्रयोग नहीं कर रहा हूँ) और धन संपत्ति। अधिकतर मामलों में, मुझे लगता है कि अपने मुवक्किल से वसीयत पर पुनर्विचार करने का आग्रह करना मेरा कर्तव्य होता। सर जॉन के मामले में, मैं लेडी वेरेंडर को न केवल उनके पति द्वारा उन पर रखे गए अटूट विश्वास के योग्य मानता था (सभी अच्छी पत्नियाँ इसके योग्य होती हैं) बल्कि उन्हें एक ट्रस्ट का उचित प्रबंधन करने में भी सक्षम मानता था (जो कि महिलाओं के मेरे अनुभव में, हज़ार में से एक भी महिला करने में सक्षम नहीं होती)। दस मिनट में, सर जॉन की वसीयत तैयार हो गई और उस पर हस्ताक्षर हो गए, और स्वयं सर जॉन, एक भले आदमी, अपनी अधूरी नींद पूरी कर रहे थे।
लेडी वेरेंडर ने अपने पति के उन पर रखे भरोसे को पूरी तरह से सही साबित किया। विधवा होने के शुरुआती दिनों में ही उन्होंने मुझे बुलवाया और अपनी वसीयत बनवाई। उनकी स्थिति के बारे में उनका दृष्टिकोण इतना सटीक और विवेकपूर्ण था कि मुझे उन्हें सलाह देने की कोई आवश्यकता नहीं रही। मेरी ज़िम्मेदारी केवल उनके निर्देशों को उचित कानूनी रूप देने तक ही सीमित थी। सर जॉन के निधन के दो सप्ताह भी पूरे नहीं हुए थे कि उनकी बेटी के भविष्य के लिए अत्यंत बुद्धिमानी और स्नेहपूर्वक व्यवस्था कर दी गई थी।
वसीयत मेरे कार्यालय में अग्निरोधक बक्से में कई वर्षों तक पड़ी रही, जितने वर्षों का हिसाब लगाना भी मुझे अच्छा नहीं लगता। अठारह सौ अड़तालीस की गर्मियों में ही मुझे अत्यंत दुखद परिस्थितियों में इसे दोबारा देखने का अवसर मिला।
जिस तारीख का मैंने जिक्र किया है, उस दिन डॉक्टरों ने बेचारी लेडी वेरिंदर को मौत की सजा सुनाई, जो सचमुच मौत की सजा थी। मैं वह पहला व्यक्ति था जिसे उन्होंने

अपनी स्थिति के बारे में बताया; और मैंने पाया कि वह मेरे साथ अपनी वसीयत पर दोबारा विचार करने के लिए उत्सुक थीं।
उनकी बेटी से संबंधित प्रावधानों में सुधार करना असंभव था। लेकिन, समय बीतने के साथ, विभिन्न रिश्तेदारों को दी जाने वाली कुछ छोटी वसीयतों के संबंध में उनकी इच्छाओं में कुछ बदलाव आ गया था; और मूल दस्तावेज़ में तीन या चार परिशिष्ट जोड़ना आवश्यक हो गया। दुर्घटना की आशंका से मैंने तुरंत ऐसा कर लिया और उनकी हालिया हिदायतों को दूसरी वसीयत में शामिल करने के लिए उनकी अनुमति प्राप्त कर ली। मेरा उद्देश्य उन अपरिहार्य उलझनों और पुनरावृत्तियों से बचना था जो अब मूल दस्तावेज़ को बिगाड़ रही थीं, और जो, सच कहूँ तो, मेरे पेशेवर दृष्टिकोण से बिल्कुल भी उचित नहीं थीं।
इस दूसरी वसीयत के निष्पादन का वर्णन मिस क्लैक ने किया है, जिन्होंने इसकी गवाही देकर हमारी कृपा की। राहेल वेरेंडर के आर्थिक हितों के संबंध में, यह पहली वसीयत की शब्दशः प्रतिलिपि थी। इसमें केवल एक अभिभावक की नियुक्ति और उस नियुक्ति से संबंधित कुछ प्रावधानों में बदलाव किए गए थे, जो मेरी सलाह पर किए गए थे। लेडी वेरेंडर की मृत्यु के बाद, वसीयत को मेरे प्रॉक्टर को सामान्य तरीके से प्रमाणित करने के लिए सौंप दिया गया था।
उस समय से लगभग तीन सप्ताह बाद—जहाँ तक मुझे याद है—मुझे पहली बार इस बात का आभास हुआ कि सतह के नीचे कुछ असामान्य चल रहा है। मैं संयोगवश अपने मित्र, निरीक्षक के कार्यालय में झाँक रहा था, और मैंने देखा कि वह मुझसे सामान्य से अधिक रुचि से मिल रहा था।
उन्होंने कहा, "मेरे पास आपके लिए एक खबर है। आपको क्या लगता है मैंने आज सुबह डॉक्टर्स कॉमन्स में क्या सुना? लेडी वेरेंडर की वसीयत मंगाई गई है और उसकी जांच भी हो चुकी है!"
यह वाकई एक चौंकाने वाली खबर थी! वसीयत में ऐसी कोई बात नहीं थी जिस पर आपत्ति जताई जा सके; और मुझे ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं दिख रहा था जिसे इसकी जांच में जरा भी दिलचस्पी हो। (शायद बेहतर होगा कि मैं यहां उन कुछ लोगों के लिए यह स्पष्ट कर दूं जो इसे पहले से नहीं जानते हैं कि कानून के अनुसार, डॉक्टर्स कॉमन्स में किसी भी व्यक्ति द्वारा आवेदन करने पर एक शिलिंग शुल्क का भुगतान करके सभी वसीयतों की जांच की जा सकती है।)
मैंने पूछा, "क्या आपने सुना कि वसीयत किसने मांगी थी?"

"जी हां; क्लर्क ने मुझे बताने में ज़रा भी संकोच नहीं किया। स्किप्प और स्मैली फर्म के श्री स्मैली ने इसे मांगा था। वसीयत की प्रतिलिपि अभी तक बड़े फोलियो रजिस्टरों में नहीं डाली गई है। इसलिए सामान्य प्रक्रिया से हटकर उन्हें मूल दस्तावेज़ दिखाने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। उन्होंने इसे ध्यान से देखा और अपनी जेब में नोट बना लिया। क्या आपको कुछ अंदाज़ा है कि उन्हें इससे क्या चाहिए था?"
मैंने सिर हिलाया। "मैं पता लगा लूंगा," मैंने जवाब दिया, "एक दिन भी बूढ़ा होने से पहले।" इतना कहकर मैं तुरंत अपने कार्यालय लौट गया।
यदि मेरे दिवंगत मुवक्किल की वसीयत की इस अनसुलझी जाँच में कोई अन्य लॉ फर्म शामिल होती, तो मुझे आवश्यक जानकारी जुटाने में कुछ कठिनाई हो सकती थी। लेकिन स्किप्प और स्मैली पर मेरा ऐसा प्रभाव था कि इस मामले में मेरा काम अपेक्षाकृत आसान हो गया। मेरा कॉमन-लॉ क्लर्क (एक अत्यंत सक्षम और उत्कृष्ट व्यक्ति) श्री स्मैली का भाई था; और मेरे साथ इस तरह के अप्रत्यक्ष संबंध के कारण, स्किप्प और स्मैली पिछले कुछ वर्षों से मेरे कार्यालय में आने वाले उन मामलों को संभालते आ रहे थे, जिन्हें मैं विभिन्न कारणों से अपने हाथ में लेना उचित नहीं समझता था। इस प्रकार, मेरा पेशेवर संरक्षण फर्म के लिए काफी महत्वपूर्ण था। आवश्यकता पड़ने पर, मैं इस अवसर पर उन्हें उस संरक्षण की याद दिलाना चाहता था।
जैसे ही मैं वापस लौटा, मैंने अपने क्लर्क से बात की; और, उसे जो कुछ हुआ था वह बताने के बाद, मैंने उसे उसके भाई के कार्यालय में यह कहते हुए भेजा, "श्री ब्रफ की शुभकामनाओं के साथ, और उन्हें यह जानकर खुशी होगी कि श्रीमान स्किप्प और स्मैली ने लेडी वेरेंडर की वसीयत की जांच करना क्यों आवश्यक समझा।"
इस संदेश के बाद श्री स्मैली अपने भाई के साथ मेरे कार्यालय में वापस आए। उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने एक ग्राहक से मिले निर्देशों के अनुसार कार्य किया था। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या इस बारे में और अधिक बताना उनके लिए पेशेवर गोपनीयता का उल्लंघन नहीं होगा।
हमने उस विषय पर काफी समझदारी से चर्चा की। वह सही थे, इसमें कोई शक नहीं; और मैं गलत था। सच तो यह है कि मैं गुस्से में था और मुझे शक भी था—और मैं और अधिक जानने पर अड़ा हुआ था। इससे भी बुरा यह था कि मुझे दी गई किसी भी अतिरिक्त जानकारी को मैंने गुप्त रखने से इनकार कर दिया: मैंने अपने विवेक का इस्तेमाल करने की पूरी स्वतंत्रता का दावा किया। इससे भी बुरा यह था कि मैंने अपनी स्थिति का अनुचित लाभ उठाया। मैंने श्री स्मैली से कहा, "महोदय, आप अपने ग्राहक

का कारोबार खोने के जोखिम और मेरा कारोबार खोने के जोखिम में से किसी एक को चुनिए।" मैं मानता हूँ कि यह बिल्कुल अनुचित था—यह तानाशाही का कार्य था, और कुछ नहीं। अन्य तानाशाहों की तरह, मैंने अपनी बात मनवा ली। श्री स्मैली ने बिना एक पल भी हिचकिचाए अपना विकल्प चुन लिया।

उसने हताशा भरी मुस्कान के साथ अपने ग्राहक का नाम बता दिया:

श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट।

मेरे लिए इतना ही काफी था—मैं इससे ज्यादा कुछ जानना नहीं चाहता था।

अपनी कहानी के इस बिंदु पर पहुँचने के बाद, अब यह आवश्यक हो जाता है कि इन पंक्तियों के पाठक को - जहाँ तक लेडी वेरेंडर की वसीयत का संबंध है - जानकारी के मामले में मेरे साथ पूर्ण समानता के स्तर पर रखा जाए।

संक्षेप में मैं यही कहना चाहता हूँ कि राहेल वेरिंदर का संपत्ति पर केवल आजीवन अधिकार था। उनकी माँ की सूझबूझ और मेरे लंबे अनुभव ने मिलकर उन्हें हर तरह की ज़िम्मेदारी से मुक्त कर दिया था और भविष्य में किसी ज़रूरतमंद और बेईमान आदमी का शिकार बनने के खतरे से बचा लिया था। न तो वह और न ही उनका पति (अगर उनकी शादी होती), ज़मीन या पैसे के रूप में संपत्ति से एक पैसा भी कमा सकते थे। उनके पास लंदन और यॉर्कशायर में रहने के लिए घर होंगे और अच्छी आमदनी होगी—बस इतना ही।

जब मैंने अपनी खोज के बारे में सोचना शुरू किया, तो मैं बुरी तरह असमंजस में पड़ गया कि आगे क्या करना है।

मिस वेरिंदर की प्रस्तावित शादी के बारे में सुनकर मुझे अभी एक हफ़्ता भी नहीं बीता था (और यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य और दुख हुआ था)। मैं उनसे बहुत स्नेह और सम्मान करता था; और जब मुझे पता चला कि वह मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट से शादी करने जा रही हैं, तो मुझे बहुत दुख हुआ था। और अब, वही आदमी—जिसे मैं हमेशा से मीठी बातों का ढोंगी समझता था—मेरे मन में उसके बारे में जो सबसे बुरा विचार था, उसे सही साबित कर रहा था, और साफ़ तौर पर शादी के पीछे के अपने स्वार्थ को उजागर कर रहा था! और इसमें क्या बुराई है?—आप कह सकते हैं—ऐसा तो रोज़ होता है। ठीक है, मेरे प्रिय महोदय। लेकिन क्या आप इसे इतनी आसानी से लेंगे, अगर ऐसा (मान लीजिए) आपकी अपनी बहन के साथ होता?

सबसे पहला विचार जो स्वाभाविक रूप से मेरे मन में आया, वह यह था: क्या श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट अपने वकील द्वारा उनके लिए पता लगाई गई जानकारी के बाद

भी अपने अनुबंध पर कायम रहेंगे?
यह पूरी तरह से उसकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर था, जिसके बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था। यदि उसकी स्थिति दयनीय नहीं थी, तो केवल उसकी आमदनी के लिए ही मिस वेरेंडर से शादी करना उसके लिए फायदेमंद होता। दूसरी ओर, यदि उसे किसी निश्चित समय सीमा तक बड़ी रकम की सख्त जरूरत थी, तो लेडी वेरेंडर की वसीयत उसके लिए बिल्कुल उपयुक्त होती और उसकी बेटी को किसी बदमाश के चंगुल में पड़ने से बचाती।
दूसरे मामले में, मुझे मिस राहेल को उनकी मां की मृत्यु के शोक के शुरुआती दिनों में सच्चाई का तुरंत खुलासा करके परेशान करने की कोई आवश्यकता नहीं होगी। पहले मामले में, यदि मैं चुप रहता, तो मैं एक ऐसे विवाह में सहभागिता कर रहा होता जो उन्हें जीवन भर दुखी कर देता।
मेरे सारे संदेह तब दूर हो गए जब मैंने लंदन के उस होटल में फोन किया, जहाँ मुझे पता था कि श्रीमती एबलव्हाइट और मिस वेरिंदर ठहरी हुई हैं। उन्होंने मुझे बताया कि वे अगले दिन ब्राइटन जा रही हैं और एक अप्रत्याशित बाधा के कारण श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट उनके साथ नहीं जा पा रहे हैं। मैंने तुरंत उनकी जगह जाने का प्रस्ताव रखा। जब मैं केवल राहेल वेरिंदर के बारे में सोच रहा था, तब थोड़ा संकोच हो सकता था। लेकिन जब मैंने उन्हें देखा, तो मैंने तुरंत ठान लिया कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उन्हें सच बताऊँगा।
मुझे अपना मौका तब मिला, जब मैं अपने आगमन के अगले दिन उसके साथ टहल रहा था।
मैंने पूछा, "क्या मैं आपकी शादी की सगाई के बारे में आपसे बात कर सकता हूँ?"
"हां," उसने उदासीनता से कहा, "अगर आपके पास बात करने के लिए इससे ज्यादा दिलचस्प कुछ नहीं है तो।"
"क्या आप मुझे क्षमा करेंगी, मिस राहेल, अगर मैं आपसे यह पूछने का साहस करूं कि क्या आप इस विवाह के लिए पूरी तरह से तैयार हैं?"
"मैं हताशा में शादी कर रही हूँ, श्रीमान ब्रफ—इस उम्मीद में कि शायद मुझे किसी तरह की स्थिर खुशी मिल जाए जो मुझे मेरे जीवन से संतुष्ट कर दे।"
अभद्र भाषा! और सतह के नीचे छिपी किसी बात का संकेत, जैसे कि कोई प्रेम प्रसंग। लेकिन मेरा अपना उद्देश्य था, और मैंने (जैसा कि हम वकील कहते हैं) इस प्रश्न के उप-पहल में पड़ने से इनकार कर दिया।

मैंने कहा, "श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट की सोच आपसे मिलती-जुलती नहीं होगी। कम से कम उनका मन तो शादी के लिए तत्पर होगा ही?"
"वह ऐसा कहता है, और मुझे लगता है कि मुझे उस पर विश्वास कर लेना चाहिए। मैंने उसके सामने जो कुछ स्वीकार किया है, उसके बाद वह मुझसे शादी तभी करेगा जब वह मुझे पसंद करता हो।"
बेचारी! किसी पुरुष द्वारा अपने स्वार्थी और लालची उद्देश्यों के लिए उससे शादी करने का विचार भी उसके मन में कभी नहीं आया था। मैंने जो काम अपने हाथ में लिया था, वह अब मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक कठिन प्रतीत होने लगा था।
मैंने आगे कहा, "मेरे पुराने ख्यालों वाले कानों को यह अजीब लगता है----"
"क्या अजीब लग रहा है?" उसने पूछा।
"आपके भावी पति के बारे में आपकी बातें सुनकर ऐसा लगता है मानो आप उनकी निष्ठा की सच्चाई को लेकर पूरी तरह आश्वस्त नहीं हैं। क्या आपके मन में उनके प्रति संदेह का कोई कारण है?"
उसकी अद्भुत सूझबूझ ने मेरे प्रश्न पूछते ही मेरी आवाज़ या मेरे हावभाव में आए बदलाव को भांप लिया, जिससे उसे आगाह हो गया कि मैं शुरू से ही किसी गुप्त उद्देश्य से बोल रहा था। वह रुक गई और अपना हाथ मेरे हाथ से छुड़ाकर मेरी ओर ध्यान से देखने लगी।
"श्री ब्रूफ," उसने कहा, "आपको गॉडफ्रे एबलव्हाइट के बारे में कुछ बताना है। बताइए।"
मैं उसे अच्छी तरह से जानता था, इसलिए मैंने उसकी बात पर विश्वास कर लिया। मैंने उसे बता दिया।
उसने अपना हाथ फिर से मेरे हाथ में डाल दिया और धीरे-धीरे मेरे साथ चलने लगी। मैंने महसूस किया कि उसका हाथ मेरे हाथ पर अपनी पकड़ कसता जा रहा है, और जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, उसका चेहरा पीला पड़ता गया—लेकिन, जब तक मैं बोलता रहा, उसके होंठों से एक शब्द भी नहीं निकला। जब मैंने बोलना बंद किया, तब भी वह चुप रही। उसका सिर थोड़ा झुका हुआ था, और वह मेरे बगल में चलती रही, मेरी मौजूदगी से बेखबर, अपने आस-पास की हर चीज़ से बेखबर; खोई हुई—लगभग कहूँ तो, अपने ही विचारों में डूबी हुई।
मैंने उसे परेशान करने का कोई प्रयास नहीं किया। उसके स्वभाव के मेरे अनुभव ने मुझे आगाह किया कि इस बार भी, और पहले भी कई बार, उसे समय देना ही बेहतर

है।
आम तौर पर लड़कियों की पहली प्रवृत्ति, जब उन्हें किसी ऐसी बात का पता चलता है जिसमें उनकी रुचि होती है, तो ढेर सारे सवाल पूछना और फिर भागकर किसी सहेली से उस पर चर्चा करना होती है। राहेल वेरिंदर की भी ऐसी ही परिस्थितियों में पहली प्रवृत्ति खुद को अपने विचारों में समेट लेना और अकेले ही उस पर चिंतन करना थी। यह पूर्ण आत्मनिर्भरता पुरुषों में एक बड़ा गुण है। महिलाओं में इसका एक गंभीर नुकसान यह है कि यह उन्हें नैतिक रूप से अपनी ही जाति की अन्य महिलाओं से अलग कर देती है और इस प्रकार उन्हें आम राय द्वारा गलत समझे जाने का शिकार बना देती है। मुझे पूरा संदेह है कि इस मामले में मैं भी बाकी दुनिया की तरह ही सोचता हूँ - सिवाय राहेल वेरिंदर के मामले के। मेरे विचार में, उनके चरित्र में मौजूद आत्मनिर्भरता इसका एक गुण था; कुछ हद तक, निस्संदेह, क्योंकि मैं वास्तव में उनकी प्रशंसा करता था और उन्हें पसंद करता था; कुछ हद तक, क्योंकि मूनस्टोन के खोने से उनके संबंध के बारे में मेरा दृष्टिकोण उनके स्वभाव के बारे में मेरे अपने विशेष ज्ञान पर आधारित था। हीरे के मामले में, भले ही परिस्थितियाँ कितनी भी बुरी क्यों न दिखें—यह जानकर निस्संदेह बहुत हैरानी हुई कि वह किसी भी तरह से एक अनसुलझी चोरी के रहस्य से जुड़ी हुई थी—फिर भी मैं इस बात से संतुष्ट था कि उसने कुछ भी ऐसा नहीं किया था जो उसके लिए अनुचित हो, क्योंकि मैं इस बात से भी संतुष्ट था कि उसने अपने मन में पूरी तरह से विचार किए बिना और सोच-विचार किए बिना इस मामले में कोई कदम नहीं उठाया था।
हम लगभग एक मील तक चलते रहे, फिर राहेल होश में आई। अचानक उसने मेरी ओर देखा, उसके चेहरे पर खुशहाल दिनों की मुस्कान की हल्की सी झलक थी—एक स्त्री के चेहरे पर मैंने अब तक की सबसे मोहक मुस्कान देखी थी।
"मैं आपकी दयालुता की पहले से ही बहुत ऋणी हूँ," उसने कहा। "और अब मैं पहले से कहीं अधिक ऋणी महसूस करती हूँ। अगर लंदन लौटने पर आपको मेरी शादी के बारे में कोई अफवाह सुनाई दे, तो मेरी ओर से तुरंत उसका खंडन करना।"
मैंने पूछा, "क्या आपने अपनी सगाई तोड़ने का फैसला कर लिया है?"
"क्या आपको इस पर शक है?" उसने गर्व से जवाब दिया, "आपने जो मुझे बताया है उसके बाद!"
"मेरी प्रिय मिस राहेल, आप बहुत युवा हैं—और आपको अपनी वर्तमान स्थिति से बाहर निकलने में जितनी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है, उससे कहीं

अधिक कठिनाई हो सकती है। क्या आपके पास कोई नहीं है—मेरा मतलब है, कोई महिला—जिससे आप सलाह ले सकें?"
"कोई नहीं," उसने जवाब दिया।
मुझे बहुत दुख हुआ, सचमुच बहुत दुख हुआ, जब मैंने उसकी ये बात सुनी। वह इतनी जवान और इतनी अकेली थी—और उसने इसे कितनी अच्छी तरह से सहा! उसकी मदद करने की तीव्र इच्छा ने उस परिस्थिति में मेरी अपनी असमर्थता की भावना को दबा दिया; और मैंने उस समय जो भी विचार मेरे मन में आए, उन्हें अपनी पूरी क्षमता से व्यक्त किया। मैंने अपने जीवन में असंख्य ग्राहकों को सलाह दी है और कई बेहद जटिल समस्याओं का समाधान किया है। लेकिन यह पहला मौका था जब मैंने किसी युवती को शादी के बंधन से मुक्ति पाने का सुझाव दिया था। मैंने जो सुझाव दिया, वह संक्षेप में यह था। मैंने उसे सलाह दी कि वह श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट को—निजी तौर पर—बताए कि उसने, उसकी जानकारी के अनुसार, अपने स्वार्थपूर्ण इरादे को उजागर कर दिया है। इसके बाद वह यह कहने वाली थी कि जो कुछ उसने पता लगाया है, उसके बाद उनकी शादी होना बिल्कुल असंभव है। वह उससे यह भी पूछेगी कि क्या उसके लिए यह बेहतर होगा कि वह उसके विचारों से सहमत होकर उसे चुप करा दे, या फिर उसका विरोध करके उसे अपने इस कृत्य के पीछे का मकसद सार्वजनिक करने के लिए मजबूर करे। यदि वह अपना बचाव करने की कोशिश करे या तथ्यों से इनकार करे, तो वह उसे कानून प्रवर्तन अधिकारियों के पास भेज देगी।
मिस वेरिंदर ने मेरी बात पूरी होने तक ध्यान से सुना। फिर उन्होंने मेरी सलाह के लिए बड़े ही मधुर ढंग से धन्यवाद दिया, लेकिन साथ ही यह भी बताया कि उनके लिए उस सलाह का पालन करना असंभव है।
मैंने कहा, "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपको इसका पालन करने में क्या आपत्ति है?"
वह हिचकिचाई—और फिर उसने मुझसे एक सवाल पूछा।
"मान लीजिए कि आपसे श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के आचरण के बारे में अपनी राय व्यक्त करने के लिए कहा जाए?" उसने बात शुरू की।
"हाँ?"
"आप इसे क्या कहेंगे?"
मैं इसे एक नीच और कपटी व्यक्ति का आचरण कहूंगा।
श्रीमान ब्रफ! मैंने उस आदमी पर भरोसा किया है। मैंने उससे शादी करने का वादा किया है। मैं उसे कैसे बताऊं कि वह नीच है, मैं उसे कैसे बताऊं कि उसने मुझे धोखा

दिया है, मैं उसे दुनिया के सामने कैसे अपमानित कर सकती हूं? मैंने उसे अपना पति मानकर खुद को नीचा दिखाया है। अगर मैं उससे वही कहूं जो आप मुझे कहने को कह रहे हैं - तो मैं उसके सामने यह स्वीकार कर लूंगी कि मैंने खुद को नीचा दिखाया है। मैं ऐसा नहीं कर सकती। हमारे बीच जो कुछ हुआ है, उसके बाद मैं ऐसा नहीं कर सकती! उसे तो इस बात की शर्मिंदगी कुछ भी नहीं होगी। लेकिन मेरे लिए यह शर्मिंदगी असहनीय होगी।

उसके चरित्र की एक और विशिष्ट विशेषता मेरे सामने खुलकर प्रकट हो रही थी। किसी भी नीच चीज़ के संपर्क में आने से उसे इतना डर लगता था कि वह अपने प्रति अपने दायित्वों को भूल जाती थी और एक ऐसी झूठी स्थिति में फंस जाती थी जिससे उसके सभी मित्रों की नज़र में उसकी प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती थी! अब तक, मैंने उसे जो सलाह दी थी, उसकी उपयुक्तता के बारे में मुझे थोड़ा संशय था। लेकिन, उसने जो कहा, उसके बाद मुझे कोई संदेह नहीं रहा कि वह सबसे अच्छी सलाह थी जो दी जा सकती थी; और मुझे उसे फिर से वही सलाह देने में कोई झिझक नहीं हुई।

उसने केवल अपना सिर हिलाया और दूसरे शब्दों में अपनी आपत्ति दोहराई।

"वह मेरे साथ इतना अंतरंग हो चुका है कि उसने मुझसे शादी करने का प्रस्ताव रखा। उसने मेरी नज़र में इतना ऊंचा मुकाम हासिल कर लिया है कि मुझे उसकी सहमति मिल गई। इसके बाद मैं उसके सामने यह नहीं कह सकती कि वह सबसे घृणित प्राणी है!"

"लेकिन, मेरी प्यारी मिस राहेल," मैंने आपत्ति जताते हुए कहा, "आपके लिए बिना कोई कारण बताए उसे अपनी सगाई तोड़ने की बात कहना भी उतना ही असंभव है।"

मैं यह कहूंगा कि मैंने इस पर अच्छी तरह से विचार कर लिया है, और मैं संतुष्ट हूं कि हम दोनों के लिए अलग होना ही सबसे अच्छा होगा।

"उससे अधिक कुछ नहीं?"

"अब और नहीं।"

"क्या आपने इस बात पर विचार किया है कि वह अपनी तरफ से क्या कह सकता है?"

वह जो चाहे कह सकता है।

उनकी कोमलता और दृढ़ संकल्प की प्रशंसा किए बिना रहना असंभव था, और साथ ही यह महसूस किए बिना रहना भी असंभव था कि वह खुद को गलत साबित कर रही हैं। मैंने उनसे अपने दृष्टिकोण पर विचार करने का आग्रह किया। मैंने उन्हें याद दिलाया कि ऐसा करने से उनके इरादों को लेकर सबसे घिनौनी गलतफहमी पैदा हो

सकती है। मैंने कहा, "आप निजी भावनाओं के बल पर जनमत का सामना नहीं कर सकतीं।"
"मैं कर सकती हूँ," उसने जवाब दिया। "मैं पहले ही कर चुकी हूँ।"
"आपका क्या मतलब है?"
"आप मूनस्टोन को भूल गए हैं, श्रीमान ब्रफ। क्या मैंने वहाँ अपने निजी कारणों से जनमत की परवाह नहीं की थी?"
उसके जवाब ने मुझे कुछ पल के लिए चुप कर दिया। इसने मुझे उसके उस अजीबोगरीब बयान से, जो अभी-अभी उसके मुंह से निकला था, मूनस्टोन के खोने के समय उसके व्यवहार की व्याख्या खोजने के लिए प्रेरित किया। शायद मैं जवानी में ऐसा कर पाता। लेकिन अब तो मैं निश्चित रूप से ऐसा नहीं कर सकता।
घर लौटने से पहले मैंने आखिरी बार समझाने की कोशिश की। वह पहले की तरह ही अडिग थी। उस दिन जब मैं उससे विदा हुआ, तो मेरे मन में उसके बारे में अजीबोगरीब दुविधा थी। वह जिद्दी थी; वह गलत थी। वह दिलचस्प थी; वह प्रशंसनीय थी; उस पर तरस भी आता था। मैंने उससे वादा लिया कि जैसे ही उसे कोई खबर मिले, वह मुझे पत्र लिखेगी। और मैं बेहद बेचैन मन से लंदन में अपने काम पर लौट गया।
मेरी वापसी की शाम को, इससे पहले कि मुझे मेरा वादा किया गया पत्र मिल पाता, मुझे श्री एबलव्हाइट सीनियर के अचानक आने से आश्चर्य हुआ, और मुझे सूचित किया गया कि श्री गॉडफ्रे को उनकी बर्खास्तगी मिल गई थी - और उन्होंने इसे उसी दिन स्वीकार कर लिया था।
मैंने इस मामले को जिस नज़रिए से देखा है, उसके अनुसार जिन शब्दों को मैंने रेखांकित किया है, उनमें निहित तथ्य श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के समर्पण के उद्देश्य को इतनी स्पष्टता से प्रकट करते हैं मानो उन्होंने स्वयं इसे स्वीकार किया हो। उन्हें बड़ी रकम की ज़रूरत थी; और वह भी एक निश्चित समय सीमा के भीतर। राहेल की आमदनी, जो किसी और काम में उनकी मदद कर सकती थी, यहाँ उनकी मदद नहीं कर सकती थी; और राहेल ने बिना किसी गंभीर विरोध के स्वयं को उनसे अलग कर लिया। यदि मुझसे कहा जाए कि यह महज़ एक अटकल है, तो मैं भी यही पूछता हूँ कि उनके उस विवाह को छोड़ने का और क्या कारण हो सकता है जो उन्हें जीवन भर ऐश्वर्य से जीने का सहारा देता?

हालात में आए इस सुखद मोड़ को लेकर मेरे मन में जो भी खुशी हो सकती थी, वह श्री एबलव्हाइट के साथ मेरी मुलाकात में घटी घटनाओं से पूरी तरह से रुक गई।
ज़ाहिर है, वह मुझसे यह जानने आए थे कि क्या मैं उन्हें मिस वेरेंडर के असाधारण व्यवहार का कोई स्पष्टीकरण दे सकती हूँ। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैं उन्हें वह जानकारी देने में पूरी तरह असमर्थ थी जो वे चाहते थे। उनके बेटे के साथ हाल ही में हुई मुलाकात से उत्पन्न हुई झुंझलाहट के बाद, मैंने उन्हें जो नाराज़गी दी, उससे श्री एबलव्हाइट घबरा गए। उनके हाव-भाव और भाषा दोनों ने मुझे आश्वस्त कर दिया कि अगले दिन ब्राइटन में महिलाओं से मिलने पर मिस वेरेंडर को उनसे निपटना एक कठोर काम लगेगा।
आगे क्या करना है, इस बारे में सोचते-सोचते मेरी रात बेचैनी से गुज़री। मेरे विचारों का क्या अंत हुआ और श्री एबलव्हाइट पर मेरा अविश्वास कितना सही साबित हुआ, ये सारी जानकारी (जैसा कि मुझे बताया गया है) उस अनुकरणीय व्यक्तित्व, मिस क्लैक ने पहले ही बड़े करीने से अपने उचित स्थान पर रख दी है। मैं बस इतना ही जोड़ना चाहता हूँ—उनकी कहानी को पूरा करते हुए—कि बेचारी मिस वेरेंडर को हैम्पस्टेड स्थित मेरे घर में वह शांति और सुकून मिला जिसकी उन्हें बहुत ज़रूरत थी। उन्होंने हमारे यहाँ लंबे समय तक रहकर हमें सम्मानित किया। मेरी पत्नी और बेटियाँ उनसे बहुत प्रभावित हुईं; और जब वसीयत के निष्पादकों ने एक नए संरक्षक की नियुक्ति का निर्णय लिया, तो मुझे यह बताते हुए अत्यंत गर्व और प्रसन्नता हो रही है कि मेरी मेहमान और मेरा परिवार दोनों तरफ से पुराने दोस्तों की तरह विदा हुए।

अध्याय II

अब मुझे मूनस्टोन के विषय में, या अधिक सटीक रूप से कहें तो, हीरे की चोरी के भारतीय षड्यंत्र के विषय में, मेरे पास मौजूद अतिरिक्त जानकारी प्रस्तुत करनी है। मेरे पास जो थोड़ी-बहुत जानकारी है, वह (जैसा कि मुझे लगता है कि मैंने पहले ही कहा है) फिर भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका आने वाली घटनाओं पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ेगा।
मिस वेरेंडर के हमें छोड़कर जाने के लगभग एक सप्ताह या दस दिन बाद, मेरे एक क्लर्क ने मेरे कार्यालय के निजी कमरे में हाथ में एक कार्ड लेकर प्रवेश किया और मुझे सूचित किया कि एक सज्जन नीचे हैं, जो मुझसे बात करना चाहते हैं।
मैंने कार्ड देखा। उस पर एक विदेशी नाम लिखा था, जो मुझे याद नहीं है। कार्ड के नीचे अंग्रेजी में एक पंक्ति लिखी थी, जो मुझे अच्छी तरह याद है:

श्री सेप्टिमस लुकर द्वारा अनुशंसित।
श्री लुकर जैसे पदस्थ व्यक्ति का मुझे किसी की सिफारिश करने का दुस्साहस देखकर मैं इतना हैरान रह गया कि मैं कुछ पल के लिए चुप बैठ गया, यह सोचकर कि कहीं मेरी आँखों ने मुझे धोखा तो नहीं दिया। क्लर्क ने मेरी हैरानी देखकर मुझे नीचे इंतज़ार कर रहे अजनबी के बारे में अपने अवलोकन का परिणाम बताया।
"वह दिखने में काफी असाधारण व्यक्ति हैं, महोदय। उनका रंग इतना गहरा है कि कार्यालय में हम सभी उन्हें भारतीय या उसी तरह का कोई व्यक्ति समझ बैठे थे।"
क्लर्क के विचार को मेरे हाथ में मौजूद कार्ड पर लिखी पंक्ति से जोड़ते हुए, मुझे लगा कि शायद श्री लूकर की सिफारिश और मेरे कार्यालय में उस अजनबी के आने के पीछे मूनस्टोन का ही हाथ हो। मेरे क्लर्क की हैरानी के बावजूद, मैंने तुरंत नीचे बैठे सज्जन से मिलने का फैसला किया।
मैंने मात्र जिज्ञासा के लिए जो अत्यंत गैर-पेशेवर बलिदान दिया, उसके औचित्य में, मैं इन पंक्तियों को पढ़ने वाले किसी भी व्यक्ति को याद दिलाना चाहता हूँ कि जीवित व्यक्तियों में से कोई भी (कम से कम इंग्लैंड में) भारतीय हीरे की कहानी से उतना घनिष्ठ संबंध होने का दावा नहीं कर सकता जितना मेरा रहा है। मुझे कर्नल हर्नकैसल की हत्या से बचने की योजना का रहस्य सौंपा गया था। मुझे कर्नल के पत्र मिलते थे, जिनमें वे समय-समय पर खुद को जीवित बताते थे। मैंने उनकी वसीयत तैयार की, जिसमें उन्होंने मूनस्टोन को मिस वेरिंदर के नाम कर दिया। मैंने उनके वसीयतकर्ता को इस उम्मीद में कार्रवाई करने के लिए राजी किया कि यह हीरा परिवार के लिए एक मूल्यवान संपत्ति साबित हो सकता है। और अंत में, मैंने श्री फ्रैंकलिन ब्लेक की संशय का समाधान किया और उन्हें हीरे को लेडी वेरिंदर के घर पहुँचाने का माध्यम बनने के लिए राजी किया। यदि कोई मूनस्टोन और उससे जुड़ी हर चीज में कानूनी अधिकार का दावा कर सकता है, तो मुझे लगता है कि यह शायद ही नकारा जा सकता है कि वह व्यक्ति मैं ही हूँ।
जैसे ही मेरे रहस्यमय ग्राहक को अंदर लाया गया, मुझे अंदर से यह विश्वास हो गया कि मैं उन तीन भारतीयों में से एक के सामने हूँ—संभवतः उनके सरदार के सामने। उन्होंने यूरोपीय पोशाक सावधानीपूर्वक पहनी हुई थी। लेकिन उनका सांवला रंग, उनका लंबा और सुगठित शरीर और उनका गंभीर और शालीन व्यवहार किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए उनकी पूर्वी उत्पत्ति को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त था।

मैंने एक कुर्सी की ओर इशारा किया और उनसे विनती की कि वे मुझे बताएं कि उनका मुझसे क्या काम है।
मुझे परेशान करने के लिए माफी मांगने के बाद (अत्यंत सटीक अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हुए), उस भारतीय ने सोने के कपड़े से लिपटा एक छोटा सा पार्सल निकाला। इसे और रेशमी कपड़े की दूसरी परत को हटाकर, उसने मेरी मेज पर एक छोटा सा डिब्बा रखा, जो आबनूस की पृष्ठभूमि पर बेहद खूबसूरती से रत्नों से जड़ा हुआ था।
“मैं आया हूँ, महोदय, आपसे कुछ पैसे उधार लेने के लिए। और मैं यह आपको आश्वासन के रूप में छोड़ रहा हूँ कि मेरा कर्ज चुका दिया जाएगा।”
मैंने उसके कार्ड की ओर इशारा किया। मैंने पलटकर पूछा, "और आपने श्री लूकर की सिफारिश पर मेरे यहाँ आवेदन किया है?"
भारतीय ने सिर झुकाया।
"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि श्री लूकर ने स्वयं वह धनराशि क्यों नहीं दी जिसकी आपको आवश्यकता है?"
"श्रीमान लूकर ने मुझे बताया कि उनके पास उधार देने के लिए पैसे नहीं हैं।"
"तो उन्होंने आपको मेरे पास आने की सलाह दी?"
भारतीय ने भी कार्ड की ओर इशारा करते हुए कहा, "यह उस पर लिखा है।"
संक्षेप में और सटीक जवाब! अगर मूनस्टोन मेरे पास होता, तो यह पूर्वी सज्जन मुझे बिना किसी झिझक के जान से मार देते, यह मैं भली-भांति जानता हूँ। साथ ही, उस छोटी सी कमी को छोड़कर, मैं गवाही देने के लिए बाध्य हूँ कि वह एक आदर्श ग्राहक थे। हो सकता है उन्होंने मेरी जान की परवाह न की हो। लेकिन उन्होंने वह किया जो मेरे देशवासियों में से किसी ने भी मेरे अनुभव में कभी नहीं किया था - उन्होंने मेरे समय का सम्मान किया।
मैंने कहा, "मुझे खेद है कि आपको मेरे पास आने की परेशानी उठानी पड़ी। श्री लूकर ने आपको यहाँ भेजकर सरासर गलती की है। मेरे पेशे के अन्य लोगों की तरह, मुझ पर भी उधार देने का भरोसा किया जाता है। लेकिन मैं अजनबियों को कभी उधार नहीं देता, और न ही मैं आपके द्वारा प्रस्तुत की गई ऐसी किसी गारंटी पर उधार देता हूँ।"
अन्य लोगों की तरह मुझे अपने नियमों में ढील देने के लिए मनाने की कोशिश करने के बजाय, उस भारतीय ने मुझे एक और प्रणाम किया और बिना किसी विरोध के अपने

बक्से को दो आवरणों में लपेट दिया। वह उठा—यह प्रशंसनीय हत्यारा मेरे जवाब देते ही जाने के लिए उठ खड़ा हुआ!

"क्या अजनबी के प्रति आपके इस तिरस्कारपूर्ण रवैये के कारण मुझे जाने से पहले एक प्रश्न पूछने की अनुमति मिल जाएगी?" उसने कहा।

मैंने एक तरफ झुककर अभिवादन किया। विदाई के समय केवल एक ही प्रश्न! मेरे अनुभव के अनुसार औसत संख्या पचास थी।

"मान लीजिए, महोदय, यदि आपके लिए मुझे पैसा उधार देना संभव (और प्रथागत) होता," उसने कहा, "तो मेरे लिए इसे चुकाना कितने समय में संभव (और प्रथागत) होता?"

मैंने उत्तर दिया, "इस देश में प्रचलित सामान्य प्रक्रिया के अनुसार, यदि आप चाहें तो आपको यह धनराशि उस तारीख से एक वर्ष के भीतर वापस करने का अधिकार होता, जिस तारीख को यह आपको पहली बार दी गई थी।"

उस भारतीय ने मुझे अंतिम प्रणाम किया, जो कि सबसे नीचा प्रणाम था—और अचानक धीरे से कमरे से बाहर चला गया।

यह सब एक पल में, बिना किसी शोर के, बिल्ली जैसी फुर्ती से हुआ, जिससे मैं थोड़ा चौंक गया, यह मैं स्वीकार करता हूँ। जैसे ही मैं सोचने-समझने लायक हुआ, मैं उस रहस्यमय आगंतुक के बारे में एक स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुँचा जिसने मुझे फोन करके अनुग्रह किया था।

जब मैं उनके साथ था, उनका चेहरा, आवाज़ और व्यवहार—सब कुछ इतना नियंत्रित था कि हर तरह की जाँच-पड़ताल को धता बता रही थी। लेकिन फिर भी उन्होंने मुझे उनके बाहरी दिखावे के पीछे झाँकने का एक मौका दिया था। उन्होंने मेरी कही हुई किसी भी बात को अपने मन में बिठाने की ज़रा सी भी कोशिश नहीं की, जब तक कि मैंने उन्हें उस समय के बारे में नहीं बताया जब किसी ऋणदाता को उधार लिए गए पैसे को सबसे पहले चुकाने की अनुमति दी जाती है। जब मैंने उन्हें यह जानकारी दी, तो उन्होंने पहली बार बोलते समय सीधे मेरी आँखों में देखा। इससे मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि मुझसे अपना आखिरी सवाल पूछने के पीछे उनका कोई खास मकसद था और मेरे जवाब को सुनने में उनकी खास दिलचस्पी थी। जैसे-जैसे मैंने हमारे बीच हुई बातों पर गहराई से विचार किया, मुझे संदेह होने लगा कि संदूक दिखाना और ऋण के लिए आवेदन करना महज़ औपचारिकताएँ थीं, जो मुझसे पूछे जाने वाले विदाई के सवाल का रास्ता बनाने के लिए रची गई थीं।

मैं अपने इस निष्कर्ष की सत्यता से संतुष्ट हो चुका था और एक कदम आगे बढ़कर भारतीय के इरादों को समझने की कोशिश कर रहा था, तभी मुझे एक पत्र मिला, जो स्वयं श्री सेप्टिमस लुकर का था। उन्होंने अत्यंत चापलूसी भरे शब्दों में मुझसे क्षमा मांगी और आश्वासन दिया कि यदि मैं उनसे व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए सहमत हो जाऊं, तो वे मुझे मामले की संतोषजनक व्याख्या कर सकते हैं।

मैंने महज जिज्ञासा के चलते एक और गैर-पेशेवर त्याग किया। मैंने अगले दिन अपने कार्यालय में उनसे मिलने का समय तय करके उनका सम्मान किया।

श्री लूकर हर मायने में भारतीय से इतने ही हीन प्राणी थे—वे इतने अशिष्ट, इतने बदसूरत, इतने चापलूस और इतने नीरस थे—कि उनका इन पन्नों में विस्तार से वर्णन करना बिलकुल भी उचित नहीं है। उन्होंने मुझे जो कुछ बताया, उसका सार संक्षेप में इस प्रकार है:

भारतीय के आने से एक दिन पहले, श्री लूकर को उस प्रतिष्ठित सज्जन का फोन आया था। यूरोपीय वेश में होने के बावजूद, श्री लूकर ने तुरंत अपने आगंतुक को उन तीन भारतीयों के सरदार के रूप में पहचान लिया, जो पहले उनके घर के आसपास घूमकर उन्हें परेशान करते थे और जिनके कारण उनके पास मजिस्ट्रेट से परामर्श करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। इस चौंकाने वाली खोज से वे इस निष्कर्ष पर पहुँच गए (स्वाभाविक रूप से, मैं स्वीकार करता हूँ) कि वे निश्चित रूप से उन तीन लोगों में से एक के साथ हैं, जिन्होंने उनकी आँखों पर पट्टी बाँधी थी, उनके मुँह में कपड़ा ठूँसाया था और उनकी बैंक रसीद छीन ली थी। परिणामस्वरूप, वे भय से पूरी तरह लकवाग्रस्त हो गए और उन्हें दृढ़ विश्वास हो गया कि उनका अंतिम समय आ गया है।

अपनी ओर से, उस भारतीय ने एक अजनबी होने का दिखावा बनाए रखा। उसने छोटा संदूक निकाला और ठीक वही आवेदन किया जो उसने बाद में मुझसे किया था। उससे जल्द से जल्द छुटकारा पाने के लिए, श्री लूकर ने तुरंत कह दिया कि उनके पास पैसे नहीं हैं। इस पर भारतीय ने पूछा कि उसे जिस ऋण की आवश्यकता है, उसके लिए सबसे अच्छा और सुरक्षित व्यक्ति कौन हो सकता है। श्री लूकर ने उत्तर दिया कि ऐसे मामलों में सबसे अच्छा और सुरक्षित व्यक्ति आमतौर पर एक सम्मानित वकील होता है। जब उनसे उस तरह के किसी व्यक्ति का नाम बताने के लिए कहा गया, तो श्री लूकर ने मेरा नाम लिया - केवल एक साधारण कारण से कि अत्यधिक भय में, मेरा नाम ही सबसे पहले उनके दिमाग में आया। "मुझे पसीना बारिश की तरह बह रहा था, महोदय," उस बेचारे ने अपनी बात समाप्त की। "मुझे नहीं पता था कि मैं क्या कह रहा

हूँ। और मुझे आशा है कि आप इसे अनदेखा कर देंगे, श्री ब्रूफ, महोदय, क्योंकि मैं वास्तव में बहुत डरा हुआ था।"

मैंने बड़ी विनम्रता से उस व्यक्ति से विदा ली। उससे नज़रें हटाने का यही सबसे आसान तरीका था। उसके जाने से पहले, मैंने उससे एक सवाल पूछने के लिए उसे कुछ देर रोक लिया।

क्या उस भारतीय ने श्री लुकर के घर से निकलते समय कुछ ऐसा कहा था जो ध्यान देने योग्य हो?

जी हाँ! विदाई के समय उस भारतीय ने श्री लुकर से ठीक वही प्रश्न पूछा था जो उसने मुझसे पूछा था; और उसे भी वही उत्तर मिला जो मैंने उसे दिया था।

इसका क्या मतलब था? श्री लूकर की व्याख्या से मुझे समस्या सुलझाने में कोई मदद नहीं मिली। इसके बाद मैंने अपनी सूझबूझ का सहारा लिया, लेकिन वह भी इस मुश्किल से निपटने में नाकाम साबित हुई। उस शाम मेरा डिनर का कार्यक्रम था; और मैं ऊपर चला गया, मेरा मन कुछ खास खुश नहीं था, मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मेरे ड्रेसिंग रूम का रास्ता और मेरी पहचान का रास्ता, इस खास मौके पर, एक ही बात थी।

अध्याय III

मैंने पाया कि रात्रिभोज में उपस्थित अतिथियों में सबसे प्रमुख व्यक्ति श्री मुर्थवेट थे।

अपनी यात्राओं के बाद जब वह इंग्लैंड लौटा, तो समाज में उसके प्रति काफी दिलचस्पी पैदा हो गई, क्योंकि वह कई खतरनाक कारनामों से गुज़रा था और बच निकला था। अब उसने अपने कारनामों के स्थल पर लौटने और अब तक अनछुए क्षेत्रों में प्रवेश करने की घोषणा की थी। दूसरी बार अपनी सुरक्षा को खतरे में न डालने की उसकी इस अद्भुत उदासीनता ने उसके प्रशंसकों की कम होती दिलचस्पी को फिर से जगा दिया। संयोगवश, इस बार उसका बचना असंभव था। ऐसा रोज़-रोज़ नहीं होता कि हम किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से भोजन पर मिलें और यह महसूस करें कि उसकी हत्या की खबर ही उसके बारे में अगली खबर होगी।

जब सज्जन भोजन कक्ष में अकेले रह गए, तो मैंने खुद को श्री मुर्थवेट के बगल में बैठा पाया। उपस्थित सभी अतिथि अंग्रेज थे, इसलिए यह कहना अनावश्यक है कि महिलाओं की उपस्थिति से उत्पन्न संयम हटते ही, स्वाभाविक रूप से बातचीत राजनीति की ओर मुड़ गई।

इस सर्वव्यापी राष्ट्रीय विषय के संदर्भ में, मैं शायद सबसे गैर-अंग्रेज़ अंग्रेज़ों में से एक हूँ। आम तौर पर, राजनीतिक चर्चा मुझे सभी चर्चाओं में सबसे नीरस और निरर्थक लगती है। जब मेज पर बोतलों का पहला चक्कर लग चुका था, तब मैंने श्री मुर्थवेट की ओर देखा और पाया कि वे भी मेरी ही तरह सोचते हैं। वे बड़ी चतुराई से—अपने मेज़बान की भावनाओं का पूरा ख्याल रखते हुए—यह कर रहे थे, लेकिन यह भी निश्चित था कि वे झपकी लेने की तैयारी कर रहे थे। मुझे लगा कि यह एक प्रयोग करने लायक है, यह देखने के लिए कि क्या मूनस्टोन के विषय पर समझदारी से किया गया उल्लेख उन्हें जगाए रखेगा, और यदि ऐसा होता है, तो यह देखना कि मेरे कार्यालय के साधारण परिवेश में सामने आई भारतीय षड्यंत्र की नवीनतम जटिलता के बारे में उनका क्या विचार है।

"अगर मैं गलत नहीं हूँ, श्री मुर्थवेट," मैंने शुरू किया, "आप दिवंगत लेडी वेरेंडर से परिचित थे, और आपने उन विचित्र घटनाओं के सिलसिले में कुछ दिलचस्पी ली थी जो मूनस्टोन के खो जाने के साथ समाप्त हुईं?"

उस प्रख्यात यात्री ने मुझे यह सम्मान दिया कि वह पल भर में जाग गए और मुझसे पूछा कि मैं कौन हूँ।

मैंने उन्हें हर्नकैसल परिवार के साथ अपने पेशेवर संबंध के बारे में बताया, साथ ही कर्नल और उनके हीरे के प्रति अतीत में मेरी अजीबोगरीब स्थिति को भी नहीं भूला।

श्री मुर्थवेट अपनी कुर्सी पर थोड़ा घूम गए, ताकि बाकी सभी लोग (रूढ़िवादी और उदारवादी दोनों) उनके पीछे रह जाएं, और उन्होंने अपना पूरा ध्यान ग्रेज़ इन स्क्वायर के साधारण से दिखने वाले श्री ब्रफ पर केंद्रित कर दिया।

"क्या आपने हाल ही में भारतीयों के बारे में कुछ सुना है?" उसने पूछा।

मैंने जवाब दिया, "मेरे पास यह मानने के हर कारण हैं कि उनमें से किसी एक ने कल मेरे कार्यालय में मुझसे साक्षात्कार लिया था।"

श्री मुर्थवेट को आश्चर्यचकित करना आसान नहीं था; लेकिन मेरे उस आखिरी जवाब ने उन्हें पूरी तरह से चौंका दिया। मैंने श्री लुकर के साथ जो हुआ था और मेरे साथ जो हुआ था, ठीक वैसे ही बताया जैसे मैंने यहाँ बताया है। मैंने आगे कहा, "यह स्पष्ट है कि उस भारतीय के विदाई के प्रश्न का कोई उद्देश्य था। वह यह जानने के लिए इतना उत्सुक क्यों था कि उधार लेने वाले को आमतौर पर पैसा वापस करने का अधिकार किस समय होता है?"

"क्या ऐसा संभव है कि आप उसका मकसद नहीं देख पा रहे हैं, श्रीमान ब्रफ?"

"मुझे अपनी मूर्खता पर शर्म आती है, श्री मुर्थवेट—लेकिन मुझे यह बिल्कुल भी दिखाई नहीं देती।"
उस महान यात्री को मेरी नीरसता की अपार शून्यता को उसकी सबसे निचली गहराई तक परखने में काफी दिलचस्पी हो गई।
उन्होंने कहा, "मुझे आपसे एक सवाल पूछने दीजिए। मूनस्टोन को हथियाने की साजिश अब किस स्थिति में है?"
मैंने जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं कह सकता। भारतीय साजिश मेरे लिए एक रहस्य है।"
श्रीमान ब्रफ़, भारतीय षड्यंत्र आपके लिए रहस्य ही हो सकता है, क्योंकि आपने कभी गंभीरता से इसकी जाँच नहीं की। क्या हम कर्नल हर्नकैसल की वसीयत तैयार करने से लेकर भारतीय के आपके कार्यालय आने तक की पूरी घटना पर एक साथ चर्चा कर सकते हैं? आपकी स्थिति को देखते हुए, मिस वेरेंडर के हितों के लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकता है कि आवश्यकता पड़ने पर आप इस मामले का स्पष्ट विश्लेषण कर सकें। इसे ध्यान में रखते हुए, क्या आप स्वयं भारतीय के उद्देश्य का पता लगाएंगे? या आप चाहते हैं कि मैं इस मामले की जाँच-पड़ताल करने की परेशानी से आपको बचा लूँ?
यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने उनके व्यावहारिक उद्देश्य की पूरी तरह से सराहना की, जिसे अब मैं समझ पाया था, और मैंने दोनों विकल्पों में से पहला विकल्प ही चुना।
"बहुत बढ़िया," श्री मुर्थवेट ने कहा। "हम सबसे पहले तीनों भारतीयों की उम्र के सवाल पर विचार करेंगे। मैं गवाही दे सकता हूँ कि वे सभी लगभग एक ही उम्र के लगते हैं - और आप खुद तय कर सकते हैं कि आपने जिस व्यक्ति को देखा, वह जवानी की चरम अवस्था में था या नहीं। चालीस नहीं, आपको लगता है? मेरा भी यही मानना है। हम कहेंगे कि चालीस नहीं। अब उस समय को याद कीजिए जब कर्नल हर्नकैसल इंग्लैंड आए थे, और जब आप उनकी जान बचाने की योजना में शामिल थे। मैं नहीं चाहता कि आप वर्षों की गिनती करें। मैं बस इतना कहूँगा कि यह स्पष्ट है कि ये भारतीय, अपनी उम्र के हिसाब से, उन तीन अन्य भारतीयों (सभी उच्च जाति के ब्राह्मण, श्री ब्रूफ, जब उन्होंने अपना देश छोड़ा था!) के उत्तराधिकारी होंगे, जो कर्नल के पीछे-पीछे यहाँ आए थे। बहुत खूब। हमारे ये लोग अपने से पहले यहाँ आए लोगों के उत्तराधिकारी हैं। अगर उन्होंने सिर्फ इतना ही किया होता, तो इस मामले की जाँच-पड़ताल करने की कोई ज़रूरत नहीं होती। लेकिन उन्होंने इससे भी बढ़कर काम किया है। उन्होंने उस

संगठन को आगे बढ़ाया है जिसे उनके पूर्वजों ने इस देश में स्थापित किया था। घबराइए मत! वह संगठन तो सरासर दिखावा है।" हमारे विचारों के अनुसार, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है। मैं इसे धन के प्रभुत्व, लंदन में विदेशी जीवन के गलियों में रहने वाले उस संदिग्ध किस्म के अंग्रेज की ज़रूरत पड़ने पर मिलने वाली सेवाओं, और अंत में, अपने देश के उन कुछ लोगों की गुप्त सहानुभूति, और (कम से कम पहले) अपने धर्म के उन लोगों की सहानुभूति, जो इस महान शहर की असंख्य ज़रूरतों को पूरा करने में लगे हुए थे, के रूप में गिनूंगा। जैसा कि आप देख रहे हैं, यह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है! लेकिन शुरुआत में इस पर ध्यान देना ज़रूरी है, क्योंकि आगे चलकर हमें इस छोटे से भारतीय संगठन का ज़िक्र करने का अवसर मिल सकता है। अब जब हमने बात स्पष्ट कर दी है, तो मैं आपसे एक सवाल पूछने जा रहा हूँ; और मुझे उम्मीद है कि आपका अनुभव इसका जवाब देगा। वह कौन सी घटना थी जिसने भारतीयों को हीरा हासिल करने का पहला मौका दिया?

मुझे अपने अनुभव के संदर्भ में कही गई बात समझ में आ गई।

मैंने जवाब दिया, "उन्हें जो पहला मौका मिला, वह स्पष्ट रूप से कर्नल हर्नकैसल की मृत्यु के कारण ही मिला। मुझे लगता है कि वे उनकी मृत्यु से भलीभांति परिचित होंगे।"

"स्वाभाविक रूप से। और जैसा कि आपने कहा, उनकी मृत्यु ने उन्हें पहला मौका दिया। उस समय तक मूनस्टोन बैंक के तिजोरी में सुरक्षित था। आपने कर्नल की वसीयत तैयार की जिसमें उन्होंने अपना गहना अपनी भतीजी को दिया था; और वसीयत को सामान्य तरीके से प्रमाणित किया गया। एक वकील के रूप में, आप यह आसानी से समझ सकते हैं कि उसके बाद भारतीय (अंग्रेजों की सलाह पर) क्या कदम उठाएंगे।"

मैंने कहा, "वे डॉक्टर्स कॉमन्स से वसीयत की एक प्रति प्राप्त कर लेंगे।"

"बिल्कुल सही। मैंने जिन संदिग्ध अंग्रेज़ों का ज़िक्र किया है, उनमें से कोई न कोई उन्हें वह प्रति दिला देता जिसका आपने वर्णन किया है। उस प्रति में उन्हें यह जानकारी होती कि मूनस्टोन लेडी वेरेंडर की बेटी को वसीयत में दिया गया था, और मिस्टर ब्लेक सीनियर या उनके द्वारा नियुक्त कोई व्यक्ति उसे उसके हाथों में सौंपने वाला था। आप मुझसे सहमत होंगे कि लेडी वेरेंडर और मिस्टर ब्लेक जैसे पदों पर आसीन व्यक्तियों के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त करना बिलकुल आसान होता। भारतीयों के लिए एकमात्र मुश्किल यह तय करना होता कि क्या वे हीरे पर तब हमला करें जब उसे बैंक की देखरेख से हटाया जा रहा हो, या तब तक प्रतीक्षा करें जब तक उसे यॉर्कशायर में

लेडी वेरेंडर के घर न ले जाया जाए। दूसरा तरीका स्पष्ट रूप से सबसे सुरक्षित होता - और यहीं से फ्रिज़िंगहॉल में बाज़ीगरों के वेश में भारतीयों के प्रकट होने और अपने समय की प्रतीक्षा करने का स्पष्टीकरण मिलता है। लंदन में, यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनके पास घटनाओं की जानकारी रखने के लिए अपना संगठन था। दो आदमी यह काम करते। एक आदमी किसी भी आने-जाने वाले व्यक्ति का पीछा करता। श्री ब्लेक के घर से बैंक तक। और एक व्यक्ति निचले नौकरों को बीयर पिलाने और घर की खबर सुनने के लिए। इन सामान्य सावधानियों से उन्हें आसानी से पता चल जाता कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक बैंक गए थे, और श्री फ्रैंकलिन ब्लेक ही घर में एकमात्र व्यक्ति थे जो लेडी वेरेंडर से मिलने जा रहे थे। उस खोज के बाद वास्तव में क्या हुआ, यह आपको निश्चित रूप से उतना ही सही याद होगा जितना मुझे।

मुझे याद आया कि फ्रैंकलिन ब्लेक ने गली में एक जासूस को देख लिया था—जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने यॉर्कशायर पहुंचने का समय कुछ घंटे आगे बढ़ा दिया था—और (बूढ़े बेटरएज की बेहतरीन सलाह के लिए धन्यवाद) उन्होंने हीरे को फ्रिज़िंगहॉल के बैंक में जमा करा दिया था, इससे पहले कि भारतीय उन्हें आस-पास देख भी पाते। अब तक सब कुछ बिल्कुल स्पष्ट था। लेकिन भारतीयों को इन सावधानियों की जानकारी न होने के बावजूद, राहेल के जन्मदिन से पहले बीते पूरे समय में उन्होंने लेडी वेरेंडर के घर (जहां उन्हें हीरा होने का संदेह रहा होगा) पर हमला करने का प्रयास क्यों नहीं किया?

श्री मुर्थवेट के समक्ष इस समस्या को रखते हुए, मैंने यह कहना उचित समझा कि मैंने उस छोटे लड़के, स्याही की बूंद और बाकी सब बातों के बारे में सुना था, और मेरे विचार से, दूरदर्शिता के सिद्धांत पर आधारित कोई भी व्याख्या किसी भी तरह से विश्वसनीय नहीं होगी।

"न ही मेरे लिए," श्री मुर्थवेट ने कहा। इस मामले में दूरदर्शिता भारतीय चरित्र के रोमांटिक पक्ष का ही एक विकसित रूप है। उन लोगों के लिए यह ताज़गी और प्रोत्साहन की बात होगी—मैं मानता हूँ कि अंग्रेज़ों के लिए यह बिल्कुल अकल्पनीय है—कि इस देश में उनके थकाऊ और खतरनाक कार्य को एक विशेष प्रकार के चमत्कारी और अलौकिक आभा से घेर लिया जाए। उनका लड़का निस्संदेह सम्मोहन के प्रभाव के प्रति संवेदनशील है—और उस प्रभाव में आकर, उसने निस्संदेह सम्मोहन करने वाले व्यक्ति के मन में पहले से मौजूद विचारों को प्रतिबिंबित किया होगा। मैंने दूरदर्शिता के सिद्धांत का परीक्षण किया है—और मैंने कभी भी इसके प्रकटीकरण को

उस बिंदु से आगे बढ़ते हुए नहीं पाया है। भारतीय इस मामले की इस तरह से जाँच नहीं करते; भारतीय अपने लड़के को अपनी आँखों से अदृश्य चीजों का द्रष्टा मानते हैं —और, मैं दोहराता हूँ, उस चमत्कार में उन्हें उस उद्देश्य के प्रति एक नई रुचि का स्रोत मिलता है जो उन्हें एकजुट करता है। मैं इसे केवल मानव चरित्र के एक विचित्र दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत कर रहा हूँ, जो आपके लिए बिल्कुल नया होगा। हमारा इससे कोई लेना-देना नहीं है। क्या हम इस जांच में किसी भी तरह की अलौकिक शक्ति, सम्मोहन या ऐसी किसी भी चीज का सहारा ले सकते हैं जिस पर व्यावहारिक व्यक्ति को विश्वास करना मुश्किल हो? भारतीय घटनाक्रम का चरण दर चरण अनुसरण करने का मेरा उद्देश्य तार्किक तरीकों से इसके परिणामों को प्राकृतिक कारणों से जोड़ना है। क्या मैं अब तक आपकी संतुष्टि के अनुसार सफल रहा हूँ?

"इसमें कोई संदेह नहीं है, श्री मुर्थवेट! हालांकि, मैं उस समस्या का तर्कसंगत स्पष्टीकरण सुनने के लिए कुछ उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहा हूं, जिसे मैंने अभी-अभी आपके समक्ष प्रस्तुत करने का सम्मान प्राप्त किया है।"

श्री मुर्थवेट मुस्कुराए। उन्होंने कहा, "यह सबसे आसान समस्या है। मुझे यह स्वीकार करने की अनुमति दें कि आपका बयान बिल्कुल सही है। भारतीयों को निस्संदेह इस बात की जानकारी नहीं थी कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक ने हीरे के साथ क्या किया था - क्योंकि हम पाते हैं कि उन्होंने अपनी पहली गलती श्री ब्लेक के अपनी चाची के घर पहुंचने की पहली रात को ही की थी।"

"उनकी पहली गलती?" मैंने दोहराया।

"बिल्कुल! रात में छत पर घात लगाकर बैठे रहना उनकी गलती थी। हालांकि, उन्हें यह देखकर अपनी गलती का एहसास हो गया था - क्योंकि जैसा कि आपने कहा, उनके पास काफी समय था, इसलिए वे उसके बाद कई हफ्तों तक उस घर के पास नहीं गए।"

"क्यों, श्री मुर्थवेट? मैं यही तो जानना चाहता हूँ! क्यों?"

"क्योंकि कोई भी भारतीय, श्रीमान ब्रफ़, कभी भी अनावश्यक जोखिम नहीं उठाता। कर्नल हर्नकैसल की वसीयत में आपने जो खंड निकाला है, उससे उन्हें यह पता चला (है ना?) कि मूनस्टोन मिस वेरिंदर के जन्मदिन पर पूरी तरह से उनके अधिकार में आ जाएगा। ठीक है। मुझे बताइए कि उनकी स्थिति में लोगों के लिए सबसे सुरक्षित रास्ता कौन सा था? क्या वे हीरे पर तब हमला करते जब वह श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक के नियंत्रण में था, जिन्होंने पहले ही दिखा दिया था कि वे उन पर शक कर सकते हैं और

उन्हें मात दे सकते हैं? या तब तक इंतजार करते जब तक हीरा एक युवा लड़की के हाथ में न आ जाए, जो हर संभव अवसर पर उस शानदार रत्न को पहनने में मासूमियत से आनंदित होगी? शायद आप मेरे सिद्धांत के सही होने का प्रमाण चाहते हैं? स्वयं भारतीयों के आचरण को ही प्रमाण मान लीजिए। वे इतने हफ्तों के इंतजार के बाद मिस वेरिंदर के जन्मदिन पर घर पहुंचे; और उन्हें अपनी धैर्यपूर्ण और सटीक गणनाओं का इनाम उनकी पोशाक में मूनस्टोन देखकर मिला! जब मैंने बाद में शाम को कर्नल और हीरे की कहानी सुनी, तो मुझे श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक द्वारा उठाए गए जोखिम के बारे में पूरा यकीन हो गया (वे ऐसा कर सकते थे) अगर वह संयोगवश अन्य लोगों के साथ लेडी वेरिंदर के घर वापस न लौट रहा होता, तो उस पर निश्चित रूप से हमला हो जाता। और मुझे मिस वेरिंदर के लिए आने वाले और भी बड़े खतरे का इतना पक्का यकीन था कि मैंने कर्नल की योजना का पालन करने और रत्न को अलग-अलग पत्थरों में काटकर उसकी पहचान मिटाने की सलाह दी। उस रात उसके रहस्यमय ढंग से गायब हो जाने ने मेरी सलाह को कैसे बेकार कर दिया और हिंदू साजिश को पूरी तरह से विफल कर दिया - और कैसे अगले दिन भारतीयों को बदमाश और आवारा बताकर जेल में बंद कर दिए जाने से उनकी सारी कार्रवाई ठप्प हो गई - यह आप मुझसे बेहतर जानते हैं। साजिश का पहला अध्याय यहीं समाप्त होता है। दूसरे अध्याय पर जाने से पहले, क्या मैं पूछ सकता हूँ कि क्या मैंने आपकी समस्या का समाधान एक व्यावहारिक व्यक्ति के मन को संतुष्ट करने वाले स्पष्टीकरण से किया है?

इस बात से इनकार करना असंभव था कि उन्होंने मेरी समस्या का निष्पक्ष समाधान किया था; इसका श्रेय भारतीय चरित्र के उनके उत्कृष्ट ज्ञान को जाता है—और साथ ही कर्नल हर्नकैसल के समय से लेकर अब तक सैकड़ों अन्य वसीयतों पर विचार न करने को मिलने के कारण भी!

श्री मुर्थवेट ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "अब तक तो सब ठीक है। भारतीयों को हीरा हथियाने का जो पहला मौका मिला था, वह उसी दिन हाथ से निकल गया, जिस दिन उन्हें फ्रिज़िंगहॉल की जेल में डाल दिया गया था। दूसरा मौका कब मिला? दूसरा मौका - जैसा कि मैं साबित कर सकता हूँ - तब मिला जब वे अभी भी जेल में बंद थे।"

आगे बढ़ने से पहले उसने अपनी जेब से एक विशेष पृष्ठ निकाला और उसे खोला।

“मैं उस समय फ्रिज़िंगहॉल में कुछ दोस्तों के साथ ठहरा हुआ था। भारतीयों की रिहाई से एक-दो दिन पहले (मुझे लगता है सोमवार को), जेल का गवर्नर मेरे पास एक पत्र लेकर आया। यह पत्र श्रीमती मैकैन नाम की एक महिला ने भारतीयों के लिए छोड़ा था,

जिनसे उन्होंने रहने के लिए कमरा किराए पर लिया था। यह पत्र पिछली सुबह डाक के सामान्य तरीके से श्रीमती मैकैन के दरवाजे पर पहुँचा दिया गया था। जेल अधिकारियों ने देखा कि डाक टिकट पर 'लैम्बेथ' की मुहर लगी थी और बाहर लिखा पता, हालांकि सही अंग्रेजी में था, लेकिन पत्र भेजने के सामान्य तरीके से अजीब तरह से अलग था। पत्र खोलने पर उन्होंने पाया कि उसमें विदेशी भाषा लिखी थी, जिसका उन्होंने सही अनुमान लगाया कि वह हिंदुस्तानी थी। उनके मेरे पास आने का उद्देश्य स्पष्ट रूप से पत्र का अनुवाद करवाना था। मैंने मूल पत्र और अपने अनुवाद की एक प्रति अपने पर्स में रख ली थी - और ये आपके लिए उपलब्ध हैं।"

उसने मुझे खुली हुई पर्स थमा दी। पत्र पर लिखा पता सबसे पहले कॉपी किया गया था। यह सब एक ही पैराग्राफ में लिखा था, बिना किसी विराम चिह्न के, इस प्रकार: "यॉर्कशायर के फ्रिज़िंगहॉल में मैकैन नाम की महिला के साथ रहने वाले तीन भारतीय पुरुषों को।" इसके बाद हिंदू अक्षर थे; और अंग्रेजी अनुवाद अंत में इन रहस्यमय शब्दों में लिखा था:

"रात्रि के शासक के नाम पर, जिसका आसन मृग पर है, जिसकी भुजाएँ पृथ्वी के चारों कोनों को गले लगाती हैं।"

"भाइयों, अपना मुख दक्षिण की ओर करो, और शोरगुल वाली गली में मेरे पास आओ, जो कीचड़ भरी नदी की ओर जाती है।"

इसका कारण यह है।

मैंने इसे अपनी आँखों से देखा है।

पत्र वहीं समाप्त हो गया, उस पर न तो तारीख थी और न ही हस्ताक्षर। मैंने उसे श्री मुर्थवेट को लौटा दिया और स्वीकार किया कि हिंदू पत्राचार का यह विचित्र नमूना मुझे थोड़ा उलझन में डाल रहा था।

"मैं आपको पहला वाक्य समझा सकता हूँ," उन्होंने कहा; "और भारतीयों का व्यवहार बाकी सब स्पष्ट कर देगा। हिंदू पौराणिक कथाओं में, चंद्रमा के देवता को चार भुजाओं वाले, हिरण पर बैठे हुए देवता के रूप में दर्शाया गया है; और उनकी एक उपाधि रात्रि के शासक की है। तो, शुरुआत में ही, कुछ ऐसा है जो मूनस्टोन के अप्रत्यक्ष संदर्भ जैसा प्रतीत होता है। अब, आइए देखें कि जेल अधिकारियों द्वारा उन्हें पत्र मिलने की अनुमति दिए जाने के बाद भारतीयों ने क्या किया। जिस दिन उन्हें रिहा किया गया, वे तुरंत रेलवे स्टेशन गए और लंदन जाने वाली पहली ट्रेन में अपनी जगह ले ली। फ्रिज़िंगहॉल में हम सभी को इस बात का अफसोस था कि उनकी गतिविधियों पर

निजी तौर पर नज़र नहीं रखी गई। लेकिन, लेडी वेरेंडर द्वारा पुलिस अधिकारी को बर्खास्त करने और हीरे के खोने की सभी आगे की जाँच बंद करने के बाद, कोई और इस मामले में दखल देने का साहस नहीं कर सका। भारतीय लंदन जाने के लिए स्वतंत्र थे, और वे लंदन चले गए। श्री ब्रूफ, हमें उनके बारे में अगली खबर क्या मिली?"
मैंने जवाब दिया, "वे लैम्बेथ स्थित घर के आसपास घूमकर मिस्टर लूकर को परेशान कर रहे थे।"
"क्या आपने मजिस्ट्रेट के समक्ष श्री लुकर के आवेदन की रिपोर्ट पढ़ी?"
"हाँ।"
"अपने बयान के दौरान, जैसा कि आपको याद होगा, उन्होंने अपने यहाँ काम करने वाले एक विदेशी कामगार का ज़िक्र किया था, जिसे उन्होंने चोरी के प्रयास के संदेह में अभी-अभी बर्खास्त किया था, और जिस पर उन्हें संदेह था कि वह उन भारतीयों के साथ मिलीभगत कर रहा था जिन्होंने उन्हें परेशान किया था। श्री ब्रूफ, यह निष्कर्ष बिल्कुल स्पष्ट है कि वह पत्र किसने लिखा था जिसने अभी-अभी आपको उलझन में डाल दिया है, और श्री लूकर के किस प्राच्य खजाने को उस कामगार ने चुराने का प्रयास किया था।"
निष्कर्ष (जैसा कि मैंने तुरंत स्वीकार किया) इतना स्पष्ट था कि उसे बताने की आवश्यकता ही नहीं थी। मुझे कभी संदेह नहीं था कि मूनस्टोन श्री मुर्थवेट द्वारा बताए गए समय पर श्री लुकर के हाथों में पहुँच गया था। मेरा एकमात्र प्रश्न यह था कि भारतीयों को इस बात का पता कैसे चला? यह प्रश्न (जैसा कि मैंने सोचा था, सबसे कठिन) अब बाकी प्रश्नों की तरह ही उत्तर प्राप्त कर चुका था। एक वकील होने के नाते, मुझे लगने लगा कि मैं श्री मुर्थवेट पर भरोसा कर सकता हूँ कि वे मुझे अब तक जिस भूलभुलैया में ले गए थे, उसके अंतिम मोड़ों से भी आँखें बंद करके ले जाएँगे। मैंने उन्हें यह बात बताकर उनका सम्मान किया और पाया कि उन्होंने मेरी इस छोटी सी रियायत को बहुत ही विनम्रता से स्वीकार किया।
"आगे बढ़ने से पहले, आप मुझे एक जानकारी देंगे," उन्होंने कहा। "किसी ने यॉर्कशायर से लंदन तक मूनस्टोन ज़रूर पहुँचाया होगा। और किसी ने उस पर पैसे भी जुटाए होंगे, वरना वह कभी मिस्टर लूकर के पास नहीं होता। क्या उस व्यक्ति के बारे में कोई जानकारी मिली है?"
"मेरी जानकारी के कोई भी नहीं।"

"मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट के बारे में एक कहानी थी (है ना?)। मुझे बताया गया है कि वह एक प्रख्यात परोपकारी व्यक्ति हैं - जो कि शुरू से ही उनके खिलाफ एक बात है।"

मैं इस मामले में श्री मुर्थवेट से पूरी तरह सहमत था। साथ ही, मैंने उन्हें यह सूचित करना अपना कर्तव्य समझा (यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने मिस वेरेंडर का नाम नहीं लिया) कि श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट को सभी संदेहों से मुक्त कर दिया गया है, ऐसे सबूतों के आधार पर जिनकी मैं पूरी तरह से पुष्टि कर सकता हूँ कि वे निर्विवाद हैं।

“ठीक है,” श्री मुर्थवेट ने शांत स्वर में कहा, “चलिए, समय को मामला सुलझाने देते हैं। इस बीच, श्री ब्रुफ, हमें आपके लिए फिर से भारतीयों के पास जाना होगा। लंदन की उनकी यात्रा एक और हार में समाप्त हुई। हीरे को हथियाने का उनका दूसरा मौका गंवाने का मुख्य कारण, जैसा कि मैं सोचता हूँ, श्री लुकर की चालाकी और दूरदर्शिता है —जो सूदखोरी के समृद्ध और प्राचीन पेशे में यूँ ही शीर्ष पर नहीं हैं! अपने कर्मचारी को तुरंत बर्खास्त करके, उन्होंने भारतीयों को उस सहायता से वंचित कर दिया जो उनका साथी उन्हें घर में घुसने में प्रदान करता। मूनस्टोन को तुरंत अपने बैंकर के पास पहुँचाकर, उन्होंने षड्यंत्रकारियों को उस समय आश्चर्यचकित कर दिया जब वे उन्हें लूटने की कोई नई योजना बना रहे थे। इस दूसरे मामले में, भारतीयों को कैसे पता चला कि उन्होंने क्या किया है, और उन्होंने उनके बैंकर की रसीद कैसे प्राप्त की, ये घटनाएँ इतनी हाल की हैं कि उन पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। इतना कहना ही काफी है कि वे जानते हैं कि... मूनस्टोन एक बार फिर उनकी पहुँच से बाहर हो गया; इसे ('अत्यंत मूल्यवान वस्तु' के सामान्य विवरण के तहत) एक बैंकर के तिजोरी में जमा कर दिया गया है। अब, श्री ब्रूफ, हीरे को हासिल करने का उनका तीसरा मौका क्या है? और यह कब आएगा?

जैसे ही उसने यह सवाल पूछा, आखिरकार मुझे उस भारतीय के मेरे कार्यालय आने का मकसद समझ में आ गया!

"मुझे समझ आ गया!" मैंने कहा। "भारतीय भी हमारी ही तरह यह मानकर चलते हैं कि मूनस्टोन गिरवी रखा हुआ है; और वे यह जानना चाहते हैं कि गिरवी को छुड़ाने की सबसे पहली तारीख क्या हो सकती है—क्योंकि यही वह पहली तारीख होगी जब हीरे को बैंक की सुरक्षित हिरासत से निकाला जा सकेगा!"

मैंने आपसे कहा था कि अगर मैं आपको निष्पक्ष मौका दूं, तो आप खुद ही इसका पता लगा लेंगे, श्रीमान ब्रफ। मूनस्टोन को गिरवी रखे जाने के एक साल बाद, भारतीय अपने तीसरे मौके की प्रतीक्षा में होंगे। श्रीमान लूकर ने स्वयं अपने मुंह से कहा है कि उन्हें कितना इंतजार करना पड़ेगा, और आपके सम्मानित अधिकारी ने उन्हें आश्वस्त कर दिया है कि श्रीमान लूकर ने सच कहा है। हम मोटे तौर पर कब अनुमान लगा सकते हैं कि हीरा साहूकार के हाथों में पहुंचा होगा?

मैंने उत्तर दिया, "पिछले जून के अंत में, जहाँ तक मुझे याद है।"

"और अब हम अड़तालीसवें वर्ष में हैं। बहुत अच्छा। अगर वह अज्ञात व्यक्ति जिसने मूनस्टोन गिरवी रखा है, उसे एक साल के भीतर छुड़ा लेता है, तो वह रत्न जून उनतालीसवें वर्ष के अंत तक फिर से उसके पास होगा। उस समय मैं इंग्लैंड और अंग्रेजी खबरों से हजारों मील दूर रहूंगा। लेकिन आपके लिए इसे नोट कर लेना और उस समय लंदन में मौजूद रहने की व्यवस्था करना उपयोगी हो सकता है।"

मैंने कहा, "तुम्हें लगता है कि कुछ गंभीर घटना घटेगी?"

"मुझे लगता है कि मैं मध्य एशिया के सबसे कट्टरपंथियों के बीच ज़्यादा सुरक्षित रहूँगा, बजाय इसके कि मैं अपनी जेब में मूनस्टोन लेकर बैंक का दरवाज़ा पार करूँ। श्री ब्रूफ, भारतीय लगातार दो बार हार चुके हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि वे तीसरी बार नहीं हारेंगे।"

इस विषय पर उनके अंतिम शब्द यही थे। कॉफी आ गई; मेहमान उठे और कमरे में इधर-उधर चले गए; और हम ऊपर डिनर पार्टी में शामिल महिलाओं के साथ चले गए।

मैंने तारीख नोट कर ली थी, और अगर मैं अपनी बात को यहाँ दोहराते हुए समाप्त करूँ तो शायद यह अनुचित नहीं होगा:

जून उनतालीस। महीने के अंत तक भारतीयों के बारे में समाचार मिलने की उम्मीद है। और यह सब हो जाने के बाद, मैं कलम, जिस पर अब मेरा कोई अधिकार नहीं है, अपने बाद आने वाले लेखक को सौंप देता हूँ।

तीसरी कथा

फ्रैंकलिन ब्लेक द्वारा योगदान

अध्याय 1

वर्ष अठारह सौ उनतालीस के वसंत में मैं पूर्व की ओर भटक रहा था, और मैंने कुछ महीने पहले बनाई गई अपनी यात्रा योजनाओं में हाल ही में बदलाव किया था, जिसके बारे में मैंने लंदन में अपने वकील और अपने बैंकर को सूचित किया था।
इस बदलाव के कारण मुझे अपने एक नौकर को एक शहर में स्थित अंग्रेज़ कौंसल से अपने पत्र और धन लाने के लिए भेजना पड़ा, क्योंकि वह शहर अब मेरी नई यात्रा योजना में विश्राम स्थलों में शामिल नहीं था। उस नौकर को तय स्थान और समय पर मुझसे फिर मिलना था। एक दुर्घटना, जिसके लिए वह ज़िम्मेदार नहीं था, के कारण उसे अपने काम में देरी हो गई। एक सप्ताह तक मैं और मेरे लोग रेगिस्तान की सीमा पर डेरा डाले रहे और इंतज़ार करते रहे। उस समय के अंत में, लापता नौकर धन और पत्रों के साथ मेरे तंबू के प्रवेश द्वार पर आ पहुँचा।
"मुझे खेद है कि मैं आपको बुरी खबर दे रहा हूँ, महोदय," उसने कहा और एक पत्र की ओर इशारा किया, जिसके चारों ओर शोक का बॉर्डर था और जिस पर पता श्री ब्रुफ की लिखावट में था।
मुझे इस तरह के मामले में अनिश्चितता से ज्यादा असहनीय कुछ नहीं लगता। शोक के बॉर्डर वाला पत्र ही वह पत्र था जिसे मैंने सबसे पहले खोला।
मुझे यह सूचना मिली कि मेरे पिता का निधन हो गया है और मैं उनकी अपार संपत्ति का उत्तराधिकारी हूँ। इस प्रकार मेरे हाथ में आई संपत्ति के साथ-साथ जिम्मेदारियाँ भी आती हैं, और श्री ब्रूफ ने मुझसे आग्रह किया कि मैं बिना समय गंवाए इंग्लैंड लौट जाऊँ।
अगली सुबह तड़के ही मैं अपने देश वापस जाने के लिए रवाना हो चुका था।
मेरे पुराने मित्र बेटरएज ने इंग्लैंड से मेरे प्रस्थान के समय मेरी जो छवि प्रस्तुत की, वह (मेरे विचार से) थोड़ी अतिरंजित है। उन्होंने अपने अनोखे अंदाज़ में, अपनी युवा प्रेमिका द्वारा मेरी विदेशी शिक्षा के बारे में किए गए कई व्यंग्यात्मक टिप्पणियों में से एक को गंभीरता से ले लिया है; और खुद को यह विश्वास दिला लिया है कि उन्होंने वास्तव में मेरे चरित्र के उन फ्रांसीसी, जर्मन और इतालवी पहलुओं को देखा है, जिन्हें मेरे चंचल चचेरे भाई ने केवल मज़ाक में ही प्रकट करने का दावा किया था, और जिनका हमारे भले बेटरएज के दिमाग के अलावा कहीं कोई वास्तविक अस्तित्व नहीं था। लेकिन, इस कमी को छोड़कर, मैं यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हूँ कि उन्होंने मुझे राहेल के व्यवहार से दिल से आहत और अपने जीवन की सबसे कड़वी निराशा से उपजे तीव्र दुख में इंग्लैंड छोड़ते हुए चित्रित करने में बिल्कुल सच कहा है।

मैं विदेश चला गया, यह ठानकर कि अगर बदलाव और दूरी मेरी मदद कर सकें तो मैं उसे भूल जाऊँगा। मेरा मानना है कि मानव स्वभाव का वह दृष्टिकोण सच्चा नहीं है जो इस बात से इनकार करता है कि इन परिस्थितियों में बदलाव और दूरी वास्तव में मनुष्य की मदद करते हैं; वे उसका ध्यान अपने ही दुख के एकाकी चिंतन से हटा देते हैं। मैं उसे कभी नहीं भूला; लेकिन यादों का दर्द धीरे-धीरे कम होता गया, जैसे-जैसे समय, दूरी और नयापन राहेल और मेरे बीच अधिकाधिक प्रभावी रूप से आते गए।
दूसरी ओर, यह भी उतना ही निश्चित है कि घर लौटने के साथ ही, जो उपाय इतनी तेज़ी से अपना असर दिखा रहा था, वह अब उतनी ही तेज़ी से पीछे हटने लगा। जैसे-जैसे मैं उस देश के करीब पहुँचता गया जहाँ वह रहती थी, और उससे दोबारा मिलने की संभावना बढ़ती गई, वैसे-वैसे उसका प्रभाव मुझ पर फिर से हावी होने लगा। इंग्लैंड छोड़ते समय वह दुनिया की आखिरी शख्सियत थी जिसका नाम मैं लेना भी नहीं चाहता था। इंग्लैंड लौटने पर, जब मिस्टर ब्रफ से मेरी दोबारा मुलाकात हुई, तो मैंने सबसे पहले उसी के बारे में पूछा।
मुझे मेरी अनुपस्थिति में घटी सभी घटनाओं की जानकारी दी गई थी; दूसरे शब्दों में, बेटरएज के वृत्तांत के क्रम में यहाँ वर्णित सभी बातों की जानकारी दी गई थी—केवल एक अपवाद था। श्री ब्रूफ उस समय मुझे उन कारणों के बारे में बताने के लिए स्वतंत्र नहीं थे, जिनके कारण राहेल और गॉडफ्रे एबलव्हाइट ने निजी तौर पर विवाह प्रतिज्ञा को तोड़ दिया था। मैंने इस संवेदनशील विषय पर उनसे कोई अनावश्यक प्रश्न नहीं पूछा। मुझे इस बात से काफी राहत मिली थी कि राहेल ने कभी गॉडफ्रे की पत्नी बनने के बारे में सोचा था, और अब यह जानकर कि आत्मचिंतन ने उसे अपने जल्दबाजी वाले कदम का एहसास कराया था और उसने स्वयं ही विवाह प्रतिज्ञा से मुक्ति प्राप्त कर ली थी।
बीते समय की कहानी सुनने के बाद, मेरी अगली पूछताछ (राहेल के बारे में ही पूछताछ!) स्वाभाविक रूप से वर्तमान समय की ओर बढ़ी। श्री ब्रूफ के घर से निकलने के बाद उसे किसके संरक्षण में रखा गया था? और वह अब कहाँ रह रही थी?
वह स्वर्गीय सर जॉन वेरेंडर की विधवा बहन श्रीमती मेरिड्यू की देखरेख में रह रही थीं, जिन्हें उनकी मां के वसीयतकर्ताओं ने अभिभावक बनने का अनुरोध किया था और जिन्होंने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। मुझे बताया गया कि वे दोनों आपस में बहुत अच्छे से घुल-मिल रही थीं और फिलहाल पोर्टलैंड प्लेस स्थित श्रीमती मेरिड्यू के घर में रह रही थीं।

यह जानकारी मिलने के आधे घंटे बाद, मैं पोर्टलैंड प्लेस के लिए रवाना हो गया था - बिना मिस्टर ब्रफ के सामने यह बात कबूल करने की हिम्मत जुटाए!
दरवाजा खोलने वाले व्यक्ति को यह पक्का पता नहीं था कि मिस वेरिंदर घर पर हैं या नहीं। मैंने उसे अपना कार्ड देकर ऊपर भेज दिया, ताकि इस सवाल का जल्द से जल्द जवाब मिल सके। वह व्यक्ति फिर एक भावहीन चेहरे के साथ नीचे आया और मुझे बताया कि मिस वेरिंदर घर पर नहीं हैं।
मुझे शायद शक हो सकता था कि दूसरे लोग जानबूझकर मुझसे दूरी बना रहे हैं। लेकिन राहेल पर शक करना नामुमकिन था। मैंने उसे संदेश छोड़ दिया कि मैं उस शाम छह बजे फिर फोन करूंगा।
शाम छह बजे मुझे दूसरी बार बताया गया कि मिस वरिंदर घर पर नहीं हैं। क्या मेरे लिए कोई संदेश छोड़ा गया था? मेरे लिए कोई संदेश नहीं छोड़ा गया था। क्या मिस वरिंदर को मेरा कार्ड नहीं मिला? नौकर ने क्षमा मांगी - मिस वरिंदर को मेरा कार्ड मिल गया था।
निष्कर्ष इतना स्पष्ट था कि उसे नकारा नहीं जा सकता था। राहेल ने मुझसे मिलने से इनकार कर दिया।
मैंने इस तरह के व्यवहार को अस्वीकार कर दिया, और कम से कम इसका कारण जानने का प्रयास भी नहीं किया। मैंने श्रीमती मेरिड्यू को अपना नाम भेजा और उनसे अनुरोध किया कि वे मुझे किसी भी सुविधाजनक समय पर व्यक्तिगत रूप से मिलने की कृपा करें।
श्रीमती मेरिड्यू ने मुझे तुरंत अपने यहाँ बुला लिया। मुझे एक आरामदायक छोटे से बैठक कक्ष में ले जाया गया, जहाँ मैंने खुद को एक सौम्य, उम्रदराज महिला के सामने पाया। उन्होंने मेरे कारण बहुत खेद और आश्चर्य व्यक्त किया। हालांकि, साथ ही साथ वे मुझे कोई स्पष्टीकरण देने या राहेल से उस मामले पर सवाल करने की स्थिति में नहीं थीं, जो केवल निजी भावनाओं से संबंधित प्रतीत होता था। यह बात उन्होंने बार-बार दोहराई, एक ऐसी विनम्रता और धैर्य के साथ जिसे कोई थका नहीं सकता था; और श्रीमती मेरिड्यू से मिलने पर मुझे बस यही मिला।
राहेल को पत्र लिखना मेरा आखिरी मौका था। मेरी नौकरानी अगले दिन उसे पत्र लेकर गई और साथ में सख्त हिदायत दी कि वह जवाब का इंतजार करे।
इसका जवाब एक ही वाक्य में आ गया।

"मिस वेरेंडर श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के साथ किसी भी प्रकार का पत्राचार करने से इनकार करती हैं।"
हालाँकि मैं उससे बहुत स्नेह करता था, फिर भी उस जवाब में मुझे जो अपमान महसूस हुआ, उससे मुझे बहुत ठेस पहुँची। मेरे संभलने से पहले ही श्री ब्रूफ मुझसे काम के सिलसिले में बात करने आए। मैंने तुरंत काम टाल दिया और उन्हें सारी बात बता दी। वे भी मुझे समझाने में उतने ही असमर्थ साबित हुए जितनी श्रीमती मेरिड्यू खुद थीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या राहेल के सामने मेरे बारे में कोई निंदा की गई थी? श्री ब्रूफ को ऐसी किसी निंदा की जानकारी नहीं थी जिसका निशाना मैं बना था। क्या उसने श्री ब्रूफ के घर में रहते हुए कभी मेरा ज़िक्र किया था? कभी नहीं। क्या उसने मेरी लंबी अनुपस्थिति के दौरान कभी यह भी नहीं पूछा कि मैं जीवित हूँ या मृत? ऐसा कोई सवाल उसके मुँह से कभी नहीं निकला। मैंने अपने पर्स से वह पत्र निकाला जो बेचारी लेडी वेरेंडर ने मुझे फ्रिज़िंगहॉल से उस दिन लिखा था जब मैं यॉर्कशायर में उनके घर से निकला था। और मैंने श्री ब्रूफ का ध्यान उसमें लिखे इन दो वाक्यों की ओर दिलाया:
"खोए हुए गहने की खोज में आपने जो बहुमूल्य सहायता प्रदान की, वह राहेल की वर्तमान भयावह मानसिक स्थिति में एक अक्षम्य अपराध है। इस मामले में अंधाधुंध हस्तक्षेप करके, आपने अनजाने में अपने प्रयासों से उसके रहस्य के उजागर होने का खतरा पैदा करके, उसकी चिंता के बोझ को और बढ़ा दिया है।"
मैंने पूछा, "क्या यह संभव है कि मेरे प्रति जो भावना वहाँ वर्णित है, वह आज भी मेरे प्रति उतनी ही कड़वी है जितनी पहले थी?"
श्री ब्रुफ स्वाभाविक रूप से व्यथित दिखाई दिए।
उन्होंने कहा, "अगर आप जवाब पर जोर देते हैं, तो मैं स्वीकार करता हूं कि मैं उसके आचरण की इसके अलावा कोई और व्याख्या नहीं कर सकता।"
मैंने घंटी बजाई और अपने नौकर को मेरा सूटकेस पैक करने और रेलवे गाइड मंगवाने का निर्देश दिया। श्री ब्रूफ ने आश्चर्य से पूछा कि मैं क्या करने जा रही हूँ।
मैंने जवाब दिया, "मैं अगली ट्रेन से यॉर्कशायर जा रहा हूँ।"
"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि इसका उद्देश्य क्या है?"
श्रीमान ब्रफ़, हीरे की खोज के बाद हुई जाँच में मैंने जो निर्दोषतापूर्वक सहायता की थी, वह राहेल की नज़र में लगभग एक साल पहले भी एक अक्षम्य अपराध था; और आज भी वह एक अक्षम्य अपराध ही है। मैं यह बात स्वीकार नहीं करूँगा! मैं उसकी माँ के प्रति उसकी चुप्पी और मेरे प्रति उसकी शत्रुता का रहस्य जानने के लिए दृढ़ संकल्पित

हूँ। यदि समय, परिश्रम और धन से यह संभव हो, तो मैं उस चोर को पकड़ लूँगा जिसने मूनस्टोन चुराया है!

उस आदरणीय बुजुर्ग ने मुझे समझाने की कोशिश की—संक्षेप में, मेरे प्रति अपना कर्तव्य निभाने का प्रयास किया। लेकिन मैंने उनकी हर बात अनसुनी कर दी। उस क्षण कोई भी सांसारिक बात मेरे दृढ़ संकल्प को हिला नहीं सकती थी।

मैंने आगे कहा, "मैं इस जांच को वहीं से फिर से शुरू करूंगा जहां मैंने इसे छोड़ा था; और मैं इसे कदम दर कदम आगे बढ़ाऊंगा, जब तक कि मैं वर्तमान समय तक नहीं पहुंच जाता। सबूतों में कुछ कड़ियां गायब हैं, जिन्हें गैब्रियल बेटरएज पूरा कर सकते हैं, और मैं गैब्रियल बेटरएज से ही संपर्क करूंगा!"

उस शाम सूर्यास्त के समय मैं फिर से उस जानी-पहचानी छत पर खड़ा हुआ और उस शांत पुराने देहाती घर को एक बार फिर देखा। सुनसान मैदान में सबसे पहले मेरी नज़र माली पर पड़ी। वह एक घंटे पहले बेटरएज से निकला था और पिछवाड़े के कोने में धूप सेंक रहा था। मैं उस जगह को अच्छी तरह जानता था; और मैंने सोचा कि मैं खुद जाकर उसे ढूंढूंगा।

मैं परिचित रास्तों और गलियों से होते हुए घूमा और आंगन के खुले द्वार की ओर देखा। वहाँ वह था—सुखद दिनों का मेरा प्यारा पुराना दोस्त, जो अब कभी वापस नहीं आने वाला था—वह पुराने कोने में, पुरानी मधुमक्खी के छत्ते जैसी कुर्सी पर, मुँह में पाइप लिए, गोद में रॉबिन्सन क्रूसो की किताब लिए, और उसके दो दोस्त, कुत्ते, उसके दोनों ओर ऊंघ रहे थे! मैं जिस स्थिति में खड़ा था, सूरज की आखिरी तिरछी किरणों से मेरी परछाई मेरे सामने बन रही थी। या तो कुत्तों ने इसे देख लिया था, या उनकी तेज़ गंध ने उन्हें मेरे आने की आहट दे दी थी; वे गुर्राते हुए उठ खड़े हुए। खुद भी चौंककर, बूढ़े ने एक शब्द से उन्हें शांत किया, फिर अपने हाथ से अपनी कमजोर आँखों को ढँक लिया और द्वार पर खड़े व्यक्ति को जिज्ञासा भरी निगाहों से देखा।

मेरी आँखें आँसुओं से भरी हुई थीं। मुझे उससे बात करने की हिम्मत जुटाने से पहले कुछ पल रुकना पड़ा।

अध्याय II

मैंने उसकी गोद में रखी उस जानी-मानी किताब की ओर इशारा करते हुए कहा, "बेटरएज! क्या रॉबिन्सन क्रूसो ने आज शाम आपको बताया है कि आप फ्रैंकलिन ब्लेक से मिलने की उम्मीद कर सकते हैं?"

"हे भगवान, मिस्टर फ्रैंकलिन!" बूढ़े आदमी ने चिल्लाकर कहा, "रॉबिन्सन क्रूसो ने बिलकुल यही किया है!"
मेरी मदद से वह किसी तरह उठ खड़ा हुआ और एक पल के लिए रुका रहा, रॉबिन्सन क्रूसो और मुझे बारी-बारी से देखता रहा, मानो यह तय नहीं कर पा रहा था कि हम दोनों में से किसने उसे सबसे ज़्यादा चौंकाया है। आख़िरकार, उसने किताब को ही चुना। उसे दोनों हाथों में खोलकर, उसने उस अद्भुत किताब को असीम उम्मीद भरी निगाहों से देखा—जैसे कि वह उम्मीद कर रहा हो कि रॉबिन्सन क्रूसो खुद पन्नों से बाहर निकलकर हमसे व्यक्तिगत रूप से बात करने आ जाए।
“ये रहा वो अंश, श्रीमान फ्रैंकलिन!” जैसे ही उनकी वाणी सुधरी, उन्होंने कहा। “महोदय, मैं रोटी के लिए ही जीता हूँ, ये रहा वो अंश जिसे मैं आपके आने से ठीक पहले पढ़ रहा था! पृष्ठ एक सौ छप्पन पर लिखा है:-- 'मैं स्तब्ध खड़ा था, मानो मैंने कोई प्रेत देख लिया हो।' अगर इसका अर्थ यह नहीं है कि: 'श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक के अचानक प्रकट होने की अपेक्षा करें'--तो अंग्रेजी भाषा का कोई अर्थ नहीं है!” बेटरएज ने किताब को ज़ोर से बंद करते हुए कहा, और अंत में अपना एक हाथ खाली करके मेरा बढ़ाया हुआ हाथ थाम लिया।
मुझे उम्मीद थी कि वह, स्वाभाविक रूप से, मुझसे सवालों की बौछार कर देगा। लेकिन नहीं—जब परिवार का कोई सदस्य (चाहे किसी भी रूप में!) घर में मेहमान बनकर आता था, तो उस बूढ़े नौकर के मन में आतिथ्य सत्कार की भावना ही सर्वोपरि रहती थी।
"अंदर आइए, श्रीमान फ्रैंकलिन," उन्होंने अपने पुराने ज़माने के अनोखे अंदाज़ में झुककर दरवाज़ा खोलते हुए कहा। "मैं बाद में पूछूंगा कि आप यहाँ क्यों आए हैं—पहले आपको आराम से बिठाना होगा। आपके जाने के बाद से बहुत बदलाव हुए हैं। घर बंद पड़ा है और नौकर-चाकर भी चले गए हैं। कोई बात नहीं! मैं आपके लिए खाना बनाऊंगा; और माली की पत्नी आपका बिस्तर लगा देगी—और अगर तहखाने में हमारी मशहूर लैटूर क्लारेट की एक बोतल बची है, तो श्रीमान फ्रैंकलिन, वह भी आपको पिलाई जाएगी। आपका स्वागत है, महोदय! आपका हार्दिक स्वागत है!" उस बूढ़े बेचारे ने सुनसान घर के अंधेरे से जूझते हुए, पुराने ज़माने के मिलनसार और विनम्र व्यवहार से मेरा स्वागत किया।
मुझे उसे निराश करने का बहुत दुख था। लेकिन अब वह घर राहेल का था। लंदन में जो कुछ हुआ था, उसके बाद क्या मैं उसमें खाना खा सकता था या सो सकता था?

आत्मसम्मान की मेरी सामान्य भावना ने मुझे—वास्तव में—उस दहलीज पार करने से रोक दिया।
मैंने बेटरएज का हाथ पकड़ा और उसे बगीचे में ले गया। कोई चारा नहीं था। मुझे उसे सच बताना ही पड़ा। राहेल और मेरे प्रति उसके लगाव के कारण, हालात इस तरह बदल जाने से वह बहुत परेशान और दुखी था। जब उसने अपनी राय व्यक्त की, तो वह हमेशा की तरह स्पष्ट और सीधी थी, और उसमें बेटरएज विचारधारा के दर्शन की झलक साफ झलक रही थी।
“मिस राहेल में कमियां हैं—मैंने इसे कभी नकारा नहीं है,” उन्होंने कहना शुरू किया। “और कभी-कभी घमंड करना भी उनमें से एक है। वह आप पर हावी होने की कोशिश करती रही हैं—और आप इसे बर्दाश्त करते रहे हैं। हे भगवान, श्रीमान फ्रैंकलिन, क्या आप अब तक महिलाओं को इससे बेहतर नहीं जानते? आपने मुझे स्वर्गीय श्रीमती बेटरएज के बारे में बात करते सुना है?”
मैंने उन्हें अक्सर स्वर्गीय श्रीमती बेटरएज के बारे में बात करते सुना था—और वे हमेशा उन्हें दूसरे लिंग की जन्मजात कमजोरी और विकृति के एकमात्र अकाट्य उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करते थे। अब उन्होंने उन्हें इसी रूप में प्रदर्शित किया।
"बहुत खूब, श्रीमान फ्रैंकलिन। अब मेरी बात सुनिए। अलग-अलग महिलाओं के नखरे दिखाने के अलग-अलग तरीके होते हैं। स्वर्गीय श्रीमती बेटरएज अपना यही पसंदीदा तरीका तब अपनाती थीं जब मैं उन्हें उनकी मनचाही कोई चीज देने से मना कर देता था। जब भी मैं काम से घर लौटता, मेरी पत्नी मुझे रसोई की सीढ़ियों से ऊपर बुलाती और कहती कि मेरे इस बुरे बर्ताव के बाद उनका मन नहीं कर रहा कि वे मेरे लिए खाना बनाएँ। मैंने कुछ समय तक यह सब सहा—ठीक वैसे ही जैसे आप अब मिस राहेल से सह रहे हैं। आखिरकार मेरा सब्र टूट गया। मैं नीचे गया और श्रीमती बेटरएज को—प्यार से, आप समझ रहे हैं—अपनी बाहों में उठाया और उन्हें उठाकर उस सबसे अच्छे कमरे में ले गया जहाँ वे अक्सर आती-जाती थीं। मैंने कहा, 'यही तुम्हारे लिए सही जगह है, मेरी प्यारी,' और फिर रसोई में वापस चला गया। मैंने खुद को अंदर बंद कर लिया, अपना कोट उतारा, अपनी कमीज की आस्तीनें ऊपर चढ़ाईं और अपना खाना खुद बनाया। जब खाना बन गया, मैंने इसे बेहतरीन ढंग से परोसा और बड़े चाव से इसका आनंद लिया। बाद में मैंने अपनी पाइप और थोड़ी सी शराब पी; फिर मैंने मेज साफ की, बर्तन धोए, चाकू-कांटे साफ किए, सारी चीजें समेट लीं और चूल्हा साफ किया। जब सब कुछ एकदम साफ-सुथरा हो गया, तो मैंने दरवाजा खोला

और श्रीमती बेटरएज को अंदर आने दिया। मैंने कहा, 'मैंने खाना खा लिया है, प्रिय; और मुझे उम्मीद है कि मैंने रसोई को आपकी हर इच्छा के अनुरूप साफ-सुथरा रखा है।' श्रीमान फ्रैंकलिन, उस महिला के जीवन भर के लिए मुझे फिर कभी खाना नहीं बनाना पड़ा! सीख: आपने लंदन में मिस राहेल को बर्दाश्त किया है; यॉर्कशायर में उन्हें बर्दाश्त मत कीजिए। घर वापस आ जाइए!

इसका जवाब देना बिलकुल असंभव है! मैं अपने अच्छे दोस्त को केवल इतना ही आश्वस्त कर सका कि इस मामले में तो उसकी समझाने-बुझाने की सारी क्षमता भी मुझ पर बेकार साबित हुई।

मैंने कहा, "आज शाम बहुत सुहावनी है। मैं फ्रिज़िंगहॉल तक पैदल जाऊँगा और होटल में ठहरूँगा। तुम्हें कल सुबह मेरे साथ नाश्ता करने आना होगा। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

बेटरएज ने गंभीरता से अपना सिर हिलाया।

“मुझे इसके लिए बहुत खेद है,” उसने कहा। “श्रीमान फ्रैंकलिन, मुझे आशा थी कि आपके और मिस राहेल के बीच सब कुछ फिर से ठीक और सुखद हो गया होगा। यदि आपको अपनी बात मनवानी ही है, महोदय,” उसने कुछ देर सोचने के बाद आगे कहा, “तो आज रात फ्रिज़िंगहॉल में बिस्तर के लिए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यह उससे भी पास में मिल जाएगा। होथरस्टोन का फार्म यहाँ से केवल दो मील दूर है। आप मिस राहेल के कारण इस पर आपत्ति नहीं कर सकते,” बूढ़े व्यक्ति ने चालाकी से कहा। “श्रीमान फ्रैंकलिन, होथरस्टोन अपनी खुद की ज़मीन पर रहते हैं।”

बेटरएज के जिक्र करते ही मुझे वह जगह याद आ गई। वह फार्महाउस यॉर्कशायर के उस हिस्से की सबसे खूबसूरत नदी के किनारे, एक शांत भीतरी घाटी में स्थित था। किसान के पास एक अतिरिक्त शयनकक्ष और बैठक कक्ष था, जिसे वह कलाकारों, मछुआरों और आम तौर पर पर्यटकों को किराए पर दिया करता था। उस इलाके में अपने प्रवास के दौरान, मुझे इससे अधिक सुखद निवास स्थान की कामना नहीं हो सकती थी।

मैंने पूछा, "क्या ये कमरे किराए पर उपलब्ध हैं?"

"श्रीमान, स्वयं श्रीमती होथरस्टोन ने कल मुझसे कमरों की सिफारिश करने के लिए मेरी राय मांगी थी।"

"मैं इन्हें अत्यंत प्रसन्नता के साथ स्वीकार करूंगा, बेटरएज।"

हम वापस आंगन में गए, जहाँ मैंने अपना यात्रा-बैग छोड़ा था। बैग के हैंडल में एक छड़ी डालकर और उसे अपने कंधे पर लटकाकर, बेटरएज फिर से उसी हैरानी में डूब गया जो मेरे अचानक प्रकट होने से हुई थी, जब मैंने उसे मधुमक्खी के छत्ते जैसी कुर्सी पर बैठे हुए चौंका दिया था। उसने अविश्वास भरी निगाहों से घर को देखा, फिर घूमकर और भी अधिक अविश्वास भरी निगाहों से मुझे देखा।

“मैंने दुनिया में काफी लंबा जीवन जी लिया है,” सबसे प्यारे और सबसे अच्छे पुराने नौकर ने कहा—“लेकिन ऐसा नजारा देखने की मैंने कभी उम्मीद नहीं की थी। वह घर खड़ा है, और वह श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक—और हे भगवान, कहीं उनमें से कोई एक दूसरे से मुंह मोड़कर किसी किराए के कमरे में सोने तो नहीं जा रहा!”

वह आगे-आगे चलते हुए, सिर हिलाते और खतरनाक ढंग से गुर्राते हुए बाहर निकल गया। उसने कंधे के ऊपर से मुझसे कहा, "अब बस एक ही चमत्कार हो सकता है। मिस्टर फ्रैंकलिन, अगली बात जो आपको करनी होगी, वह यह है कि बचपन में मुझसे उधार लिए गए सात शिलिंग और छह पेंस मुझे वापस करने होंगे।"

व्यंग्य के इस प्रहार ने उन्हें और मुझे दोनों को बेहतर महसूस कराया। हम घर से निकले और लॉज के द्वार से गुज़रे। परिसर से बाहर निकलते ही (बेटरएज के नैतिक मूल्यों के अनुसार) आतिथ्य सत्कार के कर्तव्य समाप्त हो गए और जिज्ञासा के विशेषाधिकार शुरू हो गए।

वह थोड़ा पीछे हट गया ताकि मैं उसके बराबर आ सकूँ। "टहलने के लिए बढ़िया शाम है, मिस्टर फ्रैंकलिन," उसने कहा, मानो हम उसी क्षण संयोग से एक-दूसरे से मिले हों। "मान लीजिए कि आप फ्रिज़िंगहॉल के होटल गए होते, महोदय?"

"हाँ?"

"काश मुझे कल सुबह आपके साथ नाश्ता करने का सौभाग्य प्राप्त होता।"

"इसके बजाय, मेरे साथ होथरस्टोन फार्म में नाश्ता करने आइए।"

"आपकी दयालुता के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद, श्रीमान फ्रैंकलिन। लेकिन मेरा मतलब नाश्ते से नहीं था। मुझे लगता है आपने कहा था कि आपको मुझसे कुछ कहना है? अगर कोई राज़ न हो, महोदय," बेटरएज ने अचानक टेढ़ा रास्ता छोड़कर सीधा रास्ता लेते हुए कहा, "मैं यह जानने के लिए बेताब हूँ कि आप अचानक यहाँ क्यों आए हैं।"

मैंने पूछा, "मुझे यहाँ पहले किसलिए लाया था?"

"मूनस्टोन, श्रीमान फ्रैंकलिन। लेकिन आप अभी यहाँ क्यों आए हैं, महोदय?"

"मूनस्टोन फिर से, बेटरएज।"

वह बूढ़ा व्यक्ति अचानक स्थिर खड़ा हो गया और धुंधली रोशनी में मेरी ओर ऐसे देखने लगा मानो उसे शक हो कि उसके अपने कान उसे धोखा दे रहे हैं।
"अगर यह मजाक है, महोदय," उन्होंने कहा, "मुझे खेद है कि बुढ़ापे में मैं थोड़ा सुस्त हो गया हूँ। मैं इसे नहीं समझता।"
मैंने जवाब दिया, "यह कोई मज़ाक नहीं है। मैं यहाँ उस जाँच को आगे बढ़ाने आया हूँ जो मेरे इंग्लैंड छोड़ने के बाद बंद हो गई थी। मैं यहाँ वह काम करने आया हूँ जो अभी तक किसी ने नहीं किया है - यह पता लगाने के लिए कि हीरा किसने चुराया।"
"हीरे को रहने दो, श्रीमान फ्रैंकलिन! मेरी सलाह मानो, हीरे को रहने दो! उस मनहूस भारतीय रत्न ने हर उस व्यक्ति को गुमराह किया है जो उसके पास आया है। अपने जीवन के इस सुनहरे वसंत में, श्रीमान, मूनस्टोन के साथ छेड़छाड़ करके अपना पैसा और अपना गुस्सा बर्बाद मत करो। आप कैसे सफल होने की उम्मीद कर सकते हैं (अपनी जान बचाने की), जब सार्जेंट कफ ने खुद इसे बर्बाद कर दिया? सार्जेंट कफ!" बेटरएज ने सख्ती से अपनी तर्जनी उंगली हिलाते हुए दोहराया। "इंग्लैंड का सबसे महान पुलिसवाला!"
"मैंने अपना मन बना लिया है, मेरे पुराने दोस्त। सार्जेंट कफ भी मुझे डरा नहीं सकते। वैसे, मुझे उनसे कभी न कभी बात करनी पड़ सकती है। क्या आपने हाल ही में उनके बारे में कुछ सुना है?"
"सार्जेंट आपकी मदद नहीं करेंगे, मिस्टर फ्रैंकलिन।"
"क्यों नहीं?"
"महोदय, आपके जाने के बाद से पुलिस जगत में एक घटना घटी है। महान कफ ने कारोबार से संन्यास ले लिया है। उन्होंने डॉर्किंग में एक छोटा सा कॉटेज खरीदा है; और वे गुलाब उगाने में पूरी तरह से मग्न हैं। श्री फ्रैंकलिन, मेरे पास यह उनके अपने हाथ से लिखा हुआ है। उन्होंने सफेद मॉस रोज़ को बिना पहले डॉग-रोज़ पर कली लगाए उगाया है। और माली श्री बेगबी को डॉर्किंग जाकर यह स्वीकार करना है कि सार्जेंट ने अंततः उन्हें हरा दिया है।"
मैंने कहा, "इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता। मुझे सार्जेंट कफ की मदद के बिना ही काम चलाना होगा। और शुरुआत में मुझे आप पर ही भरोसा करना होगा।"
संभवतः मैंने लापरवाही से बात की।
बहरहाल, बेटरएज मेरे जवाब में कुछ बात से चिढ़ गया था। उसने थोड़ी तीखी आवाज़ में कहा, "आप मुझसे भी बदतर हो सकते हैं, मिस्टर फ्रैंकलिन—मैं आपको बता

सकता हूँ।"
जिस लहजे में उसने जवाब दिया, और उसके बोलने के बाद उसके हावभाव में जो एक तरह की बेचैनी झलक रही थी, उससे मुझे लगा कि उसके पास कुछ ऐसी जानकारी है जिसे वह बताने में हिचकिचा रहा है।
मैंने कहा, "मैं आपसे सार्जेंट कफ द्वारा छोड़े गए सबूतों के टुकड़ों को इकट्ठा करने में मदद की उम्मीद करता हूं। मुझे पता है कि आप यह कर सकते हैं। क्या आप इससे ज्यादा कुछ नहीं कर सकते?"
"आप मुझसे और क्या उम्मीद कर सकते हैं, महोदय?" बेटरएज ने अत्यंत विनम्रता का भाव दिखाते हुए पूछा।
"आपने अभी जो कहा, उससे मुझे और अधिक की उम्मीद थी।"
"महज़ शेखी बघारना, मिस्टर फ्रैंकलिन," बूढ़े व्यक्ति ने हठपूर्वक उत्तर दिया। "कुछ लोग जन्म से ही शेखीबाज़ होते हैं और मरने तक इस आदत से छुटकारा नहीं पाते। मैं भी उन्हीं में से एक हूँ।"
उसे अपने साथ ले जाने का केवल एक ही तरीका था। मैंने राहेल में उसकी रुचि और मुझमें उसकी रुचि का फायदा उठाया।
"बेटरएज, क्या आपको यह जानकर खुशी होगी कि राहेल और मैं फिर से अच्छे दोस्त बन गए हैं?"
"अगर आपको शक है तो बता दूं, मैंने आपके परिवार की बहुत कम सेवा की है, महोदय!"
"क्या आपको याद है कि इंग्लैंड छोड़ने से पहले राहेल ने मेरे साथ कैसा व्यवहार किया था?"
"ऐसा लगता है जैसे कल की ही बात हो! स्वयं मेरी पत्नी ने आपको इस बारे में एक पत्र लिखा था; और आपने कृपा करके मुझे वह पत्र दिखाया। उसमें लिखा था कि मिस राहेल आपसे बहुत नाराज़ थीं, क्योंकि आपने उनका गहना वापस दिलाने की कोशिश में जो भूमिका निभाई थी, उससे उन्हें बहुत दुख हुआ था। और न तो मेरी पत्नी, न आप, और न ही कोई और समझ पा रहा था कि ऐसा क्यों था।"
"बिल्कुल सही, बेटरएज! और मैं अपनी यात्रा से लौटा, तो पाया कि वह अब भी मुझसे बुरी तरह नाराज़ है। मुझे पिछले साल ही पता था कि हीरा ही इस मामले की जड़ है, और मुझे अब भी पता है कि हीरा ही इस मामले की जड़ है। मैंने उससे बात करने की कोशिश की, लेकिन वह मुझसे मिलना नहीं चाहती। मैंने उसे पत्र लिखने की कोशिश

की, लेकिन वह जवाब नहीं देती। आखिर मैं इस मामले को कैसे सुलझाऊं? मूनस्टोन के गुम होने की जांच का मौका ही एकमात्र मौका है जो राहेल ने मुझे दिया है।"
उन शब्दों ने स्पष्ट रूप से उसके सामने मामला रख दिया, क्योंकि उसने इसे अभी तक नहीं देखा था। उसने एक प्रश्न पूछा जिससे मुझे यह तसल्ली हो गई कि मैंने उसे झकझोर दिया था।
"मिस्टर फ्रैंकलिन, आपकी तरफ से इसमें कोई दुर्भावना नहीं है, है ना?"
मैंने जवाब दिया, "जब मैंने लंदन छोड़ा था, तब थोड़ा गुस्सा था। लेकिन अब वह सब खत्म हो चुका है। मैं चाहता हूं कि राहेल मुझसे समझौता कर ले—और मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं चाहिए।"
"क्या आपको कोई डर नहीं है, महोदय—मान लीजिए कि आपको मिस राहेल के बारे में कुछ पता चलता है?"
मुझे उसकी युवा प्रेमिका के प्रति ईर्ष्यापूर्ण विश्वास समझ में आया, जिसके कारण उसने वे शब्द कहे।
मैंने उत्तर दिया, "मुझे भी उस पर उतना ही भरोसा है जितना आपको। उसके रहस्य का पूरी तरह से खुलासा होने से भी उसके प्रति आपकी या मेरी नज़र में कोई बदलाव नहीं आएगा।"
बेटरएज की बची-खुची हिचक भी उसी क्षण गायब हो गई।
"अगर आपकी मदद करके मैं कुछ गलत कर रहा हूँ, श्रीमान फ्रैंकलिन," उसने कहा, "तो मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि मैं इसे देखने में उतना ही निर्दोष हूँ जितना कि अजन्मा बच्चा! मैं आपको सच्चाई जानने के रास्ते पर ले जा सकता हूँ, बशर्ते आप खुद आगे बढ़ सकें। आपको हमारी वो बेचारी लड़की याद है ना - रोज़ाना स्पीयरमैन?"
"बिल्कुल!"
"क्या आपको हमेशा से लगता था कि मूनस्टोन के इस मामले के संबंध में उसके मन में किसी तरह का कबूलनामा है, जो वह आपसे करना चाहती थी?"
"मैं उसके अजीब व्यवहार का कोई और कारण नहीं बता सकता था।"
"आप जब चाहें, श्रीमान फ्रैंकलिन, उस संदेह को दूर कर सकते हैं।"
अब मेरी बारी थी थम जाने की। बढ़ते अंधेरे में मैंने व्यर्थ ही उसका चेहरा देखने की कोशिश की। उस क्षण के आश्चर्य में, मैंने थोड़ी अधीरता से पूछा कि उसका क्या मतलब है।

"शांत रहिए, महोदय!" बेटरएज ने आगे कहा। "मैं जो कह रहा हूं, वही सच है। रोसन्ना स्पीयरमैन अपने पीछे एक सीलबंद पत्र छोड़ गई हैं - एक पत्र जो आपको संबोधित है।"
"कहाँ है?"
"वह कॉब्स होल में उसकी एक सहेली के पास है। आपने पिछली बार जब आप यहाँ आए थे, तब लंगड़ी लूसी के बारे में सुना होगा, महोदय - एक लंगड़ी लड़की जो बैसाखी का इस्तेमाल करती है।"
"मछुआरे की बेटी?"
"वही, श्रीमान फ्रैंकलिन।"
"मुझे वह पत्र क्यों नहीं भेजा गया?"
"लंगड़ाती लूसी की अपनी इच्छा है, महोदय। वह इसे आपके अलावा किसी और के हाथों में नहीं सौंपेगी। और मेरे पत्र लिखने से पहले ही आप इंग्लैंड छोड़ चुके थे।"
"चलो वापस चलते हैं, बेटरएज, और इसे तुरंत ले आते हैं!"
"आज रात बहुत देर हो चुकी है, महोदय। हमारे तटवर्ती इलाकों में लोग मोमबत्तियों की बहुत बचत करते हैं; और कॉब्स होल में वे जल्दी सो जाते हैं।"
"बकवास! हम आधे घंटे में वहाँ पहुँच सकते हैं।"
"हो सकता है, महोदय। और जब आप वहाँ पहुँचेंगे, तो आपको दरवाज़ा बंद मिलेगा। उन्होंने नीचे टिमटिमाती एक रोशनी की ओर इशारा किया; और उसी क्षण, शाम की खामोशी में मुझे एक झरने के बहने की आवाज़ सुनाई दी। 'ये रहा फार्म, श्रीमान फ्रैंकलिन! आज रात आराम से रहिए, और कृपया कल सुबह मुझसे मिलने आइएगा?'"
"क्या तुम मेरे साथ मछुआरे की झोपड़ी में चलोगे?"
"जी श्रीमान।"
"जल्दी?"
"श्री फ्रैंकलिन, आप जितनी जल्दी चाहें।"
हम उस रास्ते से नीचे उतरे जो फार्म की ओर जाता था।

अध्याय III

मुझे होथरस्टोन फार्म में जो कुछ हुआ था, उसकी बहुत धुंधली सी याद है।
मुझे हार्दिक स्वागत याद है; एक भव्य रात्रिभोज, जो पूर्व के पूरे गाँव को तृप्त कर सकता था; एक बेहद साफ-सुथरा शयनकक्ष, जिसमें हमारे पूर्वजों की मूर्खता के उस घृणित उत्पाद - एक पंखों वाले पलंग - के अलावा और कुछ भी अफसोसजनक नहीं

था; एक बेचैन रात, जिसमें बहुत सारी माचिसें जलाई गईं और एक छोटी मोमबत्ती को कई बार जलाया गया; और सूरज उगने पर मिली अपार राहत की अनुभूति, जब उठने की उम्मीद जगी।

बेटरएज के साथ रात भर में यह तय हो गया था कि कॉब्स होल जाते समय मैं जब चाहूँ उनसे मिलने आऊँगा—और चिट्ठी पाने की मेरी बेसब्री से यही समझा गया कि मैं जितनी जल्दी हो सके उनसे मिल सकता हूँ। फार्म में नाश्ते का इंतज़ार किए बिना, मैंने रोटी का एक टुकड़ा हाथ में लिया और निकल पड़ा, इस संदेह के साथ कि कहीं मैं बेटरएज को उनके बिस्तर पर चौंका न दूँ। मुझे बड़ी राहत मिली जब पता चला कि वह भी इस आने वाली घटना को लेकर उतने ही उत्साहित थे जितने मैं था। मैंने उन्हें तैयार पाया, और वह अपने हाथ में छड़ी लिए मेरा इंतज़ार कर रहे थे।

"बेटरएज, आज सुबह आप कैसे हैं?"

"बहुत ही खराब हालत में, महोदय।"

यह सुनकर दुख हुआ। आपको किस बात की शिकायत है?

"श्रीमान फ्रैंकलिन, मैं एक नई बीमारी से पीड़ित हूं, जो मैंने खुद ही पैदा की है। मैं आपको डराना नहीं चाहता, लेकिन यकीन मानिए, सुबह होने से पहले आप भी इसकी चपेट में आ जाएंगे।"

मैं शैतान हूँ!

"क्या आपको पेट में असहज गर्मी महसूस हो रही है, महोदय? और सिर में तेज़ धड़कन? अरे! अभी तक नहीं? कॉब्स होल में यह आपको जकड़ लेगी, श्रीमान फ्रैंकलिन। मैं इसे जासूसी-बुखार कहता हूँ; और मुझे यह पहली बार सार्जेंट कफ की संगति में हुआ था।"

"हाँ! हाँ! और इस मामले में इलाज रोज़ाना स्पीयरमैन का पत्र खोलना है, है ना? चलो, शुरू करते हैं।"

सुबह-सुबह ही हमने मछुआरे की पत्नी को रसोई में व्यस्त पाया। बेटरएज द्वारा मेरा परिचय कराए जाने पर, श्रीमती योलैंड ने एक औपचारिक रस्म निभाई, जो (जैसा कि मुझे बाद में पता चला) केवल विशिष्ट अतिथियों के लिए ही होती है। उन्होंने मेज पर डच जिन की एक बोतल और दो साफ पाइप रखे और बातचीत शुरू करते हुए कहा, "लंदन से क्या खबर है, महोदय?"

इससे पहले कि मैं इस अत्यंत व्यापक प्रश्न का उत्तर ढूंढ पाता, रसोई के एक अंधेरे कोने से एक प्रेत मेरी ओर बढ़ा। बेहद खूबसूरत बालों वाली और आँखों में तीव्र

तीक्ष्णता लिए एक पीली, बेजान, थकी-हारी लड़की बैसाखी के सहारे लंगड़ाते हुए उस मेज तक आई जहाँ मैं बैठा था, और मुझे ऐसे देखने लगी मानो मैं उसके लिए रुचि और भय का मिलाजुला रूप हूँ, जिसे देखकर वह बेहद मोहित हो रही थी।
"श्री बेटरएज," उसने मुझसे अपनी निगाहें हटाए बिना कहा, "कृपया उनका नाम फिर से लें।"
बेटरएज ने (सज्जन शब्द पर विशेष जोर देते हुए) उत्तर दिया, "इस सज्जन का नाम श्री फ्रैंकलिन ब्लेक है।"
लड़की ने मेरी तरफ पीठ फेर ली और अचानक कमरे से चली गई। मुझे लगता है कि श्रीमती योलैंड ने अपनी बेटी के अजीब व्यवहार के लिए माफी मांगी, और बेटरएज ने (शायद) उसे शिष्ट अंग्रेजी में अनुवाद किया। मैं इस बारे में पूरी अनिश्चितता से बात कर रहा हूँ। मेरा ध्यान लड़की की बैसाखी की आवाज़ का पीछा करने में लगा हुआ था। धप-धप, लकड़ी की सीढ़ियों पर ऊपर; धप-धप कमरे के उस पार हमारे सिर के ऊपर; धप-धप फिर से सीढ़ियों से नीचे—और वहाँ खुले दरवाजे पर वह प्रेत खड़ा था, हाथ में एक पत्र लिए, मुझे बाहर बुला रहा था!
मैंने माफी मांगते-मांगते अपनी बात अधूरी छोड़ दी और उस अजीब प्राणी के पीछे-पीछे, जो मेरे आगे लंगड़ाते हुए, और भी तेज़ गति से चल रही थी, समुद्र तट की ढलान पर चलने लगी। वह मुझे कुछ नावों के पीछे ले गई, जहाँ मछुआरे गाँव के कुछ ही लोग थे, और फिर वह रुक गई और पहली बार मेरी ओर मुड़ी।
"वहीं खड़े रहो," उसने कहा, "मैं तुम्हें देखना चाहती हूं।"
उसके चेहरे के भाव स्पष्ट थे। मैंने उसके मन में घृणा और अरुचि की तीव्र भावनाएँ जगा दीं। मैं यह कहने का घमंड नहीं करूँगा कि इससे पहले किसी स्त्री ने मुझे इस तरह नहीं देखा था। मैं बस इतना ही कहूँगा कि किसी स्त्री ने मुझे ऐसा देखने का अवसर नहीं दिया था। कुछ परिस्थितियों में, मनुष्य के लिए किसी भी प्रकार की जाँच-पड़ताल सहने की एक सीमा होती है। मैंने लंगड़ी लूसी का ध्यान अपने चेहरे से हटकर किसी कम घृणित वस्तु की ओर मोड़ने का प्रयास किया।
मैंने कहना शुरू किया, "मुझे लगता है कि आपके पास मुझे देने के लिए एक पत्र है। क्या यह वही पत्र है जो आपके हाथ में है?"
मुझे बस यही जवाब मिला, "फिर से कहो।"
मैंने उन शब्दों को दोहराया, ठीक वैसे ही जैसे कोई अच्छा बच्चा अपना पाठ सीखता है।

“नहीं,” लड़की ने खुद से कहा, लेकिन उसकी निगाहें मुझ पर टिकी हुई थीं। “मुझे समझ नहीं आ रहा कि उसने उसके चेहरे में क्या देखा। मैं अंदाज़ा भी नहीं लगा सकती कि उसने उसकी आवाज़ में क्या सुना।” उसने अचानक मुझसे नज़रें हटा लीं और थकी हुई सी अपनी बैसाखी पर सिर टिका दिया। “ओह, मेरी प्यारी!” उसने पहली बार कोमल स्वर में कहा, “ओह, मेरी लाडली! तुम्हें इस आदमी में क्या दिखा?” उसने गुस्से से अपना सिर उठाया और एक बार फिर मेरी तरफ देखा। “क्या तुम खा-पी सकते हो?” उसने पूछा।
मैंने अपनी गंभीरता बनाए रखने की पूरी कोशिश की और जवाब दिया, "हाँ।"
"क्या आप सो सकते हैं?"
"हाँ।"
"जब आप किसी गरीब लड़की को नौकरानी के रूप में देखते हैं, तो क्या आपको कोई पछतावा नहीं होता?"
"बिल्कुल नहीं। मैं ऐसा क्यों करूँ?"
उसने अचानक वह पत्र (जैसा कि कहावत है) मेरे चेहरे पर दे मारा।
"इसे ले लो!" वह गुस्से से चिल्लाई। "मैंने तुम्हें पहले कभी नहीं देखा। भगवान न करे कि मैं तुम्हें फिर कभी देख पाऊं।"
विदाई के उन शब्दों के साथ वह लंगड़ाते हुए मुझसे दूर चली गई। उसके इस व्यवहार का जो एक अर्थ मैं निकाल सकता था, वह निस्संदेह सभी ने पहले ही अनुमान लगा लिया होगा। मैं बस यही अनुमान लगा सकता था कि वह पागल थी।
उस अपरिहार्य निष्कर्ष पर पहुँचने के बाद, मैंने उस अधिक रोचक विषय की ओर रुख किया जो मुझे रोसन्ना स्पीयरमैन के पत्र द्वारा प्रस्तुत किया गया था। पत्र में निम्नलिखित लिखा था:--"फ्रैंकलिन ब्लेक, एस्क्वायर के लिए। इसे स्वयं उनके हाथों में सौंप दिया जाए (और किसी और को न सौंपा जाए), लूसी योलैंड द्वारा।"
मैंने लिफाफे की सील तोड़ी। लिफाफे में एक पत्र था, और उस पत्र में एक पर्ची थी। मैंने पहले पत्र पढ़ा:--
"महोदय, यदि आप मेरी मालकिन लेडी वेरेंडर के घर में आपके ठहरने के दौरान मेरे व्यवहार का अर्थ जानना चाहते हैं, तो कृपया इस पत्र के साथ संलग्न ज्ञापन में दिए गए निर्देशों का पालन करें—और यह कार्य किसी की उपस्थिति के बिना करें। आपका विनम्र सेवक।"
"रोसन्ना स्पीयरमैन।"

इसके बाद मैंने कागज की पर्ची देखी। यह रही उसकी हूबहू प्रतिलिपि, शब्दशः:
ज्ञापन:-- ज्वार के बदलते ही शिवरिंग सैंड पर जाना है। साउथ स्पिट पर तब तक चलना है जब तक कि साउथ स्पिट बीकन और कॉब्स होल के ऊपर कोस्ट गार्ड स्टेशन का ध्वज स्तंभ एक सीधी रेखा में न आ जाएं। बीकन और ध्वज स्तंभ की सीधी रेखा में चट्टानों पर एक छड़ी या कोई सीधी वस्तु रखनी है ताकि हाथ को दिशा मिल सके। ऐसा करते समय ध्यान रखना है कि छड़ी का एक सिरा चट्टानों के किनारे पर हो, उस तरफ जो दलदल की ओर है। बीकन की ओर इशारा करने वाले सिरे से शुरू करते हुए, समुद्री शैवाल के बीच छड़ी से चेन को टटोलना है। चेन मिलने पर, उस पर हाथ फेरते हुए उसके उस हिस्से तक पहुंचना है जो चट्टानों के किनारे से नीचे दलदल में जाता है। और फिर चेन को खींचना है।
जैसे ही मैंने मूल पाठ में रेखांकित अंतिम शब्द पढ़े, मुझे अपने पीछे बेटरएज की आवाज़ सुनाई दी। जासूसी के जुनून के जनक बेटरएज उस अप्रतिरोध्य बीमारी के शिकार हो चुके थे। "मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता, श्रीमान फ्रैंकलिन। उसके पत्र में क्या लिखा है? कृपया हमें बताइए, उसके पत्र में क्या लिखा है?"
मैंने उन्हें पत्र और ज्ञापन सौंप दिया। उन्होंने पत्र को बिना किसी खास रुचि दिखाए पढ़ा। लेकिन दूसरे पत्र—ज्ञापन—ने उन पर गहरा प्रभाव डाला।
“सार्जेंट ने कहा!” बेटरएज चिल्लाया। “सर, सार्जेंट ने शुरू से अंत तक कहा कि उसे छिपने की जगह का पूरा विवरण मिल गया है। और यह रहा! भगवान हमें बचाए, मिस्टर फ्रैंकलिन, यह वह रहस्य है जिसने महान कफ से लेकर नीचे तक सभी को उलझन में डाल दिया था, जो मानो आपके सामने प्रकट होने के लिए तैयार और प्रतीक्षारत था! सर, अब ज्वार उतर रहा है, जैसा कि कोई भी खुद देख सकता है। ज्वार के पलटने में कितना समय लगेगा?” उसने ऊपर देखा और हमसे थोड़ी दूरी पर एक लड़के को जाल की मरम्मत करते हुए देखा। “टैमी ब्राइट!” वह ज़ोर से चिल्लाया।
"मैं तुम्हारी बात सुन रही हूँ!" टैमी ने चिल्लाकर जवाब दिया।
"परिस्थिति कब पलटेगी?"
एक घंटे में।
हम दोनों ने अपनी घड़ियाँ देखीं।
"हम तट के किनारे से होकर जा सकते हैं, श्रीमान फ्रैंकलिन," बेटरएज ने कहा; "और इस तरह हम दलदल तक काफी समय रहते पहुँच सकते हैं। आपका क्या कहना है, महोदय?"

"साथ आओ!"
शिवरिंग सैंड की ओर जाते समय, मैंने बेटरएज से सार्जेंट कफ की पूछताछ के दौरान हुई घटनाओं (जिनसे रोसन्ना स्पीयरमैन प्रभावित हुई थीं) को याद करने के लिए कहा। अपने पुराने दोस्त की मदद से, मुझे जल्द ही सारी घटनाएँ स्पष्ट रूप से याद आ गईं। रोसन्ना की फ्रिज़िंगहॉल की यात्रा, जब पूरे घरवाले मानते थे कि वह अपने कमरे में बीमार है—रोसन्ना का रात भर रहस्यमय तरीके से दरवाज़ा बंद रखना और सुबह तक मोमबत्ती जलाए रखना—रोसन्ना द्वारा श्रीमती योलैंड से जापानी टिन का डिब्बा और दो कुत्तों की जंजीरें खरीदना—सार्जेंट का यह पक्का विश्वास कि रोसन्ना ने शिवरिंग सैंड में कुछ छिपाया है, और सार्जेंट का इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ होना कि वह चीज़ क्या हो सकती है—मूनस्टोन के गुम होने की असफल जाँच के ये सभी अजीबोगरीब परिणाम मुझे फिर से स्पष्ट रूप से याद आ गए, जब हम दलदली रेत पर पहुँचे और साउथ स्पिट नामक चट्टानों की नीची पट्टी पर साथ चले।
बेटरएज की मदद से, मैं जल्द ही सही स्थिति में खड़ा हो गया जिससे मुझे बीकन और तटरक्षक बल का झंडा एक सीधी रेखा में दिखाई देने लगे। ज्ञापन को मार्गदर्शक मानते हुए, हमने अपनी छड़ी को चट्टानों की ऊबड़-खाबड़ सतह पर यथासंभव सटीक रूप से सही दिशा में रखा। और फिर हमने एक बार फिर अपनी घड़ियाँ देखीं।
ज्वार के पलटने में अभी लगभग बीस मिनट बाकी थे। मैंने सुझाव दिया कि गीली और फिसलन भरी चट्टानों पर बैठने के बजाय, इस दौरान समुद्र तट पर ही प्रतीक्षा की जाए। सूखी रेत पर पहुँचकर मैं बैठने की तैयारी कर रहा था; और मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ जब बेटरएज मुझे छोड़कर जाने लगा।
मैंने पूछा, "तुम किसलिए जा रहे हो?"
"श्रीमान, पत्र को दोबारा देखिए, आपको समझ आ जाएगा।"
पत्र पर एक नज़र डालते ही मुझे याद आया कि जब मैंने अपनी खोज की थी, तो मुझे इसे अकेले करने का दायित्व सौंपा गया था।
“इस समय आपको छोड़कर जाना मेरे लिए पहले से ही बहुत मुश्किल है,” बेटरएज ने कहा। “लेकिन बेचारी की मौत बहुत दर्दनाक हुई—और मुझे लगता है, मिस्टर फ्रैंकलिन, कि मुझे उसकी उस ख्वाहिश को पूरा करना चाहिए। इसके अलावा,” उन्होंने विश्वास से कहा, “पत्र में ऐसा कुछ नहीं लिखा है कि आप बाद में यह राज़ किसी को बता न दें। मैं देवदार के बागान में ही रुका रहूंगा और आपके आने का इंतज़ार

करूंगा। कृपया ज़रूरत से ज़्यादा देर न करें, महोदय। इन हालातों में जासूसी का जुनून काबू में रखना आसान नहीं है।"
उस अंतिम चेतावनी के साथ, वह मुझे छोड़कर चला गया।
समय के लिहाज़ से देखा जाए तो प्रतीक्षा का अंतराल भले ही छोटा था, लेकिन उत्सुकता के लिहाज़ से यह बहुत लंबा लगने लगा। यह उन कुछ मौकों में से एक था जब धूम्रपान की अनमोल आदत विशेष रूप से महत्वपूर्ण और सुकून देने वाली बन जाती है। मैंने एक सिगार जलाया और समुद्र तट की ढलान पर बैठ गया।
सूर्य की निर्मल रोशनी हर उस चीज़ पर पड़ रही थी जो मेरी नज़र में आ रही थी। हवा की ताजगी इतनी उमंग भरी थी कि जीना और साँस लेना भी एक विलासिता जैसा लग रहा था। यहाँ तक कि सुनसान छोटी खाड़ी ने भी सुबह का स्वागत प्रसन्नता से किया; और दलदल की गीली सतह, सुनहरी चमक से दमकती हुई, अपने भूरे रंग के झूठे रूप को एक हल्की मुस्कान में छुपा रही थी। इंग्लैंड लौटने के बाद से यह सबसे खूबसूरत दिन था जो मैंने देखा था।
सिगार खत्म होने से पहले ही ज्वार का रुख बदल गया। मैंने रेत को पहले थोड़ा हिलते हुए देखा, और फिर उसकी सतह पर एक भयानक सिहरन दौड़ गई—मानो अथाह गहराई में कोई भयानक आत्मा रहती हो, हिलती-डुलती हो और कांपती हो। मैंने सिगार फेंक दिया और वापस चट्टानों की ओर चल दिया।
मुझे ज्ञापन में दिए गए निर्देशों में यह बताया गया था कि मुझे छड़ी द्वारा खींची गई रेखा के साथ-साथ महसूस करना है, जिसकी शुरुआत बीकन के सबसे निकट वाले सिरे से करनी है।
इस तरह मैं छड़ी के सहारे आधे से ज़्यादा रास्ता तय कर चुका था, और रास्ते में चट्टानों के किनारों के अलावा कुछ नहीं मिला। लेकिन एक-दो इंच आगे जाकर मेरी सब्र का फल मिला। एक संकरी सी दरार में, जो मेरी तर्जनी उंगली की पहुँच में थी, मुझे जंजीर महसूस हुई। फिर मैंने छूकर दलदल की ओर उसका पीछा करने की कोशिश की, लेकिन समुद्री शैवाल के घने झुंड ने मेरा रास्ता रोक दिया—जो निस्संदेह उस दरार में जम गया था, जब से रोसन्ना स्पीयरमैन ने अपना छिपने का स्थान चुना था।
समुद्री शैवाल को खींचकर निकालना या उसमें से हाथ निकालना दोनों ही लगभग नामुमकिन था। दलदल के सबसे नज़दीक रखी छड़ी के सिरे से निशान लगाने के बाद, मैंने अपनी योजना के अनुसार चेन की खोज जारी रखने का निश्चय किया। मेरा विचार था कि चट्टानों के ठीक नीचे खुदाई की जाए, ताकि शायद चेन का खोया हुआ निशान

उस जगह मिल जाए जहाँ वह रेत में धंसी थी। मैंने छड़ी उठाई और दक्षिणी रेत के टीले के किनारे घुटनों के बल बैठ गया।

इस स्थिति में, मेरा चेहरा दलदल की सतह से कुछ ही फीट की दूरी पर था। इतनी नज़दीक से दलदल को देखकर, जो बीच-बीच में भयानक रूप से कांप रहा था, मेरे रोंगटे खड़े हो गए। एक भयानक कल्पना मेरे मन में घर कर गई कि कहीं वह मृत महिला आत्महत्या स्थल पर प्रकट होकर मेरी खोज में मदद न करने लगे—उसे हिलती हुई रेत की सतह से ऊपर उठते हुए देखने और उस जगह की ओर इशारा करते देखने का असहनीय भय—और इस डर ने मुझे गर्म धूप में भी कंपकंपा दिया। मैं मानता हूँ कि जिस क्षण छड़ी का सिरा पहली बार दलदल में धंसा, उसी क्षण मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं।

इसके तुरंत बाद, छड़ी के कुछ इंच पानी में डूबने से पहले ही, मैं अपने अंधविश्वास के डर से मुक्त हो गया और सिर से पैर तक उत्साह से भर गया। आँखों पर पट्टी बांधकर, मैंने पहले ही प्रयास में सही ध्वनि उत्पन्न की! छड़ी चेन से टकराई।

मैंने अपने बाएं हाथ से समुद्री शैवाल की जड़ों को मजबूती से पकड़ लिया और किनारे पर लेट गया, फिर अपने दाहिने हाथ से चट्टान के लटकते किनारों के नीचे टटोला। मेरे दाहिने हाथ को जंजीर मिल गई।

मैंने इसे बिना किसी कठिनाई के तैयार कर लिया। और इसके अंत में जापानी पेंट से बना टिन का डिब्बा लगा हुआ था।

पानी के असर से चेन इतनी जंग खा चुकी थी कि उसे कुंडी से खोलना मेरे लिए नामुमकिन था। मैंने कुंडी को अपने घुटनों के बीच रखकर और पूरी ताकत लगाकर उसका ढक्कन हटाया। अंदर झाँकने पर मुझे कोई सफ़ेद पदार्थ दिखाई दिया। मैंने हाथ डालकर देखा तो वह लिनन था।

कपड़े को निकालते समय, मुझे उसके साथ लिपटा हुआ एक पत्र भी मिला। पता देखकर और यह जानकर कि उस पर मेरा नाम लिखा है, मैंने पत्र को अपनी जेब में रख लिया और कपड़े को पूरी तरह से हटा दिया। वह एक मोटे रोल के रूप में निकला, जो उस डिब्बे के आकार में ढल गया था जिसमें वह इतने लंबे समय से बंद था, और समुद्र की लहरों से पूरी तरह सुरक्षित था।

मैंने उस लिनेन को समुद्र तट की सूखी रेत पर ले जाकर फैलाया और सीधा किया। उसे देखकर कोई शक नहीं था कि वह कोई परिधान है। वह एक नाइटगाउन था।

जब मैंने इसे फैलाया, तो सबसे ऊपरी सतह पर अनगिनत तहें और सिलवटें दिखाई दीं, और कुछ नहीं। फिर मैंने सबसे निचली सतह को आज़माया—और तुरंत ही राहेल के बेडरूम के दरवाजे पर लगे पेंट के धब्बे नज़र आए!

मेरी निगाहें उस दाग पर टिकी रहीं और मेरा मन वर्तमान से अतीत की ओर छलांग लगाता चला गया। सार्जेंट कफ के शब्द मेरे मन में गूंजने लगे, मानो वह स्वयं मेरे पास आकर दरवाजे पर लगे उस धब्बे से निकाले गए अचूक निष्कर्ष की ओर इशारा कर रहे हों।

पता लगाओ कि क्या इस घर में कोई ऐसा कपड़ा है जिस पर पेंट का दाग लगा हो। पता लगाओ कि वह कपड़ा किसका है। पता लगाओ कि वह व्यक्ति आधी रात से लेकर सुबह तीन बजे के बीच कमरे में होने और पेंट लगाने का क्या कारण बता सकता है। अगर वह व्यक्ति तुम्हें संतुष्ट नहीं कर पाता, तो हीरे को चुराने वाले को ढूंढने के लिए तुम्हें ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ेगा।

एक के बाद एक वे शब्द मेरी स्मृति में घूमते रहे, थका देने वाली, यांत्रिक पुनरावृत्ति के साथ बार-बार दोहराते रहे। कई घंटों के उस सम्मोहन से, जो वास्तव में कुछ ही क्षणों का विराम था, मुझे एक आवाज़ ने जगाया। मैंने ऊपर देखा, और पाया कि बेटरएज का धैर्य अंततः टूट गया था। वह रेत के टीलों के बीच से मुश्किल से दिखाई दे रहा था, समुद्र तट की ओर लौट रहा था।

उस बूढ़े व्यक्ति का चेहरा देखते ही मुझे तुरंत वर्तमान का एहसास हो गया और मुझे याद आ गया कि अब तक की मेरी जाँच अभी अधूरी थी। मैंने नाइटगाउन पर लगा धब्बा देख लिया था। यह नाइटगाउन किसका था?

मेरी पहली प्रतिक्रिया अपनी जेब में पड़े पत्र को देखने की थी—वही पत्र जो मुझे उस डिब्बे में मिला था।

जैसे ही मैंने उसे निकालने के लिए हाथ बढ़ाया, मुझे याद आया कि सच्चाई जानने का इससे भी आसान तरीका था। नाइटगाउन खुद ही सच्चाई उजागर कर देगा, क्योंकि पूरी संभावना थी कि नाइटगाउन पर उसके मालिक का नाम लिखा होगा।

मैंने उसे रेत से उठाया और निशान की तलाश की।

मैंने वह निशान ढूंढा और पढ़ा—मेरा अपना नाम।

वहाँ वही जाने-पहचाने अक्षर थे जिनसे मुझे पता चला कि वो नाइटगाउन मेरा है। मैंने उनसे नज़रें ऊपर उठाईं। वहाँ सूरज था; खाड़ी का चमकता पानी था; और बूढ़ा

बेटरएज मेरे और करीब आता जा रहा था। मैंने फिर से उन अक्षरों को देखा। मेरा अपना नाम। साफ़-साफ़ मेरे सामने था—मेरा अपना नाम।

"अगर समय, मेहनत और पैसा साथ दे तो मैं उस चोर को पकड़ लूँगा जिसने मूनस्टोन चुराया है।" - ये शब्द मेरे होंठों पर थे और मैं लंदन से निकल चुका था। मैंने उस रहस्य को जान लिया था जिसे दलदल ने हर जीवित प्राणी से छिपा रखा था। और, पेंट के दाग के अकाट्य प्रमाण के आधार पर, मैंने खुद को चोर के रूप में पहचान लिया था।

अध्याय IV

मुझे अपनी भावनाओं के बारे में कहने के लिए एक शब्द भी नहीं है।

मुझे ऐसा लगता है कि उस सदमे ने मेरी सोचने-समझने की शक्ति को पूरी तरह से खत्म कर दिया था। जब बेटरएज मेरे पास आया, तब मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि मैं क्या कर रहा था—क्योंकि मुझे उसी के हवाले से पता चला है कि जब उसने पूछा कि क्या बात है, तो मैं हँस पड़ा और नाइटगाउन उसके हाथों में थमाकर उससे कहा कि वह पहेली खुद पढ़ ले।

समुद्र तट पर हमारे बीच क्या बातचीत हुई थी, मुझे उसका ज़रा भी स्मरण नहीं है। पहली जगह जहाँ मैं अब खुद को स्पष्ट रूप से देख पा रहा हूँ, वह देवदार के पेड़ों का बागान है। बेटरएज और मैं साथ-साथ घर की ओर वापस जा रहे हैं; और बेटरएज मुझसे कह रहा है कि जब हम एक गिलास शराब पी लेंगे, तब मैं और वह दोनों इसका सामना कर पाएंगे।

दृश्य बागान से हटकर बेटरएज के छोटे से बैठक कक्ष में आ जाता है। राहेल के घर में न जाने का मेरा संकल्प धराशायी हो जाता है। कमरे की ठंडक, छाया और शांति मुझे सुखद लगती है। मैं ग्रोग पीता हूँ (जो उस समय मेरे लिए एक बिल्कुल नया विलासिता का पेय था), जिसे मेरा पुराना दोस्त कुएँ के बर्फीले ठंडे पानी में मिलाकर बनाता है। किसी और परिस्थिति में, यह पेय मुझे बस मदहोश कर देता। लेकिन इस समय, यह मेरी नसों में तनाव पैदा कर देता है। मैं बेटरएज की भविष्यवाणी के अनुसार, स्थिति का सामना करने लगता हूँ। और बेटरएज भी, अपनी ओर से, स्थिति का सामना करने लगता है।

मैं अब अपनी जो छवि प्रस्तुत कर रहा हूँ, मुझे लगता है कि उसे कम से कम बहुत अजीब समझा जाएगा। ऐसी स्थिति में, जिसे शायद बेमिसाल कहा जा सकता है, मैं सबसे पहले क्या करता हूँ? क्या मैं सभी सामाजिक परिवेश से खुद को अलग कर लेता हूँ? क्या मैं उस भयानक असंभवता का विश्लेषण करने में जुट जाता हूँ, जो फिर भी

एक निर्विवाद तथ्य के रूप में मेरे सामने है? क्या मैं पहली ट्रेन से लंदन वापस जाकर उच्च अधिकारियों से सलाह लेता हूँ और तुरंत गहन जाँच शुरू करता हूँ? नहीं। मैं उस घर में शरण लेता हूँ जिसमें मैंने दोबारा कभी न जाने का निश्चय किया था; और मैं सुबह दस बजे एक पुराने नौकर के साथ बैठकर शराब और पानी पीता हूँ। क्या मेरे जैसी भयानक स्थिति में किसी व्यक्ति से ऐसे व्यवहार की अपेक्षा की जा सकती थी? मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि बूढ़े बेटरएज का जाना-पहचाना चेहरा देखना मेरे लिए असीम सुकून था, और बूढ़े बेटरएज की शराब पीने से मुझे उस शारीरिक और मानसिक विरक्ति से उबरने में बहुत मदद मिली, जो शायद किसी और चीज़ से नहीं मिल सकती थी। मैं बस यही बहाना अपने लिए दे सकता हूँ; और मैं उस अटूट गरिमा और आचरण की उस दृढ़ तार्किक निरंतरता की प्रशंसा करता हूँ जो इन पंक्तियों को पढ़ने वाले हर पुरुष और महिला को उनके जीवन की हर परिस्थिति में, जन्म से लेकर मृत्यु तक, विशिष्ट बनाती है।

"अब, मिस्टर फ्रैंकलिन, कम से कम एक बात तो निश्चित है," बेटरएज ने कहा, और हमारे बीच मेज पर नाइटगाउन फेंकते हुए, उसकी ओर ऐसे इशारा किया जैसे वह कोई जीवित प्राणी हो जो उसे सुन सकता हो। "वह शुरू से ही झूठा है।"

इस मामले के बारे में यह सुकून देने वाला दृष्टिकोण वह दृष्टिकोण नहीं था जो मेरे मन में आया था।

मैंने कहा, "हीरा चुराने के बारे में मुझे उतनी ही जानकारी नहीं है जितनी आपको। लेकिन मेरे खिलाफ गवाह मौजूद है! नाइटगाउन पर लगा रंग और उस पर लिखा नाम, ये सब तथ्य हैं।"

बेटरएज ने मेरा गिलास उठाया और उसे बड़े ही प्रेरक अंदाज में मेरे हाथ में रख दिया। "तथ्य?" उसने दोहराया। "थोड़ी और शराब पी लो, मिस्टर फ्रैंकलिन, और तथ्यों पर विश्वास करने की कमजोरी से उबर जाओगे! कुछ गड़बड़ है, महोदय!" उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए आत्मविश्वास से कहा। "मैं पहेली को इसी तरह समझता हूँ। कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ है—और हम दोनों को इसका पता लगाना होगा। जब आपने अपना हाथ टिन के डिब्बे में डाला था, तो क्या उसमें और कुछ नहीं था?"

सवाल सुनते ही मुझे अपनी जेब में पड़ा पत्र याद आ गया। मैंने उसे निकाला और खोला। वह कई पन्नों का पत्र था, जिसमें लिखावट बहुत घनी थी। मैंने अंत में हस्ताक्षर देखने के लिए बेसब्री से खोजबीन की। "रोसन्ना स्पीयरमैन।"

जैसे ही मैंने नाम पढ़ा, अचानक एक स्मृति मेरे मन में कौंध गई, और उस नई रोशनी से अचानक एक संदेह उत्पन्न हो गया।
"रुको!" मैंने हैरानी से कहा। "रोसन्ना स्पीयरमैन मेरी चाची के पास सुधारगृह से आई थी? रोसन्ना स्पीयरमैन कभी चोर हुआ करती थी?"
"इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता, श्रीमान फ्रैंकलिन। अब इसके बारे में क्या? कृपया बताएं?"
"अब क्या? हमें कैसे पता चलेगा कि उसने हीरा चुराया ही नहीं होगा? हमें कैसे पता चलेगा कि उसने जानबूझकर मेरे नाइटगाउन पर पेंट नहीं लगाया होगा?"
बेटरएज ने मेरा हाथ पकड़ लिया और मुझे कुछ और कहने से पहले ही रोक दिया।
"श्रीमान फ्रैंकलिन, आप इस मामले में निःसंदेह निर्दोष साबित होंगे। लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप उस तरह से निर्दोष साबित नहीं होंगे। पत्र में क्या लिखा है, महोदय, उसे देख लीजिए। उस लड़की की स्मृति के सम्मान में, कृपया पत्र में लिखी बातें देख लीजिए।"
मुझे उनकी बात में गंभीरता महसूस हुई—जैसे कि वह मुझे एक दोस्ताना फटकार लगा रहे हों। मैंने कहा, "उसके पत्र पर आप खुद फैसला कर लीजिएगा। मैं उसे पढ़कर सुनाता हूँ।"
मैंने पढ़ना शुरू किया और ये पंक्तियाँ पढ़ीं:
"महोदय—मुझे आपसे कुछ स्वीकार करना है। एक ऐसी स्वीकारोक्ति जिसमें बहुत दुख छिपा होता है, कभी-कभी कुछ ही शब्दों में कही जा सकती है। यह स्वीकारोक्ति तीन शब्दों में कही जा सकती है। मैं आपसे प्यार करती हूँ।"
मेरे हाथ से चिट्ठी गिर गई। मैंने बेटरएज की तरफ देखा। "भगवान के नाम पर," मैंने कहा, "इसका क्या मतलब है?"
वह प्रश्न का उत्तर देने से कतराता हुआ प्रतीत हुआ।
"आज सुबह आप और लंगड़ाती लूसी अकेले थे, महोदय," उन्होंने कहा। "क्या उसने रोसन्ना स्पीयरमैन के बारे में कुछ नहीं कहा?"
"उसने रोसन्ना स्पीयरमैन का नाम तक नहीं लिया।"
"कृपया पत्र पर वापस जाइए, श्रीमान फ्रैंकलिन। मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं, जो कुछ आपने पहले ही सहा है, उसके बाद मैं आपको और परेशान नहीं कर सकता। उन्हें खुद बोलने दीजिए, महोदय। और अपनी शराब पीजिए। अपने भले के लिए, अपनी शराब पीजिए।"

मैंने पत्र को दोबारा पढ़ना शुरू किया।
"अगर मैं उस समय जीवित होती जब आप इसे पढ़ते, तो यह बात आपको बताना मेरे लिए बहुत शर्मनाक होता। महोदय, जब आपको मेरा पत्र मिलेगा, तब तक मैं मर चुकी होऊंगी। यही बात मुझे साहसी बनाती है। मेरी कब्र भी मेरे बारे में कुछ नहीं कह पाएगी। मैं सच स्वीकार कर सकती हूँ—भले ही शब्द लिखे जाने के बाद मुझे छिपाने के लिए दलदल तैयार बैठा हो।"
"इसके अलावा, मेरी गुप्त जगह में तुम्हें तुम्हारा नाइटगाउन मिलेगा, जिस पर पेंट का धब्बा लगा होगा; और तुम जानना चाहोगी कि मैंने इसे कैसे छिपाया? और मैंने अपने जीवनकाल में इसके बारे में तुमसे कुछ क्यों नहीं कहा? मेरे पास इसका केवल एक ही कारण है। मैंने ये अजीबोगरीब काम इसलिए किए क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता था।"
"मैं आपको अपने बारे में या अपनी ज़िंदगी के बारे में ज़्यादा कुछ बताकर परेशान नहीं करना चाहता, इससे पहले कि आप मेरी मालकिन के घर आएँ। लेडी वेरेंडर मुझे सुधारगृह से लाई थीं। मैं जेल से सुधारगृह गया था। मुझे जेल में इसलिए डाला गया था क्योंकि मैं चोर था। मैं चोर इसलिए था क्योंकि जब मैं बहुत छोटा था, मेरी माँ बेघर हो गई थी। मेरी माँ बेघर इसलिए हो गई थी क्योंकि मेरे पिता ने उसे छोड़ दिया था। इतनी आम कहानी को विस्तार से बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। यह अख़बारों में अक्सर छपती रहती है।"
"लेडी वेरेंडर और मिस्टर बेटरएज दोनों ही मेरे प्रति बहुत दयालु थे। ये दोनों और सुधारगृह की मैट्रन ही मेरे जीवन में मिले एकमात्र अच्छे लोग हैं। मैं अपनी जगह पर गुज़ारा कर लेता—खुशी से नहीं—लेकिन अगर आप मिलने नहीं आते तो गुज़ारा कर लेता। मैं आपको दोष नहीं देता, महोदय। यह मेरी गलती है—पूरी तरह से मेरी गलती है।"
"क्या तुम्हें याद है, उस सुबह जब तुम रेत के टीलों के बीच से निकलकर मिस्टर बेटरएज को ढूंढते हुए हमारे सामने आए थे? तुम किसी परीकथा के राजकुमार जैसे लग रहे थे। तुम किसी सपने के प्रेमी जैसे थे। तुम अब तक देखे गए सबसे प्यारे इंसान थे। जैसे ही मैंने तुम्हें देखा, मेरे अंदर एक ऐसी अनुभूति हुई मानो मुझे वो खुशहाल जीवन मिल गया हो जो मैंने कभी नहीं जिया था। अगर हो सके तो इस पर हंसना मत। काश, मैं तुम्हें यह एहसास दिला पाती कि यह मेरे लिए कितना गंभीर मामला है!"
मैं घर वापस गई और अपने वर्कबॉक्स में तुम्हारा और अपना नाम लिखा, और उनके नीचे सच्चे प्रेमियों की गाँठ बनाई। फिर, किसी शैतान ने—नहीं, मुझे कहना चाहिए

किसी अच्छे फ़रिश्ते ने—मेरे कान में फुसफुसाया, 'जाओ और शीशे में देखो।' शीशे ने मुझे बताया—कोई बात नहीं क्या। मैं इतनी मूर्ख थी कि चेतावनी को नहीं समझा। मैं तुम्हारे लिए और भी ज़्यादा आकर्षित होती चली गई, मानो मैं तुम्हारे ही स्तर की कोई महिला हूँ, और सबसे सुंदर प्राणी जिसे तुम्हारी नज़रों ने कभी देखा हो। मैंने कोशिश की—ओह, प्रिय, मैंने कितनी कोशिश की—कि तुम मेरी तरफ देखो। अगर तुम्हें पता होता कि मैं रात को तुम्हारे द्वारा कभी ध्यान न दिए जाने के दुख और अपमान से कितना रोती थी, तो शायद तुम्हें मुझ पर दया आ जाती, और तुम मुझे कभी-कभार एक नज़र देख लेते ताकि मैं जी सकूँ।

"शायद यह बात आपको अच्छी नहीं लगती, अगर आपको पता होता कि मैं मिस राहेल से कितनी नफरत करती थी। मुझे लगता है कि मुझे पता चल गया था कि आप उससे प्यार करते हैं, इससे पहले कि आपको खुद पता चले। वह आपको बटनहोल में लगाने के लिए गुलाब दिया करती थी। आह, मिस्टर फ्रैंकलिन, आपने मेरे गुलाब उससे कहीं ज्यादा बार पहने जितना आपने या उसने सोचा भी नहीं था! उस समय मुझे बस यही तसल्ली थी कि मैंने चुपके से अपना गुलाब उसके गुलाब की जगह आपके पानी के गिलास में डाल दिया और फिर उसका गुलाब फेंक दिया।"

"अगर वो सचमुच उतनी ही सुंदर होती जितना आप सोचते हैं, तो शायद मैं इसे बेहतर ढंग से सहन कर पाती। नहीं; मुझे लगता है कि मैं उसके प्रति और भी ज़्यादा द्वेषपूर्ण होती। मान लीजिए कि आप मिस राहेल को नौकरानी के कपड़े पहना दें और उनके गहने उतार दें? मुझे नहीं पता कि इस तरह लिखने का क्या फायदा है। यह तो सच है कि उनका शरीर सुडौल नहीं था; वो बहुत पतली थीं। लेकिन कौन जानता है कि पुरुषों को क्या पसंद है? और युवतियाँ ऐसा व्यवहार कर सकती हैं जिससे एक नौकरानी को अपनी नौकरी गंवानी पड़े। यह मेरा काम नहीं है। अगर मैं इस तरह लिखूँगी तो मैं आपसे अपना पत्र पढ़ने की उम्मीद नहीं कर सकती। लेकिन मिस राहेल को सुंदर कहे जाने पर गुस्सा तो आता ही है, जबकि हम जानते हैं कि ये सब उनके कपड़ों और उनके आत्मविश्वास की वजह से है।"

"कृपया धैर्य न खोएं, महोदय। मैं यथासंभव शीघ्र ही उस समय की ओर बढ़ूंगा जो निश्चित रूप से आपकी रुचि का विषय होगा - वह समय जब हीरा खो गया था।"

"लेकिन एक बात ऐसी है जो मैं आपको सबसे पहले बताना चाहता हूं।"

जब मैं चोर थी, तब मेरा जीवन इतना कठिन नहीं था। सुधारगृह में जब मुझे अपनी नीचता का एहसास हुआ और बेहतर चीजों के लिए प्रयास करना सिखाया गया, तभी

दिन लंबे और थकाऊ लगने लगे। भविष्य के विचार मुझ पर हावी होने लगे। मुझे इस बात का गहरा आहत भाव महसूस हुआ कि ईमानदार लोग—यहाँ तक कि सबसे दयालु ईमानदार लोग भी—अपने आप में मेरे प्रति कितने लज्जित थे। एक हृदयविदारक अकेलापन मेरे साथ बना रहा, चाहे मैं कहीं भी जाऊं, कुछ भी करूँ और किसी से भी मिलूँ। मैं जानती हूँ कि नए स्थान पर अपने साथी नौकरों के साथ घुलमिल जाना मेरा कर्तव्य था। किसी तरह, मैं उनसे दोस्ती नहीं कर पाई। वे ऐसे दिखते थे (या मुझे लगता था कि वे ऐसे दिखते थे) जैसे उन्हें शक हो कि मैं क्या थी। मुझे इस बात का कोई पछतावा नहीं है, बिलकुल भी नहीं, कि मैंने एक सुधरी हुई महिला बनने का प्रयास किया—लेकिन, वास्तव में, यह एक थकाऊ जीवन था। तुम पहले तो सूरज की किरण की तरह आए थे—और फिर तुमने भी मुझे निराश किया। मैं तुमसे प्यार करने के लिए पागल थी; और मैं आपका ध्यान भी आकर्षित नहीं कर सका। वहाँ बहुत दुख था—वास्तव में बहुत दुख था।

अब मैं उस बात पर आ रहा हूँ जो मैं आपको बताना चाहता था। उन कड़वाहट भरे दिनों में, जब भी मेरी बाहर जाने की बारी होती, मैं दो-तीन बार अपनी पसंदीदा जगह पर जाता था—शिवरिंग सैंड के ऊपर वाला समुद्र तट। और मैं मन ही मन कहता था, 'मुझे लगता है कि यहीं मेरा अंत होगा। जब मैं इसे और सहन नहीं कर पाऊँगा, तो मुझे लगता है कि यहीं मेरा अंत होगा।' आप समझेंगे, महोदय, कि आपके आने से पहले ही उस जगह ने मुझ पर एक तरह का जादू कर दिया था। मुझे हमेशा से यह आभास था कि दलदल में मेरे साथ कुछ घटित होगा। लेकिन मैंने कभी इस विचार से इसे नहीं देखा था कि यह मेरे आत्म-विनाश का साधन होगा, जब तक कि वह समय नहीं आ गया जिसके बारे में मैं अब लिख रहा हूँ। तब मैंने सोचा कि यह एक ऐसी जगह है जो पल भर में मेरे सारे कष्टों को समाप्त कर देगी—और मुझे हमेशा के लिए छिपा लेगी।

"मेरे बारे में मुझे बस इतना ही कहना है, उस सुबह से जब मैंने तुम्हें पहली बार देखा था, उस सुबह तक जब घर में यह खबर फैली कि हीरा खो गया है।"

"महिला नौकरानियों के बीच हो रही मूर्खतापूर्ण बातों से मैं इतना परेशान हो गया था कि सभी यह जानने की कोशिश कर रही थीं कि पहले किस पर शक किया जाए; और मैं आप पर (उस समय आपको बेहतर जानकारी नहीं थी) गहने की तलाश में और पुलिस को बुलाने में आपने जो मेहनत की थी, उससे इतना क्रोधित था कि मैं यथासंभव अकेले ही दूर रहा, जब तक कि दिन के बाद में फ्रिज़िंगहॉल से पुलिस अधिकारी घर नहीं आ गया।"

जैसा कि आपको याद होगा, श्री सीग्रेव ने सबसे पहले महिलाओं के शयनकक्षों पर पहरा बिठाया; और सभी महिलाएं गुस्से में उनके पीछे-पीछे ऊपर गईं, यह जानने के लिए कि उन्होंने उनके अपमान का क्या मतलब निकाला है। मैं भी उनके साथ गई, क्योंकि अगर मैंने बाकियों से कुछ अलग किया होता, तो श्री सीग्रेव ऐसे व्यक्ति थे जो मुझ पर सीधा शक कर लेते। हमने उन्हें मिस राहेल के कमरे में पाया। उन्होंने हमसे कहा कि उन्हें वहां ज्यादा महिलाएं पसंद नहीं हैं; और उन्होंने रंगे हुए दरवाजे पर लगे धब्बे की ओर इशारा करते हुए कहा कि हमारी कुछ पेटीकोट ने यह गड़बड़ की है, और हम सभी को वापस नीचे भेज दिया।

"मिस राहेल के कमरे से निकलने के बाद, मैं कुछ पल के लिए एक सीढ़ी पर अकेले रुक गई, यह देखने के लिए कि कहीं पेंट का दाग गलती से मेरे गाउन पर तो नहीं लग गया। पेनेलोप बेटरएज (उन महिलाओं में से एकमात्र जिनके साथ मेरे अच्छे संबंध थे) वहाँ से गुज़रीं और उन्होंने देखा कि मैं क्या कर रही थी।"

"'तुम्हें परेशान होने की ज़रूरत नहीं है, रोज़ाना,' उसने कहा। 'मिस राहेल के दरवाज़े पर लगा पेंट घंटों से सूख चुका है। अगर मिस्टर सीग्रेव ने हमारे बेडरूम पर नज़र न रखी होती, तो मैं उन्हें यह बात बता देती। मुझे नहीं पता तुम क्या सोचती हो - मुझे ज़िंदगी में पहले कभी इतना अपमानित नहीं होना पड़ा!'"

"पेनेलोप बहुत गुस्सैल लड़की थी। मैंने उसे शांत किया और उसका ध्यान उस बात पर दिलाया जो उसने दरवाजे पर लगे पेंट के घंटों सूखने के बारे में कही थी।"

मैंने पूछा, "तुम्हें यह कैसे पता चला?"

"कल सुबह मैं मिस राहेल और मिस्टर फ्रैंकलिन के साथ थी, दरवाज़ा बनाते समय हम रंग मिला रहे थे। मैंने मिस राहेल को यह पूछते सुना कि क्या दरवाज़ा शाम तक सूख जाएगा, ताकि जन्मदिन मनाने वाले मेहमान उसे देख सकें। मिस्टर फ्रैंकलिन ने सिर हिलाकर कहा कि बारह घंटे से कम समय में यह नहीं सूखेगा। दोपहर के भोजन का समय बहुत पहले ही बीत चुका था—तीन बज गए थे जब उन्होंने काम पूरा किया। रोज़ाना, तुम्हारा गणित क्या कहता है? मेरा गणित कहता है कि दरवाज़ा आज सुबह तीन बजे तक सूख गया था।"

मैंने पूछा, "क्या कल शाम कुछ महिलाएं इसे देखने के लिए ऊपर गई थीं? मुझे लगा कि मैंने मिस राहेल को उन्हें दरवाजे से दूर रहने की चेतावनी देते हुए सुना था।"

"'किसी भी महिला ने दाग नहीं लगाया,' पेनेलोप ने जवाब दिया। 'मैंने कल रात बारह बजे मिस राहेल को बिस्तर पर छोड़ा था। और मैंने दरवाजे पर ध्यान दिया, और तब

उसमें कुछ भी खराबी नहीं थी।'
"'क्या आपको इस बारे में मिस्टर सीग्रेव से बात नहीं करनी चाहिए, पेनेलोप?'"
"'मुझे जो भी पेशकश की जाए, मैं मिस्टर सीग्रेव की मदद करने के लिए एक शब्द भी नहीं कहूंगा!'"
वह अपने काम पर चली गई, और मैं अपने काम पर चला गया।
"महोदय, मेरा काम आपका बिस्तर लगाना और आपके कमरे को साफ-सुथरा रखना था। यह मेरे पूरे दिन का सबसे सुखद पल होता था। मैं उस तकिये को चूमती थी जिस पर आपका सिर रात भर टिका रहता था। उसके बाद चाहे जिसने भी ये किया हो, आपके कपड़े कभी भी इतने अच्छे से तह नहीं किए गए जितने अच्छे से मैंने आपके लिए तह किए थे। आपके ड्रेसिंग बैग में रखी छोटी-छोटी चीज़ों में से एक पर भी एक धब्बा नहीं था। आपने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया, ठीक वैसे ही जैसे आपने मुझ पर ध्यान नहीं दिया। क्षमा करें; मैं कुछ भूल गई हूँ। मैं जल्दी करती हूँ और फिर से बोलना शुरू करती हूँ।"
"अच्छा, मैं उस सुबह आपके कमरे में अपना काम करने गई थी। आपकी नाइटगाउन बिस्तर पर ऐसे ही पड़ी थी जैसे आपने उसे उतार दिया हो। मैंने उसे उठाकर तह करने की कोशिश की तो मुझे मिस राहेल के दरवाजे पर लगे पेंट का दाग दिखाई दिया!"
"मैं इस खोज से इतनी चौंक गई कि मैं अपने हाथ में नाइटगाउन लेकर बाहर भागी, और पीछे की सीढ़ियों की ओर गई, और खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया, ताकि मैं उसे ऐसी जगह देख सकूं जहां कोई दखल न दे सके और मुझे परेशान न कर सके।"
"जैसे ही मेरी सांस वापस आई, मुझे पेनेलोप के साथ हुई बातचीत याद आ गई, और मैंने खुद से कहा, 'यही सबूत है कि वह कल रात बारह बजे से लेकर आज सुबह तीन बजे के बीच मिस राहेल के बैठक कक्ष में था!'"
"मैं आपको सीधे शब्दों में यह नहीं बताऊंगा कि उस खोज के बाद मेरे मन में सबसे पहला संदेह क्या आया। आप केवल क्रोधित होंगे - और यदि आप क्रोधित हुए, तो आप मेरा पत्र फाड़ सकते हैं और इसे आगे नहीं पढ़ेंगे।"
कृपया इतना कहना ही काफी होगा। मैंने पूरी तरह सोच-विचार करने के बाद पाया कि ऐसा होना संभव नहीं था, और इसका कारण मैं आपको आगे बताऊँगी। अगर आप उस रात मिस राहेल के बैठक कक्ष में उनकी जानकारी के साथ मौजूद होते (और अगर आप गीले दरवाजे का ध्यान रखना भूल जाते), तो वह आपको याद दिला देतीं—वह आपको अपने खिलाफ ऐसे गवाह को ले जाने नहीं देतीं, जैसा कि मैं अभी

देख रही थी! साथ ही, मैं यह भी मानती हूँ कि मुझे पूरी तरह यकीन नहीं था कि मेरा शक गलत साबित हुआ है। आपको याद होगा कि मैं मिस राहेल से नफरत करती हूँ। ज़रा सोचिए, अगर आप सोच सकें, कि इस सब में मेरी नफरत का थोड़ा सा अंश था। इसी वजह से मैंने नाइटगाउन को अपने पास रखने और इंतज़ार करने, देखने और यह पता लगाने का फैसला किया कि मैं इसका क्या उपयोग कर सकती हूँ। उस समय, कृपया याद रखिए, मेरे मन में यह ख्याल भी नहीं आया था कि आपने हीरा चुराया है।
वहाँ मैंने दूसरी बार पत्र पढ़ना बंद कर दिया।
मैंने उस दुखी महिला के इकबालिया बयान के उन हिस्सों को पढ़ा जो मुझसे संबंधित थे, और मैंने उन्हें बिना किसी बनावट के हैरानी से पढ़ा, और मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मुझे बहुत दुख हुआ। मुझे सचमुच पछतावा हुआ कि मैंने बिना सोचे-समझे उसकी याद पर कलंक लगा दिया था, उसके पत्र की एक पंक्ति भी देखे बिना। लेकिन जब मैं ऊपर उद्धृत अंश तक पहुँचा, तो मैं स्वीकार करता हूँ कि जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, रोसन्ना स्पीयरमैन के प्रति मेरी घृणा बढ़ती गई। "बाकी खुद पढ़ लो," मैंने मेज के उस पार बैठे बेटरएज को पत्र देते हुए कहा। "अगर इसमें कुछ ऐसा है जिसे मुझे देखना चाहिए, तो आप मुझे आगे बता सकते हैं।"
"मैं आपकी बात समझता हूँ, श्रीमान फ्रैंकलिन," उन्होंने उत्तर दिया। "यह आपमें स्वाभाविक है, महोदय। और, भगवान हम सबकी मदद करे!" उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा, "यह उसमें भी उतना ही स्वाभाविक है।"
मैं अपने पास मौजूद मूल पत्र से पत्र के आगे के भाग की प्रतिलिपि बना रहा हूँ:--
"नाइटगाउन को अपने पास रखने का निश्चय करने के बाद, और यह देखने के लिए कि मेरा प्यार या मेरा बदला (मुझे ठीक से पता नहीं) भविष्य में इसका क्या उपयोग कर सकता है, अगली बात यह पता लगाना था कि इसे पकड़े जाने के जोखिम के बिना कैसे रखा जाए।"
"एक ही तरीका था - शनिवार आने से पहले, ठीक उसी तरह का एक और नाइटगाउन बनाना, क्योंकि शनिवार आने पर कपड़े धोने वाली महिला और उसका सामान घर आ जाता था।"
"मुझे इसे अगले दिन (शुक्रवार) तक टालने में डर लग रहा था; मुझे आशंका थी कि इस बीच कोई दुर्घटना न हो जाए। मैंने उसी दिन (गुरुवार) नई नाइटगाउन बनाने का निश्चय किया, ताकि अगर मैं सही ढंग से काम करूं तो मुझे कुछ समय अपने लिए मिल सके। (तुम्हारी नाइटगाउन को अपनी दराज में बंद करने के बाद) सबसे पहले

मुझे तुम्हारे शयनकक्ष में वापस जाना था - इसलिए नहीं कि सब कुछ ठीक कर दूं (अगर मैंने पेनेलोप से कहा होता तो वह मेरे लिए यह कर देती), बल्कि यह पता लगाने के लिए कि क्या तुमने अपनी नाइटगाउन से पेंट का कोई दाग बिस्तर पर या कमरे के किसी फर्नीचर पर लगा दिया है।"

मैंने हर चीज़ की बारीकी से जाँच की, और अंत में मुझे आपके ड्रेसिंग गाउन के अंदर पेंट की कुछ धारियाँ मिलीं—वह लिनन का ड्रेसिंग गाउन नहीं जो आप आमतौर पर उस गर्मी के मौसम में पहनती थीं, बल्कि एक फलालैन का ड्रेसिंग गाउन जो आपके पास था। मुझे लगता है कि आप केवल नाइटड्रेस में इधर-उधर घूमने के बाद ठंड महसूस कर रही थीं, और आपने जो सबसे गर्म कपड़ा मिला, वही पहन लिया। खैर, ड्रेसिंग गाउन के अंदर दाग थे, जो मुश्किल से दिखाई दे रहे थे। मैंने फलालैन के कपड़े को खुरचकर उन्हें आसानी से साफ कर दिया। यह हो जाने के बाद, आपके खिलाफ एकमात्र सबूत मेरे दराज में बंद सबूत ही बचा था।

"मैंने अभी-अभी आपका कमरा साफ़ किया ही था कि मुझे और बाकी नौकरों को मिस्टर सीग्रेव ने पूछताछ के लिए बुलाया। इसके बाद हमारे सभी बक्सों की जाँच हुई। और फिर उस दिन की सबसे असाधारण घटना घटी - मेरे लिए - क्योंकि मुझे आपकी नाइटगाउन पर पेंट मिला था। यह घटना सुपरिटेंडेंट सीग्रेव द्वारा पेनेलोप बेटरएज से की गई दूसरी पूछताछ के दौरान हुई।"

"पेनेलोप मिस्टर सीग्रेव के बर्ताव से बेहद क्रोधित होकर हमारे पास लौटी। उन्होंने स्पष्ट रूप से संकेत दिया था कि उन्हें शक है कि पेनेलोप ही चोर है। यह सुनकर हम सभी समान रूप से आश्चर्यचकित हुए और हम सभी ने पूछा, ऐसा क्यों?"

“क्योंकि हीरा मिस राहेल के बैठक कक्ष में था,” पेनेलोप ने उत्तर दिया। “और क्योंकि मैं रात में बैठक कक्ष में आखिरी व्यक्ति थी!”

"उसके होंठों से शब्द निकलने से पहले ही मुझे याद आ गया कि पेनेलोप के बाद भी कोई और बैठक में आया था। वह आप थीं। मेरा सिर चकरा गया और मेरे विचार बुरी तरह उलझ गए। इन सबके बीच, मेरे मन में एक आवाज़ आई कि आपकी नाइटगाउन पर लगे धब्बे का मतलब उस मतलब से बिल्कुल अलग हो सकता है जो मैंने अब तक समझा था। 'अगर कमरे में आखिरी बार आने वाला व्यक्ति ही संदिग्ध है,' मैंने मन ही मन सोचा, 'तो चोर पेनेलोप नहीं, बल्कि मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक हैं!'"

"किसी अन्य सज्जन के मामले में, मेरा मानना है कि मुझे उन पर चोरी का संदेह करने में शर्म आती, लगभग जैसे ही यह संदेह मेरे मन में आया होता।"

लेकिन यह सोचकर ही कि आपने खुद को मेरे स्तर तक गिरा दिया है, और यह सोचकर कि आपके नाइटगाउन को अपने पास रखकर मैंने आपको पकड़े जाने और जीवन भर के लिए बदनाम होने से बचाने का साधन भी पा लिया है—सच कहूँ तो, महोदय, इस विचार मात्र से ही मुझे आपकी सद्भावना जीतने का ऐसा अवसर मिला कि मैं आँख बंद करके संदेह से विश्वास तक पहुँच गई। मैंने उसी क्षण यह निर्णय ले लिया कि आपने पुलिस को बुलाने में सबसे अधिक सक्रियता दिखाई है, ताकि हम सभी को धोखा दे सकें; और मिस राहेल का गहना चुराने वाला हाथ किसी भी तरह से आपका ही हो सकता है।

"मुझे लगता है कि मेरी इस नई खोज के उत्साह ने कुछ समय के लिए मेरा दिमाग खराब कर दिया था। मैं आपसे मिलने के लिए, हीरे के बारे में एक-दो शब्द बोलकर आपको आज़माने के लिए, और आपको मेरी ओर देखने और मुझसे उस तरह से बात करने के लिए मजबूर करने के लिए इतनी तीव्र उत्सुक थी कि मैंने अपने बाल संवारे, खुद को जितना हो सके उतना अच्छा बनाया, और साहसपूर्वक उस पुस्तकालय में आपके पास गई जहाँ मुझे पता था कि आप लिख रही हैं।"

"आपने अपनी एक अंगूठी ऊपर कमरे में छोड़ दी थी, जो मेरे लिए अंदर आने का एक अच्छा बहाना बन गया। लेकिन, ओह, महोदय! अगर आपने कभी प्यार किया है, तो आप समझ सकते हैं कि कमरे में कदम रखते ही, जब मैंने खुद को आपकी उपस्थिति में पाया, तो मेरा सारा साहस कैसे ठंडा पड़ गया। और फिर, आपने मुझे इतनी ठंडी निगाहों से देखा, और अपनी अंगूठी ढूंढने के लिए मुझे इतने उदासीन ढंग से धन्यवाद दिया, कि मेरे घुटने कांपने लगे, और मुझे लगा जैसे मैं आपके चरणों में गिर जाऊंगी। धन्यवाद देने के बाद, आपने, अगर आपको याद हो, तो अपनी लिखाई की ओर देखा। इस तरह के व्यवहार से मैं इतनी अपमानित महसूस कर रही थी कि मैंने हिम्मत जुटाकर बोलने का फैसला किया। मैंने कहा, 'हीरे के बारे में यह एक अजीब बात है, महोदय।' और आपने फिर से ऊपर देखा, और कहा, 'हाँ, यह है!'" आपने शालीनता से बात की (मैं इससे इनकार नहीं कर सकता); फिर भी आपने एक दूरी बनाए रखी—हमारे बीच एक क्रूर दूरी। जैसा कि मुझे विश्वास था कि आपने खोया हुआ हीरा अपने पास कहीं छिपा रखा है, आपकी इस उदासीनता ने मुझे इतना उत्तेजित कर दिया कि मैंने उस क्षण के आवेश में आकर आपको एक संकेत दे दिया। मैंने कहा, 'वे हीरा कभी नहीं ढूंढ पाएंगे, महोदय, है ना? नहीं! और न ही उसे चुराने वाले को—मैं इसकी जिम्मेदारी लेता हूँ।' मैंने सिर हिलाया और आपकी ओर मुस्कुराया, मानो कह रहा हो,

'मुझे पता है!' इस बार, आपने मेरी ओर कुछ दिलचस्पी भरी निगाहों से देखा; और मुझे लगा कि आपकी और मेरी ओर से कुछ और शब्द सच्चाई सामने ला सकते हैं। ठीक उसी क्षण, मिस्टर बेटरएज दरवाजे पर आकर सब कुछ बिगाड़ दिया। मैं उनके कदमों की आहट पहचान गया था, और यह भी जानता था कि दिन के उस समय पुस्तकालय में मेरा होना उनके नियमों के विरुद्ध था—खासकर आपके साथ वहाँ होना। उनके अंदर आकर मुझे जाने के लिए कहने से पहले ही मुझे खुद ही वहाँ से निकलने का समय मिल गया। मैं क्रोधित और निराश था; लेकिन फिर भी पूरी तरह से निराश नहीं था। आप जानते हैं, हमारे बीच की दूरी कम हो गई थी—और मैंने सोचा कि अगली बार मैं ध्यान रखूंगा कि मिस्टर बेटरएज बीच में न आएं।

जब मैं नौकरों के हॉल में वापस आई, तो हमारे खाने की घंटी बज रही थी। दोपहर हो चुकी थी! और नई नाइटगाउन बनाने के लिए सामग्री अभी भी नहीं मिली थी! उन्हें पाने का बस एक ही मौका था। मैंने खाने के समय बीमार होने का नाटक किया; और इस तरह तब से लेकर चाय के समय तक का पूरा समय अपने लिए सुरक्षित कर लिया।

"जब घरवाले मुझे अपने कमरे में लेटे हुए समझ रहे थे, तब मैं क्या कर रही थी; और चाय के समय फिर से बीमार होने का बहाना बनाकर और मुझे सोने के लिए ऊपर भेज दिए जाने के बाद मैंने रात कैसे बिताई, यह आपको बताने की ज़रूरत नहीं है। सार्जेंट कफ ने इतना तो पता लगा ही लिया, इससे ज़्यादा कुछ नहीं। और मैं अंदाज़ा लगा सकती हूँ कैसे। फ्रिज़िंगहॉल की कपड़े की दुकान में मेरी पहचान हो गई (हालाँकि मैंने अपना नकाब नीचे रखा हुआ था)। काउंटर पर, जहाँ मैं कपड़ा खरीद रही थी, मेरे सामने एक शीशा रखा था; और उस शीशे में मैंने दुकानदारों में से एक को मेरे कंधे की ओर इशारा करते और दूसरे से फुसफुसाते हुए देखा। फिर रात में, जब मैं चुपके से अपने कमरे में बंद थी, तो मैंने अपने दरवाजे के बाहर उन नौकरानियों की साँसें सुनीं, जिन्हें मुझ पर शक था।"

"तब भी कोई फर्क नहीं पड़ता था; अब भी कोई फर्क नहीं पड़ता। शुक्रवार की सुबह, सार्जेंट कफ के घर में आने से कुछ घंटे पहले, नया नाइटगाउन—जो मैंने आपके लिए मंगवाया था, उसकी जगह आपके नाइटगाउन की कमी पूरी करने के लिए—सिला हुआ, निचोड़ा हुआ, सुखाया हुआ, इस्त्री किया हुआ, निशान लगाया हुआ और बाकी नाइटगाउन की तरह तह किया हुआ, आपके दराज में सुरक्षित रखा था। घर के कपड़ों की जाँच करने पर भी नाइटगाउन की नवीनता के पकड़े जाने का कोई डर नहीं था।

जब आप हमारे घर आए थे—मुझे लगता है कि आप विदेश से घर लौटे थे—तो आपके सारे अंतर्वस्त्र नए थे।"
"अगली घटना सार्जेंट कफ का आगमन था; और अगला बड़ा आश्चर्य दरवाजे पर लगे धब्बे के बारे में उनके विचारों की घोषणा थी।"
"मैंने तुम्हें दोषी माना था (जैसा कि मैंने स्वीकार किया है), और इसका कारण कोई और नहीं बल्कि यही था कि मैं तुम्हें दोषी साबित करना चाहती थी। और अब, सार्जेंट ने मुझसे बिल्कुल अलग तरीके से उसी निष्कर्ष पर पहुँच गया (नाइटगाउन के बारे में) जिस पर मैं पहुँची थी! और मुझे वह पोशाक मिल गई थी जो तुम्हारे विरुद्ध एकमात्र सबूत थी! और किसी को भी यह बात पता नहीं थी—तुम भी नहीं! मुझे तुम्हें यह बताने में डर लगता है कि जब मुझे ये बातें याद आईं तो मुझे कैसा महसूस हुआ—तुम मेरी यादों से हमेशा के लिए नफरत करोगे।"
उस समय बेटरएज ने पत्र से नजरें ऊपर उठाईं।
“अभी तक तो कोई उम्मीद की किरण नहीं दिखी, श्रीमान फ्रैंकलिन,” बूढ़े आदमी ने अपने भारी कछुए के खोल जैसे चश्मे उतारते हुए कहा और रोसन्ना स्पीयरमैन के कबूलनामे को थोड़ा दूर धकेल दिया। “क्या आपने मेरे पढ़ते-पढ़ते अपने मन में कोई निष्कर्ष निकाला है, महोदय?”
"पहले पत्र पूरा करो, बेटरएज; हो सकता है कि उसके अंत में कुछ ऐसा हो जिससे हमें जानकारी मिल सके। उसके बाद मैं तुमसे कुछ कहना चाहूंगा।"
"बहुत अच्छा, महोदय। मैं थोड़ी देर आराम करूँगा, फिर आगे बढ़ूँगा। इस बीच, श्रीमान फ्रैंकलिन—मैं आपको जल्दी नहीं करना चाहता—लेकिन क्या आप मुझे एक शब्द में बता सकते हैं कि क्या आपको इस भयानक संकट से निकलने का कोई रास्ता नज़र आ रहा है?"
मैंने कहा, "मैं लंदन वापस जाने का रास्ता देख रहा हूँ, श्री ब्रूफ से सलाह लेने के लिए। अगर वे मेरी मदद नहीं कर सकते तो----"
"जी श्रीमान?"
और अगर सार्जेंट डॉर्किंग में अपनी सेवानिवृत्ति नहीं छोड़ेंगे तो----
"वह ऐसा नहीं करेगा, श्रीमान फ्रैंकलिन!"
"तो फिर, बेटरएज—जहां तक मैं अभी देख सकता हूँ—मेरे पास अब कोई विकल्प नहीं बचा है। श्री ब्रुफ और सार्जेंट के बाद, मुझे कोई ऐसा जीवित प्राणी नहीं दिखता जो मेरे किसी काम का हो सके।"

जैसे ही ये शब्द मेरे होंठों से निकले, बाहर खड़े किसी व्यक्ति ने कमरे के दरवाजे पर दस्तक दी।
बेटरएज व्यवधान से आश्चर्यचकित होने के साथ-साथ नाराज भी लग रहा था।
"अंदर आओ," उसने चिढ़कर कहा, "जो भी हो!"
दरवाजा खुला और चुपचाप हमारे सामने एक ऐसा असाधारण दिखने वाला व्यक्ति दाखिल हुआ, जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसकी कद-काठी और चाल-ढाल से लग रहा था कि वह अभी जवान है। उसके चेहरे को देखकर और बेटरएज से तुलना करने पर, वह हम दोनों में बड़ा लग रहा था। उसका रंग जिप्सी जैसा गहरा था; उसके मांसहीन गाल गहरे गड्ढों में धंसे हुए थे, जिनके ऊपर हड्डी किसी गुंबद की तरह उभरी हुई थी। उसकी नाक की बनावट और आकार पूर्वी प्राचीन लोगों में अक्सर पाए जाने वाले सुंदर आकार और बनावट जैसा था, जो पश्चिमी नवजातीय लोगों में बहुत कम देखने को मिलता है। उसका माथा भौंहों से ऊंचा और सीधा उठा हुआ था। उसके चेहरे पर अनगिनत निशान और झुर्रियां थीं। इस विचित्र चेहरे से, उससे भी विचित्र, कोमल भूरे रंग की आंखें—स्वप्न में डूबी और उदास, और अपनी पुतलियों में गहराई से धंसी हुई—आपकी ओर देखती थीं, और (कम से कम मेरे मामले में) अपनी इच्छा से आपका ध्यान अपनी ओर खींच लेती थीं। इसके साथ ही, उनके घने, घुंघराले बाल भी थे, जो कुदरत के किसी अजीबोगरीब नियम के चलते, बेहद अनियमित और असंतुलित तरीके से अपना रंग खो चुके थे। सिर के ऊपरी हिस्से पर बाल अभी भी गहरे काले रंग के थे, जो उनका प्राकृतिक रंग था। सिर के किनारों पर—जहां कहीं भी भूरे बालों की हल्की सी झलक नहीं थी, जिससे यह असाधारण विरोधाभास और भी गहरा हो जाता—बाल पूरी तरह सफेद हो चुके थे। दोनों रंगों के बीच की रेखा में कोई नियमितता नहीं थी। कहीं सफेद बाल काले बालों में मिल रहे थे, तो कहीं काले बाल सफेद बालों में। मैंने उस आदमी को जिज्ञासा से देखा, जिसे नियंत्रित करना, मुझे शर्म आती है। उनकी कोमल भूरी आँखें मुझे प्यार से देख रही थीं; और मेरी अनैच्छिक अभद्रता को उन्होंने ऐसे क्षमादान से स्वीकार किया, जिसके मैं हकदार नहीं था, यह बात मैं जानता था।
"माफ़ कीजिएगा," उन्होंने कहा। "मुझे बिल्कुल भी पता नहीं था कि श्री बेटरएज व्यस्त हैं।" उन्होंने अपनी जेब से एक पर्ची निकाली और बेटरएज को दे दी। "अगले सप्ताह की सूची," उन्होंने कहा। उनकी नज़रें एक बार फिर मुझ पर टिकीं और वे उतनी ही खामोशी से कमरे से बाहर निकल गए जितनी खामोशी से वे अंदर आए थे।

मैंने पूछा, "वह कौन है?"
"मिस्टर कैंडी के सहायक," बेटरएज ने कहा। "वैसे, मिस्टर फ्रैंकलिन, आपको यह जानकर दुख होगा कि जन्मदिन के भोज से घर लौटते समय जो बीमारी उन्हें लगी थी, उससे वह छोटे डॉक्टर कभी उबर नहीं पाए। उनकी सेहत तो ठीक है; लेकिन बुखार में उनकी याददाश्त चली गई थी, और तब से वह पूरी तरह से ठीक नहीं हो पाए हैं। सारा काम उनके सहायक पर आ गया है। अब तो काम बहुत कम है, सिवाय गरीबों के बीच। आप जानते हैं, वे खुद की मदद नहीं कर सकते। उन्हें चितकबरे बालों और बंजारे रंग वाले आदमी को बर्दाश्त करना ही पड़ता है—वरना उन्हें इलाज ही नहीं मिलेगा।"
"लगता है तुम उसे पसंद नहीं करते, बेटरएज?"
"उसे कोई पसंद नहीं करता, महोदय।"
वह इतना अलोकप्रिय क्यों है?
"खैर, श्रीमान फ्रैंकलिन, सबसे पहले तो उनकी शक्ल-सूरत ही उनके खिलाफ है। और फिर एक कहानी यह भी है कि श्री कैंडी ने उन्हें एक बेहद संदिग्ध चरित्र वाले व्यक्ति के साथ भर्ती कराया है। कोई नहीं जानता कि वह कौन है—और उस जगह पर उसका कोई दोस्त भी नहीं है। ऐसे में आप किसी से यह उम्मीद कैसे कर सकते हैं कि वह उसे पसंद करेगा?"
"बिल्कुल असंभव! क्या मैं पूछ सकता हूँ कि जब उसने आपको वह कागज़ का टुकड़ा दिया था, तो वह आपसे क्या चाहता था?"
"यहाँ आस-पास के बीमार लोगों की साप्ताहिक सूची लाने के लिए, महोदय, जिन्हें थोड़ी शराब की ज़रूरत है। मेरी मालकिन हमेशा बीमार और ज़रूरतमंद लोगों में अच्छी पोर्ट और शेरी नियमित रूप से बाँटती थीं; और मिस राहेल चाहती हैं कि यह रिवाज़ चलता रहे। समय बदल गया है! समय बदल गया है! मुझे याद है जब श्री कैंडी स्वयं मेरी मालकिन के लिए सूची लाते थे। अब श्री कैंडी का सहायक मेरे लिए सूची लाता है। अगर आप अनुमति दें, तो मैं पत्र पढ़ना जारी रखूँगा, महोदय," बेटरएज ने रोसन्ना स्पीयरमैन के बयान को वापस अपनी ओर खींचते हुए कहा। "मैं मानता हूँ कि यह पढ़ने में दिलचस्प नहीं है। लेकिन, बस! यह मुझे अतीत के बारे में सोचकर उदास होने से बचाता है।" उन्होंने अपना चश्मा लगाया और उदास होकर सिर हिलाया। "श्री फ्रैंकलिन, जब हमारी माताएँ हमें जीवन की यात्रा पर ले जाती हैं, तो उनके प्रति हमारे

व्यवहार में एक समझदारी होती है। हम सभी कमोबेश इस दुनिया में आने के लिए अनिच्छुक होते हैं। और हम सभी सही हैं।"

श्री कैंडी के सहायक ने मुझ पर इतना गहरा प्रभाव डाला था कि उसे तुरंत भुला पाना मेरे लिए संभव नहीं था। मैंने बेटरएज दर्शन के उस अंतिम अकाट्य कथन को नज़रअंदाज़ कर दिया और चितकबरे बालों वाले उस व्यक्ति के विषय पर लौट आया। मैंने पूछा, "उसका नाम क्या है?"

"जितना भद्दा नाम रखना पड़े, उतना ही भद्दा नाम," बेटरएज ने रूखेपन से जवाब दिया। "एज़रा जेनिंग्स।"

अध्याय v

मिस्टर कैंडी के सहायक का नाम बताने के बाद, बेटरएज को लगा कि हमने एक महत्वहीन विषय पर काफी समय बर्बाद कर दिया है। उन्होंने रोसन्ना स्पीयरमैन के पत्र को फिर से पढ़ना शुरू कर दिया।

मैं खिड़की के पास बैठकर उसके बोलने का इंतज़ार करने लगा। धीरे-धीरे एज़रा जेनिंग्स का मुझ पर पड़ा प्रभाव—मेरी जैसी स्थिति में यह बिल्कुल समझ से परे था कि कोई इंसान मुझ पर ऐसा प्रभाव डाल सकता है!—मेरे मन से धुंधला पड़ने लगा। मेरे विचार वापस अपनी पुरानी राह पर चल पड़े। एक बार फिर, मैंने खुद को अपनी अविश्वसनीय स्थिति का दृढ़ता से सामना करने के लिए मजबूर किया। एक बार फिर, मैंने अपने मन में उस योजना की समीक्षा की, जिसे मैंने अंततः संयम जुटाकर भविष्य के लिए बनाया था।

उसी दिन लंदन वापस जाना; श्री ब्रुफ़ के सामने पूरा मामला रखना; और सबसे महत्वपूर्ण बात, (चाहे किसी भी तरीके से या किसी भी त्याग के) राहेल से व्यक्तिगत मुलाकात करना—यही मेरी कार्ययोजना थी, जहाँ तक मैं उस समय इसे बना सकता था। ट्रेन चलने में अभी एक घंटे से अधिक का समय था। और एक हल्की सी संभावना थी कि बेटरएज को रोसन्ना स्पीयरमैन के पत्र के अनपढ़े हिस्से में कुछ ऐसा मिल जाए, जिसे हीरे के खो जाने वाले घर से निकलने से पहले जानना मेरे लिए उपयोगी हो सकता है। मैं अब उसी संभावना का इंतजार कर रहा था।

पत्र का समापन इन शब्दों में हुआ:

"आपको नाराज़ होने की कोई ज़रूरत नहीं है, मिस्टर फ्रैंकलिन, भले ही मुझे यह जानकर थोड़ी सी खुशी हुई हो कि आपके जीवन के सारे भविष्य मेरे हाथों में हैं। चिंताएँ और डर जल्द ही मुझ पर हावी हो गए। हीरे के खोने को लेकर सार्जेंट कफ का

जो नज़रिया था, उससे वह हमारे कपड़ों और चादरों की जाँच ज़रूर करेगा। मेरे कमरे में कोई जगह नहीं थी—घर में कोई जगह नहीं थी—जहाँ मैं निश्चिंत हो सकूँ कि वह उससे सुरक्षित रहेगा। नाइटगाउन को कैसे छिपाऊँ ताकि सार्जेंट भी उसे न ढूँढ़ पाए? और ऐसा कैसे करूँ कि एक पल भी कीमती समय बर्बाद न हो?—इन सवालों के जवाब देना आसान नहीं था। मेरी अनिश्चितताओं ने मुझे एक ऐसा रास्ता अपनाने पर मजबूर किया जिस पर शायद आपको हंसी आ जाए। मैंने कपड़े उतारे और नाइटगाउन पहन लिया। आपने इसे पहना था—और आपके बाद इसे पहनने से मुझे एक और पल का आनंद मिला।"

"नौकरों के हॉल में हमें जो अगली खबर मिली, उससे पता चला कि मैंने नाइटगाउन की जांच समय से पहले ही कर ली थी। सार्जेंट कफ कपड़े धोने की किताब देखना चाहते थे।"

मुझे वह मिल गया और मैं उसे अपनी पत्नी के बैठक कक्ष में ले जाकर उसे दे दिया। सार्जेंट और मैं पहले भी कई बार मिल चुके थे। मुझे पूरा यकीन था कि वह मुझे पहचान लेगा—लेकिन मुझे इस बात का बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि जब उसे पता चलेगा कि मैं उस घर में नौकर के तौर पर काम कर रहा हूँ जहाँ एक कीमती गहना खो गया है, तो वह क्या करेगा। इस असमंजस में, मुझे लगा कि हमारी मुलाकात जल्द से जल्द खत्म हो जाए और मुझे सारी सच्चाई पता चल जाए तो मुझे राहत मिलेगी।

जब मैंने उसे कपड़े धोने की बाल्टी सौंपी, तो उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं कोई अजनबी हूँ; और उसने इसे लाने के लिए धन्यवाद देते हुए बहुत ही विनम्रता दिखाई। मुझे लगा कि ये दोनों ही बुरे संकेत हैं। पता नहीं वो मेरे बारे में पीठ पीछे क्या कहेगा; पता नहीं कब तक मुझे शक के आधार पर हिरासत में लेकर तलाशी न ले ली जाए। तभी रेलवे स्टेशन पर मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट को छोड़ने के बाद आपके लौटने का समय हो गया था; और मैं झाड़ियों में आपकी पसंदीदा सैर पर गया, ताकि आपसे बात करने का एक और मौका मिल सके—जहाँ तक मुझे पता था, शायद यह मेरा आखिरी मौका हो।

"तुम कभी प्रकट नहीं हुए; और इससे भी बुरी बात यह थी कि मिस्टर बेटरएज और सार्जेंट कफ उस जगह से गुजरे जहां मैं छिपा हुआ था - और सार्जेंट ने मुझे देख लिया।"

उसके बाद मेरे पास कोई विकल्प नहीं बचा था सिवाय इसके कि मैं अपने उचित स्थान और उचित काम पर लौट जाऊं, इससे पहले कि मुझ पर और विपत्तियां आ पड़ें। जैसे

ही मैं रास्ते को पार करने वाला था, आप रेलवे स्टेशन से वापस आ गए। आप सीधे झाड़ियों की ओर जा रहे थे, तभी आपने मुझे देखा—मुझे यकीन है, महोदय, आपने मुझे देखा—और आप ऐसे मुँह फेर लिया जैसे मुझे कोई बीमारी हो गई हो, और घर के अंदर चले गए।

* टिप्पणी: फ्रैंकलिन ब्लेक द्वारा।--लेखक पूरी तरह से गलत है, बेचारा। मैंने उसे देखा तक नहीं। मेरा इरादा झाड़ियों में घूमने का था। लेकिन, उसी क्षण मुझे याद आया कि रेलवे से लौटने के बाद मेरी चाची मुझसे मिलना चाहेंगी, इसलिए मैंने अपना इरादा बदल दिया और घर के अंदर चला गया।

मैं किसी तरह नौकरों के प्रवेश द्वार से वापस अंदर आ गई। उस समय कपड़े धोने के कमरे में कोई नहीं था; और मैं वहाँ अकेली बैठ गई। मैंने आपको पहले ही उन विचारों के बारे में बताया है जो उस कांपती रेत ने मेरे मन में डाले थे। वे विचार अब फिर से मेरे मन में आ गए। मैं सोच रही थी कि अगर चीजें इसी तरह चलती रहीं तो क्या करना ज़्यादा मुश्किल होगा—मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक की मेरे प्रति उदासीनता को सहन करना, या दलदल में कूदकर हमेशा के लिए अपनी जान दे देना?

"इस समय मुझसे मेरे अपने आचरण के लिए जवाबदेही मांगना व्यर्थ है। मैं कोशिश करता हूं - और मैं खुद भी इसे समझ नहीं पाता।"

"जब तुमने मुझसे इतनी बेरहमी से दूरी बनाई, तो मैंने तुम्हें क्यों नहीं रोका? मैंने क्यों नहीं कहा, 'श्रीमान फ्रैंकलिन, मुझे आपसे कुछ कहना है; यह आपसे संबंधित है, और आपको इसे सुनना ही होगा?' तुम मेरी दया पर थे—जैसा कि कहते हैं, मैं तुम्हारे ऊपर हावी था। और इससे भी बेहतर, मेरे पास (अगर मैं तुम्हें मुझ पर भरोसा दिला पाता) भविष्य में तुम्हारे काम आने का साधन था। बेशक, मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम—एक सज्जन—हीरा सिर्फ़ चोरी करने के आनंद के लिए चुराओगे। नहीं। पेनेलोप ने मिस राहेल को सुना था, और मैंने श्री बेटरएज को तुम्हारी फिजूलखर्ची और तुम्हारे कर्ज़ के बारे में बात करते सुना था। मुझे यह साफ़ समझ आ गया था कि तुमने हीरा बेचने या गिरवी रखने के लिए लिया था, ताकि तुम्हें जिस पैसे की ज़रूरत थी, वह मिल सके। अच्छा! मैं तुम्हें लंदन के एक ऐसे आदमी के बारे में बता सकता था जो उस हीरे पर अच्छी-खासी रकम उधार देता, और उसके बारे में कोई अटपटे सवाल भी नहीं पूछता।"

मैंने तुमसे बात क्यों नहीं की! मैंने तुमसे बात क्यों नहीं की!

"मुझे आश्चर्य होता है कि क्या नाइटगाउन को संभाल कर रखने के जोखिम और कठिनाइयाँ मेरे बस की बात थीं, बिना किसी और जोखिम और कठिनाई के? कुछ महिलाओं के साथ ऐसा हो सकता था - लेकिन मेरे साथ कैसे हो सकता है? जब मैं चोर थी, तब मैंने इससे पचास गुना ज़्यादा जोखिम उठाए थे और ऐसी मुश्किलों से बाहर निकली थी जिनके सामने यह मुश्किल तो बच्चों का खेल थी। आप कह सकते हैं कि मैं धोखाधड़ी और छल की प्रशिक्षु थी - उनमें से कुछ तो इतने बड़े पैमाने पर और इतनी चालाकी से की गई थीं कि वे मशहूर हो गईं और अखबारों में छपीं। क्या नाइटगाउन को संभाल कर रखने जैसी छोटी सी बात मेरे मनोबल पर बोझ डाल सकती थी और मेरे दिल को अंदर से तोड़ सकती थी, उस समय जब मुझे आपसे बात करनी चाहिए थी? यह सवाल पूछना कितना बेतुका है! ऐसा हो ही नहीं सकता।"

"अपनी मूर्खता पर इस तरह ध्यान देने का क्या फायदा? सीधी-सादी सच्चाई तो स्पष्ट है, है ना? आपकी पीठ पीछे, मैंने आपको पूरे दिल और आत्मा से प्यार किया। आपके सामने—इसमें कोई शक नहीं—मैं आपसे डरती थी; आपको नाराज़ करने से डरती थी; इस बात से डरती थी कि आप मुझसे क्या कहेंगी (भले ही आपने हीरा ले लिया था) अगर मैंने आपको यह बताने की हिम्मत की कि मुझे पता चल गया है। जब मैंने पुस्तकालय में आपसे बात की थी, तब मैं इसके जितना करीब जा सकती थी, उतना गई थी। तब आपने मुझसे मुंह नहीं मोड़ा था। आप मुझसे ऐसे दूर नहीं भागी थीं जैसे मुझे कोई बीमारी हो गई हो। मैंने खुद को आप पर गुस्सा दिलाने की कोशिश की, और इस तरह अपना साहस जुटाने की कोशिश की। नहीं! मुझे उस गुस्से और अपमान के अलावा कुछ भी महसूस नहीं हुआ। आप एक साधारण लड़की हैं; आपका कंधा टेढ़ा है; आप सिर्फ एक नौकरानी हैं—आप मुझसे बात करने की कोशिश क्यों कर रही हैं?" आपने इस बारे में एक शब्द भी नहीं कहा, मिस्टर फ्रैंकलिन; लेकिन फिर भी तुमने मुझसे सब कुछ कह दिया! क्या इस तरह के पागलपन का कोई हिसाब देना चाहिए? नहीं। इसके अलावा और कुछ नहीं किया जा सकता सिवाय इसे स्वीकार करने और इसे भूल जाने के।

"एक बार फिर, मेरी कलम के इस भटकने के लिए मैं आपसे क्षमा मांगता हूँ। ऐसा दोबारा होने का कोई डर नहीं है। मैं अब अंत के करीब हूँ।"

"सबसे पहले जिस व्यक्ति ने खाली कमरे में आकर मुझे परेशान किया, वह पेनेलोप थी। उसे मेरा रहस्य बहुत पहले ही पता चल गया था, और उसने मुझे होश में लाने की पूरी कोशिश की थी - और उसने यह बड़े ही दयालुता से किया था।"

"'आह!' उसने कहा, 'मैं समझ गई हूँ कि तुम यहाँ अकेले बैठकर क्यों परेशान हो रही हो। रोसन्ना, तुम्हारे भले के लिए यही सबसे अच्छा होगा कि मिस्टर फ्रैंकलिन का यहाँ आना समाप्त हो जाए। मुझे पूरा विश्वास है कि अब उन्हें घर छोड़ने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।'"
"तुम्हारे बारे में सोचते हुए मैंने कभी तुम्हारे चले जाने के बारे में नहीं सोचा था। मैं पेनेलोप से बात नहीं कर सका। मैं बस उसे देखता रहा।"
"'मैं अभी-अभी मिस राहेल से आई हूँ,' पेनेलोप ने आगे कहा। 'और उनके गुस्से को सहना मेरे लिए बहुत मुश्किल रहा। उनका कहना है कि पुलिस के घर में रहना उनके लिए असहनीय है; और उन्होंने आज शाम मेरी मालकिन से बात करने और कल अपनी चाची एबलव्हाइट के पास जाने का पक्का इरादा कर लिया है। अगर उन्होंने ऐसा किया, तो मिस्टर फ्रैंकलिन भी जाने का कोई न कोई बहाना ढूंढ लेंगे, आप इस बात पर यकीन मानिए!'"
"तभी मुझे होश आया। मैंने पूछा, 'क्या आपका मतलब यह है कि मिस्टर फ्रैंकलिन उनके साथ जाएंगे?'"
"अगर वो उसे इजाज़त दे देती, तो वो खुशी-खुशी मान जाता; लेकिन वो नहीं मानेगी। उसे उसके गुस्से का एहसास हो चुका है; वो भी उसकी नज़रों में गिर गया है—और बेचारा, उसकी मदद करने के लिए उसने जो कुछ भी किया, उसके बाद भी! नहीं! नहीं! अगर कल से पहले सुलह नहीं हुई, तो मिस राहेल एक तरफ चली जाएंगी और मिस्टर फ्रैंकलिन दूसरी तरफ। वो कहाँ जाएंगे, मैं नहीं कह सकती। लेकिन मिस राहेल के जाने के बाद वो यहाँ कभी नहीं रुकेंगे, रोज़ाना।"
"तुम्हारे जाने की आशंका से उपजे मेरे मन में जो निराशा थी, उस पर मैंने किसी तरह काबू पा लिया। सच कहूँ तो, अगर मिस राहेल और तुम्हारे बीच वाकई कोई गंभीर मतभेद था, तो मुझे अपने लिए थोड़ी सी उम्मीद की किरण दिखाई दी। मैंने पूछा, 'क्या तुम्हें पता है कि उनके बीच झगड़ा किस बात का है?'"
"'यह सब मिस राहेल की तरफ से है,' पेनेलोप ने कहा। 'और जहाँ तक मुझे पता है, यह सब मिस राहेल का स्वभाव है, और कुछ नहीं। मैं तुम्हें परेशान नहीं करना चाहती, रोसन्ना; लेकिन यह मत सोचो कि मिस्टर फ्रैंकलिन कभी उससे झगड़ा करेंगे। वह उससे बहुत प्यार करते हैं, इसलिए ऐसा हो ही नहीं सकता!'"
"उसने अभी-अभी वे क्रूर शब्द कहे ही थे कि हमें मिस्टर बेटरएज की ओर से बुलावा आया। सभी नौकरों को हॉल में इकट्ठा होना था। और फिर हमें एक-एक करके अंदर

जाना था और सार्जेंट कफ द्वारा मिस्टर बेटरएज के कमरे में हमसे पूछताछ की जानी थी।"

"मालकिन की नौकरानी और ऊपरी नौकरानी से पहले पूछताछ हो जाने के बाद, मेरी बारी अंदर जाने की आई। सार्जेंट कफ की पूछताछ—हालांकि उन्होंने इसे बड़ी चालाकी से अंजाम दिया—से मुझे जल्द ही पता चल गया कि उन दोनों महिलाओं (घर में मेरी सबसे कट्टर दुश्मन) ने मंगलवार दोपहर और फिर गुरुवार रात को मेरे दरवाजे के बाहर ही कुछ खोज निकाला था। उन्होंने सार्जेंट को इतना बता दिया था कि उनकी आंखें सच्चाई के कुछ हिस्से पर खुल गईं। उन्होंने सही माना कि मैंने चुपके से एक नया नाइटगाउन बनाया था, लेकिन उन्होंने गलत तरीके से पेंट से सना हुआ नाइटगाउन मेरा मान लिया। उनकी कही एक और बात से मुझे तसल्ली मिली, जिसे समझना मेरे लिए मुश्किल था। बेशक, उन्हें मुझ पर हीरे के गायब होने में शामिल होने का शक था। लेकिन साथ ही, उन्होंने मुझे यह भी दिखाया—जैसा कि मुझे लगा, जानबूझकर—कि वे मुझे हीरे के खोने के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार नहीं मानते थे। ऐसा लगता था कि वे सोचते थे कि मैं किसी और के इशारे पर काम कर रही थी। वह व्यक्ति कौन हो सकता है? मैं तब भी इसका अनुमान नहीं लगा सका था और अब भी नहीं लगा सकता।

इस अनिश्चितता में एक बात स्पष्ट थी—कि सार्जेंट कफ सच्चाई से कोसों दूर थे। जब तक नाइटगाउन सुरक्षित था, आप भी सुरक्षित थे—और एक पल भी अधिक नहीं।

"मैं आपको उस पीड़ा और भय को पूरी तरह से समझा नहीं सकती जो मुझ पर इस समय हावी था। आपके नाइटगाउन को पहनना मेरे लिए असंभव था। मुझे किसी भी क्षण फ्रिज़िंगहॉल स्थित पुलिस कोर्ट ले जाया जा सकता था, जहाँ मुझ पर संदेह के आधार पर आरोप लगाया जा सकता था और तलाशी ली जा सकती थी। जब तक सार्जेंट कफ ने मुझे आज़ाद छोड़ रखा था, मुझे तुरंत दो विकल्पों में से एक चुनना था - या तो नाइटगाउन को नष्ट कर दूं, या उसे घर से कुछ सुरक्षित दूरी पर किसी सुरक्षित स्थान पर छिपा दूं।"

"अगर मैं तुमसे थोड़ा कम प्यार करती, तो शायद मैं इसे नष्ट कर देती। लेकिन ओह! मैं उस इकलौती चीज़ को कैसे नष्ट कर सकती थी जो इस बात का सबूत थी कि मैंने तुम्हें भेद खुलने से बचाया था? अगर हम किसी नतीजे पर पहुँच भी जाते, और अगर तुम्हें मुझ पर किसी बुरे इरादे का शक होता, और तुम सब कुछ नकार देते, तो मैं तुम्हें कैसे यकीन दिला सकती थी, जब तक कि मैं वह नाइटगाउन न दिखा दूँ? क्या यह तुम्हारे

साथ अन्याय था कि मैं यह मानती थी, जैसा कि मैं मानती हूँ और अब भी मानती हूँ, कि तुम मुझ जैसी एक गरीब लड़की को अपने राज़ का हिस्सा बनने देने में हिचकिचाओगे, और उस चोरी में अपनी सहभागी बनने दोगे जो तुम्हारी पैसों की तंगी ने तुम्हें करने के लिए उकसाया था? ज़रा मेरे प्रति तुम्हारे इस ठंडे व्यवहार के बारे में सोचो, महोदय, और तुम्हें शायद ही आश्चर्य होगा कि मैं तुम्हारे भरोसे और कृतज्ञता के उस इकलौते दावे को नष्ट करने को तैयार नहीं हूँ जो मुझे सौभाग्य से प्राप्त हुआ था।"

"मैंने इसे छिपाने का निश्चय किया; और मैंने जिस जगह को चुना वह वही जगह थी जिसे मैं सबसे अच्छी तरह जानता था - कांपती हुई रेत।"

पूछताछ खत्म होते ही, मैंने जो पहला बहाना सूझा, वही बनाया और ताजी हवा लेने के लिए बाहर जाने की इजाज़त ले ली। मैं सीधे कॉब्स होल में मिस्टर योलैंड की कुटिया में चली गई। उनकी पत्नी और बेटी मेरी सबसे अच्छी दोस्त थीं। ये मत सोचिए कि मैंने उन्हें आपका राज़ बताया होगा—मैंने किसी पर भरोसा नहीं किया। मैं बस आपको ये चिट्ठी लिखना चाहती थी और रात का गाउन उतारने का सुरक्षित मौका चाहती थी। मुझ पर शक था, इसलिए घर में मैं ये दोनों काम किसी भी तरह की सुरक्षा के साथ नहीं कर सकती थी।

"और अब मैं अपना लंबा पत्र लगभग पूरा कर चुकी हूँ, इसे लूसी योलैंड के शयनकक्ष में अकेले लिख रही हूँ। जब यह पूरा हो जाएगा, तो मैं नाइटगाउन को लपेटकर, अपने लबादे के नीचे छिपाकर नीचे जाऊँगी। श्रीमती योलैंड के रसोईघर में पुरानी चीज़ों के ढेर में, मैं इसे सुरक्षित और सूखा रखने का उपाय ढूँढ़ लूँगी। और फिर मैं काँपती रेत पर जाऊँगी - मेरे पैरों के निशान से डरना मत! - और नाइटगाउन को रेत में छिपा दूँगी, जहाँ कोई भी जीवित प्राणी इसे तब तक नहीं ढूँढ़ सकता जब तक कि मैं उसे पहले इस रहस्य के बारे में न बता दूँ।"

और, जब वह काम हो जाए, तो फिर क्या?

"तो, श्रीमान फ्रैंकलिन, मेरे पास आपसे वे शब्द कहने का एक और प्रयास करने के दो कारण होंगे जो मैंने अभी तक नहीं कहे हैं। यदि आप घर छोड़ देते हैं, जैसा कि पेनेलोप मानती है कि आप छोड़ देंगे, और यदि मैंने उससे पहले आपसे बात नहीं की है, तो मैं अपना यह अवसर हमेशा के लिए खो दूंगी। यह एक कारण है। फिर, यह जानकर मुझे तसल्ली मिलती है - यदि मेरे बोलने से आप नाराज़ हो जाते हैं - कि मेरे पास नाइटगाउन तैयार है जो मेरे पक्ष में इस तरह से पैरवी करेगा जैसे और कोई नहीं कर सकता। यह मेरा दूसरा कारण है। यदि ये दोनों मिलकर भी मेरे हृदय को उस

शीतलता के विरुद्ध कठोर नहीं बना पाते जिसने इसे अब तक जमा रखा है (मेरा तात्पर्य आपके मेरे प्रति ठंडे व्यवहार से है), तो मेरे प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे - और मेरा जीवन भी समाप्त हो जाएगा।"

"हाँ। अगर मैं अगला मौका भी चूक जाऊँ—अगर आप पहले की तरह ही निर्दयी हों, और अगर मुझे फिर से वही दर्द महसूस हो जो पहले हो चुका है—तो उस दुनिया को अलविदा जिसने मुझे उस खुशी से वंचित रखा है जो वह दूसरों को देती है। उस जीवन को अलविदा, जिसे आपके थोड़े से स्नेह के बिना फिर से आनंदमय नहीं बनाया जा सकता। अगर ऐसा होता है तो खुद को दोष मत देना, महोदय। लेकिन कोशिश कीजिए—ज़रूर कोशिश कीजिए—मेरे लिए थोड़ी सी क्षमाशील उदासी महसूस कीजिए! मैं ध्यान रखूँगी कि जब मैं आपको अपने किए के बारे में खुद नहीं बता पाऊँगी, तब आपको पता चल जाएगा कि मैंने आपके लिए क्या किया है। क्या आप तब मेरे बारे में कुछ अच्छा कहेंगे—उसी कोमल अंदाज़ में जैसे आप मिस राहेल से बात करते हैं? अगर आप ऐसा करते हैं, और अगर भूत जैसी कोई चीज़ होती है, तो मुझे विश्वास है कि मेरा भूत उसे सुनेगा और खुशी से काँप उठेगा।"

"अब मुझे रुक जाना चाहिए। मैं खुद को रुला रही हूँ। अगर मैं इन बेकार आँसुओं को बहने दूँ और खुद को अंधा कर दूँ, तो मैं छिपने की जगह तक अपना रास्ता कैसे देख पाऊँगी?"

"इसके अलावा, मैं निराशावादी पक्ष क्यों देखूँ? जब तक संभव है, क्यों न यह विश्वास कर लूँ कि अंत में सब ठीक हो जाएगा? हो सकता है आज रात तुम अच्छे मूड में मिलो—या अगर नहीं, तो कल सुबह शायद बेहतर हो। चिंता करने से मेरा चेहरा भला तो नहीं होगा—है ना? कौन जानता है कि मैंने कागज़ के ये लंबे-लंबे पन्ने व्यर्थ ही भर दिए हों? सुरक्षा के लिए (अब और किसी कारण की परवाह न करें) इन्हें नाइटगाउन के साथ छुपा दिया जाएगा। मेरा पत्र लिखना बहुत कठिन काम था। ओह! अगर हम एक-दूसरे को समझ लें, तो इसे फाड़ने में मुझे कितना आनंद आएगा!"

"मैं आपका सच्चा प्रेमी और विनम्र सेवक बने रहने की विनती करता हूँ, महोदय।"

"रोसन्ना स्पीयरमैन।"

बेटरएज ने चुपचाप पत्र पढ़ा। उसे सावधानीपूर्वक लिफाफे में वापस रखने के बाद, वह सिर झुकाए, जमीन पर निगाहें गड़ाए, सोच में डूबा बैठ गया।

मैंने कहा, "बेटरएज, क्या पत्र के अंत में मुझे मार्गदर्शन देने वाला कोई संकेत है?"

उसने गहरी आह भरते हुए धीरे से ऊपर देखा।

“आपको मार्गदर्शन देने के लिए कुछ भी नहीं है, श्रीमान फ्रैंकलिन,” उन्होंने उत्तर दिया। “यदि आप मेरी सलाह मानें तो इस पत्र को तब तक लिफाफे में ही रखें जब तक आपकी ये वर्तमान चिंताएँ समाप्त न हो जाएँ। जब भी आप इसे पढ़ेंगे, यह आपको बहुत परेशान करेगा। इसे अभी मत पढ़िए।”
मैंने पत्र को अपने पर्स में रख लिया।
बेटरएज की कथा के सोलहवें और सत्रहवें अध्यायों पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि मेरे इस तरह खुद को बचाने का एक कारण था, उस समय जब मेरी सहनशीलता की पहले ही कड़ी परीक्षा हो चुकी थी। उस अभागी महिला ने दो बार मुझसे बात करने की आखिरी कोशिश की थी। और दोनों बार, यह मेरा दुर्भाग्य था (ईश्वर जाने कितनी मासूमियत से!) कि मैं उसके द्वारा किए गए प्रस्तावों को ठुकरा सका। शुक्रवार की रात, जैसा कि बेटरएज ने सही वर्णन किया है, उसने मुझे बिलियर्ड टेबल पर अकेला पाया था। उसके हाव-भाव और भाषा से मुझे और उस स्थिति में किसी भी पुरुष को यही लगता कि वह हीरे के गायब होने के बारे में अपनी गलती कबूल करने वाली है। उसकी खातिर, मैंने जानबूझकर आने वाली बातों में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई; उसकी खातिर, मैंने जानबूझकर बिलियर्ड की गेंदों को देखा, बजाय उसे देखने के - और परिणाम क्या हुआ? मैंने उसे दिल से आहत होकर खुद से दूर भेज दिया! शनिवार को फिर से—जिस दिन पेनेलोप की बातों के बाद उसे यह आभास हो गया होगा कि मेरा जाना निकट है—वही दुर्भाग्य हमारा पीछा करता रहा। उसने एक बार फिर झाड़ियों वाले रास्ते पर मुझसे मिलने की कोशिश की, और उसने मुझे वहाँ बेटरएज और सार्जेंट कफ के साथ पाया। उसके सामने ही, सार्जेंट ने अपने गुप्त इरादे से, रोसन्ना स्पीयरमैन में मेरी दिलचस्पी का फायदा उठाने की कोशिश की। उस बेचारी के भले के लिए, मैंने पुलिस अधिकारी को साफ इनकार कर दिया, और ज़ोर से कहा—ताकि वह भी सुन सके—कि मुझे रोसन्ना स्पीयरमैन में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं है। मेरे उन शब्दों पर, जो केवल उसे मेरी निजी बातें जानने की कोशिश न करने की चेतावनी देने के लिए थे, वह मुँह फेरकर वहाँ से चली गई: जैसा कि मैंने तब माना था, उसे अपने खतरे का आगाह हो गया था; जैसा कि मैं अब जानता हूँ, वह खुद ही विनाश की ओर बढ़ रही थी। उस बिंदु से, मैंने उन घटनाओं के क्रम का वर्णन किया है जो मुझे दलदल में उस चौंकाने वाली खोज तक ले गईं। अब अतीत का विश्लेषण पूरा हो चुका है। मैं रोज़ाना स्पीयरमैन की दुखद कहानी को यहीं छोड़ सकता हूँ—जिसका ज़िक्र, इतने समय बाद भी, पीड़ा के मारे नहीं कर पाता—ताकि

यहाँ जानबूझकर अनकही छोड़ी गई सारी बातें अपने आप स्पष्ट हो जाएँ। मैं शिवरिंग सैंड में हुई आत्महत्या से, जिसका मेरे वर्तमान हालात और भविष्य की संभावनाओं पर विचित्र और भयावह प्रभाव पड़ा है, इस वृत्तांत के जीवित पात्रों से संबंधित विषयों और उन घटनाओं की ओर बढ़ सकता हूँ जो अंधकार से प्रकाश की ओर मेरी धीमी और कठिन यात्रा का मार्ग प्रशस्त कर रही थीं।

अध्याय VI

मैं रेलवे स्टेशन तक पैदल गई, और ज़ाहिर है, मेरे साथ गैब्रियल बेटरएज भी थे। मेरी जेब में चिट्ठी थी और नाइटगाउन एक छोटे से बैग में सुरक्षित रखा हुआ था—दोनों को उस रात सोने से पहले श्री ब्रूफ की जांच के लिए सौंपना था।

हम चुपचाप घर से निकल गए। मेरे अनुभव में पहली बार, मैंने बूढ़े बेटरएज को अपने साथ पाया, लेकिन उन्होंने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा। मुझे भी कुछ कहना था, इसलिए लॉज के द्वार से बाहर निकलते ही मैंने बातचीत शुरू कर दी।

मैंने बात शुरू करते हुए कहा, "लंदन जाने से पहले, मुझे आपसे दो सवाल पूछने हैं। ये मुझसे संबंधित हैं, और मुझे विश्वास है कि ये आपको काफी आश्चर्यचकित करेंगे।"

"अगर वे उस बेचारे का पत्र मेरे दिमाग से निकाल दें, श्रीमान फ्रैंकलिन, तो वे मेरे साथ जो चाहें कर सकते हैं। कृपया जितनी जल्दी हो सके मुझे आश्चर्यचकित करना शुरू करें, महोदय।"

"मेरा पहला सवाल, बेटरएज, यह है। क्या मैं राहेल के जन्मदिन की रात नशे में था?"

"तुम शराबी हो!" बूढ़े आदमी ने हैरानी से कहा। "श्रीमान फ्रैंकलिन, यही तो आपके चरित्र की सबसे बड़ी खामी है कि आप केवल भोजन के साथ ही पीते हैं, और उसके बाद शराब की एक बूंद भी हाथ नहीं लगाते!"

"लेकिन जन्मदिन एक खास अवसर था। उस रात, बाकी सभी रातों की तुलना में, मैं अपनी सामान्य आदतों को शायद छोड़ देता।"

बेटरएज ने एक पल के लिए विचार किया।

“आप अपनी आदतों से भटक गए थे, महोदय,” उन्होंने कहा। “और मैं आपको बताता हूँ कैसे। आप बेहद बीमार लग रहे थे—और हमने आपको थोड़ा सा ब्रांडी और पानी पीने के लिए राजी किया ताकि आपका मूड थोड़ा ठीक हो जाए।”

मुझे ब्रांडी और पानी पीने की आदत नहीं है। यह बिल्कुल संभव है----"

"ज़रा रुकिए, श्रीमान फ्रैंकलिन। मुझे पता था कि आपको इसकी आदत नहीं है। मैंने आपको आधा गिलास भरकर पचास साल पुरानी कॉन्यैक पिलाई; और (मेरे लिए और

भी शर्म की बात!) मैंने उस उत्तम पेय को लगभग एक गिलास भर ठंडे पानी में डुबो दिया। एक बच्चा भी इससे नशे में नहीं हो सकता था - एक वयस्क की तो बात ही छोड़िए!"
मुझे पता था कि इस तरह के मामले में मैं उसकी याददाश्त पर भरोसा कर सकता हूँ। यह बिल्कुल असंभव था कि मैं नशे में था। मैं दूसरे प्रश्न की ओर बढ़ गया।
"विदेश भेजे जाने से पहले, बेटरएज, आपने मुझे बचपन में काफी देखा था? अब मुझे साफ-साफ बताइए, क्या आपको रात को सोने के बाद मेरे बारे में कुछ अजीब याद है? क्या आपने कभी मुझे नींद में चलते हुए देखा है?"
बेटरएज रुका, एक पल के लिए मेरी तरफ देखा, अपना सिर हिलाया और फिर आगे बढ़ गया।
"अब मैं आपकी बात समझ गया, श्रीमान फ्रैंकलिन!" उन्होंने कहा, "आप यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि आपके नाइटगाउन पर पेंट कैसे लगा, जबकि आपको खुद भी नहीं पता। यह ठीक नहीं है, महोदय। आप अभी भी सच्चाई से बहुत दूर हैं। नींद में चलना? आपने तो जीवन में कभी ऐसा नहीं किया!"
यहाँ भी मुझे लगा कि बेटरएज सही ही होंगे। न घर पर, न विदेश में, मेरा जीवन कभी एकाकी नहीं रहा। अगर मैं नींद में चलने वाला होता, तो सैकड़ों-सैकड़ों लोग मुझे देख लेते और मेरी सुरक्षा के लिए मुझे इस आदत के बारे में चेतावनी देते और इसे रोकने के लिए एहतियात बरतते।
फिर भी, इन सब बातों को स्वीकार करते हुए भी, मैं उस समय की असहनीय स्थिति के लिए जो दो ही स्पष्टीकरण मुझे समझ आ रहे थे, उनमें से किसी एक पर अड़ा रहा—और यह हठधर्मिता उस स्थिति में स्वाभाविक और क्षम्य थी। यह देखकर कि मैं अभी भी संतुष्ट नहीं था, बेटरएज ने चतुराई से मूनस्टोन के इतिहास की कुछ बाद की घटनाओं का उल्लेख किया; और मेरे दोनों सिद्धांतों को एक ही बार में हमेशा के लिए खारिज कर दिया।
"चलिए, इसे दूसरे तरीके से देखते हैं, महोदय," उन्होंने कहा। "आप अपनी राय अपने पास रखिए और देखिए कि यह आपको सच्चाई तक पहुँचने में कितनी दूर तक ले जाती है। अगर हम नाइटगाउन पर विश्वास करें - जिस पर मैं बिल्कुल भी विश्वास नहीं करता - तो आपने न केवल अनजाने में दरवाजे से पेंट मिटाया, बल्कि अनजाने में हीरा भी ले लिया। क्या अब तक यह सही है?"
"बिल्कुल सही। आगे बढ़ो।"

बहुत खूब, महोदय। हम मान लेते हैं कि जब आपने हीरा लिया था, तब आप नशे में थे या नींद में चल रहे थे। इससे जन्मदिन के बाद की रात और सुबह की बात तो समझ में आ जाती है। लेकिन उसके बाद जो कुछ हुआ, उसका क्या? हीरा तब से लंदन ले जाया जा चुका है। हीरा तब से श्री लूकर के पास गिरवी रखा हुआ है। क्या आपने ये दोनों काम अनजाने में ही किए? क्या आप उस शनिवार शाम को जब मैंने आपको घोड़े की गाड़ी में विदा किया था, तब नशे में थे? और क्या ट्रेन से यात्रा समाप्त होने के बाद आप नींद में ही श्री लूकर के घर चले गए थे? क्षमा करें श्रीमान फ्रैंकलिन, लेकिन इस मामले ने आपको इतना परेशान कर दिया है कि आप अभी खुद फैसला करने की स्थिति में नहीं हैं। जितनी जल्दी आप श्री ब्रूफ के साथ बैठकर इस मामले को सुलझा लेंगे, उतनी ही जल्दी आप इस उलझन से बाहर निकल पाएंगे।

हम स्टेशन पर केवल एक या दो मिनट शेष रहते पहुंचे।

मैंने जल्दी से बेटरएज को लंदन का अपना पता दे दिया, ताकि ज़रूरत पड़ने पर वह मुझे पत्र लिख सकें; और मैंने उन्हें वादा किया कि मेरे पास जो भी खबर होगी, मैं उन्हें बता दूंगा। यह सब करने के बाद, जब मैं उन्हें विदाई दे रहा था, तभी मेरी नज़र किताबों और अखबारों के स्टॉल पर पड़ी। वहाँ श्री कैंडी के असाधारण दिखने वाले सहायक फिर से स्टॉल के मालिक से बात कर रहे थे! हमारी नज़रें एक ही पल में मिलीं। एज़रा जेनिंग्स ने मुझे सलाम किया। मैंने भी सलाम किया और ट्रेन के चलते ही एक डिब्बे में बैठ गया। मुझे शायद यह जानकर राहत मिली कि मैं उन विषयों पर ध्यान नहीं दे पा रहा हूँ जो व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए किसी भी तरह से महत्वपूर्ण नहीं हैं। खैर, मैंने श्री ब्रूफ के पास वापस जाने की अपनी महत्वपूर्ण यात्रा शुरू की, और यह सोचकर हैरान था - हालांकि यह थोड़ा अजीब था, मैं मानता हूँ - कि मैंने चितकबरे बालों वाले उस आदमी को एक ही दिन में दो बार देख लिया!

जिस समय मैं लंदन पहुँचा, उस समय श्री ब्रूफ के अपने कार्यालय में मिलने की कोई उम्मीद नहीं थी। मैं रेलवे स्टेशन से सीधे हैम्पस्टेड स्थित उनके निजी आवास पर गया और भोजन कक्ष में अकेले सो रहे उस बुजुर्ग वकील को परेशान किया, जिनकी गोद में उनका पसंदीदा पग्ग कुत्ता था और बगल में शराब की बोतल रखी थी।

मेरी कहानी का श्री ब्रुफ़ के मन पर जो प्रभाव पड़ा, उसे सबसे अच्छे ढंग से बताने के लिए, कहानी पूरी सुनने के बाद उनकी प्रतिक्रिया का वर्णन करना उचित होगा। उन्होंने अपने अध्ययन कक्ष में रोशनी और कड़क चाय मंगवाई; और अपने परिवार की महिलाओं को संदेश भेजा कि वे किसी भी बहाने से हमें परेशान न करें। ये

प्रारंभिक कार्य निपटाने के बाद, उन्होंने पहले नाइटगाउन की जाँच की, और फिर रोसन्ना स्पीयरमैन का पत्र पढ़ने में जुट गए।
पाठ समाप्त होने के बाद, श्री ब्रुफ ने मुझसे पहली बार तब बात की जब हम उनके अपने कमरे के एकांत में एक साथ बंद थे।
“फ्रैंकलिन ब्लेक,” उस बुजुर्ग सज्जन ने कहा, “यह कई मायनों में बहुत गंभीर मामला है। मेरी राय में, यह मामला रैचल से उतना ही जुड़ा है जितना आपसे। उसका असामान्य व्यवहार अब कोई रहस्य नहीं है। उसे लगता है कि हीरा आपने चुराया है।”
मैंने अपने तर्क से उस घृणित निष्कर्ष तक पहुँचने से परहेज किया था। लेकिन फिर भी वह निष्कर्ष मुझ पर विवश हो गया था। राहेल से व्यक्तिगत मुलाकात करने का मेरा संकल्प पूरी तरह से श्री ब्रफ द्वारा बताए गए आधार पर टिका था।
वकील ने आगे कहा, “इस जांच में पहला कदम रैचल से अपील करना है। वह इतने समय से चुप है, जिसके पीछे के कारण मैं (जो उसके स्वभाव को जानता हूं) आसानी से समझ सकता हूं। जो कुछ हो चुका है, उसके बाद उसकी चुप्पी को और बर्दाश्त करना नामुमकिन है। उसे या तो राजी करना होगा या उसे मजबूर करना होगा कि वह हमें बताए कि किस आधार पर उसे लगता है कि आपने मूनस्टोन लिया है। संभावना है कि यह पूरा मामला, जो अभी गंभीर लग रहा है, बिखर जाएगा, अगर हम रैचल की गहरी चुप्पी को तोड़कर उसे बोलने के लिए राजी कर लें।”
मैंने कहा, "यह मेरे लिए बहुत राहत देने वाली बात है। मैं सच में जानना चाहता हूँ।"
श्री ब्रुफ ने बीच में टोकते हुए कहा, "आप जानना चाहेंगे कि मैं इसे कैसे सही ठहरा सकता हूँ। मैं आपको दो मिनट में बता सकता हूँ। सबसे पहले, यह समझ लीजिए कि मैं इस मामले को एक वकील के नज़रिए से देखता हूँ। मेरे लिए यह सबूतों का सवाल है। ठीक है। सबूत शुरू में ही एक महत्वपूर्ण बिंदु पर कमज़ोर पड़ जाते हैं।"
"किस मुद्दे पर?"
"तुम्हें सुनना होगा। मैं मानता हूँ कि नाम का निशान साबित करता है कि यह नाइटगाउन तुम्हारा है। मैं मानता हूँ कि पेंट का निशान साबित करता है कि इसी नाइटगाउन से राहेल के दरवाजे पर धब्बा लगा था। लेकिन क्या सबूत है जो साबित करता है कि हीरा खो जाने वाली रात को तुमने ही इसे पहना था?"
उस आपत्ति ने मुझे झकझोर दिया, और भी अधिक बलपूर्वक इसलिए क्योंकि यह एक ऐसी आपत्ति को दर्शाती थी जिसे मैंने स्वयं महसूस किया था।

"इस विषय पर," रोसन्ना स्पीयरमैन के इकबालिया बयान का हवाला देते हुए वकील ने आगे कहा, "मैं समझ सकता हूँ कि यह पत्र आपके लिए कष्टदायक है। मैं समझ सकता हूँ कि आप इसे पूरी तरह निष्पक्ष दृष्टिकोण से विश्लेषण करने में संकोच कर सकते हैं। लेकिन मैं आपकी स्थिति में नहीं हूँ। मैं इस दस्तावेज़ पर अपने पेशेवर अनुभव का उपयोग कर सकता हूँ, ठीक वैसे ही जैसे मैं किसी अन्य दस्तावेज़ पर करता। महिला के चोर होने के इतिहास का उल्लेख किए बिना, मैं केवल इतना कहूँगा कि उसका पत्र स्वयं के बयान के आधार पर यह साबित करता है कि वह छल में माहिर थी; और इसी आधार पर मैं यह तर्क देता हूँ कि मुझे उस पर पूरी सच्चाई न बताने का संदेह करने का पूरा अधिकार है। मैं अभी इस बारे में कोई सिद्धांत नहीं बनाऊँगा कि उसने क्या किया होगा या क्या नहीं किया होगा। मैं केवल इतना कहूँगा कि यदि राहेल ने केवल नाइटगाउन के सबूत के आधार पर आप पर संदेह किया है, तो संभावना 99 से 100 है कि रोसन्ना स्पीयरमैन ही वह व्यक्ति थी जिसने उसे वह नाइटगाउन दिखाया था। उस स्थिति में, महिला का वह पत्र भी है, जिसमें उसने स्वीकार किया है कि वह राहेल से ईर्ष्या करती थी।" उसने कबूल किया कि उसने गुलाब बदले थे, उसने कबूल किया कि राहेल और तुम्हारे बीच झगड़े की संभावना में उसे अपने लिए उम्मीद की एक झलक दिखी थी। मैं यह नहीं पूछती कि मूनस्टोन किसने लिया (अपने मकसद को पूरा करने के लिए, रोसन्ना स्पीयरमैन पचास मूनस्टोन ले सकती थी) - मैं बस इतना कहती हूँ कि उस रत्न के गायब होने से उस सुधरी हुई चोर को, जो तुमसे प्यार करती थी, तुम्हें और राहेल को जीवन भर के लिए दुश्मन बनाने का मौका मिल गया। याद रखो, उसने तब खुद को बर्बाद करने का फैसला नहीं किया था; और मौका मिलने पर, मैं साफ तौर पर कहती हूँ कि उस समय ऐसा करना उसके स्वभाव और उसकी स्थिति के अनुरूप था। इस बारे में तुम्हारा क्या कहना है?

मैंने जवाब दिया, "जैसे ही मैंने पत्र खोला, मेरे मन में भी कुछ ऐसा ही संदेह आया।"

"बिल्कुल! और जब आपने पत्र पढ़ा, तो आपको उस बेचारी पर दया आ गई, और आप उस पर शक करने की हिम्मत नहीं कर पाए। क्या बात है, मेरे प्रिय महोदय—क्या बात है!"

लेकिन मान लीजिए कि यह पता चलता है कि मैंने नाइटगाउन पहना था? तब क्या होगा?

श्री ब्रुफ़ ने कहा, "मुझे नहीं लगता कि यह बात साबित हो सकती है। लेकिन अगर मान भी लें कि सबूत संभव है, तो आपकी बेगुनाही साबित करना आसान नहीं होगा। अभी

हम इस पर चर्चा नहीं करेंगे। देखते हैं कि कहीं राहेल को सिर्फ़ नाइटगाउन के सबूत के आधार पर ही आप पर शक तो नहीं हो गया।"
"हे भगवान, तुम कितनी बेफिक्री से रेचल के मुझ पर शक करने की बात कर रहे हो!" मैं भड़क उठा। "उसे किस बात का हक है कि वह किसी भी सबूत के आधार पर मुझ पर चोर होने का शक करे?"
"बहुत ही समझदारी भरा सवाल है, महोदय। थोड़ा तीखे अंदाज़ में पूछा गया है—लेकिन फिर भी विचार करने लायक है। जो बात आपको परेशान कर रही है, वही मुझे भी परेशान कर रही है। ज़रा याद करके बताइए। क्या आपके घर में रहने के दौरान कुछ ऐसा हुआ था—ज़ाहिर है, जिससे राहेल का आप पर भरोसा डगमगाया न हो—लेकिन, मान लीजिए, आपके सिद्धांतों पर उसका भरोसा (चाहे कितना भी कम कारण हो) डगमगा गया हो?"
मैं अनियंत्रित घबराहट में उठ खड़ा हुआ। वकील के सवाल ने मुझे याद दिलाया, इंग्लैंड छोड़ने के बाद पहली बार, कि कुछ तो हुआ था।
बेटरएज की कहानी के आठवें अध्याय में, मेरी चाची के घर एक विदेशी और अजनबी के आगमन का संकेत मिलेगा, जो मुझसे व्यापारिक उद्देश्य से मिलने आया था। उसका काम कुछ इस प्रकार था।
मैं इतना मूर्ख था (उस समय हमेशा की तरह पैसों की तंगी के कारण) कि पेरिस के एक छोटे से रेस्तरां के मालिक से कर्ज ले लिया, जिसे मैं एक नियमित ग्राहक के रूप में अच्छी तरह जानता था। हमारे बीच कर्ज चुकाने की तारीख तय हो गई थी; और जब वह समय आया, तो मैंने पाया (हजारों अन्य ईमानदार लोगों की तरह) कि मैं अपना वादा निभा नहीं सकता। मैंने उस आदमी को बिल भेजा। दुर्भाग्य से ऐसे दस्तावेजों पर मेरा नाम बहुत जाना-पहचाना था: वह बिल का भुगतान नहीं कर सका। मेरे कर्ज लेने के बाद से उसके मामले बिगड़ गए थे; दिवालियापन उसके सामने खड़ा था; और उसका एक रिश्तेदार, एक फ्रांसीसी वकील, मुझे ढूंढने और मेरे कर्ज के भुगतान पर जोर देने के लिए इंग्लैंड आया। वह उग्र स्वभाव का व्यक्ति था; और उसने मुझसे बदतमीजी की। दोनों तरफ से तीखी बहस हुई; और दुर्भाग्य से मेरी चाची और राहेल बगल के कमरे में थीं, और उन्होंने हमारी बातें सुन लीं। लेडी वेरेंडर अंदर आईं और मामले की जानकारी लेने पर जोर दिया। फ्रांसीसी ने अपने पहचान पत्र दिखाए और मुझे उस गरीब आदमी के बर्बाद होने का जिम्मेदार ठहराया, जिसने मेरी ईमानदारी पर भरोसा किया था। मेरी चाची ने तुरंत उसे पैसे दे दिए और उसे विदा कर दिया।

ज़ाहिर है, वह मुझे बेहतर जानती थीं और इस सौदे को लेकर उस फ्रांसीसी के नज़रिए से सहमत नहीं थीं। लेकिन मेरी लापरवाही देखकर उन्हें गहरा सदमा लगा और मुझ पर उनका गुस्सा जायज़ था, क्योंकि मैंने खुद को ऐसी स्थिति में डाल दिया था, जो उनके हस्तक्षेप के बिना बहुत शर्मनाक हो सकती थी। या तो उनकी माँ ने उन्हें बताया था, या राहेल ने जो कुछ हुआ था, वह सुना था—मैं निश्चित नहीं कह सकता। उन्होंने इस मामले को अपने ही अंदाज़ में लिया। मैं "निर्दयी" था; मैं "बेईमान" था; मुझमें "कोई सिद्धांत नहीं" था; "पता नहीं मैं आगे क्या कर सकता हूँ"—संक्षेप में, उन्होंने मुझसे कुछ ऐसी कठोर बातें कहीं जो मैंने किसी युवती के मुँह से पहले कभी नहीं सुनी थीं। हमारे बीच का मनमुटाव अगले पूरे दिन तक बना रहा। अगले दिन, मैं सुलह करने में कामयाब हो गया और इसके बारे में फिर कभी नहीं सोचा। क्या राहेल उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना का ज़िक्र करने लगी थी, उस नाज़ुक पल में जब उसकी नज़र में मेरी इज़्ज़त पर फिर से, और कहीं ज़्यादा गंभीर रूप से, हमला हो रहा था? जब मैंने श्री ब्रफ को परिस्थितियों के बारे में बताया, तो उन्होंने तुरंत सकारात्मक उत्तर दिया।

“इसका असर उसके दिमाग पर पड़ता,” उन्होंने गंभीरता से कहा। “और मैं तुम्हारे भले के लिए यही चाहता हूँ कि ऐसा न हुआ होता। लेकिन हमें पता चला है कि तुम्हारे खिलाफ़ एक पूर्वाग्रह था—और कम से कम एक अनिश्चितता तो दूर हो गई है। अब हम और कुछ नहीं कर सकते। इस जाँच में हमारा अगला कदम राहेल तक पहुँचना ही होगा।”

वह उठे और सोच-विचार करते हुए कमरे में इधर-उधर घूमने लगे। दो बार तो मैं उन्हें यह बताने ही वाला था कि मैंने राहेल से व्यक्तिगत रूप से मिलने का निश्चय कर लिया है; और दोनों बार, उनकी उम्र और स्वभाव को ध्यान में रखते हुए, मैंने उन्हें अनुचित समय पर चौंकाने से हिचकिचाया।

उन्होंने बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उसे इस मामले में बिना किसी संकोच के अपना पूरा मन कैसे प्रकट करने के लिए राजी किया जाए। क्या आपके पास कोई सुझाव है?"

"मैंने मन बना लिया है, श्रीमान ब्रफ, मैं स्वयं राहेल से बात करूंगी।"

"तुम!" वह अचानक चलते-चलते रुक गए और मेरी तरफ ऐसे देखने लगे मानो उन्हें लगा हो कि मैं होश खो बैठा हूँ। "दुनिया में सब लोगों में से तुम!" उन्होंने अचानक खुद को रोका और कमरे में एक और मोड़ लिया। "थोड़ा रुको," उन्होंने कहा। "इस तरह के असाधारण मामलों में, जल्दबाजी वाला रास्ता कभी-कभी सबसे अच्छा रास्ता होता

है।" उन्होंने कुछ पल इस बात पर विचार किया और अंत में मेरे पक्ष में फैसला सुनाया।
"बिना जोखिम उठाए कुछ नहीं मिलता," उस बुजुर्ग सज्जन ने फिर कहा। "तुम्हारे पास एक ऐसा मौका है जो मेरे पास नहीं है - और तुम इस प्रयोग को करने वाले पहले व्यक्ति बनोगे।"
"क्या मेरे पक्ष में कोई मौका है?" मैंने अत्यंत आश्चर्य के साथ दोहराया।
श्री ब्रुफ के चेहरे पर पहली बार मुस्कान झलकने लगी।
“हालात ऐसे हैं,” उसने कहा। “मैं तुमसे साफ़-साफ़ कहूँ, मुझे तुम्हारी समझदारी पर भरोसा नहीं है, न ही तुम्हारे गुस्से पर। लेकिन मुझे राहेल पर पूरा भरोसा है कि उसके दिल के किसी कोने में तुम्हारे लिए एक अजीब सी कमज़ोरी अभी भी बाकी है। अगर तुमने उसे छुआ तो उसके अंजाम भुगतने के लिए तैयार रहो, क्योंकि एक औरत के होंठों से जो कुछ भी निकल सकता है, वो सब तुम्हें भुगतना पड़ेगा! सवाल ये है कि तुम उसे किस नज़रिए से देखते हो?”
मैंने उत्तर दिया, "वह इस घर में आपकी मेहमान रह चुकी हैं। क्या मैं यह सुझाव देने की हिम्मत कर सकता हूँ—यदि मेरे बारे में पहले से कुछ न कहा गया हो—कि मैं उनसे यहाँ मिल सकता हूँ?"
"वाह!" श्री ब्रुफ ने कहा। मेरे जवाब पर बस एक शब्द की टिप्पणी करके, वे कमरे में एक और चक्कर लगाने लगे।
"सीधी भाषा में कहूँ तो, मेरे घर को रैचल को फँसाने के लिए एक जाल में बदला जा रहा है; उसे लुभाने के लिए मेरी पत्नी और बेटियों की ओर से निमंत्रण का लालच दिया जा रहा है। अगर आप फ्रैंकलिन ब्लेक के अलावा कोई और होते, और अगर यह मामला ज़रा भी कम गंभीर होता, तो मैं साफ इनकार कर देता। लेकिन अब मुझे पूरा यकीन है कि रैचल बुढ़ापे में मेरे इस विश्वासघात के लिए मुझे धन्यवाद देगी। मुझे अपना साथी समझो। रैचल को यहाँ एक दिन बिताने के लिए कहा जाएगा; और आपको इसकी सूचना मिल जाएगी।"
"कब? कल?"
"कल तक हमें उसका जवाब जानने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलेगा। परसों बात कर लेते हैं।"
मुझे आपसे कैसे सूचना मिलेगी?
"पूरी सुबह घर पर ही रहो और मुझसे मिलने की उम्मीद करो।"

मैंने उनके द्वारा मुझे दी जा रही अमूल्य सहायता के लिए, अपनी सच्ची कृतज्ञता के साथ उन्हें धन्यवाद दिया; और उस रात हैम्पस्टेड में सोने के आतिथ्यपूर्ण निमंत्रण को अस्वीकार करते हुए, लंदन में अपने आवास पर लौट आया।
अगले दिन के बारे में मैं बस इतना ही कह सकता हूँ कि वह मेरे जीवन का सबसे लंबा दिन था। मैं स्वयं को निर्दोष मानता था, मुझे पूरा विश्वास था कि मुझ पर लगा यह घिनौना आरोप देर-सवेर दूर हो ही जाएगा, फिर भी मेरे मन में आत्म-अपमान की भावना थी जिसने मुझे अपने किसी भी मित्र से मिलने से स्वाभाविक रूप से रोक दिया। हम अक्सर सुनते हैं (हालांकि लगभग हमेशा सतही तौर पर) कि अपराध निर्दोषता जैसा दिख सकता है। मेरा मानना है कि इन दोनों में से कहीं अधिक सत्य यह है कि निर्दोषता अपराध जैसी दिख सकती है। मैंने पूरे दिन अपने आप को हर उस व्यक्ति से दूर रखा जो मुझसे मिलने आया; और मैं केवल रात के अंधेरे में ही बाहर निकला।
अगली सुबह, श्री ब्रुफ ने नाश्ते की मेज पर मुझे चौंका दिया। उन्होंने मुझे एक बड़ी चाबी सौंपी और घोषणा की कि उन्हें अपने जीवन में पहली बार खुद पर शर्म आ रही है।
"क्या वह आ रही है?"
"वह आज दोपहर के भोजन के लिए आ रही है और मेरी पत्नी और मेरी बेटियों के साथ दोपहर बिताएगी।"
"क्या श्रीमती ब्रफ और आपकी बेटियाँ इस रहस्य में शामिल हैं?"
"अनिवार्य। लेकिन जैसा कि आपने देखा होगा, महिलाओं में कोई सिद्धांत नहीं होते। मेरे परिवार को मेरी अंतरात्मा की पीड़ा का कोई एहसास नहीं है। मेरा उद्देश्य आपको और राहेल को फिर से एक साथ लाना है, इसलिए मेरी पत्नी और बेटियाँ इसे हासिल करने के लिए अपनाए गए साधनों को इतनी शांति से अनदेखा कर देती हैं मानो वे धर्मगुरु हों।"
मैं उनका असीम आभारी हूँ। यह चाबी क्या है?
"मेरे पिछवाड़े वाले बगीचे की दीवार में लगे गेट की चाबी मेरे पास है। आज दोपहर तीन बजे वहाँ पहुँच जाना। बगीचे में प्रवेश करना और कंज़र्वेटरी के दरवाजे से अंदर जाना। छोटे से ड्राइंग रूम को पार करना और अपने सामने वाले संगीत कक्ष के दरवाजे को खोलना। वहाँ तुम्हें राहेल मिलेगी—और वह वहाँ अकेली होगी।"
"मैं तुम्हारा धन्यवाद कैसे कर सकता हूं!"
मैं आपको बताता हूँ कैसे। इसके बाद जो भी हो, उसके लिए मुझे दोष मत देना।

ये कहकर वह बाहर चला गया।
मुझे अभी भी कई थका देने वाले घंटे इंतजार करने थे। समय बिताने के लिए, मैंने अपने पत्रों को देखा। उनमें बेटरएज का एक पत्र भी था।
मैंने उत्सुकता से उसे खोला। मुझे आश्चर्य और निराशा हुई, क्योंकि उसकी शुरुआत एक माफीनामे से हुई थी जिसमें मुझे चेतावनी दी गई थी कि किसी महत्वपूर्ण खबर की उम्मीद न करूं। अगले ही वाक्य में वही अमर एज़रा जेनिंग्स फिर प्रकट हुए! उन्होंने स्टेशन से निकलते समय बेटरएज में रुककर मुझसे पूछा था कि मैं कौन हूं। यह जानकर उन्होंने अपने मालिक श्री कैंडी को बताया कि उन्होंने मुझे देखा था। श्री कैंडी को यह जानकर खुद बेटरएज आए और हमसे न मिल पाने पर खेद व्यक्त किया। उनके पास मुझसे विशेष रूप से बात करने का एक कारण था; और जब मैं अगली बार फ्रिज़िंगहॉल के आसपास आऊं, तो उन्होंने मुझसे अनुरोध किया कि मैं उन्हें बता दूं। बेटरएज के दर्शन की कुछ विशिष्ट बातों को छोड़कर, मेरे पत्र का सार यही था। उस दयालु और वफादार बुजुर्ग ने स्वीकार किया कि उन्होंने "मुख्य रूप से मुझे पत्र लिखने के आनंद के लिए" लिखा था।
मैंने पत्र को अपनी जेब में मसलकर रख दिया और उसके तुरंत बाद उसे भूल गया, क्योंकि मैं राहेल के साथ होने वाले अपने आगामी साक्षात्कार में पूरी तरह से मग्न था।
जैसे ही हैम्पस्टेड चर्च की घड़ी में तीन बजे, मैंने श्री ब्रूफ की चाबी दीवार में लगे दरवाजे के ताले में डाली। जब मैं पहली बार बगीचे में दाखिल हुआ, और जब मैं अंदर की तरफ से दरवाजा बंद कर रहा था, तो मुझे इस बात को लेकर थोड़ी सी दुविधा और संदेह हुआ कि आगे क्या होगा। मैंने चारों ओर चुपके से देखा; मुझे शक था कि बगीचे के किसी अनजान कोने में कोई अनचाहा गवाह मौजूद हो सकता है। मेरी आशंकाओं को सही साबित करने वाली कोई चीज नहीं दिखी। सारे रास्ते एकदम सुनसान थे; और पक्षी और मधुमक्खियाँ ही एकमात्र गवाह थीं।
मैं बगीचे से गुज़रा; संगीतशाला में दाखिल हुआ; और छोटे से ड्राइंग रूम को पार किया। जैसे ही मैंने सामने वाले दरवाज़े पर हाथ रखा, मुझे अंदर वाले कमरे में पियानो पर बजती कुछ उदास धुनें सुनाई दीं। जब मैं उसकी माँ के घर पर रहता था, तब वह अक्सर इसी तरह पियानो बजाती रहती थी। मुझे थोड़ा रुकना पड़ा, खुद को संभालने के लिए। उस चरम क्षण में अतीत और वर्तमान एक साथ उभर आए—और इस विरोधाभास ने मुझे झकझोर दिया।

एक मिनट बीतने के बाद, मैंने अपनी मर्दानगी को जगाया और दरवाजा खोला।

अध्याय VII

जिस क्षण मैंने दरवाजे पर खुद को दिखाया, राहेल पियानो से उठ खड़ी हुई।

मैंने अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया। हम दोनों खामोशी से एक-दूसरे के सामने खड़े थे, हमारे बीच कमरे की पूरी लंबाई का फासला था। उठने के लिए उसने जो हरकत की थी, वह उसकी एकमात्र क्षमता प्रतीत हो रही थी। शारीरिक या मानसिक, उसकी बाकी सभी क्षमताएँ मानो सिर्फ मुझे देखने में ही समाहित हो गई थीं।

मेरे मन में एक डर सा जागा कि कहीं मैंने अचानक ही खुद को प्रकट न कर दिया हो। मैं उसकी ओर कुछ कदम बढ़ा। मैंने धीरे से कहा, "राहेल!"

मेरी आवाज़ ने उसके अंगों में जान और चेहरे पर रौनक ला दी। वह करवट लेकर आगे बढ़ी, अभी भी बिना कुछ बोले। धीरे-धीरे, मानो किसी ऐसी शक्ति के प्रभाव में जो उसकी अपनी इच्छा से परे हो, वह मेरे करीब आती गई; उसके गालों पर गहरा लालिमा छा गई, उसकी आँखों में नई बुद्धि की चमक हर पल बढ़ती जा रही थी। मैं वह कारण भूल गया जो मुझे उसके पास लाया था; मैं अपने अच्छे नाम पर लगे उस घिनौने संदेह को भूल गया; मैं अतीत, वर्तमान और भविष्य की हर उस बात को भूल गया जिसे मुझे याद रखना चाहिए था। मुझे बस वही स्त्री दिखाई दे रही थी जिसे मैं प्यार करता था, जो मेरे करीब आती जा रही थी। वह काँप रही थी; वह अनिश्चित खड़ी थी। मैं खुद को रोक नहीं पाया—मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया और उसके चेहरे पर चुंबन बरसा दिए।

एक पल ऐसा आया जब मुझे लगा कि उसने भी मुझे चूमा है; एक पल ऐसा लगा मानो वह भी भूल गई हो। इससे पहले कि यह विचार मेरे मन में पूरी तरह से समा पाता, उसकी पहली स्वैच्छिक क्रिया ने मुझे यह एहसास दिलाया कि उसे याद आ गया है। एक भयानक चीख के साथ—इतनी ताकत से कि अगर मैं कोशिश भी करता तो शायद मैं उसका विरोध नहीं कर पाता—उसने मुझे पीछे धकेल दिया। मैंने उसकी आँखों में निर्मम क्रोध देखा; मैंने उसके होठों पर निर्मम तिरस्कार देखा। उसने मुझे सिर से पैर तक ऐसे देखा जैसे वह किसी ऐसे अजनबी को देख रही हो जिसने उसका अपमान किया हो।

"तुम डरपोक हो!" उसने कहा। "मतलब, एकदम घटिया, निर्दयी डरपोक!"

ये उसके पहले शब्द थे! एक स्त्री द्वारा किसी पुरुष को दी जाने वाली सबसे असहनीय निंदा वही निंदा थी जो उसने मुझे देने के लिए चुनी।
मैंने कहा, "मुझे वो समय याद है, रेचल, जब तुम मुझे यह बता सकती थीं कि मैंने तुम्हें ठेस पहुंचाई है, और वो भी इससे कहीं बेहतर तरीके से। मैं तुमसे क्षमा मांगता हूँ।"
मेरे मन में जो कड़वाहट थी, वह शायद मेरी आवाज़ में झलक गई। मेरे जवाब के पहले ही शब्द पर, उसकी आँखें, जो कुछ पल पहले दूसरी ओर मुड़ी हुई थीं, अनिच्छा से मेरी ओर मुड़ गईं। उसने धीमी आवाज़ में जवाब दिया, एक उदास और विनम्र भाव से, जो मेरे लिए उसके साथ बिताए गए समय में बिल्कुल नया था।
"शायद मेरे लिए कुछ बहाना हो," उसने कहा। "तुमने जो किया है, उसके बाद क्या तुम्हारा इस तरह मुझसे मिलना मर्दाना हरकत है? मेरी कमजोरी का फायदा उठाना कायरतापूर्ण प्रयोग लगता है। मुझे अचानक चौंकाकर चूमने के लिए मजबूर करना कायरतापूर्ण आश्चर्य लगता है। लेकिन यह तो सिर्फ एक औरत का नजरिया है। मुझे पता होना चाहिए था कि तुम्हारा नजरिया ऐसा नहीं हो सकता। अगर मैंने खुद पर काबू रखा होता और कुछ नहीं कहा होता तो बेहतर होता।"
माफी मांगना अपमान से भी ज्यादा असहनीय था। दुनिया का सबसे नीच व्यक्ति भी इससे अपमानित महसूस करता।
मैंने कहा, "अगर मेरी इज्जत आपके हाथों में न होती, तो मैं इसी वक्त आपको छोड़कर चला जाता और फिर कभी आपसे नहीं मिलता। आपने मेरे किए की बात की है। मैंने क्या किया है?"
"तुमने ये क्या कर दिया! तुम मुझसे ये सवाल पूछ रहे हो?"
मैं यह सवाल पूछता हूं।
“मैंने तुम्हारी बदनामी को छुपाकर रखा है,” उसने उत्तर दिया। “और इसे छुपाने के परिणाम भुगते हैं। क्या मुझे तुम्हारे द्वारा किए गए अपराध के बारे में पूछे जाने के अपमान से बचने का कोई अधिकार नहीं है? क्या तुम्हारे भीतर कृतज्ञता का भाव पूरी तरह से मर चुका है? तुम कभी एक सज्जन व्यक्ति थे। तुम कभी मेरी माँ के प्रिय थे, और मेरे लिए तो और भी प्रिय थे----”
उसकी आवाज लड़खड़ा गई। वह एक कुर्सी पर बैठ गई, मेरी तरफ पीठ करके बैठ गई और अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया।
कुछ देर रुककर मैंने हिम्मत जुटाई और फिर आगे कुछ कहने का फैसला किया। उस खामोशी के क्षण में, मुझे ठीक से याद नहीं कि मैंने सबसे ज़्यादा क्या महसूस

किया—उसकी अवमानना से उपहास, या वह दृढ़ निश्चय जिसने मुझे उसके दुख से पूरी तरह अलग कर दिया।
मैंने कहा, "यदि आप पहले नहीं बोलेंगे, तो मुझे बोलना पड़ेगा। मैं यहाँ आपसे कुछ गंभीर बात कहने आया हूँ। क्या आप मेरी बात ध्यान से सुनकर मुझ पर थोड़ी कृपा करेंगे?"
वह न हिली, न ही उसने कोई जवाब दिया। मैंने उससे दोबारा विनती नहीं की; मैं उसकी कुर्सी के पास एक इंच भी नहीं बढ़ा। उसी हठी अभिमान के साथ, जो उसके अभिमान के समान ही था, मैंने उसे कांपती रेत पर अपनी खोज और उस तक पहुंचने वाली सारी घटनाओं के बारे में बताया। स्वाभाविक रूप से, इस वृत्तांत में थोड़ा समय लगा। शुरू से अंत तक, उसने मेरी ओर मुड़कर नहीं देखा और एक शब्द भी नहीं बोला।
मैंने अपना आपा नहीं खोया। मेरा पूरा भविष्य संभवतः इसी बात पर निर्भर था कि मैं उस क्षण अपना आपा न खोऊँ। श्री ब्रुफ़ के सिद्धांत को परखने का समय आ गया था। उस प्रयोग को करने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर, मैं घूमकर उसके सामने आ गया।
मैंने कहा, "मुझे आपसे एक सवाल पूछना है। इसके लिए मुझे एक बार फिर एक दुखद विषय का जिक्र करना पड़ेगा। क्या रोज़ाना स्पीयरमैन ने आपको वो नाइटगाउन दिखाया था? हाँ या ना?"
वह उठ खड़ी हुई और अपनी मर्जी से मेरे पास आ गई। उसकी आँखें मुझे टकटकी लगाकर देख रही थीं, मानो वहाँ कुछ ऐसा पढ़ना चाहती हों जो उन्होंने पहले कभी नहीं पढ़ा हो।
"क्या तुम पागल हो?" उसने पूछा।
मैंने खुद को संयमित रखा। मैंने धीरे से कहा, "रेचल, क्या तुम मेरे सवाल का जवाब दोगी?"
वह मेरी बात अनसुनी करते हुए आगे बढ़ती रही।
"क्या तुम्हारा कोई ऐसा मकसद है जिसे मैं समझ नहीं पा रही? क्या तुम्हें भविष्य को लेकर कोई घिनौना डर है, जिससे मैं चिंतित हूँ? लोग कहते हैं कि तुम्हारे पिता की मृत्यु ने तुम्हें अमीर बना दिया है। क्या तुम मेरे हीरे के नुकसान की भरपाई करने यहाँ आए हो? और क्या तुम्हारे पास अपने इस काम पर शर्म महसूस करने की हिम्मत बची है? क्या यही तुम्हारी बेगुनाही के दिखावे और रोसन्ना स्पीयरमैन के बारे में तुम्हारी कहानी का राज है? क्या इस बार तुम्हारे इस झूठ के पीछे शर्मिंदगी का कोई मकसद है?"

मैंने उसे वहीं रोक दिया। मैं खुद को और नियंत्रित नहीं कर सका।
"तुमने मेरे साथ घोर अन्याय किया है!" मैं क्रोधित होकर बोला। "तुम्हें मुझ पर तुम्हारा हीरा चुराने का शक है। मुझे जानने का पूरा अधिकार है, और मैं जानकर ही रहूंगा कि इसका कारण क्या है!"
"मुझे तुम पर शक है!" वह गुस्से से चिल्लाई, उसका गुस्सा भी मेरे गुस्से के साथ बढ़ता जा रहा था। "तुम दुष्ट हो, मैंने अपनी आँखों से तुम्हें हीरा लेते हुए देखा!"
उन शब्दों में जो रहस्योद्घाटन हुआ, और जिस क्षणिक रूप से उन्होंने उस मामले के पूरे दृष्टिकोण को ध्वस्त कर दिया जिस पर श्री ब्रूफ भरोसा कर रहे थे, उसने मुझे असहाय कर दिया। निर्दोष होते हुए भी, मैं उनके सामने चुपचाप खड़ा रहा। उनकी नज़रों में, किसी की भी नज़र में, मैं एक ऐसे व्यक्ति की तरह दिख रहा था जो अपने ही अपराध के खुलासे से स्तब्ध हो गया हो।
मेरी बेइज्जती और अपनी जीत के इस तमाशे से वह पीछे हट गई। मुझ पर छाई अचानक खामोशी ने उसे डरा दिया। "मैंने तुम्हें उस समय बख्श दिया था," उसने कहा। "अगर तुमने मुझे बोलने पर मजबूर न किया होता, तो मैं तुम्हें अब भी बख्श देती।" वह कमरे से बाहर जाने के लिए आगे बढ़ी—और दरवाजे तक पहुँचने से पहले हिचकिचाई। "तुम यहाँ खुद को बेइज्जत करने क्यों आए हो?" उसने पूछा। "तुम यहाँ मुझे बेइज्जत करने क्यों आए हो?" वह कुछ कदम आगे बढ़ी और फिर रुक गई। "भगवान के लिए, कुछ बोलो!" वह गुस्से से चिल्लाई। "अगर तुम्हारे अंदर थोड़ी भी दया बची है, तो मुझे इस तरह खुद को बेइज्जत मत करने दो! कुछ बोलो—और मुझे कमरे से बाहर निकाल दो!"
मैं उसकी ओर बढ़ा, मुझे शायद ही होश था कि मैं क्या कर रहा हूँ। शायद मेरे मन में कुछ अस्पष्ट विचार था कि मैं उसे तब तक रोकूँ जब तक वह मुझे और कुछ न बता दे। जिस क्षण मुझे पता चला कि राहेल की नज़र में जिस सबूत के आधार पर मैं दोषी ठहराया गया था, वह उसकी अपनी आँखों का सबूत था, उस क्षण से कुछ भी - यहाँ तक कि मेरी अपनी बेगुनाही का विश्वास भी - मेरे मन में स्पष्ट नहीं था। मैंने उसका हाथ पकड़ा; मैंने दृढ़ता से और स्पष्ट रूप से बोलने की कोशिश की। मैं बस इतना ही कह सका, "राहेल, तुमने कभी मुझसे प्यार किया था।"
वह सिहर उठी और मुझसे नज़रें हटा लीं। उसका हाथ मेरे हाथ में बेजान और कांपता हुआ पड़ा था। "इसे छोड़ दो," उसने धीमी आवाज़ में कहा।

मेरे स्पर्श का उस पर वही प्रभाव पड़ा जो कमरे में प्रवेश करते ही मेरी आवाज़ का पड़ा था। जब उसने मुझे कायर कहा, जब उसने मुझे चोर करार दिया—जब तक उसका हाथ मेरे हाथ में था, मैं उसका स्वामी था!

मैंने उसे धीरे से कमरे के बीच में वापस खींच लिया। मैंने उसे अपने बगल में बैठाया। "राहेल," मैंने कहा, "मैं तुम्हें जो बताने जा रहा हूँ उसमें मौजूद विरोधाभास को समझा नहीं सकता। मैं केवल वही सच कह सकता हूँ जो तुमने कहा है। तुमने मुझे देखा—अपनी आँखों से, तुमने मुझे हीरा लेते हुए देखा। परमेश्वर के सामने, जो हमारी प्रार्थनाएँ सुनता है, मैं घोषणा करता हूँ कि अब मुझे पता है कि मैंने इसे पहली बार लिया था! क्या तुम्हें अब भी मुझ पर शक है?"

उसने न तो मेरी बात सुनी और न ही मेरी ओर ध्यान दिया। "मेरा हाथ छोड़ दो," उसने धीमी आवाज़ में दोहराया। यही उसका एकमात्र जवाब था। उसका सिर मेरे कंधे पर टिक गया; और जिस क्षण उसने मुझे हाथ छोड़ने के लिए कहा, उसी क्षण अनजाने में उसका हाथ मेरे हाथ से चिपक गया।

मैंने सवाल पूछने से परहेज किया। लेकिन मेरा संयम यहीं खत्म हो गया। ईमानदार लोगों के बीच फिर से सिर ऊंचा करके खड़े होने का मेरा मौका इस बात पर निर्भर था कि मैं उसे अपना पूरा सच बताने के लिए राजी कर पाऊं। मेरे लिए बची एकमात्र उम्मीद यही थी कि शायद उसने सबूतों की कड़ी में कुछ अनदेखा कर दिया हो, शायद कोई मामूली सी बात, जो सावधानीपूर्वक जांच के बाद अंततः मेरी बेगुनाही साबित करने का जरिया बन सके। मैं मानता हूं कि मैंने उसका हाथ थामे रखा। मैं मानता हूं कि मैंने उससे बीते समय की सहानुभूति और विश्वास की पूरी ताकत से बात की।

मैंने कहा, "मैं तुमसे कुछ पूछना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे सब कुछ बताओ, उस समय से जब हमने एक-दूसरे को शुभ रात्रि कहा था, उस समय तक जब तुमने मुझे हीरा लेते हुए देखा था।"

उसने अपना सिर मेरे कंधे से उठाया और अपना हाथ छुड़ाने की कोशिश की। "अरे, फिर उस काम में क्यों लगूँ!" उसने कहा। "फिर उस काम में क्यों लगूँ!"

"मैं तुम्हें बताता हूँ क्यों, रेचल। तुम और मैं, दोनों ही किसी भयानक भ्रम के शिकार हैं जिसने सच्चाई का मुखौटा पहन रखा है। अगर हम तुम्हारे जन्मदिन की रात जो कुछ हुआ, उस पर साथ मिलकर विचार करें, तो शायद हम एक-दूसरे को समझ सकें।"

उसका सिर मेरे कंधे पर टिक गया। उसकी आँखों में आँसू भर आए और धीरे-धीरे उसके गालों पर बहने लगे। "ओह!" उसने कहा, "क्या मुझे कभी यह उम्मीद नहीं थी?

क्या मैंने इसे देखने की कोशिश नहीं की, जैसे आप अभी कर रहे हैं?"
मैंने जवाब दिया, "तुमने खुद ही कोशिश की है। तुमने मेरी मदद लिए बिना कोशिश की है।"
उन शब्दों ने मानो उसके भीतर वही आशा जगा दी जो मुझे उन्हें कहते समय महसूस हुई थी। उसने मेरे प्रश्नों का उत्तर केवल विनम्रता से ही नहीं दिया, बल्कि उसने अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग किया; उसने स्वेच्छा से अपने सारे विचार मेरे सामने रख दिए।
मैंने कहा, "चलिए शुरू करते हैं, कि एक-दूसरे को शुभ रात्रि कहने के बाद क्या हुआ। क्या आप सोने चले गए? या फिर बैठे रहे?"
"मैं सोने गया।"
"क्या आपने समय देखा? क्या बहुत देर हो गई थी?"
"ज्यादा नहीं। लगभग बारह बजे के आसपास, मुझे लगता है।"
क्या तुम सो गए थे?
नहीं। उस रात मुझे नींद नहीं आई।
"तुम बेचैन थे?"
"मैं आपके बारे में सोच रहा था।"
उस जवाब ने मुझे लगभग स्तब्ध कर दिया। शब्दों से भी ज़्यादा, लहजे में कुछ ऐसा था जो सीधे मेरे दिल को छू गया। थोड़ी देर रुकने के बाद ही मैं आगे बोल पाया।
मैंने पूछा, "क्या तुम्हारे कमरे में रोशनी थी?"
"कुछ नहीं—जब तक मैं दोबारा नहीं उठी और अपनी मोमबत्ती नहीं जलाई।"
"तुम्हारे सोने के बाद कितना समय बीता?"
"लगभग एक घंटे बाद, मुझे लगता है। लगभग एक बजे।"
"क्या आप अपने बेडरूम से बाहर निकले थे?"
"मैं इसे यहीं छोड़ने वाली थी। मैंने अपना ड्रेसिंग गाउन पहन लिया था; और मैं अपने बैठक कक्ष में एक किताब लेने जा रही थी----"
"क्या आपने अपने बेडरूम का दरवाजा खोला था?"
मैंने इसे अभी-अभी खोला था।
"लेकिन आप बैठक कक्ष में नहीं गए थे?"
"नहीं—मुझे उसमें जाने से रोक दिया गया था।"
आपको किस बात ने रोका?

"मैंने दरवाजे के नीचे से एक रोशनी देखी; और मुझे उसकी ओर आते कदमों की आहट सुनाई दी।"
"क्या आपको डर लगा था?"
"तब नहीं। मुझे पता था कि मेरी बेचारी माँ को नींद नहीं आती थी; और मुझे याद था कि उस शाम उन्होंने मुझे अपनी डायमंड की देखभाल करने देने के लिए मनाने की बहुत कोशिश की थी। मुझे लगा कि वह इसके बारे में बेवजह चिंतित थीं; और मुझे लगा कि वह यह देखने के लिए मेरे पास आ रही थीं कि मैं बिस्तर पर हूँ या नहीं, और अगर उन्हें पता चलता कि मैं जाग रही हूँ, तो वह डायमंड के बारे में मुझसे फिर से बात करेंगी।"
"आपने क्या किया?"
"मैंने अपनी मोमबत्ती बुझा दी, ताकि उसे लगे कि मैं बिस्तर पर हूँ। मैं अपनी तरफ से अनुचित था - मैं अपने हीरे को अपनी पसंद की जगह पर रखने के लिए दृढ़ था।"
मोमबत्ती बुझाने के बाद, क्या आप वापस बिस्तर पर चले गए?
"मेरे पास वापस जाने का समय नहीं था। जिस क्षण मैंने मोमबत्ती बुझाई, बैठक कक्ष का दरवाजा खुला और मैंने देखा----"
"आपने देखा?"
"आप।"
"हमेशा की तरह ही कपड़े पहने हो?"
"नहीं।"
"मेरी नाइटगाउन में?"
"अपनी नाइटगाउन में—हाथ में अपने बेडरूम की मोमबत्ती लिए हुए।"
"अकेला?"
"अकेला।"
क्या तुम मेरा चेहरा देख सकते थे?
"हाँ।"
"स्पष्ट रूप से?"
"बिल्कुल स्पष्ट। आपके हाथ में मौजूद मोमबत्ती ने मुझे यह दिखा दिया।"
"क्या मेरी आंखें खुली थीं?"
"हाँ।"
"क्या आपने उनमें कुछ अजीब देखा? जैसे कि कोई स्थिर, खाली भाव?"

"ऐसा कुछ नहीं था। तुम्हारी आँखें चमक रही थीं—सामान्य से कहीं ज़्यादा चमक रही थीं। तुम कमरे में इधर-उधर देख रही थीं, मानो तुम्हें पता हो कि तुम वहाँ नहीं हो जहाँ तुम्हें होना चाहिए, और मानो तुम्हें पकड़े जाने का डर हो।"
"जब मैं कमरे में आया तो क्या आपने एक बात पर ध्यान दिया—क्या आपने मेरे चलने के तरीके पर ध्यान दिया?"
"तुम हमेशा की तरह चलते रहे। तुम कमरे के बीचोंबीच तक आए और फिर रुक गए और अपने चारों ओर देखने लगे।"
"मुझे पहली बार देखकर तुमने क्या किया?"
"मैं कुछ नहीं कर सकती थी। मैं बुरी तरह डर गई थी। मैं बोल नहीं सकती थी, मैं पुकार नहीं सकती थी, मैं अपना दरवाजा बंद करने के लिए हिल भी नहीं सकती थी।"
"क्या मैं आपको देख सकता हूँ, जहाँ आप खड़े थे?"
"हो सकता है कि आपने मुझे देखा हो। लेकिन आपने मेरी तरफ देखा ही नहीं। सवाल पूछना बेकार है। मुझे यकीन है कि आपने मुझे कभी नहीं देखा।"
"आपको इतना यकीन कैसे है?"
"क्या तुम हीरा लेते? क्या तुम बाद में वैसा ही व्यवहार करते जैसा तुमने किया? क्या तुम अब यहाँ होते—अगर तुमने देखा होता कि मैं जाग रही हूँ और तुम्हें देख रही हूँ? मुझे उस हिस्से के बारे में बात करने के लिए मजबूर मत करो! मैं तुम्हें शांति से जवाब देना चाहती हूँ। मुझे जितना हो सके शांत रहने में मदद करो। किसी और बात पर आगे बढ़ो।"
वह बिल्कुल सही थी—हर तरह से सही। मैं आगे बढ़कर दूसरे कामों में लग गया।
"कमरे के बीच में पहुँचकर और वहाँ रुक जाने के बाद मैंने क्या किया?"
"तुम मुड़कर सीधे खिड़की के पास वाले कोने में चले गए—जहाँ मेरी भारतीय अलमारी रखी है।"
"जब मैं कैबिनेट के पास था, तो मेरी पीठ आपकी तरफ रही होगी। आपने कैसे देखा कि मैं क्या कर रहा था?"
"जब तुम चले गए, तो मैं भी चला गया।"
"ताकि वे देख सकें कि मैं अपने हाथों से क्या कर रहा था?"
"मेरे बैठक कक्ष में तीन गिलास हैं। जब आप वहां खड़े थे, तो मैंने आपके द्वारा किए गए सभी कार्यों को उनमें से एक में प्रतिबिंबित होते देखा।"
"आपने क्या देखा?"

"आपने अपनी मोमबत्ती अलमारी के ऊपर रख दी। आपने एक-एक करके दराज खोले और बंद किए, जब तक कि आप उस दराज तक नहीं पहुँच गए जिसमें मैंने अपना हीरा रखा था। आपने खुली हुई दराज को एक पल के लिए देखा। और फिर आपने अपना हाथ अंदर डाला और हीरा बाहर निकाल लिया।"
"तुम्हें कैसे पता चला कि मैंने हीरा निकाल लिया?"
मैंने तुम्हारा हाथ दराज में जाते देखा। और जब तुमने अपना हाथ बाहर निकाला, तो मैंने तुम्हारी उंगली और अंगूठे के बीच पत्थर की चमक देखी।
"क्या मेरा हाथ दराज को बंद करने के लिए दोबारा उसके पास गया?"
"नहीं। हीरा आपके दाहिने हाथ में था; और आपने अलमारी के ऊपर से मोमबत्ती अपने बाएं हाथ से ली थी।"
"उसके बाद क्या मैंने दोबारा अपने आसपास देखा?"
"नहीं।"
"क्या मैं तुरंत कमरे से बाहर निकल गया था?"
"नहीं। तुम काफी देर तक बिल्कुल स्थिर खड़े रहे। मैंने शीशे में तुम्हारा चेहरा तिरछा देखा। तुम एक ऐसे व्यक्ति की तरह लग रहे थे जो सोच रहा हो और अपने ही विचारों से असंतुष्ट हो।"
"आगे क्या हुआ?"
"तुम अचानक से उठे और सीधे कमरे से बाहर चले गए।"
"क्या मैंने अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया था?"
"नहीं। तुम जल्दी से गलियारे में बेहोश होकर निकल गए और दरवाजा खुला छोड़ दिया।"
"और तब?"
"फिर, तुम्हारी रोशनी गायब हो गई, और तुम्हारे कदमों की आवाज थम सी गई, और मैं अंधेरे में अकेला रह गया।"
"क्या उस समय से लेकर उस समय तक कुछ भी नहीं हुआ जब पूरे घर को पता चल गया कि हीरा खो गया है?"
"कुछ नहीं।"
"क्या आपको इस बात का पूरा यकीन है? क्या आप उस दौरान कुछ देर सोए नहीं रहे थे?"

"मैं सोया ही नहीं। मैं अपने बिस्तर पर वापस नहीं गया। पेनेलोप के आने तक कुछ भी नहीं हुआ, वह भी सुबह के सामान्य समय पर।"
मैंने उसका हाथ छोड़ा, उठा और कमरे में एक चक्कर लगाया। मेरे मन में जितने भी सवाल उठ सकते थे, उन सबके जवाब मिल चुके थे। मैं जो भी जानना चाहता था, सब कुछ मेरे सामने आ चुका था। मैं नींद में चलने और नशे में होने के विचार पर भी लौट आया था; और एक बार फिर, दोनों ही सिद्धांतों की निरर्थकता साबित हो चुकी थी—इस बार उस गवाह के प्रमाण पर जिसने मुझे देखा था। अब आगे क्या कहा जाए? अब आगे क्या किया जाए? चोरी का भयानक सच मेरे सामने आ गया—वह एकमात्र प्रत्यक्ष, ठोस वस्तु जो मुझे उस घने अंधेरे के बीच में दिखाई दे रही थी जिसने सब कुछ घेर रखा था! जब मैंने शिवरिंग सैंड में रोसन्ना स्पीयरमैन का रहस्य जाना था, तब भी मुझे राह दिखाने के लिए कोई रोशनी नहीं थी। और अब भी कोई रोशनी नहीं है, जब मैंने खुद राहेल से गुहार लगाई और उस रात की घिनौनी कहानी उसके मुंह से सुनी।
इस बार चुप्पी तोड़ने वाली वह पहली व्यक्ति थी।
"तो?" उसने कहा। "आपने पूछा, और मैंने जवाब दे दिया। आपने मुझे इस सब से कुछ उम्मीद जगा दी है, क्योंकि आपको इससे कुछ उम्मीद थी। अब आपको क्या कहना है?"
उसके बोलने के लहजे से मुझे आगाह हो गया कि उस पर मेरा प्रभाव एक बार फिर खत्म हो चुका है।
उन्होंने आगे कहा, "हमें मिलकर मेरे जन्मदिन की रात जो कुछ हुआ, उस पर गौर करना था; और फिर एक-दूसरे को समझना था। क्या हमने ऐसा किया है?"
वह निर्दयतापूर्वक मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे उत्तर देते समय मैंने एक घातक गलती कर दी—मैंने अपनी स्थिति की निराशाजनक लाचारी को अपने आत्म-नियंत्रण पर हावी होने दिया। जल्दबाजी में और व्यर्थ ही, मैंने उस चुप्पी के लिए उसे फटकारा जिसने मुझे उस क्षण तक सत्य से अनभिज्ञ रखा था।
"अगर आपने तब बोला होता जब आपको बोलना चाहिए था," मैंने कहना शुरू किया; "अगर आपने मुझे अपना स्पष्टीकरण देकर न्यायसंगत व्यवहार किया होता----"
वह क्रोध से चीखते हुए मुझ पर टूट पड़ी। मेरे कहे कुछ शब्दों ने उसे पल भर में ही क्रोधित कर दिया।
"मुझे अपनी गलती का एहसास दिलाओ!" उसने दोहराया। "ओह! क्या दुनिया में ऐसा कोई दूसरा आदमी है? जब मेरा दिल टूटता है, तब मैं उसे बख्श देती हूँ; जब मेरी

इज़्ज़त दांव पर लगी होती है, तब मैं उसका बचाव करती हूँ; और वह—सभी इंसानों में से, वह—अब मुझ पर पलटवार कर रहा है, और मुझसे कह रहा है कि मुझे अपनी गलती का एहसास दिलाना चाहिए था! उस पर इतना भरोसा करने के बाद, उससे इतना प्यार करने के बाद, दिन भर उसके बारे में सोचने और रात भर उसके सपने देखने के बाद—वह हैरान है कि जब हम पहली बार मिले थे, तब मैंने उस पर उसकी बेइज्जती का आरोप क्यों नहीं लगाया: 'मेरे दिल के प्यारे, तुम चोर हो! मेरे हीरो, जिसे मैं प्यार और सम्मान करती हूँ, तुम रात के अंधेरे में मेरे कमरे में घुस आए और मेरा हीरा चुरा लिया!' मुझे यही कहना चाहिए था। तुम दुष्ट, तुम नीच, नीच, नीच दुष्ट, मैं पचास हीरे खो देती, लेकिन तुम्हारा झूठ बोलते चेहरा नहीं देखती, जैसा कि मैं अब देख रही हूँ!"

मैंने अपनी टोपी उठाई। उस पर दया करते हुए—हाँ! मैं सचमुच कह सकता हूँ—उस पर दया करते हुए, मैं बिना कुछ कहे मुड़ गया और उस दरवाजे को खोल दिया जिससे मैं कमरे में दाखिल हुआ था।

वह मेरे पीछे आई और मेरे हाथ से दरवाजा छीन लिया; उसने दरवाजा बंद कर दिया और उस जगह की ओर इशारा किया जहाँ से मैं आया था।

"नहीं!" उसने कहा। "अभी नहीं! लगता है मुझे अपने आचरण का औचित्य आपको बताना होगा। आपको यहीं रुककर सुनना होगा। वरना आपको सबसे नीच हरकत करनी पड़ेगी और यहाँ से जबरदस्ती निकलना पड़ेगा।"

उसे देखकर मेरा दिल दुख से भर गया; उसकी बातें सुनकर मेरा दिल दुख से भर गया। मैंने एक इशारे से जवाब दिया—मैं बस इतना ही कर सकता था—कि मैंने खुद को उसकी इच्छा के आगे समर्पित कर दिया।

जैसे ही मैं वापस लौटा और चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठ गया, उसके चेहरे से क्रोध की लालिमा धीरे-धीरे फीकी पड़ने लगी। वह थोड़ी देर रुकी और खुद को संभाला। जब उसने बोलना शुरू किया, तो उसमें केवल एक ही भाव झलक रहा था। वह मेरी ओर देखे बिना बोल रही थी। उसके हाथ उसकी गोद में मजबूती से जुड़े हुए थे और उसकी निगाहें ज़मीन पर टिकी हुई थीं।

"मुझे आपके साथ न्याय करते हुए अपनी बात स्पष्ट कर देनी चाहिए थी," उसने मेरे ही शब्दों को दोहराते हुए कहा। "आप देखेंगे कि मैंने आपके साथ न्याय करने की कोशिश की या नहीं। मैंने अभी आपको बताया कि आपके मेरे बैठक कक्ष से जाने के बाद मैं सोई नहीं और अपने बिस्तर पर वापस नहीं लौटी। मैंने क्या सोचा, इस पर चर्चा

करके आपको परेशान करने का कोई फायदा नहीं है—आप मेरे विचारों को नहीं समझ पाएँगी—मैं आपको केवल वही बताऊँगी जो मैंने तब किया जब मुझे खुद को संभालने के लिए पर्याप्त समय मिल गया था। मैंने घर में शोर नहीं मचाया और सबको घटना के बारे में नहीं बताया—जैसा कि मुझे करना चाहिए था। जो कुछ मैंने देखा था, उसके बावजूद मैं आपसे इतना प्यार करती थी कि मैंने—चाहे कुछ भी हो जाए!—किसी भी असंभव बात पर विश्वास किया, बजाय इसके कि मैं अपने मन में यह स्वीकार करूँ कि आप जानबूझकर चोर थे। मैंने बहुत सोचा—और अंत में आपको पत्र लिखा।"

मुझे वह पत्र कभी नहीं मिला।

"मुझे पता है कि आपको वह पत्र नहीं मिला। थोड़ा इंतज़ार कीजिए, आपको पता चल जाएगा कि क्यों। मेरे पत्र में मैंने आपको कुछ भी खुलकर नहीं बताया होता। अगर वह किसी और के हाथ लग भी जाता, तो इससे आपका जीवन बर्बाद नहीं हो जाता। उसमें बस इतना लिखा होता—ऐसे तरीके से जिसे आप खुद भी गलत नहीं समझ सकते थे—कि मुझे पता था कि आप कर्ज में डूबे हुए हैं, और मेरे और मेरी माँ के अनुभव के अनुसार, आप पैसे की ज़रूरत पड़ने पर उसे पाने के तरीके को लेकर ज़्यादा सतर्क या सावधान नहीं रहते थे। आपको फ्रांसीसी वकील की मुलाक़ात याद आ जाती, और आप समझ जाते कि मैं किस बारे में बात कर रही थी। अगर आपने उसके बाद थोड़ा ध्यान से पढ़ा होता, तो आपको मेरा वह प्रस्ताव भी मिल जाता—निजी तौर पर (ध्यान रहे, हमारे बीच इस बारे में एक शब्द भी खुलकर नहीं कहा जाना था!), जितना बड़ा कर्ज़ मैं जुटा सकती थी—और मैं वह कर्ज़ दिला देती!" वह बोली, उसका चेहरा फिर से लाल हो गया, और उसकी आँखें एक बार फिर मेरी ओर देखने लगीं। "अगर मुझे पैसे जुटाने का कोई और तरीका न मिलता, तो मैं खुद हीरा गिरवी रख देता! मैंने तुम्हें यही लिखा था। रुको! मैंने इससे भी ज़्यादा किया। मैंने पेनेलोप से इंतज़ाम किया कि जब कोई आस-पास न हो, तब तुम्हें चिट्ठी दूँ। मैंने योजना बनाई थी कि मैं अपने बेडरूम में बंद हो जाऊँगा और बैठक को सुबह भर खुला और खाली छोड़ दूँगा। और मैंने पूरी उम्मीद की थी—दिल से उम्मीद की थी!—कि तुम इस मौके का फ़ायदा उठाओगे और हीरे को चुपके से दराज में वापस रख दोगे।"

मैंने बोलने की कोशिश की। उसने अधीरता से हाथ उठाया और मुझे रोक दिया। उसके स्वभाव में तेजी से हो रहे बदलावों के बीच, उसका गुस्सा फिर से बढ़ने लगा था। वह अपनी कुर्सी से उठी और मेरी ओर आई।

"मुझे पता है तुम क्या कहने वाले हो," उसने आगे कहा। "तुम मुझे फिर से याद दिलाओगे कि तुम्हें मेरा पत्र कभी मिला ही नहीं। मैं तुम्हें इसका कारण बता सकती हूँ। मैंने उसे फाड़ दिया था।"

मैंने पूछा, "किस कारण से?"

"बिल्कुल सही वजह से। मैंने इसे फाड़ देना बेहतर समझा बजाय तुम्हारे जैसे आदमी पर फेंकने के! सुबह-सुबह मुझे सबसे पहली खबर क्या मिली? जैसे ही मेरी छोटी सी योजना पूरी हुई, मैंने क्या सुना? मैंने सुना कि तुम—तुम!!!—घर में पुलिस को बुलाने वाले पहले व्यक्ति थे। तुम ही सक्रिय थे; तुम ही नेता थे; तुम ही गहने को वापस पाने के लिए सबसे ज़्यादा मेहनत कर रहे थे! तुमने तो इतनी धृष्टता दिखाई कि हीरे के खोने के बारे में मुझसे बात करने की माँग भी की—वह हीरा जो तुमने खुद चुराया था; वह हीरा जो हर समय तुम्हारे ही हाथों में था! तुम्हारी उस भयानक झूठ और धूर्तता के सबूत के बाद, मैंने अपना पत्र फाड़ दिया। लेकिन तब भी—यहाँ तक कि जब मैं तुम्हारे भेजे हुए पुलिसवाले की तलाशी और पूछताछ से पागल हो रही थी—तब भी, मेरे मन में एक ऐसी आसक्ति थी जो मुझे तुम्हें छोड़ने नहीं दे रही थी। मैंने खुद से कहा, 'उसने घर में सबके सामने अपना घिनौना नाटक कर दिया है। चलो मैं भी कोशिश करती हूँ कि क्या वह मेरे सामने भी ऐसा कर सकता है। मुझे।' किसी ने मुझे बताया कि तुम छत पर हो। मैं छत पर गया। मैंने खुद को मजबूर करके तुम्हें देखा; मैंने खुद को मजबूर करके तुमसे बात की। क्या तुम भूल गए कि मैंने क्या कहा था?

मैं शायद यह जवाब दे सकता था कि मुझे इसका हर एक शब्द याद है। लेकिन उस समय इस जवाब से क्या फायदा होता?

मैं उसे कैसे बता सकता था कि उसकी कही बातों ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया था, मुझे दुखी कर दिया था, मुझे यह आभास दिलाया था कि वह खतरनाक मानसिक उत्तेजना की स्थिति में थी, यहाँ तक कि मेरे मन में एक पल के लिए यह संदेह भी पैदा कर दिया था कि क्या गहने का खोना उसके लिए भी उतना ही रहस्य था जितना हम सबके लिए—लेकिन उसने मुझे सच्चाई की एक झलक तक नहीं दी थी? अपनी निर्दोषता साबित करने के लिए मेरे पास कोई सबूत न होते हुए, मैं उसे कैसे समझा सकता था कि जब उसने मुझसे छत पर बात की थी, तब उसके मन में वास्तव में क्या चल रहा था, इसके बारे में मैं उतना ही जानता था जितना कोई अजनबी भी जान सकता था?

"हो सकता है कि तुम्हें भूल जाना सुविधाजनक लगे; लेकिन मुझे याद रखना सुविधाजनक लगता है," वह आगे बोली। "मुझे पता है मैंने क्या कहा—क्योंकि बोलने से पहले मैंने इस पर विचार किया था। मैंने तुम्हें सच स्वीकार करने के कई मौके दिए। मैंने वो सब कुछ कहा जो मैं कह सकती थी—सिवाय इसके कि मैंने तुम्हें सीधे-सीधे बता दिया कि मुझे पता था कि तुमने चोरी की है। और बदले में तुमने बस इतना किया कि हैरानी का घिनौना दिखावा किया और मासूमियत का झूठा चेहरा बनाया—ठीक वैसे ही जैसे तुमने आज मुझे देखा है; जैसे तुम अभी मुझे देख रहे हो! उस सुबह मैं तुम्हें छोड़कर चली गई थी, और आखिरकार तुम्हें पहचान लिया था—तुम धरती पर चलने वाले सबसे नीच और दुष्ट इंसान हो!"

"अगर तुमने उस समय आवाज़ उठाई होती, तो शायद तुम मुझे, रेचल को, यह जानते हुए छोड़ जाती कि तुमने एक निर्दोष व्यक्ति के साथ क्रूरता से अन्याय किया है।"

"अगर मैंने दूसरों के सामने बोल दिया होता," उसने गुस्से से भड़कते हुए जवाब दिया, "तो तुम ज़िंदगी भर के लिए बदनाम हो जाते! अगर मैंने सिर्फ़ तुम्हारे सामने ही ये बात कही होती, तो तुम इसे नकार देते, जैसे तुम अभी नकार रहे हो! क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम पर विश्वास करती? क्या कोई आदमी झूठ बोलने से हिचकिचाएगा, जिसने वो किया हो जो मैंने तुम्हें करते देखा—जिसने बाद में वैसा ही बर्ताव किया हो जैसा मैंने तुम्हें करते देखा? मैं फिर कहती हूँ, तुम्हें चोरी करते देखने के बाद, तुम्हारे झूठ सुनने के डर से मैं काँप उठी। तुम ऐसे बात कर रहे हो जैसे ये कोई ग़लतफ़हमी थी जिसे कुछ शब्दों से सुलझाया जा सकता था! खैर! ग़लतफ़हमी तो सुलझ गई। क्या सब ठीक हो गया? नहीं! बात वहीं है जहाँ थी। अब मुझे तुम पर विश्वास नहीं है! मुझे विश्वास नहीं है कि तुम्हें नाइटगाउन मिला, मुझे रोज़ाना स्पीयरमैन के पत्र पर विश्वास नहीं है, मुझे तुम्हारे एक भी शब्द पर विश्वास नहीं है। तुमने इसे चुराया—मैंने तुम्हें देखा! तुमने पुलिस की मदद करने का नाटक किया—मैंने तुम्हें देखा! तुमने वादा किया..." लंदन के साहूकार को हीरा लौटाया—मुझे पूरा यकीन है! मेरी धूर्त चुप्पी का फायदा उठाकर तुमने अपनी बदनामी का इल्जाम एक निर्दोष आदमी पर मढ़ दिया! अगली सुबह तुम लूट का माल लेकर महाद्वीप भाग गए! इतनी नीच हरकत के बाद, तुम बस एक ही काम कर सकते थे। तुम यहाँ आकर अपने होठों पर आखिरी झूठ बोल सकते थे—तुम यहाँ आकर मुझसे कह सकते थे कि मैंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है!

अगर मैं एक पल भी और रुक जाता, तो न जाने क्या-क्या शब्द मेरे मुंह से निकल जाते, जिन्हें याद करके मुझे व्यर्थ ही पछतावा और अफसोस होता। मैं उसके पास से गुजरा

और दूसरी बार दरवाजा खोला। दूसरी बार—एक उत्तेजित स्त्री के उन्मादी और अड़ियल रवैये के साथ—उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और बाहर जाने का रास्ता रोक दिया।

मैंने कहा, "मुझे जाने दो, रेचल। यह हम दोनों के लिए बेहतर होगा। मुझे जाने दो।"

उसके हृदय में उन्मादी जुनून उमड़ रहा था—उसकी तेज और कंपकंपी भरी सांसें लगभग मेरे चेहरे पर पड़ रही थीं, जब उसने मुझे दरवाजे पर ही रोक लिया।

“तुम यहाँ क्यों आए?” वह हताशा से पूछती रही। “मैं तुमसे फिर पूछती हूँ—तुम यहाँ क्यों आए? क्या तुम्हें डर है कि मैं तुम्हारा पर्दाफ़ाश कर दूँगी? अब तुम अमीर हो, अब दुनिया में तुम्हारा एक मुकाम है, अब तुम देश की सबसे खूबसूरत औरत से शादी कर सकते हो—क्या तुम्हें डर है कि मैं वो शब्द कह दूँगी जो मैंने आज तक तुम्हारे सिवा किसी से नहीं कहे? मैं वो शब्द नहीं कह सकती! मैं तुम्हारा पर्दाफ़ाश नहीं कर सकती! मैं तुमसे भी बदतर हूँ, अगर बदतर हो सकती हूँ तो।” उसकी आँखों से सिसकियाँ और आँसू फूट पड़े। वह उनसे जूझ रही थी; उसने मुझे और भी कसकर पकड़ लिया। “मैं तुम्हें अपने दिल से नहीं निकाल सकती,” उसने कहा, “अभी भी नहीं! तुम उस शर्मनाक, बेहद शर्मनाक कमज़ोरी पर भरोसा कर सकते हो जो सिर्फ़ इसी तरह तुमसे लड़ सकती है!” उसने अचानक मुझे छोड़ दिया—उसने अपने हाथ ऊपर उठाए और उन्हें बेतहाशा हवा में मरोड़ दिया। “कोई भी दूसरी औरत उसे छूने की शर्म से काँप जाएगी!” वह चिल्लाई। "हे भगवान! मैं उससे भी कहीं अधिक स्वयं से घृणा करता हूँ!"

मेरी आंखों में आंसू अनजाने में ही उमड़ रहे थे—अब उस भयावहता को और सहन नहीं किया जा सकता था।

मैंने कहा, "तुम्हें पता होना चाहिए कि तुमने मेरे साथ अन्याय किया है। वरना तुम मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे!"

ये शब्द कहकर मैं वहां से चला गया। वह उस कुर्सी से उठ खड़ी हुई जिस पर वह कुछ पल पहले गिरी थी: वह उठ खड़ी हुई—कितनी नेक प्राणी!—और विदाई के आखिरी दयालु शब्द कहते हुए मेरे पीछे-पीछे बाहरी कमरे में आ गई।

"फ्रैंकलिन!" उसने कहा, "मैं तुम्हें माफ करती हूँ! ओह, फ्रैंकलिन, फ्रैंकलिन! हम फिर कभी नहीं मिलेंगे। कहो कि तुम मुझे माफ करते हो!"

मैं मुड़ा, ताकि मेरा चेहरा उसे दिखा सके कि मैं अब कुछ बोल नहीं सकता—मैं मुड़ा, अपना हाथ हिलाया, और उसे धुंधली सी, मानो किसी सपने में, उन आंसुओं के बीच से देखा, जिन्होंने आखिरकार मुझे वश में कर लिया था।

अगले ही पल, सबसे कड़वाहट खत्म हो गई। मैं फिर से बगीचे में था। मैंने उसे देखा, उसकी आवाज़ सुनी, बस इतना ही।

अध्याय आठ

उस शाम देर से, मुझे अपने कमरे में श्री ब्रुफ के अचानक आने से आश्चर्य हुआ।

वकील के व्यवहार में एक स्पष्ट बदलाव आया था। उनका सामान्य आत्मविश्वास और जोश गायब हो गया था। उन्होंने अपने जीवन में पहली बार मौन रहकर मुझसे हाथ मिलाया।

मैंने कुछ कहने के अंदाज़ में पूछा, "क्या तुम हैम्पस्टेड वापस जा रहे हो?"

“मैं अभी-अभी हैम्पस्टेड से निकला हूँ,” उन्होंने उत्तर दिया। “मुझे पता है, श्रीमान फ्रैंकलिन, कि अंततः आपको सच्चाई का पता चल गया है। लेकिन, मैं आपको स्पष्ट रूप से बता दूं, अगर मुझे इसके लिए चुकाई जाने वाली कीमत का अंदाज़ा होता, तो मैं आपको अंधेरे में ही रखना पसंद करता।”

"क्या आपने राहेल को देखा है?"

"उसे पोर्टलैंड प्लेस वापस छोड़ने के बाद मैं यहाँ आया हूँ; उसे अकेले गाड़ी में वापस भेजना असंभव था। चूंकि आपने उसे मेरे घर में और मेरी अनुमति से देखा था, इसलिए इस दुर्भाग्यपूर्ण मुलाकात से उसे जो सदमा लगा है, उसके लिए मैं आपको ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकता। मैं बस यही कर सकता हूँ कि ऐसी घटना दोबारा न हो। वह जवान है, उसका हौसला बुलंद है, समय और आराम से वह इससे उबर जाएगी। मैं यह आश्वासन चाहता हूँ कि आप उसकी रिकवरी में कोई बाधा नहीं डालेंगे। क्या मैं आप पर भरोसा कर सकता हूँ कि आप मेरी अनुमति और स्वीकृति के बिना उससे दोबारा मिलने की कोशिश नहीं करेंगे?"

मैंने कहा, "उसने जो कुछ सहा है और मैंने जो कुछ सहा है, उसके बाद आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं।"

"क्या मुझे आपका वादा मिला है?"

"आपको मेरी कसम है।"

श्री ब्रुफ राहत महसूस कर रहे थे। उन्होंने अपनी टोपी नीचे रखी और अपनी कुर्सी मेरी कुर्सी के पास खींच ली।

“बात पक्की हो गई!” उन्होंने कहा। “अब भविष्य की बात करते हैं—मेरा मतलब आपके भविष्य से है। मेरे विचार से, इस मामले में आए इस असाधारण मोड़ का नतीजा संक्षेप में यह है। पहली बात तो यह है कि हमें पूरा यकीन है कि राहेल ने आपको पूरी

सच्चाई बताई है, जितनी स्पष्टता से शब्दों में बताई जा सकती है। दूसरी बात—हालाँकि हम जानते हैं कि कहीं न कहीं कोई बड़ी गलती ज़रूर हुई होगी—लेकिन हम उसे इस बात के लिए दोष नहीं दे सकते कि वह अपने अनुभव के आधार पर आपको दोषी मानती है; क्योंकि ये अनुभव उन परिस्थितियों से पुष्ट होते हैं जो देखने में आपके खिलाफ़ स्पष्ट रूप से सबूत पेश करती हैं।”

मैंने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "मैं राहेल को दोष नहीं देता। मुझे केवल इस बात का अफसोस है कि वह उस समय मुझसे और स्पष्ट रूप से बात करने के लिए खुद को मना नहीं सकी।"

श्री ब्रुफ ने जवाब दिया, "आपको इस बात का अफसोस करना चाहिए कि राहेल कोई और नहीं है।" और तब भी, मुझे संदेह है कि कोई भी सभ्य लड़की, जिसका दिल आपसे शादी करने पर अड़ा हुआ था, आपके सामने आपको चोर होने का आरोप लगा सकती थी। खैर, राहेल का स्वभाव ही ऐसा नहीं था। आपके इस मामले से बिल्कुल अलग एक मामले में—जिसमें वह आपके प्रति अपनी स्थिति से कुछ मिलती-जुलती स्थिति में थी—मुझे पता है कि वह भी उसी तरह के मकसद से प्रभावित थी, जिस मकसद ने आपके मामले में उसके व्यवहार को प्रेरित किया। इसके अलावा, जैसा कि उसने आज शाम शहर जाते समय मुझे खुद बताया, अगर उसने साफ-साफ कहा होता, तो वह आपके इनकार पर तब भी उतना ही विश्वास नहीं करती जितना अब करती है। आप इसका क्या जवाब दे सकते हैं? इसका कोई जवाब नहीं है। आइए, आइए, श्रीमान फ्रैंकलिन! मैं मानता हूँ कि इस मामले के बारे में मेरा नजरिया पूरी तरह गलत साबित हो चुका है—लेकिन, मौजूदा हालात को देखते हुए, मेरी सलाह शायद काम आ सकती है। मैं आपको साफ-साफ बताता हूँ, अगर हम पलटवार करने की कोशिश करेंगे, तो हम अपना समय और दिमाग व्यर्थ ही खपाएँगे। आइए इस भयावह उलझन को शुरू से सुलझाएं। आइए हम पिछले साल लेडी वेरेंडर के कंट्री हाउस में जो कुछ भी हुआ, उसे पूरी तरह से भुला दें; और आइए हम अतीत में जो कुछ नहीं खोज पाए हैं, उस पर ध्यान देने के बजाय भविष्य में जो कुछ हम खोज सकते हैं, उस पर ध्यान दें।

मैंने कहा, "क्या आप भूल गए हैं कि यह सब कुछ मूल रूप से अतीत की बात है—जहाँ तक मेरा सवाल है?"

श्री ब्रुफ ने पलटवार करते हुए कहा, "मुझे इसका जवाब दीजिए। क्या सारी गड़बड़ी की जड़ में मूनस्टोन है—या नहीं?"

"हाँ—बिल्कुल।"
"बहुत बढ़िया। हमें क्या लगता है कि मूनस्टोन को लंदन ले जाने के बाद उसके साथ क्या किया गया था?"
"यह श्री लुकर को गिरवी रखा गया था।"
"हम जानते हैं कि आपने यह प्रतिज्ञा नहीं की थी। क्या हम जानते हैं कि यह प्रतिज्ञा किसने की थी?"
"नहीं।"
"हमारा मानना है कि मूनस्टोन अब कहाँ है?"
"श्री लुकर के बैंकरों की देखरेख में जमा किया गया।"
"बिल्कुल सही। अब ध्यान दीजिए। हम जून महीने में हैं। महीने के अंत तक (मैं कोई निश्चित तारीख नहीं बता सकता) उस समय से एक साल बीत जाएगा जब हमें लगता है कि हीरा गिरवी रखा गया था। कम से कम इतनी संभावना तो है ही कि जिसने इसे गिरवी रखा था, वह एक साल पूरा होने पर इसे छुड़ाने के लिए तैयार हो जाए। अगर वह इसे छुड़ा लेता है, तो श्री लूकर को अपने समझौते की शर्तों के अनुसार, बैंक से हीरा वापस लेना होगा। इन परिस्थितियों में, मैं इस महीने के अंत में बैंक पर नजर रखने का प्रस्ताव करता हूं, ताकि पता लगाया जा सके कि श्री लूकर मूनस्टोन किसे लौटाते हैं। क्या अब आपको समझ आया?"
मैंने (थोड़ी अनिच्छा से) यह स्वीकार किया कि यह विचार कम से कम नया तो था ही।
"यह विचार जितना मेरा है उतना ही श्री मुर्थवेट का भी है," श्री ब्रफ़ ने कहा। "शायद यह मेरे दिमाग में कभी नहीं आता, अगर कुछ समय पहले हमारी बातचीत न हुई होती। अगर श्री मुर्थवेट सही हैं, तो भारतीय महीने के अंत तक बैंक पर नज़र रख रहे होंगे—और इसका कुछ गंभीर परिणाम हो सकता है। इससे क्या होता है, इससे हम दोनों को कोई फ़र्क नहीं पड़ता, सिवाय इसके कि इससे हमें उस रहस्यमय व्यक्ति को ढूंढने में मदद मिल सकती है जिसने हीरा गिरवी रखा था। आप यकीन मानिए, वह व्यक्ति (मुझे नहीं पता कैसे) आपकी इस स्थिति के लिए ज़िम्मेदार है; और केवल वही व्यक्ति राहेल की नज़र में आपको सही राह दिखा सकता है।"
मैंने कहा, "मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि आपके द्वारा प्रस्तावित योजना इस समस्या का समाधान एक बेहद साहसिक, बेहद चतुराईपूर्ण और बेहद नए तरीके से करती है। लेकिन----"
"लेकिन आपको कोई आपत्ति है?"

"जी हां। मेरी आपत्ति यह है कि आपके प्रस्ताव के कारण हमें इंतजार करना पड़ेगा।"
"ठीक है। मेरे अनुमान के अनुसार, इसमें लगभग दो सप्ताह का समय लगेगा। क्या यह बहुत लंबा समय है?"
"श्री ब्रुफ, मेरी जैसी स्थिति में तो यह पूरी जिंदगी का मामला है। अगर मैं तुरंत अपनी छवि सुधारने के लिए कुछ नहीं करता, तो मेरा अस्तित्व असहनीय हो जाएगा।"
"अच्छा, अच्छा, मैं समझ गया। क्या आपने अभी तक सोचा है कि आप क्या कर सकते हैं?"
मैंने सार्जेंट कफ से परामर्श करने के बारे में सोचा है।
"वह पुलिस से सेवानिवृत्त हो चुके हैं। सार्जेंट से मदद की उम्मीद करना बेकार है।"
मुझे पता है कि वह कहाँ मिलेगा; और मैं बस कोशिश ही कर सकता हूँ।
कुछ देर सोचने के बाद श्री ब्रुफ़ ने कहा, "कोशिश कीजिए। सार्जेंट कफ़ के समय से इस मामले ने इतना असाधारण रूप ले लिया है कि शायद आप जांच में उनकी रुचि फिर से जगा सकें। कोशिश कीजिए और मुझे नतीजा बताइए। इस बीच," उठते हुए उन्होंने आगे कहा, "अगर इस महीने के अंत तक आपको कोई सुराग नहीं मिलता है, तो क्या मैं अपनी तरफ से बैंक पर नज़र रखकर जो भी संभव हो सके, वह करने के लिए स्वतंत्र हूं?"
"ज़रूर," मैंने उत्तर दिया—"जब तक कि मैं आपको इस अंतराल में प्रयोग करने की सभी आवश्यकता से मुक्त न कर दूं।"
श्री ब्रुफ मुस्कुराए और अपनी टोपी उठा ली।
"सार्जेंट कफ को बता दीजिए," उसने जवाब दिया, "कि मैं कहता हूं कि सच्चाई का पता लगाना उस व्यक्ति का पता लगाने पर निर्भर करता है जिसने हीरा गिरवी रखा था। और मुझे यह भी बता दीजिए कि सार्जेंट का इस बारे में क्या अनुभव है।"
तो हम अलग हो गए।
अगली सुबह तड़के, मैं डॉर्किंग नामक छोटे से कस्बे के लिए रवाना हुआ - यह वह स्थान था जहाँ सार्जेंट कफ सेवानिवृत्त हुए थे, जैसा कि बेटरएज ने मुझे बताया था।
होटल में पूछताछ करने पर मुझे सार्जेंट की कुटिया तक पहुँचने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश मिल गए। यह कस्बे से थोड़ी दूर एक शांत गली से होकर जाती थी, और अपने बगीचे के बीचोंबीच आराम से स्थित थी, जिसके पीछे और अगल-बगल ईंट की मजबूत दीवार थी और सामने ऊँची, घनी झाड़ियों की बाड़ थी। ऊपरी हिस्से पर करीने से रंगे जालीदार काम से सजा हुआ द्वार बंद था। घंटी बजाने के बाद, मैंने जालीदार

काम के बीच से झाँका, और देखा कि महान कफ का पसंदीदा फूल हर जगह खिला हुआ था; उनके बगीचे में खिल रहा था, उनके दरवाजे पर गुच्छों में लगा हुआ था, उनकी खिड़कियों से झाँक रहा था। बड़े शहर के अपराधों और रहस्यों से दूर, वह प्रसिद्ध चोर-पकड़ने वाला अपने जीवन के अंतिम विलासितापूर्ण वर्ष शांतिपूर्वक गुलाबों में डूबे हुए बिता रहा था!

एक सभ्य बुजुर्ग महिला ने मेरे लिए द्वार खोला और सार्जेंट कफ की सहायता प्राप्त करने की मेरी सारी उम्मीदें तुरंत चकनाचूर हो गईं। वह एक दिन पहले ही आयरलैंड की यात्रा पर निकले थे।

मैंने पूछा, "क्या वह वहां व्यापार के सिलसिले में गया है?"

महिला मुस्कुराई। उसने कहा, "अब उनका बस एक ही काम है, महोदय; और वो है गुलाब। आयरलैंड में किसी बड़े आदमी के माली ने गुलाब उगाने में कुछ नया खोजा है —और श्री कफ इसकी जानकारी लेने जा रहे हैं।"

"क्या आपको पता है कि वह कब वापस आएगा?"

"यह कहना मुश्किल है, महोदय। श्री कफ ने कहा कि उन्हें या तो तुरंत वापस आना चाहिए या कुछ समय के लिए बाहर रहना चाहिए, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उन्हें नई खोज उपयोगी लगती है या नहीं। यदि आपके पास उनके लिए कोई संदेश हो, तो मैं ध्यान रखूंगा, महोदय, कि वह उन तक पहुंच जाए।"

मैंने उसे अपना कार्ड दिया, जिस पर मैंने पहले पेंसिल से लिखा था: "मुझे मूनस्टोन के बारे में कुछ कहना है। वापस आते ही मुझे बता देना।" इतना लिखने के बाद, परिस्थितियों के आगे झुकने और लंदन लौटने के अलावा कोई चारा नहीं बचा था।

जिस समय मैं यह लिख रहा हूँ, उस समय मेरी मनःस्थिति बहुत अशांत थी, और सार्जेंट की कुटिया तक की मेरी असफल यात्रा ने मेरे भीतर कुछ करने की बेचैन इच्छा को और भी बढ़ा दिया था। डॉर्किंग से लौटने के दिन ही मैंने निश्चय कर लिया था कि अगली सुबह मैं अंधकार से प्रकाश की ओर, सभी बाधाओं को पार करते हुए, एक नया प्रयास करूंगा।

मेरा अगला प्रयोग किस रूप में होगा?

अगर उस प्रश्न पर विचार करते समय महान बेटरएज वहाँ मौजूद होते, और अगर उन्हें मेरे विचारों का रहस्य पता चल जाता, तो वे निःसंदेह यही कहते कि इस अवसर पर मेरा जर्मन पक्ष ही सर्वोपरि था। गंभीरता से कहूँ तो, शायद मेरी जर्मन शिक्षा ही कुछ हद तक उन व्यर्थ अटकलों के जाल में फँसने का कारण थी जिनमें मैं अब उलझा हुआ

था। रात का अधिकांश समय मैं सिगरेट पीते हुए और एक से बढ़कर एक असंभव सिद्धांतों को गढ़ते हुए बिताता रहा। जब मुझे नींद आई, तो जागते हुए मेरे विचार सपनों में भी मेरा पीछा करते रहे। अगली सुबह जब मैं उठा, तो मेरे मन में वस्तुनिष्ठ-व्यक्तिपरक और व्यक्तिपरक-वस्तुनिष्ठ के विचार बुरी तरह उलझे हुए थे; और मैंने उस दिन की शुरुआत, जिस दिन मुझे किसी प्रकार की व्यावहारिक कार्रवाई करनी थी, इस संदेह के साथ की कि क्या मुझे (शुद्ध दार्शनिक आधार पर) किसी भी वस्तु (हीरे सहित) के अस्तित्व पर विचार करने का कोई अधिकार है भी या नहीं।

अगर मुझे खुद को इस उलझन से निकालने का मौका मिलता, तो मैं कितने समय तक इसी उलझन में फंसा रहता, यह कहना मेरे लिए नामुमकिन है। जैसा कि हुआ, संयोग ही मेरी मदद के लिए आया और मुझे बचा लिया। उस सुबह मैंने वही कोट पहना हुआ था जो मैंने राहेल से मुलाकात वाले दिन पहना था। जेब में कुछ और ढूंढते हुए मुझे एक मुड़ा हुआ कागज का टुकड़ा मिला और उसे निकालते ही मेरे हाथ में बेटरएज का भूला हुआ पत्र था।

मुझे लगा कि अपने पुराने दोस्त को बिना जवाब दिए छोड़ देना उसके लिए बहुत बुरा होगा। मैं अपनी लेखन मेज पर गया और उसका पत्र दोबारा पढ़ा।

जिस पत्र में ज़रा भी अहमियत न हो, उसका जवाब देना हमेशा आसान नहीं होता। बेटरएज का मुझसे पत्राचार करने का यह प्रयास भी इसी श्रेणी में आता है। श्री कैंडी के सहायक, जिनका दूसरा नाम एज़रा जेनिंग्स है, ने अपने मालिक को बताया था कि उन्होंने मुझे देखा है; और श्री कैंडी भी मुझसे मिलना चाहते थे और मुझसे कुछ कहना चाहते थे, जब मैं अगली बार फ्रिज़िंगहॉल के आसपास आऊँ। ऐसे में मैं क्या जवाब देता जो सार्थक होता? मैं खाली समय में श्री कैंडी के उस असाधारण दिखने वाले सहायक की तस्वीरें याद से उस कागज़ पर बना रहा था जिसे मैंने बेटरएज को समर्पित करने का वादा किया था—तभी अचानक मुझे याद आया कि फिर से वही ज़िद्दी एज़रा जेनिंग्स मेरे रास्ते में आ गया है! मैंने चितकबरे बालों वाले उस आदमी की कम से कम एक दर्जन तस्वीरें (हर तस्वीर में बाल बिल्कुल मिलते-जुलते थे) कूड़ेदान में फेंक दीं—और वहीं, बेटरएज को अपना जवाब लिख दिया। यह एक बिल्कुल साधारण सा पत्र था—लेकिन इसका मुझ पर एक अद्‌भुत प्रभाव पड़ा। सरल अंग्रेजी में कुछ वाक्य लिखने के प्रयास ने मेरे दिमाग से कल से भरी हुई सारी उलझन और निरर्थक विचारों को पूरी तरह से दूर कर दिया।

अपनी स्थिति से उपजे इस अनसुलझे रहस्य को सुलझाने के लिए मैंने एक बार फिर प्रयास किया और अब मैंने इसे व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझने की कोशिश की। उस यादगार रात की घटनाएँ अभी भी मेरी समझ से परे थीं, इसलिए मैंने थोड़ा पीछे मुड़कर देखा और जन्मदिन के शुरुआती घंटों की यादों में ऐसी किसी घटना को खोजने की कोशिश की जो सुराग ढूंढने में मेरी मदद कर सके।

क्या राहेल और मेरे द्वारा दरवाज़े पर पेंट करने का काम पूरा करते समय कुछ हुआ था? या बाद में, जब मैं फ्रिज़िंगहॉल गया था? या उसके बाद, जब मैं गॉडफ्रे एबलव्हाइट और उसकी बहनों के साथ वापस आया था? या फिर उसके बाद, जब मैंने मूनस्टोन राहेल के हाथों में दिया था? या फिर उसके भी बाद, जब मेहमान आए और हम सब खाने की मेज़ पर इकट्ठा हुए थे? मेरी याददाश्त ने उन सवालों की इस कड़ी का जवाब आसानी से दे दिया, जब तक कि मैं आखिरी सवाल पर नहीं पहुँचा। जन्मदिन के खाने के उस सामाजिक कार्यक्रम को याद करते हुए, मैं पूछताछ की शुरुआत में ही अटक गया। मुझे यह भी ठीक से याद नहीं था कि मेरे साथ एक ही मेज़ पर कितने मेहमान बैठे थे।

मुझे अपनी गलती का पूरा एहसास होना और फिर यह निष्कर्ष निकालना कि रात्रिभोज की घटनाओं की छानबीन करना विशेष रूप से सार्थक होगा, मेरे मामले में एक ही मानसिक प्रक्रिया का हिस्सा था। मेरा मानना है कि ऐसी ही स्थिति में अन्य लोग भी मेरी ही तरह सोचते। जब हम अपने स्वार्थों की पूर्ति के चक्कर में खुद ही जांच के दायरे में आ जाते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हमें उन चीजों पर संदेह होता है जिनके बारे में हम नहीं जानते। रात्रिभोज में उपस्थित लोगों के नाम पता चलने पर, मैंने अपनी याददाश्त को बेहतर बनाने के लिए बाकी मेहमानों से पूछने का फैसला किया; जन्मदिन की सामाजिक घटनाओं के बारे में उन्हें जो कुछ भी याद था, उसे लिख लिया; और बाद में, जब मेहमान घर से चले गए, तब जो कुछ हुआ, उसके आधार पर उस जानकारी की जांच करने का निर्णय लिया।

जांच-पड़ताल की कला में मेरे कई सोचे-समझे प्रयोगों में से यह आखिरी और सबसे नया प्रयोग—जिसे बेटरएज शायद मेरे उस समय के स्पष्ट या फ्रांसीसी पक्ष की देन मानते—अपने आप में यहाँ दर्ज होने का हकदार है। भले ही यह असंभव लगे, लेकिन आखिरकार मैं मामले की जड़ तक पहुँच गया था। मुझे बस शुरुआत में सही दिशा दिखाने के लिए एक संकेत चाहिए था। एक और दिन बीतने से पहले ही, जन्मदिन की दावत में मौजूद एक साथी ने मुझे वह संकेत दे दिया!

अब जो योजना मेरे मन में थी, उसके अनुसार सबसे पहले मेहमानों की पूरी सूची प्राप्त करना आवश्यक था। यह सूची मुझे गैब्रियल बेटरएज से आसानी से मिल सकती थी। मैंने उसी दिन यॉर्कशायर वापस जाने और अगली सुबह अपनी नियोजित जांच शुरू करने का निश्चय किया।

लंदन से दोपहर से पहले निकलने वाली ट्रेन से निकलने में बहुत देर हो चुकी थी। अगली ट्रेन के आने का लगभग तीन घंटे तक इंतज़ार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। क्या लंदन में ऐसा कुछ था जो इस समय को अच्छे से बिताने में मददगार साबित हो सके?

मेरे विचार बार-बार हठपूर्वक जन्मदिन के रात्रिभोज की ओर लौट गए।

हालाँकि मैं मेहमानों की संख्या और कई मामलों में उनके नाम भूल गया था, फिर भी मुझे अच्छी तरह याद था कि उनमें से अधिकांश फ्रिज़िंगहॉल या उसके आस-पास के इलाकों से आए थे। लेकिन यह संख्या सभी की नहीं थी। हममें से कुछ लोग गाँव के नियमित निवासी नहीं थे। मैं खुद उनमें से एक था। श्री मुर्थवेट भी उनमें से एक थे। गॉडफ्रे एबलव्हाइट तीसरे थे। श्री ब्रफ—नहीं: मुझे याद आया कि काम के चलते श्री ब्रफ इस समारोह में शामिल नहीं हो पाए थे। क्या कोई ऐसी महिलाएँ भी उपस्थित थीं जिनका सामान्य निवास लंदन में था? मुझे केवल मिस क्लैक ही इस श्रेणी में याद थीं। खैर, कम से कम ये तीन मेहमान तो ऐसे थे जिनसे शहर छोड़ने से पहले मिलना मेरे लिए ज़रूरी था। मैं तुरंत श्री ब्रफ के कार्यालय के लिए निकल पड़ा; मुझे उन लोगों के पते नहीं पता थे जिनकी मुझे तलाश थी, और मुझे लगा कि शायद वे मुझे उन्हें ढूंढने में मदद कर सकते हैं।

श्री ब्रूफ इतने व्यस्त थे कि वे मुझे अपने बहुमूल्य समय का एक मिनट से अधिक नहीं दे सके। हालाँकि, उस एक मिनट में ही उन्होंने मेरे सभी सवालों का बेहद निराशाजनक ढंग से जवाब दे दिया।

पहली बात तो यह है कि रहस्य का सुराग ढूंढने के मेरे नए तरीके को उन्होंने इतना निरर्थक समझा कि उस पर गंभीरता से चर्चा करना उचित नहीं समझा। दूसरी, तीसरी और चौथी बात यह है कि श्री मुर्थवेट अब अपने पुराने कारनामों की जगह वापस जा रहे थे; मिस क्लैक को नुकसान हुआ था और आर्थिक कारणों से वह फ्रांस में बस गई थीं; श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट लंदन में कहीं मिल भी सकते थे और नहीं भी। मान लीजिए कि मैं उनके क्लब में पूछताछ करूं? और मान लीजिए कि अगर श्री ब्रफ अपने काम पर वापस चले जाएं और मुझे सुप्रभात कहें तो मैं उन्हें माफ कर दूं?

लंदन में जांच का दायरा अब इतना सीमित हो गया था कि इसमें केवल गॉडफ्रे का पता पता लगाना ही एकमात्र आवश्यकता रह गई थी, इसलिए मैंने वकील का संकेत समझा और उसकी क्लब की ओर गाड़ी चलाई।

हॉल में मेरी मुलाकात एक सदस्य से हुई, जो मेरे चचेरे भाई का पुराना दोस्त था और मेरा भी परिचित था। इस सज्जन ने मुझे गॉडफ्रे के भाषण के विषय में जानकारी देने के बाद अपने जीवन की दो हालिया घटनाओं के बारे में बताया, जो अपने आप में काफी महत्वपूर्ण थीं और जिनके बारे में मुझे पहले पता नहीं था।

ऐसा प्रतीत हुआ कि रैचल द्वारा सगाई तोड़ने से गॉडफ्रे निराश होने के बजाय, कुछ ही समय बाद एक अन्य युवती से विवाह का प्रस्ताव रखने लगा, जो एक बड़ी उत्तराधिकारी मानी जाती थी। उसका प्रस्ताव सफल रहा और उसकी शादी लगभग तय हो चुकी थी। लेकिन, यहाँ भी, सगाई अचानक और अप्रत्याशित रूप से टूट गई - कहा जाता है कि इस बार दूल्हे और युवती के पिता के बीच संपत्ति के बंटवारे के मुद्दे पर गंभीर मतभेद के कारण ऐसा हुआ।

इस दूसरी वैवाहिक विपत्ति के कुछ हद तक मुआवज़े के तौर पर, गॉडफ्रे को जल्द ही उनके कई प्रशंसकों में से एक की ओर से आर्थिक सहायता का स्नेह मिला। एक धनी वृद्ध महिला—जो मदर्स स्मॉल-क्लॉथ्स-कन्वर्जन सोसाइटी में बहुत सम्मानित थीं और मिस क्लैक की घनिष्ठ मित्र थीं (जिन्हें उन्होंने शोक की अंगूठी के अलावा कुछ नहीं दिया था)—ने प्रशंसनीय और गुणी गॉडफ्रे को पाँच हज़ार पाउंड की वसीयत दी थी। अपनी सीमित आर्थिक स्थिति में इस बड़ी वृद्धि के बाद, उन्हें यह कहते सुना गया कि उन्हें अपने परोपकारी कार्यों से कुछ समय के लिए विश्राम की आवश्यकता है, और उनके डॉक्टर ने उन्हें "महाद्वीप की यात्रा" करने की सलाह दी है, जो उनके स्वास्थ्य के लिए भविष्य में बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकती है। यदि मुझे उनसे मिलना है, तो बेहतर होगा कि मैं अपनी नियोजित यात्रा में विलंब न करूँ।

मैं उसी समय वहां उनसे मिलने गया।

जिस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कारण मैं सार्जेंट कफ से मिलने में एक दिन की देरी कर बैठा था, उसी के कारण मैं गॉडफ्रे से मिलने में भी एक दिन की देरी कर बैठा। वह पिछली सुबह ही लंदन से डोवर के लिए रवाना हो चुका था। उसे ओस्टेंड जाना था; और उसके नौकर का मानना था कि वह ब्रुसेल्स जा रहा है। उसके लौटने का समय अनिश्चित था; लेकिन मुझे यकीन था कि वह कम से कम तीन महीने तक बाहर रहेगा।

मैं थोड़ा उदास मन से अपने कमरे में लौट आया। जन्मदिन के भोज में आए तीन मेहमान—और वे तीनों ही असाधारण रूप से बुद्धिमान व्यक्ति थे—उस समय मेरी पहुँच से बाहर थे, जब उनसे संपर्क करना सबसे ज़्यादा ज़रूरी था। अब मेरी आखिरी उम्मीद बेटरएज और स्वर्गीय लेडी वेरेंडर के उन मित्रों पर टिकी थी, जो शायद राहेल के कंट्री हाउस के आस-पास रहते हों।

इस अवसर पर, मैं सीधे फ्रिज़िंगहॉल के लिए रवाना हुआ—यह शहर अब मेरे शोध क्षेत्र का केंद्र बिंदु था। मैं शाम को बहुत देर से पहुँचा, इसलिए बेटरएज से संपर्क नहीं कर सका। अगली सुबह, मैंने एक संदेशवाहक को पत्र के साथ भेजा, जिसमें उनसे अनुरोध किया गया था कि वे यथाशीघ्र होटल में मुझसे मिलें।

समय बचाने और बेटरएज की सुविधा के लिए मैंने एहतियात बरतते हुए अपने संदेशवाहक को हवाई जहाज़ में भेजा था। अगर कोई देरी नहीं होती, तो मुझे उम्मीद थी कि मैं उस बूढ़े आदमी से उसके बुलाने के दो घंटे से भी कम समय में मिल जाऊँगा। इस दौरान मैंने जन्मदिन के भोज में मौजूद उन मेहमानों से अपनी पूछताछ शुरू करने का फैसला किया, जिन्हें मैं व्यक्तिगत रूप से जानता था और जो आसानी से मेरे संपर्क में आ सकते थे। ये मेरे रिश्तेदार एबलवाइट्स और श्री कैंडी थे। डॉक्टर ने मुझसे मिलने की विशेष इच्छा जताई थी और डॉक्टर बगल वाली गली में रहते थे। इसलिए मैं सबसे पहले श्री कैंडी के पास गया।

बेटरएज ने मुझे जो बताया था, उसके बाद स्वाभाविक रूप से मुझे डॉक्टर के चेहरे पर उनकी गंभीर बीमारी के कुछ निशान मिलने की उम्मीद थी। लेकिन जब वे कमरे में दाखिल हुए और मुझसे हाथ मिलाया, तो उनमें जो बदलाव मैंने देखा, उसके लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं था। उनकी आँखें बेजान थीं; उनके बाल पूरी तरह से सफेद हो चुके थे; उनका चेहरा झुर्रियों से भरा था; उनका शरीर दुबला-पतला हो गया था। मैंने उस कभी जीवंत, हंसमुख और विनोदी छोटे डॉक्टर को देखा - जो मेरी यादों में सामाजिक रूप से अनुचित व्यवहार करने और अनगिनत बचकाने मज़ाकों के लिए जाने जाते थे - और मुझे उनमें उनके पुराने रूप का कुछ भी नहीं बचा, सिवाय उनके पहनावे में भद्दे दिखावे की पुरानी प्रवृत्ति के। वह आदमी पूरी तरह टूट चुका था; लेकिन उनके कपड़े और गहने - उनमें आए बदलाव का क्रूर मज़ाक उड़ाते हुए - पहले की तरह ही रंगीन और भड़कीले थे।

"मैंने अक्सर आपके बारे में सोचा है, श्रीमान ब्लेक," उन्होंने कहा; "और आपको फिर से देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है। अगर मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूँ, तो कृपया

मेरी सेवाएँ स्वीकार करें, महोदय—कृपया मेरी सेवाएँ स्वीकार करें!"
उन्होंने वे कुछ सामान्य शब्द अनावश्यक जल्दबाजी और उत्सुकता के साथ कहे, और यह जानने की जिज्ञासा के साथ कि मुझे यॉर्कशायर कौन लाया था, जिसे वे पूरी तरह से - मैं कह सकता हूँ कि बचकाने ढंग से - छुपाने में असमर्थ थे।
अपने उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, मैंने पहले से ही यह आवश्यक समझ लिया था कि लोगों को, जिनमें से अधिकतर मेरे लिए अजनबी थे, मेरी जाँच में सहयोग करने के लिए प्रेरित करने से पहले मुझे किसी प्रकार का व्यक्तिगत स्पष्टीकरण देना होगा। फ्रिज़िंगहॉल की यात्रा के दौरान मैंने अपने स्पष्टीकरण की योजना बना ली थी और अब मुझे जो अवसर मिला, मैंने श्री कैंडी पर इसका प्रभाव आज़माने का निर्णय लिया।
मैंने कहा, "मैं कुछ दिन पहले यॉर्कशायर में था, और अब एक खास काम से फिर से यॉर्कशायर में हूँ। श्रीमान कैंडी, यह एक ऐसा मामला है जिसमें स्वर्गीय लेडी वेरिंदर के सभी दोस्तों ने दिलचस्पी दिखाई थी। आपको भारतीय हीरे के रहस्यमय ढंग से गुम होने की घटना याद है, जो लगभग एक साल पहले हुई थी? हाल ही में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई हैं जिनसे उम्मीद जगती है कि हीरा मिल सकता है—और परिवार के सदस्य होने के नाते, मैं इसे ढूंढने में रुचि ले रहा हूँ। मेरे रास्ते में आने वाली बाधाओं में से एक यह है कि मुझे उस समय मिले सभी सबूतों को फिर से इकट्ठा करना होगा, और यदि संभव हो तो और भी अधिक। इस मामले में कुछ ऐसी खास बातें हैं जिनके कारण मुझे मिस वेरिंदर के जन्मदिन की शाम को घर में हुई हर घटना को याद करना जरूरी लगता है। और मैं उनकी स्वर्गीय माता के उन दोस्तों से अपील करता हूँ जो उस अवसर पर उपस्थित थे, कि वे अपनी यादों के जरिए मेरी मदद करें।"
मैं अपने व्याख्यात्मक वाक्यों का अभ्यास करते हुए उस बिंदु तक पहुँच ही गया था, तभी अचानक श्री कैंडी के चेहरे पर स्पष्ट रूप से यह देखकर मैं रुक गया कि उन पर किया गया मेरा प्रयोग पूरी तरह से विफल रहा था।
जब मैं बोल रही थी, तब छोटा डॉक्टर बेचैनी से अपनी उंगलियों के सिरों को कुरेदता रहा। उसकी धुंधली, पानी से भरी आँखें मेरे चेहरे पर टिकी हुई थीं, जिनमें एक खाली और उदास जिज्ञासा का भाव था, जिसे देखना बहुत कष्टदायक था। वह क्या सोच रहा था, यह समझना असंभव था। एक बात जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, वह यह थी कि पहले दो-तीन शब्दों के बाद भी मैं उसका ध्यान आकर्षित करने में असफल रही थी। उसे होश में लाने का एकमात्र उपाय विषय बदलना ही लग रहा था। मैंने तुरंत एक नया विषय शुरू किया।

मैंने प्रसन्नता से कहा, "फ्रिज़िंगहॉल आने के लिए इतना सब कुछ! अब, श्रीमान कैंडी, आपकी बारी है। आपने मुझे गेब्रियल बेटरएज के माध्यम से एक संदेश भेजा था----"
उसने अपनी उंगलियों को कुरेदना बंद कर दिया और अचानक उसका चेहरा खिल उठा।
"हाँ! हाँ! हाँ!" उसने उत्साह से कहा। "बस यही! मैंने आपको संदेश भेजा था!"
"और बेटरएज ने मुझे पत्र लिखकर इसकी सूचना दे दी," मैंने आगे कहा। "जब मैं अगली बार आपके इलाके में आऊँगा, तो आपको मुझसे कुछ कहना होगा। तो, श्रीमान कैंडी, मैं यहाँ हूँ!"
"ये लीजिए!" डॉक्टर ने दोहराया। "और बेटरएज बिल्कुल सही थे। मुझे आपसे कुछ कहना था। यही मेरा संदेश था। बेटरएज एक अद्भुत इंसान हैं। उनकी याददाश्त कमाल की है! इस उम्र में भी उनकी याददाश्त कितनी अद्भुत है!"
वह फिर से चुप हो गया और अपनी उंगलियों को कुरेदने लगा। बेटरएज से बुखार के कारण उसकी याददाश्त पर पड़ने वाले असर के बारे में सुनी बातों को याद करते हुए, मैंने बातचीत जारी रखी, इस उम्मीद में कि शायद मैं उसे याद करने में मदद कर सकूँ।
मैंने कहा, "हम बहुत समय से नहीं मिले हैं। हम आखिरी बार अपनी बेचारी चाची के आखिरी जन्मदिन के भोज में मिले थे।"
“बस यही!” श्री कैंडी चिल्लाए। “जन्मदिन का डिनर!” वे अचानक उठ खड़े हुए और मेरी तरफ देखा। उनके मुरझाए चेहरे पर अचानक गहरा लालिमा छा गई और वे फिर से बैठ गए, मानो उन्हें एहसास हो गया हो कि उन्होंने अपनी उस कमजोरी को उजागर कर दिया है जिसे वे छुपाना चाहते थे। यह स्पष्ट था, बेहद स्पष्ट, कि उन्हें अपनी याददाश्त की कमी का एहसास था और वे इसे अपने दोस्तों से छुपाने पर तुले हुए थे।
अब तक तो उन्होंने सिर्फ मेरी सहानुभूति ही जगाई थी। लेकिन उनके कहे हुए शब्द—भले ही वे थोड़े से ही थे—ने मेरी जिज्ञासा को तुरंत चरम सीमा तक बढ़ा दिया। जन्मदिन का भोज अतीत की वो घटना बन चुका था, जिसे मैं आशा और अविश्वास की मिली-जुली भावनाओं के साथ याद करता था। और अब ये जन्मदिन का भोज स्पष्ट रूप से वो विषय बन गया था जिस पर श्री कैंडी मुझसे कुछ महत्वपूर्ण कहना चाहते थे!
मैंने एक बार फिर उसकी मदद करने की कोशिश की। लेकिन इस बार, मेरे स्वार्थ मेरी दयालुता की भावना के मूल में थे, और उन्होंने मुझे कुछ ज़्यादा ही जल्दबाज़ी में उस लक्ष्य की ओर धकेल दिया जो मैंने तय किया था।

मैंने कहा, "उस सुखद मेज पर बैठे हुए लगभग एक साल हो गया है। क्या आपने अपनी डायरी में या किसी और रूप में, मुझसे जो कहना चाहती थीं, उसका कोई ज्ञापन बनाया है?"
मिस्टर कैंडी ने सुझाव को समझा और मुझे दिखाया कि उन्होंने इसे एक अपमान के रूप में समझा है।
"मुझे किसी ज्ञापन की आवश्यकता नहीं है, श्रीमान ब्लेक," उन्होंने काफी सख्त लहजे में कहा। "मैं अभी इतना बूढ़ा नहीं हुआ हूँ—और मेरी याददाश्त (भगवान का शुक्र है) पूरी तरह भरोसेमंद है!"
यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने यह समझने से इनकार कर दिया कि वह मुझसे नाराज था।
"काश, मैं अपनी याददाश्त के बारे में भी ऐसा ही कह पाता," मैंने जवाब दिया। "जब मैं एक साल पुरानी बातों के बारे में सोचने की कोशिश करता हूँ, तो मेरी याददाश्त उतनी स्पष्ट नहीं होती जितनी मैं चाहता हूँ। उदाहरण के लिए, लेडी वेरेंडर के यहाँ डिनर की बात ही ले लीजिए----"
जैसे ही मैंने उस बात का जिक्र किया, मिस्टर कैंडी का चेहरा फिर से खिल उठा।
"आह! वो डिनर, लेडी वेरेंडर के यहाँ का डिनर!" उसने पहले से कहीं अधिक उत्सुकता से कहा। "मुझे इस बारे में आपसे कुछ कहना है।"
उनकी आँखें एक बार फिर मेरी ओर देख रही थीं, दर्द भरी जिज्ञासा से भरी, इतनी उदास, इतनी खाली, इतनी दयनीय रूप से असहाय। स्पष्ट रूप से वे खोई हुई याददाश्त को वापस लाने की पूरी कोशिश कर रहे थे, लेकिन व्यर्थ ही। "बहुत ही बढ़िया भोजन था," वे अचानक बोल पड़े, मानो वही कह रहे हों जो वे कहना चाहते थे। "बहुत ही बढ़िया भोजन था, मिस्टर ब्लेक, है ना?" उन्होंने सिर हिलाया और मुस्कुराए, और बेचारे, ऐसा लग रहा था जैसे वे सोच रहे हों कि उन्होंने अपनी याददाश्त की पूरी विफलता को अपनी सूझबूझ के सही समय पर इस्तेमाल से छिपाने में सफलता पा ली है।
यह इतना दुखद था कि मैंने तुरंत बातचीत का रुख बदल दिया - हालांकि मुझे उनकी खोई हुई याददाश्त को वापस पाने में गहरी दिलचस्पी थी - और स्थानीय रुचि के विषयों पर बात करने लगा।
यहां, वह बड़ी सहजता से बातें करते रहे। कस्बे के छोटे-मोटे विवाद और झगड़े, जिनमें से कुछ तो एक महीने पुराने थे, उन्हें तुरंत याद आ गए। वे पहले की तरह ही

सहजता से गपशप करते रहे। लेकिन कभी-कभी, अपनी बातूनीपन के चरम पर भी, वे अचानक रुक जाते—एक पल के लिए खाली जिज्ञासा भरी निगाहों से मेरी ओर देखते —खुद को संभालते—और फिर बोलने लगते। मैंने धैर्यपूर्वक अपनी इस पीड़ा को स्वीकार किया (विश्वास से परे, एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो सर्वदेशीय सोच रखता हो, किसी छोटे कस्बे की खबरें चुपचाप सुनना किसी बलिदान से कम नहीं है?) जब तक कि चिमनी पर लगी घड़ी ने मुझे यह नहीं बताया कि मेरी मुलाकात आधे घंटे से अधिक लंबी हो गई है। अब जब मुझे लगा कि मेरा बलिदान पूरा हो गया है, तो मैं विदा लेने के लिए उठ खड़ा हुआ। जैसे ही हमने हाथ मिलाया, श्री कैंडी अपनी मर्जी से जन्मदिन की खुशियों में खो गए।

“मुझे बहुत खुशी है कि हम फिर से मिले,” उन्होंने कहा। “मेरे मन में था—वास्तव में मेरे मन में था, श्रीमान ब्लेक, आपसे बात करने का। लेडी वेरेंडर के यहाँ हुए रात्रिभोज के बारे में, आप जानते हैं? एक सुखद रात्रिभोज—वास्तव में एक सुखद रात्रिभोज था, है ना?”

उस वाक्य को दोहराने पर, ऐसा प्रतीत हुआ कि उसे इस बात का उतना यकीन नहीं था कि वह मुझे अपनी भूलने की बीमारी का संदेह करने से रोक पाया है, जितना उसे पहली बार हुआ था। उसके चेहरे पर फिर से उदासी छा गई: और, मेरे साथ गली के दरवाजे तक जाने का इरादा करने के बाद, उसने अचानक अपना इरादा बदल दिया, नौकर के लिए घंटी बजाई और ड्राइंग रूम में ही रुक गया।

मैं धीरे-धीरे डॉक्टर की सीढ़ियों से नीचे उतरा, और मुझे यह निराशाजनक एहसास हो रहा था कि उन्हें वास्तव में कुछ कहना था जो मेरे लिए सुनना बेहद ज़रूरी था, और नैतिक रूप से वे उसे कहने में असमर्थ थे। यह याद रखने का प्रयास कि वे मुझसे बात करना चाहते थे, स्पष्ट रूप से उनकी कमज़ोर स्मृति का एकमात्र संभव प्रयास था।

जैसे ही मैं सीढ़ियों के नीचे पहुँचा और बाहरी हॉल की ओर जाते हुए एक मोड़ पर मुड़ा, घर के भूतल पर कहीं एक दरवाजा धीरे से खुला और मेरे पीछे से एक कोमल आवाज आई:--

"मुझे खेद है, महोदय, आपको लगता है कि श्री कैंडी काफी बदल गए हैं?"

मैंने पीछे मुड़कर देखा तो खुद को एग्रा जेनिंग्स के सामने पाया।

अध्याय 9

डॉक्टर की सुंदर नौकरानी मेरे लिए इंतज़ार कर रही थी, उसके हाथ में सड़क का दरवाज़ा खुला था। सुबह की तेज़ रोशनी हॉल में फैल रही थी और जब मैंने मुड़कर

मिस्टर कैंडी के सहायक को देखा, तो वह सीधे उनके चेहरे पर पड़ रही थी।
बेटरएज के इस कथन का खंडन करना असंभव था कि आम नज़रिए से देखा जाए तो एज़रा जेनिंग्स का रूप-रंग उनके लिए प्रतिकूल था। उनका बंजारा जैसा रंग, उनके भावहीन गाल, उनकी दुबली-पतली चेहरे की हड्डियाँ, उनकी स्वप्निल आँखें, उनके असाधारण बहुरंगी बाल, उनके चेहरे और शरीर के बीच का वह विरोधाभास जो उन्हें एक साथ बूढ़ा और जवान दिखाता था—ये सभी चीज़ें किसी अजनबी के मन में उनके प्रति नकारात्मक धारणा पैदा करने के लिए ही बनी थीं। फिर भी—जैसा कि मैंने निश्चित रूप से महसूस किया—यह इनकार नहीं किया जा सकता कि एज़रा जेनिंग्स ने मेरे मन में एक ऐसी रहस्यमयी भावना जगाई, जिसका विरोध करना मेरे लिए असंभव था। हालांकि दुनिया के बारे में मेरे ज्ञान ने मुझे आगाह किया कि मुझे उसके द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर देना चाहिए, यह स्वीकार करते हुए कि मैंने वास्तव में श्री कैंडी को दुखद रूप से बदला हुआ पाया, और फिर घर से बाहर निकल जाना चाहिए - एज्रा जेनिंग्स में मेरी रुचि ने मुझे वहीं रोके रखा, और उसे अपने नियोक्ता के बारे में मुझसे निजी तौर पर बात करने का अवसर दिया, जिस पर वह स्पष्ट रूप से नजर रख रहा था।
"क्या आप मेरी तरफ आ रहे हैं, श्रीमान जेनिंग्स?" मैंने कहा, यह देखते हुए कि उन्होंने अपनी टोपी हाथ में पकड़ रखी थी। "मैं अपनी चाची, श्रीमती एबलव्हाइट से मिलने जा रहा हूँ।"
एज्रा जेनिंग्स ने जवाब दिया कि उन्हें एक मरीज को देखना है, और वह मेरी तरफ ही आ रहे हैं।
हम साथ में घर से निकले। मैंने देखा कि सुंदर नौकरानी—जो मेरे जाते समय सुप्रभात कहने पर मुस्कुरा रही थी और बहुत ही मिलनसार थी—को एज़रा जेनिंग्स से एक छोटा सा संदेश मिला, जिसमें उसके लौटने का समय बताया गया था। संदेश में उसके होंठ सिकुड़े हुए थे और आँखें दिखावटी तौर पर इधर-उधर देख रही थीं, मानो उसके चेहरे की ओर देख रही हों। बेचारा घर में किसी का चहेता नहीं था। घर के बाहर, मैंने बेटरएज से सुना था कि वह हर जगह अलोकप्रिय था। "क्या ही ज़िंदगी है!" मैंने मन ही मन सोचा, जब हम डॉक्टर के दरवाजे की सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे।
श्री कैंडी की बीमारी का जिक्र पहले ही कर चुके एज्रा जेनिंग्स अब इस विषय को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी मुझ पर छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्पित प्रतीत हो रहे थे। उनकी चुप्पी ने अर्थपूर्ण ढंग से कहा, "अब आपकी बारी है।" डॉक्टर की बीमारी का जिक्र

करने के मेरे भी अपने कारण थे, और मैंने पहले बोलने की जिम्मेदारी सहर्ष स्वीकार कर ली।
मैंने कहना शुरू किया, "उसमें जो बदलाव मैं देख रहा हूँ, उसे देखते हुए, श्री कैंडी की बीमारी मेरी अपेक्षा से कहीं अधिक गंभीर रही होगी?"
एज्रा जेनिंग्स ने कहा, "यह लगभग एक चमत्कार ही है कि वह इससे बच गया।"
"क्या उसकी याददाश्त आज जितनी अच्छी है, उससे बेहतर कभी नहीं होती? वह मुझसे बात करने की कोशिश कर रहा है----"
"क्या यह कुछ ऐसा था जो उनके बीमार पड़ने से पहले हुआ था?" सहायक ने पूछा, यह देखते हुए कि मैं हिचकिचा रहा था।
"हाँ।"
“उस बीते समय की घटनाओं की उसकी स्मृति बेहद कमजोर हो चुकी है,” एज्रा जेनिंग्स ने कहा। “बेचारे, यह लगभग अफसोस की बात है कि उसका कुछ अंश भी बचा है। हालांकि उसे धुंधली सी याद है कि उसने अपनी बीमारी से पहले क्या योजनाएँ बनाई थीं—कौन सी बातें कहनी या करनी थीं—लेकिन वह यह बिल्कुल याद नहीं कर पा रहा है कि योजनाएँ क्या थीं या उसे क्या कहना या करना था। वह अपनी इस कमी से बुरी तरह वाकिफ है और, जैसा कि आपने देखा होगा, इसे छिपाने के लिए बेहद बेचैन है। अगर वह अतीत को पूरी तरह से भूलकर ठीक हो जाता, तो वह ज्यादा खुश होता। शायद हम सब ज्यादा खुश होते,” उसने उदास मुस्कान के साथ कहा, “अगर हम सब कुछ पूरी तरह से भूल सकें!”
मैंने उत्तर दिया, "निश्चित रूप से सभी मनुष्यों के जीवन में कुछ ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिनकी स्मृति को वे पूरी तरह से खोना नहीं चाहेंगे?"
"मुझे उम्मीद है कि यह बात अधिकांश पुरुषों के बारे में कही जा सकती है, श्री ब्लेक। लेकिन मुझे खेद है कि यह बात सभी के बारे में सच नहीं कही जा सकती। क्या आपके पास यह मानने का कोई कारण है कि श्री कैंडी ने जिस भूली हुई स्मृति को पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया - जब आप अभी उनसे बात कर रहे थे - वह ऐसी स्मृति थी जिसे उनके लिए याद करना आपके लिए महत्वपूर्ण था?"
उन शब्दों को कहते हुए, उन्होंने स्वयं ही उस मुद्दे को छू लिया था जिस पर मैं उनसे परामर्श करने के लिए उत्सुक था। इस अजनबी व्यक्ति में मेरी रुचि ने मुझे सबसे पहले उन्हें मुझसे बात करने का अवसर देने के लिए प्रेरित किया; उनके नियोक्ता के संबंध में अपनी ओर से जो कुछ भी कहना था, उसे मैंने तब तक रोक रखा था जब तक कि

मुझे यह विश्वास न हो जाए कि वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसकी शालीनता और विवेक पर मैं भरोसा कर सकता हूँ। अब तक उन्होंने जो कुछ कहा था, वह मुझे यह विश्वास दिलाने के लिए पर्याप्त था कि मैं एक सज्जन व्यक्ति से बात कर रहा हूँ। उनमें वह सहज आत्मविश्वास था, जिसे मैं न केवल इंग्लैंड में, बल्कि दुनिया के हर सभ्य देश में अच्छे शिष्टाचार का पक्का संकेत कह सकता हूँ। उन्होंने मुझसे जो प्रश्न पूछा, उसके पीछे उनका जो भी उद्देश्य रहा हो, मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि अब तक उनका बिना किसी संकोच के उत्तर देना मेरा उचित था।

मैंने कहा, "मुझे लगता है कि श्री कैंडी की उस भूली हुई याद को खोजने में मेरी गहरी रुचि है, जिसे वे याद नहीं कर पा रहे थे। क्या आप मुझे कोई ऐसा तरीका बता सकते हैं जिससे मैं उनकी याददाश्त को सुधारने में मदद कर सकूँ?"

एज्रा जेनिंग्स ने मेरी ओर देखा, उसकी स्वप्निल भूरी आँखों में अचानक रुचि की एक चमक दिखाई दी।

उन्होंने कहा, "श्री कैंडी की याददाश्त अब किसी भी तरह से ठीक नहीं हो सकती। मैंने उनके ठीक होने के बाद से उनकी याददाश्त को सुधारने की काफी कोशिश की है, इसलिए मैं इस बारे में सकारात्मक रूप से बात कर सकता हूं।"

इससे मुझे निराशा हुई; और मैंने इसे स्वीकार किया।

मैंने कहा, "मैं स्वीकार करता हूँ कि आपने मुझे इससे कम निराशाजनक उत्तर की उम्मीद जगाई थी।"

एज़रा जेनिंग्स मुस्कुराए। "शायद यह अंतिम उत्तर न हो, श्री ब्लेक। श्री कैंडी से सीधे संपर्क किए बिना भी उनकी खोई हुई स्मृति का पता लगाना संभव हो सकता है।"

"सचमुच? क्या यह पूछना मेरी ओर से कोई गलती होगी कि कैसे?"

"बिल्कुल नहीं। आपके प्रश्न का उत्तर देने में मेरी एकमात्र कठिनाई स्वयं को समझाने की कठिनाई है। क्या मैं आप धैर्य की अपेक्षा कर सकता हूँ, यदि मैं एक बार फिर श्री कैंडी की बीमारी का उल्लेख करूँ: और यदि मैं इस बार कुछ पेशेवर विवरणों को छिपाए बिना इसके बारे में बात करूँ?"

"कृपया आगे बोलिए! आपने मुझे पहले ही विवरण सुनने में दिलचस्पी जगा दी है।"

मेरी उत्सुकता ने शायद उसे हंसाया—शायद, मैं कहूँ कि उसे प्रसन्न किया। वह फिर मुस्कुराया। तब तक हम कस्बे के आखिरी घरों को भी पीछे छोड़ चुके थे। एज्रा जेनिंग्स एक पल के लिए रुका और सड़क किनारे की झाड़ी से कुछ जंगली फूल तोड़े। "ये

कितने सुंदर हैं!" उसने सादगी से कहा और मुझे अपना छोटा सा गुलदस्ता दिखाया। "और इंग्लैंड में कितने कम लोग इनकी उतनी सराहना करते हैं जितनी ये हकदार हैं!"
मैंने कहा, "आप हमेशा से इंग्लैंड में नहीं रहे हैं?"
नहीं। मेरा जन्म और पालन-पोषण आंशिक रूप से हमारी एक उपनिवेश में हुआ था। मेरे पिता अंग्रेज थे; लेकिन मेरी माँ—हम अपने विषय से भटक रहे हैं, श्रीमान ब्लेक; और यह मेरी गलती है। सच तो यह है कि मेरा इन छोटे-छोटे, साधारण से झाड़ीनुमा फूलों से गहरा लगाव है—कोई बात नहीं; हम श्रीमान कैंडी की बात कर रहे थे। चलिए श्रीमान कैंडी की बात पर लौटते हैं।
अपने बारे में जो कुछ शब्द उसने अनिच्छा से कहे, और जीवन के प्रति उसके निराशावादी दृष्टिकोण, जिसने उसे मानवीय सुख की शर्तों को अतीत की पूर्ण उपेक्षा में रखने के लिए प्रेरित किया, को जोड़कर देखने पर मुझे यह विश्वास हो गया कि उसके चेहरे पर जो कहानी मैंने पढ़ी थी, वह कम से कम दो बातों में तो बिल्कुल सही थी। उसने इतना कष्ट सहा था जितना बहुत कम लोग सहते हैं; और उसके अंग्रेज़ रक्त में किसी विदेशी नस्ल का मिश्रण था।
“मुझे यकीन है कि आपने श्री कैंडी की बीमारी का असली कारण सुना होगा?” उन्होंने बात फिर शुरू की। “लेडी वेरेंडर की डिनर पार्टी वाली रात बहुत तेज़ बारिश हो रही थी। मेरे मालिक अपनी गाड़ी में बारिश में ही घर लौटे और पूरी तरह भीगकर घर पहुँचे। उन्हें एक मरीज़ का ज़रूरी संदेश मिला, जो उनका इंतज़ार कर रहा था; और दुर्भाग्य से वे कपड़े बदले बिना ही उस बीमार व्यक्ति से मिलने चले गए। उस रात मैं खुद फ्रिज़िंगहॉल से कुछ दूर एक काम में व्यस्त था। अगली सुबह जब मैं लौटा, तो मैंने देखा कि श्री कैंडी का नौकर मुझे अपने मालिक के कमरे में ले जाने के लिए बहुत घबराया हुआ इंतज़ार कर रहा था। तब तक सब कुछ बिगड़ चुका था; बीमारी अपना असर दिखा चुकी थी।”
मैंने कहा, "मुझे इस बीमारी के बारे में सामान्य शब्दों में केवल बुखार के रूप में बताया गया है।"
"मैं इसमें कुछ भी ऐसा नहीं जोड़ सकता जिससे विवरण अधिक सटीक हो जाए," एज्रा जेनिंग्स ने उत्तर दिया। "शुरू से अंत तक बुखार का कोई विशिष्ट रूप नहीं था। मैंने तुरंत शहर में श्री कैंडी के दो चिकित्सक मित्रों को बुलाया, दोनों ही चिकित्सक थे, ताकि वे आकर मुझे इस मामले पर अपनी राय दें। वे मुझसे सहमत थे कि मामला गंभीर लग रहा था; लेकिन वे दोनों ही मेरे उपचार संबंधी दृष्टिकोण से पूरी तरह असहमत थे। रोगी

की नाड़ी से निकाले गए हमारे निष्कर्ष पूरी तरह से भिन्न थे। दोनों डॉक्टरों ने नाड़ी की तीव्र गति के आधार पर तर्क दिया कि उसे धीमा करना ही एकमात्र उपचार है। मेरी ओर से, मैंने नाड़ी की तीव्र गति को स्वीकार किया, लेकिन मैंने इसकी चिंताजनक कमजोरी की ओर भी इशारा किया, जो शरीर की थकावट का संकेत थी और उत्तेजक दवाओं के सेवन की स्पष्ट आवश्यकता को दर्शाती थी। दोनों डॉक्टर उसे दलिया, नींबू पानी, जौ का पानी आदि पर रखने के पक्ष में थे। मैं उसे शैंपेन, ब्रांडी, अमोनिया और कुनैन देने के पक्ष में था। जैसा कि आप देख सकते हैं, यह एक गंभीर मतभेद था! दो प्रतिष्ठित स्थानीय चिकित्सकों और एक अजनबी के बीच, जो केवल अस्पताल में सहायक था, मतभेद था।" शुरुआती कुछ दिनों तक मेरे पास अपने वरिष्ठों और वरिष्ठों की बात मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था; मरीज़ की हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी। मैंने नाड़ी की स्पष्ट, निर्विवाद रूप से स्पष्ट स्थिति का हवाला देते हुए दूसरी बार अपील करने का प्रयास किया। उसकी गति अनियंत्रित थी और उसकी कमज़ोरी बढ़ती जा रही थी। दोनों डॉक्टरों को मेरी हठधर्मिता पर आपत्ति हुई। उन्होंने कहा, 'श्रीमान जेनिंग्स, या तो हम इस मामले को संभालेंगे, या आप। आप क्या चुनेंगे?' मैंने कहा, 'सज्जनों, मुझे सोचने के लिए पाँच मिनट दीजिए, और इस सीधे सवाल का सीधा जवाब मिल जाएगा।' समय समाप्त होते ही, मैं अपने जवाब के साथ तैयार था। मैंने कहा, 'क्या आप उत्तेजक उपचार आज़माने से साफ इनकार करते हैं?' उन्होंने साफ शब्दों में इनकार कर दिया। 'मैं इसे तुरंत आज़माना चाहता हूँ, सज्जनों।' - 'इसे आज़माइए, श्रीमान जेनिंग्स, और हम इस मामले से पीछे हट जाते हैं।' मैंने तहखाने से शैंपेन की एक बोतल मंगवाई; और मैंने अपने हाथ से मरीज को आधा गिलास शैंपेन पिलाया। दोनों चिकित्सक चुपचाप अपनी टोपी उठाकर घर से चले गए।

मैंने कहा, "आपने एक गंभीर जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली थी। आपकी जगह होता तो शायद मैं इससे पीछे हट जाता।"

"मेरी जगह, श्रीमान ब्लेक, आपको याद रहता कि श्रीमान कैंडी ने आपको ऐसी परिस्थितियों में काम पर रखा था, जिनसे आप जीवन भर के लिए उनके ऋणी बन गए थे। मेरी जगह, आप उन्हें पल-पल मरते हुए देखते; और आप कुछ भी जोखिम उठा लेते, बजाय इसके कि धरती पर जिस इकलौते इंसान ने आपका साथ दिया था, उसे अपनी आँखों के सामने मरते हुए देखें। यह मत सोचिए कि मुझे उस भयानक स्थिति का एहसास नहीं था जिसमें मैंने खुद को डाल दिया था! ऐसे क्षण भी थे जब मैंने अपने अकेलेपन की सारी पीड़ा, अपनी भयानक ज़िम्मेदारी के सारे खतरे को महसूस किया।

अगर मैं एक खुशहाल इंसान होता, अगर मैंने एक समृद्ध जीवन जिया होता, तो मुझे विश्वास है कि मैं अपने ऊपर थोपे गए इस काम के बोझ तले दब जाता। लेकिन मेरे पास पीछे मुड़कर देखने के लिए कोई सुखद समय नहीं था, मन की कोई शांति नहीं थी जो मेरी वर्तमान चिंता और अनिश्चितता के विपरीत हो सके - और मैंने इन सबके बावजूद अपने संकल्प पर अडिग रहा। मैंने दिन के मध्य में, जब मेरे मरीज़ की हालत सबसे अच्छी थी, आराम के लिए कुछ समय निकाला। बाकी चौबीस घंटों के लिए, जब तक चूंकि उनकी जान खतरे में थी, इसलिए मैं उनके बिस्तर के पास से कभी नहीं हटा। सूर्यास्त के समय, जैसा कि ऐसे मामलों में अक्सर होता है, बुखार के साथ होने वाला प्रलाप शुरू हो गया। यह लगभग पूरी रात बना रहा; और फिर सुबह के उस भयानक समय—दो बजे से पाँच बजे तक—जब हममें से सबसे स्वस्थ व्यक्ति की भी जीवन शक्ति सबसे कम होती है, तब रुक-रुक कर आता रहा। यही वह समय है जब मृत्यु अपना शिकार सबसे अधिक मात्रा में बनाती है। यही वह समय था जब मृत्यु और मैं उस बिस्तर के लिए आपस में लड़ रहे थे, जिस पर उस व्यक्ति का होना चाहिए था जो उस पर लेटा था। मैंने उस उपचार को जारी रखने में कभी संकोच नहीं किया जिस पर मैंने सब कुछ दांव पर लगा दिया था। जब शराब से फायदा नहीं हुआ, तो मैंने ब्रांडी का सहारा लिया। जब अन्य उत्तेजक पदार्थों का असर खत्म हो गया, तो मैंने खुराक दोगुनी कर दी। अनिश्चितता के एक लंबे अंतराल के बाद—जिसकी मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे फिर कभी न महसूस हो—एक दिन ऐसा आया जब नाड़ी की गति थोड़ी, लेकिन स्पष्ट रूप से कम हो गई; और उससे भी बेहतर, धड़कन में भी बदलाव आया—स्थिरता और मजबूती में एक स्पष्ट परिवर्तन। तब मुझे पता चला कि मैंने उसे बचा लिया है; और मैं स्वीकार करता हूँ कि तब मैं टूट गया। मैंने उस बेचारे का कमजोर हाथ वापस बिस्तर पर रख दिया और फूट-फूट कर रोने लगा। श्री ब्लेक, यह एक भावुक राहत थी—बस इतना ही! शरीर विज्ञान कहता है, और बिल्कुल सही कहता है, कि कुछ पुरुष महिलाओं जैसी शारीरिक बनावट के साथ पैदा होते हैं—और मैं उनमें से एक हूँ!

उन्होंने अपने आंसुओं के लिए बेहद पेशेवर अंदाज में माफी मांगी, शांत और सहज ढंग से बोलते हुए, जैसा कि वे पूरी बातचीत के दौरान बोलते रहे थे। शुरू से अंत तक उनका लहजा और व्यवहार यह दर्शाता था कि वे विशेष रूप से, लगभग अस्वस्थ रूप से, इस बात को लेकर चिंतित थे कि कहीं मैं उनमें दिलचस्पी न लूं।

“आप शायद पूछेंगे कि मैंने आपको इतनी सारी बातें बताकर क्यों परेशान किया?” उन्होंने आगे कहा। “श्री ब्लेक, यही एकमात्र तरीका है जिससे मैं आपको अपनी अगली बात ठीक से समझा सकता हूँ। अब जब आप श्री कैंडी की बीमारी के समय मेरी स्थिति को अच्छी तरह से जान चुके हैं, तो आप आसानी से समझ पाएंगे कि मुझे अपने मन के बोझ को हल्का करने के लिए समय-समय पर कुछ राहत पाने की कितनी सख्त ज़रूरत थी। पिछले कुछ वर्षों से, मैंने अपने पेशे के लोगों के लिए एक किताब लिखने में अपना खाली समय लगाया है—मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र के जटिल और संवेदनशील विषय पर एक किताब। मेरा काम शायद कभी पूरा न हो; और यह निश्चित रूप से कभी प्रकाशित नहीं होगी। फिर भी, यह कई अकेले पलों में मेरी साथी रही है; और इसने मुझे श्री कैंडी के बिस्तर के पास चिंता भरे समय—इंतजार के समय—को बिताने में मदद की। मुझे लगता है मैंने आपको बताया था कि वे प्रलाप कर रहे थे? और मैंने उस समय का भी जिक्र किया था जब उन्हें प्रलाप हुआ था?”
"हाँ।"
"खैर, उस समय मैं अपनी पुस्तक के उस भाग पर पहुँच चुका था, जो प्रलाप के इसी प्रश्न से संबंधित था। मैं इस विषय पर अपने सिद्धांत से आपको अधिक परेशान नहीं करूँगा—मैं केवल वही बताऊँगा जो आपके लिए इस समय जानना आवश्यक है। अपने चिकित्सा अभ्यास के दौरान मुझे अक्सर यह संदेह होता रहा है कि क्या हम प्रलाप के मामलों में यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बोलने की क्षमता का खो जाना, सोचने की क्षमता के खो जाने का भी अनिवार्य अर्थ है। बेचारे श्री कैंडी की बीमारी ने मुझे इस संदेह की जाँच करने का अवसर दिया। मैं संक्षिप्त लेखन की कला जानता हूँ; और मैं रोगी के 'भटकाव' को ठीक वैसे ही लिख पाया जैसे वह उसके मुँह से निकला था।—क्या आप समझ रहे हैं, श्री ब्लेक, कि मैं अंततः किस बात पर आ रहा हूँ?"
मैंने इसे स्पष्ट रूप से देखा और आगे की जानकारी सुनने के लिए बेसब्री से इंतजार किया।
"समय के उतार-चढ़ाव के बीच," एज्रा जेनिंग्स ने आगे कहा, "मैंने अपने संक्षिप्त नोट्स को सामान्य लेखन शैली में पुनः प्रस्तुत किया - टूटे हुए वाक्यों और यहां तक कि अलग-अलग शब्दों के बीच भी पर्याप्त जगह छोड़ी, जैसे वे श्री कैंडी के होठों से असंबद्ध रूप से निकले थे। फिर मैंने इस प्रकार प्राप्त परिणाम को उसी सिद्धांत के अनुसार संसाधित किया, जैसा कि कोई बच्चे की 'पहेली' को सुलझाने में अपनाता है।" शुरुआत में तो सब कुछ उलझन भरा होता है; लेकिन सही रास्ता मिल जाए तो सब

कुछ व्यवस्थित और सुव्यवस्थित हो सकता है। इसी योजना पर चलते हुए, मैंने कागज़ पर हर खाली जगह को उन शब्दों या वाक्यांशों से भर दिया जो उसके दोनों ओर लिखे थे और जिनसे मुझे वक्ता का अर्थ समझ में आया; मैं बार-बार बदलाव करता रहा, जब तक कि मेरे द्वारा जोड़े गए शब्द पहले बोले गए शब्दों के साथ स्वाभाविक रूप से मेल खाने लगे और बाद में बोले गए शब्दों में स्वाभाविक रूप से फिट हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि मैंने न केवल इस तरह से कई खाली और चिंता भरे घंटे बिताए, बल्कि मुझे एक ऐसी चीज़ मिली जो (जैसा कि मुझे लगा) मेरे सिद्धांत की पुष्टि थी। सरल शब्दों में, टूटे हुए वाक्यों को जोड़ने के बाद मैंने पाया कि मेरे मरीज़ के दिमाग में सोचने की श्रेष्ठ क्षमता कमोबेश व्यवस्थित रूप से काम कर रही थी, जबकि अभिव्यक्ति की निम्न क्षमता लगभग पूरी तरह से निष्क्रिय और उलझन में थी।

मैंने उत्सुकता से बीच में टोकते हुए कहा, "एक शब्द!" "क्या उसकी किसी यात्रा में मेरा नाम आया था?"

"आप सुनेंगे, श्रीमान ब्लेक। मैंने अभी जो दावा किया है, उसके लिखित प्रमाणों में—या यूँ कहूँ कि मेरे दावे को साबित करने के लिए किए गए लिखित प्रयोगों में—एक ऐसा प्रमाण है, जिसमें आपका ज़िक्र है। लगभग पूरी रात श्रीमान कैंडी का मन आपके और उनके बीच की किसी बात में उलझा रहा। उनके मुँह से निकले अधूरे शब्द मैंने एक कागज़ पर लिख रखे हैं। और उन शब्दों को जोड़ने वाले मेरे अपने खोजे हुए सूत्र मैंने दूसरे कागज़ पर लिख रखे हैं। गणितज्ञों की भाषा में कहें तो, यह एक बोधगम्य कथन है—पहला, अतीत में वास्तव में किए गए किसी कार्य का; दूसरा, उस कार्य का जिसे श्रीमान कैंडी भविष्य में करने की योजना बना रहे थे, यदि उनकी बीमारी ने उन्हें रोक न दिया होता। सवाल यह है कि क्या यह वही खोई हुई स्मृति है, जिसे उन्होंने आज सुबह आपके आने पर व्यर्थ ही खोजने का प्रयास किया था?"

"इसमें कोई शक नहीं!" मैंने जवाब दिया। "चलिए सीधे वापस चलते हैं और कागजात देखते हैं!"

"बिल्कुल असंभव, मिस्टर ब्लेक।"

"क्यों?"

"एक पल के लिए खुद को मेरी जगह रखकर देखिए," एज्रा जेनिंग्स ने कहा। "क्या आप अपने पीड़ित मरीज और असहाय मित्र के होठों से अनजाने में निकले शब्दों को किसी दूसरे व्यक्ति को बता देंगे, बिना यह जाने कि अपने होंठ खोलने को सही ठहराने की कोई आवश्यकता थी?"

मुझे लगा कि यहाँ उनका जवाब देना असंभव है; लेकिन फिर भी मैंने सवाल पर बहस करने की कोशिश की।
मैंने जवाब दिया, "आपके द्वारा वर्णित इतने संवेदनशील मामले में मेरा आचरण काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगा कि खुलासा मेरे मित्र को नुकसान पहुंचाने वाला है या नहीं।"
“मैंने इस सवाल के उस पहलू पर विचार करने की सारी ज़रूरत बहुत पहले ही खत्म कर दी है,” एज्रा जेनिंग्स ने कहा। “मेरे नोट्स में जहाँ कहीं भी ऐसी कोई बात थी जिसे श्री कैंडी गुप्त रखना चाहते थे, वे नोट्स नष्ट कर दिए गए हैं। मेरे मित्र के बिस्तर के पास किए गए मेरे हस्तलिखित प्रयोगों में अब ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे वे दूसरों को बताने में संकोच करते, अगर उनकी याददाश्त वापस आ जाती। आपके मामले में, मेरे पास यह मानने का हर कारण है कि मेरे नोट्स में कुछ ऐसा है जो वे वास्तव में आपसे कहना चाहते थे।”
"और फिर भी, आप हिचकिचाते हैं?"
"फिर भी, मैं हिचकिचा रहा हूँ। ज़रा उन परिस्थितियों को याद कीजिए जिनके तहत मुझे यह जानकारी मिली! भले ही यह जानकारी हानिरहित है, लेकिन मैं इसे आपको तब तक नहीं दे सकता जब तक आप मुझे यह आश्वस्त न कर दें कि ऐसा करने का कोई कारण है। श्री ब्लेक, वह बहुत बुरी तरह बीमार थे! और वह पूरी तरह से मुझ पर निर्भर थे! क्या यह बहुत बड़ी बात है, अगर मैं आपसे केवल इतना ही अनुरोध करूँ कि आप मुझे यह बता दें कि उस खोई हुई स्मृति में आपकी क्या रुचि है—या आप उस खोई हुई स्मृति को क्या मानते हैं?"
उसके शब्दों और व्यवहार से अपेक्षित स्पष्टता के साथ उसका उत्तर देना, हीरे की चोरी के संदेह को खुले तौर पर स्वीकार करने के समान होता। यद्यपि एज़रा जेनिंग्स ने मेरे मन में उसके प्रति उत्पन्न हुई प्रारंभिक सहज रुचि को प्रबल कर दिया था, फिर भी वह मेरी उस अदम्य अनिच्छा को दूर नहीं कर पाया था जिसके कारण मैं अपनी अपमानजनक स्थिति का खुलासा नहीं कर पा रहा था। मैंने एक बार फिर उन व्याख्यात्मक वाक्यों का सहारा लिया जिनसे मैंने अजनबियों की जिज्ञासा का सामना करने के लिए खुद को तैयार किया था।
इस बार मुझे शिकायत करने का कोई कारण नहीं था कि जिस व्यक्ति से मैंने बात की, उसने ध्यान नहीं दिया। एज़रा जेनिंग्स ने धैर्यपूर्वक, बल्कि उत्सुकता से, मेरी बात सुनी जब तक कि मैंने अपनी बात पूरी नहीं कर ली।

"श्रीमान ब्लेक, मुझे खेद है कि मैंने आपकी उम्मीदें बढ़ा दीं और फिर उन्हें निराश किया," उन्होंने कहा। "श्री कैंडी की बीमारी के पूरे समय के दौरान, शुरू से अंत तक, उन्होंने हीरे के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा। जिस बात को लेकर मैंने उन्हें आपका नाम जोड़ते सुना, उसका मिस वेरेंडर के गहने के खोने या मिलने से कोई संबंध नहीं है, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ।"

जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे, हम एक ऐसी जगह पर पहुँच गए जहाँ से जिस राजमार्ग पर हम चल रहे थे वह दो रास्तों में बँट गया। एक रास्ता श्री एबलव्हाइट के घर की ओर जाता था, और दूसरा लगभग दो-तीन मील दूर एक पहाड़ी गाँव की ओर। एज़रा जेनिंग्स गाँव की ओर जाने वाले रास्ते पर रुक गए।

उन्होंने कहा, "मेरा रास्ता इसी दिशा में है। श्री ब्लेक, मुझे वास्तव में बहुत खेद है कि मैं आपकी किसी काम का नहीं हूं।"

उनकी आवाज़ से मुझे पता चला कि वे सच्चे मन से बोल रहे थे। उनकी कोमल भूरी आँखें कुछ पल के लिए उदासी भरी रुचि के साथ मुझ पर टिकीं। उन्होंने झुककर प्रणाम किया और बिना कुछ कहे गाँव की ओर चल दिए।

एक मिनट से ज़्यादा देर तक मैं वहीं खड़ा रहा और उसे देखता रहा, वो मुझसे दूर जाता जा रहा था; अपने साथ वो चीज़ ले जा रहा था जिसे अब मैं पूरी तरह से अपना सुराग मान रहा था। थोड़ी दूर चलने के बाद वो मुड़ा और पीछे देखा। मुझे वहीं खड़ा देखकर जहाँ हम अलग हुए थे, वो रुक गया, मानो उसे शक हो रहा हो कि कहीं मैं उससे दोबारा बात न करना चाहूँ। मेरे पास अपनी स्थिति पर सोचने का समय नहीं था —खुद को याद दिलाने का कि मैं अपना मौका गँवा रहा हूँ, जो मेरी ज़िंदगी का एक अहम मोड़ हो सकता था, और ये सब सिर्फ़ अपने आत्मसम्मान को खुश करने के लिए! मेरे पास बस इतना ही समय था कि पहले उसे वापस बुलाऊँ और फिर सोचूँ। मुझे लगता है कि मैं सबसे जल्दबाज़ लोगों में से एक हूँ। मैंने उसे वापस बुलाया—और फिर मैंने खुद से कहा, "अब कोई चारा नहीं है। मुझे उसे सच बताना ही होगा!"

वह सीधे अपने कदमों के निशान पर वापस लौट गया। मैं उससे मिलने के लिए सड़क पर आगे बढ़ा।

“श्रीमान जेनिंग्स,” मैंने कहा। “मैंने आपके साथ पूरी तरह से न्याय नहीं किया है। श्री कैंडी की भूली हुई याददाश्त का पता लगाने में मेरी दिलचस्पी मूनस्टोन को बरामद करने में नहीं है। यॉर्कशायर की मेरी यात्रा के पीछे एक गंभीर व्यक्तिगत मामला है। इस मामले में आपसे खुलकर बात न करने का मेरे पास केवल एक ही बहाना है।

किसी को भी अपनी वास्तविक स्थिति बताना मेरे लिए शब्दों में बयां करने से कहीं अधिक कष्टदायक है।”
एज्रा जेनिंग्स ने मेरी तरफ शर्मिंदगी भरे भाव से देखा, जो मैंने उनमें पहली बार देखा था।
"श्रीमान ब्लेक, मुझे आपके निजी मामलों में दखल देने का कोई अधिकार नहीं है और न ही ऐसी कोई इच्छा है," उन्होंने कहा। "कृपया मुझे क्षमा करें, मेरी ओर से, कि मैंने (पूरी तरह से निर्दोष रहते हुए) आपको एक कठिन परीक्षा में डाल दिया।"
मैंने जवाब दिया, "आपको पूरा अधिकार है कि आप श्री कैंडी के बिस्तर के पास सुनी गई बातों को प्रकट करने के लिए अपनी शर्तें तय करें। मैं इस मामले में आपकी संवेदनशीलता को समझता और उसका सम्मान करता हूँ। अगर मैं आपको अपने विश्वास में शामिल नहीं करता, तो मैं आपसे विश्वास की उम्मीद कैसे कर सकता हूँ? आपको पता होना चाहिए, और आपको पता चलेगा, कि श्री कैंडी मुझसे क्या कहना चाहते थे, यह जानने में मेरी रुचि क्यों है। अगर मेरी आशंकाएँ गलत साबित होती हैं, और अगर आप मेरी इच्छा को पूरी तरह से जानते हुए भी मेरी मदद करने में असमर्थ साबित होते हैं, तो मैं अपने रहस्य को गुप्त रखने के लिए आपके सम्मान पर भरोसा करूँगा - और मुझे लगता है कि मेरा भरोसा व्यर्थ नहीं जाएगा।"
"रुको, श्रीमान ब्लेक। मुझे कुछ कहना है, जो आगे बढ़ने से पहले कहना ज़रूरी है।" मैंने हैरानी से उनकी ओर देखा। मानो किसी भयानक भावना ने उन्हें जकड़ लिया हो और उनकी आत्मा को झकझोर दिया हो। उनका घिनौना रंग पीला पड़ गया था; उनकी आँखें अचानक उग्र और चमकीली हो गई थीं; उनकी आवाज़ धीमी, कठोर और दृढ़ हो गई थी, जो मैंने पहली बार सुनी थी। उस व्यक्ति के भीतर छिपी हुई शक्तियाँ, चाहे अच्छी हों या बुरी - उस क्षण यह कहना मुश्किल था कि कौन सी - अचानक प्रकाश की चमक की तरह प्रकट हुईं।
“मुझ पर भरोसा करने से पहले,” उन्होंने आगे कहा, “आपको यह जानना चाहिए, और आपको जानना ही होगा, कि किन परिस्थितियों में मुझे श्री कैंडी के घर में जगह मिली है। इसमें ज़्यादा समय नहीं लगेगा। महोदय, मैं किसी को भी अपनी कहानी नहीं सुनाना चाहता। मेरी कहानी मेरे साथ ही समाप्त हो जाएगी। मैं बस इतना चाहता हूँ कि मुझे वह बताने की अनुमति दी जाए जो मैंने श्री कैंडी को बताई है। यदि यह सुनने के बाद भी आप वही कहने का मन बना लें जो आपने कहने का प्रस्ताव रखा है, तो आप मेरा ध्यान और मेरी सेवाएँ प्राप्त कर लेंगे। क्या हम आगे चलें?”

उसके चेहरे पर दबी हुई पीड़ा ने मुझे चुप कर दिया। मैंने उसके सवाल का जवाब इशारे से दिया। हम आगे बढ़ गए।
कुछ सौ गज आगे बढ़ने के बाद, एज्रा जेनिंग्स उस खुरदरी पत्थर की दीवार में एक दरार के पास रुक गया, जो दलदली भूमि को सड़क से अलग करती थी।
"क्या आपको थोड़ा आराम करने में कोई आपत्ति होगी, श्रीमान ब्लेक?" उन्होंने पूछा। "मैं अब पहले जैसा नहीं रहा—और कुछ बातें मुझे झकझोर देती हैं।"
मैंने तुरंत सहमति दे दी। वह आगे-आगे चलकर उस दर्रे से होते हुए घास के एक टुकड़े तक ले गया, जो सड़क के सबसे नज़दीक झाड़ियों और बौने पेड़ों से घिरा हुआ था, और दूसरी ओर विशाल भूरी बंजर भूमि का भव्य और निर्जन दृश्य प्रस्तुत करता था। पिछले आधे घंटे में बादल घिर आए थे। रोशनी मंद थी; दूरी धुंधली थी। प्रकृति का सुंदर चेहरा हमारे सामने आया, कोमल और निर्मल—बिना किसी मुस्कान के।
हम चुपचाप बैठ गए। एज्रा जेनिंग्स ने अपनी टोपी एक तरफ रख दी और थके हुए अंदाज़ में अपना हाथ माथे पर फेरा, अपने चौंका देने वाले सफ़ेद और काले बालों में उंगलियाँ फिराईं। उन्होंने जंगली फूलों का अपना छोटा सा गुलदस्ता दूर फेंक दिया, मानो उससे जुड़ी यादें अब उन्हें दुख पहुँचा रही हों।
"श्रीमान ब्लेक!" उन्होंने अचानक कहा। "आप बुरे लोगों के साथ हैं। एक भयानक आरोप का साया कई वर्षों से मुझ पर मंडरा रहा है। मैं आपको सीधे-सीधे सबसे बुरी बात बता देता हूँ। मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ जिसका जीवन बर्बाद हो चुका है और जिसका चरित्र पूरी तरह से नष्ट हो चुका है।"
मैंने बोलने की कोशिश की। उसने मुझे रोक दिया।
“नहीं,” उन्होंने कहा। “क्षमा कीजिए; अभी नहीं। सहानुभूति जताने का वादा न करें, जिसे बाद में आपको वापस लेना पड़े। मैंने उस आरोप का जिक्र किया है जो मुझ पर वर्षों से लगा हुआ है। इससे जुड़े कुछ तथ्य मेरे खिलाफ हैं। मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता कि आरोप क्या है। और मैं अपनी बेगुनाही साबित करने में पूरी तरह असमर्थ हूं। मैं केवल अपनी बेगुनाही का दावा कर सकता हूं। महोदय, मैं एक ईसाई होने के नाते शपथ लेकर यह दावा करता हूं। एक इंसान के रूप में अपनी इज्जत का हवाला देना व्यर्थ है।”
वह फिर रुक गया। मैंने उसकी ओर देखा। उसने मेरी ओर देखा ही नहीं। मानो उसका पूरा अस्तित्व यादों की पीड़ा और बोलने के प्रयास में डूबा हुआ था।

“कहने के लिए बहुत कुछ है,” उन्होंने आगे कहा, “मेरे अपने परिवार द्वारा मेरे साथ किए गए निर्मम व्यवहार और उस निर्मम शत्रुता के बारे में जिसका मैं शिकार हुआ हूँ। लेकिन नुकसान हो चुका है; अन्याय का कोई इलाज नहीं है। महोदय, यदि संभव हो तो मैं आपको थकाना या परेशान करना नहीं चाहता। इस देश में अपने करियर की शुरुआत में, जिस घिनौने अपमान का मैंने जिक्र किया है, उसने मुझे एक झटके में और हमेशा के लिए तोड़ दिया। मैंने अपने पेशे की आकांक्षाओं को त्याग दिया—अनाम जीवन ही मेरे लिए एकमात्र आशा बची थी। मैंने उस स्त्री से नाता तोड़ लिया जिससे मैं प्रेम करता था—मैं उसे अपने अपमान का भागीदार कैसे बना सकता था? इंग्लैंड के एक दूरदराज कोने में एक मेडिकल असिस्टेंट का पद मिला। मुझे वह पद मिल गया। इसने मुझे शांति का वादा किया; इसने मुझे अनाम जीवन का वादा किया, जैसा कि मैंने सोचा था। मैं गलत था। बुरी खबर, समय और अवसर के साथ, धैर्यपूर्वक और दूर तक फैलती है। जिस आरोप से मैं भागा था, वह मेरा पीछा करता रहा। मुझे इसके आने की चेतावनी मिल गई थी। मैं स्वेच्छा से अपनी स्थिति छोड़ने में सक्षम था, मैंने जो प्रशंसा पत्र अर्जित किए थे, उन्हीं के बल पर मुझे एक और दूरस्थ जिले में नौकरी मिल गई। समय फिर बीत गया; और एक बार फिर मेरे चरित्र को धूमिल करने वाली बदनामी ने मुझे घेर लिया। इस बार मुझे कोई चेतावनी नहीं दी गई थी। मेरे नियोक्ता ने कहा, 'श्री जेनिंग्स, मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं है; लेकिन आपको अपनी गलती सुधारनी होगी, वरना आप मुझे छोड़ देंगे।' मेरे पास एक ही विकल्प था—मैंने उसे छोड़ दिया। उसके बाद मैंने जो कुछ सहा, उस पर चर्चा करना व्यर्थ है। मैं अब केवल चालीस वर्ष की हूँ। मेरे चेहरे को देखिए, और यह मेरे कुछ दुख भरे वर्षों की कहानी बयां कर देगा। इसका अंत इस जगह भटकते हुए और श्री कैंडी से मुलाकात के साथ हुआ। उन्हें एक सहायक की आवश्यकता थी। योग्यता के प्रश्न पर मैंने उन्हें अपने पिछले नियोक्ता का हवाला दिया। चरित्र का प्रश्न बना रहा। मैंने उन्हें वही बताया जो मैंने आपको बताया है —और उससे भी अधिक। मैंने उन्हें चेतावनी दी कि रास्ते में मुश्किलें हैं, भले ही वे मेरी बात मान लें। मैंने कहा, 'यहाँ भी, और अन्य जगहों पर भी, मैं छद्म नाम से जीने के दोषी बहाने को तुच्छ समझती हूँ: मैं फ्रिज़िंगहॉल में भी उतनी ही असुरक्षित हूँ जितनी अन्य जगहों पर, उस खतरे के साये से जो मेरा पीछा करता है, चाहे मैं कहीं भी जाऊँ।' उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं कोई भी काम अधूरा नहीं छोड़ता—मैं आप पर विश्वास करता हूँ, और मुझे आप पर दया भी आती है। यदि आप जोखिम उठाने को तैयार हैं, तो मैं भी जोखिम उठाऊँगा।' सर्वशक्तिमान ईश्वर उन पर कृपा करें! उन्होंने मुझे आश्रय दिया

है, मुझे रोजगार दिया है, मुझे मन की शांति दी है—और मुझे पूरा विश्वास है (पिछले कुछ महीनों से) कि अब ऐसा कुछ नहीं होगा जिससे उन्हें पछतावा हो।
"क्या बदनामी का सिलसिला खत्म हो गया है?" मैंने कहा।
"बदनामी पहले की तरह ही सक्रिय है। लेकिन जब यह मेरा पीछा करते हुए यहां तक पहुंचेगी, तो बहुत देर हो चुकी होगी।"
"क्या आप उस जगह से चले गए होंगे?"
नहीं, श्रीमान ब्लेक—मैं मर चुका हूँगा। पिछले दस वर्षों से मैं एक लाइलाज आंतरिक रोग से पीड़ित हूँ। मैं आपसे यह नहीं छुपा रहा हूँ कि मैं बहुत पहले ही इस पीड़ा से मर जाना चाहता था, लेकिन जीवन में एक आखिरी इच्छा है, जो मेरे अस्तित्व को मेरे लिए कुछ महत्व देती है। मैं एक ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ व्यवस्था करना चाहता हूँ—जो मुझे बहुत प्रिय है—जिसे मैं फिर कभी नहीं देख पाऊँगा। मेरी अपनी थोड़ी सी पैतृक संपत्ति उसे दुनिया से स्वतंत्र करने के लिए पर्याप्त नहीं है। अगर मैं कुछ समय और जीवित रह पाता, तो इसे एक निश्चित राशि तक बढ़ाने की आशा ने मुझे हर संभव उपाय से इस बीमारी का मुकाबला करने के लिए प्रेरित किया है। मेरे मामले में एकमात्र कारगर उपाय है—अफीम। उस सर्वशक्तिमान और दयालु औषधि का मैं ऋणी हूँ जिसने मुझे मृत्युदंड से कई वर्षों की मोहलत दी है। लेकिन अफीम के गुणों की भी एक सीमा होती है। बीमारी की प्रगति ने धीरे-धीरे मुझे अफीम के उपयोग से इसके दुरुपयोग की ओर धकेल दिया है। आखिरकार मैं इसका परिणाम भुगत रहा हूँ। मेरा तंत्रिका तंत्र मैं पूरी तरह टूट चुका हूँ; मेरी रातें डरावनी हैं। अंत अब दूर नहीं है। आने दो—मैंने व्यर्थ जीवन नहीं जिया और न ही व्यर्थ मेहनत की है। थोड़ी सी रकम लगभग पूरी हो चुकी है; और अगर मेरी आखिरी ताकत भी उम्मीद से पहले खत्म हो जाए, तो मेरे पास इसे पूरा करने के साधन हैं। मुझे खुद भी नहीं पता कि मैं आपको ये सब कैसे बताने लगा। मुझे नहीं लगता कि मैं इतना नीच हूँ कि आपकी दया की भीख मांगूँ। शायद, मुझे लगता है कि आप मुझ पर आसानी से विश्वास कर लेंगे, अगर आपको पता चले कि मैंने जो कुछ भी आपसे कहा है, वो इस पक्के ज्ञान के साथ कहा है कि मैं मर रहा हूँ। श्री ब्लेक, इसमें कोई शक नहीं कि आप मेरी दिलचस्पी के पात्र हैं। मैंने अपने बेचारे दोस्त की याददाश्त खोने को आपके साथ अपने संबंध बेहतर बनाने का जरिया बनाने की कोशिश की है। मैंने इस बात पर विचार किया है कि शायद आपको उसकी बातों को जानने की थोड़ी सी जिज्ञासा हो और मैं उसे शांत कर सकूँ। क्या आपके सामने इस तरह दखल देने का कोई बहाना नहीं है? शायद कोई

बहाना हो। मेरे जैसे जीवन जीने वाले व्यक्ति के जीवन में ऐसे कड़वे पल भी आते हैं जब वह मानव भाग्य पर विचार करता है। आप युवा हैं, स्वस्थ हैं, धनवान हैं, दुनिया में आपका एक स्थान है, आपके सामने उज्ज्वल भविष्य है। आप और आप जैसे लोग मुझे मानव जीवन का उज्ज्वल पक्ष दिखाते हैं, और मुझे उस दुनिया से सामंजस्य बिठाने में मदद करते हैं जिसे मैं छोड़कर जा रहा हूँ। चाहे हमारी यह बातचीत चाहे जैसे भी समाप्त हो, मैं यह नहीं भूलूंगा कि आपने ऐसा करके मुझ पर उपकार किया है। महोदय, यह आप पर निर्भर करता है कि आप क्या कहना चाहते हैं या मुझे सुप्रभात कहें।

उस अपील का मेरे पास केवल एक ही जवाब था। बिना एक पल भी संकोच किए मैंने उसे सच बता दिया, ठीक उसी तरह जैसे मैंने इन पन्नों में बताया है।

वह उठ खड़ा हुआ और जैसे ही मैं अपनी कहानी की मुख्य घटना की ओर बढ़ा, उसने सांस रोककर उत्सुकता से मेरी ओर देखा।

मैंने कहा, "यह निश्चित है कि मैं कमरे में गया था; यह निश्चित है कि मैंने हीरा लिया था। मैं इन दो स्पष्ट तथ्यों का केवल यही खंडन कर सकता हूँ कि चाहे मैं कुछ भी कर लूँ, मैंने यह अनजाने में किया था।"

एज्रा जेनिंग्स ने उत्साह से मेरा हाथ पकड़ लिया।

"रुको!" उसने कहा। "तुमने जितना सोचा है उससे कहीं ज़्यादा संकेत दे दिए हैं। क्या तुम्हें कभी अफ़ीम के सेवन की आदत रही है?"

मैंने इसे अपने जीवन में कभी नहीं चखा।

"क्या पिछले साल इसी समय आपकी नसें असंतुलित थीं? क्या आप असामान्य रूप से बेचैन और चिड़चिड़े थे?"

"हाँ।"

"क्या आपकी नींद खराब हुई?"

"बेहद दयनीय हालत में। कई रातें तो मैं बिल्कुल भी नहीं सो पाया।"

"क्या जन्मदिन की रात एक अपवाद थी? याद करने की कोशिश करो। क्या उस एक मौके पर तुम्हें अच्छी नींद आई थी?"

मुझे याद है! मैं चैन से सोया था।

उसने जितनी अचानक से मेरा हाथ पकड़ा था, उतनी ही अचानक से उसे छोड़ दिया —और मेरी तरफ ऐसे देखा जैसे उसके मन से आखिरी संदेह भी दूर हो गया हो।

“आज का दिन आपके और मेरे जीवन का एक महत्वपूर्ण दिन है,” उन्होंने गंभीरता से कहा। “श्री ब्लेक, मुझे एक बात का पूरा यकीन है—मैंने अपने मरीज़ के बिस्तर के पास बैठकर जो नोट्स लिए थे, उनमें श्री कैंडी आपसे जो कहना चाहते थे, वो सब लिखा है। रुकिए! बात यहीं खत्म नहीं होती। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं यह साबित कर सकता हूँ कि जब आप कमरे में दाखिल हुए और हीरा लिया, तब आपको इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि आप क्या कर रहे हैं। मुझे सोचने और आपसे पूछताछ करने का समय दीजिए। मुझे विश्वास है कि आपकी बेगुनाही साबित करना मेरे हाथ में है!”
"भगवान के लिए, अपनी बात स्पष्ट करो! तुम्हारा मतलब क्या है?"
हमारी बातचीत के जोश में हम कुछ कदम आगे बढ़ गए थे, बौने पेड़ों के उस झुंड से आगे जो अब तक हमें नज़रों से छिपाए हुए था। इससे पहले कि एज़रा जेनिंग्स मुझे जवाब दे पाते, सड़क से एक आदमी ने उन्हें आवाज़ दी, जो बहुत घबराया हुआ था और ज़ाहिर तौर पर उनकी तलाश कर रहा था।
“मैं आ रहा हूँ,” उसने जवाब दिया; “मैं जितनी जल्दी हो सके आ रहा हूँ!” वह मेरी ओर मुड़ा। “सामने वाले गाँव में मेरा एक ज़रूरी काम है; मुझे आधे घंटे पहले ही वहाँ पहुँच जाना चाहिए था—मुझे तुरंत उस पर ध्यान देना होगा। मुझे अभी से दो घंटे का समय दीजिए, और श्री कैंडी के यहाँ फिर से आ जाइए—मैं आपके लिए तैयार रहने का वादा करता हूँ।”
"मैं कैसे इंतज़ार करूँ!" मैंने अधीरता से कहा। "क्या आप हमारे विदा होने से पहले एक शब्द समझाकर मुझे शांत नहीं कर सकते?"
"श्रीमान ब्लेक, यह मामला इतना गंभीर है कि इसे जल्दबाजी में समझाना ठीक नहीं होगा। मैं जानबूझकर आपकी सहनशीलता की परीक्षा नहीं ले रहा हूँ—अगर मैंने अभी इस स्थिति में इसे समझाने की कोशिश की, तो मैं केवल आपकी उत्सुकता को और बढ़ाऊँगा। श्रीमान, फ्रिज़िंगहॉल में, दो घंटे में!"
सड़क पर खड़े उस आदमी ने उसे फिर से आवाज़ दी। वह जल्दी से चला गया और मुझे वहीं छोड़ गया।

अध्याय X

जिस अनिश्चित काल में मुझे अब सजा सुनाई गई थी, उसका मेरी जैसी स्थिति में अन्य लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता, यह मैं नहीं कह सकता। दो घंटे की इस परीक्षा का मेरे स्वभाव पर बस यही प्रभाव पड़ा कि मैं शारीरिक रूप से किसी एक स्थान पर स्थिर

नहीं रह सकता था, और नैतिक रूप से किसी भी व्यक्ति से बात करने में असमर्थ था, जब तक कि मैंने एज़रा जेनिंग्स की सारी बातें न सुन ली हों।
इस मनोदशा में, मैंने न केवल श्रीमती एबलव्हाइट से मिलने की अपनी नियोजित योजना को रद्द कर दिया, बल्कि मैं गैब्रियल बेटरएज से स्वयं मिलने से भी कतराने लगा।
फ्रिज़िंगहॉल लौटकर मैंने बेटरएज के लिए एक नोट छोड़ा, जिसमें मैंने उन्हें बताया कि मुझे अचानक कुछ घंटों के लिए बाहर जाना पड़ा है, लेकिन वे दोपहर तीन बजे के आसपास मेरे लौटने की उम्मीद कर सकते हैं। मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे इस बीच अपने भोजन का ऑर्डर हमेशा की तरह तय समय पर दें और अपनी इच्छानुसार मनोरंजन करें। जैसा कि मैं भली-भांति जानता था, फ्रिज़िंगहॉल में उनके कई मित्र थे; और मेरे होटल लौटने तक वे अपना समय बिताने के लिए पूरी तरह से तैयार रहेंगे।
यह सब हो जाने के बाद, मैंने फिर से शहर से निकलने का सबसे अच्छा रास्ता अपनाया और फ्रिज़िंगहॉल के आसपास के सुनसान दलदली इलाके में तब तक घूमता रहा, जब तक कि मेरी घड़ी ने मुझे यह नहीं बताया कि आखिरकार मिस्टर कैंडी के घर लौटने का समय हो गया है।
मुझे एज्रा जेनिंग्स तैयार और मेरा इंतजार करते हुए मिले।
वह एक छोटे से खाली कमरे में अकेला बैठा था, जो एक कांच के दरवाजे से शल्यचिकित्सा कक्ष से जुड़ा हुआ था। भयानक बीमारियों के विनाशकारी प्रभावों को दर्शाने वाले भद्दे रंगीन चित्र बंजर, हल्के पीले रंग की दीवारों पर सजे हुए थे। एक किताबों की अलमारी, जो पुरानी चिकित्सा पुस्तकों से भरी थी और जिसके शीर्ष पर मूर्ति के स्थान पर एक खोपड़ी सजी थी; स्याही से सना एक बड़ा सा मेज; रसोई और झोपड़ियों में दिखने वाली लकड़ी की कुर्सियाँ; फर्श के बीचोंबीच एक जर्जर कालीन; एक पानी का सिंक, एक बेसिन और दीवार में बेतरतीब ढंग से लगा हुआ एक अपशिष्ट पाइप, जो शल्यक्रियाओं से इसके संबंध का भयावह संकेत देता था—कमरे का यही सारा फर्नीचर था। खिड़की के बाहर गमलों में रखे कुछ फूलों पर मधुमक्खियाँ भिनभिना रही थीं; बगीचे में पक्षी गा रहे थे, और पास के किसी घर से आती हुई बेसुरा पियानो की हल्की झंकार बीच-बीच में कानों में पड़ रही थी। किसी और जगह पर, ये रोज़मर्रा की आवाज़ें बाहर की दुनिया की सुखद झलक दे सकती थीं। यहां, वे उस सन्नाटे में घुसपैठिए बनकर आए थे जिसे मानवीय पीड़ा के अलावा किसी और चीज़ को भंग करने का अधिकार नहीं था। मैंने महोगनी के वाद्य यंत्र के डिब्बे और किताबों की

अलमारियों पर अपनी-अपनी जगह घेरे हुए रुई के बड़े से रोल को देखा और एज़रा जेनिंग्स के कमरे के रोज़मर्रा के इस्तेमाल से परिचित और उपयुक्त लगने वाली आवाज़ों के बारे में सोचकर भीतर ही भीतर सिहर उठा।

“श्रीमान ब्लेक, जिस जगह पर मैं आपका स्वागत कर रहा हूँ, उसके लिए मुझे कोई खेद नहीं है,” उन्होंने कहा। “दिन के इस समय, घर में यही एक कमरा है जहाँ हम निश्चिंत होकर रह सकते हैं कि हमें कोई परेशान नहीं करेगा। ये रहे मेरे कागजात आपके लिए तैयार हैं; और ये दो किताबें हैं जिन्हें हम बातचीत खत्म होने से पहले देख सकते हैं। अपनी कुर्सी मेज के पास ले आइए, ताकि हम साथ मिलकर इन किताबों को देख सकें।”

मैं मेज के पास पहुँचा; और एज़रा जेनिंग्स ने मुझे अपने हस्तलिखित नोट्स सौंप दिए। उनमें कागज़ के दो बड़े पन्ने थे। एक पन्ने पर केवल कुछ-कुछ लिखावट थी। दूसरे पन्ने पर लाल और काली स्याही से लिखावट थी, जो पूरे पृष्ठ को ऊपर से नीचे तक भर रही थी। उस समय मेरी जिज्ञासा इतनी तीव्र थी कि मैंने निराशा में दूसरा पन्ना एक तरफ रख दिया।

"मुझ पर थोड़ी दया करो!" मैंने कहा। "इसे पढ़ने से पहले मुझे बताओ कि मुझे क्या उम्मीद करनी चाहिए।"

"कृपया, श्रीमान ब्लेक! क्या आपको एक-दो और प्रश्न पूछने में कोई आपत्ति है?"

आप मुझसे जो चाहें पूछ सकते हैं!

उसने अपने होठों पर उदास मुस्कान और अपनी कोमल भूरी आँखों में दयालु रुचि के साथ मेरी ओर देखा।

उन्होंने कहा, "तुम मुझे पहले ही बता चुके हो कि तुम्हें अपनी जानकारी के अनुसार जीवन में कभी अफीम का स्वाद नहीं चखा है।"

"मेरी जानकारी के अनुसार," मैंने दोहराया।

"आप तुरंत समझ जाएंगे कि मैं इस तरह संकोच से क्यों बोल रहा हूँ। चलिए आगे बढ़ते हैं। आपको इस बात का कोई आशय नहीं है कि आपने कभी अफीम का सेवन किया है। पिछले साल इसी समय आप तंत्रिका संबंधी परेशानी से पीड़ित थे और रात को आपकी नींद बहुत खराब थी। लेकिन जन्मदिन की रात, इस नियम का अपवाद था - आप चैन से सोए। क्या मैं अब तक सही हूँ?"

"बिलकुल सही!"

"क्या आप इस तंत्रिका संबंधी पीड़ा और नींद की कमी का कोई कारण बता सकते हैं?"
"मैं इसका कोई कारण नहीं बता सकता। मुझे याद है कि ओल्ड बेटरएज ने कारण का अनुमान लगाया था। लेकिन उसका जिक्र करना शायद ही उचित है।"
"माफ़ कीजिए। ऐसे मामले में हर बात का ज़िक्र करना ज़रूरी है। बेटरएज ने आपकी अनिद्रा का कारण कुछ बताया है। क्या कारण?"
"मैंने धूम्रपान छोड़ दिया।"
"क्या आप नियमित रूप से धूम्रपान करते थे?"
"हाँ।"
"क्या आपने यह आदत अचानक छोड़ दी?"
"हाँ।"
"बेटरएज बिल्कुल सही थे, श्री ब्लेक। जब धूम्रपान एक आदत बन जाती है, तो कोई भी व्यक्ति सामान्य शारीरिक स्थिति का नहीं हो सकता जो इसे अचानक छोड़े बिना अपने तंत्रिका तंत्र को अस्थायी रूप से नुकसान पहुंचाए बिना रह सके। मेरी राय में, आपकी रातों की नींद हराम होने का कारण स्पष्ट है। मेरा अगला प्रश्न श्री कैंडी से संबंधित है। क्या आपको याद है कि जन्मदिन के भोज में या उसके बाद उनके पेशे के विषय पर आपका उनसे किसी प्रकार का विवाद हुआ था?"
इस सवाल ने जन्मदिन के उत्सव से जुड़ी मेरी एक दबी हुई याद को तुरंत जगा दिया। उस अवसर पर श्री कैंडी और मेरे बीच जो मूर्खतापूर्ण झगड़ा हुआ था, उसका विस्तृत वर्णन बेटरएज की कथा के दसवें अध्याय में मिलेगा। उस झगड़े का जो विवरण वहाँ दिया गया था—क्योंकि मैंने बाद में इसके बारे में ज़्यादा नहीं सोचा था—वह मेरी याददाश्त से बिल्कुल गायब हो गया। अब मुझे बस इतना ही याद था, और मैं एज़रा जेनिंग्स को बस इतना ही बता सकता था, कि मैंने खाने की मेज पर चिकित्सा के विषय पर इतनी जल्दबाजी और ज़िद से हमला किया था कि श्री कैंडी भी कुछ पल के लिए नाराज़ हो गए थे। मुझे यह भी याद था कि लेडी वेरेंडर ने झगड़ा रोकने के लिए हस्तक्षेप किया था, और उस छोटे डॉक्टर और मैंने, जैसा कि बच्चे कहते हैं, "फिर से सुलह कर ली थी", और उस रात हाथ मिलाने से पहले हम पहले की तरह अच्छे दोस्त बन गए थे।
"एक और बात है," एज्रा जेनिंग्स ने कहा, "जो मुझे जानना बहुत ज़रूरी है। क्या पिछले साल इसी समय आपको डायमंड को लेकर कोई विशेष चिंता महसूस करने का कोई

कारण था?"
"हीरे को लेकर चिंतित होने के मेरे पास सबसे मजबूत कारण थे। मैं जानती थी कि यह एक साजिश का हिस्सा है; और मुझे चेतावनी दी गई थी कि पत्थर की मालकिन होने के नाते, मिस वेरेंडर की सुरक्षा के लिए उपाय करूं।"
"क्या जन्मदिन की रात सोने से ठीक पहले आपके और किसी अन्य व्यक्ति के बीच डायमंड की सुरक्षा के बारे में बातचीत हुई थी?"
"यह लेडी वेरेंडर और उनकी बेटी के बीच हुई बातचीत का विषय था----"
"जो आपकी सुनवाई में हुआ?"
"हाँ।"
एज्रा जेनिंग्स ने मेज से अपने नोट्स उठाए और मेरे हाथों में रख दिए।
“श्रीमान ब्लेक,” उन्होंने कहा, “यदि आप अब उन नोट्स को पढ़ेंगे, तो मेरे प्रश्नों और आपके उत्तरों से जो प्रकाश उन पर पड़ा है, उससे आपको अपने बारे में दो चौंकाने वाली बातें पता चलेंगी। आपको पता चलेगा—पहला, कि आप अफीम के प्रभाव से बेहोशी की हालत में मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष में गए और हीरा ले लिया। दूसरा, कि अफीम आपको श्री कैंडी ने—आपकी जानकारी के बिना—जन्मदिन के भोज में आपके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों का खंडन करने के लिए दी थी।”
मैं कागजों को हाथ में लिए पूरी तरह से स्तब्ध होकर बैठा रहा।
सहायक ने नरमी से कहा, "कृपया बेचारे श्री कैंडी को क्षमा कर दीजिए। मैं मानता हूँ कि उन्होंने बहुत बड़ी गलती की है; लेकिन उन्होंने अनजाने में ऐसा किया है। अगर आप नोट देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि अगर वे बीमार न होते, तो वे पार्टी के अगले दिन सुबह लेडी वेरेंडर के घर लौट आते और आपके साथ किए गए धोखे को स्वीकार कर लेते। मिस वेरेंडर को इसकी खबर लग जाती और वे उनसे पूछताछ करतीं—और एक साल से छिपा हुआ सच एक ही दिन में सामने आ जाता।"
मैंने धीरे-धीरे खुद पर काबू पाया। मैंने गुस्से से कहा, "मिस्टर कैंडी मेरी नाराजगी की सीमा से बाहर हैं। लेकिन उन्होंने मेरे साथ जो चाल चली है, वह धोखे से कम नहीं है। मैं उन्हें माफ तो कर सकती हूँ, लेकिन भूल नहीं सकती।"
श्री ब्लेक, हर चिकित्सक अपने पेशे के दौरान ऐसी विश्वासघाती हरकतें करता है। (इंग्लैंड में) अफीम के प्रति अज्ञानतापूर्ण अविश्वास केवल निम्न और कम पढ़े-लिखे वर्गों तक ही सीमित नहीं है। बड़े पैमाने पर प्रैक्टिस करने वाला हर डॉक्टर कभी न कभी अपने मरीजों को धोखा देने के लिए मजबूर हो जाता है, जैसा कि श्री कैंडी ने आपको

धोखा दिया। मैं इन परिस्थितियों में आपके साथ किए गए इस धोखे को सही नहीं ठहराता। मैं केवल आपसे आग्रह करता हूं कि आप इसके पीछे के इरादों को अधिक सटीक और अधिक सहानुभूतिपूर्ण ढंग से समझें।
मैंने पूछा, "यह कैसे हुआ? मुझे बिना बताए किसने लाउडैनम दिया?"
"मैं आपको नहीं बता सकता। श्री कैंडी ने अपनी बीमारी के दौरान इस मामले से संबंधित एक भी बात नहीं कही। शायद आपकी याददाश्त से ही आपको संदेह का पता चल सके।"
"नहीं।"
"ऐसे में, इस मामले की जांच करना व्यर्थ है। लाउडैनम आपको किसी गुप्त तरीके से दिया गया था। चलिए इसे यहीं छोड़ देते हैं और अधिक महत्वपूर्ण मामलों पर ध्यान देते हैं। यदि संभव हो तो मेरे नोट्स पढ़ लें। अतीत में जो कुछ हुआ है, उससे खुद को परिचित कर लें। मैं आपको भविष्य से संबंधित एक बहुत ही साहसिक और चौंकाने वाली बात बताना चाहता हूँ।"
उन आखिरी शब्दों ने मुझे झकझोर दिया।
मैंने कागज़ों को उसी क्रम में देखा जिस क्रम में एज़रा जेनिंग्स ने उन्हें मेरे हाथों में रखा था। जिस कागज़ पर कम लिखावट थी, वह दोनों में सबसे ऊपर था। इस पर, श्री कैंडी के प्रलाप में निकले हुए असंबद्ध शब्द और वाक्यों के खंड इस प्रकार दिखाई दे रहे थे:
"... श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक ... और मिलनसार ... थोड़ा निराश ... दवा ... कबूल करता है ... रात को नींद ... उसे बताओ ... गड़बड़ ... दवा ... वह मुझे बताता है ... और अंधेरे में टटोलना एक ही बात है ... खाने की मेज पर सभी लोग ... मैं कहता हूँ ... नींद के लिए टटोलना ... दवा के सिवा कुछ नहीं ... वह कहता है ... अंधों को रास्ता दिखाना ... जानते हो इसका क्या मतलब है ... मजाकिया ... अपने दांतों के बावजूद रात का आराम ... नींद चाहता है ... लेडी वेरेंडर की दवाइयों की पेटी ... पच्चीस मिनिम्स ... बिना उसकी जानकारी के ... कल सुबह ... अच्छा, श्रीमान ब्लेक ... आज दवा ... कभी नहीं ... इसके बिना ... बाहर, श्रीमान कैंडी ... उत्कृष्ट ... इसके बिना ... उस पर नीचे ... सच्चाई ... इसके अलावा कुछ ... उत्कृष्ट ... लाउडैनम की खुराक, महोदय ... बिस्तर ... क्या ... अब दवा।"
वहाँ, कागज़ के दो पन्नों में से पहला पन्ना समाप्त हो गया। मैंने उसे एज़रा जेनिंग्स को वापस दे दिया।
"क्या तुमने उसके बिस्तर के पास यही सुना?" मैंने कहा।

“मैंने जो सुना, ठीक वही लिखा है,” उन्होंने उत्तर दिया—“बस फर्क इतना है कि मेरे संक्षिप्त नोट्स से दोहराव यहाँ नहीं लिखे गए हैं। उन्होंने कुछ शब्दों और वाक्यांशों को एक दर्जन बार, पचास बार दोहराया, ठीक वैसे ही जैसे वे उन शब्दों से जुड़े विचार को कम या ज्यादा महत्व देते थे। इस लिहाज से, उन दोहरावों ने मुझे उन टुकड़ों को जोड़ने में कुछ हद तक मदद की। यह मत समझिए,” उन्होंने कागज के दूसरे पन्ने की ओर इशारा करते हुए कहा, “कि मैंने उन भावों को हूबहू लिख दिया है जो श्री कैंडी स्वयं बोलते यदि वे सुसंगत रूप से बोलने में सक्षम होते। मैं बस इतना कह रहा हूँ कि मैंने असंबद्ध अभिव्यक्ति की बाधा को पार करते हुए उस विचार तक पहुँच गया हूँ जो हर समय उसके पीछे सुसंगत रूप से निहित था। आप खुद ही फैसला कीजिए।”
मैंने कागज की दूसरी शीट की ओर रुख किया, जिसे अब मैं पहली शीट की कुंजी के रूप में जानता था।
एक बार फिर, श्री कैंडी के विचार काले रंग की स्याही से लिखे हुए दिखाई दिए; वाक्यों के बीच के अंतराल को एज्रा जेनिंग्स ने लाल स्याही से भरा था। मैं यहाँ उसी सरल रूप में इसे प्रस्तुत कर रहा हूँ; मूल भाषा और उसकी व्याख्या इन पृष्ठों में इतनी निकटता से मौजूद हैं कि इनकी आसानी से तुलना और पुष्टि की जा सकती है।
श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक चतुर और मिलनसार हैं, लेकिन जब वे दवाइयों की बात करते हैं तो उन्हें थोड़ा सबक सिखाने की ज़रूरत है। वे स्वीकार करते हैं कि उन्हें रात को नींद नहीं आती। मैं उनसे कहता हूँ कि उनकी नसें ठीक नहीं हैं और उन्हें दवा लेनी चाहिए। वे मुझसे कहते हैं कि दवा लेना और अंधेरे में भटकना एक ही बात है। यह सब उन्होंने खाने की मेज पर बैठे सभी लोगों के सामने कहा। मैं उनसे कहता हूँ, आप नींद के पीछे भटक रहे हैं, और दवा के सिवा कोई और चीज़ आपको नींद नहीं दिला सकती। वे मुझसे कहते हैं, मैंने अंधे को अंधे का रास्ता दिखाते हुए सुना है, और अब मुझे इसका मतलब समझ आ गया है। मज़ाकिया बात है—लेकिन मैं उनकी ज़िद के बावजूद उन्हें रात की नींद दिला सकता हूँ। उन्हें सच में नींद की ज़रूरत है; और लेडी वेरेंडर की दवाइयों की पेटी मेरे पास है। आज रात उन्हें बिना बताए पच्चीस मिनिम लाउडैनम दे दीजिए; और फिर कल सुबह उनसे मिलिए। 'अच्छा, श्रीमान ब्लेक, क्या आप आज थोड़ी सी दवा लेकर देखेंगे? आप इसके बिना कभी नहीं सोएँगे।' "यह लो, मिस्टर कैंडी: मैंने इसके बिना बहुत अच्छी नींद ली है।" फिर, उनसे सच कहो! "आपने अच्छी नींद के अलावा कुछ और भी लिया है; आपने सोने से पहले लाउडैनम की एक खुराक ली थी, महोदय। अब आप चिकित्सा के बारे में क्या कहते हैं?"

गूंथ के उलझे हुए गुच्छे से इतनी चिकनी और परिष्कृत बनावट बुनने में जिस कुशलता का परिचय हुआ था, वह स्वाभाविक रूप से एज़रा जेनिंग्स को पांडुलिपि सौंपते ही मेरे मन में आया। मेरे आश्चर्य के शुरुआती कुछ शब्दों को ही उन्होंने विनम्रतापूर्वक रोकते हुए मुझसे पूछा कि क्या उनके नोट्स से निकला निष्कर्ष वही है जिस पर मैं भी पहुंचा हूं।

"क्या आप भी मेरी तरह मानते हैं," उसने कहा, "कि मिस वेरिंदर के जन्मदिन की रात, लेडी वेरिंदर के घर में आपने जो कुछ भी किया, वह सब लाउडैनम के प्रभाव में किया था?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं लाउडैनम के प्रभाव के बारे में इतना अज्ञानी हूँ कि अपनी कोई राय नहीं दे सकता। मैं केवल आपकी राय का अनुसरण कर सकता हूँ और मुझे पूरा विश्वास है कि आप सही हैं।"

"बहुत खूब। अगला सवाल यह है। आप आश्वस्त हैं; मैं भी आश्वस्त हूं—तो हम अपनी इस दृढ़ विश्वास को अन्य लोगों के मन तक कैसे पहुंचाएंगे?"

मैंने हमारे बीच मेज पर पड़ी दो पांडुलिपियों की ओर इशारा किया। एज़्रा जेनिंग्स ने अपना सिर हिलाया।

"बेकार, श्रीमान ब्लेक! तीन अकाट्य कारणों से ये बिल्कुल बेकार हैं। पहली बात तो ये है कि ये नोट्स ऐसी परिस्थितियों में लिए गए हैं जो आम जनता के अनुभव से बिल्कुल परे हैं। सबसे पहले तो, ये उनके खिलाफ हैं! दूसरी बात, ये नोट्स एक चिकित्सा और आध्यात्मिक सिद्धांत को दर्शाते हैं। एक बार फिर, इनके खिलाफ! तीसरी बात, ये नोट्स मैंने लिखे हैं; इनके मनगढ़ंत न होने की गारंटी देने के लिए मेरे दावे के अलावा और कुछ नहीं है। याद कीजिए मैंने आपको मैदान में क्या कहा था—और खुद से पूछिए कि मेरे दावे की क्या कीमत है। नहीं! बाहरी दुनिया के फैसले को देखते हुए मेरे नोट्स का केवल एक ही मूल्य है। आपकी निर्दोषता साबित होनी है; और ये दिखाते हैं कि यह कैसे किया जा सकता है। हमें अपने विश्वास को साबित करना होगा—और आप ही वह व्यक्ति हैं जो इसे साबित कर सकते हैं!"

मैंने पूछा, "कैसे?"

वह उत्सुकता से मेज के उस पार मेरी ओर झुक गया, जो हम दोनों को अलग करती थी।

"क्या आप एक साहसिक प्रयोग करने के लिए तैयार हैं?"

"मुझ पर लगे संदेह से खुद को मुक्त करने के लिए मैं कुछ भी करूंगा।"

"क्या आप कुछ समय के लिए व्यक्तिगत असुविधा सहन करने को तैयार हैं?"
"किसी भी असुविधा के लिए, चाहे वह कुछ भी हो।"
क्या आप मेरी सलाह को आँख बंद करके मानेंगे? इससे आप मूर्खों के उपहास का पात्र बन सकते हैं; इससे आपको उन मित्रों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है जिनकी राय का सम्मान करना आपका कर्तव्य है।
"मुझे बताओ क्या करना है!" मैंने अधीरता से कहा। "और चाहे कुछ भी हो जाए, मैं वही करूंगा।"
"आपको यह करना होगा, श्रीमान ब्लेक," उसने उत्तर दिया। "आपको दूसरी बार, अनजाने में, उन गवाहों की उपस्थिति में हीरा चुराना होगा जिनकी गवाही निर्विवाद है।"
मैं उठने की कोशिश करने लगा। मैंने बोलने की कोशिश की। मैं बस उसे देखता रह गया।
“मुझे विश्वास है कि यह हो सकता है,” उन्होंने आगे कहा। “और यह हो जाएगा—अगर आप मेरी मदद करेंगे। शांत हो जाइए—बैठ जाइए और मेरी बात सुनिए। आपने सिगरेट पीना फिर से शुरू कर दिया है; मैंने खुद देखा है। आपने कब से ऐसा करना शुरू किया है?”
"लगभग एक साल से।"
"क्या आप पहले से ज्यादा या कम धूम्रपान करते हैं?"
"अधिक।"
"क्या तुम इस आदत को फिर से छोड़ दोगे? एकदम अचानक! ठीक वैसे ही जैसे तुमने पहले छोड़ा था।"
मुझे उसकी मंशा धीरे-धीरे समझ आने लगी। मैंने जवाब दिया, "मैं इसे इसी क्षण से छोड़ देता हूँ।"
“अगर वही परिणाम दोहराए जाएं जो पिछले जून में हुए थे,” एज्रा जेनिंग्स ने कहा —“अगर आपको फिर से उसी तरह रातों की नींद हराम होने का कष्ट सहना पड़े, तो हम अपनी पहली सफलता प्राप्त कर लेंगे। हम आपको फिर से उस स्थिति में ला देंगे जो आपके जन्मदिन की रात आपकी घबराहट भरी हालत से मिलती-जुलती होगी। अगर हम आपके आस-पास के घरेलू माहौल को फिर से सामान्य या लगभग सामान्य कर सकें; और अगर हम आपके मन को हीरे से जुड़े उन विभिन्न प्रश्नों में फिर से उलझा सकें, जिन्होंने पहले उसे बेचैन कर रखा था, तो हम आपको शारीरिक और

मानसिक रूप से लगभग उसी स्थिति में वापस ला देंगे, जिसमें अफीम ने आपको पिछले साल पाया था। उस स्थिति में हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि खुराक को दोहराने से कम या ज्यादा हद तक वही परिणाम दोहराया जाएगा। ये मेरा प्रस्ताव है, जिसे मैंने कुछ जल्दबाजी भरे शब्दों में व्यक्त किया है। अब आप देखेंगे कि इसे कहने के मेरे क्या कारण हैं।”

उसने अपने बगल में रखी किताबों में से एक की ओर रुख किया और उसे एक छोटे से कागज के टुकड़े से चिह्नित स्थान पर खोला।

उन्होंने कहा, "यह मत सोचिए कि मैं आपको शरीर क्रिया विज्ञान पर व्याख्यान देकर थका दूंगा। मैं हम दोनों के हित में यह साबित करना अपना कर्तव्य समझता हूं कि मैं आपसे यह प्रयोग किसी मनगढ़ंत सिद्धांत के आधार पर करने को नहीं कह रहा हूं। स्वीकृत सिद्धांत और मान्यता प्राप्त प्राधिकारी मेरे इस दृष्टिकोण को सही ठहराते हैं। कृपया मुझे पांच मिनट का समय दीजिए; और मैं आपको यह साबित कर दूंगा कि विज्ञान मेरे इस प्रस्ताव का समर्थन करता है, चाहे यह कितना भी अटपटा क्यों न लगे। सबसे पहले, यहां वह शारीरिक सिद्धांत है जिस पर मैं यह प्रयोग कर रहा हूं, जिसे डॉ. कारपेंटर जैसे विद्वान ने प्रतिपादित किया है। इसे स्वयं पढ़ लीजिए।"

उसने मुझे वह पर्ची दी जिस पर पुस्तक में वह स्थान अंकित था। उस पर कुछ पंक्तियाँ लिखी थीं, जो इस प्रकार हैं:--

"इस बात पर विश्वास करने के लिए पर्याप्त आधार प्रतीत होता है कि प्रत्येक संवेदी अनुभूति, जिसे एक बार चेतना द्वारा पहचान लिया जाता है, मस्तिष्क में दर्ज हो जाती है (एक तरह से), और बाद में किसी समय पुनरुत्पादित हो सकती है, भले ही इस पूरे मध्यवर्ती काल के दौरान मन में इसके अस्तित्व की कोई चेतना न हो।" "क्या यह बात अब तक स्पष्ट है?" एज्रा जेनिंग्स ने पूछा।

"बिल्कुल सादा।"

उसने खुली किताब को मेज पर मेरी ओर सरका दिया और पेंसिल से खींची गई रेखाओं वाले एक अंश की ओर इशारा किया।

“अब,” उन्होंने कहा, “उस मामले का विवरण पढ़िए, जिसका—जैसा कि मेरा मानना है—आपके अपने मामले और उस प्रयोग से सीधा संबंध है जिसे मैं आपको करने के लिए प्रेरित कर रहा हूँ। श्री ब्लेक, शुरू करने से पहले ध्यान दें कि मैं अब आपको इंग्लैंड के एक महान शरीरक्रियाविज्ञानी के संदर्भ में बता रहा हूँ। आपके हाथ में जो

पुस्तक है वह डॉक्टर इलियटसन की 'मानव शरीरक्रिया विज्ञान' है; और डॉक्टर द्वारा उद्धृत मामला श्री कॉम्ब के सुप्रसिद्ध प्रमाण पर आधारित है।"
मुझे जिस अंश की ओर ध्यान दिलाया गया था, उसे इन शब्दों में व्यक्त किया गया था:-
-
श्री कॉम्ब कहते हैं, "डॉ. एबेल ने मुझे एक गोदाम में काम करने वाले एक आयरिश कुली के बारे में बताया, जो होश में आने पर भूल जाता था कि उसने नशे में क्या किया था; लेकिन नशे में होने पर उसे अपने नशे की पिछली घटनाओं की याद आ जाती थी। एक बार नशे में उसने एक कीमती पार्सल खो दिया था, और होश में आने पर वह इसका कोई हिसाब नहीं दे सका। अगली बार जब वह नशे में था, तो उसे याद आया कि उसने पार्सल एक घर में छोड़ा था, और उस पर कोई पता न होने के कारण वह वहाँ सुरक्षित पड़ा रहा, और उसके बुलाने पर उसे मिल गया।"
"फिर से सादा?" एज्रा जेनिंग्स ने पूछा।
"जितना स्पष्ट होना आवश्यक हो।"
उसने कागज की पर्ची को वापस उसकी जगह पर रख दिया और किताब बंद कर दी।
"क्या आप इस बात से संतुष्ट हैं कि मैंने बिना किसी ठोस प्रमाण के कुछ नहीं कहा है?" उन्होंने पूछा। "यदि नहीं, तो मुझे बस उन किताबों की अलमारियों तक जाना होगा, और आपको बस उन अंशों को पढ़ना होगा जिन्हें मैं आपको दिखा सकता हूँ।"
मैंने कहा, "मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ, बिना एक शब्द और पढ़े।"
"उस स्थिति में, हम इस मामले में आपकी व्यक्तिगत रुचि पर वापस आ सकते हैं। मैं आपको यह बताने के लिए बाध्य हूँ कि इस प्रयोग के पक्ष और विपक्ष दोनों में तर्क दिए जा सकते हैं। यदि हम इस वर्ष, आपके मामले में, पिछले वर्ष जैसी परिस्थितियाँ हूबहू दोहरा सकें, तो शारीरिक रूप से यह निश्चित है कि हमें ठीक वही परिणाम प्राप्त होगा। लेकिन यह - इसमें कोई संदेह नहीं है - बिल्कुल असंभव है। हम केवल परिस्थितियों के लगभग समान होने की आशा कर सकते हैं; और यदि हम आपको लगभग उसी स्थिति में वापस लाने में सफल नहीं होते हैं, तो हमारा यह प्रयास विफल हो जाएगा। यदि हम सफल होते हैं - और मुझे स्वयं सफलता की आशा है - तो आप कम से कम जन्मदिन की रात को अपनी क्रियाओं को इस हद तक दोहरा सकते हैं कि कोई भी समझदार व्यक्ति इस बात से संतुष्ट हो जाए कि हीरे की चोरी के मामले में आप नैतिक रूप से निर्दोष हैं। मुझे विश्वास है, श्री ब्लेक, मैंने अब इस प्रश्न को, इसके दोनों पक्षों को, अपनी सीमाओं के भीतर रहते हुए, यथासंभव निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत किया है। यदि कोई ऐसी

बात है जो मैंने आपको स्पष्ट नहीं की है, तो मुझे बताएं - और यदि मैं आपको स्पष्ट कर सकता हूँ, तो मैं इच्छा।"
मैंने कहा, "आपने मुझे जो कुछ भी समझाया है, वह मुझे पूरी तरह समझ आ गया है। लेकिन मैं मानता हूँ कि एक बात मुझे समझ नहीं आ रही है, जिसे आपने अभी तक स्पष्ट नहीं किया है।"
"क्या बात है?"
"मुझे अफीम का अपने ऊपर पड़ने वाला असर समझ नहीं आता। मुझे समझ नहीं आता कि मैं सीढ़ियों से नीचे कैसे उतरता हूँ, गलियारों में कैसे चलता हूँ, अलमारी के दराज कैसे खोलता और बंद करता हूँ, और फिर अपने कमरे में वापस कैसे जाता हूँ। ये सब क्रियाएँ सक्रिय क्रियाएँ हैं। मुझे लगा था कि अफीम का असर पहले आपको बेहोश करता है, और फिर आपको सुला देता है।"
"अफीम के बारे में आम गलतफहमी, श्री ब्लेक! मैं इस समय आपकी सेवा में अपनी बुद्धि (जितनी भी है) का प्रयोग कर रहा हूँ, और यह लाउडैनम की एक खुराक के प्रभाव में है, जो श्री कैंडी द्वारा आपको दी गई खुराक से लगभग दस गुना अधिक है। लेकिन मेरे अधिकार पर भरोसा न करें—यहाँ तक कि उस प्रश्न पर भी जो मेरे व्यक्तिगत अनुभव से संबंधित है। मैंने आपके द्वारा अभी उठाए गए आपत्ति का अनुमान लगा लिया था: और मैंने एक बार फिर स्वतंत्र प्रमाण प्रस्तुत किए हैं जो आपके और आपके मित्रों के मन में अपना उचित महत्व रखेंगे।"
उसने मेज पर रखी दो किताबों में से दूसरी किताब मुझे दे दी।
“ये रही वो मशहूर किताब ‘कन्फेशंस ऑफ एन इंग्लिश ओपियम ईटर’! इसे अपने साथ ले जाइए और पढ़िए। जिस अंश को मैंने चिह्नित किया है, वहाँ आपको पता चलेगा कि जब डी क्विन्सी ने ‘अफीम का नशा’ किया, तो या तो वो ओपेरा गैलरी में संगीत का आनंद लेने गया, या फिर शनिवार की रात को लंदन के बाजारों में घूमता रहा और गरीबों के रविवार के भोजन की व्यवस्था करने के लिए किए जा रहे छोटे-मोटे सौदों और मोलभाव को ध्यान से देखता रहा। अफीम के प्रभाव में भी एक व्यक्ति की सक्रिय रूप से व्यस्त रहने और एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्षमता का यही हाल है।”
मैंने कहा, "मुझे अभी तक जवाब मिल गया है; लेकिन अफीम का मुझ पर क्या प्रभाव पड़ा है, इस बारे में अभी तक कोई जवाब नहीं मिला है।"
"मैं आपको कुछ शब्दों में जवाब देने की कोशिश करूंगा," एज्रा जेनिंग्स ने कहा। अफीम का असर, अधिकतर मामलों में, दो तरह से होता है—पहले उत्तेजक असर

और फिर शामक असर। उत्तेजक असर के तहत, आपके मन पर बनी सबसे ताज़ा और स्पष्ट छाप—यानी हीरे से जुड़ी छाप—आपकी रोगग्रस्त संवेदनशील तंत्रिका स्थिति में, आपके मस्तिष्क में तीव्र हो जाएगी और आपके विवेक और इच्छाशक्ति को उसी तरह अपने अधीन कर लेगी जैसे कोई साधारण सपना आपके विवेक और इच्छाशक्ति को अपने अधीन कर लेता है। धीरे-धीरे, इस क्रिया के तहत, हीरे की सुरक्षा के बारे में दिन भर में आपके मन में जो भी आशंकाएँ थीं, वे संदेह से निश्चितता की स्थिति में बदल जाएँगी—आपको रत्न को सुरक्षित रखने के लिए व्यावहारिक कदम उठाने पर मजबूर करेंगी—आपको इसी उद्देश्य से उस कमरे में ले जाएँगी जिसमें आप दाखिल हुए थे—और आपका हाथ अलमारी के दराजों तक ले जाएँगी, जब तक कि आपको वह दराज न मिल जाए जिसमें हीरा रखा है। अफीम के आध्यात्मिक नशे में, आप यह सब करेंगे। बाद में, जैसे-जैसे... जैसे-जैसे अफीम का शामक प्रभाव उत्तेजक प्रभाव पर हावी होने लगता, आप धीरे-धीरे सुस्त और बेसुध हो जाते। फिर आप गहरी नींद में सो जाते। जब सुबह होती और अफीम का असर पूरी तरह खत्म हो जाता, तो आप रात में किए गए कामों से इतने अनजान होकर जागते जैसे आप सुदूर पृथ्वी पर रह रहे हों। क्या मैंने आपको अब तक ठीक से समझा दिया है?

मैंने कहा, "आपने सब कुछ इतना स्पष्ट कर दिया है कि मैं चाहता हूँ कि आप और आगे बढ़ें। आपने मुझे दिखाया है कि मैं कमरे में कैसे दाखिल हुआ और हीरा लेने कैसे आया। लेकिन मिस वेरेंडर ने मुझे हीरा हाथ में लिए कमरे से बाहर जाते हुए देखा। क्या आप उस क्षण से मेरी सारी गतिविधियों का पता लगा सकती हैं? क्या आप अनुमान लगा सकती हैं कि मैंने आगे क्या किया?"

“मैं यही कहना चाह रहा था,” उसने जवाब दिया। “मेरे मन में यह सवाल है कि क्या जो प्रयोग मैं आपकी निर्दोषता साबित करने के लिए प्रस्तावित कर रहा हूँ, वह खोए हुए हीरे को वापस पाने का भी एक तरीका बन सकता है। जब आप मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष से हीरा हाथ में लेकर निकले, तो संभवतः आप अपने कमरे में वापस गए थे----”

"जी? और फिर क्या?"

"संभव है, श्री ब्लेक—मैं इससे अधिक कहने की हिम्मत नहीं करता—कि हीरे को संरक्षित करने के आपके विचार ने स्वाभाविक रूप से हीरे को छिपाने के विचार को जन्म दिया हो, और आपने उसे अपने शयनकक्ष में कहीं छिपाया हो। ऐसी स्थिति में, आयरिश कुली का मामला आपका मामला हो सकता है। अफीम की दूसरी खुराक के

प्रभाव में आपको शायद वह स्थान याद आ जाए जहाँ आपने पहली खुराक के प्रभाव में हीरा छिपाया था।"
अब एज्रा जेनिंग्स को ज्ञान देने की मेरी बारी थी। मैंने उसे और कुछ कहने से पहले ही रोक दिया।
मैंने कहा, "आप एक ऐसे परिणाम की अटकलें लगा रहे हैं जो संभव ही नहीं है। हीरा इस समय लंदन में है।"
वह चौंक गया और बड़ी हैरानी से मेरी तरफ देखने लगा।
"लंदन में?" उसने दोहराया। "लेडी वेरेंडर के घर से यह लंदन कैसे पहुंचा?"
"किसी को नहीं मालूम।"
"आपने इसे मिस वेरेंडर के कमरे से अपने हाथों से निकाला था। यह आपकी हिरासत से कैसे बाहर निकला?"
मुझे बिलकुल भी पता नहीं है कि यह मेरे पास से कैसे ले जाया गया।
"क्या आपने इसे सुबह उठने पर देखा था?"
"नहीं।"
"क्या मिस वेरेंडर ने इसे पुनः प्राप्त कर लिया है?"
"नहीं।"
"श्रीमान ब्लेक! लगता है यहाँ कुछ ऐसा है जिसे स्पष्ट करने की आवश्यकता है। क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आपको कैसे पता चला कि हीरा इस समय लंदन में है?"
इंग्लैंड लौटने पर जब मैंने मूनस्टोन के बारे में पहली बार पूछताछ की थी, तब मैंने श्री ब्रुफ से ठीक यही सवाल पूछा था। एज़रा जेनिंग्स को जवाब देते समय, मैंने वही दोहराया जो मैंने स्वयं वकील के मुख से सुना था—और जो इन पृष्ठों के पाठकों को पहले से ही ज्ञात है।
उन्होंने स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि वे मेरे जवाब से संतुष्ट नहीं थे।
उन्होंने कहा, "आपका और आपके कानूनी सलाहकार का पूरा सम्मान करते हुए, मैं अभी जो राय व्यक्त की है, उस पर कायम हूं। मुझे भली-भांति पता है कि यह राय मात्र एक अनुमान पर आधारित है। आपको याद दिलाने के लिए क्षमा करें, क्योंकि आपकी राय भी मात्र एक अनुमान पर आधारित है।"
इस मामले पर उनका दृष्टिकोण मेरे लिए बिल्कुल नया था। मैं बेसब्री से यह जानने का इंतजार कर रहा था कि वे इसका बचाव कैसे करेंगे।

“मेरा मानना है,” एज्रा जेनिंग्स ने आगे कहा, “कि अफीम के प्रभाव ने—हीरे को अपने पास रखने और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए—आपको उसी प्रभाव और उसी मकसद से उसे अपने कमरे में कहीं छिपाने के लिए भी प्रेरित किया होगा। आप मानते हैं कि हिंदू षड्यंत्रकारियों से गलती हो ही नहीं सकती। भारतीय हीरे के पीछे मिस्टर लूकर के घर गए थे—और इसलिए, हीरा मिस्टर लूकर के पास ही होना चाहिए! क्या आपके पास कोई सबूत है जिससे साबित हो कि मूनस्टोन को लंदन ले जाया गया था? आप यह भी नहीं समझ सकते कि इसे लेडी वेरिंदर के घर से कैसे और किसके द्वारा निकाला गया था! क्या आपके पास कोई सबूत है कि यह हीरा मिस्टर लूकर के पास गिरवी रखा गया था? वह कहते हैं कि उन्होंने मूनस्टोन के बारे में कभी सुना ही नहीं; और उनकी बैंक रसीद में कीमती वस्तु जमा करने के अलावा कुछ भी दर्ज नहीं है। भारतीय मानते हैं कि मिस्टर लूकर झूठ बोल रहे हैं—और आप फिर से मानते हैं कि भारतीय सही हैं। आपसे असहमत होते हुए मैं बस इतना ही कहना चाहता हूँ—कि मेरा विचार यह संभव है। श्री ब्लेक, तार्किक या कानूनी रूप से आपके पक्ष में और क्या कहा जा सकता है?

यह बात कड़े शब्दों में कही गई थी; लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता था कि यह बात सच भी थी।

मैंने जवाब दिया, "मैं स्वीकार करता हूँ कि आप मुझे चौंका रहे हैं। क्या आपको श्री ब्रुफ को पत्र लिखने और उन्हें आपकी कही बातें बताने पर कोई आपत्ति है?"

इसके विपरीत, मुझे खुशी होगी यदि आप श्री ब्रुफ़ को पत्र लिखें। उनके अनुभव से परामर्श करने पर हमें इस मामले को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर मिल सकता है। फिलहाल, आइए हम अफीम के साथ अपने प्रयोग पर वापस लौटें। हमने निर्णय लिया है कि आप इसी क्षण से धूम्रपान की आदत छोड़ दें।

"इस क्षण से?"

"यह पहला कदम है। अगला कदम यह है कि हम यथासंभव उन घरेलू परिस्थितियों को पुन: उत्पन्न करें जो पिछले वर्ष आपके आसपास थीं।"

यह कैसे संभव था? लेडी वेरेंडर की मृत्यु हो चुकी थी। जब तक चोरी का संदेह मुझ पर बना रहा, राहेल और मैं हमेशा के लिए अलग हो गए थे। गॉडफ्रे एबलव्हाइट महाद्वीप की यात्रा पर गए हुए थे। उन लोगों को फिर से इकट्ठा करना बिल्कुल असंभव था जो उस घर में तब मौजूद थे जब मैं आखिरी बार उसमें सोया था। इस आपत्ति के बयान से एज्रा जेनिंग्स को कोई परेशानी नहीं हुई। उन्होंने कहा कि उन्हीं लोगों को फिर से

इकट्ठा करना उनके लिए बहुत कम महत्वपूर्ण था - क्योंकि उनसे यह उम्मीद करना व्यर्थ होगा कि वे मेरे प्रति अपने पुराने रवैये को फिर से अपना लें। दूसरी ओर, उन्होंने प्रयोग की सफलता के लिए यह आवश्यक समझा कि मुझे वही वस्तुएँ दिखाई दें जो उस समय मेरे आस-पास थीं जब मैं आखिरी बार उस घर में था।
“सबसे ज़रूरी बात,” उन्होंने कहा, “आपको उसी कमरे में सोना होगा जिसमें आप जन्मदिन की रात सोए थे, और वह कमरा उसी तरह सजा हुआ होना चाहिए। सीढ़ियाँ, गलियारे और मिस वेरेंडर का बैठक कक्ष भी वैसा ही होना चाहिए जैसा आपने आखिरी बार देखा था। श्री ब्लेक, घर के उस हिस्से में, जिसे अब हटाया जा सकता है, हर सामान को उसकी जगह पर रखना बेहद ज़रूरी है। अगर हमें मिस वेरेंडर से इसकी अनुमति नहीं मिल जाती, तो आपके सिगारों का त्याग करना व्यर्थ होगा।”
मैंने पूछा, "उससे अनुमति लेने के लिए कौन आवेदन करेगा?"
क्या आपके लिए आवेदन करना संभव नहीं है?
"बिल्कुल असंभव है। खोए हुए हीरे के विषय पर हमारे बीच जो कुछ भी हुआ है, उसके बाद मैं न तो उससे मिल सकता हूँ और न ही उसे पत्र लिख सकता हूँ।"
एज्रा जेनिंग्स रुका और एक पल के लिए सोचने लगा।
"क्या मैं आपसे एक नाजुक सवाल पूछ सकता हूँ?" उसने कहा।
मैंने उसे आगे बढ़ने के लिए हस्ताक्षर कर दिए।
"क्या मैं सही हूँ, श्री ब्लेक, (आपसे मिली एक-दो बातों से) यह अनुमान लगाने में कि पूर्व में आपको मिस वेरेंडर में कोई समान रुचि नहीं थी?"
"बिलकुल सही।"
"क्या बदले में भी वही भावना थी?"
"वह था।"
"क्या आपको लगता है कि मिस वेरेंडर आपकी निर्दोषता साबित करने के प्रयास में गहरी दिलचस्पी लेंगी?"
मुझे इस बात का पूरा यकीन है।
"अगर आप मुझे अनुमति दें तो मैं मिस वेरेंडर को पत्र लिखूंगा।"
"क्या तुम उसे मेरे सामने रखे गए अपने प्रस्ताव के बारे में बताओगे?"
"आज हमारे बीच जो कुछ भी हुआ है, वह सब उसे बताऊं।"
यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मैंने उनके द्वारा दी गई सेवा को सहर्ष स्वीकार कर लिया।

"आज की डाक से पत्र लिखने का समय मिल जाएगा," उन्होंने अपनी घड़ी देखते हुए कहा। "होटल वापस जाकर अपनी सिगारें संभाल कर रखना मत भूलना! मैं कल सुबह फोन करके पूछूंगा कि रात कैसी गुज़री।"

मैं उनसे विदा लेने के लिए उठा; और मैंने उनकी दयालुता के प्रति अपनी सच्ची कृतज्ञता व्यक्त करने का प्रयास किया।

उन्होंने मेरा हाथ धीरे से दबाया। "याद है मैंने तुम्हें मैदान में क्या कहा था," उन्होंने उत्तर दिया। "अगर मैं आपकी यह छोटी सी सेवा कर सकूँ, श्रीमान ब्लेक, तो मुझे ऐसा लगेगा जैसे किसी लंबे और बादलों से घिरे दिन की शाम पर सूरज की आखिरी किरण पड़ रही हो।"

हम अलग हो गए। तब जून का पंद्रहवाँ दिन था। अगले दस दिनों की घटनाएँ—जिनमें से प्रत्येक कमोबेश उस प्रयोग से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई थी जिसका मैं एक निष्क्रिय प्रतिभागी था—श्री कैंडी के सहायक द्वारा नियमित रूप से रखी जाने वाली डायरी में ठीक उसी तरह दर्ज हैं जैसे वे घटी थीं। एज़रा जेनिंग्स के पन्नों में कुछ भी छिपा नहीं है, और कुछ भी भुलाया नहीं गया है। एज़रा जेनिंग्स ही बताएँगे कि अफ़ीम का प्रयोग कैसे शुरू किया गया और उसका क्या परिणाम हुआ।

चौथी कथा

एज्रा जेनिंग्स की डायरी से उद्धृत।

1849.--15 जून.... मरीजों और दर्द के कारण कुछ रुकावटों के बावजूद, मैंने आज की डाक के लिए समय पर मिस वेरेंडर को अपना पत्र पूरा कर लिया। मैं इसे उतना संक्षिप्त नहीं कर पाया जितना मैं चाहता था। लेकिन मुझे लगता है कि मैंने इसे स्पष्ट कर दिया है। इसमें उन्हें अपने निर्णय की पूर्ण स्वतंत्रता दी गई है। यदि वह प्रयोग में सहयोग करने के लिए सहमत होती हैं, तो वह अपनी स्वतंत्र इच्छा से सहमत होती हैं, न कि श्री फ्रैंकलिन ब्लेक या मुझ पर किसी एहसान के रूप में।

16 जून.-- एक भयानक रात के बाद देर से उठा; कल के अफीम के असर ने मुझे डरावने सपनों की एक श्रृंखला में उलझाए रखा। एक पल मैं मृतकों के प्रेतों के साथ खाली अंतरिक्ष में घूम रहा था, जिनमें दोस्त और दुश्मन दोनों एक साथ थे। दूसरे पल, वह प्रिय चेहरा जिसे मैं फिर कभी नहीं देख पाऊंगा, मेरे बिस्तर के पास उठा, घने अंधेरे में भयानक रूप से चमक रहा था, और मुझे घूर रहा था और मुस्कुरा रहा था। सुबह-सुबह हमेशा की तरह पुराने दर्द का हल्का सा लौट आना एक बदलाव के रूप

में सुखद था। इसने उन दृश्यों को दूर कर दिया—और यह सहने योग्य था क्योंकि इसने ऐसा किया।
मेरी खराब रात की वजह से सुबह काफी देर हो गई, तब जाकर मैं मिस्टर फ्रैंकलिन ब्लेक के पास पहुँच पाया। मैंने उन्हें सोफे पर लेटे हुए पाया, वे ब्रांडी, सोडा वाटर और एक सूखा बिस्किट खाकर नाश्ता कर रहे थे।
"मेरी शुरुआत बिल्कुल वैसी ही हो रही है जैसी आप उम्मीद कर सकते हैं," उन्होंने कहा। "एक दुखद, बेचैन रात गुज़री; और आज सुबह भूख बिल्कुल नहीं लगी। ठीक वैसा ही जैसा पिछले साल हुआ था, जब मैंने सिगार पीना छोड़ा था। जितनी जल्दी मैं लाउडैनम की दूसरी खुराक लेने के लिए तैयार हो जाऊँ, उतना ही मुझे अच्छा लगेगा।"
मैंने उत्तर दिया, "आपको यह यथाशीघ्र मिल जाएगा। इस बीच, हमें आपके स्वास्थ्य का यथासंभव ध्यान रखना होगा। यदि हम आपको थका हुआ छोड़ देंगे, तो हम असफल हो जाएंगे। आपको रात के खाने के लिए भूख लगानी होगी। दूसरे शब्दों में, आपको आज सुबह ताजी हवा में टहलने या सवारी करने जाना चाहिए।"
"अगर मुझे यहाँ घोड़ा मिल जाए तो मैं सवारी करूँगा। वैसे, मैंने कल श्री ब्रुफ को पत्र लिखा था। क्या आपने मिस वेरेंडर को पत्र लिखा है?"
"हां—कल रात की डाक से।"
बहुत खूब। कल हमारे पास एक-दूसरे को बताने के लिए कुछ दिलचस्प खबर होगी। अभी मत जाइए! मुझे आपसे कुछ कहना है। कल आपको लगा था कि अफीम के साथ हमारा प्रयोग मेरे कुछ दोस्तों को शायद पसंद नहीं आएगा। आप बिल्कुल सही थे। मैं पुराने गैब्रियल बेटरएज को अपना दोस्त मानता हूँ; और आपको यह जानकर हंसी आएगी कि कल जब मैं उनसे मिला तो उन्होंने इसका कड़ा विरोध किया। 'आपने अपने जीवन में बहुत सी मूर्खतापूर्ण हरकतें की हैं, मिस्टर फ्रैंकलिन, लेकिन यह उन सबमें सबसे ऊपर है!' यह है बेटरएज की राय! मुझे यकीन है कि अगर आप दोनों की मुलाकात हुई तो आप उनकी पूर्वाग्रहों को नजरअंदाज कर देंगे।
मैंने श्री ब्लेक को छोड़कर अपने मरीजों के बीच अपना राउंड शुरू किया; उनके साथ हुई संक्षिप्त मुलाकात के बाद भी मैं बेहतर और खुश महसूस कर रहा था।
इस व्यक्ति के प्रति मेरे आकर्षण का रहस्य क्या है? क्या इसका मतलब सिर्फ इतना है कि मैं उनके खुले और दयालु व्यवहार और अन्य लोगों के निर्मम तिरस्कार और अविश्वास के बीच के अंतर को महसूस करती हूँ? या वास्तव में उनमें कुछ ऐसा है जो

मानवीय सहानुभूति की मेरी तड़प को शांत करता है—वह तड़प जो कई वर्षों के एकांत और उत्पीड़न के बावजूद बनी हुई है; जो समय नजदीक आने के साथ-साथ और तीव्र होती जा रही है, जब मैं सब कुछ सह लूँगी और कुछ भी महसूस नहीं कर पाऊँगी? ये सवाल पूछना कितना व्यर्थ है! श्री ब्लेक ने मुझे जीवन में एक नई रुचि दी है। इतना ही काफी है, यह जानने की कोशिश किए बिना कि वह नई रुचि क्या है।

17 जून.--आज सुबह नाश्ते से पहले, श्री कैंडी ने मुझे बताया कि वे इंग्लैंड के दक्षिण में एक मित्र से मिलने के लिए दो सप्ताह के लिए जा रहे हैं। उन्होंने मुझे मरीजों के बारे में इतने विशेष निर्देश दिए, मानो उनके पास अभी भी उतना ही बड़ा क्लिनिक हो जितना बीमारी से पहले था। अब तो क्लिनिक की कीमत बहुत कम रह गई है! दूसरे डॉक्टरों ने उन्हें पीछे छोड़ दिया है; और कोई भी मुझे काम पर नहीं रखना चाहता।

शायद यह सौभाग्य की बात है कि वे इस समय बाहर हैं। अगर मैंने उन्हें श्री ब्लेक के साथ किए जाने वाले प्रयोग के बारे में नहीं बताया होता, तो वे बहुत शर्मिंदा होते। और मुझे शायद ही पता है कि अगर मैंने उन्हें विश्वास में लिया होता, तो कितने अप्रिय परिणाम नहीं होते। जो है सो है। निस्संदेह, जो है सो है।

मिस्टर कैंडी के घर से चले जाने के बाद, उस पोस्ट के जरिए मुझे मिस वेरेंडर का जवाब मिला।

कितना प्यारा पत्र है! इससे उसके प्रति मेरी राय और भी प्रबल हो गई है। हमारे मामले में उसकी दिलचस्पी को छिपाने का कोई प्रयास नहीं है। वह मुझे बड़े ही मधुर शब्दों में बताती है कि मेरे पत्र से उसे श्री ब्लेक की निर्दोषता का पूरा यकीन हो गया है, और उसे (जहां तक उसका सवाल है) मेरे दावे को साबित करने की ज़रा भी ज़रूरत नहीं है। वह तो खुद को कोसती भी है—बेचारी, बिल्कुल अनुचित रूप से!—कि उस समय उसे इस रहस्य का असली हल समझ में नहीं आया। इन सबके पीछे का मकसद सिर्फ़ किसी दूसरे व्यक्ति को अनजाने में पहुँचाई गई गलती का प्रायश्चित करने की उदारता से कहीं अधिक है। यह स्पष्ट है कि उनके बीच की दूरी के बावजूद उसने उससे प्रेम किया है। कई जगहों पर यह जानकर जो आनंद मिला कि वह प्रेम के योग्य था, वह कलम और स्याही की औपचारिकताओं को भी सहजता से तोड़ देता है, और एक अजनबी को पत्र लिखने के कड़े संयम को भी पार कर जाता है। क्या यह संभव है (मैं इस मनमोहक पत्र को पढ़ते हुए स्वयं से पूछता हूँ) कि संसार के सभी पुरुषों में से मुझे ही इन दो युवाओं को फिर से मिलाने का माध्यम बनने के लिए चुना गया है? मेरी अपनी खुशी पैरों तले रौंदी गई है; मेरा अपना प्रेम मुझसे छीन लिया गया है। क्या मैं

दूसरों की उस खुशी को देख पाऊँगा, जो मेरे कारण है—एक ऐसे प्रेम को पुनर्जीवित होते हुए देख पाऊँगा, जिसे मैंने वापस लाया है? हे दयालु मृत्यु, मुझे यह देखने दो इससे पहले कि तुम्हारी बाहें मुझे गले लगा लें, इससे पहले कि तुम्हारी आवाज़ मुझसे फुसफुसाए, "अंततः विश्राम पाओ!"

पत्र में दो अनुरोध हैं। उनमें से एक मुझे इसे श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को दिखाने से रोकता है। मुझे उन्हें यह बताने का अधिकार है कि मिस वेरेंडर स्वेच्छा से अपना घर हमारे उपयोग के लिए उपलब्ध कराने को तैयार हैं; और इतना कहने के बाद, मुझे इससे अधिक कुछ भी कहने का अनुरोध नहीं किया गया है।

अब तक तो उसकी इच्छाओं को पूरा करना आसान रहा है। लेकिन दूसरी विनती ने मुझे बेहद शर्मिंदा कर दिया है।

मैंने श्री बेटरएज को पत्र लिखकर उन्हें मेरे निर्देशों का पालन करने के लिए कहा था, लेकिन इसके बाद भी मिस वेरेंडर संतुष्ट नहीं हुईं। उन्होंने मुझसे अपने बैठक कक्ष के जीर्णोद्धार की व्यक्तिगत देखरेख करने की अनुमति मांगी। वह यॉर्कशायर की यात्रा करने और दूसरी बार अफीम के मुकदमे की सुनवाई के दौरान गवाहों में से एक के रूप में उपस्थित होने के लिए मेरे उत्तर का इंतजार कर रही हैं।

यहां भी, सतह के नीचे एक मकसद छिपा हुआ है; और यहां भी, मुझे लगता है कि मैं उसका पता लगा सकता हूं।

जो बात उसने मुझे श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को बताने से मना किया है, वह (जैसा कि मैं समझता हूँ) उन्हें स्वयं अपने मुँह से बताना चाहती है, इससे पहले कि उनकी परीक्षा हो और दूसरों की नज़रों में उनका चरित्र सिद्ध हो। मैं उनकी इस उदार चिंता को समझता और सराहता हूँ कि वे उन्हें निर्दोष साबित करने के लिए उत्सुक हैं, चाहे उनकी निर्दोषता सिद्ध हो या न हो। बेचारी, वह प्रायश्चित करना चाहती है, क्योंकि उसने अनजाने में और अनिवार्य रूप से उनके साथ अन्याय किया है। लेकिन यह संभव नहीं है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन दोनों के बीच मुलाकात से जो हलचल पैदा होगी—सुप्त भावनाओं का पुनरुत्थान, पुरानी यादों का ताजा होना, नई आशाओं का जागना—वह श्री ब्लेक के मन पर हमारे प्रयोग की सफलता के लिए लगभग निश्चित रूप से घातक होगी। वैसे भी, उनके मन में पिछले साल जैसी या लगभग वैसी ही परिस्थितियाँ पैदा करना काफी मुश्किल है। नए हितों और नई भावनाओं के साथ, जो उन्हें उत्तेजित करेंगी, यह प्रयास सरासर व्यर्थ होगा।

फिर भी, यह जानते हुए भी, मैं उसे निराश नहीं कर सकता। मुझे कोशिश करनी होगी कि क्या मैं समय से पहले कोई ऐसा उपाय खोज सकता हूँ जिससे मैं मिस वेरेंडर को हाँ कह सकूँ, और साथ ही श्री फ्रैंकलिन ब्लेक के प्रति अपनी सेवा के प्रति किए गए वादे को भी पूरा कर सकूँ।

दो बजे।--मैं अभी-अभी अपने चिकित्सकीय जांच के दौर से लौटा हूँ; जिसकी शुरुआत मैंने होटल में जाकर की थी।

श्री ब्लेक की रात की रिपोर्ट पहले जैसी ही है। उन्हें बीच-बीच में थोड़ी-थोड़ी देर के लिए नींद टूटी, बस इतना ही। लेकिन आज उन्हें इसका असर कम महसूस हो रहा है, क्योंकि उन्होंने कल रात के खाने के बाद नींद ली थी। खाने के बाद की यह नींद निस्संदेह उस घुड़सवारी का नतीजा है जिसकी सलाह मैंने उन्हें दी थी। मुझे डर है कि मुझे ताजी हवा में उनके इस आरामदेह व्यायाम को कम करना पड़ेगा। वे न तो बहुत स्वस्थ हैं और न ही बहुत बीमार। यह (जैसा कि नाविक कहते हैं) बहुत ही सावधानी से काम लेने का मामला है।

उन्हें अभी तक श्री ब्रुफ से कोई खबर नहीं मिली है। मैंने पाया कि वे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि क्या मुझे मिस वेरेंडर से कोई जवाब मिला है।

मैंने उसे ठीक-ठीक वही बताया जो मुझे बताने की अनुमति थी, उससे ज़्यादा कुछ नहीं। उसे पत्र न दिखाने के लिए बहाने बनाना बिल्कुल बेकार था। बेचारे ने बड़े गुस्से से कहा कि वह मेरी उस संवेदनशीलता को समझता है जिसकी वजह से मैं उसे पत्र नहीं दिखा पा रहा था। उसने कहा, "वह सहमति तो दे ही रही है, शिष्टाचार और न्याय के लिहाज़ से तो ठीक है। लेकिन वह मेरे बारे में अपनी राय अपने पास रखेगी और परिणाम देखने का इंतज़ार करेगी।" मेरा मन किया कि मैं उसे यह संकेत दे दूं कि अब वह उसके साथ वैसा ही अन्याय कर रहा है जैसा उसने उसके साथ किया था। लेकिन सोचने पर मैंने उसे आश्चर्यचकित करने और उसे माफ़ करने के दोहरे सुख का पहले ही आनंद लेने से खुद को रोक लिया।

मेरी मुलाक़ात बहुत संक्षिप्त थी। पिछली रात के अनुभव के बाद, मुझे एक बार फिर अफ़ीम का सेवन छोड़ना पड़ा। इसके परिणामस्वरूप, मुझमें व्याप्त बीमारी की पीड़ा फिर से हावी हो गई है। मुझे दौरे का आभास हो गया था, इसलिए मैंने उसे डराने या परेशान न करने के लिए अचानक ही वहाँ से चला गया। इस बार यह दौरा केवल पंद्रह मिनट तक चला, और इसने मुझे अपने काम को जारी रखने के लिए पर्याप्त शक्ति प्रदान की।

पांच बज गए हैं। मैंने मिस वेरिंदर को अपना जवाब लिख दिया है।
मैंने जो व्यवस्था प्रस्तावित की है, वह दोनों पक्षों के हितों को संतुलित करती है, बशर्ते वह इस पर सहमत हो जाए। प्रयोग शुरू होने से पहले श्री ब्लेक और उनके बीच बैठक को लेकर जो आपत्तियां हैं, उन्हें बताने के बाद, मैंने सुझाव दिया है कि वह अपनी यात्रा का समय इस प्रकार निर्धारित करें कि जिस शाम हम प्रयोग करेंगे, उस शाम वह घर पर निजी तौर पर पहुंचें। लंदन से दोपहर की ट्रेन से यात्रा करने पर, वह रात नौ बजे तक पहुंचने में देरी करेंगी। उस समय, मैंने श्री ब्लेक को उनके शयनकक्ष तक सुरक्षित पहुंचाने का जिम्मा लिया है; और इस प्रकार मिस वेरेंडर को लाउडैनम देने का समय आने तक अपने कमरे में रहने की आजादी दी जाएगी। जब यह हो जाएगा, तो हम सभी के साथ परिणाम देखने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी। अगली सुबह, वह श्री ब्लेक को (यदि वह चाहें तो) मेरे साथ अपने पत्राचार दिखाएंगी, और इस तरह उन्हें आश्वस्त करेंगी कि उनकी निर्दोषता का प्रश्न उठने से पहले ही उनकी दृष्टि में वे निर्दोष साबित हो चुके थे।
इस लिहाज से मैंने उन्हें पत्र लिखा है। आज के लिए मैं बस इतना ही कर सकता हूँ। कल मुझे श्री बेटरएज से मिलना है और घर को दोबारा खोलने के लिए आवश्यक निर्देश देने हैं।
18 जून.--श्रीमान फ्रैंकलिन ब्लेक से मिलने में फिर देर हो गई। सुबह-सुबह फिर वही भयानक दर्द हुआ; इस बार कुछ घंटों के लिए पूरी तरह से कमजोरी छा गई। मुझे लगता है, चाहे इसके कितने भी बुरे परिणाम क्यों न भुगतने पड़ें, मुझे सौवीं बार अफीम का सहारा लेना पड़ेगा। अगर मुझे सिर्फ अपनी ही चिंता होती, तो मैं भयानक सपनों के बजाय इस तेज दर्द को सह लेता। लेकिन शारीरिक पीड़ा मुझे थका देती है। अगर मैं खुद को इस हालत में छोड़ दूं, तो हो सकता है कि मैं श्रीमान ब्लेक के लिए उस समय बेकार हो जाऊं जब उन्हें मेरी सबसे ज्यादा जरूरत है।
आज होटल पहुँचने में मुझे लगभग एक बज गया। मेरी बुरी हालत के बावजूद, यह मुलाक़ात बेहद मनोरंजक साबित हुई—इसका पूरा श्रेय गैब्रियल बेटरएज की मौजूदगी को जाता है।
जब मैं कमरे में दाखिल हुआ तो मैंने उसे वहीं पाया। वह खिड़की के पास जाकर बाहर देखने लगा, जबकि मैंने अपने मरीज़ से अपना पहला रिवाज़ वाला सवाल पूछा। श्री ब्लेक को आज फिर नींद नहीं आई थी, और उन्हें आज सुबह नींद की कमी पहले से कहीं ज़्यादा महसूस हो रही थी।

इसके बाद मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें मिस्टर ब्रफ से कोई खबर मिली है।
उस सुबह उन्हें एक पत्र मिला था। श्री ब्रुफ़ ने अपने मित्र और मुवक्किल द्वारा मेरी सलाह पर उठाए जा रहे कदम पर कड़ी आपत्ति जताई थी। यह कदम हानिकारक था —क्योंकि इससे ऐसी आशाएँ जागृत हो रही थीं जो शायद कभी पूरी न हों। उनके मन में यह बात बिल्कुल समझ से परे थी, सिवाय इसके कि यह एक छल जैसा लग रहा था, सम्मोहन, भविष्यवाणियों आदि के छल जैसा। इससे मिस वेरिंदर का घर अस्त-व्यस्त हो गया था, और अंततः मिस वेरिंदर स्वयं भी अस्त-व्यस्त हो जाएँगी। उन्होंने (नाम लिए बिना) इस मामले को एक प्रख्यात चिकित्सक के समक्ष रखा था; और प्रख्यात चिकित्सक मुस्कुराए, सिर हिलाया और कुछ नहीं कहा। इन्हीं आधारों पर श्री ब्रुफ़ ने अपना विरोध दर्ज कराया और वहीं छोड़ दिया।
मेरी अगली पूछताछ हीरे के विषय से संबंधित थी। क्या वकील ने यह साबित करने के लिए कोई सबूत पेश किया था कि हीरा लंदन में था?
नहीं, वकील ने इस सवाल पर चर्चा करने से साफ इनकार कर दिया था। उन्हें खुद इस बात का पूरा यकीन था कि मूनस्टोन श्री लूकर के पास गिरवी रखा गया था। उनके सम्मानित मित्र, श्री मुर्थवेट (जिनके भारतीय चरित्र के बारे में गहन ज्ञान को कोई नकार नहीं सकता था), जो उस समय अनुपस्थित थे, भी इस बात से संतुष्ट थे। इन परिस्थितियों में, और उन पर पहले से ही पड़े कई दबावों को देखते हुए, उन्हें सबूतों के विषय पर किसी भी विवाद में पड़ने से इनकार करना पड़ा। समय ही बताएगा; और श्री ब्रफ समय का इंतजार करने को तैयार थे।
यह बात बिल्कुल स्पष्ट थी—भले ही श्री ब्लेक ने पत्र में लिखी गई बातों को पढ़ने के बजाय उसका सार बताकर इसे और स्पष्ट न किया हो—कि इस सब के पीछे अविश्वास ही मुख्य कारण था। मैंने स्वयं इस परिणाम का पूर्वाभास कर लिया था, इसलिए मुझे न तो कोई खेद हुआ और न ही आश्चर्य। मैंने श्री ब्लेक से पूछा कि क्या उनके मित्र के विरोध ने उन्हें विचलित किया है। उन्होंने दृढ़ता से उत्तर दिया कि इसका उनके मन पर जरा भी प्रभाव नहीं पड़ा है। इसके बाद मैं श्री ब्रफ को विचार से बाहर करने के लिए स्वतंत्र था—और मैंने उन्हें तदनुसार बाहर कर दिया।
हमारे बीच बातचीत में कुछ देर का विराम आया—और तभी गैब्रियल बेटरएज अपनी सेवानिवृत्ति की स्थिति से बाहर खिड़की पर आ गए।
"क्या आप कृपया मेरी ओर ध्यान देंगे, महोदय?" उन्होंने मुझसे पूछा।
मैंने उत्तर दिया, "मैं आपकी सेवा में तत्पर हूं।"

बेटरएज ने एक कुर्सी ली और मेज पर बैठ गए। उन्होंने एक विशाल, पुराने ज़माने की चमड़े की पॉकेटबुक निकाली, साथ में उसी आकार की एक पेंसिल भी। चश्मा लगाकर उन्होंने पॉकेटबुक का एक खाली पन्ना खोला और एक बार फिर मुझसे बात करने लगे।

बेटरएज ने मुझे सख्ती से देखते हुए कहा, "मैंने अपनी स्वर्गीय पत्नी की सेवा में लगभग पचास साल बिताए हैं। उससे पहले मैं उनके पिता, यानी बूढ़े लॉर्ड की सेवा में एक सेवक था। अब मेरी उम्र सत्तर से अस्सी के बीच है—ठीक-ठीक उम्र मायने नहीं रखती! माना जाता है कि मुझे दुनिया का उतना ही ज्ञान और अनुभव है जितना ज़्यादातर लोगों को होता है। और अंत में क्या होता है? श्री एज़रा जेनिंग्स, इसका अंत श्री फ्रैंकलिन ब्लेक पर एक जादूगरी के करतब से होता है, जिसे एक डॉक्टर के सहायक ने लाउडैनम की बोतल से किया—और भगवान कसम, बुढ़ापे में मुझे जादूगर का सेवक नियुक्त किया गया है!"

श्री ब्लेक जोर से हंस पड़े। मैंने बोलने की कोशिश की। बेटरएज ने अपना हाथ ऊपर उठाया, यह जताते हुए कि उसने अभी तक कुछ नहीं कहा है।

"एक शब्द भी नहीं, श्रीमान जेनिंग्स!" उन्होंने कहा। "मुझे आपसे एक शब्द भी नहीं चाहिए, महोदय। भगवान का शुक्र है, मेरे अपने सिद्धांत हैं। अगर मुझे कोई आदेश मिलता है, जो पागलखाने से आए आदेश का सगा भाई है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जब तक मुझे यह मेरे स्वामी या स्वामिनी से मिलता है, मैं इसका पालन करता हूँ। मेरी अपनी राय हो सकती है, जो कि, कृपया याद रखें, श्रीमान ब्रफ - महान श्रीमान ब्रफ - की भी राय है!" बेटरएज ने ऊँची आवाज़ में कहा और गंभीरता से मेरी ओर सिर हिलाया। "इससे कोई फर्क नहीं पड़ता; मैं अपनी राय वापस लेता हूँ। मेरी युवती कहती है, 'करो।' और मैं कहता हूँ, 'मिस, यह हो जाएगा।'" मैं यहाँ हूँ, अपनी किताब और पेंसिल के साथ—पेंसिल की नोक उतनी अच्छी नहीं है जितनी मैं चाहता, लेकिन जब ईसाई अपना होश खो बैठते हैं, तो भला कौन उम्मीद कर सकता है कि पेंसिल की नोक बनी रहेगी? मुझे अपने आदेश दीजिए, श्रीमान जेनिंग्स। मैं उन्हें लिखित में चाहता हूँ, महोदय। मैं उनसे न तो एक बाल बराबर पीछे रहूँगा और न ही आगे। मैं एक अंधा एजेंट हूँ—मैं यही हूँ। एक अंधा एजेंट!" बेटरएज ने अपने ही वर्णन का भरपूर आनंद लेते हुए दोहराया।

मैंने कहना शुरू किया, "मुझे बहुत खेद है कि हम दोनों सहमत नहीं हैं----"

"मुझे इसमें मत घसीटो!" बेटरएज ने बीच में टोकते हुए कहा। "यह सहमति का मामला नहीं है, यह आज्ञापालन का मामला है। कृपया अपने निर्देश जारी करें—अपने निर्देश जारी करें!"
श्री ब्लेक ने मुझे इशारा किया कि मैं उनकी बात पर विश्वास करूं। मैंने यथासंभव स्पष्ट और गंभीर शब्दों में अपने निर्देश दिए।
मैंने कहा, "मैं चाहता हूं कि घर के कुछ हिस्सों को फिर से खोला जाए, और उन्हें ठीक उसी तरह सजाया जाए जैसे वे पिछले साल इस समय सजाए गए थे।"
बेटरएज ने अपनी टेढ़ी-मेढ़ी नोक वाली पेंसिल को जीभ से हल्का सा चाटा। "पात्रों के नाम बताइए, श्री जेनिंग्स!" उसने शान से कहा।
"सबसे पहले, भीतरी हॉल, जो मुख्य सीढ़ी की ओर जाता है।"
"सबसे पहले, भीतरी हॉल की बात करते हैं," बेटरएज ने लिखा। "सर, इसे पिछले साल की तरह सुसज्जित करना असंभव है - शुरुआत में तो यही बात लागू होती है।"
"क्यों?"
"क्योंकि पिछले साल हॉल में एक भरा हुआ गिद्ध रखा था, श्री जेनिंग्स। जब परिवार चला गया, तो गिद्ध को बाकी चीजों के साथ रख दिया गया। गिद्ध को रखते ही वह फट गया।"
"तो हम गिद्ध को छोड़कर बाकी सब कुछ स्वीकार कर लेंगे।"
बेटरएज ने अपवाद पर ध्यान दिया। "'अंदरूनी हॉल को पिछले साल की तरह ही दोबारा सजाया जाएगा। केवल एक फटे हुए बाज को छोड़कर।' श्रीमान जेनिंग्स, कृपया आगे बोलिए।"
"सीढ़ियों पर पहले की तरह ही कालीन बिछाया जाएगा।"
"'सीढ़ियों पर पहले की तरह ही कालीन बिछाया जाए।' मुझे खेद है महोदय, लेकिन ऐसा भी नहीं किया जा सकता।"
"क्यों नहीं?"
"चूंकि जिस व्यक्ति ने वह कालीन बिछाया था, वह मर चुका है, श्री जेनिंग्स - और कालीन और कोने को आपस में मिलाने में माहिर उनके जैसा व्यक्ति पूरे इंग्लैंड में नहीं मिलेगा, चाहे आप कहीं भी देख लें।"
"बहुत खूब। हमें इंग्लैंड में अगले सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को आजमाना चाहिए।"
बेटरएज ने मेरी बात पर ध्यान दिया; और मैंने अपने निर्देश जारी करना जारी रखा।

"मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष को ठीक उसी रूप में बहाल किया जाना है जैसा वह पिछले वर्ष था। साथ ही, बैठक कक्ष से पहली मंजिल तक जाने वाला गलियारा। इसके अलावा, दूसरी मंजिल से सबसे अच्छे शयनकक्षों तक जाने वाला दूसरा गलियारा। साथ ही, वह शयनकक्ष जिसमें पिछले जून में श्री फ्रैंकलिन ब्लेक ठहरे थे।"
बेटरएज की कुंद पेंसिल पूरी निष्ठा से, एक-एक शब्द को मेरे पीछे-पीछे लिखती रही।
"चलिए महोदय," उन्होंने व्यंग्यात्मक गंभीरता से कहा। "अभी इस पेंसिल की नोक में बहुत कुछ लिखना बाकी है।"
मैंने उनसे कहा कि मेरे पास देने के लिए और कोई निर्देश नहीं हैं। "महोदय," बेटरएज ने कहा, "तो फिर, मुझे अपनी ओर से कुछ बातें कहनी हैं।" उन्होंने अपनी पॉकेटबुक का एक नया पृष्ठ खोला और अपनी कभी न खत्म होने वाली पेंसिल से एक और प्रारंभिक रेखा खींची।
उन्होंने कहना शुरू किया, "मैं जानना चाहता हूँ कि क्या मुझे अपने हाथ धोने चाहिए या नहीं..."
"बिल्कुल," श्री ब्लेक ने कहा। "मैं वेटर को बुलाता हूँ।"
"कुछ जिम्मेदारियों के बारे में," बेटरएज ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, और कमरे में मौजूद लोगों में से केवल खुद और मुझे ही देखते हुए, उन्होंने किसी और से नज़रें मिलाने से साफ इनकार कर दिया। "सबसे पहले, मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष के बारे में। श्री जेनिंग्स, जब हमने पिछले साल कालीन हटाया था, तो हमें उसमें बहुत सारी पिनें मिलीं। क्या पिनों को वापस रखने की जिम्मेदारी मेरी है?"
"हरगिज नहीं।"
बेटरएज ने उस रियायत को मौके पर ही नोट कर लिया।
“अब पहले गलियारे की बात करते हैं,” उन्होंने अपनी बात जारी रखी। “जब हमने उस हिस्से में सजावट हटाई, तो हमने एक मोटे, नग्न बच्चे की मूर्ति भी हटा दी—जिसे घर की सूची में अश्लील रूप से 'कामदेव, प्रेम का देवता' बताया गया था। पिछले साल उसके कंधों के मांसल हिस्से में दो पंख थे। मेरी नज़र उस पर से हट गई, और उसी क्षण उसका एक पंख टूट गया। क्या कामदेव के उस पंख के लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ?”
मैंने एक और रियायत दी, और बेटरएज ने एक और टिप्पणी दर्ज की।
“दूसरे गलियारे की बात करें तो,” उन्होंने आगे कहा। “पिछले साल उसमें कमरों के दरवाजों के अलावा कुछ नहीं था (जिनमें से हर एक के बारे में मैं कसम खा सकता हूँ, अगर ज़रूरी हो तो), इसलिए मैं मानता हूँ कि घर के उस हिस्से के बारे में मुझे कोई

चिंता नहीं है। लेकिन, श्री फ्रैंकलिन के शयनकक्ष की बात करें (अगर उसे पहले जैसा ही ठीक किया जाए), तो मैं जानना चाहता हूँ कि उसे हमेशा अस्त-व्यस्त रखने के लिए कौन ज़िम्मेदार है, चाहे उसे कितनी ही बार साफ किया जाए—उनकी पैंट यहाँ, उनके तौलिए वहाँ, और उनके फ्रांसीसी उपन्यास हर जगह बिखरे पड़े हैं। मेरा मतलब है, श्री फ्रैंकलिन के कमरे की साफ-सफाई बिगाड़ने के लिए कौन ज़िम्मेदार है, वे या मैं?"
श्री ब्लेक ने कहा कि वे अत्यंत प्रसन्नता से पूरी जिम्मेदारी उठाएंगे। बेटरएज ने हठपूर्वक मेरी स्वीकृति और अनुमोदन के बिना समस्या के किसी भी समाधान को सुनने से इनकार कर दिया। मैंने श्री ब्लेक का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया; और बेटरएज ने इस संबंध में अपनी पॉकेट-बुक में अंतिम प्रविष्टि कर दी।
"आप जब चाहें तब आ सकते हैं, मिस्टर जेनिंग्स, कल से शुरू करके," उन्होंने खड़े होते हुए कहा। "आप मुझे काम पर पाएंगे, मेरे साथ आवश्यक सहायक भी होंगे। महोदय, मैं आपसे विनम्रतापूर्वक धन्यवाद करता हूँ कि आपने भरवां गिद्ध और कामदेव के पंख के मामले को अनदेखा कर दिया—साथ ही मुझे कालीन पर पड़ी पिनों और श्री फ्रैंकलिन के कमरे में पड़े कूड़े के मामले से पूरी तरह मुक्त कर दिया। एक सेवक के रूप में, मैं आपका बहुत आभारी हूँ। एक इंसान के रूप में, मैं आपको कीड़ों से भरा हुआ व्यक्ति मानता हूँ, और मैं आपके प्रयोग को एक भ्रम और जाल मानता हूँ। इसलिए, एक इंसान के रूप में मेरी भावनाओं को एक सेवक के रूप में मेरे कर्तव्य के आड़े आने से न डरें! आपकी आज्ञा का पालन किया जाएगा। कीड़ों की परवाह किए बिना, महोदय, आपकी आज्ञा का पालन किया जाएगा। यदि इसका परिणाम घर में आग लगाने में होता है, तो मैं आग लगाने वालों को नहीं बुलाऊंगा, जब तक कि आप घंटी बजाकर उन्हें पहले आदेश न दें!"
उस विदाई के आश्वासन के साथ, उन्होंने मुझे झुककर प्रणाम किया और कमरे से बाहर चले गए।
मैंने पूछा, "क्या आपको लगता है कि हम उस पर भरोसा कर सकते हैं?"
श्री ब्लेक ने उत्तर दिया, "स्पष्ट रूप से। जब हम घर जाएंगे, तो हमें वहां कुछ भी उपेक्षित या भुला हुआ नहीं मिलेगा।"
19 जून.--हमारी प्रस्तावित कार्यवाही के खिलाफ एक और विरोध! इस बार एक महिला की ओर से।
आज सुबह डाक से मुझे दो पत्र मिले। एक पत्र मिस वेरेंडर का था, जिसमें उन्होंने मेरे द्वारा प्रस्तावित व्यवस्था पर अत्यंत विनम्रतापूर्वक सहमति व्यक्त की थी। दूसरा पत्र

उस महिला का था जिनकी देखरेख में वह रह रही हैं - श्रीमती मेरिड्यू का।
श्रीमती मेरिड्यू ने मेरी ओर से शुभकामनाएँ दीं, और उन्होंने उस विषय को समझने का दिखावा नहीं किया जिस पर मैं मिस वेरेंडर के साथ पत्राचार कर रही थी, खासकर उसके वैज्ञानिक पहलुओं को। हालाँकि, सामाजिक पहलुओं को देखते हुए, वे अपनी राय देने में संकोच नहीं करतीं। श्रीमती मेरिड्यू को लगता है कि शायद मुझे यह जानकारी नहीं है कि मिस वेरेंडर की उम्र केवल उन्नीस वर्ष है। इतनी कम उम्र की एक युवती को (बिना किसी अभिभावक के) ऐसे घर में उपस्थित रहने देना जहाँ पुरुषों से भरे माहौल में चिकित्सा प्रयोग चल रहा हो, मर्यादा का घोर उल्लंघन है जिसे श्रीमती मेरिड्यू किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं कर सकतीं। यदि यह मामला आगे बढ़ता है, तो वे अपने निजी आराम का त्याग करके भी मिस वेरेंडर के साथ यॉर्कशायर जाना अपना कर्तव्य समझेंगी। इन परिस्थितियों में, वे मुझसे अनुरोध करती हैं कि मैं इस विषय पर पुनर्विचार करूँ; क्योंकि मिस वेरेंडर केवल मेरी राय मानती हैं। उनकी उपस्थिति बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है; और इस संबंध में मेरा एक शब्द श्रीमती मेरिड्यू और मुझे दोनों को एक बहुत ही अप्रिय जिम्मेदारी से मुक्त कर देगा।
सामान्य भाषा से सरल अंग्रेजी में अनुवाद करने पर, जैसा कि मैं समझता हूँ, श्रीमती मेरिड्यू को दुनिया की राय से बहुत डर लगता है। दुर्भाग्य से उन्होंने दुनिया के उस आखिरी व्यक्ति से मदद मांगी है जो उनकी राय का सम्मान करने का कोई कारण रखता है। मैं मिस वेरेंडर को निराश नहीं करूँगा; और मैं उन दो युवाओं के बीच सुलह में देरी नहीं करूँगा जो एक-दूसरे से प्यार करते हैं और जो पहले ही बहुत लंबे समय से अलग हैं। सामान्य भाषा से सरल अंग्रेजी में अनुवाद करने पर, इसका अर्थ है कि श्री जेनिंग्स श्रीमती मेरिड्यू को अपनी शुभकामनाएँ देते हैं और खेद व्यक्त करते हैं कि वे इस मामले में और अधिक हस्तक्षेप करने को उचित नहीं समझते।
आज सुबह श्री ब्लेक ने अपने बारे में जो बताया, वह पहले जैसा ही था। हमने आज बेटरएज को घर पर नज़र रखकर परेशान न करने का फैसला किया। कल निरीक्षण के लिए हमारे पहले दौरे का पर्याप्त समय होगा।
20 जून.--श्री ब्लेक को रात में लगातार बेचैनी महसूस होने लगी है। कमरों का नवीनीकरण जितनी जल्दी हो सके, उतना अच्छा है।
आज सुबह घर जाते समय, उन्होंने कुछ घबराहट भरी अधीरता और अनिर्णय के साथ, सार्जेंट कफ से प्राप्त एक पत्र (जो उन्हें लंदन से भेजा गया था) के बारे में मुझसे सलाह ली।

सार्जेंट आयरलैंड से लिख रहे हैं। उन्होंने (अपनी गृहणी के माध्यम से) श्री ब्लेक द्वारा डॉर्किंग के निकट स्थित उनके आवास पर छोड़े गए कार्ड और संदेश की प्राप्ति स्वीकार की है और घोषणा की है कि वे एक सप्ताह या उससे कम समय में इंग्लैंड लौट रहे हैं। इस बीच, वे श्री ब्लेक से मूनस्टोन विषय पर उनसे बात करने की इच्छा के कारणों को जानने का अनुरोध करते हैं (जैसा कि संदेश में उल्लेख किया गया है)। यदि श्री ब्लेक उन्हें हीरे के संबंध में पिछले वर्ष की अपनी जांच के दौरान किसी गंभीर गलती का दोषी साबित कर देते हैं, तो वे (दिवंगत लेडी वेरेंडर द्वारा उनके साथ किए गए उदार व्यवहार के अनुरूप) स्वयं को उनकी सेवा में समर्पित करना अपना कर्तव्य समझेंगे। यदि ऐसा नहीं होता है, तो वे ग्रामीण जीवन के शांत और हरे-भरे वातावरण में एकांतवास में रहने की अनुमति मांगते हैं।

पत्र पढ़ने के बाद, मुझे श्री ब्लेक को यह सलाह देने में कोई संकोच नहीं हुआ कि वे सार्जेंट कफ को जवाब में पिछले साल जांच निलंबित होने के बाद से हुई सभी घटनाओं की जानकारी दें और उन्हें स्पष्ट तथ्यों से अपने निष्कर्ष निकालने के लिए छोड़ दें।

दोबारा सोचने पर मैंने सार्जेंट को भी प्रयोग में उपस्थित रहने का सुझाव दिया, बशर्ते वह समय रहते इंग्लैंड लौटकर हमारे साथ शामिल हो सकें। वे किसी भी सूरत में एक महत्वपूर्ण गवाह साबित होंगे; और अगर श्री ब्लेक के कमरे में हीरा छिपा होने के मेरे अनुमान में कोई गलती हुई, तो कार्यवाही के किसी ऐसे चरण में, जिस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं होगा, उनकी सलाह बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है। इस आखिरी बात ने श्री ब्लेक का फैसला कर दिया। उन्होंने मेरी सलाह मानने का वादा किया।

घर की ओर जाने वाले रास्ते में प्रवेश करते ही हथौड़े की आवाज से हमें पता चला कि फर्नीचर की मरम्मत का काम पूरी तरह से चल रहा था।

बेटरएज, जो उस अवसर के अनुरूप मछुआरे की लाल टोपी और हरे रंग के एप्रन में सजे हुए थे, बाहरी हॉल में हमसे मिले। जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, उन्होंने अपना पर्स और पेंसिल निकाली और ज़िद करके मेरी कही हर बात का नोट बनाने लगे। हमने पाया कि श्री ब्लेक के पूर्वानुमान के अनुसार काम तेज़ी से और बुद्धिमत्तापूर्वक आगे बढ़ रहा था। लेकिन भीतरी हॉल और मिस वेरेंडर के कमरे में अभी भी बहुत काम बाकी था। यह कहना मुश्किल था कि सप्ताह के अंत से पहले घर हमारे लिए तैयार हो पाएगा या नहीं।

बेटरएज को उनकी प्रगति पर बधाई देने के बाद (जब भी मैं कुछ बोलता, वे लगातार नोट्स बनाते रहते थे; साथ ही, श्री ब्लेक की किसी भी बात पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते

थे); और एक-दो दिन में निरीक्षण के लिए दोबारा आने का वादा करने के बाद, हम घर से निकलने की तैयारी करने लगे और पीछे के रास्ते से बाहर जाने लगे। नीचे के गलियारों से बाहर निकलने से पहले ही, बेटरएज ने मुझे रोक लिया, ठीक उसी समय जब मैं उनके कमरे में जाने वाले दरवाजे के पास से गुज़र रहा था।
"क्या मैं आपसे अकेले में दो शब्द कह सकता हूँ?" उसने रहस्यमयी फुसफुसाहट में पूछा।
मैंने तुरंत सहमति दे दी। श्री ब्लेक बगीचे में मेरा इंतज़ार करने के लिए आगे बढ़ गए, जबकि मैं बेटरएज के साथ उनके कमरे में चला गया। मुझे पूरी उम्मीद थी कि वे कुछ नई रियायतों की मांग करेंगे, जैसा कि पहले से ही भरवां बाज़ और कामदेव के पंख के मामलों में स्थापित हो चुका था। मुझे बहुत आश्चर्य हुआ जब बेटरएज ने चुपके से मेरा हाथ पकड़ा और मुझसे यह असाधारण प्रश्न पूछा:
"श्री जेनिंग्स, क्या आप रॉबिन्सन क्रूसो से परिचित हैं?"
मैंने जवाब दिया कि मैंने बचपन में रॉबिन्सन क्रूसो पढ़ी थी।
"तब से नहीं?" बेटरएज ने पूछा।
"तब से नहीं।"
वह कुछ कदम पीछे हट गया और उसने करुणा और जिज्ञासा से भरी एक ऐसी अभिव्यक्ति के साथ मेरी ओर देखा, जिसमें अंधविश्वासपूर्ण श्रद्धा का भाव भी झलक रहा था।
"उसने बचपन से रॉबिन्सन क्रूसो नहीं पढ़ा है," बेटरएज ने खुद से कहा - मुझसे नहीं। "चलिए देखते हैं कि रॉबिन्सन क्रूसो अब उसे कैसा लगता है!"
उसने कोने में स्थित अलमारी खोली और उसमें से एक गंदी और किनारों से मुड़ी हुई किताब निकाली, जिसके पन्ने पलटते ही बासी तंबाकू की तेज़ गंध आने लगी। उसे वह अंश मिल गया जिसकी वह तलाश कर रहा था, और उसने मुझे कोने में अपने साथ आने का अनुरोध किया; अब भी रहस्यमय ढंग से गोपनीय और धीमी आवाज़ में बात कर रहा था।
"महोदय, आपके इस अय्याशी भरे काम के बारे में, जिसमें लाउडैनम और श्री फ्रैंकलिन ब्लेक का ज़िक्र है," उन्होंने बोलना शुरू किया। "जब तक काम करने वाले घर में होते हैं, एक नौकर के तौर पर मेरा कर्तव्य एक इंसान के तौर पर मेरी भावनाओं पर हावी हो जाता है। जब काम करने वाले चले जाते हैं, तब एक इंसान के तौर पर मेरी भावनाएँ एक नौकर के तौर पर मेरे कर्तव्य पर हावी हो जाती हैं। बहुत खूब। कल रात,

श्री जेनिंग्स, मेरे मन में यह बात ज़ोर से बैठ गई कि आपका यह नया चिकित्सा प्रयोग बुरी तरह विफल होगा। अगर मैंने उस गुप्त आदेश का पालन किया होता, तो मैं अपने हाथों से सारा फर्नीचर वापस हटा देता और अगली सुबह जब काम करने वाले आते तो उन्हें घर से बाहर जाने की चेतावनी दे देता।"
मैंने कहा, "ऊपर जो कुछ मैंने देखा है, उससे मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आपने गुप्त फरमान का विरोध किया।"
“विरोध करना सही शब्द नहीं है,” बेटरएज ने उत्तर दिया। “संघर्ष करना सही शब्द है। महोदय, मैं अपने हृदय में उठ रहे मौन आदेशों और अपनी जेब में लिखे आदेशों के बीच संघर्ष करता रहा, जो मुझे एक ओर खींच रहे थे, और मेरी जेब में लिखे आदेश मुझे दूसरी ओर धकेल रहे थे, यहाँ तक कि (आपकी उपस्थिति को बचाते हुए) मैं पसीने से तरबतर हो गया। मन की उस भयानक अशांति और शरीर की शिथिलता में, मैंने क्या उपाय अपनाया? वही उपाय, महोदय, जिसने पिछले तीस वर्षों से अधिक समय से मुझे कभी निराश नहीं किया है—इस पुस्तक का सहारा लिया!”
उसने खुले हाथ से किताब पर जोरदार प्रहार किया, और उसमें से पहले से कहीं अधिक बासी तंबाकू की तेज गंध निकली।
“यहाँ मुझे क्या मिला,” बेटरएज ने आगे कहा, “पहले पन्ने पर जो मैंने खोला? यह भयानक अंश, महोदय, पृष्ठ एक सौ अठहत्तर पर, इस प्रकार है: ‘इन और इसी तरह के कई विचारों के आधार पर, मैंने बाद में यह नियम बना लिया कि जब भी मुझे अपने मन में कोई गुप्त संकेत या प्रेरणा मिले, जो मुझे कोई काम करने या न करने के लिए प्रेरित करे; या इस रास्ते या उस रास्ते पर जाने के लिए प्रेरित करे, तो मैं उस गुप्त आदेश का पालन करने में कभी असफल नहीं होता था।’ श्रीमान जेनिंग्स, मैं रोटी से ही अपना जीवन यापन करता हूँ, ये वे पहले शब्द थे जो मेरी नज़र में आए, ठीक उसी समय जब मैं स्वयं उस गुप्त आदेश की अवहेलना कर रहा था! आपको इसमें कुछ भी असामान्य नहीं लगता, है ना, महोदय?”
"मुझे इसमें महज एक संयोग नजर आता है—इससे ज्यादा कुछ नहीं।"
"क्या आपको अपने इस चिकित्सा उद्यम को लेकर जरा भी चिंता नहीं है, श्री जेनिंग्स?"
"दुनिया में सबसे कम महत्वपूर्ण नहीं।"
बेटरएज ने सन्नाटे में मेरी ओर टकटकी लगाई। उसने बड़ी सावधानी से किताब बंद की; फिर उसे अलमारी में बड़ी सख़्ती से बंद कर दिया; वह घूमा और एक बार फिर मेरी ओर टकटकी लगाकर देखा। फिर उसने बोलना शुरू किया।

“महोदय,” उन्होंने गंभीरता से कहा, “उस व्यक्ति के लिए बहुत छूट दी जा सकती है जिसने बचपन से रॉबिन्सन क्रूसो नहीं पढ़ा है। आपको सुप्रभात।”
उन्होंने झुककर अपना दरवाजा खोला और मुझे बगीचे में जाने के लिए स्वतंत्र छोड़ दिया। रास्ते में मेरी मुलाकात मिस्टर ब्लेक से हुई जो घर लौट रहे थे।
“आपको मुझे बताने की ज़रूरत नहीं है कि क्या हुआ है,” उन्होंने कहा। “बेटरएज ने अपना आखिरी दांव खेल दिया है: उन्होंने रॉबिन्सन क्रूसो में एक और भविष्यवाणी जैसी खोज कर ली है। क्या आपने उनके पसंदीदा भ्रम को बढ़ावा दिया है? नहीं? क्या आपने उन्हें यह दिखा दिया है कि आप रॉबिन्सन क्रूसो में विश्वास नहीं करते? श्री जेनिंग्स! बेटरएज की नज़र में आप सबसे निचले पायदान पर आ गए हैं। भविष्य में आप जो चाहें कहें और जो चाहें करें। आप देखेंगे कि अब वह आप पर एक शब्द भी बर्बाद नहीं करेंगे।”
21 जून.--आज मेरी डायरी में एक संक्षिप्त प्रविष्टि ही पर्याप्त होगी।
श्री ब्लेक की अब तक की सबसे खराब रात गुज़री है। मुझे अपनी इच्छा के विरुद्ध ही उनके लिए दवा लिखनी पड़ी है। सौभाग्य से, उनकी संवेदनशीलता को देखते हुए, उपचारात्मक उपायों का असर जल्दी महसूस होता है। अन्यथा, मुझे डर है कि प्रयोग के समय वे इसके लिए पूरी तरह अनुपयुक्त साबित होंगे।
जहां तक मेरी बात है, पिछले दो दिनों से मेरे दर्द में थोड़ी राहत मिली थी, लेकिन आज सुबह मुझे फिर से दर्द का दौरा पड़ा, जिसके बारे में मैं बस इतना ही कहूंगा कि इसने मुझे अफीम का सेवन फिर से शुरू करने का निश्चय दिला दिया है। मैं इस किताब को यहीं समाप्त करता हूं और अपनी पूरी खुराक—पांच सौ बूँदें—ले लेता हूं।
22 जून.--आज हमारी संभावनाएं बेहतर लग रही हैं। श्री ब्लेक की मानसिक पीड़ा काफी हद तक कम हो गई है। पिछली रात उन्हें थोड़ी नींद आई। अफीम के असर से मेरी रात तो जैसे बेहोशी में गुज़री हो। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं आज सुबह जागा; अधिक उपयुक्त शब्द होगा कि मैं होश में आया।
हम घर जाकर देखने गए कि क्या नवीनीकरण का काम पूरा हो गया है। यह कल यानी शनिवार को पूरा हो जाएगा। जैसा कि श्री ब्लेक ने पहले ही बताया था, बेटरएज ने आगे कोई बाधा नहीं डाली। शुरू से अंत तक, वह रहस्यमय ढंग से विनम्र और रहस्यमय ढंग से मौन रहा।
मेरी चिकित्सा संबंधी परियोजना (जैसा कि बेटरएज इसे कहते हैं) अब अनिवार्य रूप से अगले सोमवार तक स्थगित करनी पड़ेगी। कल शाम तक मजदूर घर पर देर से

पहुंचेंगे। अगले दिन, इस स्वतंत्र देश की स्थापित रविवार की तानाशाही के कारण, ट्रेनों का समय ऐसा निर्धारित है कि लंदन से किसी को भी हमारे पास आने के लिए कहना असंभव होगा। सोमवार आने तक, श्री ब्लेक पर सावधानीपूर्वक नज़र रखने और उन्हें यथासंभव उसी स्थिति में रखने के अलावा और कोई चारा नहीं है, जिस स्थिति में वे आज हैं।

इस बीच, मैंने उसे श्री ब्रुफ़ को पत्र लिखने के लिए मना लिया है, जिसमें यह बात स्पष्ट कर दी गई है कि वह गवाहों में से एक के रूप में उपस्थित रहें। मैंने विशेष रूप से वकील को चुना है, क्योंकि वह हमारे प्रति घोर पूर्वाग्रही हैं। यदि हम उन्हें मना लेते हैं, तो हमारी जीत निर्विवाद हो जाएगी।

श्री ब्लेक ने सार्जेंट कफ को भी पत्र लिखा है; और मैंने मिस वेरेंडर को एक चिट्ठी भेजी है। इनके साथ-साथ बूढ़े बेटरएज (जो वास्तव में परिवार में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं) को मिलाकर हमारे पास पर्याप्त गवाह होंगे—श्रीमती मेरिड्यू को शामिल किए बिना, यदि श्रीमती मेरिड्यू दुनिया की राय के लिए खुद को कुर्बान करने पर अड़ी रहती हैं।

23 जून.--कल रात अफीम का नशा मुझ पर फिर हावी हो गया। कोई बात नहीं; सोमवार बीतने तक मुझे इसे जारी रखना ही होगा।

श्री ब्लेक की आज फिर से तबीयत ठीक नहीं है। उन्होंने कबूल किया कि आज सुबह दो बजे उन्होंने वह दराज खोली जिसमें वे अपनी सिगार रखते हैं। बड़ी मुश्किल से ही वे उसे वापस बंद कर पाए। अगली बार जब उन्हें कोई लालच हुआ तो उन्होंने चाबी खिड़की से बाहर फेंकने की कोशिश की। वेटर आज सुबह उसे एक खाली टंकी के तल में मिली - किस्मत का खेल देखिए! मैंने अगले मंगलवार तक चाबी अपने पास रख ली है।

24 जून.--श्री ब्लेक और मैंने खुली गाड़ी में लंबी सैर की। हम दोनों को गर्मियों की सुहावनी हवा का सुखद अनुभव हुआ। मैंने उनके साथ होटल में भोजन किया। मुझे बहुत राहत मिली—क्योंकि आज सुबह मैंने उन्हें बहुत तनावग्रस्त और उत्तेजित पाया था—लेकिन भोजन के बाद उन्होंने सोफे पर दो घंटे चैन की नींद ली। अगर अब उनकी एक और रात खराब गुज़रे, तो मुझे इसके परिणाम की चिंता नहीं है।

25 जून, सोमवार।--प्रयोग का दिन! शाम के पाँच बज रहे हैं। हम अभी-अभी घर पहुँचे हैं।

सबसे पहला और महत्वपूर्ण सवाल श्री ब्लेक के स्वास्थ्य का है।

जहां तक मैं समझ सकता हूं, शारीरिक रूप से देखा जाए तो आज रात वह अफीम के असर से उतना ही प्रभावित होगा जितना पिछले साल इसी समय हुआ था। आज दोपहर वह तंत्रिका संबंधी संवेदनशीलता की ऐसी स्थिति में है जो लगभग तंत्रिका संबंधी चिड़चिड़ाहट की स्थिति तक पहुंच चुकी है। उसका रंग आसानी से बदल जाता है; उसका हाथ स्थिर नहीं है; और वह आकस्मिक आवाज़ों और अचानक दिखाई देने वाले व्यक्तियों और वस्तुओं से चौंक जाता है।

ये सभी परिणाम नींद की कमी के कारण उत्पन्न हुए हैं, जो बदले में धूम्रपान की आदत को अचानक छोड़ने का तंत्रिका संबंधी परिणाम है, खासकर तब जब यह आदत चरम सीमा तक पहुँच चुकी हो। यहाँ वही कारण फिर से काम कर रहे हैं जो पिछले साल काम कर रहे थे; और जाहिर तौर पर वही प्रभाव भी दिख रहे हैं। क्या अंतिम परीक्षण के बाद भी यह समानता कायम रहेगी? रात की घटनाएँ ही इसका फैसला करेंगी।

जब मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, श्री ब्लेक भीतरी हॉल में बिलियर्ड टेबल पर खेल रहे हैं और अलग-अलग स्ट्रोक का अभ्यास कर रहे हैं, जैसा कि वे पिछले जून में इस घर में मेहमान के रूप में रहने के दौरान किया करते थे। मैं अपनी डायरी यहाँ लाया हूँ, एक तो आज सुबह से लेकर कल सुबह तक मेरे पास जो खाली समय होगा, उसे भरने के लिए; और दूसरा इस उम्मीद में कि शायद कुछ ऐसा घटित हो जाए जिसे उस समय लिख लेना मेरे लिए उपयोगी हो।

क्या मैंने अब तक कुछ छोड़ दिया है? कल की प्रविष्टि पर एक नज़र डालने से पता चलता है कि मैं सुबह की डाक के आने का उल्लेख करना भूल गया हूँ। इन पन्नों को बंद करने से पहले, मैं इसे ठीक कर लेता हूँ और श्री ब्लेक के पास जाता हूँ।

मुझे कल मिस वेरेंडर से कुछ पंक्तियाँ मिलीं। उन्होंने मेरी सलाह के अनुसार दोपहर की ट्रेन से यात्रा करने की व्यवस्था की है। श्रीमती मेरिङ्यू ने उनके साथ जाने की ज़िद की है। पत्र में संकेत दिया गया है कि आमतौर पर शांत रहने वाली उस बुजुर्ग महिला का स्वभाव थोड़ा बिगड़ा हुआ है, और उनकी उम्र और आदतों को ध्यान में रखते हुए उनके प्रति उचित नरमी बरतने का अनुरोध किया गया है। मैं श्रीमती मेरिङ्यू के साथ अपने व्यवहार में उसी संयम का पालन करने का प्रयास करूँगा जो बेटरएज मेरे साथ अपने व्यवहार में दिखाता है। आज जब वह हमसे मिलने आए, तो उन्होंने अपना सबसे अच्छा काला सूट और सबसे कड़क सफेद टाई पहनी हुई थी। जब भी वह मेरी ओर देखते हैं, तो उन्हें याद आता है कि मैंने बचपन से रॉबिन्सन क्रूसो नहीं पढ़ा है, और वह आदरपूर्वक मुझ पर दया करते हैं।

कल भी श्री ब्लेक को वकील का जवाब मिल गया। श्री ब्रफ ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया—हालांकि विरोध करते हुए। उनका मानना है कि यह स्पष्ट रूप से आवश्यक है कि सामान्य समझ रखने वाला कोई सज्जन व्यक्ति मिस वेरिंदर के साथ उस जगह जाए, जिसे हम प्रस्तावित प्रदर्शनी कह सकते हैं। बेहतर साथी न मिलने के कारण, श्री ब्रफ स्वयं ही वह सज्जन बन गए।—तो इस तरह बेचारी मिस वेरिंदर को दो "साथी" मिल गए। यह सोचकर राहत मिलती है कि दुनिया की राय इससे जरूर संतुष्ट होगी!
सार्जेंट कफ के बारे में कोई खबर नहीं मिली है। वह निस्संदेह अभी भी आयरलैंड में ही हैं। हमें आज रात उनसे मिलने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए।
बेटरएज अभी-अभी आया है और उसने बताया है कि श्री ब्लेक ने मुझे बुलाया है। मुझे फिलहाल अपनी कलम रखनी होगी।

* * * * *

सात बजे—हमने फिर से नए सिरे से सजाए गए कमरों और सीढ़ियों का निरीक्षण कर लिया है; और हमने झाड़ियों में सुखद सैर की, जो श्री ब्लेक की पिछली बार यहाँ आने पर पसंदीदा सैरगाह थी। इस तरह, मुझे उम्मीद है कि मैं उनके मन में स्थानों और चीजों की पुरानी यादों को यथासंभव जीवंत कर सकूँगी।
अब हम भोजन करने जा रहे हैं, ठीक उसी समय पर जिस समय पिछले साल जन्मदिन का भोजन दिया गया था। मेरा उद्देश्य, ज़ाहिर है, इस मामले में विशुद्ध रूप से चिकित्सीय है। लाउडैनम को पाचन प्रक्रिया को यथासंभव उसी स्थिति में लाना होगा जहाँ लाउडैनम ने पिछले साल इसे पाया था।
रात के खाने के बाद उचित समय पर, मैं यथासंभव स्वाभाविक रूप से बातचीत को हीरे और उसे चुराने की भारतीय साजिश के विषय पर वापस लाने का प्रस्ताव करता हूँ। जब मैं इन विषयों से उसका मन भर दूँगा, तब तक मैं अपनी पूरी कोशिश कर चुका होऊँगा, इससे पहले कि उसे दूसरी खुराक देने का समय आए।

* * * * *

साढ़े आठ बजे।--मुझे अभी-अभी सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य निभाने का अवसर मिला है; परिवार की दवाइयों की पेटी में लाउडैनम ढूंढने का कर्तव्य, जिसका इस्तेमाल श्री कैंडी ने पिछले साल किया था।
दस मिनट पहले, मैंने बेटरएज को खाली समय में पकड़ा और उसे अपनी बात बताई। बिना कोई आपत्ति जताए, बिना अपना पर्स निकाले, वह मुझे (हर कदम पर मेरी

सुविधा का ध्यान रखते हुए) उस भंडारगृह तक ले गया जहाँ दवाइयों का बक्सा रखा था।
मुझे बोतल मिली, जो चमड़े से बंधे कांच के ढक्कन से सावधानीपूर्वक सुरक्षित थी। जैसा कि मैंने अनुमान लगाया था, उसमें सामान्य अफीम का टिंचर था। बोतल अभी भी अच्छी तरह भरी हुई थी, इसलिए मैंने आपात स्थिति में उपयोग के लिए रखे गए दो नुस्खों के बजाय इसे ही इस्तेमाल करने का निर्णय लिया।
मुझे कितनी मात्रा में दवा देनी है, इस सवाल में कुछ दिक्कतें हैं। मैंने इस पर विचार किया है और खुराक बढ़ाने का फैसला किया है।
मेरे नोट्स से पता चलता है कि श्री कैंडी ने केवल पच्चीस मिनिम की खुराक दी थी। यह खुराक उन परिणामों के लिए बहुत कम है जो श्री ब्लेक जैसे संवेदनशील व्यक्ति के मामले में भी आए। मुझे लगता है कि यह बहुत संभव है कि श्री कैंडी ने अनुमान से अधिक खुराक दी हो - क्योंकि मैं जानता हूँ कि उन्हें खाने-पीने का बहुत शौक है, और उन्होंने जन्मदिन पर भोजन के बाद लाउडैनम की मात्रा नापी थी। खैर, मैं खुराक को चालीस मिनिम तक बढ़ाने का जोखिम उठाऊंगा। इस बार, श्री ब्लेक को पहले से पता है कि वे लाउडैनम लेने वाले हैं - जो शारीरिक रूप से, उनके (अनजाने में) इसके प्रभावों का प्रतिरोध करने की एक निश्चित क्षमता के बराबर है। यदि मेरा अनुमान सही है, तो इस बार अधिक मात्रा की आवश्यकता होगी, ताकि पिछले वर्ष कम मात्रा से प्राप्त परिणामों को दोहराया जा सके।
* * * * *
दस बजे।--गवाह, या कहें कि दल (मैं उन्हें क्या कहूँ?), एक घंटा पहले घर पहुँच गए थे।
नौ बजने से कुछ ही पहले, मैंने श्री ब्लेक को अपने साथ उनके शयनकक्ष में चलने के लिए राजी किया; इसका कारण यह बताया कि मैं चाहता था कि वे कमरे का अंतिम बार निरीक्षण कर लें, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि कमरे की साज-सज्जा में कुछ भी छूटा न हो। मैंने बेटरएज से पहले ही यह व्यवस्था कर ली थी कि श्री ब्रफ के लिए तैयार किया गया शयनकक्ष श्री ब्लेक के कमरे के बगल में होगा, और मुझे वकील के आने की सूचना दरवाजे पर दस्तक से दी जाएगी। हॉल में लगी घड़ी के नौ बजने के पाँच मिनट बाद, मैंने दस्तक सुनी; और तुरंत बाहर जाकर गलियारे में श्री ब्रफ से मिला।
मेरी व्यक्तिगत उपस्थिति (हमेशा की तरह) मेरे विरुद्ध ही रही। श्री ब्रुफ़ का अविश्वास उनकी आँखों में स्पष्ट रूप से झलक रहा था। अजनबियों पर ऐसा प्रभाव डालने की

मुझे अच्छी आदत थी, इसलिए वकील के श्री ब्लेक के कमरे में पहुँचने से पहले ही मैंने बिना किसी झिझक के अपनी बात कह दी।
मैंने कहा, "मुझे लगता है कि आप श्रीमती मेरिड्यू और मिस वेरेंडर के साथ यहां आए हैं?"
"हां," श्री ब्रुफ ने यथासंभव रूखेपन से उत्तर दिया।
"मिस वेरेंडर ने शायद आपको बताया होगा कि मैं चाहती हूं कि घर में उनकी (और श्रीमती मेरिड्यू की उपस्थिति भी) मिस्टर ब्लेक से तब तक गुप्त रखी जाए, जब तक कि उन पर मेरा प्रयोग पहले न हो जाए?"
श्री ब्रुफ़ ने अधीरता से कहा, "मुझे पता है कि मुझे चुप रहना है, महोदय! मानव मूर्खता के विषय पर मैं आमतौर पर चुप रहता हूँ, इसलिए इस बार तो मैं और भी चुप रहने को तैयार हूँ। क्या इससे आप संतुष्ट हैं?"
मैंने झुककर अभिवादन किया और बेटरएज को उनके कमरे तक छोड़ने चला गया। विदाई के समय बेटरएज ने मुझे एक नज़र से देखा, मानो वह शब्दों में कह रहा हो, "आपने एक तातार आदमी को पकड़ लिया है, श्री जेनिंग्स - और उसका नाम ब्रूफ है।"
इसके बाद दोनों महिलाओं के साथ बैठक समाप्त करना आवश्यक था। मैं सीढ़ियों से नीचे उतरा—थोड़ा घबराया हुआ, मैं स्वीकार करता हूँ—मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष की ओर।
माली की पत्नी (महिलाओं के रहने की व्यवस्था की देखरेख करने वाली) ने मुझे पहली मंजिल के गलियारे में मिला। यह उत्कृष्ट महिला मुझसे अत्यधिक विनम्रता से पेश आती है, जो स्पष्ट रूप से घोर भय का परिणाम है। जब भी मैं उससे बात करता हूँ, वह घूरती है, कांपती है और झुककर अभिवादन करती है। जब मैंने मिस वरिंदर के बारे में पूछा, तो वह घूरने लगी, कांपने लगी और निस्संदेह झुककर अभिवादन भी करती, अगर मिस वरिंदर ने अचानक अपने बैठक कक्ष का दरवाजा खोलकर उस औपचारिकता को बीच में ही न रोक दिया होता।
"क्या वो मिस्टर जेनिंग्स हैं?" उसने पूछा।
इससे पहले कि मैं कुछ कह पाती, वह मुझसे बात करने के लिए उत्सुकता से गलियारे में आ गईं। हम एक ब्रैकेट पर लगे लैंप की रोशनी में मिले। मुझे देखते ही मिस वेरेंडर रुक गईं और झिझकीं। फिर तुरंत संभल गईं, एक पल के लिए उनका चेहरा लाल हो गया—और फिर, बड़ी सहजता से, उन्होंने मुझे अपना हाथ बढ़ाया।

"मैं आपके साथ अजनबी जैसा व्यवहार नहीं कर सकती, मिस्टर जेनिंग्स," उसने कहा। "काश आपको पता होता कि आपके पत्रों ने मुझे कितनी खुशी दी है!"

उसने मेरे बदसूरत, झुर्रीदार चेहरे को देखा, उसकी आँखों में एक ऐसी असीम कृतज्ञता थी जो मेरे साथी मनुष्यों के प्रति मेरे अनुभव में बिल्कुल नई थी, और मैं उसे जवाब देने के लिए अवाक रह गया। उसकी दयालुता और सुंदरता के लिए मैं बिल्कुल भी तैयार नहीं था। ईश्वर का शुक्र है कि वर्षों के कष्टों ने मेरे हृदय को कठोर नहीं किया। मैं उसके साथ उतना ही असहज और शर्मीला था, मानो मैं किशोरावस्था का कोई लड़का हूँ।

"वह अब कहाँ है?" उसने पूछा, अपनी सबसे बड़ी रुचि - मिस्टर ब्लेक में दिलचस्पी - को खुलकर ज़ाहिर करते हुए। "वह क्या कर रहा है? क्या उसने मेरे बारे में बात की है? क्या वह खुश है? पिछले साल घर में जो कुछ हुआ था, उसके बाद वह घर को कैसे देख पा रहा है? आप उसे लाउडैनम कब देने वाले हैं? क्या मैं आपको उसे डालते हुए देख सकती हूँ? मुझे बहुत दिलचस्पी है; मैं बहुत उत्साहित हूँ - मुझे आपसे दस हज़ार बातें कहनी हैं, और वे सब इतनी उमड़ रही हैं कि मुझे समझ नहीं आ रहा कि पहले क्या कहूँ। क्या आपको आश्चर्य है कि मुझे इसमें इतनी दिलचस्पी क्यों है?"

"नहीं," मैंने कहा। "मुझे लगता है कि मैं इसे पूरी तरह से समझता हूँ।"

वह भ्रमित होने के दिखावटीपन से कहीं ऊपर थी। उसने मुझे वैसे ही जवाब दिया जैसे वह किसी भाई या पिता को देती।

“आपने मुझे असहनीय पीड़ा से मुक्ति दिलाई है; आपने मुझे नया जीवन दिया है। मैं इतनी कृतघ्न कैसे हो सकती हूँ कि आपसे कुछ छुपाऊँ? मैं उससे प्रेम करती हूँ,” उसने सरलता से कहा, “मैंने शुरू से अंत तक उससे प्रेम किया है—यहाँ तक कि जब मैं अपने मन में उसके प्रति असत्य भाव रखती थी; यहाँ तक कि जब मैं उसे सबसे कठोर और क्रूर शब्द कहती थी। क्या इसमें मेरे लिए कोई बहाना है? मुझे आशा है कि है—मुझे डर है कि यही एकमात्र बहाना है जो मेरे पास है। जब कल आएगा, और उसे पता चलेगा कि मैं घर में हूँ, तो क्या आप सोचते हैं—”

वह फिर रुक गई और बहुत गंभीरता से मेरी ओर देखने लगी।

मैंने कहा, "जब कल आएगा, तो मुझे लगता है कि आपको बस उसे वही बताना होगा जो आपने अभी मुझे बताया है।"

उसका चेहरा खिल उठा; वह मेरे और करीब आ गई। उसकी उंगलियां घबराकर उस फूल से खेलने लगीं जिसे मैंने बगीचे से तोड़ा था और जिसे मैंने अपने कोट के

बटनहोल में लगाया था।
"आपने उसे हाल ही में काफी देखा है," उसने कहा। "क्या आपने सचमुच में उसे देखा है?"
"सचमुच," मैंने उत्तर दिया। "मुझे कल क्या होगा इसका पूरा यकीन है। काश, मुझे आज रात क्या होगा इसका भी उतना ही यकीन होता।"
बातचीत के उस मोड़ पर, बेटरएज चाय की ट्रे लेकर प्रकट हुए और हमारी बातचीत रुक गई। बैठक कक्ष में जाते हुए उन्होंने मुझे एक और अर्थपूर्ण नज़र से देखा। "जी हाँ! मौके का फायदा उठा लो। ऊपर तातार है, मिस्टर जेनिंग्स—ऊपर तातार है!"
हम उसके पीछे कमरे में गए। कोने में बैठी एक छोटी सी बूढ़ी औरत, बहुत ही सलीके से कपड़े पहने हुए, कढ़ाई के एक सुंदर नमूने में पूरी तरह मग्न थी। उसने अपना काम अपनी गोद में गिरा दिया और मेरे घिनौने रंग-रूप और चितकबरे बालों को देखते ही हल्की सी चीख मारी।
मिस वेरेंडर ने कहा, "श्रीमती मेरिड्यू, ये श्री जेनिंग्स हैं।"
"श्रीमान जेनिंग्स से क्षमा मांगती हूं," उस बुजुर्ग महिला ने मिस वेरेंडर की ओर देखते हुए और मुझसे कहा। "रेलवे यात्रा हमेशा मुझे बेचैन कर देती है। मैं हमेशा की तरह खुद को व्यस्त रखकर अपने मन को शांत करने की कोशिश कर रही हूं। मुझे नहीं पता कि इस असाधारण अवसर पर मेरी कढ़ाई ठीक है या नहीं। अगर इससे श्रीमान जेनिंग्स के चिकित्सा संबंधी विचारों में कोई बाधा आती है, तो मैं इसे खुशी-खुशी हटा दूंगी।"
मैंने कढ़ाई की मौजूदगी को तुरंत मंज़ूरी दे दी, ठीक वैसे ही जैसे मैंने फटे हुए गिद्ध और कामदेव के पंख की गैरमौजूदगी को मंज़ूरी दी थी। श्रीमती मेरिड्यू ने मेरे बालों को देखने की कोशिश की—कृतज्ञता से भरी कोशिश। नहीं! यह संभव नहीं था। श्रीमती मेरिड्यू ने फिर से मिस वेरेंडर की ओर देखा।
“अगर श्री जेनिंग्स मुझे अनुमति दें,” बूढ़ी महिला ने आगे कहा, “मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहूँगी। श्री जेनिंग्स आज रात एक वैज्ञानिक प्रयोग करने वाले हैं। मैं बचपन में स्कूल में वैज्ञानिक प्रयोग देखने जाया करती थी। वे हमेशा विस्फोट में समाप्त होते थे। अगर श्री जेनिंग्स इतनी कृपा करें, तो कृपया मुझे इस बार विस्फोट के बारे में पहले से बता दें। ताकि संभव हो तो सोने से पहले ही मैं इसे खत्म कर सकूँ।”
मैंने श्रीमती मेरिड्यू को आश्वस्त करने का प्रयास किया कि इस अवसर पर कार्यक्रम में विस्फोट को शामिल नहीं किया गया था।

"नहीं," बूढ़ी औरत ने कहा। "मैं श्री जेनिंग्स की बहुत आभारी हूँ—मुझे पता है कि वह मुझे धोखा सिर्फ मेरे भले के लिए दे रहे हैं। मुझे सीधा व्यवहार पसंद है। मैं विस्फोट के लिए पूरी तरह तैयार हूँ—लेकिन अगर संभव हो तो मैं सोने से पहले इसे खत्म करना चाहती हूँ।"

तभी दरवाजा खुला और श्रीमती मेरिड्यू ने एक और हल्की चीख मारी। क्या यह विस्फोट की शुरुआत थी? नहीं: यह तो बेटरएज का आगमन था।

"श्रीमान जेनिंग्स, मुझे क्षमा करें," बेटरएज ने अपने बेहद गोपनीय अंदाज़ में कहा। "श्रीमान फ्रैंकलिन जानना चाहते हैं कि आप कहाँ हैं। आपके आदेशानुसार, घर में मेरी पत्नी की उपस्थिति के बारे में उन्हें गुमराह करने के लिए, मैंने कहा कि मुझे नहीं पता। कृपया ध्यान दें, यह झूठ था। महोदय, मेरा एक पैर पहले से ही कब्र में है, इसलिए आप मुझसे जितने कम झूठ बोलने की उम्मीद करेंगे, उतना ही मैं आपका ऋणी रहूंगा, जब मेरा अंतरात्मा मुझे कचोटेगी और मेरा समय आएगा।"

बेटरएज के अंतरात्मा के विशुद्ध काल्पनिक प्रश्न पर एक पल भी बर्बाद करने का समय नहीं था। अगर मैं तुरंत उनके कमरे में न जाऊं तो श्री ब्लेक मेरी तलाश में आ सकते हैं। मिस वेरेंडर मेरे पीछे गलियारे में आईं।

"ऐसा लगता है कि वे आपको सताने की साजिश रच रहे हैं," उसने कहा। "इसका क्या मतलब है?"

"मिस वेरेंडर, यह तो दुनिया का सिर्फ एक छोटा सा विरोध है—जो किसी भी नई चीज के खिलाफ होता है।"

"हम श्रीमती मेरिड्यू का क्या करें?"

"उसे बता दो कि विस्फोट कल सुबह नौ बजे होगा।"

"ताकि उसे सोने के लिए भेजा जा सके?"

"हां—ताकि उसे सोने के लिए भेजा जा सके।"

मिस वेरेंडर बैठक कक्ष में वापस चली गईं, और मैं श्री ब्लेक के पास ऊपर चला गया। मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने उसे अकेला पाया; वह बेचैनी से अपने कमरे में इधर-उधर घूम रहा था, और अकेले छोड़े जाने से थोड़ा चिढ़ गया था।

मैंने पूछा, "श्री ब्रुफ कहाँ हैं?"

उन्होंने दोनों कमरों के बीच बंद दरवाजे की ओर इशारा किया। श्री ब्रुफ़ ने एक पल के लिए उन्हें देखा था; हमारी कार्यवाही के विरुद्ध अपना विरोध दोहराने का प्रयास किया था; और एक बार फिर श्री ब्लेक पर कोई प्रभाव डालने में विफल रहे थे। इस पर,

वकील ने पेशेवर कागज़ात से भरे एक काले चमड़े के थैले में शरण ली। उन्होंने स्वीकार किया, "जीवन के गंभीर कार्य, ऐसे अवसर पर बिल्कुल अनुपयुक्त हैं। लेकिन जीवन के गंभीर कार्य तो करने ही हैं। श्री ब्लेक शायद एक व्यावहारिक व्यक्ति की पुरानी आदतों के लिए कृपा करेंगे। समय ही धन है - और जहाँ तक श्री जेनिंग्स की बात है, वे इस बात पर भरोसा कर सकते हैं कि बुलाए जाने पर श्री ब्रुफ़ उपलब्ध होंगे।" इस क्षमा याचना के साथ, वकील अपने कमरे में वापस चले गए, और हठपूर्वक अपने काले थैले में मग्न हो गए।

मैंने श्रीमती मेरिड्यू और उनकी कढ़ाई के बारे में सोचा, और बेटरएज और उनके विवेक के बारे में। अंग्रेज़ चरित्र के ठोस पक्ष में एक अद्‌भुत समानता है—ठीक वैसे ही जैसे अंग्रेज़ चेहरे के ठोस भावों में एक अद्‌भुत समानता होती है।

श्री ब्लेक ने अधीरता से पूछा, "आप मुझे लाउडैनम कब देंगे?"

मैंने कहा, "आपको थोड़ा और इंतजार करना होगा। मैं तब तक यहीं रुकूंगा और आपका साथ दूंगा।"

तब दस बजे नहीं बजे थे। मैंने बेटरएज और श्री ब्लेक से समय-समय पर पूछताछ की थी, जिससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा था कि श्री कैंडी द्वारा दी गई लाउडैनम की खुराक ग्यारह बजे से पहले नहीं दी जा सकती थी। इसलिए मैंने तब तक दूसरी खुराक न देने का निर्णय लिया था।

हमने थोड़ी बातचीत की; लेकिन हम दोनों का मन आने वाली कठिन परीक्षा के बारे में सोच रहा था। बातचीत जल्द ही धीमी पड़ गई—फिर पूरी तरह बंद हो गई। श्री ब्लेक ने अपने बेडरूम की मेज पर रखी किताबों को यूं ही पलटना शुरू कर दिया। कमरे में प्रवेश करते ही मैंने एहतियात के तौर पर उन किताबों को देख लिया था। द गार्जियन; द टैटलर; रिचर्डसन की पामेला; मैकेंज़ी की मैन ऑफ फीलिंग; रोस्को की लोरेंजो डी मेडिसी; और रॉबर्टसन की चार्ल्स द फिफ्थ—सभी क्लासिक रचनाएँ; सभी (बेशक) बाद के समय में निर्मित किसी भी रचना से कहीं अधिक श्रेष्ठ; और सभी (मेरे वर्तमान दृष्टिकोण से) एक ही महान गुण रखती हैं कि वे न तो किसी की रुचि जगाती हैं और न ही किसी के दिमाग को उत्तेजित करती हैं। मैंने श्री ब्लेक को मानक साहित्य के प्रभाव में छोड़ दिया और अपनी डायरी में यह प्रविष्टि लिखने में लग गया।

मेरी घड़ी बता रही है कि लगभग ग्यारह बजने वाले हैं। मुझे इन पत्तों को एक बार फिर से ढकना होगा।

* * * * *

सुबह के दो बजे—प्रयोग किया जा चुका है। अब मैं इसके परिणाम का वर्णन करने जा रहा हूँ।

ग्यारह बजे, मैंने बेटरएज के लिए घंटी बजाई और मिस्टर ब्लेक से कहा कि वे अब सोने की तैयारी कर सकते हैं।

मैंने खिड़की से बाहर रात को देखा। मौसम सुहावना और बारिश वाला था, इस लिहाज़ से पिछले साल 21 जून की जन्मदिन की रात जैसा। शकुनों में विश्वास न करते हुए भी, वातावरण में किसी तरह के प्रत्यक्ष तंत्रिका संबंधी प्रभाव—तूफ़ान या बिजली के झटके—न देखकर कम से कम राहत मिली। बेटरएज खिड़की पर मेरे पास आया और रहस्यमय तरीके से मेरे हाथ में कागज़ की एक छोटी सी पर्ची थमा दी। उस पर ये पंक्तियाँ लिखी थीं:

श्रीमती मेरिड्यू यह जानते हुए सो गई हैं कि विस्फोट कल सुबह नौ बजे होगा, और जब तक वह आकर मुझे जाने की अनुमति नहीं देतीं, तब तक मुझे घर के इस हिस्से से बाहर नहीं निकलना है। उन्हें इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं है कि प्रयोग का मुख्य केंद्र मेरा बैठक कक्ष है—वरना वह पूरी रात वहीं रहतीं! मैं अकेला हूँ और बहुत चिंतित हूँ। कृपया मुझे लाउडैनम नापते हुए देखने दीजिए; मैं इसमें कुछ न कुछ करना चाहता हूँ, भले ही एक दर्शक के रूप में ही सही।—आर.वी.

मैं बेटरएज के पीछे-पीछे कमरे से बाहर निकला और उससे कहा कि वह दवाइयों का डिब्बा मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष में रख दे।

यह आदेश सुनकर वह पूरी तरह से हैरान रह गया। ऐसा लग रहा था मानो उसे शक हो कि मैं मिस वेरेंडर के साथ कोई गुप्त चिकित्सीय साजिश रच रहा हूँ! उसने कहा, "क्या मैं पूछने की हिम्मत कर सकता हूँ कि मेरी युवती और दवाइयों के डिब्बे का आपस में क्या संबंध है?"

"बैठक कक्ष में ही रहो, और तुम्हें पता चल जाएगा।"

एक ऐसे अवसर पर जब कार्यवाही में दवाइयों का एक बक्सा भी शामिल था, बेटरएज को मेरी प्रभावी ढंग से देखरेख करने की अपनी स्वयं की क्षमता पर संदेह होता प्रतीत हुआ।

उन्होंने पूछा, "क्या श्री ब्रफ को इस व्यवसाय के इस हिस्से में शामिल करने पर कोई आपत्ति है, महोदय?"

"बिल्कुल इसके विपरीत! मैं अब श्री ब्रुफ से नीचे मेरे साथ चलने के लिए कहने जा रहा हूँ।"

बेटरएज बिना कुछ कहे दवाइयों का डिब्बा लाने के लिए चला गया। मैं वापस मिस्टर ब्लेक के कमरे में गया और बातचीत के दरवाजे पर दस्तक दी। मिस्टर ब्रूफ़ ने अपने कागजात हाथ में लिए दरवाजा खोला—कानून में डूबे हुए; चिकित्सा से उनका कोई वास्ता नहीं था।

मैंने कहा, "आपको परेशान करने के लिए क्षमा करें। लेकिन मैं मिस्टर ब्लेक के लिए लाउडैनम तैयार करने जा रहा हूँ; और मुझे आपसे अनुरोध करना होगा कि आप उपस्थित रहें और देखें कि मैं क्या करता हूँ।"

"जी?" श्री ब्रुफ़ ने कहा, उनका लगभग पूरा ध्यान अपने कागज़ों पर था और केवल एक-दसवां हिस्सा अनिच्छा से मेरी ओर था। "और कुछ?"

"मुझे आपको यहाँ मेरे साथ वापस आने और मुझे दवा की खुराक देते हुए देखने के लिए थोड़ा परेशान करना पड़ेगा।"

"और कुछ?"

"एक और बात। आपको श्री ब्लेक के कमरे में रुककर यह देखने की असुविधा उठानी पड़ेगी कि आगे क्या होता है।"

"वाह, बहुत बढ़िया!" श्री ब्रुफ़ ने कहा। "मेरा कमरा हो या श्री ब्लेक का कमरा—कोई फर्क नहीं पड़ता; मैं अपने कागजात कहीं भी रख सकता हूँ। जब तक कि आपको कोई आपत्ति न हो, श्री जेनिंग्स, कि मैं कार्यवाही में इतनी समझदारी का इस्तेमाल कर रहा हूँ?"

इससे पहले कि मैं जवाब दे पाता, श्री ब्लेक ने अपने बिस्तर से ही वकील से बात करना शुरू कर दिया।

"क्या आपका सचमुच यह मतलब है कि आपको हमारे द्वारा किए जाने वाले काम में कोई दिलचस्पी नहीं है?" उसने पूछा। "श्री ब्रूफ, आपकी कल्पना शक्ति गाय से भी कम है!"

"गाय एक बहुत ही उपयोगी जानवर है, श्रीमान ब्लेक," वकील ने कहा। इतना कहकर वह अपने कागजात हाथ में लिए मेरे पीछे कमरे से बाहर चले गए।

हमने मिस वेरेंडर को पीला और व्याकुल पाया, जो बेचैनी से अपने बैठक कक्ष में इधर-उधर चक्कर लगा रही थीं। एक कोने में मेज पर बेटरएज दवाइयों के डिब्बे की रखवाली करते खड़े थे। श्री ब्रूफ को जो भी कुर्सी मिली, उस पर बैठ गए और (गाय की तरह) तुरंत अपने कागजातों में डूब गए।

मिस वेरेंडर मुझे एक तरफ ले गईं और तुरंत अपनी एकमात्र सबसे पसंदीदा रुचि - मिस्टर ब्लेक में अपनी रुचि - की ओर लौट आईं।
"अब वह कैसा है?" उसने पूछा। "क्या वह घबराया हुआ है? क्या वह गुस्से में है? क्या आपको लगता है कि यह सफल होगा? क्या आपको यकीन है कि इससे कोई नुकसान नहीं होगा?"
"बिल्कुल। आइए, मैं इसे नाप कर दिखाता हूँ।"
"एक पल रुको! ग्यारह बज चुके हैं। कुछ होने में कितना समय लगेगा?"
"यह कहना आसान नहीं है। शायद एक घंटा।"
"मुझे लगता है कि कमरा अंधेरा होगा, जैसा कि पिछले साल था?"
"निश्चित रूप से।"
"मैं अपने बेडरूम में इंतज़ार करूँगी—ठीक वैसे ही जैसे पहले किया था। मैं दरवाज़ा थोड़ा खुला रखूँगी। पिछले साल भी थोड़ा खुला था। मैं बैठक के दरवाज़े पर नज़र रखूँगी; और जैसे ही वह हिलेगा, मैं अपनी बत्ती बुझा दूँगी। मेरे जन्मदिन की रात को सब कुछ इसी तरह हुआ था। और यह सब फिर से उसी तरह होना चाहिए, है ना?"
"क्या आपको यकीन है कि आप खुद पर नियंत्रण रख सकती हैं, मिस वेरेंडर?"
"उनके हित में, मैं कुछ भी कर सकती हूँ!" उसने जोश से जवाब दिया।
उसके चेहरे को देखते ही मुझे यकीन हो गया कि मैं उस पर भरोसा कर सकता हूँ। मैंने फिर से श्री ब्रुफ से बात की।
मैंने कहा, "मुझे आपसे अनुरोध है कि आप अपने कागजात थोड़ी देर के लिए एक तरफ रख दें।"
"ओह, बिल्कुल!" वह चौंककर उठ खड़ा हुआ—जैसे मैंने उसे किसी बेहद दिलचस्प जगह पर परेशान कर दिया हो—और मेरे पीछे दवाइयों के डिब्बे तक आया। वहाँ, अपने पेशे के दौरान होने वाली उमंग से रहित होकर, उसने बेटरएज की ओर देखा—और थकी हुई सी जम्हाई ली।
मिस वेरेंडर एक साइड टेबल से ठंडे पानी का एक कांच का जग लेकर मेरे पास आईं।
"मुझे पानी डालने दीजिए," उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा। "इसमें मेरा भी हाथ जरूर है!"
मैंने बोतल से चालीस मिनिम नापकर लाउडैनम को एक दवा के गिलास में डाला। मैंने कहा, "इसे तीन भाग तक भर दो," और गिलास मिस वेरेंडर को दे दिया। फिर मैंने बेटरएज को दवाइयों का बक्सा बंद करने का निर्देश दिया और उसे बताया कि मेरा

काम हो गया है। बूढ़े नौकर के चेहरे पर असीम राहत छा गई। जाहिर है, उसे शक था कि मैं उसकी प्रेमिका के साथ कुछ गलत कर रहा हूँ!
मेरे निर्देशानुसार पानी डालने के बाद, मिस वेरेंडर ने एक पल का फायदा उठाया—जब बेटरएज संदूक बंद कर रहा था और मिस्टर ब्रूफ अपने कागजात देख रहे थे—और चुपके से दवा के गिलास के किनारे को चूम लिया। उस प्यारी लड़की ने कहा, "जब आप उसे दवा दें, तो उसे उस तरफ से दें!"
मैंने अपनी जेब से हीरे का प्रतीक माना जाने वाला क्रिस्टल का टुकड़ा निकाला और उसे दे दिया।
मैंने कहा, "इसमें तुम्हारा भी हाथ होना चाहिए। तुम्हें इसे वहीं रखना होगा जहाँ तुमने पिछले साल मूनस्टोन रखा था।"
वह भारतीय कैबिनेट की ओर आगे बढ़ी और नकली हीरे को उस दराज में रख दिया जिसमें जन्मदिन की रात असली हीरा रखा था। श्री ब्रूफ ने इस पूरी प्रक्रिया को, बाकी सब की तरह, विरोध करते हुए देखा। लेकिन प्रयोग में अब जो नाटकीय रुचि पैदा हो रही थी, वह (मेरे बड़े मनोरंजन के लिए) बेटरएज के आत्मसंयम की क्षमता से परे साबित हुई। मोमबत्ती पकड़े हुए उनका हाथ कांप रहा था और उन्होंने घबराकर फुसफुसाते हुए कहा, "क्या आपको यकीन है, महोदया, यह सही दराज है?"
मैं हाथ में लाउडैनम और पानी लिए फिर से आगे-आगे चलने लगा। दरवाजे पर पहुँचकर मैं मिस वेरेंडर से आखिरी बार बात करने के लिए रुका।
मैंने कहा, "लाइट बंद करने में देर मत करना।"
"मैं उन्हें तुरंत बुझा दूंगी," उसने जवाब दिया। "और मैं अपने बेडरूम में सिर्फ एक मोमबत्ती जलाकर इंतजार करूंगी।"
उसने हमारे पीछे बैठक का दरवाजा बंद कर दिया। श्री ब्रुफ और बेटरएज के पीछे-पीछे मैं श्री ब्लेक के कमरे में वापस चला गया।
हमने देखा कि वह बिस्तर पर बेचैनी से इधर-उधर हिल रहा था और चिड़चिड़ाकर सोच रहा था कि क्या उसे आज रात लाउडैनम लेनी है। दो गवाहों की मौजूदगी में, मैंने उसे खुराक दी, उसके तकिए हिलाए और उसे चुपचाप लेट जाने और इंतजार करने को कहा।
हल्के चिंट्ज़ के पर्दों से सुसज्जित उनका बिस्तर कमरे की दीवार से सटाकर रखा गया था, ताकि उसके दोनों ओर पर्याप्त खुली जगह रहे। एक तरफ मैंने पर्दे पूरी तरह से खींच दिए—और कमरे के उस हिस्से में, जो उनकी नज़र से छिपा हुआ था, मैंने श्री

ब्रुफ़ और बेटरएज को परिणाम की प्रतीक्षा करने के लिए बैठा दिया। बिस्तर के निचले हिस्से में मैंने पर्दे आधे खींच दिए—और अपनी कुर्सी थोड़ी दूरी पर रख दी, ताकि परिस्थिति के अनुसार वह मुझे देख सकें या न देख सकें, मुझसे बात कर सकें या न कर सकें। मुझे पहले ही पता था कि वह हमेशा कमरे में रोशनी जलाकर सोते हैं, इसलिए मैंने दो जलती हुई मोमबत्तियों में से एक को बिस्तर के सिरहाने पर रखी एक छोटी मेज पर रख दिया, जहाँ रोशनी की चकाचौंध उनकी आँखों में न पड़े। दूसरी मोमबत्ती मैंने श्री ब्रुफ़ को दे दी; इस बार रोशनी चिंट्ज़ के पर्दों के कारण कम हो रही थी। खिड़की ऊपर से खुली थी, ताकि कमरे में हवा आती रहे। हल्की बारिश हो रही थी, घर में सन्नाटा था। मेरी घड़ी के अनुसार ग्यारह बजकर बीस मिनट हो चुके थे, जब सारी तैयारियां पूरी हो गईं, और मैं बिस्तर के नीचे अलग से रखी कुर्सी पर बैठ गया।

श्री ब्रूफ ने अपने कागजात फिर से उठा लिए, मानो उनमें पहले की तरह ही गहरी दिलचस्पी दिखा रहे हों। लेकिन अब उनकी ओर देखते हुए, मुझे कुछ ऐसे संकेत और इशारे दिखाई दिए जिनसे मुझे पता चला कि कानून का उन पर से प्रभाव धीरे-धीरे कम होने लगा है। जिस स्थिति में हम अब थे, उसमें उनकी रुचि धीरे-धीरे कम होती जा रही थी और उनका प्रभाव उनके कल्पनाहीन मन पर भी पड़ रहा था। जहाँ तक बेटरएज की बात है, उनके लिए सिद्धांतों की दृढ़ता और आचरण की गरिमा मात्र खोखले शब्द रह गए थे। वे भूल गए थे कि मैं श्री फ्रैंकलिन ब्लेक पर जादू का करतब दिखा रहा था; वे भूल गए थे कि मैंने घर को ऊपर से नीचे तक उलट-पुलट कर दिया था; वे भूल गए थे कि मैंने रॉबिन्सन क्रूसो को बचपन से नहीं पढ़ा था। "भगवान के लिए, महोदय," उन्होंने मुझसे फुसफुसाते हुए कहा, "हमें बताइए कि इसका असर कब शुरू होगा।"

मैंने फुसफुसाते हुए जवाब दिया, "आधी रात से पहले नहीं। कुछ मत बोलो, और चुपचाप बैठे रहो।"

बेटरएज ने बिना किसी हिचकिचाहट के मेरे साथ एकदम निचले स्तर की आत्मीयता का प्रदर्शन किया। उसने आँख मारकर जवाब दिया!

श्री ब्लेक की ओर देखते हुए, मैंने पाया कि वे हमेशा की तरह अपने बिस्तर पर बेचैन थे; व्याकुल होकर सोच रहे थे कि अफीम का असर अभी तक क्यों नहीं शुरू हुआ है। उनकी मौजूदा मनोदशा को देखते हुए उन्हें यह कहना कि वे जितना अधिक बेचैन होंगे और सोचेंगे, उतना ही अधिक उस परिणाम में देरी होगी जिसका हम अब इंतजार कर रहे हैं, सरासर व्यर्थ होता। बेहतर तरीका यह था कि उन्हें अफीम के विचार से

मुक्त किया जाए, और उन्हें धीरे-धीरे किसी और चीज़ के बारे में सोचने के लिए प्रेरित किया जाए।
इसी सोच के साथ, मैंने उन्हें मुझसे बात करने के लिए प्रोत्साहित किया; मैंने बातचीत को इस तरह मोड़ा कि वह फिर से उसी विषय पर आ जाए जिस पर हम शाम को चर्चा कर रहे थे—हीरे का विषय। मैंने मूनस्टोन की कहानी के उन हिस्सों पर ज़ोर दिया जो लंदन से यॉर्कशायर तक उसके परिवहन से संबंधित थे; फ्रिज़िंगहॉल के किनारे से उसे निकालते समय श्री ब्लेक द्वारा उठाए गए जोखिम से संबंधित थे; और जन्मदिन की शाम को घर पर भारतीयों के अचानक प्रकट होने से संबंधित थे। और इन घटनाओं का ज़िक्र करते हुए, मैंने जानबूझकर यह मान लिया कि श्री ब्लेक ने कुछ घंटे पहले जो कुछ मुझे बताया था, उसे मैं ठीक से समझ नहीं पाया था। इस तरह, मैंने उन्हें उस विषय पर बात करने के लिए प्रेरित किया जिसे अब उनके दिमाग में भरना अत्यंत महत्वपूर्ण था—बिना उन्हें यह शक होने दिए कि मैं उन्हें किसी उद्देश्य से बात करवा रहा हूँ। धीरे-धीरे, वे मुझे सही जानकारी देने में इतने मग्न हो गए कि वे बिस्तर पर करवटें बदलना भूल गए। जिस महत्वपूर्ण समय पर उसकी आंखों ने मुझे पहली बार बताया कि अफीम उसके दिमाग पर अपना प्रभाव जमाना शुरू कर रही है, उस समय उसका दिमाग अफीम के सवाल से बहुत दूर था।
मैंने अपनी घड़ी देखी। बारह बजने में पाँच मिनट बाकी थे, तभी मुझे लाउडैनम के असर के शुरुआती लक्षण दिखाई देने लगे।
उस समय, किसी भी अनुभवहीन व्यक्ति को उसमें कोई बदलाव नज़र नहीं आता। लेकिन, जैसे-जैसे नई सुबह के मिनट बीतते गए, अफ़ीम का असर धीरे-धीरे और स्पष्ट रूप से दिखने लगा। अफ़ीम का नशा उसकी आँखों में झलक रहा था; उसके चेहरे पर हल्की-हल्की पसीने की बूँदें चमकने लगीं। पाँच मिनट बाद, जो बातें वह मुझसे कर रहा था, वे बेतरतीब हो गईं। वह हीरे के विषय पर अड़ा रहा; लेकिन उसने अपने वाक्य पूरे करना बंद कर दिया। थोड़ी देर बाद, वाक्य घटकर एक-एक शब्द रह गए। फिर, कुछ देर चुप्पी छाई रही। फिर, वह बिस्तर पर उठ बैठा। फिर, हीरे के विषय में ही मग्न रहते हुए, उसने फिर से बात करना शुरू कर दिया—मुझसे नहीं, बल्कि खुद से। इस बदलाव ने मुझे बता दिया कि प्रयोग का पहला चरण आ चुका था। अफ़ीम का उत्तेजक प्रभाव उस पर हावी हो गया था।
अब बारह बजकर तेईस मिनट हो चुके थे। अगले आधे घंटे में ही यह तय हो जाएगा कि वह बिस्तर से उठकर कमरे से बाहर जाएगा या नहीं।

उसे निहारने की तीव्र इच्छा में—प्रयोग के पहले परिणाम को ठीक उसी तरह और लगभग उसी समय प्रकट होते देखने की असीम खुशी में—मैं अपने रात्रिकालीन पहरे के दो साथियों को पूरी तरह भूल गया था। अब उनकी ओर देखते हुए मैंने देखा कि कानून (श्री ब्रुफ के कागजों के रूप में) फर्श पर पड़ा हुआ है, जिस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया था। श्री ब्रुफ स्वयं बिस्तर के अधूरे ढंग से खींचे गए पर्दों के बीच से उत्सुकतापूर्वक देख रहे थे। और बेटरएज, सामाजिक भेदों की परवाह किए बिना, श्री ब्रुफ के कंधे के ऊपर से झाँक रहा था।

मुझे अपनी ओर देखते देख वे दोनों ऐसे पीछे हट गए जैसे कोई लड़का अपने शिक्षक द्वारा गलती पकड़े जाने पर खड़ा हो। मैंने उन्हें चुपचाप अपने जूते उतारने का इशारा किया, जैसे मैं अपने जूते उतार रहा था। अगर मिस्टर ब्लेक हमें उनके पीछे चलने का मौका दे रहे थे, तो उनके पीछे बिना शोर किए चलना अत्यंत आवश्यक था।

दस मिनट बीत गए—और कुछ नहीं हुआ। फिर अचानक उसने अपने ऊपर से चादरें हटा दीं। उसने एक पैर बिस्तर से बाहर निकाला। वह इंतजार करने लगा।

"काश मैंने इसे बैंक से निकाला ही न होता," उसने मन ही मन कहा। "यह बैंक में सुरक्षित था।"

मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था; मेरी कनपटी की नसें तेज़ी से फड़क रही थीं। हीरे की सुरक्षा को लेकर संदेह एक बार फिर उसके दिमाग में हावी हो गया था! प्रयोग की सारी सफलता उसी एक बिंदु पर टिकी थी। अचानक मेरे सामने खुला यह नज़ारा मेरे टूटे हुए हौसले को तोड़ नहीं पाया। मुझे उससे नज़रें हटानी पड़ीं—वरना मैं अपना आपा खो बैठती।

फिर कुछ देर सन्नाटा छा गया।

जब मैंने हिम्मत जुटाकर उसकी ओर देखा, तो वह अपने बिस्तर से उठकर उसके किनारे सीधा खड़ा था। उसकी आँखों की पुतलियाँ सिकुड़ी हुई थीं; मोमबत्ती की रोशनी में उसकी आँखें चमक रही थीं, और वह धीरे-धीरे अपना सिर इधर-उधर हिला रहा था। वह सोच रहा था; वह संशय में था—उसने फिर बात की।

"मुझे कैसे पता चलेगा?" उसने कहा। "हो सकता है भारतीय घर में छिपे हों।"

वह रुका और धीरे-धीरे कमरे के दूसरे छोर तक चला गया। वह मुड़ा, थोड़ी देर रुका और फिर बिस्तर पर लौट आया।

उन्होंने आगे कहा, "यह ताला लगाकर भी नहीं रखा गया है। यह उसकी अलमारी के दराज में है। और उस दराज में ताला नहीं लगता।"

वह बिस्तर के किनारे बैठ गया। उसने कहा, "कोई भी इसे ले जा सकता है।"
वह बेचैनी से फिर उठा और अपने पहले कहे शब्दों को दोहराया।
मुझे कैसे पता चलेगा? हो सकता है भारतीय घर में छिपे हों।
वह फिर रुक गया। मैं बिस्तर के आधे पर्दे के पीछे हट गई। उसने कमरे में चारों ओर देखा, उसकी आँखों में एक खालीपन सी चमक थी। वह एक स्तब्ध क्षण था। मानो एक ठहराव आ गया हो। अफीम के असर में ठहराव? दिमाग की कार्यप्रणाली में ठहराव? कौन कह सकता था? अब सब कुछ इस बात पर निर्भर था कि वह आगे क्या करता है।
वह फिर से बिस्तर पर लेट गया!
मेरे मन में एक भयानक शंका उठी। क्या ऐसा हो सकता है कि अफीम का शामक प्रभाव अभी से महसूस होने लगा हो? मेरे अनुभव में तो ऐसा होना असंभव था। लेकिन अफीम के मामले में अनुभव का क्या महत्व? शायद ही कोई दो व्यक्ति ऐसे हों जिन पर अफीम का असर बिल्कुल एक जैसा हो। क्या उनमें कोई शारीरिक विशिष्टता थी, जिसकी वजह से उन पर इसका प्रभाव किसी नए तरीके से महसूस हो रहा था? क्या हम सफलता के बिल्कुल करीब आकर असफल हो रहे थे?
नहीं! वह अचानक फिर उठ खड़ा हुआ। "मैं भला कैसे सो पाऊंगा, जब मेरे दिमाग में यही चल रहा है?" उसने कहा।
उसने अपने बिस्तर के सिरहाने वाली मेज पर जल रही मोमबत्ती की ओर देखा। कुछ देर बाद उसने मोमबत्ती को अपने हाथ में उठा लिया।
मैंने बंद पर्दों के पीछे जल रही दूसरी मोमबत्ती बुझा दी। मैं श्री ब्रुफ और बेटरएज के साथ बिस्तर के पास सबसे दूर वाले कोने में पीछे हट गया। मैंने उन्हें चुप रहने का इशारा किया, मानो उनकी जान उसी पर निर्भर हो।
हम इंतजार करते रहे—कुछ भी देखे या सुने बिना। हम पर्दों के पीछे छिपकर उसका इंतजार करते रहे।
हमारे दूसरी ओर उसके हाथ में जो रोशनी थी, वह अचानक हिल गई। अगले ही पल वह मोमबत्ती हाथ में लिए तेज़ी से और बिना आवाज़ किए हमारे पास से गुज़र गया।
उसने बेडरूम का दरवाजा खोला और बाहर चला गया।
हम गलियारे में उसके पीछे-पीछे चले। हम सीढ़ियों से नीचे उसके पीछे-पीछे गए। हम दूसरे गलियारे में भी उसके पीछे-पीछे चले। उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा; वह कभी नहीं हिचकिचाया।

उसने बैठक कक्ष का दरवाजा खोला और अंदर चला गया, दरवाजा पीछे से खुला छोड़ दिया।
घर के बाकी दरवाजों की तरह यह दरवाजा भी बड़े-बड़े पुराने जमाने के कब्जों पर लगा हुआ था। जब इसे खोला जाता था, तो दरवाजे और खंभे के बीच एक दरार बन जाती थी। मैंने अपने दोनों साथियों को इस दरार से देखने का इशारा किया, ताकि वे खुद को न दिखा सकें। मैं भी दरवाजे के बाहर, दूसरी तरफ खड़ा हो गया। मेरे बाईं ओर दीवार में एक खांचा था, जिसमें मैं तुरंत छिप सकता था, अगर वह गलियारे की तरफ देखने का कोई भी संकेत देता।
मोमबत्ती हाथ में लिए वह कमरे के बीचोंबीच पहुंचा: उसने चारों ओर देखा—लेकिन उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा।
मैंने मिस वेरेंडर के शयनकक्ष का दरवाज़ा थोड़ा खुला देखा। उन्होंने अपनी बत्ती बुझा दी थी। उन्होंने बड़ी गरिमा से खुद को संभाला हुआ था। उनकी गर्मियों की पोशाक की धुंधली सफेद आकृति ही मुझे दिखाई दे रही थी। जिसे पहले से पता न हो, उसे इस बात का ज़रा भी शक नहीं होता कि कमरे में कोई जीवित प्राणी है। वह अंधेरे में छिपी रहीं: एक शब्द भी नहीं बोला, एक हरकत भी नहीं की।
अब एक बजकर दस मिनट हो चुके थे। सन्नाटे के बीच मुझे बारिश की हल्की बूँदों की आवाज़ और पेड़ों से होकर गुज़रती रात की हवा की कंपकंपी सुनाई दे रही थी।
कमरे के बीच में एक मिनट या उससे अधिक समय तक अनिर्णय की स्थिति में इंतजार करने के बाद, वह खिड़की के पास वाले कोने में चला गया, जहाँ भारतीय कैबिनेट रखा था।
उसने मोमबत्ती को अलमारी के ऊपर रख दिया। उसने एक-एक करके दराजें खोलीं और बंद कीं, जब तक कि वह उस दराज तक नहीं पहुँच गया जिसमें नकली हीरा रखा था। उसने एक पल के लिए दराज में देखा। फिर उसने अपने दाहिने हाथ से नकली हीरा बाहर निकाल लिया। दूसरे हाथ से उसने मोमबत्ती को अलमारी के ऊपर से उठा लिया।
वह कमरे के बीचोंबीच कुछ कदम पीछे हटकर फिर से स्थिर खड़ा हो गया।
अब तक उसने वही दोहराया था जो उसने जन्मदिन की रात किया था। क्या उसकी अगली कार्रवाई पिछले साल जैसी ही होगी? क्या वह कमरे से बाहर जाएगा? क्या वह अब वापस अपने शयनकक्ष में जाएगा, जैसा कि मुझे लगता है कि वह तब गया था? क्या वह हमें दिखाएगा कि अपने कमरे में लौटने पर उसने हीरे के साथ क्या किया था?

जब वह दोबारा हिला, तो उसकी पहली हरकत वह थी जो उसने पहली बार अफीम के असर में होने पर नहीं की थी। उसने मोमबत्ती को मेज पर रख दिया और कमरे के दूसरे छोर की ओर थोड़ा आगे बढ़ गया। वहाँ एक सोफा था। उसने अपने बाएं हाथ से सोफे की पीठ पर ज़ोर से सहारा लिया—फिर खुद को संभाला और कमरे के बीच में लौट आया। अब मैं उसकी आँखें देख सकता था। वे बेजान और भारी होती जा रही थीं; उनकी चमक धीरे-धीरे फीकी पड़ रही थी।

उस पल की अनिश्चितता ने मिस वेरेंडर के आत्म-नियंत्रण को भंग कर दिया। वह कुछ कदम आगे बढ़ीं और फिर रुक गईं। श्री ब्रूफ और बेटरएज ने खुले दरवाजे से पहली बार मेरी ओर देखा। आने वाली निराशा का पूर्वाभास उनके साथ-साथ मेरे मन पर भी गहरा प्रभाव डाल रहा था।

फिर भी, जब तक वह वहीं खड़ा था, उम्मीद बाकी थी। हम असीम उत्सुकता से इंतज़ार कर रहे थे कि आगे क्या होगा।

अगली घटना निर्णायक साबित हुई। उसने नकली हीरे को अपने हाथ से गिरने दिया। वह दरवाजे के सामने फर्श पर गिर गया—उसे और सभी को साफ दिखाई दे रहा था। उसने उसे उठाने की कोई कोशिश नहीं की: वह खाली निगाहों से उसे देखता रहा, और देखते-देखते उसका सिर उसकी छाती पर झुक गया। वह लड़खड़ाया—एक पल के लिए उठा—लड़खड़ाते हुए सोफे पर वापस गया—और उस पर बैठ गया। उसने आखिरी कोशिश की; उठने की कोशिश की, और फिर गिर गया। उसका सिर सोफे के कुशन पर जा गिरा। तब एक बजकर पच्चीस मिनट हो रहे थे। इससे पहले कि मैं अपनी घड़ी जेब में वापस रख पाता, वह सो गया था।

अब सब कुछ खत्म हो चुका था। बेहोशी की दवा का असर उस पर हो गया था; प्रयोग समाप्त हो गया था।

मैंने कमरे में प्रवेश किया और श्री ब्रुफ और बेटरएज को बताया कि वे मेरे पीछे आ सकते हैं। उन्हें परेशान करने का कोई डर नहीं था। हम बेफिक्र होकर घूम-फिर सकते थे और बात कर सकते थे।

मैंने कहा, "सबसे पहले तो यह तय करना होगा कि हम उसके साथ क्या करें। वह शायद अगले छह-सात घंटे तक सोएगा। उसे उसके कमरे तक ले जाना थोड़ा दूर है। जब मैं जवान था, तब मैं यह काम अकेले कर सकता था। लेकिन अब मेरी सेहत और ताकत पहले जैसी नहीं रही - मुझे डर है कि मुझे आपसे मदद मांगनी पड़ेगी।"

इससे पहले कि वे जवाब दे पाते, मिस वेरेंडर ने मुझे धीरे से पुकारा। वह अपने कमरे के दरवाजे पर मुझसे मिलीं, उनके ऊपर एक हल्का शॉल था और उनके बिस्तर की चादर भी थी।
"क्या आपका मतलब है कि आप उसके सोते समय उस पर नजर रखेंगे?" उसने पूछा।
"हां, मुझे इस बात का पूरा यकीन नहीं है कि उसके मामले में अफीम का क्या असर होगा, इसलिए मैं उसे अकेला छोड़ने को तैयार नहीं हूं।"
उसने मुझे शॉल और चादर थमा दी।
"तुम्हें उसे परेशान क्यों करना चाहिए?" उसने फुसफुसाते हुए कहा। "सोफे पर उसका बिस्तर लगा दो। मैं अपना दरवाजा बंद कर सकती हूँ और अपने कमरे में रह सकती हूँ।"
रात के लिए उसे सुलाने का यह सबसे सरल और सुरक्षित तरीका था। मैंने यह सुझाव श्री ब्रुफ़ और बेटरएज को दिया—और दोनों ने इसे स्वीकार कर लिया। पाँच मिनट में मैंने उसे आराम से सोफे पर लिटा दिया और चादर व शॉल से हल्का सा ढक दिया। मिस वेरेंडर ने हमें शुभ रात्रि कहा और दरवाजा बंद कर दिया। मेरे अनुरोध पर, हम तीनों कमरे के बीच में रखी मेज के चारों ओर बैठ गए, जिस पर मोमबत्ती अभी भी जल रही थी और जिस पर लिखने का सामान रखा था।
"अलग होने से पहले," मैंने कहना शुरू किया, "आज रात किए गए प्रयोग के बारे में मुझे कुछ कहना है। इससे दो उद्देश्य पूरे होने थे। पहला उद्देश्य यह साबित करना था कि श्री ब्लेक पिछले साल अफीम के नशे में, अनजाने में और गैर-जिम्मेदाराना तरीके से इस कमरे में आए और हीरा ले गए। आप दोनों ने जो देखा है, उससे क्या आप अब तक संतुष्ट हैं?"
उन्होंने बिना एक पल भी हिचकिचाए मुझे सकारात्मक जवाब दिया।
मैंने आगे कहा, "दूसरा उद्देश्य यह पता लगाना था कि जन्मदिन की रात मिस वेरिंदर द्वारा हीरे को हाथ में लिए उनके बैठक कक्ष से निकलते हुए देखे जाने के बाद उन्होंने हीरे का क्या किया। इस उद्देश्य की पूर्ति इस बात पर निर्भर थी कि वे पिछले वर्ष की तरह ही कार्य करते रहें। वे ऐसा करने में विफल रहे हैं; और इस प्रकार प्रयोग का उद्देश्य विफल हो गया है। मैं यह नहीं कह सकता कि मैं परिणाम से निराश नहीं हूँ - लेकिन मैं ईमानदारी से कह सकता हूँ कि मुझे इस पर आश्चर्य नहीं हुआ है। मैंने श्री ब्लेक को शुरू से ही बताया था कि इस मामले में हमारी पूर्ण सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हम उनमें पिछले वर्ष की शारीरिक और नैतिक स्थितियों को पूरी

तरह से पुन: उत्पन्न कर सकें - और मैंने उन्हें चेतावनी दी थी कि यह लगभग असंभव है। हम केवल आंशिक रूप से ही स्थितियों को पुन: उत्पन्न कर पाए हैं, और परिणामस्वरूप प्रयोग केवल आंशिक रूप से ही सफल रहा है। यह भी संभव है कि मैंने लाउडैनम की बहुत अधिक खुराक दे दी हो। लेकिन मैं स्वयं अपने द्वारा दिए गए पहले कारण को ही वास्तविक कारण मानता हूँ कि हमें विफलता पर शोक मनाने के साथ-साथ सफलता पर खुशी भी मनानी चाहिए। सफलता।"

ये शब्द कहने के बाद, मैंने लेखन सामग्री श्री ब्रुफ़ के सामने रख दी और उनसे पूछा कि क्या उन्हें कोई आपत्ति है—रात के लिए विदा होने से पहले—जो कुछ उन्होंने देखा था उसका एक स्पष्ट विवरण लिखकर उस पर हस्ताक्षर करने में। उन्होंने तुरंत कलम उठाई और एक अनुभवी लेखक की तरह सहजता से विवरण लिख डाला।

कागज़ पर हस्ताक्षर करते हुए उन्होंने कहा, "मैं आपका ऋणी हूँ, आज शाम हमारे बीच जो कुछ भी हुआ, उसके प्रायश्चित के तौर पर। श्री जेनिंग्स, आप पर संदेह करने के लिए मैं क्षमा चाहता हूँ। आपने फ्रैंकलिन ब्लेक की अमूल्य सेवा की है। हमारी कानूनी भाषा में कहें तो, आपने अपना पक्ष साबित कर दिया है।"

बेटरएज की माफी उनके व्यक्तित्व के अनुरूप थी।

“श्रीमान जेनिंग्स,” उन्होंने कहा, “जब आप रॉबिन्सन क्रूसो को दोबारा पढ़ेंगे (जिसकी मैं आपको पुरजोर सलाह देता हूँ), तो आप पाएंगे कि जब वह गलत साबित होता है, तो वह इसे स्वीकार करने में कभी संकोच नहीं करता। कृपया मुझे भी इस मामले में रॉबिन्सन क्रूसो की तरह ही कार्य करने वाला समझें।” इन शब्दों के साथ उन्होंने कागज पर हस्ताक्षर कर दिए।

जब हम मेज से उठे तो श्री ब्रुफ मुझे एक तरफ ले गए।

"हीरे के बारे में एक बात," उन्होंने कहा। "आपका सिद्धांत यह है कि फ्रैंकलिन ब्लेक ने मूनस्टोन को अपने कमरे में छिपाया था। मेरा सिद्धांत यह है कि मूनस्टोन लंदन में श्री लूकर के बैंकरों के पास है। हम इस बात पर बहस नहीं करेंगे कि हम में से कौन सही है। हम केवल यह पूछेंगे कि हम में से कौन अपने सिद्धांत की सच्चाई साबित करने की स्थिति में है?"

मैंने जवाब दिया, "मेरे मामले में, यह परीक्षण आज रात किया गया है, और यह असफल रहा है।"

श्री ब्रुफ़ ने जवाब दिया, "मेरे मामले में, परीक्षण अभी भी चल रहा है। पिछले दो दिनों से मैंने बैंक में श्री लुकर पर नज़र रखी हुई है; और मैं इस निगरानी को महीने के आखिरी

दिन तक जारी रखूंगा। मुझे पता है कि उन्हें हीरा अपने बैंकर्स के हाथों से खुद ही लेना होगा - और मैं इस उम्मीद पर काम कर रहा हूं कि हीरा गिरवी रखने वाला व्यक्ति गिरवी छुड़ाकर उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर कर सकता है। उस स्थिति में, मैं उस व्यक्ति को पकड़ सकता हूं। अगर मैं सफल हो जाता हूं, तो मैं इस रहस्य को ठीक उसी बिंदु पर सुलझा दूंगा जहां यह रहस्य हमें अभी उलझाए हुए है! क्या आप अब तक इस बात से सहमत हैं?"

मैंने इसे तुरंत स्वीकार कर लिया।

वकील ने आगे कहा, "मैं सुबह की ट्रेन से वापस शहर जा रहा हूँ। हो सकता है कि लौटने पर मुझे पता चले कि कोई महत्वपूर्ण खोज हुई है—और यह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकता है कि जरूरत पड़ने पर अपील करने के लिए मेरे पास फ्रैंकलिन ब्लेक मौजूद हों। मेरा इरादा है कि जैसे ही वह जागें, मैं उन्हें बता दूँ कि उन्हें मेरे साथ लंदन वापस चलना होगा। जो कुछ भी हुआ है, उसके बाद क्या मैं आपके प्रभाव पर भरोसा कर सकता हूँ कि आप मेरा साथ देंगे?"

"बिल्कुल!" मैंने कहा।

श्री ब्रूफ ने मुझसे हाथ मिलाया और कमरे से चले गए। बेटरएज उनके पीछे-पीछे बाहर चले गए; मैं श्री ब्लेक को देखने के लिए सोफे पर गया। जब से मैंने उन्हें लिटाया और उनका बिस्तर ठीक किया था, तब से वे हिले तक नहीं थे—वे गहरी और शांत नींद में सो रहे थे।

जब मैं अब भी उसे ही देख रहा था, तभी मुझे बेडरूम का दरवाजा धीरे से खुलने की आवाज सुनाई दी। एक बार फिर, मिस वेरेंडर अपनी खूबसूरत गर्मियों की पोशाक में दहलीज पर दिखाई दीं।

"आखिरी बार मुझ पर एक एहसान करोगे?" उसने फुसफुसाते हुए कहा। "मुझे तुम्हारे साथ उसे देखने दो।"

मैं हिचकिचाया—शिष्टाचार के कारण नहीं; बल्कि उसकी नींद के हित में। वह मेरे करीब आई और मेरा हाथ पकड़ लिया।

"मुझे नींद नहीं आ रही; मैं अपने कमरे में भी चैन से नहीं बैठ सकती," उसने कहा। "ओह, मिस्टर जेनिंग्स, अगर आप मेरी जगह होते, तो सोचिए आप उन्हें देखने के लिए कितना तरसते। हाँ कहिए! कर दीजिए!"

क्या यह बताना जरूरी है कि मैंने हार मान ली? बिलकुल नहीं!

उसने सोफे के निचले हिस्से में एक कुर्सी खींच ली। वह प्रसन्नता के मौन भाव से उसे देखती रही, जब तक कि उसकी आँखों में आँसू नहीं आ गए। उसने अपने आँसू पोंछे और कहा कि वह अपना काम ले आती है। वह अपना काम ले आई, लेकिन उस पर एक भी सिलाई नहीं की। वह उसकी गोद में पड़ा रहा—वह सुई में धागा डालने के लिए भी उससे नज़रें नहीं हटा पाई। मुझे अपनी जवानी याद आ गई; मुझे उन कोमल आँखों की याद आ गई जिन्होंने कभी मुझे प्यार से देखा था। भारी मन से मैंने राहत पाने के लिए अपनी डायरी का सहारा लिया और उसमें वही लिखा जो यहाँ लिखा है।
इसलिए हम चुपचाप एक साथ पहरा देते रहे। हममें से एक अपने लेखन में मग्न था; दूसरा अपने प्रेम में मग्न।
घंटों तक वह गहरी नींद में सोता रहा। कमरे में नए दिन की रोशनी बढ़ती गई, फिर भी वह जरा भी नहीं हिला।
शाम छह बजे के करीब, मुझे एहसास हुआ कि मेरा दर्द फिर से लौट रहा है। मुझे उसे थोड़ी देर के लिए उसके साथ अकेला छोड़ना पड़ा। मैंने कहा कि मैं ऊपर जाकर उसके कमरे से उसके लिए एक और तकिया ले आऊंगी। इस बार दर्द का दौरा लंबा नहीं था। थोड़ी देर में मैं वापस आने में सक्षम हो गई और उसे फिर से देखने दिया।
जब मैं लौटा तो मैंने उसे सोफे के सिरहाने पर पाया। वह बस अपने होठों से उसके माथे को छू रही थी। मैंने जितना हो सके संयम से सिर हिलाया और उसकी कुर्सी की ओर इशारा किया। उसने एक प्यारी सी मुस्कान और चेहरे पर एक मनमोहक रंग लिए मेरी ओर देखा। "तुम मेरी जगह होते तो ऐसा ही करते," उसने फुसफुसाते हुए कहा!
* * * * *
अभी ठीक आठ बजे हैं। वह पहली बार हिलना-डुलना शुरू कर रहा है।
मिस वेरेंडर सोफे के किनारे घुटनों के बल बैठी हैं। उन्होंने खुद को इस तरह बैठाया है कि जब उसकी आंखें पहली बार खुलें, तो उनकी नजरें सीधे उन्हीं के चेहरे पर पड़ें।
क्या मैं उन्हें साथ छोड़ दूं?
हाँ!
* * * * *
ग्यारह बज गए। घर फिर से खाली है। उन्होंने आपस में ही व्यवस्था कर ली है; वे सब दस बजे वाली ट्रेन से लंदन चले गए हैं। मेरी खुशी का छोटा सा सपना टूट गया है। मैं एक बार फिर अपने मित्रहीन और अकेले जीवन की वास्तविकताओं से जाग उठा हूँ।

मुझे खुद पर भरोसा नहीं हो रहा कि मैं उन मीठे शब्दों को लिख सकूँ जो मुझसे खासकर मिस वेरेंडर और मिस्टर ब्लेक ने कहे हैं। वैसे भी, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। वो शब्द मेरे अकेलेपन में मुझे याद आ जाएँगे और मेरे जीवन के बचे हुए आखिरी पलों में मेरा सहारा बनेंगे। मिस्टर ब्लेक मुझे लिखेंगे और लंदन में क्या हो रहा है, बताएँगे। मिस वेरेंडर शरद ऋतु में यॉर्कशायर वापस जाएँगी (निश्चित रूप से अपनी शादी के लिए); और मैं छुट्टी लेकर उनके घर में मेहमान बनूँगी। ओह, मुझे कैसा लगा जब उनकी आँखों में कृतज्ञता भरी खुशी झलक रही थी और उनके हाथ का गर्म स्पर्श कह रहा था, "ये सब तुम्हारी वजह से है!"

मेरे बेचारे मरीज़ मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। आज सुबह फिर से वही पुरानी दिनचर्या! आज रात फिर से अफीम और दर्द के बीच के भयानक विकल्प का सामना करना पड़ेगा!

ईश्वर की दया के लिए उनकी स्तुति हो! मुझे थोड़ी सी धूप देखने को मिली—मेरा समय सुखद बीता।

पांचवीं कथा

फ्रैंकलिन ब्लेक द्वारा कहानी का पुनः आरंभ

अध्याय 1

लेकिन एज्रा जेनिंग्स की डायरी में प्रस्तुत विवरण को पूरा करने के लिए मेरी ओर से कुछ ही शब्दों की आवश्यकता है।

मैं अपने बारे में बस इतना ही कह सकता हूँ कि छब्बीस तारीख की सुबह जब मैं जागा, तो मुझे अफीम के प्रभाव में कही और की गई हर बात का बिल्कुल भी एहसास नहीं था - उस समय से जब नशे ने मुझ पर अपना असर दिखाया, उस समय तक जब मैंने राहेल के बैठक कक्ष में अपनी आँखें खोलीं।

मेरे जागने के बाद जो कुछ हुआ, उसका विस्तृत वर्णन करना मुझे उचित नहीं लगता। केवल परिणामों तक सीमित रहते हुए, मैं यह बता सकता हूँ कि राहेल और मैं एक-दूसरे को पूरी तरह समझ गए थे, इससे पहले कि दोनों ओर से एक भी शब्द कहा गया हो। मैं और राहेल दोनों ही हमारे बीच इतनी जल्दी हुए सुलह का कारण बताने से इनकार करते हैं। महोदया और महोदया, उस समय को याद कीजिए जब आप दोनों एक-दूसरे के प्रति बेहद भावुक थे—और आप जान जाएँगे कि एज्रा जेनिंग्स के बैठक कक्ष का दरवाजा बंद करने के बाद क्या हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे मैं जानता हूँ।

मुझे इस बात पर कोई आपत्ति नहीं है कि श्रीमती मेरिड्यू हमें ज़रूर देख लेतीं, अगर राहेल ने सूझबूझ न दिखाई होती। उसने गलियारे में बुज़ुर्ग महिला के कपड़े की आवाज़ सुनी और तुरंत उससे मिलने दौड़ पड़ी; मैंने श्रीमती मेरिड्यू को कहते सुना, "क्या बात है?" और राहेल ने जवाब दिया, "विस्फोट!" श्रीमती मेरिड्यू ने तुरंत अपना हाथ पकड़वा लिया और आने वाले झटके से बचने के लिए बगीचे में चली गईं। घर लौटने पर, वह हॉल में मुझसे मिलीं और स्कूल के दिनों से लेकर अब तक विज्ञान में हुए अपार सुधारों पर अपनी हैरानी ज़ाहिर की। "श्री ब्लेक, विस्फोट पहले की तुलना में कहीं ज़्यादा हल्के होते हैं। मैं आपको यकीन दिलाती हूँ, मैंने बगीचे से श्री जेनिंग्स के विस्फोट की आवाज़ मुश्किल से सुनी। और घर वापस आने के बाद मुझे कोई गंध भी नहीं आ रही है! मुझे आपके चिकित्सक मित्र से वास्तव में माफ़ी माँगनी चाहिए। उनके लिए यह कहना उचित होगा कि उन्होंने इसे बहुत अच्छे से संभाला है!"

तो, बेटरएज और मिस्टर ब्रफ को हराने के बाद, एज्रा जेनिंग्स ने श्रीमती मेरिड्यू को भी हरा दिया। आखिरकार, दुनिया में उदारवादी भावना का बहुत बड़ा भंडार अभी भी मौजूद है!

नाश्ते के समय, श्री ब्रुफ़ ने मुझे सुबह की ट्रेन से लंदन ले जाने की अपनी इच्छा के बारे में खुलकर बताया। बैंक में चल रही निगरानी और उससे निकलने वाले संभावित परिणाम ने राहेल की जिज्ञासा को इतना बढ़ा दिया कि उसने तुरंत (यदि श्रीमती मेरिड्यू को कोई आपत्ति न हो तो) हमारे साथ शहर वापस चलने का फैसला कर लिया —ताकि हमारी गतिविधियों की सबसे पहली खबर उसे मिल सके।

विस्फोट की घटना के बाद श्रीमती मेरिड्यू ने अत्यंत विनम्रता और उदारता दिखाई; और बेटरएज को सूचित किया गया कि हम चारों सुबह की ट्रेन से एक साथ वापस जाएँगे। मुझे पूरी उम्मीद थी कि वह हमारे साथ आने की अनुमति मांगेंगे। लेकिन राहेल ने समझदारी से अपने वफादार पुराने नौकर को एक ऐसा काम दे दिया था जिसमें उसकी रुचि थी। उसे घर की साज-सज्जा पूरी करने का जिम्मा सौंपा गया था, और वह अपनी घरेलू जिम्मेदारियों में इतना व्यस्त था कि उसे जासूसी का जुनून सवार नहीं हुआ, जैसा कि अन्य परिस्थितियों में हो सकता था।

लंदन जाने के हमारे फैसले में हमें बस एक ही बात का अफसोस था, और वो था एज़रा जेनिंग्स से बिछड़ना, जो हमारी इच्छा से कहीं अधिक अचानक हुआ। उन्हें हमारे साथ आने के लिए मनाना नामुमकिन था। मैं तो बस उनसे चिट्ठी लिखने का वादा कर सका और राहेल ने भी उनसे यॉर्कशायर लौटने पर मिलने आने की ज़िद की। कुछ महीनों में

हमारी दोबारा मुलाकात की पूरी उम्मीद थी, फिर भी अपने सबसे प्यारे और करीबी दोस्त को ट्रेन के स्टेशन से निकलते समय प्लेटफार्म पर अकेला खड़ा देखना बहुत दुखद था।

लंदन पहुँचने पर, टर्मिनल पर श्री ब्रुफ़ का सामना एक छोटे लड़के से हुआ, जिसने फटे-पुराने काले कपड़े की जैकेट और पतलून पहनी हुई थी, और अपनी असाधारण उभरी हुई आँखों के कारण वह देखने में बेहद अनोखा था। उसकी आँखें इतनी उभरी हुई थीं और इतनी बेतरतीब ढंग से घूम रही थीं कि देखकर हैरानी होती थी कि वे अपनी जगह पर टिकी क्यों हैं। लड़के की बात सुनने के बाद, श्री ब्रुफ़ ने वहाँ मौजूद महिलाओं से पूछा कि क्या वे हमें पोर्टलैंड प्लेस तक साथ चलने की अनुमति देंगी। मुझे राहेल से वादा करने का भी मुश्किल से समय मिला कि मैं वापस आऊँगा और उसे सब कुछ बताऊँगा, इससे पहले कि श्री ब्रुफ़ ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे जल्दी से एक टैक्सी में बिठा दिया। वह लड़का, जिसकी आँखें ठीक से नहीं लगी थीं, ड्राइवर के बगल में डिब्बे में बैठ गया, और ड्राइवर को लोम्बार्ड स्ट्रीट जाने का निर्देश दिया गया।

"बैंक से कोई खबर है?" मैंने पूछा, और हमने चलना शुरू कर दिया।

श्री ब्रूफ ने कहा, "श्री लूकर के बारे में खबर मिली है। एक घंटे पहले उन्हें लैम्बेथ स्थित अपने घर से एक टैक्सी में निकलते देखा गया। उनके साथ दो आदमी थे, जिन्हें मेरे आदमियों ने सादे कपड़ों में पुलिस अधिकारियों के रूप में पहचान लिया। अगर श्री लूकर के इस एहतियात के पीछे भारतीयों का डर है, तो निष्कर्ष बिल्कुल स्पष्ट है। वह बैंक से हीरा निकालने जा रहे हैं।"

"और हम बैंक जा रहे हैं यह देखने के लिए कि इसका क्या नतीजा निकलता है?"

"हाँ—या फिर यह जानने के लिए कि इसका क्या नतीजा निकला है, अगर अब तक सब कुछ खत्म हो चुका है। क्या आपने मेरे बेटे को देखा—वहाँ बॉक्स पर?"

मैंने उसकी आँखों पर ध्यान दिया।

श्री ब्रूफ हँसे। उन्होंने कहा, "कार्यालय में बेचारे को 'गूज़बेरी' कहते हैं। मैंने उसे छोटे-मोटे कामों के लिए रखा है—काश मेरे क्लर्क, जिन्होंने उसे यह उपनाम दिया है, उतने ही भरोसेमंद होते जितने वह है। श्री ब्लेक, अपनी आँखों की बनावट के बावजूद, गूज़बेरी लंदन के सबसे होशियार लड़कों में से एक है।"

जब हम लॉम्बार्ड स्ट्रीट स्थित बैंक के सामने पहुँचे, तब पौने पाँच बज रहे थे। टैक्सी का दरवाजा खोलते ही गूजबेरी ने अपने मालिक की ओर बड़ी उम्मीद से देखा।

श्री ब्रुफ़ ने विनम्रता से पूछा, "क्या तुम भी अंदर आना चाहते हो?" श्री ब्रुफ़ ने फुसफुसाते हुए कहा, "तो अंदर आ जाओ, और अगले आदेश तक मेरे पीछे-पीछे रहना। वह बिजली की तरह तेज़ है। गूज़बेरी के लिए दो शब्द ही काफी हैं, जबकि दूसरे लड़के के लिए बीस शब्दों की ज़रूरत पड़ेगी।"

हम बैंक में दाखिल हुए। बाहरी दफ्तर—जिसमें एक लंबा काउंटर था, जिसके पीछे कैशियर बैठे थे—लोगों से खचाखच भरा हुआ था; सभी लोग बैंक के शाम पांच बजे बंद होने से पहले पैसे निकालने या जमा करने के लिए अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे।

भीड़ में से दो व्यक्ति श्री ब्रफ के प्रकट होते ही उनके पास पहुँच गए।

"अच्छा," वकील ने पूछा। "क्या आपने उसे देखा है?"

"वह आधे घंटे पहले यहां से गुजरे थे, महोदय, और अंदर के कार्यालय में चले गए।"

"क्या वह अभी तक बाहर नहीं आया है?"

"जी नहीं, महोदय।"

श्री ब्रुफ मेरी ओर मुड़े। उन्होंने कहा, "चलिए इंतजार करते हैं।"

मैंने अपने आस-पास के लोगों में उन तीनों भारतीयों को ढूँढा। उनका कहीं कोई निशान नहीं दिखा। वहाँ मौजूद एकमात्र व्यक्ति जिसका रंग स्पष्ट रूप से गहरा था, वह एक लंबा आदमी था जिसने पायलट कोट और गोल टोपी पहन रखी थी और वह नाविक जैसा लग रहा था। क्या यह भेस बदला हुआ उनमें से कोई हो सकता है? असंभव! वह आदमी सभी भारतीयों से लंबा था; और उसका चेहरा, जहाँ घनी काली दाढ़ी नहीं थी, कम से कम उनके चेहरों से दुगुना चौड़ा था।

श्री ब्रुफ ने अपनी बारी में उस सांवले नाविक की ओर देखते हुए कहा, "उनका जासूस कहीं न कहीं जरूर होगा। और हो सकता है कि वही वह आदमी हो।"

इससे पहले कि वह कुछ और कह पाता, आंवले जैसी आंखों वाले उसके सेवक ने आदरपूर्वक उसके कोट का पिछला हिस्सा खींच लिया। श्री ब्रुफ ने उस ओर देखा जहाँ लड़का देख रहा था। "चुप रहो!" उन्होंने कहा। "ये रहे श्री लूकर!"

साहूकार बैंक के भीतरी हिस्से से बाहर आया, उसके पीछे सादे कपड़ों में दो पुलिसकर्मी सुरक्षाकर्मी चल रहे थे।

श्री ब्रुफ ने फुसफुसाते हुए कहा, "उस पर नज़र रखना। अगर वह हीरा किसी को सौंपता है, तो वह यहीं सौंपेगा।"

हम दोनों की ओर ध्यान दिए बिना, श्री लूकर धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़े—कभी भीड़ के सबसे घने हिस्से में, कभी सबसे कम भीड़ में। मैंने स्पष्ट रूप से देखा कि जब वे एक छोटे कद के, मोटे आदमी के पास से गुजरे, जो सादे भूरे रंग के सूट में सजे-धजे थे, तो उन्होंने अपना हाथ हिलाया। वह आदमी थोड़ा चौंक गया और उन्हें पीछे मुड़कर देखा। श्री लूकर धीरे-धीरे भीड़ के बीच से आगे बढ़ गए। दरवाजे पर उनके रक्षक उनके दोनों ओर खड़े हो गए। उन तीनों के पीछे श्री ब्रफ का एक आदमी भी था—और उसके बाद मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।

मैंने वकील की ओर देखा, और फिर गंभीर भूरे रंग के सूट पहने उस आदमी की ओर ध्यान से देखा। "हाँ!" श्री ब्रूफ ने फुसफुसाते हुए कहा, "मैंने भी देखा था!" वह अपने दूसरे आदमी की तलाश में मुड़े। दूसरा आदमी कहीं नज़र नहीं आया। उन्होंने अपने सहायक को ढूंढने के लिए पीछे देखा। गूज़बेरी गायब हो गया था।

श्री ब्रुफ ने गुस्से से कहा, "इसका क्या मतलब है? ये दोनों हमें ठीक उसी समय छोड़कर चले गए हैं जब हमें उनकी सबसे ज्यादा जरूरत थी।"

अब काउंटर पर अपना काम निपटाने की बारी ग्रे सूट पहने उस आदमी की आई। उसने चेक से भुगतान किया—उसकी रसीद ली—और बाहर जाने के लिए मुड़ गया।

श्री ब्रुफ ने पूछा, "अब क्या किया जाए? हम उसका अनुसरण करके खुद को अपमानित नहीं कर सकते।"

मैंने कहा, "मैं कर सकता हूँ! मैं दस हजार पाउंड के लिए भी उस आदमी को अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दूँगा!"

“तो फिर,” श्री ब्रुफ़ ने जवाब दिया, “दुगने पैसों के लिए भी मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगा। मेरी हैसियत के आदमी के लिए यह एक बढ़िया काम है,” उन्होंने मन ही मन बुदबुदाया, जब हम उस अजनबी के पीछे-पीछे बैंक से बाहर निकले। “भगवान के लिए इसका ज़िक्र मत करना। अगर सबको पता चल गया तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा।”

धूसर सूट पहने वह आदमी पश्चिम की ओर जा रही एक बस में चढ़ गया। हम भी उसके पीछे चढ़ गए। श्री ब्रूफ में अभी भी जवानी का जोश बाकी था। मैं यह बात पूरे यकीन से कह सकता हूँ—जब वह बस में अपनी सीट पर बैठा, तो उसके चेहरे पर शर्म आ गई!

ग्रे सूट पहने उस आदमी ने ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट पर बस रोकी और उतर गया। हम फिर उसके पीछे गए। वह एक दवा की दुकान में चला गया।

श्री ब्रुफ चौंक गए। "मेरे रसायनज्ञ!" उन्होंने हैरानी से कहा। "मुझे खेद है कि हमसे गलती हो गई है।"
हम दुकान में दाखिल हुए। श्री ब्रुफ और दुकानदार ने आपस में कुछ देर बात की। वकील फिर से मेरे पास आया, उसका चेहरा बेहद उदास था।
"यह हमारे लिए बहुत गर्व की बात है," उन्होंने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा और मुझे बाहर ले गए - "यह एक राहत की बात है!"
मैंने पूछा, "हमारी उपलब्धि क्या है?"
"श्रीमान ब्लेक! आप और मैं अब तक के सबसे नासमझ शौकिया जासूस हैं जिन्होंने इस पेशे में हाथ आजमाया है। धूसर सूट वाला आदमी तीस साल से रसायनशास्त्री की सेवा में है। उसे अपने मालिक के खाते में पैसे जमा करने के लिए बैंक भेजा गया था - और वह मूनस्टोन के बारे में उतना ही जानता है जितना एक अजन्मा बच्चा।"
मैंने पूछा कि आगे क्या करना है।
श्री ब्रुफ ने कहा, "मेरे दफ्तर वापस आओ। गूजबेरी और मेरा दूसरा आदमी जाहिर तौर पर किसी और के पीछे गए हैं। उम्मीद है कि उन्होंने कम से कम सतर्क तो रहे होंगे!"
जब हम ग्रेज़ इन स्क्वायर पहुंचे, तो दूसरा आदमी हमसे पहले ही वहां पहुंच चुका था। वह पंद्रह मिनट से अधिक समय से इंतजार कर रहा था।
"तो!" श्री ब्रुफ ने पूछा। "क्या खबर है?"
“मुझे खेद है, महोदय,” उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, “कि मुझसे गलती हो गई है। मैं शपथपूर्वक कह सकता हूँ कि मैंने श्री लूकर को हल्के रंग की पैंट पहने एक बुजुर्ग सज्जन को कुछ देते हुए देखा था। महोदय, वह बुजुर्ग सज्जन ईस्टचीप के एक अत्यंत सम्मानित लोहार हैं।”
श्री ब्रुफ ने हताशा भरे स्वर में पूछा, "गूजबेरी कहाँ है?"
वह आदमी घूरता रहा। "मुझे नहीं पता, महोदय। बैंक से निकलने के बाद से मैंने उसे कहीं नहीं देखा।"
श्री ब्रूफ ने उस आदमी को जाने के लिए कहा। उन्होंने मुझसे कहा, "दो में से एक बात तो होगी। या तो गूजबेरी भाग गया है, या फिर वह अपने लिए शिकार पर गया है। क्या आप यहीं खाना खाने के बारे में सोच रहे हैं, इस उम्मीद में कि लड़का एक-दो घंटे में वापस आ जाए? मेरे पास तहखाने में अच्छी शराब है, और हम कॉफी हाउस से एक चॉप भी मंगवा सकते हैं।"

हमने श्री ब्रुफ के चैंबर में भोजन किया। पर्दा हटने से पहले ही, यह घोषणा की गई कि "एक व्यक्ति" वकील से बात करना चाहता है। क्या वह व्यक्ति गूज़बेरी था? नहीं: वह तो वही आदमी था जिसे श्री लुकर के बैंक से निकलते समय उनका पीछा करने के लिए नियुक्त किया गया था।

इस मामले में रिपोर्ट में कोई भी दिलचस्प बात नहीं थी। श्री लूकर अपने घर लौट गए थे और वहाँ उन्होंने अपने गार्ड को छुट्टी दे दी थी। उसके बाद वे दोबारा बाहर नहीं निकले। शाम ढलते-ढूँढते खिड़कियों के शटर लगा दिए गए थे और दरवाज़ों पर कुंडी लगा दी गई थी। घर के सामने वाली सड़क और घर के पीछे वाली गली पर कड़ी निगरानी रखी गई थी। भारतीयों का कोई निशान नहीं दिखा। घर के आसपास कोई भी व्यक्ति घूमता हुआ नहीं देखा गया। ये सब बातें बताने के बाद, वह व्यक्ति आगे के आदेशों का इंतज़ार करने लगा। श्री ब्रूफ ने उन्हें रात के लिए छुट्टी दे दी।

मैंने पूछा, "क्या आपको लगता है कि मिस्टर लूकर मूनस्टोन को अपने साथ घर ले गए हैं?"

"वह नहीं," श्री ब्रफ ने कहा। "अगर उसे डायमंड को दोबारा अपने घर में रखने का खतरा भी होता, तो वह अपने दोनों पुलिसकर्मियों को कभी बर्खास्त नहीं करता।"

हमने आधे घंटे तक लड़के का इंतज़ार किया, लेकिन व्यर्थ। तब श्री ब्रूफ के हैम्पस्टेड जाने का समय हो गया था, और मुझे पोर्टलैंड प्लेस में रैचल के पास लौटना था। मैंने अपना कार्ड कमरे के चौकीदार के पास छोड़ दिया, जिस पर लिखा था कि मैं उस रात साढ़े दस बजे अपने कमरे पर पहुँच जाऊँगा। अगर लड़का वापस आता, तो उसे यह कार्ड दे दिया जाता।

कुछ पुरुषों में समय पर आने की आदत होती है; और कुछ पुरुषों में समय पर न आने की। मैं उन्हीं में से एक हूँ। ऊपर से, मैंने पोर्टलैंड प्लेस में रेचल के साथ एक ही सीट पर बैठकर चालीस फीट लंबे कमरे में शाम बिताई, जिसके दूसरे छोर पर श्रीमती मेरिड्यू बैठी थीं। क्या किसी को आश्चर्य होगा कि मैं साढ़े दस बजे के बजाय साढ़े बारह बजे घर पहुँचा? वह व्यक्ति कितना निर्दयी होगा! और मैं कितनी बेसब्री से आशा करता हूँ कि मेरी उससे कभी मुलाकात न हो!

जब मेरे नौकर ने मुझे अंदर आने दिया तो उसने मुझे कागज का एक छोटा सा टुकड़ा थमा दिया।

मैंने साफ-सुथरी कानूनी लिखावट में ये शब्द पढ़े—"कृपया महोदय, मुझे नींद आ रही है। मैं कल सुबह नौ से दस बजे के बीच वापस आऊंगा।" पूछताछ करने पर पता चला

कि एक लड़का, जिसकी आंखें बेहद अनोखी थीं, आया था, उसने मेरा कार्ड और संदेश दिया, एक घंटा इंतज़ार किया, कुछ नहीं किया सिवाय सोने और फिर जागने के, मेरे लिए एक पंक्ति लिखी और घर चला गया—नौकर को गंभीरता से यह बताने के बाद कि "जब तक उसे रात की नींद नहीं मिल जाती, वह किसी काम का नहीं है।"

अगली सुबह नौ बजे, मैं अपने आगंतुक के लिए तैयार था। साढ़े नौ बजे, मुझे अपने दरवाजे के बाहर कदमों की आहट सुनाई दी। "अंदर आ जाओ, गूज़बेरी!" मैंने पुकारा। "धन्यवाद, महोदय," एक गंभीर और उदास आवाज ने उत्तर दिया। दरवाजा खुला। मैं उठ खड़ा हुआ और सामने खड़ा था—सार्जेंट कफ।

"यॉर्कशायर को पत्र लिखने से पहले, मैंने सोचा कि शायद आप शहर में हों, इसलिए मैं यहाँ आकर देख लूँ, श्री ब्लेक," सार्जेंट ने कहा।

वह पहले की तरह ही उदास और दुबला-पतला था। उसकी आँखों की वही पुरानी चाल (जिसका ज़िक्र बेटरएज की 'नैरेटिव' में बड़ी बारीकी से किया गया है) अभी भी बरकरार थी, "ऐसा लगता था मानो वे आपसे कुछ ज़्यादा ही उम्मीद कर रही हों, जितना आप खुद भी नहीं जानते।" लेकिन, पहनावे से इंसान में जो बदलाव आ सकता है, उस लिहाज़ से महान कफ़ पूरी तरह बदल चुका था। उसने चौड़ी किनारी वाली सफ़ेद टोपी, हल्की जैकेट, सफ़ेद पतलून और फीके रंग के गैटर पहने थे। उसके हाथ में एक मोटी ओक की छड़ी थी। उसका पूरा मकसद यही लग रहा था कि वह ऐसा दिखे जैसे उसने अपनी पूरी ज़िंदगी गाँव में बिताई हो। जब मैंने उसके इस बदलाव की तारीफ़ की, तो उसने इसे मज़ाक नहीं समझा। उसने बड़ी गंभीरता से लंदन के शोर और बदबू की शिकायत की। मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि मुझे इस बात का ज़रा भी यकीन नहीं है कि वह थोड़ी देहाती लहजे में नहीं बोल रहा था! मैंने उसे नाश्ता दिया। भोला-भाला देहाती आदमी एकदम हैरान रह गया। उसका नाश्ता तो साढ़े छह बजे होता था - और वह तो मुर्गे-मुर्गियों के साथ सोता था!

"मैं कल रात ही आयरलैंड से लौटा हूँ," सार्जेंट ने अपने रहस्यमय अंदाज़ में, अपनी यात्रा के मुख्य उद्देश्य पर आते हुए कहा। "सोने से पहले मैंने आपका पत्र पढ़ा, जिसमें आपने बताया है कि पिछले साल डायमंड मामले की जाँच निलंबित होने के बाद से क्या हुआ है। इस मामले में मेरी तरफ से बस एक ही बात कहनी है। मैंने अपने मामले को पूरी तरह से गलत समझा। उस समय मेरी जैसी स्थिति में कोई भी जीवित व्यक्ति सच्चाई को कैसे देख सकता था, यह मैं नहीं जानता। लेकिन इससे तथ्य नहीं बदलते। मैं मानता हूँ कि मैंने गड़बड़ की है। श्री ब्लेक, यह मेरे पेशेवर करियर की पहली

गड़बड़ नहीं है! जासूसों की गलती करने की कमजोरी को केवल किताबों में ही नकारा जा सकता है।"
मैंने कहा, "अपनी प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने के लिए आप बिल्कुल सही समय पर आए हैं।"
"माफ़ कीजिए, श्रीमान ब्लेक," सार्जेंट ने जवाब दिया। "अब जब मैं काम से रिटायर हो चुका हूँ, तो मुझे अपनी प्रतिष्ठा की ज़रा भी परवाह नहीं है। शुक्र है, मेरी प्रतिष्ठा का तो काम तमाम हो गया! महोदय, मैं यहाँ स्वर्गीय लेडी वेरेंडर की उदारता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने आया हूँ। अगर आप चाहें और मुझ पर भरोसा करें, तो मैं अपने पुराने काम पर लौट जाऊँगा, बस इसी शर्त पर, और किसी शर्त पर नहीं। कृपया, आप मुझे एक पैसा भी न दें। यह सम्मान की बात है। अब बताइए, श्रीमान ब्लेक, आपके आखिरी पत्र के बाद से मामले की क्या स्थिति है?"
मैंने उसे अफीम वाले प्रयोग के बारे में बताया, और उसके बाद लोम्बार्ड स्ट्रीट स्थित बैंक में जो कुछ हुआ था, उसके बारे में भी बताया। वह उस प्रयोग से बहुत प्रभावित हुआ—यह उसके लिए बिल्कुल नया अनुभव था। और वह एज़रा जेनिंग्स के उस सिद्धांत में विशेष रूप से रुचि रखता था, जो उस घटना से संबंधित था जो मैंने जन्मदिन की रात राहेल के बैठक कक्ष से निकलने के बाद हीरे के साथ की थी।
सार्जेंट कफ ने कहा, "मैं श्री जेनिंग्स की इस बात से सहमत नहीं हूं कि आपने मूनस्टोन को छिपाया था। लेकिन मैं उनसे सहमत हूं कि आप निश्चित रूप से इसे अपने कमरे में ले गए होंगे।"
"तो?" मैंने पूछा। "और फिर क्या हुआ?"
"क्या आपको खुद इस घटना के बारे में कोई संदेह नहीं है, महोदय?"
"बिल्कुल नहीं।"
"क्या श्री ब्रुफ को कोई संदेह नहीं है?"
"मेरे पास जितना है उससे अधिक नहीं।"
सार्जेंट कफ उठे और मेरी लेखन-मेज के पास गए। वे एक सीलबंद लिफाफा लेकर लौटे। उस पर "निजी" लिखा था; वह मुझे संबोधित था; और उसके कोने में सार्जेंट के हस्ताक्षर थे।
उन्होंने कहा, "पिछले साल मैंने गलत व्यक्ति पर शक किया था, और शायद अब भी मैं गलत व्यक्ति पर शक कर रहा हूँ। श्री ब्लेक, सच्चाई का पता चलने तक लिफाफा न

खोलें। और फिर दोषी व्यक्ति के नाम की तुलना उस सीलबंद पत्र में लिखे मेरे नाम से करें।"
मैंने पत्र को अपनी जेब में रख लिया और फिर सार्जेंट से बैंक में उठाए गए कदमों के बारे में उनकी राय पूछी।
"आपकी मंशा बहुत अच्छी थी, महोदय," उन्होंने उत्तर दिया, "और यह बिल्कुल सही काम था। लेकिन श्री लूकर के अलावा एक और व्यक्ति था जिसका ध्यान रखा जाना चाहिए था।"
"क्या वह व्यक्ति जिसका नाम आपने अभी मुझे दिए पत्र में लिखा है?"
जी हाँ, श्रीमान ब्लेक, पत्र में जिनका नाम है। अब कुछ नहीं किया जा सकता। समय आने पर मैं आपसे और श्रीमान ब्रफ से कुछ कहना चाहूँगा। अभी थोड़ा इंतज़ार कीजिए और देखिए कि क्या उस लड़के के पास हमें बताने के लिए कुछ ऐसा है जो सुनने लायक हो।
लगभग दस बज चुके थे, और लड़का अभी तक नहीं आया था। सार्जेंट कफ दूसरी बातों में मशगूल थे। उन्होंने अपने पुराने दोस्त बेटरएज और अपने पुराने दुश्मन माली के बारे में पूछा। एक मिनट में ही वे इस विषय से अपने पसंदीदा गुलाबों के बारे में बात करने लगते, अगर मेरे नौकर ने बीच में आकर यह न बताया होता कि लड़का नीचे है।
कमरे में लाए जाने पर, गूज़बेरी दरवाजे की दहलीज पर रुक गया और मेरे साथ खड़े अजनबी को संदेह भरी नजरों से देखने लगा। मैंने लड़के को मेरे पास आने को कहा।
मैंने कहा, "आप इस सज्जन के सामने बोल सकते हैं। ये मेरी सहायता के लिए यहाँ हैं; और इन्हें सब कुछ पता है कि क्या हुआ है। सार्जेंट कफ," मैंने आगे कहा, "ये श्री ब्रुफ के कार्यालय का लड़का है।"
हमारी आधुनिक सभ्यता में, प्रसिद्धि (चाहे किसी भी प्रकार की हो) वह शक्ति है जो किसी भी चीज़ को बदल सकती है। महान कफ की प्रसिद्धि नन्हे गूजबेरी तक भी पहुँच गई थी। जब मैंने उस नाम का ज़िक्र किया, तो लड़के की बेसुध आँखें इतनी तेज़ी से घूमीं कि मुझे लगा मानो वे सचमुच कालीन पर गिर गई हों।
"इधर आओ, मेरे लड़के," सार्जेंट ने कहा, "और हमें बताओ कि तुम्हें क्या कहना है।"
लंदन के हर वकील के दफ्तर में प्रचलित कई मशहूर कहानियों के नायक, उस महान व्यक्ति की छवि देखकर लड़का बेहद आकर्षित हो गया। वह सार्जेंट कफ के सामने खड़ा हो गया और अपने हाथ पीछे कर लिए, ठीक उसी तरह जैसे कोई नौसिखिया अपनी धार्मिक शिक्षाओं की परीक्षा देते समय करता है।

"तुम्हारा नाम क्या है?" सार्जेंट ने कैटेकिज़्म के पहले प्रश्न से शुरू करते हुए पूछा।
"ऑक्टेवियस गाय," लड़के ने जवाब दिया। "ऑफिस में लोग मुझे मेरी आंखों की वजह से गूजबेरी कहते हैं।"
"ऑक्टेवियस गाय, उर्फ गूजबेरी," सार्जेंट ने अत्यंत गंभीरता से पूछा, "कल बैंक में आपकी कमी महसूस हुई। आप क्या कर रहे थे?"
"अगर आप चाहें, महोदय, मैं एक आदमी का पीछा कर रहा था।"
"वह कौन था?"
"एक लंबा आदमी, महोदय, जिसकी बड़ी काली दाढ़ी थी और उसने नाविकों जैसे कपड़े पहने थे।"
मैंने बीच में टोकते हुए कहा, "मुझे वह आदमी याद है! श्री ब्रुफ और मैं सोचते थे कि वह भारतीयों द्वारा नियुक्त एक जासूस था।"
सार्जेंट कफ, श्री ब्रुफ और मेरे विचारों से कुछ खास प्रभावित नहीं हुए। वे गूजबेरी को उपदेश देते रहे।
"तो?" उसने कहा—"और तुमने नाविक का पीछा क्यों किया?"
"कृपया महोदय, श्री ब्रूफ यह जानना चाहते थे कि क्या श्री लूकर ने बैंक से निकलते समय किसी को कुछ दिया था। मैंने श्री लूकर को काली दाढ़ी वाले नाविक को कुछ देते हुए देखा था।"
"आपने मिस्टर ब्रफ को वह सब क्यों नहीं बताया जो आपने देखा?"
"मेरे पास किसी को बताने का समय ही नहीं था, महोदय, नाविक इतनी जल्दी में चला गया।"
"और तुम उसके पीछे दौड़ पड़े—है ना?"
"जी श्रीमान।"
सार्जेंट ने उसके सिर पर थपथपाते हुए कहा, "आलू, तुम्हारे छोटे से दिमाग में कुछ तो है—और वो रुई नहीं है। अब तक तो मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।"
लड़का खुशी से शरमा गया। सार्जेंट कफ ने बोलना जारी रखा।
"तो? और जब नाविक सड़क पर पहुंचा तो उसने क्या किया?"
"उन्होंने टैक्सी बुलाई, महोदय।"
और तुमने क्या किया?
"पीछे से पकड़ो और उसके पीछे दौड़ो।"

इससे पहले कि सार्जेंट अपना अगला प्रश्न पूछ पाते, एक और आगंतुक के आने की घोषणा की गई - श्री ब्रफ के कार्यालय से मुख्य क्लर्क।
सार्जेंट कफ द्वारा लड़के की जांच में बाधा न डालने की अहमियत को समझते हुए, मैंने क्लर्क से दूसरे कमरे में मुलाकात की। वह अपने मालिक के बारे में बुरी खबर लेकर आया था। पिछले दो दिनों की उथल-पुथल और उत्तेजना श्री ब्रूफ के लिए असहनीय साबित हुई थी। उन्हें उस सुबह गठिया का दौरा पड़ा था; उन्हें हैम्पस्टेड स्थित अपने कमरे में ही रहना पड़ा; और हमारी मौजूदा नाजुक स्थिति में, मुझे किसी अनुभवी व्यक्ति की सलाह और सहायता के बिना छोड़कर जाने पर वे बहुत असहज थे। मुख्य क्लर्क को मेरी सेवा में तत्पर रहने का आदेश मिला था, और वह श्री ब्रूफ की जगह लेने के लिए अपनी पूरी कोशिश करने को तैयार थे।
मैंने तुरंत उस बुजुर्ग सज्जन को पत्र लिखकर सार्जेंट कफ के आने की सूचना दी और उन्हें आश्वस्त किया कि गूजबेरी से उस समय पूछताछ चल रही है। मैंने यह भी बताया कि मैं श्री ब्रूफ को दिन में आगे जो भी जानकारी मिलेगी, व्यक्तिगत रूप से या पत्र द्वारा सूचित करूँगा। मैंने क्लर्क को अपना पत्र हैम्पस्टेड भेजकर वापस उसी कमरे में लौट आया जहाँ से मैं आया था, और वहाँ मैंने सार्जेंट कफ को चिमनी के पास घंटी बजाते हुए पाया।
“माफ़ कीजिए, श्रीमान ब्लेक,” सार्जेंट ने कहा। “मैं आपके नौकर के ज़रिए आपको संदेश भेजने ही वाला था कि मैं आपसे बात करना चाहता हूँ। मुझे ज़रा भी शक नहीं है कि यह लड़का—यह बेहद नेक लड़का,” सार्जेंट ने गूज़बेरी के सिर पर थपथपाते हुए कहा, “सही आदमी का अनुसरण कर रहा है। महोदय, कल रात साढ़े दस बजे आपके घर पर न होने के कारण कीमती समय बर्बाद हो गया है। अब बस एक ही उपाय है कि तुरंत एक टैक्सी मंगवाई जाए।”
पांच मिनट बाद, सार्जेंट कफ और मैं (ड्राइवर को रास्ता दिखाने के लिए डिब्बे पर गूजबेरी के साथ) शहर की ओर पूर्व दिशा में रवाना हो गए।
"एक दिन," सार्जेंट ने टैक्सी की सामने वाली खिड़की से इशारा करते हुए कहा, "यह लड़का मेरे पुराने पेशे में बड़ी-बड़ी उपलब्धियाँ हासिल करेगा। पिछले कई सालों में मैंने जितने भी होशियार और समझदार लड़के देखे हैं, उनमें यह सबसे ज़्यादा होशियार है। श्री ब्लेक, जब आप कमरे से बाहर थे, तब उसने मुझे जो कुछ बताया, उसका सार आप सुनेंगे। मुझे लगता है, जब उसने बताया कि वह टैक्सी के पीछे लटक गया और उसके पीछे भागा, तब आप वहाँ मौजूद थे।"

"हाँ।"
"जी साहब, टैक्सी लॉम्बार्ड स्ट्रीट से टॉवर घाट तक गई। काली दाढ़ी वाला नाविक उतरा और रोटरडैम स्टीमबोट के स्टीवर्ड से बात की, जिसे अगली सुबह रवाना होना था। उसने पूछा कि क्या उसे तुरंत जहाज पर चढ़ने और रात भर अपने बर्थ में सोने की अनुमति दी जा सकती है। स्टीवर्ड ने कहा, नहीं। केबिन, बर्थ और बिस्तर की उस शाम पूरी तरह से सफाई होनी थी, और सुबह से पहले किसी भी यात्री को जहाज पर आने की अनुमति नहीं दी जा सकती थी।" नाविक मुड़ा और घाट से चला गया। जब वह फिर से सड़क पर आया, तो लड़के ने पहली बार देखा कि एक आदमी, जो एक सभ्य मैकेनिक की तरह कपड़े पहने हुए था, सड़क के दूसरी तरफ चल रहा था और जाहिर तौर पर नाविक पर नजर रख रहा था। नाविक पास के एक भोजनालय में रुका और अंदर चला गया। लड़का - उस समय निर्णय न ले पाने के कारण - कुछ अन्य लड़कों के साथ खड़ा रहा और भोजनालय की खिड़की में रखी अच्छी चीजों को देखता रहा। उसने देखा कि मैकेनिक इंतजार कर रहा था, जैसे वह खुद इंतजार कर रहा था। इंतज़ार कर रहा था—लेकिन अभी भी सड़क के दूसरी तरफ। एक मिनट बाद, एक टैक्सी धीरे-धीरे आई और मैकेनिक के पास रुक गई। लड़के को टैक्सी में केवल एक ही व्यक्ति साफ दिखाई दिया, जो मैकेनिक से बात करने के लिए खिड़की की तरफ झुका। उसने बिना मेरी किसी मदद के उस व्यक्ति, श्री ब्लेक का वर्णन करते हुए कहा कि उनका चेहरा सांवला था, किसी भारतीय के चेहरे जैसा।
अब तक यह स्पष्ट हो चुका था कि श्री ब्रुफ और मैंने एक और गलती कर दी थी। काली दाढ़ी वाला नाविक स्पष्ट रूप से भारतीय षड्यंत्र का जासूस नहीं था। क्या वह किसी भी तरह से वही व्यक्ति था जिसने हीरा प्राप्त किया था?
“थोड़ी देर बाद,” सार्जेंट ने आगे बताया, “टैक्सी धीरे-धीरे सड़क पर आगे बढ़ गई। मैकेनिक सड़क पार करके भोजनालय में चला गया। लड़का बाहर तब तक इंतज़ार करता रहा जब तक उसे भूख और थकान महसूस नहीं हुई—और फिर वह भी भोजनालय में चला गया। उसकी जेब में एक शिलिंग थी; और उसने बड़े चाव से भोजन किया, जैसा कि उसने मुझे बताया, ब्लैक पुडिंग, ईल पाई और जिंजर बीयर की एक बोतल। भला एक लड़का क्या नहीं पचा सकता? वह पदार्थ अभी तक मिला ही नहीं है।”
मैंने पूछा, "उसने भोजनालय में क्या देखा?"

"खैर, श्रीमान ब्लेक, उन्होंने एक मेज पर नाविक को अखबार पढ़ते देखा, और दूसरे पर मैकेनिक को। शाम ढलने से पहले नाविक उठा और वहाँ से चला गया। सड़क पर निकलते ही उसने चारों ओर संदेह भरी निगाहों से देखा। लड़का—क्योंकि वह लड़का था—किसी का ध्यान खींचे बिना निकल गया। मैकेनिक अभी तक बाहर नहीं आया था। नाविक चलता रहा, चारों ओर देखता रहा, और जाहिर तौर पर उसे ठीक से पता नहीं था कि वह आगे कहाँ जा रहा है। मैकेनिक एक बार फिर सड़क के दूसरी ओर दिखाई दिया। नाविक चलता रहा, जब तक कि वह शोर लेन पर नहीं पहुँच गया, जो लोअर थेम्स स्ट्रीट की ओर जाती है। वहाँ वह 'द व्हील ऑफ फॉर्च्यून' के बोर्ड वाले एक पब के सामने रुका, और बाहर का जायजा लेने के बाद अंदर चला गया। गूजबेरी भी अंदर चला गया। बार में बहुत सारे लोग थे, ज्यादातर सभ्य किस्म के। 'द व्हील ऑफ फॉर्च्यून' एक बहुत ही प्रतिष्ठित जगह है, श्रीमान ब्लेक; अपने पोर्टर और पोर्क-पाई के लिए मशहूर है।"

सार्जेंट के बार-बार विषयांतर करने से मुझे चिढ़ हो रही थी। उसने यह बात समझ ली थी; और आगे बोलते समय उसने अपना ध्यान सख्ती से गूजबेरी के साक्ष्यों पर ही केंद्रित रखा।

"उस नाविक ने," उसने आगे बताया, "बेड के लिए पूछा। मकान मालिक ने कहा 'नहीं; सारे बेड भरे हुए हैं।' बार की नौकरानी ने उसे सुधारते हुए कहा 'नंबर दस खाली है।'" नाविक को कमरा नंबर दस तक ले जाने के लिए एक वेटर को बुलाया गया। इससे ठीक पहले, गूज़बेरी ने बार में लोगों के बीच मैकेनिक को देखा था। वेटर के बुलाने पर जवाब देने से पहले ही मैकेनिक गायब हो गया था। नाविक को उसके कमरे में ले जाया गया। आगे क्या करना है, यह न जानते हुए, गूज़बेरी ने समझदारी से इंतज़ार किया और देखा कि कुछ होता है या नहीं। कुछ हुआ भी। मकान मालिक को बुलाया गया। ऊपर से गुस्से भरी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। मैकेनिक अचानक फिर से प्रकट हुआ, मकान मालिक ने उसे पकड़ रखा था, और गूज़बेरी को बहुत आश्चर्य हुआ कि वह नशे में होने के सारे लक्षण दिखा रहा था। मकान मालिक ने उसे दरवाजे से बाहर धकेल दिया और धमकी दी कि अगर वह वापस आया तो पुलिस को बुला लेगा। उनके बीच हुई कहा-सुनी से, जब यह सब चल रहा था, ऐसा प्रतीत हुआ कि उस आदमी को कमरा नंबर दस में पकड़ लिया गया था, और उसने नशे में धुत होकर ज़िद से कहा कि उसने कमरा ले लिया है। गूज़बेरी एक पहले से शांत व्यक्ति के अचानक नशे में धुत होने से इतना हैरान था कि वह मैकेनिक के पीछे गली में दौड़ने से खुद को रोक नहीं

पाया। जब तक वह पब की नज़र में था, वह आदमी बेहद शर्मनाक तरीके से लड़खड़ा रहा था। जैसे ही वह गली के कोने पर मुड़ा, उसने तुरंत अपना संतुलन पा लिया और एकदम शांत और संयमित हो गया। गूज़बेरी बहुत ही उलझन भरी हालत में 'द व्हील ऑफ फॉर्च्यून' के पास वापस चला गया। वह फिर से कुछ होने की उम्मीद में वहीं रुका रहा। कुछ नहीं हुआ; और नाविक के बारे में न तो कुछ सुना गया और न ही देखा गया। गूज़बेरी ने दफ्तर वापस जाने का फैसला किया। जैसे ही उसने यह फैसला किया, गली के दूसरी तरफ हमेशा की तरह वही मैकेनिक फिर से दिखाई दिया! उसने पब के सबसे ऊपर वाली एक खिड़की की तरफ देखा, जिसमें रोशनी थी। रोशनी से उसे कुछ राहत मिली। वह तुरंत वहां से चला गया। लड़का ग्रेज़ इन वापस गया - आपका कार्ड और संदेश मिल गया - फोन किया - और आपको नहीं पाया। श्री ब्लेक, फिलहाल यही स्थिति है।

"इस मामले के बारे में आपकी क्या राय है, सार्जेंट?"

"मुझे लगता है यह मामला गंभीर है, महोदय। लड़के ने जो देखा, उससे यही लगता है कि इसमें भारतीयों का हाथ है।"

"हाँ। और वह नाविक स्पष्ट रूप से वही व्यक्ति है जिसे श्री लूकर ने हीरा सौंपा था। यह अजीब लगता है कि श्री ब्रफ, मैं और श्री ब्रफ के यहाँ काम करने वाला व्यक्ति, हम सभी उस व्यक्ति की पहचान को लेकर भ्रमित थे।"

"बिल्कुल नहीं, श्री ब्लेक। उस व्यक्ति द्वारा उठाए गए जोखिम को देखते हुए, यह काफी हद तक संभव है कि श्री लूकर ने उनके बीच पूर्व निर्धारित समझौते के तहत जानबूझकर आपको गुमराह किया हो।"

मैंने पूछा, "क्या आपको पब में चल रही कार्यवाही समझ में आई?" उसने जवाब दिया, "मैकेनिक जैसे कपड़े पहने वह आदमी ज़ाहिर तौर पर भारतीयों के लिए काम कर रहा था। लेकिन उसके अचानक नशे में धुत हो जाने का कारण मुझे भी उतना ही समझ नहीं आ रहा जितना कि गूज़बेरी को।"

"मुझे लगता है कि मैं इसका मतलब बता सकता हूँ, महोदय," सार्जेंट ने कहा। "अगर आप गौर करेंगे, तो आपको पता चलेगा कि उस आदमी को भारतीयों से काफी सख्त हिदायतें मिली होंगी। वे खुद इतने आसानी से नज़र आने वाले थे कि बैंक या पब में देखे जाने का जोखिम नहीं उठा सकते थे—उन्हें हर चीज़ अपने डिप्टी पर छोड़नी पड़ी। बहुत खूब। उनके डिप्टी ने पब में एक खास नंबर सुना, जो उस कमरे का नंबर था जिसमें नाविक को रात बितानी थी—और (अगर हमारा अनुमान गलत नहीं है) वही

कमरा डायमंड को भी रात बितानी थी। इन हालातों में, आप यकीन मानिए, भारतीय उस कमरे का ब्यौरा चाहते—घर में उसकी जगह, बाहर से उस तक पहुँचने की सुविधा, वगैरह। ऐसे आदेशों के साथ वह आदमी क्या करता? उसने वही किया जो उसने किया! नाविक को कमरे में ले जाने से पहले वह ऊपर भागा ताकि कमरे को देख सके। उसे वहाँ निरीक्षण करते हुए पाया गया—और उसने मुश्किल से निकलने के आसान तरीके के तौर पर नशे में होने का नाटक किया। मैं पहेली को इसी तरह समझता हूँ। उसके बाद..." जब उसे पब से बाहर निकाल दिया गया, तो वह शायद अपनी रिपोर्ट लेकर उस जगह गया होगा जहाँ उसके मालिक उसका इंतज़ार कर रहे थे। और उसके मालिकों ने उसे यह सुनिश्चित करने के लिए वापस भेजा होगा कि नाविक अगली सुबह तक पब में आराम से रह रहा है। जहाँ तक 'द व्हील ऑफ फॉर्च्यून' में लड़के के जाने के बाद क्या हुआ, यह हमें कल रात ही पता चल जाना चाहिए था। अब सुबह के ग्यारह बज रहे हैं। हमें अच्छे की उम्मीद करनी चाहिए और जो भी जानकारी मिल सके, उसे पता लगाना चाहिए।

एक चौथाई घंटे बाद, टैक्सी शोर लेन में रुकी, और गूजबेरी ने हमें उतरने के लिए दरवाजा खोला।

"सब ठीक है?" सार्जेंट ने पूछा।

"ठीक है," लड़के ने जवाब दिया।

जैसे ही हम "द व्हील ऑफ फॉर्च्यून" में दाखिल हुए, मेरी अनुभवहीन आंखों को भी यह स्पष्ट हो गया कि घर में कुछ गड़बड़ है।

शराब परोसने वाले काउंटर पर केवल एक नौकरानी खड़ी थी, जो कारोबार से पूरी तरह अनभिज्ञ थी और घबराई हुई थी। एक-दो ग्राहक अपनी सुबह की ड्रिंक का इंतज़ार करते हुए बेसब्री से काउंटर पर पैसे थपथपा रहे थे। बार-मेड बैठक के अंदरूनी हिस्से से उत्तेजित और चिंतित सी निकली। सार्जेंट कफ के मकान मालिक के बारे में पूछे जाने पर उसने तीखे लहजे में जवाब दिया कि उसका मालिक ऊपर है और उसे कोई परेशान न करे।

"मेरे साथ आइए, महोदय," सार्जेंट कफ ने शांत भाव से ऊपर की ओर बढ़ते हुए कहा और लड़के को अपने पीछे आने का इशारा किया।

बार में काम करने वाली महिला ने अपने मालिक को बुलाया और उसे चेतावनी दी कि कुछ अजनबी घर में घुसपैठ कर रहे हैं। पहली मंजिल पर हमें मकान मालिक मिला,

जो बहुत गुस्से में नीचे आ रहा था और यह देखने की कोशिश कर रहा था कि मामला क्या है।
"तुम कौन हो? और तुम्हें यहाँ क्या चाहिए?" उसने पूछा।
"अपना आपा मत खोइए," सार्जेंट ने शांत स्वर में कहा। "मैं आपको पहले ही बता देता हूँ कि मैं कौन हूँ। मैं सार्जेंट कफ हूँ।"
उस प्रतिष्ठित नाम का असर तुरंत देखने को मिला। क्रोधित मकान मालिक ने बैठक कक्ष का दरवाजा खोल दिया और सार्जेंट से क्षमा मांगी।
"मैं नाराज़ और परेशान हूँ, महोदय—यही सच है," उन्होंने कहा। "आज सुबह घर में कुछ अप्रिय घटना घटी है। मेरे जैसे पेशे वाले व्यक्ति ने मेरा मिजाज बिगाड़ने का सौदा किया है, सार्जेंट कफ।"
"इसमें कोई शक नहीं," सार्जेंट ने कहा। "अगर आप इजाज़त दें तो मैं सीधे उस मुद्दे पर आता हूँ जिसके लिए हम यहाँ आए हैं। मैं और यह सज्जन आपसे कुछ पूछताछ करना चाहते हैं, जो हम दोनों के लिए महत्वपूर्ण है।"
"किससे संबंधित, महोदय?" मकान मालिक ने पूछा।
"एक सांवले रंग के व्यक्ति से संबंधित, जिसने नाविकों जैसे कपड़े पहने थे और जो कल रात यहां सोया था।"
"हे भगवान! यही वो आदमी है जो इस समय पूरे घर में हंगामा मचा रहा है!" मकान मालिक ने हैरानी से कहा। "क्या आप या ये सज्जन उसके बारे में कुछ जानते हैं?"
"जब तक हम उसे देख नहीं लेते, तब तक हम निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकते," सार्जेंट ने उत्तर दिया।
“उसे देखा?” मकान मालिक ने दोहराया। “यही एक काम है जो आज सुबह सात बजे से कोई नहीं कर पाया है। कल रात सात बजे उसने यही संदेश छोड़ा था कि उसे बुलाया जाए। उसे बुलाया गया था—लेकिन उससे कोई जवाब नहीं मिला, न ही उसका दरवाजा खोला गया ताकि पता चल सके कि क्या बात है। उन्होंने आठ बजे फिर कोशिश की, फिर नौ बजे। कोई फायदा नहीं! दरवाजा अभी भी बंद था—और कमरे में कोई आवाज नहीं थी! मैं आज सुबह बाहर गया था—और अभी पंद्रह मिनट पहले ही लौटा हूँ। मैंने खुद दरवाजे पर जोर-जोर से दस्तक दी—लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। बर्तन धोने वाला बढ़ई को बुलाने गया है। अगर आप कुछ मिनट इंतजार कर सकते हैं, सज्जनों, तो हम दरवाजा खुलवाकर देखेंगे कि क्या होता है।”
"क्या वह आदमी कल रात नशे में था?" सार्जेंट कफ ने पूछा।

"बिल्कुल होश में थे, महोदय—वरना मैं उन्हें अपने घर में सोने ही नहीं देता।"
"क्या उसने अपने बिस्तर के लिए पहले ही भुगतान कर दिया था?"
"नहीं।"
क्या वह दरवाजे से बाहर निकले बिना किसी भी तरह से कमरे से बाहर निकल सकता था?
मकान मालिक ने कहा, "कमरा अटारी है। लेकिन छत में एक गुप्त दरवाज़ा है जो छत पर खुलता है—और गली में थोड़ा नीचे एक खाली मकान है जिसकी मरम्मत चल रही है। सार्जेंट, क्या आपको लगता है कि वह बदमाश इस तरह बिना भुगतान किए बच जाएगा?"
सार्जेंट कफ ने कहा, "एक नाविक ऐसा कर सकता था - सुबह-सुबह, जब सड़क पर चहल-पहल नहीं होती थी। उसे चढ़ने की आदत होती, और घरों की छतों पर उसका सिर चकराता नहीं।"
जैसे ही वह बोल रहा था, बढ़ई के आने की सूचना मिली। हम सब एक साथ ऊपर की मंजिल पर चले गए। मैंने देखा कि सार्जेंट असामान्य रूप से गंभीर था, यहाँ तक कि अपने स्वभाव से भी। मुझे यह भी अजीब लगा कि उसने लड़के को (पहले उसे हमारे पीछे आने के लिए प्रोत्साहित करने के बाद) नीचे वाले कमरे में हमारे वापस आने तक इंतजार करने को कहा।
बढ़ई के हथौड़े और छेनी ने कुछ ही मिनटों में दरवाजे की रुकावट को दूर कर दिया। लेकिन अंदर दरवाजे के सामने कुछ फर्नीचर रखा हुआ था, मानो कोई बाधा खड़ी कर दी गई हो। हमने दरवाजे को धक्का देकर उस रुकावट को हटाया और कमरे में प्रवेश कर गए। मकान मालिक पहले अंदर गए; सार्जेंट दूसरे नंबर पर; और मैं तीसरे नंबर पर। बाकी लोग भी हमारे पीछे-पीछे आए।
हम सबने बिस्तर की ओर देखा और सब चौंक गए।
वह आदमी कमरे से बाहर नहीं निकला था। वह कपड़े पहने हुए बिस्तर पर लेटा हुआ था—उसके चेहरे पर एक सफेद तकिया रखा था, जिससे उसका चेहरा पूरी तरह से छिपा हुआ था।
"इसका क्या मतलब है?" मकान मालिक ने तकिए की ओर इशारा करते हुए कहा।
सार्जेंट कफ बिना कुछ जवाब दिए बिस्तर की ओर आगे बढ़े और तकिया हटा दिया।
उस सांवले चेहरे पर कोई भाव नहीं था; उसके काले बाल और दाढ़ी थोड़ी सी, बहुत थोड़ी सी, बिखरी हुई थीं। उसकी आँखें खुली हुई, बेजान और खाली सी छत को घूर

रही थीं। उसकी आँखों की धुंधली नज़र और स्थिर भाव ने मुझे भयभीत कर दिया। मैं मुँह फेरकर खुली खिड़की के पास चला गया। बाकी सब वहीं रहे जहाँ सार्जेंट कफ बिस्तर पर थे।
मैंने मकान मालिक को कहते सुना, "वह गुस्से में है!"
“वह मर चुका है,” सार्जेंट ने उत्तर दिया। “निकटतम डॉक्टर को बुलाओ, और पुलिस को भी बुलाओ।”
वेटर को दोनों कामों के लिए भेजा गया। सार्जेंट कफ को मानो किसी अजीब आकर्षण ने बिस्तर से बांधे रखा था। बाकी लोग भी किसी अजीब जिज्ञासा के कारण यह जानने के लिए इंतजार कर रहे थे कि सार्जेंट आगे क्या करेगा।
मैंने फिर से खिड़की की ओर देखा। उसके तुरंत बाद, मुझे अपने कोट के पिछले हिस्से पर एक हल्का सा खिंचाव महसूस हुआ, और एक धीमी सी आवाज़ फुसफुसाई, "इधर देखिए, महोदय!"
गूज़बेरी हमारे पीछे-पीछे कमरे में आ गया था। उसकी ढीली आँखें भयानक रूप से घूम रही थीं—डर से नहीं, बल्कि उल्लास से। उसने अपने दम पर एक जासूसी खोज कर ली थी। "यहाँ देखिए, महोदय," उसने दोहराया—और मुझे कमरे के कोने में एक मेज के पास ले गया।
मेज पर एक छोटा सा लकड़ी का डिब्बा रखा था, खुला हुआ और खाली। डिब्बे के एक तरफ कुछ ज्वैलर्स कॉटन पड़ा था। दूसरी तरफ सफेद कागज का एक फटा हुआ टुकड़ा था, जिस पर एक मुहर लगी थी, जो आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त थी, और उस पर कुछ लिखा हुआ था, जो अभी भी पूरी तरह से पढ़ा जा सकता था। वह लिखावट इन शब्दों में थी:
"मिडिलसेक्स प्लेस, लैम्बेथ के निवासी श्री सेप्टिमस लुकर द्वारा मेसर्स बुशे, लिसाउट और बुशे के पास एक छोटा लकड़ी का बक्सा जमा कराया गया था, जो इस लिफाफे में सीलबंद था और जिसमें एक बहुमूल्य वस्तु थी। दावा किए जाने पर, यह बक्सा केवल श्री लुकर के व्यक्तिगत अनुरोध पर मेसर्स बुशे एंड कंपनी द्वारा ही दिया जाएगा।"
उन पंक्तियों ने कम से कम एक बात पर तो सभी संदेह दूर कर दिए। नाविक के पास मूनस्टोन था, जब वह पिछले दिन तट से निकला था।
मुझे अपने कोट के पिछले हिस्से में एक और खिंचाव महसूस हुआ। गूजबेरी ने अभी तक मुझसे अपना काम पूरा नहीं किया था।

"लूटपाट!" लड़के ने खाली डिब्बे की ओर अत्यंत प्रसन्नता से इशारा करते हुए फुसफुसाया।
मैंने कहा, "तुम्हें नीचे इंतज़ार करने के लिए कहा गया था। चले जाओ!"
"और हत्या!" गूजबेरी ने बिस्तर पर लेटे हुए आदमी की ओर इशारा करते हुए और भी अधिक उत्सुकता से कहा।
उस दृश्य की भयावहता का आनंद लेते हुए लड़के में कुछ ऐसा घिनौनापन था कि मैंने उसे दोनों कंधों से पकड़कर कमरे से बाहर निकाल दिया।
जैसे ही मैंने दरवाजे की दहलीज पार की, मुझे सार्जेंट कफ की आवाज सुनाई दी, जो मुझसे पूछ रहे थे कि मैं कहाँ हूँ। कमरे में लौटते ही उन्होंने मुझे रोका और जबरदस्ती अपने साथ बिस्तर के पास ले गए।
"श्रीमान ब्लेक!" उन्होंने कहा। "इस आदमी का चेहरा देखिए। यह भेस बदला हुआ चेहरा है—और इसका सबूत ये रहा!"
उसने अपनी उंगली से मृत व्यक्ति के माथे से पीछे की ओर जाती हुई एक पतली, पीली सफेद रेखा को छुआ, जो सांवले रंग और थोड़े बिखरे हुए काले बालों के बीच से गुजर रही थी। "देखते हैं इसके नीचे क्या है," सार्जेंट ने अचानक काले बालों को मजबूती से पकड़ते हुए कहा।
मेरी सहनशक्ति इतनी नहीं थी कि मैं इसे बर्दाश्त कर सकूँ। मैं बिस्तर से फिर मुँह फेर लिया।
कमरे के दूसरे छोर पर मेरी नजर सबसे पहले उस जोशीले गूजबेरी पर पड़ी, जो एक कुर्सी पर बैठा था और अपने बड़ों के सिर के ऊपर से सार्जेंट की कार्यवाही को सांस रोककर उत्सुकता से देख रहा था।
"वह अपनी विग उतार रहा है!" गूजबेरी ने फुसफुसाते हुए कहा, मेरी स्थिति पर सहानुभूति जताते हुए, क्योंकि मैं कमरे में एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था।
कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया—और फिर पलंग के चारों ओर मौजूद लोगों के बीच हैरानी की एक चीख सुनाई दी।
"उसने अपनी दाढ़ी नोच डाली!" गूजबेरी चिल्लाया।
फिर थोड़ी देर का विराम हुआ—सार्जेंट कफ ने कुछ माँगा। मकान मालिक हाथ धोने के स्टैंड के पास गया और पानी का बेसिन और तौलिया लेकर बिस्तर पर लौट आया।

गूजबेरी कुर्सी पर उत्साह से नाचने लगा। "मेरे साथ ऊपर आइए, महोदय! वह अभी अपना चेहरा धो रहे हैं!"
सार्जेंट अचानक अपने आसपास मौजूद लोगों को चीरते हुए आगे बढ़ा और अपने चेहरे पर खौफ लिए सीधे उस जगह पर आ गया जहां मैं खड़ा था।
"श्रीमान, बिस्तर पर वापस आ जाइए!" उन्होंने कहना शुरू किया। उन्होंने मुझे गौर से देखा और फिर खुद को रोकते हुए कहा, "नहीं!" उन्होंने आगे कहा, "पहले सीलबंद पत्र खोलिए—वह पत्र जो मैंने आज सुबह आपको दिया था।"
मैंने पत्र खोला।
"मिस्टर ब्लेक, मैंने अंदर जो नाम लिखा है, उसे पढ़िए।"
मैंने उसके द्वारा लिखा गया नाम पढ़ा। वह नाम था गॉडफ्रे एबलव्हाइट।
"अब," सार्जेंट ने कहा, "मेरे साथ आओ और बिस्तर पर लेटे हुए आदमी को देखो।"
मैं उसके साथ गया और बिस्तर पर लेटे हुए आदमी को देखा।
गॉडफ्रे एबलव्हाइट!

छठी कथा
सार्जेंट कफ द्वारा योगदान

मैं

डॉर्किंग, सरे, 30 जुलाई, 1849। फ्रैंकलिन ब्लेक, एस्क्वायर को। महोदय, रिपोर्ट प्रस्तुत करने में हुई देरी के लिए मैं क्षमा चाहता/चाहती हूँ, जिसे प्रस्तुत करने का मैंने आपसे वादा किया था। मैंने इसे एक पूर्ण रिपोर्ट बनाने के लिए प्रतीक्षा की; और इस दौरान मुझे कई बाधाओं का सामना करना पड़ा, जिन्हें धैर्य और समय के थोड़े से प्रयास से ही दूर किया जा सका।
मुझे आशा है कि मैंने जो लक्ष्य निर्धारित किया था, वह अब प्राप्त हो चुका है। इन पृष्ठों में आपको स्वर्गीय श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट से संबंधित उन अधिकांश—यदि सभी नहीं तो—प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे, जो आपके मन में तब आए थे जब मुझे आपसे अंतिम बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।
मैं सबसे पहले आपको यह बताना चाहता हूँ कि आपके चचेरे भाई की मृत्यु किस प्रकार हुई; और इस कथन के साथ उन निष्कर्षों और अनुमानों को भी जोड़ना चाहता हूँ जिन्हें हम (मेरी राय में) तथ्यों से निकालने के लिए उचित समझते हैं।
इसके बाद, मैं आपको श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट की गतिविधियों के संबंध में, उस समय से पहले, उस दौरान और उसके बाद, जब आप और वह स्वर्गीय लेडी वेरेंडर के कंट्री

हाउस में अतिथि के रूप में मिले थे, से संबंधित अपनी खोजों से अवगत कराने का प्रयास करूंगा।

द्वितीय

तो, सबसे पहले आपके चचेरे भाई की मृत्यु के बारे में बात करते हैं।

यह बात बिना किसी संदेह के सिद्ध हो चुकी है कि उसकी हत्या (जब वह सो रहा था, या जागने के तुरंत बाद) उसके बिस्तर के तकिए से गला घोंटकर की गई थी—कि उसकी हत्या के दोषी तीन भारतीय हैं—और इस अपराध का उद्देश्य (और जो हासिल किया गया) मूनस्टोन नामक हीरे पर कब्ज़ा करना था।

जिन तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया है, वे आंशिक रूप से सराय के कमरे की जांच से और आंशिक रूप से कोरोनर की जांच में प्राप्त साक्ष्यों से प्राप्त हुए हैं।

कमरे का दरवाजा तोड़कर अंदर प्रवेश करने पर मृतक व्यक्ति मृत अवस्था में मिला, उसके चेहरे पर तकिया रखा हुआ था। जब चिकित्सक ने उसकी जांच की, तो उसे इस घटना की जानकारी मिली और उसने पाया कि पोस्टमार्टम के परिणाम दम घोंटकर हत्या करने के बिल्कुल अनुरूप थे - यानी, किसी व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा मृतक की नाक और मुंह पर तकिया दबाकर उसकी हत्या की गई थी, जिसके परिणामस्वरूप फेफड़ों में रक्त का थक्का जमने से उसकी मृत्यु हो गई।

अगला चरण, अपराध के मकसद के बारे में है।

कमरे में एक मेज पर एक छोटा सा डिब्बा खुला और खाली मिला, जिस पर सीलबंद कागज फटा हुआ था (जिस पर कुछ लिखा हुआ था)। श्री लूकर ने स्वयं डिब्बे, सील और उस पर लिखे हुए को पहचाना है। उन्होंने बताया है कि डिब्बे में वास्तव में हीरा था, जिसे मूनस्टोन कहा जाता है; और उन्होंने स्वीकार किया है कि उन्होंने पिछले साल 26 जून की दोपहर को श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट (जो उस समय भेस बदले हुए थे) को यह डिब्बा (इस प्रकार सीलबंद) दिया था। इन सब बातों से यही निष्कर्ष निकलता है कि मूनस्टोन की चोरी ही अपराध का मकसद था।

इसके बाद, अपराध करने के तरीके के बारे में बात करते हैं।

कमरे की जाँच करने पर (जो केवल सात फीट ऊँचा है), छत में बना एक गुप्त दरवाज़ा खुला पाया गया, जो घर की छत पर खुलता था। उस गुप्त दरवाज़े तक पहुँचने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली छोटी सीढ़ी (जो बिस्तर के नीचे रखी थी) उस खुले स्थान पर रखी हुई मिली, ताकि कमरे में मौजूद कोई भी व्यक्ति आसानी से बाहर

निकल सके। गुप्त दरवाज़े में लकड़ी में एक चौकोर छेद कटा हुआ था, जो जाहिरा तौर पर किसी बहुत तेज़ औज़ार से बनाया गया था, ठीक उस बोल्ट के पीछे जो दरवाज़े को अंदर की तरफ़ बंद करता था। इस तरह, बाहर से कोई भी व्यक्ति बोल्ट को पीछे खींचकर दरवाज़ा खोल सकता था और कमरे में गिर सकता था (या किसी साथी द्वारा चुपचाप नीचे उतारा जा सकता था) - जैसा कि पहले बताया गया है, कमरे की ऊँचाई केवल सात फीट है। यह स्पष्ट है कि किसी व्यक्ति या व्यक्तियों ने इस तरह से प्रवेश किया होगा, क्योंकि वहाँ छेद मौजूद था। इस बात पर गौर करना ज़रूरी है कि वह (या वे) सराय की छत तक कैसे पहुँचे। गली में नीचे की ओर स्थित तीसरा मकान खाली था और उसकी मरम्मत चल रही थी। कामगारों ने वहाँ एक लंबी सीढ़ी छोड़ी थी, जो फुटपाथ से मकान की छत तक जाती थी। 27 तारीख की सुबह जब वे काम पर लौटे, तो उन्होंने देखा कि सीढ़ी से बाँधा गया तख्ता, ताकि उनकी अनुपस्थिति में कोई उसका इस्तेमाल न कर सके, हटा दिया गया था और ज़मीन पर पड़ा था। इस सीढ़ी से घरों की छतों को पार करते हुए, वापस आते हुए और फिर बिना किसी की नज़र में आए नीचे उतरने की संभावना के बारे में, रात के पुलिसकर्मी के बयान से पता चलता है कि वह अपनी ड्यूटी के दौरान एक घंटे में केवल दो बार ही शोर लेन से गुज़रता है। निवासियों की गवाही से भी पता चलता है कि आधी रात के बाद शोर लेन लंदन की सबसे शांत और सुनसान गलियों में से एक है। अतः, यहाँ यह निष्कर्ष निकालना उचित प्रतीत होता है कि सामान्य सावधानी और सूझबूझ से कोई भी व्यक्ति सीढ़ी से चढ़कर बिना किसी की नज़र में आए वापस उतर सकता था। प्रयोग से यह सिद्ध हो चुका है कि सराय की छत पर पहुँचने के बाद कोई व्यक्ति उस पर लेटकर गुप्त द्वार को काट सकता है, और ऐसी स्थिति में घर के सामने की दीवार उसे सड़क से गुजरने वाले किसी भी व्यक्ति की नज़र से छिपा देगी।

अंत में, उस व्यक्ति या उन व्यक्तियों के बारे में, जिनके द्वारा अपराध किया गया था। यह ज्ञात है (1) कि भारतीयों की हीरे पर कब्ज़ा करने में रुचि थी। (2) यह कम से कम संभव है कि टैक्सी की खिड़की पर एक मैकेनिक के वेश में व्यक्ति से बात करते हुए ऑक्टेवियस गाय द्वारा देखे गए भारतीय जैसे दिखने वाले व्यक्ति तीन हिंदू षड्यंत्रकारियों में से एक था। (3) यह निश्चित है कि मैकेनिक के वेश में यही व्यक्ति 26 तारीख की शाम को श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट पर नज़र रखे हुए देखा गया था, और श्री एबलव्हाइट को कमरे में ले जाने से पहले ही उसे शयनकक्ष में ऐसी परिस्थितियों में पाया गया था जिससे यह संदेह होता है कि वह कमरे की जाँच कर रहा था। (4)

शयनकक्ष में सोने के धागे का एक फटा हुआ टुकड़ा मिला, जिसे ऐसे मामलों के विशेषज्ञ भारतीय निर्मित बताते हैं, और कहते हैं कि यह सोने के धागे की एक ऐसी किस्म है जो इंग्लैंड में ज्ञात नहीं है। (5) 27 तारीख की सुबह, तीन भारतीयों के विवरण से मेल खाने वाले तीन पुरुषों को लोअर थेम्स स्ट्रीट में देखा गया, टॉवर घाट तक उनका पता लगाया गया और उन्हें रॉटरडैम जाने वाले स्टीमर से लंदन छोड़ते हुए देखा गया।

यहां नैतिक साक्ष्य मौजूद हैं, भले ही कानूनी साक्ष्य न हों, कि हत्या भारतीयों द्वारा की गई थी।

मैकेनिक का वेश धारण करने वाला व्यक्ति अपराध में सह-अपराधी था या नहीं, यह कहना असंभव है। यह मानना भी असंभव है कि उसने अकेले ही हत्या की होगी। अकेले दम पर वह श्री एबलव्हाइट (जो दोनों में से लंबा और बलवान था) का गला घोंटकर हत्या कैसे कर सकता था, बिना किसी संघर्ष या चीख-पुकार के। बगल के कमरे में सो रही नौकरानी ने कुछ नहीं सुना। नीचे वाले कमरे में सो रहे मकान मालिक ने भी कुछ नहीं सुना। सभी सबूत इस निष्कर्ष की ओर इशारा करते हैं कि इस अपराध में एक से अधिक व्यक्ति शामिल थे - और परिस्थितियाँ, मैं दोहराता हूँ, नैतिक रूप से इस निष्कर्ष को पुष्ट करती हैं कि यह अपराध भारतीयों ने किया था।

मुझे बस इतना ही कहना है कि कोरोनर की जांच में अज्ञात व्यक्ति या व्यक्तियों के खिलाफ जानबूझकर हत्या का फैसला सुनाया गया है। श्री एबलव्हाइट के परिवार ने इनाम की घोषणा की है और दोषियों को पकड़ने के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। मैकेनिक के वेश में मौजूद व्यक्ति सभी पूछताछों से बच निकला है। भारतीयों का पता लगा लिया गया है। इन अंतिम लोगों को पकड़ने की संभावना के बारे में, मैं इस रिपोर्ट के अंत में आपसे बात करूंगा।

इस बीच, श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट की मृत्यु के विषय पर आवश्यक सभी बातें लिख लेने के बाद, मैं अब उस समय से पहले, उस दौरान और उसके बाद की उनकी गतिविधियों के विवरण की ओर बढ़ सकता हूँ, जब आप और वह स्वर्गीय लेडी वेरेंडर के घर पर मिले थे।

तृतीय

वर्तमान विषय के संदर्भ में, मैं प्रारंभ में ही यह कहना चाहूंगा कि श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के जीवन के दो पहलू थे।

सार्वजनिक रूप से सामने आया उनका दूसरा पहलू एक ऐसे सज्जन व्यक्ति की छवि प्रस्तुत करता था, जो धर्मार्थ सभाओं में वक्ता के रूप में काफी ख्याति प्राप्त थे और प्रशासनिक क्षमताओं से संपन्न थे, जिनका उपयोग वे विभिन्न परोपकारी संस्थाओं, जिनमें अधिकतर महिला संस्थाएँ थीं, के लिए करते थे। आम लोगों की नज़रों से छिपा हुआ दूसरा पहलू इसी सज्जन व्यक्ति के बिल्कुल विपरीत रूप को दर्शाता था - एक विलासी व्यक्ति, जिसके पास उपनगरों में एक विला था जो उसके नाम पर नहीं था, और उस विला में एक महिला भी रहती थी, जो उसके नाम पर नहीं थी।

विला में मेरी छानबीन से मुझे कई सुंदर चित्र और मूर्तियाँ मिलीं; सुरुचिपूर्ण ढंग से चयनित और उत्कृष्ट रूप से निर्मित फर्नीचर; और दुर्लभतम फूलों का एक उद्यान, जिसकी बराबरी पूरे लंदन में आसानी से नहीं मिल पाएगी। महिला की छानबीन से मुझे ऐसे गहने मिले जो फूलों के बराबर ही मूल्यवान हैं, और ऐसे रथ और घोड़े मिले जिन्होंने (स्वाभाविक रूप से) पार्क में सनसनी मचा दी है, उन लोगों के बीच जो उनकी शारीरिक बनावट और नस्ल का सही आकलन करने में सक्षम हैं।

ये सब बातें अब तक तो काफी सामान्य हैं। विला और महिला लंदन के जीवन में इतने परिचित विषय हैं कि मुझे इनका जिक्र करने के लिए क्षमा मांगनी चाहिए। लेकिन जो बात असामान्य और अपरिचित है (मेरे अनुभव में), वह यह है कि ये सभी कीमती चीजें न केवल मंगवाई गई थीं, बल्कि इनके लिए भुगतान भी किया गया था। चित्र, मूर्तियाँ, फूल, गहने, गाड़ियाँ और घोड़े—जांच करने पर मुझे असीम आश्चर्य हुआ कि इनमें से किसी पर भी एक पैसा भी बकाया नहीं था। विला तो पूरी तरह से खरीदा जा चुका था और महिला के नाम कर दिया गया था।

मैंने इस पहेली का सही अर्थ खोजने की कोशिश की होती, और शायद व्यर्थ ही कोशिश की होती—लेकिन श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट की मृत्यु के कारण ही उनके मामलों की स्थिति की जांच शुरू हुई।

जांच से निम्नलिखित तथ्य सामने आए:--

श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट को अठारह सौ अड़तालीस में एक नाबालिग युवक के लिए दो न्यासियों में से एक के रूप में बीस हजार पाउंड की राशि की देखरेख का जिम्मा सौंपा गया था। यह न्यास समाप्त होने वाला था और युवक को अठारह सौ पचास के फरवरी महीने में, जब वह बालिग हो जाएगा, बीस हजार पाउंड प्राप्त होने थे। इस अवधि के आने तक, उनके दो न्यासियों द्वारा उन्हें अर्धवार्षिक रूप से - क्रिसमस और ग्रीष्म संक्रांति के अवसर पर - छह सौ पाउंड की आय का भुगतान किया जाना था। यह आय

सक्रिय न्यासी, श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट द्वारा नियमित रूप से भुगतान की गई थी। अठारह सौ सैंतालीस के अंत तक, बीस हजार पाउंड (जिससे आय प्राप्त होनी थी) की पूरी राशि अलग-अलग समय पर निधि से बेच दी गई थी। बैंकरों को शेयर बेचने के लिए अधिकृत करने वाले पावर ऑफ अटॉर्नी और उन्हें बेची जाने वाली राशि के बारे में बताने वाले विभिन्न लिखित आदेशों पर दोनों न्यासियों द्वारा औपचारिक रूप से हस्ताक्षर किए गए थे। दूसरे ट्रस्टी (एक सेवानिवृत्त सेना अधिकारी, जो ग्रामीण इलाके में रहते थे) के हस्ताक्षर, हर मामले में, सक्रिय ट्रस्टी - यानी श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट द्वारा जाली हस्ताक्षर थे।

इन्हीं तथ्यों में श्री गॉडफ्रे के सम्मानजनक आचरण की व्याख्या निहित है, जिसमें उन्होंने महिला और विला के लिए लिए गए ऋणों का भुगतान किया - और (जैसा कि आप अभी देखेंगे) इसके अलावा भी कई अन्य ऋणों का भुगतान किया।

अब हम मिस वेरिंदर के जन्मदिन (अठारह सौ अड़तालीस वर्ष में) यानी इक्कीस जून की तारीख पर आते हैं।

एक दिन पहले, श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट अपने पिता के घर पहुँचे और (जैसा कि मुझे स्वयं श्री एबलव्हाइट सीनियर से पता चला है) तीन सौ पाउंड का ऋण माँगा। राशि पर ध्यान दें; और साथ ही यह भी याद रखें कि उस युवक को छमाही भुगतान महीने की चौबीस तारीख को देय था। साथ ही, यह भी कि उस युवक की सारी संपत्ति उसके ट्रस्टी द्वारा वर्ष सैंतालीस के अंत तक खर्च कर दी गई थी।

श्री एबलव्हाइट सीनियर ने अपने बेटे को एक पैसा भी उधार देने से इनकार कर दिया।

अगले दिन श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट आपके साथ लेडी वेरेंडर के घर गए। कुछ घंटों बाद, श्री गॉडफ्रे ने (जैसा कि आपने मुझे बताया है) मिस वेरेंडर को विवाह का प्रस्ताव रखा। उन्हें लगा कि अगर प्रस्ताव स्वीकार हो जाता है, तो उनकी सारी आर्थिक चिंताएँ, वर्तमान और भविष्य, समाप्त हो जाएँगी। लेकिन असल में क्या हुआ? मिस वेरेंडर ने उनका प्रस्ताव ठुकरा दिया।

इसलिए, जन्मदिन की रात को श्री गॉडफ्रे एबलवाइट की आर्थिक स्थिति इस प्रकार थी: उन्हें महीने की चौबीस तारीख को तीन सौ पाउंड और फरवरी अठारह सौ पचास में बीस हजार पाउंड जुटाने थे। यदि वे इन राशियों को इन समयों पर जुटाने में विफल रहे, तो वे पूरी तरह से कंगाल हो जाएंगे।

इन परिस्थितियों में आगे क्या होगा?

आप डॉक्टर मिस्टर कैंडी को उनके पेशे के संवेदनशील विषय पर चिढ़ा देते हैं; और बदले में वे आपको अफीम की एक खुराक देकर एक मज़ाक करते हैं। वे एक छोटी शीशी में तैयार की गई खुराक को देने का जिम्मा मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट को सौंपते हैं—जिन्होंने खुद इस मामले में अपनी भूमिका स्वीकार की है, जिसकी परिस्थितियाँ अभी आपको बताई जाएँगी। मिस्टर गॉडफ्रे इस साजिश में शामिल होने के लिए और भी तैयार हैं, क्योंकि शाम के दौरान उन्हें खुद आपकी तीखी जुबान का सामना करना पड़ा है। वे बेटरएज के साथ मिलकर आपको सोने से पहले थोड़ी ब्रांडी और पानी पीने के लिए मनाते हैं। वे चुपके से अफीम की खुराक आपके ठंडे पेय में मिला देते हैं। और आप उस मिश्रण को पी लेते हैं।

चलिए अब हम लैम्बेथ स्थित श्री लुकर के घर की ओर चलते हैं। और मैं पहले ही यह बताना चाहूँगा कि श्री ब्रफ और मैंने मिलकर साहूकार से सच उगलवाने का तरीका खोज निकाला है। हमने उनके द्वारा हमें दिए गए बयान की सावधानीपूर्वक जाँच की है; और यह आपके समक्ष प्रस्तुत है।

चतुर्थ

शुक्रवार, 23 जून (1948) की देर शाम को, श्री लूकर श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट के आगमन से आश्चर्यचकित रह गए। श्री गॉडफ्रे द्वारा मूनस्टोन प्रस्तुत किए जाने पर वे बेहद आश्चर्यचकित हुए। श्री लूकर के अनुभव के अनुसार, यूरोप में किसी भी निजी व्यक्ति के पास ऐसा हीरा नहीं था।

श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट ने इस अनमोल रत्न के संबंध में दो विनम्र प्रस्ताव रखे। पहला, क्या श्री लूकर इसे खरीदने की कृपा करेंगे? दूसरा, क्या श्री लूकर (खरीदने में असमर्थ रहने की स्थिति में) कमीशन पर इसे बेचने का जिम्मा लेंगे और संभावित मूल्य पर कुछ अग्रिम राशि का भुगतान करेंगे?

श्री लुकर ने हीरे की जांच की, उसका वजन किया और जवाब देने से पहले ही उसके मूल्य का अनुमान लगाया। उनका अनुमान (पत्थर में मौजूद खामी को ध्यान में रखते हुए) तीस हजार पाउंड था।

उस नतीजे पर पहुँचने के बाद, श्री लूकर ने अपने होंठ खोले और एक सवाल पूछा: "आपको यह जानकारी कैसे मिली?" सिर्फ छह शब्द! लेकिन उनमें कितना गहरा अर्थ छिपा था!

श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट ने एक कहानी शुरू की। श्री लूकर ने फिर से अपने होंठ खोले, और इस बार केवल तीन शब्द बोले। "यह ठीक नहीं है!"

श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट ने एक और कहानी शुरू की। श्री लूकर ने उन पर और शब्द बर्बाद नहीं किए। वे उठे और नौकर को सज्जन को बाहर निकालने के लिए घंटी बजाई।

इस विवशता के चलते, श्री गॉडफ्रे ने प्रयास किया और मामले का एक नया और संशोधित संस्करण प्रस्तुत किया, जिसका सार निम्नलिखित है।

चुपके से आपकी ब्रांडी और पानी में लाउडैनम मिलाने के बाद, उसने आपको शुभ रात्रि कहा और अपने कमरे में चला गया। उसका कमरा आपके कमरे के ठीक बगल में था; और दोनों कमरों के बीच एक साझा दरवाज़ा था। अपने कमरे में प्रवेश करते ही श्री गॉडफ्रे ने (जैसा कि उन्होंने सोचा था) अपना दरवाज़ा बंद कर लिया। पैसों की तंगी ने उन्हें जगाए रखा था। वह लगभग एक घंटे तक अपने ड्रेसिंग गाउन और चप्पलों में बैठे रहे, अपनी स्थिति के बारे में सोचते रहे। जैसे ही वह बिस्तर पर जाने की तैयारी कर रहे थे, उन्होंने आपको अपने कमरे में खुद से बात करते हुए सुना, और जब वह साझा दरवाज़े के पास गए, तो पाया कि उन्होंने उसे बंद नहीं किया था जैसा कि उन्होंने सोचा था।

वह आपके कमरे में झाँक कर देखने लगा कि क्या बात है। उसने आपको हाथ में मोमबत्ती लिए अपने शयनकक्ष से निकलते हुए पाया। उसने आपको अपने आप से कहते हुए सुना, एक ऐसी आवाज़ में जो आपकी स्वाभाविक आवाज़ से बिल्कुल अलग थी, "मुझे कैसे पता चलेगा? हो सकता है भारतीय घर में छिपे हों।"

उस समय तक, वह (आपको लाउडैनम देकर) बस यही सोच रहा था कि वह आपको एक हानिरहित मज़ाक का शिकार बना रहा है। अब उसे एहसास हुआ कि लाउडैनम का आप पर कुछ असर हुआ है, जिसका अनुमान न तो डॉक्टर ने लगाया था और न ही उसने। किसी दुर्घटना के डर से वह धीरे-धीरे आपके पीछे-पीछे चलने लगा ताकि देख सके कि आप क्या करते हैं।

वह आपके पीछे-पीछे मिस वेरेंडर के बैठक कक्ष तक आया और आपको अंदर जाते हुए देखा। आपने दरवाजा खुला छोड़ दिया था। उसने दरवाजे और खंभे के बीच बनी दरार से अंदर झाँका, फिर खुद कमरे में प्रवेश किया।

उस स्थिति में, उसने न केवल आपको दराज से हीरा निकालते हुए देखा, बल्कि उसने मिस वेरेंडर को भी अपने शयनकक्ष के खुले दरवाजे से चुपचाप आपको देखते हुए देखा। उसकी अपनी आँखों ने उसे इस बात का यकीन दिलाया कि उसने भी आपको हीरा निकालते हुए देखा था।

बैठक कक्ष से बाहर निकलने से पहले आप थोड़ा हिचकिचाए। श्री गॉडफ्रे ने आपकी इस हिचकिचाहट का फायदा उठाते हुए आपके बाहर आने से पहले ही अपने शयनकक्ष में वापस चले गए और आपको देख लिया। उनके वापस आते ही आप भी वापस आ गए। आपने उन्हें (जैसा कि वे अनुमान लगाते हैं) ठीक उसी समय देखा जब वे संचार द्वार से गुजर रहे थे। खैर, आपने उन्हें एक अजीब, नींद भरी आवाज़ में पुकारा।

वह तुम्हारे पास लौट आया। तुमने उसे सुस्त और नींद भरी निगाहों से देखा। तुमने हीरा उसके हाथ में रख दिया। तुमने उससे कहा, "गॉडफ्रे, इसे अपने पिता के बैंक में वापस ले जाओ। वहाँ यह सुरक्षित है—यहाँ सुरक्षित नहीं है।" तुम लड़खड़ाते हुए मुड़ीं और अपना ड्रेसिंग गाउन पहन लिया। तुम अपने कमरे में बड़ी सी आरामकुर्सी पर बैठ गईं। तुमने कहा, "मैं इसे बैंक में वापस नहीं ले जा सकती। मेरा सिर सीसे जैसा भारी है—और मुझे अपने पैरों का एहसास भी नहीं हो रहा।" तुम्हारा सिर कुर्सी के पिछले हिस्से पर टिक गया—तुमने एक गहरी साँस ली—और तुम सो गईं।

श्री गॉडफ्रे एबलवाइट हीरे को लेकर अपने कमरे में वापस चले गए। उनका कहना है कि उस समय वे किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंचे थे—सिवाय इसके कि वे सुबह तक इंतजार करेंगे और देखेंगे कि क्या होता है।

जब सुबह हुई, तो आपकी भाषा और व्यवहार से स्पष्ट था कि आपको रात भर में कही और की गई बातों का बिल्कुल भी एहसास नहीं था। वहीं, मिस वेरेंडर की भाषा और व्यवहार से यह भी स्पष्ट था कि उन्होंने (आप पर दया करके) अपनी तरफ से कुछ भी न कहने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। यदि मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट हीरे को अपने पास रखना चाहते, तो वे पूरी तरह से निडर होकर ऐसा कर सकते थे। मूनस्टोन उनके और बर्बादी के बीच खड़ा था। उन्होंने मूनस्टोन को अपनी जेब में रख लिया।

वी

यह कहानी आपके चचेरे भाई ने (मजबूरी के दबाव में) श्री लुकर को सुनाई थी।

श्री लुकर का मानना था कि कहानी के सभी मुख्य पहलू सत्य हैं - उनका यह मानना था कि श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट इतने बड़े मूर्ख थे कि वे इसे गढ़ नहीं सकते थे। श्री ब्रफ और मैं श्री लुकर से सहमत हैं और कहानी की सत्यता की इस कसौटी को पूरी तरह से विश्वसनीय मानते हैं।

अगला सवाल यह था कि श्री लूकर मूनस्टोन के मामले में क्या करेंगे। उन्होंने निम्नलिखित शर्तें रखीं, क्योंकि वे केवल इन्हीं शर्तों पर इस संदिग्ध और खतरनाक सौदे

में शामिल होने के लिए सहमत हुए, जो (उनके व्यवसाय के लिहाज से भी) एक जोखिम भरा सौदा था।
श्री लूकर, श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट को दो हजार पाउंड उधार देने के लिए सहमत होंगे, इस शर्त पर कि मूनस्टोन को उनके पास गिरवी के रूप में रखा जाए। यदि उस तिथि से एक वर्ष की समाप्ति पर श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट श्री लूकर को तीन हजार पाउंड का भुगतान कर देते हैं, तो उन्हें गिरवी के रूप में हीरा वापस मिल जाएगा। यदि वे वर्ष की समाप्ति पर भी राशि का भुगतान करने में विफल रहते हैं, तो गिरवी रखी गई वस्तु (अर्थात मूनस्टोन) श्री लूकर के पास जब्त मानी जाएगी। इस स्थिति में, श्री लूकर उदारतापूर्वक श्री गॉडफ्रे को अपने कुछ पूर्व लेन-देन से संबंधित वचन पत्र उपहार स्वरूप देंगे, जो उस समय साहूकार के पास मौजूद थे।
यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि श्री गॉडफ्रे ने इन भयानक शर्तों को सुनने से घोर इनकार कर दिया। इसके बाद श्री लुकर ने उन्हें हीरा वापस कर दिया और शुभ रात्रि कहा।
आपका चचेरा भाई दरवाजे तक गया और फिर वापस आ गया। उसे कैसे यकीन होता कि उस शाम की बातचीत उसके दोस्त और उसके बीच ही पूरी तरह गुप्त रहेगी?
श्री लूकर को इसका कोई अतार्किक प्रमाण नहीं था। यदि श्री गॉडफ्रे उनकी शर्तें मान लेते, तो वे उन्हें अपना सहयोगी बना लेते और उनकी चुप्पी को एक तरह से निश्चितता मान लेते। लेकिन स्थिति यह थी कि श्री लूकर को अपने स्वार्थों को प्राथमिकता देनी थी। यदि उनसे अनुचित पूछताछ की जाती, तो वे उस व्यक्ति के लिए समझौता कैसे कर सकते थे जिसने उनसे कोई लेन-देन करने से इनकार कर दिया था?
यह जवाब पाकर श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट ने वही किया जो सभी जानवर (मनुष्य और अन्य) तब करते हैं जब वे किसी जाल में फंस जाते हैं। वे हताशा और बेबसी से चारों ओर देखने लगे। साहूकार की चिमनी के ऊपर एक डिब्बे में रखे एक छोटे से कार्ड पर दर्ज महीने की तारीख ने उनकी नज़र खींची। यह 23 जून थी। 24 तारीख को उन्हें उस युवक को तीन सौ पाउंड देने थे जिसके वे न्यासी थे, और श्री लूकर द्वारा दिए गए अवसर के अलावा उनके पास पैसे जुटाने का कोई और रास्ता नहीं था। इस विकट बाधा के बिना, वे हीरे को एम्स्टर्डम ले जा सकते थे और उसे अलग-अलग पत्थरों में कटवाकर एक बाज़ारू वस्तु बना सकते थे। हालात ऐसे थे कि उनके पास श्री लूकर की शर्तें मानने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। आखिरकार, उनके पास तीन हज़ार

पाउंड जुटाने के लिए एक साल का समय था - और एक साल बहुत लंबा समय होता है।
श्री लूकर ने मौके पर ही आवश्यक दस्तावेज तैयार किए। हस्ताक्षर होने के बाद उन्होंने श्री गॉडफ्रे एबलव्हाइट को दो चेक दिए। एक चेक 23 जून को जारी किया गया था, जिसमें तीन सौ पाउंड की राशि थी। दूसरा चेक एक सप्ताह बाद जारी किया गया था, जिसमें शेष सत्रह सौ पाउंड की राशि थी।
आप पहले से ही जानते हैं कि मूनस्टोन को मिस्टर लूकर के बैंकरों के भरोसे कैसे सौंपा गया था, और (ऐसा होने के बाद) भारतीयों ने मिस्टर लूकर और मिस्टर गॉडफ्रे के साथ कैसा व्यवहार किया था।
आपके चचेरे भाई के जीवन की अगली घटना फिर से मिस वेरेंडर से संबंधित है। उन्होंने दूसरी बार उन्हें शादी का प्रस्ताव दिया—और (प्रस्ताव स्वीकार होने के बाद) उन्होंने उनके अनुरोध पर शादी को समाप्त मान लिया। इस रियायत के पीछे का एक कारण श्री ब्रूफ को पता चल गया है। मिस वेरेंडर को अपनी मां की संपत्ति में केवल आजीवन अधिकार प्राप्त था—और उस अधिकार से बीस हजार पाउंड जुटाना संभव नहीं था।
लेकिन आप कहेंगे कि अगर उन्होंने शादी कर ली होती, तो वे गिरवी रखे हीरे को छुड़ाने के लिए तीन हज़ार पाउंड बचा सकते थे। वे ऐसा ज़रूर कर सकते थे—बशर्ते उनकी पत्नी, उनके अभिभावक और न्यासी, शादी के पहले साल में किसी अज्ञात उद्देश्य के लिए अपनी आय के आधे से ज़्यादा हिस्से को खर्च करने पर आपत्ति न जताते। लेकिन अगर वे इस बाधा को पार भी कर लेते, तो एक और बाधा उनका इंतज़ार कर रही थी। विला की महिला को उनकी प्रस्तावित शादी के बारे में पता चल गया था। मिस्टर ब्लेक एक शानदार महिला थीं, ऐसी महिला जिनसे हल्के में नहीं लिया जा सकता—गोरे रंग और रोमन नाक वाली। उन्हें मिस्टर गॉडफ्रे एबलव्हाइट से घोर घृणा थी। अगर वे उनके लिए अच्छा-खासा इंतज़ाम करते, तो यह मौन घृणा होती। अन्यथा, यह खुलकर घृणा करने वाली घृणा होती। मिस वेरेंडर के जीवन भर के हित ने उन्हें बीस हज़ार पाउंड जुटाने की उम्मीद से ज़्यादा "अंतर्धन" जुटाने की कोई उम्मीद नहीं दी। वे शादी नहीं कर सकते थे—वास्तव में, इन परिस्थितियों में वे शादी नहीं कर सकते थे।
आप जानते ही हैं कि कैसे उन्होंने एक और महिला के साथ अपनी किस्मत आज़माई, और कैसे वह शादी भी पैसों के विवाद पर टूट गई। आप यह भी जानते हैं कि कुछ

समय बाद ही, इस आकर्षक व्यक्ति के कई चाहने वालों में से एक ने उन्हें पाँच हज़ार पाउंड की वसीयत दी थी, जिनका दिल उन्होंने बड़ी चतुराई से जीत लिया था। (जैसा कि घटना से साबित हुआ) उसी वसीयत ने उनकी मृत्यु का कारण बना।

मुझे पता चला है कि जब वह पाँच हज़ार पाउंड लेकर विदेश गया, तो वह एम्स्टर्डम गया। वहाँ उसने हीरे को अलग-अलग पत्थरों में कटवाने की सारी ज़रूरी व्यवस्था कर ली। वह (भेष बदलकर) वापस आया और तय दिन पर मूनस्टोन को बैंक से छुड़ा लिया। दोनों पक्षों द्वारा तय की गई एहतियात के तौर पर, हीरे को बैंक से निकालने से पहले कुछ दिन बीतने दिए गए। अगर वह इसे लेकर एम्स्टर्डम सुरक्षित पहुँच जाता, तो जुलाई 149 और फरवरी 150 (जब वह युवक बालिग हुआ) के बीच हीरे को कटवाने और अलग-अलग पत्थरों को (पॉलिश किए हुए या बिना पॉलिश किए) बाज़ार में बेचने लायक बनाने का पर्याप्त समय होता। इससे अंदाज़ा लगाइए कि उसने इतना बड़ा जोखिम क्यों उठाया। उसके लिए यह करो या मरो की स्थिति थी—अगर आज तक किसी के लिए कभी ऐसा हुआ हो।

इस रिपोर्ट को समाप्त करने से पहले, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि भारतीयों को पकड़ने और मूनस्टोन को बरामद करने की अभी भी संभावना है। वे इस समय (पूरी संभावना है) एक ईस्ट इंडियामैन जहाज से बॉम्बे के लिए रवाना हो चुके हैं। (दुर्घटना न होने पर) जहाज अपने रास्ते में किसी अन्य बंदरगाह पर नहीं रुकेगा; और बॉम्बे के अधिकारी (जिनसे पत्र द्वारा सड़क मार्ग से पहले ही संपर्क किया जा चुका है) जहाज के बंदरगाह में प्रवेश करते ही उस पर सवार होने के लिए तैयार रहेंगे।

महोदय, मैं आपका आज्ञाकारी सेवक, रिचर्ड कफ (स्कॉटलैंड यार्ड, लंदन के डिटेक्टिव फोर्स में पूर्व सार्जेंट) बनकर सम्मानित महसूस करता हूँ।*

* नोट.--रिपोर्ट में जहां कहीं भी जन्मदिन की घटनाओं या उसके बाद के तीन दिनों की घटनाओं का जिक्र है, वहां बेटरएज के विवरण के अध्याय viii से xiii से तुलना करें।

सातवीं कथा

श्री कैंडी के पत्र में

फ्रिज़िंगहॉल, बुधवार, 26 सितंबर, 1849.--प्रिय श्री फ्रैंकलिन ब्लेक, आपको उस दुखद समाचार का पूर्वाभास होगा जो मुझे आपको बताना है। आपका एज़रा जेनिंग्स को लिखा पत्र, जो इस संलग्नक में बिना खोले वापस आ गया है, आपको वापस मिल गया है। पिछले बुधवार को सूर्योदय के समय, मेरी बाहों में उनका निधन हो गया।

मैं आपको उनके निकट अंत की सूचना न देने के लिए दोषी नहीं हूँ। उन्होंने मुझे स्पष्ट रूप से आपको पत्र लिखने से मना किया था। उन्होंने कहा, "श्री फ्रैंकलिन ब्लेक का मैं आभारी हूँ, क्योंकि उन्होंने मुझे कुछ सुखद दिन दिखाए। श्री कैंडी, उन्हें परेशान मत कीजिए—उन्हें परेशान मत कीजिए।"

जीवन के अंतिम छह घंटों तक उनकी पीड़ा देखना भयावह था। जब भी उन्हें थोड़ी राहत मिलती और उनका मन शांत होता, मैं उनसे विनती करता कि वे मुझे अपने उन रिश्तेदारों के बारे में बताएं जिन्हें मैं पत्र लिख सकूँ। उन्होंने मुझसे कुछ भी बताने से इनकार करने के लिए क्षमा मांगी। और फिर उन्होंने - बिना किसी कड़वाहट के - कहा कि वे वैसे ही मरेंगे जैसे वे जिए थे, गुमनाम और भुला दिए गए। उन्होंने अंत तक यही संकल्प बनाए रखा। अब उनके बारे में कोई जानकारी मिलने की कोई उम्मीद नहीं है। उनका जीवन एक रहस्य बनकर रह गया है।

अपनी मृत्यु से एक दिन पहले उन्होंने मुझे अपने सारे कागज़ात का पता बताया। मैं उन्हें उनके बिस्तर पर ले गया। वहाँ पुराने पत्रों का एक छोटा सा बंडल था जिसे उन्होंने अलग रख दिया था। वहाँ उनकी अधूरी किताब थी। वहाँ उनकी डायरी थी—कई बंद डिब्बों में। उन्होंने इस साल का डिब्बा खोला और एक-एक करके उन पन्नों को फाड़ दिया जिनमें आपके और उनके साथ बिताए समय का ज़िक्र था। उन्होंने कहा, "ये पन्ने श्री फ्रैंकलिन ब्लेक को दे दीजिए। आने वाले वर्षों में शायद उन्हें इसमें लिखी बातों को पढ़ने में रुचि हो।" फिर उन्होंने हाथ जोड़कर ईश्वर से आपके और आपके प्रियजनों के लिए हार्दिक प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि वे आपसे फिर मिलना चाहेंगे। लेकिन अगले ही पल उन्होंने अपना मन बदल लिया। जब मैंने उन्हें पत्र लिखने की पेशकश की तो उन्होंने जवाब दिया, "नहीं! मैं उन्हें परेशान नहीं करूँगा! मैं उन्हें परेशान नहीं करूँगा!"

उनकी विनती पर मैंने बाकी कागज़ात—यानी पत्रों का बंडल, अधूरी किताब और डायरी के पन्ने—इकट्ठे किए और उन सबको एक ही लिफाफे में बंद करके अपनी मुहर लगा दी। उन्होंने कहा, "वादा करो कि तुम इसे अपने हाथों से मेरे ताबूत में रखोगे; और यह सुनिश्चित करोगे कि इसके बाद कोई और इसे न छुए।"

मैंने उसे अपना वादा दिया था। और मैंने वह वादा पूरा किया है।

उन्होंने मुझसे एक और काम करने को कहा—जिसे पूरा करने में मुझे बहुत संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने कहा, "मेरी कब्र को भुला दिया जाए। मुझे वचन दो कि तुम मेरी कब्र पर किसी भी प्रकार का कोई स्मारक—यहाँ तक कि एक साधारण सा समाधि-

पत्थर भी—नहीं बनने दोगे। मुझे गुमनाम सोने दो। मुझे अज्ञात विश्राम करने दो।" जब मैंने उनसे अपना निर्णय बदलने का आग्रह किया, तो वे पहली और एकमात्र बार हिंसक रूप से उत्तेजित हो गए। मैं यह देख नहीं सका; और मैंने हार मान ली। उनकी कब्र पर केवल घास का एक छोटा सा टीला है। समय के साथ, उसके चारों ओर समाधि-पत्थर बन जाएँगे। और हमारे बाद आने वाली पीढ़ियाँ उस गुमनाम कब्र को देखकर आश्चर्यचकित होंगी।

जैसा कि मैंने आपको बताया है, मृत्यु से छह घंटे पहले उनकी पीड़ा थम गई। वे थोड़ी देर के लिए झपकी। मुझे लगता है उन्होंने सपना देखा। एक-दो बार वे मुस्कुराए। इस दौरान उनके होठों पर अक्सर किसी महिला का नाम होता था, शायद "एला" का। अंत से कुछ मिनट पहले उन्होंने मुझसे कहा कि मैं उन्हें तकिये पर उठा लूँ, ताकि वे खिड़की से सूर्योदय देख सकें। वे बहुत कमजोर थे। उनका सिर मेरे कंधे पर आ गिरा। उन्होंने फुसफुसाते हुए कहा, "आ रहा है!" फिर उन्होंने कहा, "मुझे चूम लो!" मैंने उनके माथे को चूमा। अचानक उन्होंने अपना सिर उठाया। सूर्य की किरणें उनके चेहरे पर पड़ीं। उनके चेहरे पर एक सुंदर, एक देवदूत जैसी अभिव्यक्ति आ गई। उन्होंने तीन बार पुकारा, "शांति! शांति! शांति!" उनका सिर फिर से मेरे कंधे पर टिक गया, और उनके जीवन का लंबा कष्ट समाप्त हो गया।

तो वो हमें छोड़कर चले गए। मेरी राय में, वो एक महान व्यक्ति थे—भले ही दुनिया उन्हें जान न पाई हो। मैंने आज तक जितने भी लोगों से मुलाकात की है, उनमें उनका स्वभाव सबसे मधुर था। उनके जाने से मुझे बहुत अकेलापन महसूस हो रहा है। शायद बीमारी के बाद से मैं कभी पूरी तरह से ठीक नहीं हो पाया। कभी-कभी मैं अपने काम को छोड़कर कहीं दूर चले जाने और वहाँ के कुछ विदेशी स्नानघरों और जल के प्रभाव को आजमाने के बारे में सोचता हूँ।

यहां खबर मिली है कि आपका और मिस वेरिंदर का विवाह अगले महीने होने वाला है। मेरी हार्दिक बधाई स्वीकार कीजिएगा।

मेरे बेचारे दोस्त की डायरी के पन्ने मेरे घर पर आपका इंतज़ार कर रहे हैं—सील बंद करके, कवर पर आपका नाम लिखा हुआ है। मुझे डाक से भेजने में डर लग रहा था।

मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ और सादर प्रणाम श्रीमती वेरेंडर के साथ हैं। प्रिय श्री फ्रैंकलिन ब्लेक, आपका सच्चा शुभचिंतक।

थॉमस कैंडी।

आठवीं कथा

गैब्रियल बेटरएज द्वारा योगदान

जैसा कि आपको निश्चित रूप से याद होगा, मैं ही वह व्यक्ति हूँ जिसने इन पन्नों में मार्ग प्रशस्त किया और कहानी की शुरुआत की। मैं ही वह व्यक्ति हूँ जो, एक तरह से, कहानी को समाप्त करने के लिए पीछे रह गया हूँ।

कोई यह न सोचे कि भारतीय हीरे के बारे में मेरे पास कहने के लिए कोई अंतिम शब्द हैं। मैं उस मनहूस रत्न से घृणा करता हूँ—और मूनस्टोन के बारे में इस समय आपको जो भी जानकारी मिलने की उम्मीद है, उसके लिए मैं आपको मेरे अलावा अन्य स्रोतों का हवाला देता हूँ। मेरा उद्देश्य यहाँ परिवार के इतिहास के एक ऐसे तथ्य को बताना है, जिसे सबने अनदेखा कर दिया है, और जिसे मैं इस तरह अनादरपूर्वक दबाए जाने नहीं दूँगा। जिस तथ्य का मैं जिक्र कर रहा हूँ वह है—मिस राहेल और श्री फ्रैंकलिन ब्लेक का विवाह। यह रोचक घटना यॉर्कशायर स्थित हमारे घर में मंगलवार, 9 अक्टूबर, 1849 को घटी। इस अवसर पर मेरे पास एक नया सूट था। और नवविवाहित जोड़ा हनीमून मनाने स्कॉटलैंड गया।

मेरी प्रिय मालकिन की मृत्यु के बाद से हमारे घर में पारिवारिक उत्सव बहुत कम ही हुए हैं, इसलिए मैं स्वीकार करता हूँ कि शादी के इस अवसर पर मैंने (दिन के उत्तरार्ध में) इसके प्रभाव में थोड़ी अधिक शराब पी ली थी।

अगर आपने कभी खुद भी ऐसा कुछ किया है तो आप मेरी बात समझेंगे और मेरी सहानुभूति महसूस करेंगे। अगर आपने ऐसा नहीं किया है, तो आप शायद कहेंगे, "घिनौना बूढ़ा आदमी! ये हमें ये सब क्यों बताता है?" इसका कारण अब हम आपको बताएंगे।

अपनी एक घूंट पीने के बाद (आपकी भी अपनी पसंदीदा बुरी आदत है; बस फर्क इतना है कि आपकी आदत मेरी नहीं है और मेरी आपकी नहीं), मैंने अगला अचूक उपाय आजमाया—और वह उपाय था, जैसा कि आप जानते हैं, रॉबिन्सन क्रूसो। मैंने वह बेजोड़ किताब कहाँ खोली, यह मैं नहीं कह सकता। लेकिन जहाँ छपी पंक्तियाँ एक-दूसरे में मिलनी बंद हुईं, यह मुझे अच्छी तरह से पता है। यह पृष्ठ तीन सौ अठारह पर था—रॉबिन्सन क्रूसो के विवाह से संबंधित एक घरेलू अंश, जो इस प्रकार है:

"इन विचारों के साथ, मैंने अपनी नई सगाई के बारे में सोचा, कि मेरी एक पत्नी थी"--(ध्यान दें! श्री फ्रैंकलिन की भी थी!)--"एक बच्चा पैदा हुआ था"--(फिर से ध्यान दें! हो सकता है कि श्री फ्रैंकलिन का भी यही हाल हो!)--"और फिर मेरी पत्नी"--रॉबिन्सन क्रूसो की पत्नी ने "तब" क्या किया या नहीं किया, यह जानने की मुझे कोई इच्छा नहीं

थी। मैंने पेंसिल से बच्चे के बारे में लिखावट को चिह्नित किया और उस जगह को चिह्नित करने के लिए कागज का एक टुकड़ा रख दिया; "तुम यहीं लेटे रहो," मैंने कहा, "जब तक श्री फ्रैंकलिन और मिस राहेल की शादी को कुछ महीने और न हो जाएं--और फिर हम देखेंगे!"

महीने बीतते गए (जितना मैंने सोचा था उससे कहीं ज़्यादा), और किताब में उस निशान को हिलाने का कोई मौका नहीं मिला। नवंबर 1850 के इस महीने में ही श्री फ्रैंकलिन बड़े उत्साह से मेरे कमरे में आए और बोले, "बेटरएज! मेरे पास तुम्हारे लिए एक खबर है! हमारे कुछ महीने और बड़े होने से पहले ही घर में कुछ होने वाला है।"

"क्या यह परिवार से संबंधित मामला है, महोदय?" मैंने पूछा।

श्री फ्रैंकलिन कहते हैं, "यह निश्चित रूप से परिवार से संबंधित मामला है। क्या आपकी पत्नी का इससे कोई संबंध है, महोदय?"

"इसमें उसका बहुत बड़ा हाथ है," श्री फ्रैंकलिन ने थोड़ा आश्चर्यचकित होते हुए कहा।

"आपको और कुछ कहने की ज़रूरत नहीं है, महोदय," मैंने उत्तर दिया। "आप दोनों को ईश्वर का आशीर्वाद मिले! यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई।"

श्री फ्रैंकलिन स्तब्ध होकर घूर रहे थे। उन्होंने पूछा, "क्या मैं यह जानने की हिम्मत कर सकता हूँ कि आपको यह जानकारी कहाँ से मिली?" श्री फ्रैंकलिन ने जवाब दिया, "मुझे यह जानकारी (अत्यंत गुप्त रूप से) पाँच मिनट पहले ही मिली है।"

यहाँ रॉबिन्सन क्रूसो को प्रस्तुत करने का अवसर था! यहाँ उस बच्चे के बारे में लिखे गए घरेलू अंश को पढ़ने का मौका था जिसे मैंने श्री फ्रैंकलिन की शादी के दिन चिह्नित किया था! मैंने उन चमत्कारी शब्दों को उचित स्वर में पढ़ा और फिर उनकी आँखों में गंभीरता से देखते हुए पूछा, "अब महोदय, क्या आप रॉबिन्सन क्रूसो में विश्वास करते हैं?"

श्री फ्रैंकलिन ने उतनी ही गंभीरता से कहा, "बेटरएज! आखिरकार मैं आश्वस्त हो गया हूँ।" उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और मुझे लगा कि मैंने उन्हें भी मना लिया है।

इस असाधारण घटना के वर्णन के साथ ही इन पन्नों पर मेरी वापसी समाप्त होती है। कृपया इस अनोखे किस्से पर हँसे नहीं। मेरी लिखी बाकी सभी बातों पर आप जितना चाहें उतना मज़ाक उड़ा सकते हैं। लेकिन जब मैं रॉबिन्सन क्रूसो के बारे में लिखता हूँ, तो भगवान कसम, यह गंभीर मामला है—और मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि इसे गंभीरता से लें!

इतना कह दिया तो सब कुछ कह दिया। देवियों और सज्जनों, मैं नमस्कार करता हूँ और यहीं समाप्त करता हूँ।

उपसंहार

हीरे की खोज

मैं

सार्जेंट क्लिफ के आदमी का बयान (1849)

पिछले साल 27 जून को, मुझे सार्जेंट कफ से तीन लोगों का पीछा करने का निर्देश मिला; जिन पर हत्या का संदेह था और जिन्हें भारतीय बताया गया था। उन्हें उस सुबह टॉवर घाट पर रोटरडम जाने वाले स्टीमर पर सवार होते देखा गया था।

मैं एक दूसरी कंपनी के स्टीमर से लंदन से रवाना हुआ, जो गुरुवार, अट्ठाईस तारीख की सुबह चला। रॉटरडैम पहुँचकर, मैं बुधवार वाले स्टीमर के कमांडर से मिलने में कामयाब रहा। उन्होंने मुझे बताया कि भारतीय निश्चित रूप से उनके जहाज पर यात्री थे—लेकिन केवल ग्रेवसेंड तक। वहाँ से कुछ दूर, उन तीनों में से एक ने पूछा कि वे कैलिस कब पहुँचेंगे। यह जानकर कि स्टीमर रॉटरडैम जा रहा है, दल के प्रवक्ता ने अपनी और अपने दो दोस्तों की गलती पर गहरा आश्चर्य और खेद व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि वे सभी अपने यात्रा के पैसे छोड़ने को तैयार थे, बशर्ते स्टीमर का कमांडर उन्हें किनारे पर उतार दे। एक अनजान देश में विदेशी होने के कारण उनकी स्थिति पर दया दिखाते हुए और उन्हें रोकने का कोई कारण न समझते हुए, कमांडर ने किनारे पर आने वाली नाव को संकेत दिया, और तीनों लोग जहाज से उतर गए।

भारतीयों को पकड़ने से रोकने के लिए यह कार्रवाई पहले से ही तय कर ली गई थी, इसलिए मैंने तुरंत इंग्लैंड लौटने का फैसला किया। मैंने ग्रेवसेंड में स्टीमर छोड़ दिया और पता चला कि भारतीय वहाँ से लंदन चले गए थे। वहाँ से मैंने उनका पता लगाया और पाया कि वे प्लायमाउथ के लिए रवाना हो गए थे। प्लायमाउथ में पूछताछ करने पर पता चला कि वे अड़तालीस घंटे पहले ईस्ट इंडियामैन जहाज 'बेवली कैसल' से बॉम्बे के लिए रवाना हुए थे।

यह सूचना मिलते ही सार्जेंट कफ ने बॉम्बे के अधिकारियों से सड़क मार्ग से संपर्क किया ताकि बंदरगाह में प्रवेश करते ही पुलिस जहाज पर चढ़कर उसकी तलाशी ले सके। यह कदम उठाए जाने के बाद इस मामले से मेरा संबंध समाप्त हो गया। उसके बाद से मुझे इस बारे में कुछ भी पता नहीं चला है।

द्वितीय

कप्तान का वक्तव्य (1849)

सार्जेंट कफ ने मुझसे अनुरोध किया है कि मैं कुछ तथ्यों को लिखित रूप में दर्ज करूं, जो तीन व्यक्तियों (जिनके हिंदू होने का अनुमान है) से संबंधित हैं, जो पिछली गर्मियों में मेरे अधीन बॉम्बे के लिए सीधे जा रहे जहाज बेवली कैसल में यात्री थे।

हिंदू लोग प्लायमाउथ में हमसे मिले। यात्रा के दौरान मुझे उनके व्यवहार के बारे में कोई शिकायत नहीं मिली। उन्हें जहाज के आगे वाले हिस्से में ठहराया गया था। मुझे खुद उन्हें व्यक्तिगत रूप से देखने के बहुत कम अवसर मिले।

यात्रा के अंतिम चरण में, भारत के तट पर तीन दिन और तीन रात तक शांत मौसम में फंसे रहने का दुर्भाग्य रहा। मेरे पास जहाज की डायरी नहीं है, और मुझे अक्षांश और देशांतर भी याद नहीं हैं। इसलिए, हमारी स्थिति के बारे में मैं केवल इतना ही कह सकता हूँ कि समुद्री धाराओं ने हमें तट की ओर धकेल दिया, और जब हवा ने हमारा साथ दिया, तो हम चौबीस घंटे बाद अपने बंदरगाह पर पहुँच गए।

जैसा कि सभी समुद्री यात्रियों को पता है, लंबे समय तक शांत मौसम रहने पर जहाज का अनुशासन शिथिल हो जाता है। मेरे जहाज का अनुशासन भी शिथिल हो गया। यात्रियों में से कुछ सज्जनों ने कुछ छोटी नावों को पानी में उतारा और शाम के समय जब सूरज की ठंडक इतनी थी कि वे अपना मनोरंजन कर सकें, तब उन्होंने नाव चलाने और तैरने का आनंद लिया। नावों का उपयोग समाप्त होने के बाद उन्हें वापस अपनी जगह पर बांध देना चाहिए था। इसके बजाय उन्हें जहाज के किनारे बांधकर छोड़ दिया गया। भीषण गर्मी और खराब मौसम के कारण, जब तक शांत मौसम रहा, न तो अधिकारी और न ही कर्मचारी अपने कर्तव्य के प्रति तत्पर प्रतीत हुए।

तीसरी रात को, डेक पर तैनात पहरेदारों ने कुछ भी असामान्य न तो सुना और न ही देखा। जब सुबह हुई, तो सबसे छोटी नाव गायब थी—और उसके बाद तीनों हिंदुओं के भी लापता होने की सूचना मिली।

अगर इन लोगों ने अंधेरा होने के तुरंत बाद नाव चुराई थी (जिसमें मुझे कोई संदेह नहीं है), तो सुबह जब उनका पता चला, तब हम तट के इतने करीब थे कि उनका पीछा करना व्यर्थ था। मुझे पूरा यकीन है कि शांत मौसम में (थकान और नाव चलाने में हुई कठिनाई को ध्यान में रखते हुए) वे सूर्योदय से पहले ही किनारे पर पहुँच गए होंगे।

बंदरगाह पहुँचने पर मुझे पहली बार पता चला कि इन यात्रियों ने जहाज से भागने का मौका क्यों लिया। मैंने अधिकारियों को भी वही बात बताई जो मैंने यहाँ बताई है।

उन्होंने मुझे जहाज के अनुशासन में ढील देने का दोषी माना। मैंने इस बात पर उनसे और अपने मालिकों से खेद व्यक्त किया है।
तब से, मेरी जानकारी के अनुसार, उन तीनों हिंदुओं के बारे में कुछ भी पता नहीं चला है। यहाँ जो लिखा है, उसमें जोड़ने के लिए मेरे पास और कुछ नहीं है।

तृतीय
श्री मुर्थवेट का वक्तव्य (1850)
(श्री ब्रुफ को लिखे पत्र में)
क्या आपको याद है, मेरे प्रिय महोदय, उस अर्ध-जंगली व्यक्ति के बारे में, जिससे आपकी मुलाकात 1948 की शरद ऋतु में लंदन में रात्रिभोज के दौरान हुई थी? मुझे आपको याद दिलाने की अनुमति दें कि उस व्यक्ति का नाम मुर्थवेट था, और रात्रिभोज के बाद आप दोनों के बीच लंबी बातचीत हुई थी। बातचीत एक भारतीय हीरे, जिसे मूनस्टोन कहा जाता था, और उस रत्न पर कब्ज़ा करने के लिए चल रही एक साजिश के बारे में थी।
तब से मैं मध्य एशिया में भटक रहा हूँ। फिर वहाँ से भटकते हुए मैं भारत के उत्तर और उत्तर-पश्चिम में अपने कुछ पुराने रोमांचक अनुभवों के स्थल पर लौट आया हूँ। लगभग दो सप्ताह पहले, मैं कट्टियावार नामक एक जिले या प्रांत में पहुँचा (जो यूरोपियों के लिए बहुत कम जाना जाता है)।
यहां मेरे साथ एक ऐसा रोमांचक अनुभव हुआ, जिसमें (भले ही यह अविश्वसनीय लगे) आपकी व्यक्तिगत रुचि है।
कट्टियावार के जंगली इलाकों में (और ये कितने जंगली हैं, यह आप तब समझेंगे जब मैं आपको बताऊँगा कि यहाँ तक कि किसान भी हथियारों से लैस होकर खेत जोतते हैं), आबादी प्राचीन हिंदू धर्म के प्रति कट्टर रूप से समर्पित है—ब्रह्म और विष्णु की प्राचीन पूजा के प्रति। भीतरी गाँवों में बिखरे हुए कुछ मुस्लिम परिवार किसी भी प्रकार का मांस खाने से डरते हैं। यहाँ तक कि अगर किसी मुस्लिम पर पवित्र पशु, गाय को मारने का भी संदेह होता है, तो उसके आसपास के धर्मनिष्ठ हिंदू पड़ोसी उसे निर्दयता से मौत के घाट उतार देते हैं। लोगों के धार्मिक उत्साह को और बढ़ाने के लिए, कट्टियावार की सीमाओं के भीतर हिंदू तीर्थयात्रा के दो सबसे प्रसिद्ध तीर्थस्थल स्थित हैं। इनमें से एक है द्वारका, जो भगवान कृष्ण की जन्मभूमि है। दूसरा है पवित्र नगर सोमनाथ—जिसे ग्यारहवीं शताब्दी में मुस्लिम विजेता महमूद ग़िज़नी ने लूटा और नष्ट कर दिया था।

दूसरी बार इन रमणीय क्षेत्रों में आकर, मैंने सोमनाथ के भव्य वीरान दृश्य को एक बार फिर देखे बिना कट्टियावार छोड़ने का निश्चय किया। जिस स्थान पर मैंने ऐसा करने की योजना बनाई थी, वहाँ से (मेरे अनुमान के अनुसार) पैदल यात्रा करके पवित्र नगर से लगभग तीन दिन की दूरी थी।

सड़क पर निकले हुए मुझे ज्यादा देर नहीं हुई थी कि मैंने देखा कि दो-तीन के समूह में अन्य लोग भी मेरी ही दिशा में यात्रा करते हुए दिखाई दे रहे थे।

जिन लोगों ने मुझसे बात की, मैंने उन्हें बताया कि मैं एक हिंदू-बौद्ध हूँ और दूर प्रांत से तीर्थयात्रा पर आया हूँ। यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि मेरा पहनावा इस विवरण को पुष्ट करता था। इसके अलावा, मैं वहाँ की भाषा उतनी ही अच्छी तरह जानता हूँ जितनी अपनी मातृभाषा, और मेरा दुबला-पतला और सांवला रंग ऐसा है कि मेरे यूरोपीय मूल का पता लगाना आसान नहीं है—और आप समझ सकते हैं कि मैं लोगों के बीच आसानी से घुलमिल गया: उनमें से एक के रूप में नहीं, बल्कि उनके अपने देश के एक दूरदराज के हिस्से से आए अजनबी के रूप में।

दूसरे दिन, मेरी दिशा में यात्रा करने वाले हिंदुओं की संख्या बढ़कर पचास और सौ हो गई थी। तीसरे दिन, भीड़ हजारों तक पहुंच गई थी; सभी धीरे-धीरे एक ही बिंदु की ओर बढ़ रहे थे - सोमनाथ नगर की ओर।

यात्रा के तीसरे दिन मैंने अपने एक साथी तीर्थयात्री की जो छोटी सी मदद की, उसी के कारण मेरी मुलाकात कुछ उच्च जाति के हिंदुओं से हुई। इन लोगों से मुझे पता चला कि यह भीड़ सोमनाथ से थोड़ी दूरी पर स्थित एक पहाड़ी पर होने वाले एक बड़े धार्मिक समारोह में शामिल होने जा रही थी। यह समारोह चंद्र देवता के सम्मान में था और रात्रि के समय आयोजित किया जाना था।

जैसे ही हम उत्सव स्थल के पास पहुँचे, भीड़ ने हमें रोक लिया। जब तक हम पहाड़ी पर पहुँचे, चाँद आसमान में काफ़ी ऊपर आ चुका था। मेरे हिंदू मित्रों को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त थे, जिनकी वजह से उन्हें मंदिर में प्रवेश मिल गया। उन्होंने कृपा करके मुझे भी अपने साथ चलने की अनुमति दी। जब हम वहाँ पहुँचे, तो हमने देखा कि दो विशाल वृक्षों के बीच लटके एक पर्दे के पीछे मंदिर हमारी नज़रों से छिपा हुआ था। वृक्षों के नीचे एक सपाट चट्टान निकली हुई थी, जो एक प्रकार का प्राकृतिक चबूतरा बना रही थी। मैं अपने हिंदू मित्रों के साथ इसके नीचे खड़ा था।

पहाड़ी से नीचे की ओर देखते हुए, मुझे प्रकृति और मनुष्य के संयोजन का ऐसा भव्य नजारा देखने को मिला, जैसा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। पहाड़ी की निचली ढलानें

धीरे-धीरे घास के मैदान में विलीन हो रही थीं, जहाँ तीन नदियाँ मिलती थीं। एक ओर, पानी का सुंदर घुमाव दूर तक फैला हुआ था, कभी दिखाई देता था, कभी पेड़ों से छिपा रहता था, जहाँ तक नज़र जाती थी। दूसरी ओर, शांत सागर रात के सन्नाटे में सो रहा था। इस सुंदर दृश्य में हजारों लोग सफेद वस्त्र पहने हुए पहाड़ी की ढलानों पर फैले हुए थे, मैदान में उमड़ रहे थे और घुमावदार नदियों के किनारों पर कतार में खड़े थे। अनगिनत लोगों की भीड़ के हर हिस्से से समय-समय पर उठती हुई लाल मशालों और जलते हुए तंबूओं की लौ से तीर्थयात्रियों का यह पड़ाव रोशन था। कल्पना कीजिए पूरब की चांदनी, निर्मल प्रकाश से सब पर बरस रही है—और आपको उस दृश्य का कुछ अंदाजा हो जाएगा जो मुझे पहाड़ी की चोटी से देखने पर दिखाई दिया।

तार वाले वाद्ययंत्रों और बांसुरी पर बजाई जा रही एक दुख भरी संगीतमय धुन ने मेरा ध्यान उस छिपे हुए मंदिर की ओर आकर्षित किया।

मैंने मुड़कर देखा और पथरीले चबूतरे पर तीन आदमियों की आकृतियाँ देखीं। तीनों में से बीच वाले आदमी को मैंने पहचान लिया, जिससे मैंने इंग्लैंड में बात की थी, जब लेडी वेरेंडर के घर की छत पर भारतीय प्रकट हुए थे। उस समय उसके साथी रहे बाकी दो लोग निस्संदेह इस अवसर पर भी उसके साथी थे।

मेरे पास खड़े दर्शकों में से एक ने मुझे चौंकते हुए देखा। उसने दबी आवाज़ में मुझे चट्टान के चबूतरे पर दिखाई देने वाली तीन आकृतियों के बारे में बताया।

उन्होंने कहा कि वे ब्राह्मण थे जिन्होंने देवता की सेवा में अपनी जाति त्याग दी थी। देवता ने आदेश दिया था कि उनका शुद्धिकरण तीर्थयात्रा द्वारा ही हो। उस रात तीनों को अलग होना था। वे तीन अलग-अलग दिशाओं में भारत के तीर्थस्थलों की यात्रा पर निकल पड़े। अब वे कभी एक-दूसरे का चेहरा नहीं देखेंगे। जिस दिन से उनका वियोग हुआ, उस दिन से लेकर जिस दिन उनकी मृत्यु हुई, उस दिन तक वे अपनी यात्रा में कभी विश्राम नहीं करेंगे।

जैसे ही वे शब्द मेरे कानों में फुसफुसाए गए, वह उदास संगीत थम गया। तीनों पुरुष मंदिर को छुपाने वाले पर्दे के सामने चट्टान पर लेट गए। वे उठे—उन्होंने एक-दूसरे को देखा—उन्होंने गले लगाया। फिर वे अलग-अलग लोगों के बीच उतर गए। लोग सन्नाटे में उनके लिए रास्ता बनाते रहे। मैंने तीन अलग-अलग दिशाओं में भीड़ को एक ही क्षण में हटते देखा। धीरे-धीरे लोगों का विशाल सफेद समूह फिर से एक साथ इकट्ठा हो गया। अपने साथी मनुष्यों की कतारों में उन अभागे पुरुषों के निशान मिट गए। हमने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।

छिपे हुए मंदिर से संगीत की एक नई, तेज और उल्लासपूर्ण धुन उठी। मेरे चारों ओर मौजूद भीड़ सिहर उठी और एक-दूसरे से चिपक गई।
पेड़ों के बीच का पर्दा हटा दिया गया, और मंदिर दिखाई देने लगा।
वहाँ, ऊँचे सिंहासन पर विराजमान—अपने विशिष्ट मृग पर सवार, अपनी चारों भुजाओं को पृथ्वी के चारों कोनों की ओर फैलाए हुए—वहाँ, आकाश के रहस्यमय प्रकाश में अंधकारमय और भयानक रूप में, चंद्रमा के देवता हमारे ऊपर विराजमान थे। और वहाँ, उस देवता के माथे पर, पीला हीरा चमक रहा था, जिसकी चमक आखिरी बार मुझे इंग्लैंड में एक स्त्री के वस्त्र के भीतर से दिखाई दी थी!
जी हाँ! आठ शताब्दियों के बाद, मूनस्टोन एक बार फिर उस पवित्र शहर की दीवारों के ऊपर से झाँक रहा है जहाँ से इसकी कहानी शुरू हुई थी। यह अपनी मूल भूमि पर कैसे लौटा—किस संयोग से, या किस अपराध से, भारतीयों ने अपने पवित्र रत्न को पुनः प्राप्त किया—यह शायद आपको पता हो, पर मुझे नहीं। आपने इसे इंग्लैंड में खो दिया है, और (यदि मैं इस जाति के बारे में कुछ भी जानता हूँ) तो आपने इसे हमेशा के लिए खो दिया है।
इस प्रकार वर्ष बीतते हैं और स्वयं को दोहराते हैं; समय के चक्र में वही घटनाएँ घूमती रहती हैं। मूनस्टोन के अगले रोमांच क्या होंगे? कौन बता सकता है?

***** **समाप्त** *****

sjeet

विल्की कॉलिन्स द्वारा लिखित 'द मूनस्टोन' की प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग ईबुक का समापन।
*** गुटेनबर्ग की ईबुक "द मूनस्टोन" का यह प्रोजेक्ट यहीं समाप्त होता है ***
***** इस फ़ाइल का नाम 155.txt या 155.zip होना चाहिए ***** यह और इससे संबंधित सभी फ़ाइलें विभिन्न प्रारूपों में यहाँ मिलेंगी: http://www.gutenberg.org/1/5/155/
जॉन हैम और डेविड विजर द्वारा निर्मित
अद्यतन संस्करण पुराने संस्करण का स्थान लेंगे—पुराने संस्करणों का नाम बदल दिया जाएगा।
सार्वजनिक डोमेन प्रिंट संस्करणों से रचनाएँ बनाने का अर्थ है कि इन रचनाओं पर संयुक्त राज्य अमेरिका में किसी का कॉपीराइट नहीं है, इसलिए फाउंडेशन (और आप!) संयुक्त राज्य अमेरिका में बिना अनुमति और बिना कॉपीराइट रॉयल्टी का भुगतान किए इसकी प्रतिलिपि बना सकते हैं और वितरित कर सकते हैं। इस लाइसेंस

के सामान्य उपयोग की शर्तों वाले भाग में निर्धारित विशेष नियम, प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम अवधारणा और ट्रेडमार्क की सुरक्षा के लिए प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक रचनाओं की प्रतिलिपि बनाने और वितरित करने पर लागू होते हैं। प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग एक पंजीकृत ट्रेडमार्क है, और यदि आप ई-पुस्तकों के लिए शुल्क लेते हैं, तो इसका उपयोग तब तक नहीं किया जा सकता जब तक कि आपको विशिष्ट अनुमति प्राप्त न हो जाए। यदि आप इस ई-पुस्तक की प्रतियों के लिए कोई शुल्क नहीं लेते हैं, तो नियमों का पालन करना बहुत आसान है। आप इस ई-पुस्तक का उपयोग लगभग किसी भी उद्देश्य के लिए कर सकते हैं, जैसे व्युत्पन्न रचनाएँ, रिपोर्ट, प्रदर्शन और अनुसंधान। इन्हें संशोधित, मुद्रित और मुफ्त में दिया जा सकता है - आप सार्वजनिक डोमेन ई-पुस्तकों के साथ व्यावहारिक रूप से कुछ भी कर सकते हैं। पुनर्वितरण ट्रेडमार्क लाइसेंस के अधीन है, विशेष रूप से वाणिज्यिक पुनर्वितरण।

*** शुरुआत: पूर्ण लाइसेंस ***

कृपया इस कार्य को वितरित करने या उपयोग करने से पहले पूर्ण प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लाइसेंस को पढ़ें।

इलेक्ट्रॉनिक कृतियों के नि:शुल्क वितरण को बढ़ावा देने के प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम मिशन की रक्षा के लिए, इस कृति (या "प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग" वाक्यांश से किसी भी तरह से संबंधित किसी अन्य कृति) का उपयोग या वितरण करके, आप पूर्ण प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस (जो इस फ़ाइल के साथ या ऑनलाइन http://gutenberg.org/license पर उपलब्ध है) की सभी शर्तों का पालन करने के लिए सहमत होते हैं।

धारा 1. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्यों के उपयोग और पुनर्वितरण के सामान्य नियम

1.ए. इस प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्य के किसी भी भाग को पढ़कर या उपयोग करके, आप यह दर्शाते हैं कि आपने इस लाइसेंस और बौद्धिक संपदा (ट्रेडमार्क/कॉपीराइट) समझौते की सभी शर्तों को पढ़ लिया है, समझ लिया है, उनसे सहमत हैं और उन्हें स्वीकार करते हैं। यदि आप इस समझौते की सभी शर्तों का पालन करने के लिए सहमत नहीं हैं, तो आपको प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्यों का उपयोग बंद कर देना चाहिए और आपके पास मौजूद सभी प्रतियों को वापस कर देना चाहिए या नष्ट कर देना चाहिए। यदि आपने प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्य की प्रति प्राप्त करने या उस तक पहुंच प्राप्त करने के लिए शुल्क का भुगतान

किया है और आप इस समझौते की शर्तों से बंधे रहने के लिए सहमत नहीं हैं, तो आप उस व्यक्ति या संस्था से शुल्क वापसी प्राप्त कर सकते हैं जिसे आपने पैराग्राफ 1.E.8 में बताए अनुसार शुल्क का भुगतान किया था।

1.B. "प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग" एक पंजीकृत ट्रेडमार्क है। इसका उपयोग केवल उन लोगों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक कार्यों पर या उनसे संबंधित किसी भी प्रकार से किया जा सकता है जो इस समझौते की शर्तों का पालन करने के लिए सहमत हैं। इस समझौते की सभी शर्तों का पालन किए बिना भी आप प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-™ के अधिकांश इलेक्ट्रॉनिक कार्यों के साथ कुछ कार्य कर सकते हैं। नीचे पैराग्राफ 1.C देखें। यदि आप इस समझौते की शर्तों का पालन करते हैं और प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-™ के इलेक्ट्रॉनिक कार्यों तक भविष्य में मुफ्त पहुंच बनाए रखने में मदद करते हैं, तो आप प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-™ के इलेक्ट्रॉनिक कार्यों के साथ बहुत सारे कार्य कर सकते हैं। नीचे पैराग्राफ 1.E देखें।

1.C. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लिटरेरी आर्काइव फाउंडेशन ("फाउंडेशन" या पीजीएलएएफ) के पास प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कृतियों के संग्रह का संकलन कॉपीराइट है। संग्रह में लगभग सभी व्यक्तिगत कृतियाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में सार्वजनिक डोमेन में हैं। यदि कोई व्यक्तिगत कृति संयुक्त राज्य अमेरिका में सार्वजनिक डोमेन में है और आप संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित हैं, तो हम आपको उस कृति की प्रतिलिपि बनाने, वितरित करने, प्रदर्शन करने, प्रदर्शित करने या उस पर आधारित व्युत्पन्न कृतियाँ बनाने से रोकने का अधिकार नहीं जताते हैं, बशर्ते प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग के सभी संदर्भ हटा दिए जाएँ। बेशक, हम आशा करते हैं कि आप प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम के नाम को कृति से जोड़े रखने के इस समझौते की शर्तों का पालन करते हुए, प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम कृतियों को स्वतंत्र रूप से साझा करके इलेक्ट्रॉनिक कृतियों तक मुफ्त पहुँच को बढ़ावा देने के प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम मिशन का समर्थन करेंगे। आप इस कृति को इसके साथ संलग्न पूर्ण प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस के साथ उसी प्रारूप में रखकर इस समझौते की शर्तों का आसानी से पालन कर सकते हैं।

1.D. आप जिस स्थान पर स्थित हैं, वहां के कॉपीराइट कानून भी इस कृति के उपयोग पर लागू होते हैं। अधिकांश देशों में कॉपीराइट कानून निरंतर बदलते रहते हैं। यदि आप संयुक्त राज्य अमेरिका से बाहर हैं, तो इस कृति या प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम की किसी अन्य कृति को डाउनलोड करने, कॉपी करने, प्रदर्शित करने, प्रस्तुत करने, वितरित करने या उससे व्युत्पन्न कृतियां बनाने से पहले इस समझौते की शर्तों के साथ-साथ अपने देश के कानूनों की भी जांच कर लें। फाउंडेशन संयुक्त राज्य अमेरिका के

बाहर किसी भी देश में किसी भी कृति की कॉपीराइट स्थिति के संबंध में कोई प्रतिनिधित्व नहीं करता है।
1.ई. जब तक आपने प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग के सभी संदर्भ नहीं हटा दिए हैं:
1.ई.1. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस के पूर्ण संस्करण के सक्रिय लिंक या अन्य तत्काल पहुंच के साथ निम्नलिखित वाक्य प्रमुखता से तब दिखाई देना चाहिए जब भी प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम कार्य (कोई भी कार्य जिस पर "प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग" वाक्यांश दिखाई देता है, या जिसके साथ "प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग" वाक्यांश जुड़ा हुआ है) की किसी भी प्रति को एक्सेस किया जाता है, प्रदर्शित किया जाता है, प्रदर्शन किया जाता है, देखा जाता है, कॉपी किया जाता है या वितरित किया जाता है:
यह ईबुक किसी भी व्यक्ति द्वारा कहीं भी, बिना किसी शुल्क और लगभग बिना किसी प्रतिबंध के उपयोग के लिए उपलब्ध है। आप इसे कॉपी कर सकते हैं, दूसरों को दे सकते हैं या इस ईबुक के साथ संलग्न या www.gutenberg.org पर ऑनलाइन उपलब्ध प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लाइसेंस की शर्तों के तहत इसका पुनः उपयोग कर सकते हैं।
1.ई.2. यदि कोई व्यक्तिगत प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्य सार्वजनिक डोमेन से लिया गया है (इसमें यह सूचना नहीं है कि इसे कॉपीराइट धारक की अनुमति से पोस्ट किया गया है), तो इस कार्य की प्रतिलिपि बनाई जा सकती है और इसे संयुक्त राज्य अमेरिका में किसी को भी बिना किसी शुल्क या प्रभार के वितरित किया जा सकता है। यदि आप किसी ऐसे कार्य का पुनर्वितरण कर रहे हैं या उस तक पहुंच प्रदान कर रहे हैं जिसमें "प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग" वाक्यांश जुड़ा हुआ है या दिखाई देता है, तो आपको या तो अनुच्छेद 1.ई.1 से 1.ई.7 की आवश्यकताओं का पालन करना होगा या अनुच्छेद 1.ई.8 या 1.ई.9 में निर्धारित अनुसार कार्य और प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम ट्रेडमार्क के उपयोग के लिए अनुमति प्राप्त करनी होगी।
1.ई.3. यदि किसी व्यक्तिगत प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्य को कॉपीराइट धारक की अनुमति से पोस्ट किया जाता है, तो आपका उपयोग और वितरण अनुच्छेद 1.ई.1 से 1.ई.7 तक और कॉपीराइट धारक द्वारा लगाई गई किसी भी अतिरिक्त शर्तों का अनुपालन करना चाहिए। अतिरिक्त शर्तें इस कार्य के प्रारंभ में पाए जाने वाले कॉपीराइट धारक की अनुमति से पोस्ट किए गए सभी कार्यों के लिए प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस से जुड़ी होंगी।

1.E.4. इस कार्य से, या इस कार्य के किसी भाग वाले किसी भी फ़ाइल से, या प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम से जुड़े किसी अन्य कार्य से प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस की पूरी शर्तों को अलग न करें, न ही हटाएं।

1.E.5. इस इलेक्ट्रॉनिक कार्य, या इस इलेक्ट्रॉनिक कार्य के किसी भी भाग की प्रतिलिपि बनाना, प्रदर्शित करना, प्रदर्शन करना, वितरित करना या पुनर्वितरित करना तब तक न करें जब तक कि पैराग्राफ 1.E.1 में उल्लिखित वाक्य को प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस की पूर्ण शर्तों के सक्रिय लिंक या तत्काल पहुंच के साथ प्रमुखता से प्रदर्शित न किया जाए।

1.E.6. आप इस कार्य को किसी भी बाइनरी, संपीड़ित, मार्कअप, गैर-स्वामित्व या स्वामित्व वाले रूप में परिवर्तित और वितरित कर सकते हैं, जिसमें कोई भी वर्ड प्रोसेसिंग या हाइपरटेक्स्ट रूप शामिल है। हालाँकि, यदि आप प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम कार्य की प्रतियाँ "प्लेन वैनिला ASCII" या आधिकारिक प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम वेबसाइट (www.gutenberg.org) पर पोस्ट किए गए आधिकारिक संस्करण में प्रयुक्त अन्य प्रारूप के अलावा किसी अन्य प्रारूप में उपलब्ध कराते हैं या वितरित करते हैं, तो आपको उपयोगकर्ता को बिना किसी अतिरिक्त लागत, शुल्क या व्यय के, कार्य की मूल "प्लेन वैनिला ASCII" या अन्य प्रारूप में एक प्रति, एक प्रति निर्यात करने का साधन, या अनुरोध पर एक प्रति प्राप्त करने का साधन प्रदान करना होगा। किसी भी वैकल्पिक प्रारूप में पैराग्राफ 1.E.1 में निर्दिष्ट पूर्ण प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस शामिल होना चाहिए।

1.E.7. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम के किसी भी कार्य तक पहुंच, देखने, प्रदर्शित करने, प्रदर्शन करने, प्रतिलिपि बनाने या वितरित करने के लिए शुल्क न लें, जब तक कि आप पैराग्राफ 1.E.8 या 1.E.9 का अनुपालन न करें।

1.E.8. आप प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्यों की प्रतियां उपलब्ध कराने, उन तक पहुंच प्रदान करने या उन्हें वितरित करने के लिए उचित शुल्क ले सकते हैं, बशर्ते कि

प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम की रचनाओं के उपयोग से प्राप्त सकल लाभ का 20% रॉयल्टी शुल्क के रूप में आपको देना होगा। इसकी गणना उसी विधि से की जाएगी जिसका उपयोग आप अपने लागू करों की गणना के लिए पहले से करते आ रहे हैं। यह शुल्क प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम ट्रेडमार्क के स्वामी को देय है, लेकिन उन्होंने इस अनुच्छेद के अंतर्गत प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग साहित्यिक अभिलेखागार फाउंडेशन को

रॉयल्टी दान करने पर सहमति व्यक्त की है। रॉयल्टी का भुगतान आपके आवधिक कर रिटर्न तैयार करने (या कानूनी रूप से तैयार करने के लिए आवश्यक) की प्रत्येक तिथि के 60 दिनों के भीतर किया जाना चाहिए। रॉयल्टी भुगतान को स्पष्ट रूप से चिह्नित किया जाना चाहिए और इसे प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग साहित्यिक अभिलेखागार फाउंडेशन को धारा 4, "प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग साहित्यिक अभिलेखागार फाउंडेशन को दान के बारे में जानकारी" में निर्दिष्ट पते पर भेजा जाना चाहिए।

- यदि कोई उपयोगकर्ता प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम लाइसेंस की शर्तों से सहमत नहीं है और प्राप्ति के 30 दिनों के भीतर लिखित रूप में (या ईमेल द्वारा) आपको सूचित करता है कि वह लाइसेंस की शर्तों से सहमत नहीं है, तो आप उसे भुगतान की गई पूरी राशि वापस कर देंगे। आपको ऐसे उपयोगकर्ता से भौतिक माध्यम में मौजूद सभी प्रतियों को वापस करने या नष्ट करने और प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम की अन्य प्रतियों का उपयोग और उन तक पहुंच बंद करने की आवश्यकता होगी।

- यदि इलेक्ट्रॉनिक कार्य में कोई दोष पाया जाता है और कार्य की प्राप्ति के 90 दिनों के भीतर आपको सूचित किया जाता है, तो आप अनुच्छेद 1.एफ.3 के अनुसार कार्य या प्रतिस्थापन प्रति के लिए भुगतान की गई किसी भी राशि की पूर्ण वापसी प्रदान करेंगे।

- आप प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम के कार्यों के निःशुल्क वितरण के लिए इस समझौते की अन्य सभी शर्तों का पालन करते हैं।

1.ई.9. यदि आप इस समझौते में निर्धारित शर्तों से भिन्न शर्तों पर प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कृति या कृतियों के समूह के लिए शुल्क लेना चाहते हैं या उनका वितरण करना चाहते हैं, तो आपको प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लिटरेरी आर्काइव फाउंडेशन और प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम ट्रेडमार्क के स्वामी माइकल हार्ट, दोनों से लिखित अनुमति प्राप्त करनी होगी। नीचे दिए गए अनुभाग 3 में बताए अनुसार फाउंडेशन से संपर्क करें।

1.एफ.

1.F.1. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग के स्वयंसेवक और कर्मचारी प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम संग्रह बनाने में सार्वजनिक डोमेन की रचनाओं की पहचान करने, उन पर कॉपीराइट संबंधी शोध करने, उन्हें प्रतिलेखित करने और उनकी प्रूफरीडिंग करने में काफी प्रयास करते हैं। इन प्रयासों के बावजूद, प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम की इलेक्ट्रॉनिक रचनाएँ, और जिस माध्यम पर वे संग्रहीत हो सकती हैं, उनमें कुछ "दोष" हो सकते हैं, जैसे कि अपूर्ण, गलत या दूषित डेटा, प्रतिलेखन त्रुटियाँ, कॉपीराइट या अन्य बौद्धिक संपदा का

उल्लंघन, दोषपूर्ण या क्षतिग्रस्त डिस्क या अन्य माध्यम, कंप्यूटर वायरस, या ऐसे कंप्यूटर कोड जो आपके उपकरण को नुकसान पहुँचाते हैं या आपके उपकरण द्वारा पढ़े नहीं जा सकते।

1.F.2. सीमित वारंटी, क्षतिपूर्ति का अस्वीकरण - अनुच्छेद 1.F.3 में वर्णित "प्रतिस्थापन या धनवापसी के अधिकार" को छोड़कर, प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लिटरेरी आर्काइव फाउंडेशन, जो प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम ट्रेडमार्क का स्वामी है, और इस समझौते के तहत प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्य का वितरण करने वाला कोई भी अन्य पक्ष, कानूनी शुल्क सहित किसी भी प्रकार की क्षति, लागत और व्यय के लिए आपके प्रति सभी दायित्वों से मुक्त है। आप सहमत हैं कि अनुच्छेद F3 में दिए गए प्रावधानों के अलावा, आपके पास लापरवाही, सख्त दायित्व, वारंटी का उल्लंघन या अनुबंध के उल्लंघन के लिए कोई उपाय नहीं हैं। आप इस बात से सहमत हैं कि इस समझौते के तहत फाउंडेशन, ट्रेडमार्क स्वामी और कोई भी वितरक आपको वास्तविक, प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष, परिणामी, दंडात्मक या आकस्मिक क्षति के लिए उत्तरदायी नहीं होंगे, भले ही आप ऐसी क्षति की संभावना के बारे में सूचना दे दें।

1.F.3. प्रतिस्थापन या धनवापसी का सीमित अधिकार - यदि आपको यह इलेक्ट्रॉनिक कृति प्राप्त होने के 90 दिनों के भीतर इसमें कोई दोष मिलता है, तो आप इससे प्राप्त वस्तु के लिए भुगतान की गई राशि (यदि कोई हो) की धनवापसी प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए आपको लिखित स्पष्टीकरण उस व्यक्ति को भेजना होगा जिससे आपने कृति प्राप्त की थी। यदि आपने कृति किसी भौतिक माध्यम पर प्राप्त की है, तो आपको लिखित स्पष्टीकरण के साथ वह माध्यम वापस करना होगा। दोषपूर्ण कृति प्रदान करने वाला व्यक्ति या संस्था धनवापसी के बदले प्रतिस्थापन प्रति प्रदान करने का विकल्प चुन सकता है। यदि आपने कृति इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्राप्त की है, तो कृति प्रदान करने वाला व्यक्ति या संस्था धनवापसी के बदले आपको कृति को इलेक्ट्रॉनिक रूप में प्राप्त करने का दूसरा अवसर देने का विकल्प चुन सकता है। यदि दूसरी प्रति भी दोषपूर्ण है, तो आप समस्या को ठीक करने के लिए आगे कोई अवसर दिए बिना लिखित रूप में धनवापसी की मांग कर सकते हैं।

1.एफ.4. अनुच्छेद 1.एफ.3 में उल्लिखित प्रतिस्थापन या धनवापसी के सीमित अधिकार को छोड़कर, यह कार्य आपको 'जैसा है' के आधार पर किसी भी प्रकार की अन्य वारंटी के बिना प्रदान किया जाता है, चाहे वह व्यक्त हो या निहित, जिसमें

व्यापारिकता या किसी भी उद्देश्य के लिए उपयुक्तता की वारंटी शामिल है, लेकिन इन्हीं तक सीमित नहीं है।

1.F.5. कुछ राज्य कुछ निहित वारंटियों के अस्वीकरण या कुछ प्रकार की क्षतियों के अपवर्जन या सीमा को प्रतिबंधित करते हैं। यदि इस समझौते में निर्धारित कोई अस्वीकरण या सीमा इस समझौते पर लागू राज्य के कानून का उल्लंघन करती है, तो समझौते की व्याख्या इस प्रकार की जाएगी कि लागू राज्य के कानून द्वारा अनुमत अधिकतम अस्वीकरण या सीमा लागू हो। इस समझौते के किसी भी प्रावधान की अमान्यता या अप्रवर्तनीयता शेष प्रावधानों को अमान्य नहीं करेगी।

1.एफ.6. क्षतिपूर्ति

आप इस बात से सहमत हैं कि आप फाउंडेशन, ट्रेडमार्क स्वामी, फाउंडेशन के किसी भी एजेंट या कर्मचारी, इस समझौते के अनुसार प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्यों की प्रतियां प्रदान करने वाले किसी भी व्यक्ति, और प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्यों के उत्पादन, प्रचार और वितरण से जुड़े किसी भी स्वयंसेवक को निम्नलिखित में से किसी भी कार्य से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न होने वाली सभी देनदारियों, लागतों और खर्चों, जिनमें कानूनी शुल्क भी शामिल हैं, से मुक्त रखेंगे: (क) इस या किसी भी प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम कार्य का वितरण, (ख) किसी भी प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम कार्य में परिवर्तन, संशोधन, जोड़ या हटाना, और (ग) आपके द्वारा उत्पन्न कोई भी दोष।

खंड 2. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम के मिशन के बारे में जानकारी

प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग™ इलेक्ट्रॉनिक रचनाओं के मुफ्त वितरण का पर्याय है, जो कि अप्रचलित, पुराने, मध्यम आयु वर्ग के और नए सहित विभिन्न प्रकार के कंप्यूटरों द्वारा पठनीय प्रारूपों में उपलब्ध हैं। यह सैकड़ों स्वयंसेवकों के प्रयासों और समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों के दान के कारण अस्तित्व में है।

प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम के लक्ष्यों को प्राप्त करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम संग्रह आने वाली पीढ़ियों के लिए नि:शुल्क उपलब्ध रहे, स्वयंसेवकों और उन्हें आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए वित्तीय सहायता अत्यंत महत्वपूर्ण है। 2001 में, प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग साहित्यिक अभिलेखागार फाउंडेशन की स्थापना प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम और भावी पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्थायी भविष्य सुनिश्चित करने के लिए की गई थी। प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग साहित्यिक अभिलेखागार फाउंडेशन के बारे में और अधिक जानने के लिए और यह जानने के लिए कि आपके

प्रयास और दान किस प्रकार सहायक हो सकते हैं, अनुभाग 3 और 4 देखें और फाउंडेशन की वेबसाइट http://www.pglaf.org पर जाएँ।

खंड 3. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग साहित्यिक अभिलेखागार फाउंडेशन के बारे में जानकारी

प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लिटरेरी आर्काइव फाउंडेशन एक गैर-लाभकारी 501(c)(3) शैक्षिक निगम है, जो मिसिसिपी राज्य के कानूनों के तहत संगठित है और आंतरिक राजस्व सेवा द्वारा कर छूट प्राप्त है। फाउंडेशन का EIN या संघीय कर पहचान संख्या 64-6221541 है। इसका 501(c)(3) पत्र http://pglaf.org/fundraising पर उपलब्ध है। प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लिटरेरी आर्काइव फाउंडेशन को दिए गए योगदान अमेरिकी संघीय कानूनों और आपके राज्य के कानूनों द्वारा अनुमत पूर्ण सीमा तक कर कटौती योग्य हैं।

फाउंडेशन का मुख्य कार्यालय 4557 मेलान ड्राइव साउथ, फेयरबैंक्स, अलास्का 99712 में स्थित है, लेकिन इसके स्वयंसेवक और कर्मचारी कई स्थानों पर फैले हुए हैं। इसका व्यावसायिक कार्यालय 809 नॉर्थ 1500 वेस्ट, साल्ट लेक सिटी, यूटा 84116 में स्थित है, संपर्क नंबर (801) 596-1887 है और ईमेल business@pglaf.org है। ईमेल संपर्क लिंक और नवीनतम संपर्क जानकारी फाउंडेशन की वेबसाइट और आधिकारिक पृष्ठ http://pglaf.org पर उपलब्ध हैं।

अतिरिक्त संपर्क जानकारी के लिए: डॉ. ग्रेगरी बी. न्यूबी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं निदेशक, gbnewby@pglaf.org

खंड 4. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग साहित्यिक अभिलेखागार फाउंडेशन को दान देने संबंधी जानकारी

प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम व्यापक जनसमर्थन और दान पर निर्भर है और इसके बिना इसका अस्तित्व संभव नहीं है। इसका उद्देश्य सार्वजनिक डोमेन और लाइसेंस प्राप्त रचनाओं की संख्या बढ़ाना है जिन्हें मशीन-पठनीय रूप में स्वतंत्र रूप से वितरित किया जा सके और जो पुराने उपकरणों सहित विभिन्न प्रकार के उपकरणों द्वारा सुलभ हों। आयकर विभाग से कर छूट की स्थिति बनाए रखने के लिए कई छोटे दान (1 डॉलर से 5,000 डॉलर तक) विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

फाउंडेशन संयुक्त राज्य अमेरिका के सभी 50 राज्यों में धर्मार्थ संस्थाओं और दान संबंधी कानूनों का पालन करने के लिए प्रतिबद्ध है। अनुपालन की आवश्यकताएं एक समान नहीं हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने और बनाए रखने के लिए काफी प्रयास, बहुत सारे कागजी काम और कई शुल्क लगते हैं। हम उन स्थानों पर दान का

अनुरोध नहीं करते हैं जहां हमें अनुपालन की लिखित पुष्टि प्राप्त नहीं हुई है। दान भेजने या किसी विशेष राज्य के लिए अनुपालन की स्थिति जानने के लिए http://pglaf.org पर जाएं।

हालांकि हम उन राज्यों से चंदा नहीं मांग सकते और न ही मांगते हैं जहां हमने चंदा मांगने की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया है, लेकिन हमें ऐसे राज्यों के दाताओं से बिना मांगे दान स्वीकार करने पर किसी तरह की रोक की जानकारी नहीं है जो दान देने की पेशकश के साथ हमसे संपर्क करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय दान सहर्ष स्वीकार किए जाते हैं, लेकिन हम संयुक्त राज्य अमेरिका के बाहर से प्राप्त दान पर कर संबंधी कोई भी जानकारी नहीं दे सकते। अमेरिकी कानून ही हमारे छोटे से स्टाफ के लिए बहुत जटिल हैं।

कृपया दान देने के वर्तमान तरीकों और पतों के लिए प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग के वेबपेज देखें। चेक, ऑनलाइन भुगतान और क्रेडिट कार्ड सहित कई अन्य तरीकों से भी दान स्वीकार किए जाते हैं। दान करने के लिए, कृपया इस लिंक पर जाएं: http://pglaf.org/donate

अनुभाग 5. प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम इलेक्ट्रॉनिक कार्यों के बारे में सामान्य जानकारी।

प्रोफेसर माइकल एस. हार्ट ने प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम की अवधारणा को जन्म दिया, जिसके तहत इलेक्ट्रॉनिक रचनाओं का एक पुस्तकालय बनाया जा सकता है जिसे कोई भी मुफ्त में साझा कर सकता है। तीस वर्षों तक, उन्होंने स्वयंसेवी सहयोग के एक सीमित नेटवर्क की मदद से प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम ई-पुस्तकों का निर्माण और वितरण किया।

प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम ई-पुस्तकें अक्सर कई मुद्रित संस्करणों से बनाई जाती हैं, जिनमें से सभी को अमेरिका में सार्वजनिक डोमेन के रूप में मान्यता प्राप्त है, जब तक कि उनमें कॉपीराइट नोटिस शामिल न हो। इसलिए, हम ई-पुस्तकों को किसी विशेष कागजी संस्करण के अनुरूप रखना आवश्यक नहीं समझते हैं।

अधिकांश लोग हमारी वेबसाइट से शुरुआत करते हैं, जिसमें मुख्य पीजी खोज सुविधा उपलब्ध है:

http://www.gutenberg.org

इस वेबसाइट में प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग-टीएम के बारे में जानकारी शामिल है, जिसमें प्रोजेक्ट गुटेनबर्ग लिटरेरी आर्काइव फाउंडेशन को दान कैसे करें, हमारी नई ई-

पुस्तकों के निर्माण में कैसे मदद करें और नई ई-पुस्तकों के बारे में जानने के लिए हमारे ईमेल न्यूज़लेटर की सदस्यता कैसे लें, जैसी जानकारी शामिल है।

विल्की कॉलिन्स द्वारा रचित 'द मूनस्टोन'
http://manybooks.net/ से एक निःशुल्क ईबुक